मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

डा. कमला चौधरी

पोथीक प्रसंग...

- प्राचीन भारतीय वाङ्मय, मैथिलीक प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्यक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक दृष्टिएँ एहि ग्रन्थमे जे गम्भीर अध्ययन कयल गेल अछि से तँ प्रशंसनीय अछिहे परन्तु आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाकेँ जाहि रूपमे धाङि देल गेल अछि से कोनहु भावी अनुसन्धाताक हेतु सर्वथा प्रेरणाप्रद, अनुसरणीय ओ अनुकरणीय अछि।
- **मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली** अभिधानसँ प्रकाशित डा. कमलाचौधरीक ई ग्रन्थ न केवल मैथिलीक साहित्य ओ शब्द-सम्पदासँ परिचित करबैत अछि अपितु मिथिलाक लोकवृत्त (Folklore) ओ समाजविज्ञानक क्षेत्रक हेतु महत्वपूर्ण आधार सामग्री प्रस्तुत करैत अछि।
- जी.ए. ग्रियर्सनक **बिहार पीजेण्ट लाइफक** श्रेणीक ई ग्रन्थ मिथिलाक सामाजिक जीवनक प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि इत्यादिक प्रकारान्तरेँ परिचय देबाक संगहि मैथिली कोष-विज्ञान एवं कोष-निर्माणक हेतु प्रभूत सामग्री अपनामे समाहित कयने अछि। अवश्ये भविष्यमे मैथिली शब्दकोषक निर्माता-संशोधक विद्वानकेँ एहि ग्रन्थक एक बेर गम्भीरतापूर्वक पारायण करब परम आवश्यक भऽ जयतनि।

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

डा. कमला चौधरी
रीडर, मैथिली विभाग
एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

अभिलाषा प्रकाशन
बलभद्रपुर (एन.पी.मिश्रा चौक)
लहेरियासराय, दड़िभंगा- 846001

MAITHILIKA VESH-BHUSHA-PRASADHAN SAMBANDHI SHABDAVALI
By Dr. KAMALA CHAUDHARY

सर्वाधिकार : लेखिका

प्रकाशक : अभिलाषा प्रकाशन
बलभद्रपुर (एन.पी. मिश्रा चौक)
लहेरियासराय, दड़िभंगा- 846001

संस्करण : पहिल, 2008

मूल्य : 700.00 (सात सय टाका मात्र)

पोथी प्राप्ति स्थान :

1. डा. कमला चौधरी
क्वार्टर नं०- 6, कॉलेज कैम्पस
महंत दर्शनदास महिला महाविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (मिथिला)
दूरभाष : 0621-2246582
मोबाइल : 9905029611

2. श्री अनुराग कमल (मुकुलजी)
अधिवक्ता
बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दड़िभंगा
मोबाइल : 9835486030

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दड़िभंगा

पुरोवचन

कोनहु भाषाक अभिव्यक्ति-क्षमता ओ विचार-सम्प्रेषणक सामर्थ्य ओकर शब्द-भण्डारपर निर्भर करैत छैक । जाहि भाषाक शब्द-भण्डार जतेक समृद्ध रहैत छैक, ओ भाषा जीवन ओ जगतक अत्यन्त सूक्ष्मसँ सूक्ष्म ओ व्यापकसँ व्यापक स्थितिक अभिव्यक्ति करबामे ततेक समर्थ होइत अछि । मैथिली भाषाक शब्द-भण्डार सेहो अत्यन्त समृद्ध अछि । एकर एहि शब्द सम्पदाकेँ संकलित करबाक प्रयास उनैसमे शताब्दीमे आरम्भ भऽ गेल छल, किन्तु ओ एखनहुँ धरि पूर्णताकेँ प्राप्त नहि कऽ सकल अछि । अनेकश: मैथिली शब्दकोष आंशिक वा पूर्णरूपमे प्रकाशमे अबैत रहल अछि किन्तु कोनहु शब्दकोषकेँ सर्वथा पूर्ण ओ मैथिलीक समस्त शब्द-सम्पदाकेँ समेटनिहार नहि कहल जा सकैत अछि ।

सम्प्रति सबसँ प्रतिष्ठित शब्दकोष प.गोविन्दझा कृत कल्याणी कोष प्रचलनमे अछि । अवश्ये मैथिलीक कोष-विज्ञानक दुर्बल स्थितिकेँ देखैत ई कोष अत्यन्त उपयोगी अछि । मैथिलीक शब्दकोष-परम्पराक अद्यतन कृति होइतो ई नहि कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक सकल शब्द-राशि कल्याणी कोषमे आबिए गेल अछि । सामान्य रीतिसँ देखला उत्तर केवल अ वर्णपर लगभग डेढ़ सय शब्द हमरा स्मरण पेल जकर समावेश एहि कोषमे नहि भऽ सकल अछि । एहि स्थितिकेँ अस्वाभाविको नहि कहल जा सकैत अछि ।

कोनो भाषाक यथार्थ शब्दकोषक निर्माण ने केवल पुस्तकालयपर आश्रित रहि भऽ सकैत अछि, ने एक व्यक्तिसँ सम्भव भऽ सकैत अछि । यथार्थ कोष निर्माण हेतु आवश्यक अछि जे अनेक व्यक्ति द्वारा विभिन्न क्षेत्रमे समाजक सभसँ निचला स्तरपर जाय धैर्यपूर्वक शब्द सभक संकलन कयल जाय । ई काज आर्थिक दृष्टिसँ सम्पन्न

कोनो संस्थहि द्वारा सम्भव । मैथिलीकेँ से सुविधा उपलब्ध नहि रहलैक अछि । भविष्यहुमे तकर सम्भावना नहि देखि पड़ैछ । परन्तु तकरा भरोसे मैथिलीक विशाल शब्द-सम्पदाकेँ निरन्तर विस्मृत होइत रहबाकलेल छोड़लो ने जा सकैत अछि ।

एखन समग्र भारतमे तीव्र गतिसँ सामाजिक परिवर्तन होइत जा रहल छैक । लोकक जीवन शैली, आहार-विहार, आचार-विचार, शिक्षा-संस्कृति, निरन्तर बदलैत जा रहल छैक । एहन स्थितिमे मैथिलीक अजस्र पारम्परिक शब्दावली सेहो प्रयोग-बहिष्कृत भऽकऽ लुप्त होयबाक स्थितिमे अबैत जा रहल अछि । एही संग मिथिलाक लोकवृत्त (Folk lore)क एकटा महत्त्वपूर्ण आधारभूत उपादान **लोकभाषिक शब्दावली** सेहो विस्मृत ओ लुप्त होइत जा रहल अछि । ओकरा अनतिविलम्ब संकलित कऽ कोषबद्ध करब नितान्त आवश्यक ।

विश्वविद्यालयमे अध्यापक लोकनिक हेतु अध्यापनक संग अनुसन्धान करब आ अनुसन्धान करायब सेहो कर्त्तव्यक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग होइत छनि । हमरा निर्देशन एवं पर्यवेक्षणमे अनेक अनुसन्धान कार्य भेल आ नहियो भेल । ओहि सभमे एकटा क्षेत्र छल मैथिलीक शब्द-सम्पदा । हम ओहि दिशामे अनेक शोधप्रज्ञकेँ अनुसन्धान कार्य करबाक हेतु प्रेरित कयलियनि । ओहिमे तीन गोट शोधप्रज्ञ अपन शोधकार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कयलनि । अवश्ये ओ तीनू शोधकार्य मैथिलीक विशिष्ट शब्द-सम्पदाक क्षेत्रमे बहुमूल्य योगदान सिद्ध होयत यदि ओ प्रकाशित रूपमे बौद्धिक जगतक समक्ष आबि सकय ।

ओहि तीन गोट शोध-प्रज्ञमे एकटा छलीह डा. कमलाचौधरी । हिनक शोधक विषय छलनि **मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययन** । मानवक तीन गोट मूलभूत आवश्यकता सब (भोजन, वस्त्र ओ आवास)मे वस्त्र द्वितीय अनिवार्य आ अपरिहार्य आवश्यकताक रूपमे अबैत अछि, जकर प्रयोजन भूतकालमे छलैक, वर्तमानमे छैक आ भविष्यहुमे रहतैक– शीत-आतप-वर्षासँ रक्षा तथा लज्जा-निवारण । कालक्रममे वस्त्र मानव-समुदायक सौन्दर्य-सृष्टि तथा सभ्यता-संस्कृतिक अभिव्यक्तिक महत्त्वपूर्ण साधन बनि गेल । सौन्दर्य-वृद्धिमे एकरहि संग दुइ गोट और साधन जुटि गेल– भूषण ओ प्रसाधन । वेश-भूषा-प्रसाधनक उपादान, पद्धति आ परम्परा कोनो समाजक सभ्यता ओ संस्कृतिक परिचायक मानल जाइत अछि । प्रत्येक समाजक भाषामे वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक विशिष्ट स्थान रहैत छैक । काल-प्रवाह, ऐतिहासिक घटना, राजनीतिक एवं नित्य सांस्कृतिक संक्रमणसँ वेश-भूषा-प्रसाधनक प्रयोगमे सेहो निरन्तर परिवर्त्तन होइत रहैत छैक । तकर परिणामस्वरूप ओकर शब्दावलीयोमे निरन्तर परिवर्त्तन परिलक्षित होइत रहैत छैक । मैथिलीयोमे वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली प्रचुर परिमाणमे अछि । ओहिमेसँ बहुत शब्द सर्वथा पारिभाषिक कोटिक अछि । एहिमे बहुतो प्राचीन शब्द आब जँ प्रयोग-बाह्य वा लुप्त भऽ गेल अछि तँ बहुतो नवीन शब्द बहुप्रचलित भऽ गेल वा भेल जा रहल अछि ।

कमलाचौधरी ने केवल अपन शोधकार्यकेँ सफलतापूर्वक सम्पन्न कयलनि अपितु अपन शोध-प्रबन्धकेँ आओरो संशोधन परिमार्जन ओ परिवर्द्धनक संग ग्रन्थक रूपमे **मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली** अभिधानसँ प्रकाशित करा रहल छथि । ई अत्यन्त हर्षप्रद कार्य अन्यहु विद्वान्‌केँ प्रकाशन दिस अग्रसर होयबाक प्रेरणा प्रदान करतनि से आशा कयल जा सकैछ ।

ग्रन्थमे बारह गोट अध्याय अछि ।

पहिल तीन अध्यायमे मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधनक पारम्परिक स्वरूपक परिचय अछि । ओहिमे क्रमशः प्राचीन भारतीय वाङ्मयक आधारपर भारतीय वेश-भूषा प्रसाधनक स्वरूप एवं अभिधान, मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधनक परम्परा तथा मैथिल परम्परापर पड़निहार विजातीय प्रभाव ओ कालप्रवाहक कारणे भेनिहार परिवर्त्तनक विवेचन अछि ।

चारिम-पाँचम-छठम अध्यायमे क्रमशः प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक मैथिली साहित्य-लोकसाहित्यमे वर्णित वेश-भूषा-प्रसाधन-विन्यास सम्बन्धी वर्णनक विवेचन ओ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक परिचय देल गेल अछि ।

सातम-आठम-नवम अध्यायमे मिथिलाक आधुनिक सामाजिक जीवनक तथा भाषामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक संकलन-विवेचन भेल अछि । ई अत्यन्त जटिल एवं श्रम साध्य अंश कहल जा सकैत अछि । एहि तीनू अध्यायक महत्त्व एकर शब्द-संग्रह, परिचय, परिभाषा, प्रयोग-परिचय, अर्थ-निर्वचन इत्यादिक दृष्टिएँ अत्यधिक अछि । लेखिका एहि तीनू अध्यायकेँ पूर्णता ओ विश्वसनीयता प्रदान करबाक हेतु लोक-सम्पर्कक आधार बनौलनि आ तकरा अतिरिक्त कोनो वैकल्पिक साधनो नहि छलनि । एहि तीनू अध्यायमे क्रमशः वेश-सम्बन्धी शब्दावली, नारी-पुरुष द्वारा विभिन्न अंगमे धारण कयल जायवला आभूषण एवं शरीरक भिन्न-भिन्न अंग-प्रत्यंगमे कयल जायवला प्रसाधनक व्यंजक शब्दावलीक संकलन-विवेचन भेल अछि ।

अन्तिम दसम, एगारहम ओ बारहम अध्यायमे मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीपर भाषातात्त्विक दृष्टिएँ विचार कयल गेल अछि जाहिमे ध्वनि समुदाय, शब्दक प्रकार, स्वरूप, अर्थपरिवर्त्तन, शब्द-साधनी उपसर्ग-प्रत्ययकेर विश्लेषण-विवेचन भेल अछि ।

अन्तमे लेखिका उपसंहारक रूपमे अपन निष्कर्षक प्रतिपादन कयलनि अछि ।

छठम अध्यायमे लोकसाहित्यमे व्याप्त वेश-भूषा-प्रसाधनक व्यंजक शब्दावलीक प्रतीत्यर्थ बहुश: लोकगीतक संगहि लोकमंत्र, लोकोक्ति, लोकवचन, फकड़ा, नेनाक क्रीड़ागीत, पिहानी इत्यादिक उद्धरण देल गेल अछि । दोसर दिस सातमसँ नवम अध्यायमे लोकजीवनमे प्रचलित वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक विवेचन अछि । लेखिकाकेँ मूल कार्य सम्पन्न भेला उत्तर सेहो बहुश: लोकोक्ति ओ शब्दावली प्राप्त भेल छलनि । ओकरा सबकेँ आब ग्रन्थहिमे यथास्थान समाविष्ट कऽ देब अधिक समीचीन से अवशिष्ट लोकोक्ति सभकेँ ग्रन्थमे यथा स्थान समाविष्ट कऽ देल गेल अछि । आब परिशिष्ट 'क'मे अवशिष्ट शब्दक अर्थ सहित सूची देल गेल अछि । परिशिष्ट 'ख' मे सम्बद्ध चित्रावली देल गेल अछि । परिशिष्टक अन्तिम भाग 'ग'मे ओहि समस्त ग्रन्थक सूची देल गेल अछि जकर एहि ग्रन्थमे सन्दर्भक रूपमे उपयोग कयल गेल अछि ।

परिशिष्टमे जेना अवशिष्ट शब्दक कोषवत् समावेश कयल गेल अछि, तकरा वृहत् आकार दैत वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी समस्त शब्दावलीक अर्थ सहित संकलन कऽ देल जाइत तँ ओ मैथिली शब्दकोषक दृष्टिएँ अत्यन्त उपयोगी होइत । से नहियो भेला उत्तर ई ग्रन्थ मैथिली कोष-विज्ञानक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान सिद्ध भऽ सकत ताहिमे सन्देह नहि ।

मैथिली भाषा-साहित्यक विशेषज्ञ एवं प्रबुद्ध पाठक लोकनिकेँ ग्रन्थ पढ़लापर बहुतो एहनो शब्दक स्मरण भऽ सकैत छनि जे ग्रन्थमे अनुल्लिखित रहि गेल । सजग अध्येता यदि एहन छूटल शब्दकेँ अर्थ सहित एकत्र कयने जाथि तँ ओ एकटा महत्त्वपूर्ण काज होयत । लेखिका जे एक अर्थक अनेक पर्याय तथा एक शब्दक अनेक वैकल्पिक रूप देबाक प्रयास कयलनि, ताहिमे त्रुटियो भऽ सकैत अछि । अनेक स्थलपर कोनहु शब्दक जे अर्थ लेखिका द्वारा देल गेल अछि ताहिसँ असहमतियो भऽ सकैछ । उदाहरणार्थ एक गोट शब्द **पटमासी** देखल जा सकैछ । नवम अध्यायक प्रसाधनक शब्दावलीमे सिन्दुर-प्रसाधनक क्रममे शब्द निर्दिष्ट भेल अछि जकर व्याख्यामे कहल गेल अछि– **सीथ मात्रमे कयल सिनूरकेँ पटमासि/पटमासी कहल जाइछ** । कल्याणी कोषमे **पटमासी** नहि, **पटवासी** शब्द अछि जकर अर्थ कहल गेल अछि **नववधूक घोघट** । कतोक वृद्ध-पुरैनियाँ महिलासँ जिज्ञासा कयलापर ज्ञात भेल जे नव विवाहिताकेँ विवाह, मधुश्रावणी ओ द्विरागमनक अवसरपर सीथक उभय भागमे सीटल केशक पाटीपर सिन्दूरसँ बिन्दु, वृत्त आ रेखा अंकित कऽ पसाहनि कयल जाइछ, तकरे **पटमासी सीनुर** कहल जाइछ । किन्तु जाहि प्रकारक ई मौलिक

कार्य अछि ताहिमे एहन स्थिति होयब स्वाभाविक अछि । आ एहन छोट-छीन कारणे ग्रन्थक महत्व न्यून नहि भऽ सकैछ ।

प्राचीन भारतीय वाङ्मय, मैथिलीक प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्यक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक दृष्टिएँ एहि ग्रन्थमे जे गम्भीर अध्ययन कयल गेल अछि से तँ प्रशंसनीय अछिहे परन्तु आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाकेँ जाहि रूपमे धाङि देल गेल अछि से कोनहु भावी अनुसन्धाताक हेतु सर्वथा प्रेरणाप्रद, अनुसरणीय ओ अनुकरणीय अछि ।

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली अभिधानसँ प्रकाशित डा. कमलाचौधरीक ई ग्रन्थ न केवल मैथिलीक साहित्य ओ शब्द-सम्पदासँ परिचित करबैत अछि अपितु मिथिलाक लोकवृत्त (Folklore) ओ समाजविज्ञानक क्षेत्रक हेतु महत्वपूर्ण आधार सामग्री प्रस्तुत करैत अछि ।

जी.ए. ग्रियर्सनक **बिहार पीजेण्ट लाइफक** श्रेणीक ई ग्रन्थ मिथिलाक सामाजिक जीवनक प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि इत्यादिक प्रकारान्तरेँ परिचय देबाक संगहि मैथिली कोष-विज्ञान एवं कोष-निर्माणक हेतु प्रभूत सामग्री अपनामे समाहित कयने अछि । अवश्ये भविष्यमे मैथिली शब्दकोषक निर्माता-संशोधक विद्वानकेँ एहि ग्रन्थक एक बेर गम्भीरतापूर्वक पारायण करब परम आवश्यक भऽ जयतनि ।

विश्वास अछि जे ई ग्रन्थ विद्वान् लोकनि द्वारा अवश्ये समादृत होयत । श्रमपूर्वक एहन ग्रन्थक रचना तथा साहसपूर्वक तकर प्रकाशनक हेतु आयुष्मती कमलाजीकेँ हमर हार्दिक आशीर्वाद ओ अशेष शुभकामना ।

रामदेवझा

(पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य
मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि.
तथा
पूर्व सदस्य, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

मकर संक्रान्ति, 2008
कबिलपुर
लहेरियासराय
दरभंगा-846001

आत्मोक्ति

मनुष्यक तीन गोट मुलभूत आवश्यकतामे भोजनक बाद वस्त्रादिक स्थान अबैत अछि । मनुष्य जेना-जेना सुसभ्य ओ सुसंस्कृत होइत गेल, वस्त्रकेँ जीवनक आधारभूत तत्त्वक रूपमे परिगृहीत करैत गेल । वस्त्र धारण शारीरिक सौन्दर्यकेँ आकर्षक बनयबाक हेतु उत्तरोत्तर बढ़ैत गेल । एहि आकर्षणकेँ अधिक करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक आभूषण ओ प्रसाधन उद्दीपनक काज करैत रहल । एकर प्रमाण संसारक सभ जाति ओ भाषामे उपलब्ध अछि ।

मैथिली साहित्य ओ भाषाक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक सर्वथा अनुद्घाटित रहबाक कारणेँ प्राचीन मैथिलीमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी बहुतो शब्दक अर्थ क्लिष्टे नहि अपितु बहुतो शब्दक अर्थ विलुप्त भऽ गेल अछि। अनेकानेक शैक्षणिक संक्रमणक कारणेँ बहुतो पारम्परिक शब्द अप्रचलित एवं विलुप्त होयबाक प्रक्रियामे अछि । दोसर बात ई जे अनेक नवीन शब्दावलीक समावेश भेल जा रहल अछि । एहन संक्रमण कालमे यदि शब्दावलीक समुचित अध्ययन नहि कयल जायत तँ भविष्यमे एहि शब्दावली सभक अर्थ-निर्वचन असम्भव भऽ जायत । लौकिक भाषामे प्रचलित शब्दावली विस्मृतिक गर्तमे चल जायत । एही सभकेँ ध्यानमे रखैत पूर्वमे एहि शोध-प्रबन्धक विषय निर्धारण कयल गेल छल । आब आशा अछि जे पुस्तकाकार रूपमे प्रस्तुत ई पोथी एहि दिशामे सहायक सिद्ध होयत ।

प्रस्तुत ग्रन्थमे किछु परिवर्त्तन-परिवर्द्धन कयल गेल अछि । एहिपर हमरा १९९१मे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी.क डिग्री प्राप्त भेल छल । प्रस्तुत ग्रन्थ मूलतः ल.ना.मि.वि., दरभंगाक मैथिली विभागक सेवानिवृत्त प्राचार्य डा. श्रीरामदेवझाक कृपापूर्ण निर्देशन ओ पर्यवेक्षणक परिणाम थिक । हिनक स्नेहपूर्ण सान्निध्य ओ दिशा-निर्देश

हमरा छात्रहि जीवनसँ प्राप्त होइत रहबाक सौभाग्य रहल अछि । विषय निर्धारणसँ लऽ सामग्री संकलन, प्रतिपादन, विवेचन-विश्लेषण धरि हिनक सहज उदारता, गहन अध्ययन ओ गम्भीर व्यक्तित्वक लाभ हमरा प्रबन्धकेँ पूर्ण करबामे ओ पश्चात् ग्रन्थ रूपमे प्रकाशनक मार्गकेँ प्रशस्त करैत रहल अछि । एहि ग्रन्थक भूमिका लिखि कऽ एकर गरिमाकेँ औरो बेसी बढ़ा देलनि अछि । एहि हेतु पूज्य गुरुवरक प्रति कृतज्ञताज्ञापन हुनक समय, श्रम ओ एकनिष्ठताक प्रति आंशिक आभार प्रदर्शन मात्र कहल जा सकैछ ।

आइ गुरुवर डा. शैलेन्द्रमोहनझाक आशीवर्चनसँ वञ्चित छी मुदा अमूर्त्त स्वरूपमे ओ हमर मार्ग प्रशस्त करैत रहताह, से हमरा दृढ़ विश्वास अछि ।

सौभाग्यवश एहि शोध-प्रबन्धक परीक्षक रहथि आचार्य प्रवर डा.जयमन्तमिश्र एवं दिवंगता विदुषी डा. इलारानीसिंह । डा. जयमन्तमिश्रजीक आशीर्वाद ओ सिनेह हमरा सतत भेटैत रहल अछि । एहि दुनू विद्वानक प्रति आभार व्यक्त करैत छी । आभारी छी ओहि गुरु लोकनिक जनिक सान्निध्य छात्रावस्थामे प्राप्त भेल आ हमरामे साहित्यिक अभिरुचि जागल । मुख्य रूपसँ आचार्य सुरेन्द्रझासुमन, पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमरजीक आशीर्वाद अविस्मरणीय अछि ।

पिता श्रीकृष्णकान्तझा (अधिवक्ता) एहि ग्रन्थकेँ प्रकाशित करयबालेल सतत टोकैत छलाह । हुनक बेटी होयबाक हमरा गौरव अछि । हुनकासँ बहुत किछु सिखलहुँ आ सैह हमर जीवनक पाथेय बनल । आइ निश्चित रूपसँ ओ हमर एहि ग्रन्थकेँ देखि प्रसन्न होयताह । पितृतुल्य श्वसुर गोलोकवासी महेन्द्रनारायणचौधरी (अधिवक्ता)क सिनेह ओ आशीर्वाद सेहो आगाँ बढ़बामे सहायक रहल । मातामह स्व. अच्युतानन्दझा ओ मातामही स्व.दुर्गादेवी (ग्राम- भवानीपुर, पंडौल)केँ नहि बिसरि पबैत छी, जे हमर नेनपनकेँ प्रचुर सिनेह ओ वात्सल्य दऽ धन्य कयलनि । पति दिवंगत कन्हैयाचौधरी (इंजीनियर), जिनका हमर पढ़ब-गुनब बेस नीक लगैत रहनि आ वस्तुतः मैथिलीक पहिल पाठ वैह पढ़ौने रहथि । विज्ञानक छात्र होइतहुँ हुनका मैथिली भाषापर नीक पकड़ छलनि । ओहि समय हम स्कूलक विद्यार्थी रही । आरम्भमे दुनूक बीच हिन्दीमे पत्राचार होअय । एक बेर ओ मैथिलीमे पत्र लिखैत आग्रह कयलनि जे आगाँ मैथिलीमे हम सभ पत्राचार करी । ओकर बाद हमरा दुनू गोटाक बीच मैथिलीएमे पत्राचार होइत रहल । एहि तरहेँ मैथिली लेखनक प्रेरणा हुनकहिसँ भेटल छल । ओना मूर्त रूपमे नहिओ रहैत ओ सदैव हमरा संग जिबैत रहलाह अछि । हम यथासाध्य हुनक आशा ओ आकांक्षाक निर्वाह करैत रहबाक प्रयास कयलहुँ अछि । आइ हुनक अनुपस्थिति कचोटैत अछि मुदा ईश्वरक विधानक आगाँ मनुष्यक किछु नहि चलैत छैक, से बूझैत हुनका श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत छियैनि । स्मृतिशेष प्रो. सुमनकुमारझा (अंग्रेजी विभाग, नागेन्द्रझा महिला महाविद्यालय, लहेरियासराय, दड़िभंगा) जे भ्राताक संग-संग साहित्यिक अभिरुचिमे हमर मित्रवत रहथि, मैथिली भाषा ओ साहित्यमे

नीक रुचि रखैत छलाह संगहि मैथिली, हिन्दी ओ अंग्रेजी रंगमंचक सफल कलाकार रहथि। मैथिलीक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक कार्यक्रममे हुनक सहभागिताकेँ नहि बिसरल जा सकैछ। जीवनक मात्र 34 बसंत देखि विज्ञ-समाजमे ओ अपन स्थान बना लेने छलाह। मैथिली साहित्य जगतकेँ सेहो हिनकासँ बहुत अपेक्षा छल, जे पूर्ण नहि भऽ सकल। कोमल स्वरूप ओ मधुर-भाव रखनिहार अनुज सुमनक हृदयमे हमरालेल जे सिनेह ओ सम्मान छलनि, से हम क्षणो भरिलेल नहि बिसरि पबैत छी।

डा.योगानन्दझा एवं सहपाठी डा.मुरलीधरझा ओ डा.ललिताझाक प्रेरणा आ सहयोगक बिना ग्रन्थक प्रकाशन सम्भव नहि छल। शब्दावली संकलन हेतु गाम-घरक भ्रमणमे ललिता संग देने छलीह। ओहि भ्रमणक कतेको अविस्मरणीय घटनाक चर्चा कऽ एखनहुँ बहुत आनन्दक अनुभव करैत छी। एहि ग्रन्थक प्रकाशनमे कवि, लेखक ओ तेजस्वी पत्रकार श्रीशंकरदेवझाक सहयोग भेटैत रहल अछि। अत: हिनका लोकनिक हेतु आभार प्रकट करैत छी। अनुज प्रो. रमणकुमारझा, इंजीनियरिंग कॉलेज, भागलपुर एवं श्रीरतनकुमारझा, अधिवक्ता, लहेरियासराय, दड़िभंगाक सहयोग सदैव स्मरणीय रहत। ग्रन्थक प्रकाशनमे ई लोकनि 'दीदी'क दहिना हाथ बनल रहलाह।

पुस्तक प्रकाशनमे कखनहुँ अर्थ संकोच तँ कखनहुँ प्रेसक समस्या संकट बनल रहल आ बिलम्ब होइत गेल। मुदा सभसँ पैघ कारक भेलीह पुत्रवधू सौ. मीनू जे जिद्द ठानि एहि ग्रन्थकेँ प्रेस धरि पहुँचा देलनि। पुत्र अनुराग कमल (मुकुलजी), अधिवक्ता, लहेरियासराय, दड़िभंगा एवं नवादा (दड़िभंगा) निवासी ओ अमेरिका प्रवासी हमर जमाता श्रीदुर्गानन्दझा (इंजीनियर) ओ पुत्री सौ. अभिलाषा कमल (मोना) सेहो ग्रन्थक प्रतीक्षा व्यग्रतासँ कयलनि अछि। हिनका लोकनिकेँ हमर हार्दिक शुभाशीष।

ग्रन्थक निष्पादनमे प्रेरक ओ सहायक समस्त गुरुजन ओ सुहृदजनक प्रति कृतज्ञ छियनि। आभारी छियनि ओहि समस्त सहयोगी महिला ओ पुरुषवर्गक प्रति जे शब्दावली संकलन, अर्थबोध ओ प्रबन्धक स्वरूप निर्माणमे महत्त्वपूर्ण सूचना, सुझाव आदिसँ सहायक भेलाह।

आभारी छियनि ओहि समस्त बन्धु-बान्धवीक प्रति जनिक प्रेरणा आ सहयोगक फलस्वरूप ग्रन्थक प्रकाशन सम्भव भऽ सकल। श्रीसंजूजी (प्रिंटवेल, दड़िभंगा)केँ सहयोग आ तत्परता हेतु धन्यवाद। अन्तमे प्रेसजन्य त्रुटिक हेतु क्षमायाचनेटा अवलम्ब अछि।

–कमला चौधरी

मैथिली विभागाध्यक्ष
एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

रामनवमी
14.4.2008

विषय-सूची

संकेत-सूची

अ	-	अरबी
अथर्व	-	अथर्ववेद
ऋ.	-	ऋग्वेद
एस.पी. गुप्ता	-	कास्टयूम्स टेक्सटाइल्स कास्मेटिक्स एण्ड क्वाइफर इन एन्सिएण्ट इण्डिया
अं	-	अंग्रेजी
ग्रि.	-	बिहार पीजेन्ट लाइफ-ग्रियर्सन
पृ.	-	पृष्ठ
फा.	-	फारसी
मि.म.	-	विद्यापति-मित्र-मजुमदार
मि.मि.	-	मिथिला मिहिर, पटना
सं.	-	संस्कृत, संपादन, संख्या
वर्ण.	-	(अकादमी) वर्णरत्नाकर, मैथिली अकादमी, पटना
वर्ण. (झा एवं चटर्जी)	-	वर्णरत्नाकर, रायल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

विषय-प्रवेश

मानवक तीन गोट मूलभूत आवश्यकता अछि– भोजन, वस्त्र ओ आवास । एहिमे उदरपूर्त्तिक आदिम ओ प्राथमिक आवश्यकताक बाद वस्त्रादिक स्थान अबैत अछि। प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनसँ मानव आदिकालेसँ भोजनक आवश्यकताक पूर्त्ति करैत रहल अछि। वन्य जीवन प्रणाली धरि वस्त्रक आवश्यकतापर मानवक चिन्तन नहिये जकाँ छल। क्रमशः जेना-जेना सुसभ्य ओ सुसंस्कृत जीवनक आरम्भ होइत गेल, परिधान दिस मानवक प्रयोग प्रक्रिया आरम्भ भेल । वर्षा, शीत, तापसँ बचबाक हेतु वृक्षक छाल, चर्म आदिक प्रयोगसँ आरम्भ कऽ मानव लज्जा निवारण, सौन्दर्य सम्पादन ओ अन्ततः सुसंस्कृत जीवनक हेतु वस्त्रकेँ जीवनक आधारभुत तत्त्वक रूपमे परिगृहित कऽ लेलक ।

स्वभावतः संसारक किछु दिगम्बर जनजातिकेँ छोड़ि अन्य समस्त जातिमे वस्त्र निर्माण, धारण आदिक दिशामे उतरोत्तर प्रगति होइत रहल । क्रमशः वस्त्र धारण शारीरिक सौन्दर्यकेँ आकर्षक बनयबाक हेतु व्यक्तित्वक निरूपक तत्त्वक रूपमे परिमार्जित भऽ गेल । एही आकर्षणकेँ अधिकाधिक करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक आभूषण ओ प्रसाधन उद्दीपनक काज करैत रहल । स्वभावतः एकर द्योतक शब्दावली संसारक समग्र जाति ओ भाषामे विद्यमान अछि ।

मैथिली एकटा विपुल क्षेत्र ओ विशाल जनसंख्याक मातृभाषा थिक । एहि जीवन्त भाषाक शब्द-सामर्थ्य विराट छैक । एकर शब्द सामर्थ्यमे वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक सेहो महत्त्वपूर्ण स्थान छैक । मानव सभ्यताक विकासक विभिन्न चरणमे यावन्तो प्रगति होइत गेल अछि, वेशभूषा प्रसाधन विन्यासहुमे क्रमिक परिवर्त्तन-परिवर्द्धन

होइत रहल अछि । एहि परिवर्तन-परिवर्द्धनक क्रममे वेश-भूषा-प्रसाधनक उपादान एवं तदर्थक शब्दावली, ओकर रूप ओ अर्थक परिवर्तन-परिवर्द्धन सहजहि होइत रहल अछि । वेश-भूषा-प्रसाधनक विकासक इतिहासमे कोनहु जाति, देश ओ समाजक सभ्यता-संस्कृतिक इतिहास सन्निहित छैक ।

मैथिली शब्दावलीमे पारम्परिक शब्दसमूह आर्यसभ्यताक आदिकालहिसँ प्रचलित रहल अछि । कालक्रममे एहिमे कतोक शब्दक स्वरूप विकृत भऽ गेल । कतोक शब्द लोकंठमे घसाइत-घसाइत पारिभाषिक कोटिकेँ पकड़ि लेलक । सामाजिक ओ सांस्कृतिक जगतमे होइत परिवर्तन, एक भाषा भाषीक दोसर भाषा भाषीक संग सम्पर्क आदिक कारणेँ एक भाषाक शब्द दोसर भाषामे संक्रमित होइत रहल अछि । मैथिलीओ एहि भाषिक संक्रमणसँ ग्रस्त रहल अछि । क्रमश: कतोक शब्द प्रयोग बहिष्कृत भऽ लुप्त होइत गेल अछि आ कतोक नवागत शब्द मैथिलीक सहज स्वरूपमे अन्तर्भुक्त कऽ लेल गेल । साम्प्रतिक वैज्ञानिक युगमे नित्य नव-नव वस्तुक अन्वेषणसँ संक्रमणक ई प्रक्रिया आर तीव्र भऽ गेल अछि । शब्द विस्थापन ओ परिग्रहणक प्रक्रिया अत्यन्त जीवन्त भऽ गेल अछि । नव वस्तुक संग तकर द्योतक नव शब्द परिगृहीत भेल जा रहल अछि । वस्तुक उपयोग बहिष्कृत होयबाक संगहि तकर द्योतक शब्द प्रयोग बहिष्कृत भेल जा रहल अछि ।

समाज ओ भाषाक महत्त्वपूर्ण उपादान होयबाक कारणेँ साहित्यहुमे वेषभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग होयब स्वाभाविक अछि । एहि शब्दावलीक भाषा तात्त्विक अध्ययन ने केवल भाषाक शब्दसामर्थ्य, अपितु अध्ययनक परिणाम ज्ञानक क्षेत्रकेँ विस्तृत करबामे सर्वथा सक्षम सिद्ध होयत ।

शब्दावलीक अन्य स्रोत अछि लोकजगत । लोकजगतसँ प्राप्त शब्दावली अत्यन्त जीवन्त ओ नमनशील होइछ । तेँ एकर भाषातात्त्विक अध्ययन भाषिक विकासक्रमक अभिज्ञानक संगहि अर्थ निरूपण, मानक स्वरूप निर्धारण ओ कोष निर्माणक महत्त्वपूर्ण आधार सिद्ध होयत ।

यद्यपि शब्दावली संकलन ओ व्याख्याक क्षेत्रमे प्रारंभिक कार्यक श्रेय ओहि यूरोपीय विद्वान लोकनिकेँ जाइत छनि जे एहिठामक भाषा ओ संस्कृतिसँ परिचय करबाक हेतु विभिन्न शब्दसूची तैयार कयलनि । एहि दिशामे पेट्रिक कारनेगी[1] तथा विलियम क्रुकक[2] शब्दसूचीक परिगणना कयल जा सकैछ । एही उद्देश्यकेँ लऽ अंग्रेजीमे मानक काज करबाक श्रेय डा.जी.ए. ग्रियर्सनकेँ छनि जे अपन **बिहार पीजेन्ट लाइफ**[3] नामक ग्रन्थमे बिहारक जनजीवनक विभिन्न पक्षक शब्दावलीकेँ संकलित ओ व्याख्यायित कयलनि । हिन्दीक क्षेत्रमे डा.हरिहरप्रसादगुप्त[4] ओ डा.अम्बाप्रसाद सुमन[5]क कार्य एहि

दिशामे अन्य प्रयास रहल । मैथिलीक क्षेत्रमे डा.सुभद्रझाक फार्मेसन आफ द मैथिली लैंग्वेज मैथिली शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययनक दिशामे प्रथम ओ मानक प्रयास कहल जा सकैछ । मुदा हिनक शब्दक्षेत्र अत्यन्त व्यापक छलनि ।

मैथिलीक पारिभाषिक शब्दावलीक गहन अध्ययनक दृष्टिएँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक हेतु स्वीकृत पी-एच.डी. शोधप्रबन्ध क्रमश: डा.योगानन्दझाक **मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन** (1986) तथा डा.लालताझाक **मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययन** (1988) उल्लेखनीय अछि ।

मैथिलीक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक समेकित भाषातात्त्विक अनुशीलनसँ एहि विशिष्ट शब्द क्षेत्रक शब्दावलीक अर्थनिरूपण, व्याख्या ओ भाषातात्त्विक विशिष्टताक उद्घाटन सम्भव अछि । अध्ययनक ई परिसीमा ने केवल मैथिली भाषाक शब्दसामर्थ्य ओ भाषा वैज्ञानिक तथ्यकेँ उजागर करत अपितु सांस्कृतिक इतिहास ओ सामाजशास्त्रीय महत्त्वक परिमाण सेहो प्रस्तुत करबामे सक्षम सिद्ध होयत । अवश्ये ई ज्ञानक क्षेत्रक सीमावृद्धिमे महत्त्वपूर्ण उपादान अछि ।

मैथिली साहित्य ओ भाषाक एहि पक्षक सर्वथा अनुद्घाटित ओ अनधीत रहबाक परिणाम ई भेल अछि जे प्राचीन मैथिलीमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी बहुसंख्यक शब्दक अर्थ दुरुहे नहि भऽ गेल अछि अपितु बहुतो शब्दक अर्थ विलुप्त भऽ गेल अछि । सम्प्रतियो विभिन्न प्रकारक ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक परिवर्तन-संक्रमणक कारणेँ वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी बहुतो पारम्परिक शब्द सभ अप्रचलित ओ विलुप्त भऽ गेल अछि अथवा ओकर प्रक्रियामे अछि । दोसर दिस एतद् विषयक नवीन शब्दावलीक समावेश होइत जा रहल अछि । यदि एहि संक्रमणकालमे मैथिली साहित्य, मिथिला भाषा ओ मिथिलामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक व्यवस्थित अध्ययन नहि कयल जायत तँ एहि शब्दावलीक अर्थ निर्वचन भविष्यमे असम्भव भऽ जायत । दोसर दिस लौकिक भाषामे प्रचलित किन्तु साहित्यमे अप्रयुक्त शब्दावली विस्मृतिक गर्त्तमे चल जायत, भाषिक प्रकृति ओ संक्रमणक प्रभावक निरूपणमे काठिन्य उपस्थित होइत रहत ।

ओना तँ मैथिलीक समस्त उपभाषा ओ क्षेत्रक समग्र शब्दावलीक संकलन, व्याख्या ओ भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक प्रयोजन अछि, मुदा भाषाक अतिव्याप्त परिसरक कारणेँ विशिष्ट समय सीमाक भीतर व्यक्तिगत स्तरपर एहि प्रकारक अनुशीलनक असंभाव्यताकेँ ध्यानमे रखैत मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययन मात्रकेँ एहि शोध-प्रबन्धक अध्ययन सीमा राखल गेल अछि ।

प्रस्तुत प्रबन्ध चारि खण्डमे विभाजित अछि आ प्रत्येक खंडमे तीन-तीन गोट अध्याय अछि ।

प्रथम खण्डक विवेचनक वस्तु अछि– **भारतीय ओ मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधनक पारम्परिक स्वरूप** । एहि खण्डक उद्देश्य अछि भारतीय वेश-भूषा-प्रसाधन परम्पराक शब्दावलीक मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधन परम्पराक शब्दावलीक सन्दर्भमे ऐतिहासिक विकास ओ पारस्परिक सम्बन्धक उद्घाटन । एकर प्रथम अध्यायमे भारतीय वेश-भूषा-प्रसाधन परम्पराक विवेचन भेल अछि जाहिमे वैदिक कालसँ लऽ मुस्लिमकालसँ पूर्व धरिक भारतीय वेश-भूषा-प्रसाधनक महत्त्वपूर्ण ओ पारिभाषिक कोटिक शब्दावलीक संक्षिप्त रूपरेखा उपस्थापित कयल गेल अछि । दोसर अध्यायमे मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधन विन्यासक विवेचन मैथिल स्मार्त्त निबन्ध एवं अन्य स्रोतक आधारपर कयल गेल अछि । तेसर अध्यायक विषय अछि मैथिली वेश-भूषा-प्रसाधनपर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्त्तन, जाहिमे राजनैतिक ऐतिहासिक, धार्मिक, वैज्ञानिक परिवर्त्तन ओ पारस्परिक सम्पर्कजन्य मैथिल वेश-भूषा-प्रसाधनमे होइत परिवर्त्तन-विश्लेषण कयल गेल अछि ।

द्वितीय खंडमे **मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीपर** विचार कयल गेल अछि । एहि खण्डक मौलिक उद्देश्य अछि मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक ऐतिहासिक विकासक्रम ओ साहित्यक प्रयोग-परिसरक रूपरेखाक प्रस्तुतीकरण ।

मैथिली साहित्यकेँ इतिहासकारलोकनि मुख्यतः तीन कालखण्डमे विभाजित कयने छथि ताही आधारपर एहि खंडक तीनू अध्यायमे क्रमशः प्राचीन मैथिली साहित्य, मध्यकालीन मैथिली साहित्य ओ आधुनिक मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक आयामक निदर्शन प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

एहि खंडक प्रथम अध्यायमे प्राचीन मैथिली साहित्यक अन्तर्गत विद्यापतिसँ पूर्वक वर्णरत्नाकर, धूर्त्तसमागम, दोहाकोश आदि ग्रन्थमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक विवेचन भेल अछि । दोसर अध्यायमे मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक उल्लेख ओ प्रयोग-परिसरकेँ विद्यापति ओ हुनक समवर्त्ती-परवर्त्ती कवि-नाटककारलोकनिक प्रयोग आधारपर विवेचित कयल गेल अछि । आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा काव्य, नाटक, कथा, उपन्यास, निबन्ध ओ लोकसाहित्यमे वर्णित वेश-भूषा-प्रसाधन विन्यासमे प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलीक विवेचन एहि खंडक तेसर अध्यायमे कयल गेल अछि ।

तृतीय खण्डमे आधुनिक मैथिली भाषामे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी

शब्दावली विवेच्य विषय अछि । एहि खण्डक प्रथम अध्यायमे वेशसँ सम्बद्ध शब्दावली, दोसर अध्यायमे आभूषणसँ सम्बद्ध शब्दावली ओ तेसर अध्यायमे प्रसाधनसँ सम्बद्ध शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि । वेश-भूषा-प्रसाधनसँ निकटता ओ अतिशय सम्बद्ध रहबाक कारण एहिमे किछु सीमा विस्तार कऽ देल गेल अछि ।

अन्तिम चतुर्थ खण्डक अनुशीलनक विषय मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक व्याकरण ओ भाषातात्त्विक विचार अछि । एहि खण्डक प्रथम अध्यायमे ध्वनिविचारक अन्तर्गत एहि शब्दावलीमे प्रयुक्त स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनिक स्थिति, गुच्छ ओ ध्वनि परिवर्त्तनक विभिन्न दिशाक अनुशीलन कयल गेल अछि । द्वितीय अध्यायमे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक शब्द-विचार प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहिमे शब्दक व्युत्पत्ति, उद्गम ओ अर्थक दृष्टिएँ विचार करैत अर्थ परिवर्त्तनक विभिन्न आयामक निदर्शन कराओल गेल अछि । तृतीय अध्यायमे विवेचनक विषय अछि वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्द साधक उपसर्ग ओ प्रत्ययक स्थिति ओ विन्यासपर विचार ।

अन्तमे उपसंहारमे निष्कर्षक संग ग्रन्थक समापन कयल गेल अछि । एकर अतिरिक्त तीनगोट परिशिष्ट सेहो दऽ देल गेल अछि जाहिमे क्रमशः (क) **अधीत ग्रन्थक सूची** (ख) **शब्दसूची** तथा (ग) **पारिभाषिक वेशभूषा प्रसाधनक रेखा चित्रक** सन्निवेश अछि ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्धमे अनुसंधान प्रक्रियाक पूर्णतः अनुसरण करैत अनभिज्ञात तथ्यक अन्वेषण ओ ज्ञात तथ्यक व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि । शब्दक स्वरूप ओ अर्थक व्याख्यामे जतऽ कोश ओ साहित्य असमर्थ सिद्ध भेल अछि ओतऽ लोकजगतकेँ प्रमाणस्वरूप स्वीकार कयल गेल अछि । आन ठाम जे किछु कहल गेल अछि से सप्रमाण । तथ्यानुशीलनक हेतु तुलनात्मक परीक्षण पद्धतिक आश्रय लेल गेल अछि । शब्दावली संकलन हेतु सामान्यतः समस्त मैथिली क्षेत्रकेँ ध्यानमे राखल गेल अछि । भाषातात्त्विक अध्ययनक सीमामे ग्रन्थमे संचित शब्दावली मात्रकेँ राखल गेल अछि ।

वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अधिकांशक प्रकृति पारिभाषिक कोटिक अछि, तेँ एकर अर्थनिर्वचन अल्प शब्देँ सम्भव नहि छल । एहन स्थितिमे आकार, रूप, गुण, प्रयोग आदि द्वारा शब्दकेँ व्याख्यायित करबाक प्रयत्न भेल अछि ।

प्रस्तुत ग्रन्थमे मिथिला क्षेत्रक कतोक शब्द ओकर वैकल्पिक रूपकेँ छूटि

जयबाक सम्भावनाकेँ नकारल नहि जा सकल अछि । कतोक शब्द ब्रीड़ा व्यंजक होयबाक कारणेँ परिगृहीत नहि भऽ सकल । पोथी पूर्ण होइतो कालधरि कतोक एहन शब्द जेँ ध्यानपर आबि सकल ओकरा ग्रन्थमे यथास्थान नहि लेलाक बादो अवशिष्ट शब्दसूची, चतुर्थ अध्यायमे उपयोग कऽ लेल गेल अछि तथापि कतोक शब्द छूटल नहि होयत, से नहि कहल जा सकैछ ।

सन्दर्भ सूची :

1. कचहरी टेकिनकलीटीज आर ए ग्लौसरी आफ हिन्दुस्तान-पेट्रिककारनेगी, इलाहाबाद मिशन प्रेस, 1877 ।
2. रूरल एण्ड एग्रिकल्चरल ग्लासरी फॉर द नार्थ इस्टर्न प्रोभिन्सेज एण्ड अवध-विलियम क्रुक, सेकेन्ड एडीसन, कलकत्ता- 1888 ।
3. बिहार पीजेन्ट लाइफ-जी.ए. ग्रियर्सन-कास्मो पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 24 बी दरियागंज, नयी दिल्ली, 1975 ।
4. ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली– डा.हरिहरप्रसादगुप्त-राजकमल पब्लिकेशन्स, बम्बइ, 1959 ।
5. कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली- डा. अम्बाप्रसादसुमन, भाग- 1 एवं 2, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, उ.प्र., 1960-61 ।
6. द फार्मेशन आफ द मैथिली लैंग्वेज- डा.सुभद्रझा, लूजाक एण्ड कम्पनी, ग्रेट रसेलस्ट्रीट, लन्दन, 1958 ।

●

प्रथम अध्याय

वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा

मानव जातिक तीन गोट मूलभूत आवश्यकता मध्य वस्त्रक दोसर स्थान अछि । वस्त्र एक दिस जेँ वर्षा, शीत, तापसँ बचबाक शारीरिक सुरक्षाक साधन रहल अछि तँ दोसर दिस ई लज्जा निवारण, सौन्दर्य-सम्पादन तथा अन्ततः सुसभ्य ओ सुसंस्कृत जीवनक आधारभूत अंगक रूपमे परिगृहीत रहल अछि । वृक्षक पात, छाल, चर्म आदिक प्रयोगसँ आदिम मनुष्य वस्त्रक एहि आवश्यकताक पूर्तिक दिशामे अग्रसर भेल जकर परिणति आधुनिक वस्त्रविन्यासमे देखि पड़ैत अछि । सांस्कृतिक प्रगतिक संगहि संग वस्त्र विन्यासक महत्त्व शरीरकेँ सजयबाक दिशामे विशिष्ट रूपेँ आयोजित होमय लागल । वस्त्र विन्यास द्वारा सुन्दर बनि जयबाक कलाकेँ मानव सुदूर प्राचीनकालसँ अपनौलक । सुन्दरताक दृष्टिसँ रंग-बिरंगक चित्रित, स्वर्ण जटित, नीक जकाँ काटल-छाँटल आओर सिआल विविध प्रकारक बहुमूल्य वस्त्रक विशेषता रहल अछि । एहन वस्तु मानवकेँ अपन वैभव सम्पनता, शालीनता, व्यक्तित्वक आकर्षण तथा सुरूचिपूर्ण विन्यास द्वारा अन्य नागरिकक मनपर प्रभाव छोड़बाक माध्यम रहल अछि ।

मानवीय वस्त्रविन्यासकेँ प्रभावित करऽवला विभिन्न कारकमे स्थानीय जलवायु, परिवेश, संस्कृति, सम्पनता आदिक विशिष्ट महत्त्व रहल अछि । ई विभिन्न कारक सभ स्थानीय परिवेशसँ समंजित होयबाक कारण विभिन्न स्थानक मानवक वस्त्रविन्यासक विविधता प्रस्तुत करैत अछि । स्वभावतः भारतीय ओ मैथिल वस्त्रविन्यासक अपन विशिष्टता दृष्टिगोचर होइछ । सांस्कृतिक, राजनैतिक संक्रमण सेहो वस्त्रविन्यासकेँ प्रभावित करयवला अन्य विशिष्ट कारक अछि । तेँ इतिहासक विभिन्न कालखण्डमे वस्त्र विन्यासक रूप वैविध्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ । वस्त्रे जकाँ शरीरकेँ साजसज्जासँ पूर्ण करबाक हेतु आभूषण ओ प्रसाधनक उपयोग सभ्यताक आदिकालेसँ होइत रहल अछि ।

वस्त्राभूषण प्रसाधन विन्यासक भारतीय ओ मैथिल परम्पराक अपन विशिष्टता रहल अछि जे क्रमिक विकास करैत आधुनिक स्थिति धरि पहुँचल अछि । वस्त्राभूषण

प्रसाधनक ऐतिहासिक रूपरेखाक पर्यवेक्षणसँ विभिन्न कालखण्डमे एकर विशिष्टता ओ सम्बद्ध शब्दावलीक परिज्ञान होइत अछि जाहिमे अनेको अपन प्राचीन रूपमे वा अर्थ-ध्वनि परिवर्तनक संग आइयो विद्यमान अछि, अनेक शब्द-ध्वनि लोपक स्थिति धरि जा जुमल अछि । मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विभिन्न परिवेशजन्य प्रभावसँ संक्रमित होइत रहल अछि एवं एहिमे, एकर शब्दावलीमे तज्जन्य परिवर्त्तन होइत रहलैक अछि । तेँ भारतीय ओ मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक पारस्परिक स्वरूपक अध्ययनक दृष्टिअे सुविधाक हेतु एकर तीन खण्ड कयल जा सकैछ-

(क) **वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा**

(ख) **वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा**

(ग) **मैथिल वेशभूषा प्रसाधन पर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्त्तन ।**

सिन्धुघाटी सभ्यता– भारतीय सभ्यताक प्रारंभिक अवशेष सिन्धुघाटी सभ्यताक खोदाइसँ प्राप्त भेल अछि । हड़प्पा ओ मोहनजोदड़ोक खोदाइसँ प्राप्त चित्र, मूर्त्ति ओ अन्य वस्तु सभमे भारतीय वेशभूषा प्रसाधनक आरंभिक अभिलेख भेटि जाइत अछि । एहि कालमे **ऊनी** ओ **सूती** दूहू प्रकारक वस्त्रक उपयोग होइत छल । पुरुष एकटा नाम **चद्दरि** ओढ़ैत छलाह जे बाम कान्हपर मोड़ल रहैत छल । स्त्रीगण **घघरा** सदृश वस्त्र पहिरैत छलीह । माथपर अनेक प्रकारक वस्त्र पहिरल जाइत छल । स्त्री ओ पुरुष दुहूक माथपर पंखाक आकारक **शिरोवस्त्र** रहैत छल । शिरोवस्त्र माथक मध्यभागसँ अथवा पाछूदिस लटकैत चोटीक उपरी भागसँ नारा द्वारा बान्हि लेल जाइत छल । पुरुषलोकनि **टोपी** सेहो धारण करैत छलाह । स्त्रीक टोपी ढीलढाल होइत छल । किछु लोक माथपर **पगड़ी** बान्हैत छलाह । किछु लोक दूनू पैरकेँ झाँपऽवला **धोती** सदृश वस्त्र पहिरैत छलाह । किछु लोक **कौपीन** धारण करैत छलाह । करधनीसँ **साड़ी** बान्हल जाइत छल । माथकेँ विभिन्न प्रकारक गहनासँ सजौल जाइत छल । ई गहना सभ शंकुक आकृतिक एवं दानेदार होइत छल । **कनफूल** ओ **कुण्डल** सदृश गहना सेहो पहिरल जाइत छल ।[1]

तथापि सिन्धुघाटी सभ्यताक वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावली अनभिज्ञात अछि । परवर्ती वैदिक साहित्यक शब्दावलीमे ओहिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक रिक्थ रहल होयत, से स्वभावज अछि ।

वैदिक वाङ्मय– वेदकालीन वेशभूषाक अनुसार दू प्रकारक वस्त्र पहिरल जाइत छल जकरा **वासस** ओ **अधिवासस** कहल जाइत छल । वासस **अधोवस्त्रक** हेतु तथा अधिवासस **उत्तरीय** वस्त्रक हेतु प्रयुक्त शब्द छल ।

कपड़ा सामान्यतः **ऊन**, **कपास** आदिसँ बनाओल जाइत छल । आर्य सभ्यताक प्रारंभिक अवस्थामे कदाचित चामक अधिक उपयोग होइत छल । किन्तु वेदकालीन

समाज बहुत विकसित छल अतएव कपास एवं ऊनक कपड़ाक उपयोग होमय लागल छल । तथापि तपस्वी तथा जंगलमे निवास कयनिहार **मृगचर्म**, **व्याघ्रचर्म** आदिक उपयोग करैत छलाह ।[2]

ऋग्वेदमे **वासस्** शब्द साधारणतया प्रयुक्त भेल अछि ।[3] **पूषा** के **वासोवाय** कहल गेल अछि ।[4] वस्त्र पहिरबाक शैली उच्च कोटिक छल । कपड़ा सीबाक प्रचलन अधिक नहि छल । एहन परिस्थितिमे सौचिकक हाथमे ककरो शरीरकेँ सजयबाक जे कला होइत अछि ओकरो अभावक पूर्ति स्वयं वस्त्र पहिरय-पहिरावय वालाकेँ करय पड़ैत छलैक । जे कपड़ा नीक जकाँ पहिरल जाइत छल ओकरा **सुवसन** कहल जाइत छलैक ।[5] सुवसनक द्वारा व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक बनि जाइत छल आ एहन व्यक्तिक हेतु **सुवासस** विशेषणक प्रयोग भेल अछि ।[6] नेत्रकेँ सुन्दर लागयवला वस्त्र विन्यासक एकटा विशेषण **सुरभि** छल ।[7] कुरूपो लोक जखन सजि धजि कऽ वस्त्र पहीरि लैत छल तऽ ओकर शोभा मनोहर भऽ जाइत छलैक ।

वस्त्रपर अलंकारिताक द्वारा वैदिक कालमे वस्त्र धारण कयनिहारक विशेषताक परिचय देबाक प्रयास कैल गेल अछि । राजसूय यज्ञक हेतु दीक्षित राजा **तार्प्य** नामक वस्त्र पहिरैत छलाह । ओहिपर याज्ञिक वस्तुक आकृति होइत छल ।[8] प्रायः सभ कपड़ापर शिल्पक काज होइत छल । वस्त्रकेँ **जरी** आदिक काजसँ सजाओल जाइत छल । वस्त्र **सुवर्णसँ** सज्जित होइत छल ।[9] वरुणक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे ओ '**हिरण्यमय द्रापि**' धारण करैत छथि ।[10] **प्रत्यत्क द्रापि** आदि विभिन्न प्रकारक वस्त्र होइत छल जे कदाचित सुवर्ण आदिक तारसँ सजाओल जाइत छल । सुवर्णसँ सुसज्जित वस्त्रक हेतु **पेशस्** शब्द प्रयुक्त भेल अछि ।[11] **पेशस्** वस्त्रकेँ बुनबाक काज स्त्रीलोकनि करैत छलीह जनिका **पेशस्कारी** कहल जाइत छल ।[12] स्त्रीगण सुन्दर ओ आकर्षक वस्त्र पहिरब पसिन्न करैत छलीह जाहिसँ अपना पतिक हेतु आकर्षण उत्पन्न कऽ सकथि ।[13]

शरीर-सौष्ठवसँ युक्त रमणीलोकनि **जरीक काज** वला साड़ी पहिरैत छली ।[14] वैदिक आर्य ऊनी वस्त्रसँ सेहो परिचित छलाह । सप्तसिन्धवक शीतप्रधान भागमे ऊनी वस्त्र तथा दोसर ठाम सूती वस्त्रक व्यवहार होइत छल । सिन्धु नदीक प्रदेश ऊनक उत्पादनक हेतु प्रख्यात छल । मरुद्‌गण **परुष्णीक** बनल शुद्ध राङल ऊनी वस्त्र पहिरने वर्णित भेलाह अछि ।[15] स्पष्ट अछि जे परुष्णीमे मेही ओ रंगीन ऊनी वस्त्रक काज होइत छल । सिन्धु नदी अनेक स्थानपर सुवासा ओ ऊर्णावती विशेषणसँ अलंकृत भेलीह अछि । अवश्ये एहिठाम वस्त्रव्यापार प्रशस्त छल आ ई ऊन उत्पादनक प्रमुख केन्द्र छल ।

रेशमी वस्त्रक व्यवहार वैदिक यज्ञानुष्ठानक अवसरपर विशेष रूपसँ कयल जाइत छल । अथर्ववेदक आदेश अछि जे मृतकक शरीरमे **तार्प्य** पहिरा देबाक चाही जाहिसँ यमक घरमे नीक जकाँ कपड़ा पहिरि कऽ जाय ।[16] **तार्प्य तृण** अथवा **त्रिपर्ब** नामक

लत्तीक सूतसँ बनल **क्षौम-वस्त्र** छल । आइकाल्हुक **तसर** एकर वर्तमान प्रतिनिधि थिक । क्षमासँ बनल **क्षौम**-वस्त्र सेहो एक प्रकारक रेशमी वस्त्र छल जकर वेदकालीन समाजमे पर्याप्त प्रचार छल । केसरिया रंगमे रङल रेशमी परिधान अत्यन्त पवित्र बूझल जाइत छल ।[17]

सूती, ऊनी ओ रेशमी वस्त्रक अतिरिक्त **अजिन** तथा **कुशसँ** बनल वस्त्र पहिरबाक व्यवहार यज्ञक पवित्र अवसरपर छल अवश्य, मुदा ई वैदिक कालक सामान्य परिधान नहि छल । सुदूर प्राचीन कालक परिधानक बहुमूल्य स्मृतिक रूपे **अजिन** ओ **कौश** वस्त्रक व्यवहार होइत छल ।[18]

अजिन सुदूर प्राचीन कालमे व्यवहृत होइत छल । सम्भवतः अजिन वस्त्र बकरीक चामसँ बनैत छल । पाछू हरिणक चाम सेहो अजिनक हेतु व्यवहृत होमय लागल । ऋग्वेदक अनेक मन्त्रमे **अजिन परिधानक** उल्लेख भेल अछि ।[19]

सूती वस्त्र **तानी भरनी** (ओतु-तन्तु अथवा पर्यास अनुछाद)क रूपमे सूतसँ बूनल जाइत छल । एहि काल धरि वस्त्र बुनबाक कला अत्यन्त उच्च कोटिक भऽ गेल छल । धोतीक अतिरिक्त अधिक दामक जनानी साड़ी सेहो तैयार कयल जाइत छल जाहिमे नीक **कोर, झालर** आदिक काज कयल रहैत छल । साड़ीपर सूइसँ **फूलपात** काढ़ल रहैत छल । धार्मिक कृत्यक अवसरपर **अनाहत वास** अर्थात् नव वस्त्र धारण करबाक व्यवहार छल मुदा नित्य नैमित्तिक कार्यमे धोआओल उज्जर वस्त्र पहिरबाक प्रचलन छल ।[20]

शरीरक निचला भागकेँ झपबाक हेतु प्रयुक्त **अधोवस्त्रकेँ** डाँड़ लग बन्हबाक प्रथा छल । बन्हबाक हेतु **नीबी** नामक वस्त्रक व्यवहार होइत छल । नीबी आगू दिस एकेठाम बान्हल जाइत छल । स्त्रीलोकनि डाँड़क दहिना दिस नीबी बन्हैत छलीह । क्यो क्यो आगू आ पाछू दुनू दिस **नीबी** बन्हैत छल । नीबीक उपर वस्त्र ओढ़ि कऽ ओकरा झाँपलो जा सकैत छल ।

शरीरक उपरका भागकेँ दू तरहेँ आच्छादित करबाक प्रथा छल । **उपवासन्, पर्याणहन** अथवा **अधिवास** चद्दरि जकाँ होइत छल जकरा शरीरक उपरका भागपर ढील कऽ लपेटि लेल जाइत छल । **प्रतिधि, द्रापि** ओ **अत्क** सीयल वस्त्र होइत छल जे **कुर्ता** अथवा **चपकन** जकाँ पहिरल जाइत छल । स्त्रीक **ओढ़नी** ततेक ने पातर होइत छल जे हवाक झोंकसँ उधिया जाइत छल ।[21] एकरा **उत्तरीय** सेहो कहल जाइत छलैक । **पर्याणहन** हल्लुक चद्दरि होइत छल जकरा ओढ़ल जाइत छलैक । **अधिवास** लम्बा ढीलढ़ाल वस्त्र छल जे धोती तथा अंगवस्त्रक उपरसँ लपेटल जाइत छल । संभवतः ई **दुपट्टा** जकाँ होइत छल । अरण्यकेँ पृथ्वीक अधिवास रूपमे वर्णित कयल गेल अछि ।[22] अवश्ये **अधिवास** सम्पूर्ण शरीरकेँ अच्छादित कऽ लैत छल होयत । अथर्ववेदमे वधूक वस्त्रक रूपमे प्रतिधिक वर्णन भेल अछि ।[23] प्रसंगानुसार ई **कंचुकी** (चोली) बूझना जाइत अछि ।

वैदिक आर्यलोकनि माथपर **उष्णीष** पहिरैत छलाह । अवसर विशेषक अनुसार **पगड़ी** बन्हबाक विभिन्न ढंग होइत छल । पगड़ीक अर्थमे प्रयुक्त **उष्णीष** शब्द गर्मीकेँ नष्ट करयवला अर्थमे प्राप्त होइछ । ई अनेक रंगक होइत छल ।[24] धनाढ्यलोकनिक उष्णीषपर **कसीदाक** काज कयल रहैत छल । उष्णीषकेँ माथपर लपेटि कऽ दुनू छोर आगू दिस लटका कऽ धोतीक पार्श्वमे दुनू दिस खोंसि देल जाइत छल । एकर अतिरिक्तो वैदिक साहित्यक अनेक शब्द तत्कालीन वस्त्रविन्याससँ सम्बद्ध प्रयुक्त भेल अछि । जेना-**बारसि**, ई प्रायः बरास नामक वृक्षक तन्तुसँ बनैत छल, **दूर्श**- ई प्रायः वस्त्रेक कोनो प्रकार छल । परवर्ती बौद्ध साहित्यमे ऊनी कपड़ाक एकटा प्रभेद **दुस्स** कहल गेल अछि । **पाण्डव** नामक वस्त्र यज्ञक अवसरपर राजालोकनिक द्वारा व्यवहृत होइत छल । महिला बुनकरकेँ **वायित्री** अथवा **सिरी** कहल जाइत छलैक । एहिमे **सिरी-सिली-सिलाइ** स्यूत करबाक मजदूरी आ व्यापारक अर्थमे प्रयुक्त अछि ।[25]

वैदिक कालमे पैरकेँ सरदी गरमीसँ बचयबाक हेतु **पादत्राण** पहिरबाक अनेकशः उल्लेख भेल अछि । युद्धक अवसर पर सैनिकलोकनि पादत्राण पहिरैत छलाह । सैनिक पैरसँ जाँघ धरिक रक्षाक हेतु विशिष्ट प्रकारक पादत्राण धारण करैत छलाह ।[26] **पत्संगिनी** सेहो एक प्रकारक पादत्राण छल जे सैनिकलोकनिक उपयोगमे अबैत छल । जूताक बोधक **उपानह** शब्द सेहो भेटैत अछि । जूता मृग अथवा शूकरक चामसँ बनैत छल । ई कारी आ नोंखगर होइत छल । **छाता** ओ **छड़ी** आर्यलोकनिक नित्य सहचर छल । छाता घामसँ बचयबाक हेतु तथा छड़ी अनिष्टकारी जानवरसँ रक्षाक निमित्त छल ।[27]

वैभव सम्बन्धी उच्चताक प्रदर्शन तथा शरीरक प्रकृत सौन्दर्यकेँ बढ़यबाक हेतु आभूषण धारण करबाक प्रचलन रहल अछि । भारत अनेक प्रकारक रत्न ओ बहुमूल्य धातुक हेतु प्रसिद्ध रहल अछि । विभिन्न प्रदेशमे एकर असंख्य उद्‌भव स्थल रहल अछि । वैदिक साहित्यमे अलंकार पहिरबाक उद्देश्य सौभाग्य संवर्द्धन कहल गेल अछि ।[28] वैदिक साहित्यमे **हिरण्य** ओ **सुवर्णक** बहुशः उल्लेख देखि पड़ैछ । तेँ ई स्पष्ट अछि जे गहना बनयबाक हेतु **सोन** सर्वाधिक लोकप्रिय धातु छल । **रजत** (चान्दी)सँ सेहो गहना बनैत छल । रत्न ओ **मोतीक** सेहो अलंकरणमे व्यवहार होइत छल ।[29]

अलंकारक हेतु शरीरक सभसँ महत्त्वपूर्ण अंग गरदनि अछि । गरदनिमे छोट पैघ बीसो हार एक संग पहिरल जा सकैछ । वैदिक साहित्यमे गर्दनिमे पहिरयवला हारमे सर्वाधिक प्रशस्त सुवर्ण निर्मित **निष्कक** प्रयोग भेटैत अछि ।[30] निष्क मुद्राक रूपमे सेहो प्रचलित छल । अवश्ये ई आकारमे गोल अथवा चौकोर होइत छल होयत । निष्क पहिरयवलाकेँ **निष्ककण्ठ** अथवा **निष्कग्रीव** कहल जाइत छल ।[31] मणिक हार पहिरयवला व्यक्तिकेँ **मणिग्रीव** कहल जाइत छल ।[32] गर्दनिक दोसर आभूषण छल **रूक्म** । ई गर्दनिसँ छातीधरि लटकल रहैत छल ।[33] लटकयबाक हेतु डोराक व्यवहार होइत छल जकरा **रूक्मपाश** कहल गेलैक

अछि । सुवर्णक कर्णाभरणकेँ **कर्णशोभन** कहल जाइत छल ।[34] व्रात्य वर्गक लोक कानमे **प्रवर्त्त** पहिरैत छलाह ।[35] राजाक कर्णशोभनमे **रत्न** लागल रहैत छल । कर्णशोभन ओ प्रवर्तक अतिरिक्त **हिरण्यकर्ण**, **चक्र** आदि कर्णाभूषणक उल्लेख भेटैत अछि ।[36] हाथ ओ पहुँचीमे सेहो विविध प्रकारक आभूषण धारण करबाक उल्लेख वैदिक साहित्यमे भेटैत अछि यथा– **परिहस्त**, **प्रतिसार**, **हिरण्यबाहु**, **हस्ती**, इत्यादि ।[37] माथपर अनेक प्रकारक गहना धारण कयल जाइत छल जेना **हिरण्यशिप्र**, **हरिशिप्र**, **शृंग** इत्यादि । संभवतः ई मुकुटक स्वरूपक होइत छल । **शंखाकार** शिरोभूषणकेँ **स्तूप** कहल जाइत छल । माथमे अनेक प्रकारक माला पहिरल जाइत छल जकरा **स्रज** कहल जाइत छल । कमलफूलसँ बनल शिरोभूषण रूपमे व्यवहृत मालाकेँ **पुष्करस्रज** कहल गेल अछि ।[38] सोनाक औंठीकेँ **हिरण्यपणि** कहल जाइत छल । मंजूक करधनीकेँ **वरुणपाश** कहल जाइत छलैक ।

शरीरकेँ बाह्यतः स्वच्छ राखब, ओ ओहिपर लेप ओ चूर्ण लगाय ओकरा रमणीय बनायब केशसज्जा आदि प्राचीनकालसँ भारतीय प्रसाधन परम्परामे गृहीत रहल अछि । सिन्धुघाटीक उत्खननसँ प्राप्त वस्तुमे **कंघी**, **अयना** आदिक प्राप्ति ई सिद्ध करैछ जे केश सज्जा उन्नतशील छल ।[39] पुरुष ओ नारी दुनू आँखिमे **अंजन** सदृश वस्तुक उपयोग करैत छलाह ।[40] केशकर्तनकहेतु **अस्तूराक** सेहो व्यवहार होइत छल ।[41]

वैदिक साहित्यमे प्रसाधनक बहुशः उल्लेख भेटैत अछि । आँखिकेँ सजयबाक हेतु **अंजनक** उपयोग होइत छल जकर उल्लेख अथर्ववेदमे भेटैत अछि ।[42] अंजन बनयबाक उद्योगे जकाँ चलैत छल । अंजन बनबयवाली महिलाकेँ **अंजनकारी** कहल गेल अछि । सुगन्धित चूर्ण द्वारा शरीरकेँ सजाओल जाइत छल । नीक गन्धवाली महिलाक हेतु **पुण्यगन्धा** शब्द प्रयुक्त होइत छल ।[43] सुगन्धिद्रव्यक रूपे **गुग्गुलक** सेहो उपयोग होइत छल । **औक्ष** नामक वस्तुक उपयोग शरीरकेँ सजयबाक हेतु होइत छल । प्रायः ई आधुनिक **गोरोचन** वा तत्सदृश पदार्थ छल ।[44] **पुष्पमालाक** सेहो उपयोग होइत छल ।[45]

मन्त्रक अनुशीलनसँ वैदिक साहित्य कालक केश सज्जाक विभिन्न पद्धतिक परिचय भेटैत अछि । पुरुष सेहो केश रचनामे चतुर होइत छलाह । स्त्रीलोकनिक केशकेँ अभिराम बनयबाक हेतु एकरा नाना प्रकारसँ सजबैत छलीह । पुरुष लोकनि केशकेँ **कपर्द** (जटा) जकाँ बन्हैत छलाह । कपर्द माथक दहिना दिस धारण करबाक उल्लेख अछि ।[46] स्त्रीलोकनि सेहो कपर्द धारण करैत छलीह । कपर्द एकाधिक सेहो होइत छल । ऋग्वेदमे एकठाम चारिगोट कपर्द धारण करयवाली युवतीक उल्लेख भेल अछि ।[47] जाहिसँ ई प्रतीत होइछ जे युवती अपन केशपासकेँ चारि प्रकारक वेणी बनाकऽ सजबैत छलीह । स्त्रीक केशपाश रचनाक हेतु **ओपेश**, **कुरीर** ओ **कुम्ब** शब्द भेटैत अछि ।

ओपेश पुरुष सेहो धारण करैत छलाह । मुदा स्त्रीलोकनिमे एकर विशिष्टता छल । ऋग्वेदमे एकठाम ओपशक तुलना आकाशसँ कयल गेल अछि ।[48] अवश्ये जखन केशकेँ

गोलाकार लपेटि कऽ उपर एकटा गीरह बान्हि देल जाइत छल होयत तँ ई रचना **ओपेश** कहल जाइत छल होयत ।

कुरीरकेँ अधिकांश विद्वान **शृंगाकृति** केशरचना कहलनि अछि । ऋग्वेदमे एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[49]

कुम्ब प्रायः कुम्भाकृति केशरचना छल जे माथक पाछू खोपाक हेतु प्रयुक्त शब्द छल । वैदिक समाजमे केश वर्द्धनक औषधिक परिचय छल । केशकेँ नाम ओ सुन्दर बनयबाक कलासँ लोक परिचित छलाह ।[50] क्षुरसँ केशकर्त्तन कयल जाइत छल । कर्त्तनसँ पूर्व केशकेँ गर्म पानिसँ भिजाओल जाइत छल ।[51] अथर्ववेदमे एकसय दाँतवला कंघीक उल्लेख भेल अछि ।[52] अवश्ये केश सज्जामे कंघीक उपयोग लोकप्रिय छल ।

महाकाव्य पुराण– महाकाव्यकालमे सेहो वेशभूषाप्रसाधनक प्रति जनाशक्तिक बहुल संकेत भेटैत अछि । सौन्दर्य साधनक प्रति लोकप्रियताक प्रमाण नीचा उद्धृत श्लोकसँ लागि सकैत अछि–

ना कुण्डली नामुकुटी नास्रग्वी नाल्पभोगवान । नामृष्टो न नलिप्तांङ्गो नासुगन्धश्च विद्यते ॥
नामृष्ट भोजी नादाता नाप्यनङ्गद निष्कधृक् । नाहस्ता भरणो वापि दृश्यते नाप्यनात्मवान ॥[53]

अर्थात् क्यो **कुण्डल**, **मुकुट** आ **पुष्पहारसँ** शून्य नहि छल । भोगसामग्रीक ककरो लग कमी नहि छलैक । क्यो एहन नहि छल जे नहा धोकऽ साफ नहि रहैत हो, आ अङ्गमे चन्दन अथवा **सुगन्धसँ** वञ्चित हो । अपवित्र भोजन करयवला, दानरहित, मनकेँ काबूमे नहि रखनिहार क्यो नहि छल । एहन कोनो व्यक्ति नहि देखि पड़ैत छल जे **बाजूबन्द**, **निष्क** तथा हाथक आभूषण नहि धारण कयने हो ।

अवश्ये एहि उच्च कोटिक सभ्यतामे सुसंस्कृत नागरिकक हेतु वेशभूषा प्रसाधन अनिवार्य छल । एहि कालमे अनेक प्रकारक वस्त्रक उपयोग होइत छल यथा **वल्कल**, **क्षौम**, **कौशेय**, **चीर**, **कम्बल**, **अजिन**, **अंशुक आविक** इत्यादि । वल्कल वृक्षक छालसँ बनैत छल । ई मुनिलोकनिक वस्त्र छल । सम्भवतः जंगलमे रहनिहार वानप्रस्थी ओ ऋषि लोकनि एकरा धारण करैत छलाह । रामायणमे अनेकठाम एहि वस्त्रक उल्लेख भेल अछि ।[54]

चीर साधारण वस्त्र छल । वनगमन काल कैकेयी द्वारा रामकेँ **चीरवस्त्र** देबाक उल्लेख भेल अछि ।[55] संभवतः चीर विभिन्न प्रकारक घासक रेशासँ बनैत छल । कुशसँ बनल चीर **कुशचीर** कहल जाइत छल ।[56]

अजिन वस्त्र चर्मसँ बनैत छल । एकरा हेतु मृग, बाघ, गाय इत्यादिक चर्मक उपयोग होइत छल । रामायणमे राक्षसकेँ **गोजिनाम्बरपाससः** कहल गेल अछि ।[57] **कृष्णाजिन** सर्वाधिक प्रशस्त छल । ई कृष्णमृगक छालसँ बनैत छल ।

क्षौम ओ **कौशेय वस्त्र** रेशमी वस्त्र छल । एहि वस्त्रक व्यापक उपयोग होइत छल । रावणकेँ बहुमूल्य **क्षौमवस्त्र**सँ सुशोभित कहल गेल अछि ।[58] सीताकेँ एकठाम **पीत कौशेयवासिनि** कहल गेल अछि ।[59] अत्यन्त सूक्ष्मवस्त्रक सेहो उपयोग होइत छल ।[60] वस्त्र ततेक पातर होइत छल जे साँसक स्पर्शसँ प्रकम्पित भऽ जाइत छल ।[61] **पीतकौशेय**[62], **रक्ताम्बर**[63], **नानावर्णाम्बर**[64] आदि शब्दक प्रयोगसँ स्पष्ट अछि जे वस्त्रकेँ अनेक रंगमे रङल जाइत छल ।

आविक ओ **कम्बल** सम्भवतः पर्याय अछि । ई भेंड़ीक ऊनसँ बनैत छल । दहेज ओ उपहारमे कम्बल प्रदान करबाक प्रथा छल । राजा जनक दहेजमे कम्बल सेहो देने छलाह ।[65] भरतकेँ मामा द्वारा उपहारमे अनेक प्रकारक कम्बल भेटल छलनि ।[66] राम-रावण युद्धमे वानरलोकनिक द्वारा लंकादहन कयला पर **आविक** जरबाक उल्लेख भेल अछि ।[67] महाभारत सभापर्वक अनुसार दिग्विजय करैत काल पाण्डवकेँ विभिन्न प्रदेशक राजासँ विविध प्रकारक **कम्बल** उपहारमे भेटल छल ।[68]

परिधानीय वस्त्रमे चादर वा दुपट्टाक हेतु **उत्तरीय** शब्द प्रचलित छल ।[69] अधोवस्त्रक हेतु **शाटी** शब्दक प्रयोग भेल अछि । संभवतः **शाटी धोती** ओ **साड़ी** दुनूक लेल प्रचलित छल ।[70] वस्त्रक छोरकेँ **वस्त्रान्त** कहल जाइत छल ।[71] **अंशुक** सम्भवतः **आँचर**क लेल प्रयुक्त छल ।[72]

परिव्राजकलोकनिक वेषे **छाता** ओ **उपानह** (जूता) आवश्यक छल । रावण जखन सीताहरणक आकांक्षासँ पञ्चवटीमे गेल छल तखन परिव्राजकक रूप धारण कयने छल । स्वच्छ गेरुआ रंगक वस्त्र लपेटने छल । ओकर मस्तक पर शिखा छलैक, हाथमे छाता ओ पैरमे जूता छलैक । वाम कान्ह पर ओ डंडा रखने छल जाहिमे कमण्डलु लटकौने छल ।[73]

पैरमे **पादुका** सेहो पहिरल जाइत छल । संभवतः ई लकड़ीक आधुनिक **खराम**क प्रतिनिधि छल । पादुकाके अलंकृत करबाक विधानक सेहो उल्लेख भेटैछ । रामचन्द्रजी अपन जे पादुका भरतकेँ देने छलथिन ओ अलंकृत छल ।[74]

एहिकालमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक ततेक उच्च कोटि विकसित भऽ गेल छल जे एहिसँ जुड़ल अनेक व्यवसाय स्थापित भऽ गेल छल जेना **मणिकार**, **सूत्रकर्म विशेषज्ञ** (वस्त्रकलाक विशेषज्ञ), **मायूरक** (मोरपंखसँ छत्र-व्यंजन बनौनिहार), **क्राकचिक** (चन्दन आदिक लकड़ी चिरनिहार), **वेधक** (मणिमोती आदिमे छेद कयनिहार), **दन्तकार** (हाथी दाँतक वस्तु बनौनिहार), **गान्धी** (इत्र आदि सुगन्धिद्रव्य तैयार कयनिहार), **सोनार**, **स्नापकोष्णोदक** (गर्मजलसँ स्नान करौनिहार), **धूपक** (सुगन्धिकाष्ठ तैयार कयनिहार) इत्यादि ।[75]

स्वभावतः एहि कालमे वस्त्रे जकाँ भूषण ओ प्रसाधनक प्रति नागरिक लोकनि

अत्यन्त सचेष्ट रहैत छलाह । रामायणमे **हिरण्य**, **सुवर्ण**, **रजत**, **मणि**, **रत्न**, **मुक्ता**, **वैदूर्य**, **विद्रुम** आदिक तँ अनेकशः उल्लेख अछिए एहि सभसँ तैयार विभिन्न प्रकारक भूषणक सेहो उल्लेख भेल अछि । एहि भूषण सभमे **अंगद**, **कुंडल**, **हेमसूत्र**, **केयूर**, **वलय**, **मुकुट**, **किरीट**, **हार**, **नूपुर**, **ग्रैवेयक**, **काञ्चनी**, **चूड़ामणि**, **मेचक**, **निष्क**, **वलय**, **किंकर्ण** आदिक अनेकशः उल्लेख भेल अछि । **काञ्चनी करधनी**क एकटा स्वरूप छलैक । चूड़ामणि मङटीका सदृश कोनो गहना छलैक । गहना सामान्यतः सोनसँ बनैत छल आ विभिन्न रत्नसँ जड़ित रहैत छल ।[76] गहना पर जड़ीक काज तँ होइते छल ओहि पर अक्षरो खोदल जाइत छल । हनुमानकेँ लंका पठबय काल राम अपन नामांकित **औंठी** देने छलथिन ।[77]

शरीरक सौष्ठव ओ पवित्रताक हेतु स्नानोपयोगी प्रसाधनक सेहो व्यवहार होइत छल । **पीसल आँवला**, **सुगन्धित चूर्ण** आदि स्नानपूर्व अंगमे **उबटन** जकाँ लगाओल जाइत छल । उज्जर कुच्ची वला दतमनिसँ **दन्तधावन** कएल जायब प्रशस्त बूझल जाइत छल । स्नोपरांत देहमे चन्दनक लेप लगयबाक प्रथा छल । प्रसाधने दर्पणक उपयोग होइत छल । आँखिमे **अंजन** कयल जाइत छल । **कंघी** (कङ्कति), **कुच्ची** (कुर्चा) आदि प्रसाधनक उपकरणक उपयोग होइत छल ।[78]

अङ्गराग ओ **अनुलेपन** महाकाव्यकालमे पुरुष ओ नारी दुहूक हेतु प्रशस्त मानल जाइत छल । सेना सेहो **अगुरू** ओ **चन्दन**सँ **अङ्गराग** करैत छल ।[79] लालरंगक अङ्गरागक प्रयोग जनसामान्य करैत छल ।[80] अनसूया सीताकेँ विविध प्रकारक अंगराग ओ अनुलेपन प्रदान कयने छलीह ।[81] पुष्पप्रसाधनक प्रचुर प्रयोग होइत छल । पुष्पक माला गरदनिमे धारण तँ कयल जाइते छल, केशसज्जामे सेहो एकर उपयोग होइत छलैक ।[82] अस्तरणपर सेहो पुष्प ओछाओल जाइत छल ।[83] ललाटपर **बिन्दी** करबाक सेहो उल्लेख भेल अछि । बिन्दीकेँ **विशेषक** कहल जाइत छलैक ।[84] **तिलक** करबाक प्रथा सेहो छल ।[85]

एहि कालक केशसज्जाक उल्लेखक अनुसार **जटिल** ओ **मुण्डी** सेहो होइत छलाह ।[86] केशकेँ सजयबा दिस तथापि लोक खूब ध्यान दैत छल । **सुकेशी**[87] शब्द नीक जकाँ सज्जित केशवालीक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि । केशक **कुंचित** स्वरूपक वर्णन भेटैत अछि ।[88] **वेणी** गुहबाक सेहो उल्लेख भेटैछ ।[89] महाकाव्ये जकाँ पौराणिक साहित्यमे सेहो वेशभूषा प्रसाधनक पारम्परिके स्वरूपक वर्णन देखि पड़ैछ । देवी भागवत् महापुराणमे भगवती भुवनेश्वरीक स्वरूपक वर्णनमे **माला**, **गन्धानुलेपन**, **दन्तच्छद**क राग आदिक वर्णन देखि पड़ैछ ।[90] एहिना मार्कण्डेयपुराणक देवीमहात्म्यमे देवतालोकनिक तेज, भगवतीक आविर्भाव भेला सन्ताँ क्षीरसमुद्र द्वारा हुनका वस्त्र एवं विभिन्न प्रकारक आभूषण यथा **हार**, **चूड़ामणि**, **कुण्डल**, **कटक**, **केयूर**, **अर्द्धचन्द्र**, **नूपुर**, **ग्रैवेयक**, **अंगुलीयक** आदि देबाक कथा अछि ।[91] एहि तरहेँ पौराणिक साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधनक पारम्परिक स्वरूपटा प्रसंगतः दृष्टिगोचर होइछ ।

जैन बौध ग्रंथ– बुद्धकालीन समाज नगर सभ्यताक उत्कर्षक काल छल । एहि कालमे नागरिकलोकनिक पहिरबा-ओढ़बाक शौकमे पर्याप्त वृद्धि भेल जाहिसँ एहिसँ सम्बद्ध व्यवसाय **कताइ, बुनाइ, रंगाइ, सिलाइकेँ** बढ़बाक पर्याप्त अवसर प्राप्त भेलैक ।

सीबाक कला सेहो विकसित छल । बौद्धभिक्षु अपन **चीवरक** सिलाइ स्वयं करैत छलाह । ओ सब एहि हेतु सुइ ओ कैँची रखैत छलाह । जातकमे सुइ बनयबाक वर्णन भेटैत अछि । कपड़ापर **कसीदा** सेहो होइत छल । **महापरिनिर्वाणसूत्रमे** एहि प्रकारक वर्णन अछि जे जखन गौतम बुद्ध वैशाली गेलाह तँ रंग बिरंगक परिधान पहीरि नागरिकलोकनि हुनक स्वागत कैलथिन । रंगक मेलपर ध्यान देबामे स्त्रीलोकनि बेसी रहैत छलीह । **सिरिकालकण्णि जातकमे** वर्णन अछि जे कालकण्णि नामक युवती एकटा सेठसँ भेँट करबाक लेल **नील वर्णक वस्त्र, नील विलेपन** आ **नील मणिसँ** अपन शरीरक शृंगार कयने छलीह । तत्कालीन भारतीय लोकनि उत्कृष्ट कोटिक **मलमलक** वस्त्र पहिरैत छलाह जाहिमे **जड़ीक** ओ बहुमूल्य **पाथरक** काज कढ़ल रहैत छल । गृहस्थक परिधानमे साधारणत: दू प्रकारक वस्त्र होइत छल– **अन्तरवासक** ओ **उत्तरासंग** । सेठ्ठिलोकनि **पगड़ी** सेहो बन्हैत छलाह ।

स्त्री ओ पुरुष **कंचुक** धारण करैत छलाह । पुरुषक कंचुक कुर्ता जकाँ कोनो वस्त्र रहल होयत । स्त्रिगणक कंचुकक आकार **चोली** जकाँ छल होयत । स्त्री प्राय: **साटक** अथवा **घघरा** ओ **चोली** पहिरैत छलीह । रानीलोकनिक साड़ीकेँ **सट्टसाटक** कहल जाइत छल ।[12] भिक्षुलोकनि **कुशचीर, वल्कल, फलक, केशकम्बल, बालकम्बल** आदि धारण करैत छलाह । **कुशचीर** कुशक घाससँ बनैत छल । वल्कल छालसँ, फलक लकड़ीसँ तथा केशकाम्बल ओ बलकम्बल मनुष्यक केशसँ बनैत छल । ई लोकनि **कौपीन** सेहो धारण करैत छलाह । वर्षाकालक हेतु वार्षिक **साटिका**क व्यवहार होइत छल । बैसबाक हेतु वस्त्रकेँ **प्रत्यास्तरण** कहल जाइत छलैक । वस्त्रमे **घुंडी** ओ **पाशक** तथा **बटन** लगयबाक सेहो प्रचलन छल । सूची क्रिया अत्यन्त विकसित छल । सीबाक हेतु सुइ (सूची)केँ एकटा खोलीमे राखल जाइत छल जकरा **सूचीनालिका** कहल जाइत छलैक ।[13]

कपड़ा आकर्षक ढंगसँ पहिरल जाइत छल । अधोवस्त्र अर्थात् धोती पहिरबाक अनेक प्रकारक यथा– **हरितशौण्डिक, मत्स्यबालक, चतुष्कर्णक, तालवृन्तक, शतवल्लिक** आदिक उल्लेख भेल अछि । अधोवस्त्र पर **कमरबन्द** सेहो बान्हल जाइत छल जकरा काया बन्धन कहल जाइत छलैक । **कलम्बुक** कमरबन्द बँटल रस्सीक सदृश होइत छलैक । **डेड्डुभुक** कमरबंद जलमे रहयवला ढोढ़िया साप जकाँ होइत छल । **मुरज** कमरबंद ढोलकक आकारक होइत छल । **मद्दवीणमे** आभूषण लटकैत रहैत छलैक । कलात्मक कमरबन्दक प्रचलन पुरुषक अपेक्षा नारीमे बेसी छल ।

उत्तरासंग (उत्तरीय, दुपट्टा) ओढ़बाक अनेक विधि छल । एक विधिमे उत्तरीय

बाम कान्हसँ आबि वक्षस्थलक ऊपर होइत नीचा चल जाइत छल आ नाभिपर गीरह मारि बान्हि देल जाइत छल । कखनो उतरीयककेँ छातीक निचला भाताक बाम कात फेंकि कऽ ओढ़ि लेल जाइत छल ।

मुरेठा बन्हबाक प्रथा सेहो छल । **लट्टूदार, झालरदार, चूनरदार, कामदार,** पानक आकृतिक आभूषणसँ युक्त, पुष्पालंकार युक्त मुरेठा बान्हल जयबाक उल्लेख भेटैत अछि । मुरेठा बन्हबाक दुइ गोट प्रकार छल । पहिल प्रकारे शिरपर जूड़ा बान्हि मुरेठाकेँ मस्तकक ठीक बीचमे लऽ जा कऽ जूड़ाकेँ झाँपि लेल जाइत छल आ दूनू छोरकेँ खोंसि लेल जाइत छल । दोसर छल भारी मुरेठा जाहिमे सम्पूर्ण शरीरे झँपा जाइत छलैक ।

पैरमे पहिरबाक हेतु **पादुकाक** प्रचलन छल । भिक्षुकलोकनि साधारण पादुका पहिरैत छलाह । अनेक रंग तथा एकाधिक तल्लावला पादुका गृहस्थलोकनि धारण करैत छलाह । पादुकाकेँ रङ्बाक सेहो प्रथा छल । आकार ओ प्रसाधनक दृष्टिवे विभिन्न प्रकारक पादुकाक उल्लेख भेटैत अछि । पादुका (जूता) सिंह, बाघ, मृग, चीता, बनबिलाड़, बिलाइ, लुक्खी, उल्लू आदिक चामसँ बनाओल जाइत छल । जूताक हेतु **पुटबद्धक** (ठेहुन धरि चढ़ल), **पालि गुंठिम** (केवल पैर धरि झाँपयवला), **खलबद्धक** (चप्पल सदृश), **मेण्डविषाणबद्धिक** (भेड़ीक सींग सदृश नोकवला), **अजविषाण बद्धिक** (बकरीक सींग सदृश नोंकवला) **वृश्चिकालिक** (नोंकपर बिच्छाक नाङ्रि लागल), **मोरपिंघपरिसिब्बत** (तरबामे मोरपंख सीअल), **तूलपुण्णिक** (तूरभरल) तथा **तितिरपट्टिक** (तीतरक पंख सदृश) नाम भेटैत अछि । लोक लकड़ीक पादुका, बाँस, तालपत्रक पादुका पहिरैत छलाह । पादुकामे सोना, चाँदी, वैदूर्य, काँच, काँसा, रांगा, ताम्बाक अलंकार सेहो जटित कयल जाइत छल ।

आभूषण तत्कालीन समाजकेँ प्रिय छल । **अँगूठी** (पट्टिका, मुद्रिका), **कुंडल** (वल्लिका), **गरदनिक हार** (केयूर, ग्रैवेयक), **सुवर्णमाला** अथवा **कंचनमाला, कर्णफूल** (पामङ्ग), **कंगण** (ओवत्तिका), **चूड़ी** (हत्थरण) **मेखला** आदि प्रचलित छल । सोना चानीक अतिरिक्त मुक्तामणि वैदूर्य, भद्रक, शंख, शिला, प्रवाल, लोहितक, मसारगल्लक सेहो आभूषण निर्माणमे प्रयुक्त होइत छल । मणिकेँ जड़ल जाइत छल ।

एहि युगक नागरिक पुष्पमाला, गुलदस्ता, सुगंधित आलेपन आ इत्रक प्रेमी छलाह । **चंदन, तबर, कृष्णानुसारि, कालिय** तथा **भद्रमुक्तकसँ** आलेपनकेँ सुगंधित करबाक उल्लेख भेल अछि । चन्दन, कालानुसारि ओ **वासिसकासँ** बनल सुगंध सर्वोत्तम मानल जाइत छल । इत्र बनयबाक हेतु **हरिचंदन** ओ **लोहितचंदन** काजमे अबैत छल । जाहि पुष्प सभसँ इत्र आ आलेपन बनैत छल ताहिमे **वसिसका, मल्लिका, कमल** तथा **प्रियंगु** प्रमुख छल । अगर ओ तगरक सेहो सुगन्ध बनैत छल । **सुखसहार** नामक इत्र अनेक सुगंधक मिश्रणसँ बनैत होयत ।[14]

वेषभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख-साहित्यिक ग्रन्थ सभमे सेहो प्रचुर भेटैत अछि। भासक नाटकमे **दुकूल** वस्त्रक उल्लेख भेल अछि। ई वृक्षक छालक रेशासँ बनैत छल। नील, लाल ओ श्वेत वर्णक दुकूलक व्यवहार होइत छल। दुकूलक बनल थानसँ काटि कऽ चद्दरि, धोती अथवा अन्य वस्त्र बनाओल जाइत छल। साड़ी, पलंगपोश आदि दुकूलसँ बनैत छल। एकटा अन्य वस्त्र छल **कोशेय पत्रोर्ण**। ई दु प्रकारक वस्त्रकेँ मिलौलासँ बनैत छल। **कौशेय** देशी रेशमी वस्त्र होइत छल आ **पत्रोर्ण** ऊनी वस्त्रक एक प्रकार। तेँ कौशेय पत्रोर्ण वस्त्र ऊन आ रेशमकेँ मिला कऽ बनैत होयत। भासक युगमे **अंशुक**क सेहो प्रयोग होइत छल। ई अत्यन्त पातर आ स्वच्छ वस्त्र होइत छल। किछु विद्वान एकरा **मलमल** मानैत छथि। ई दुइ प्रकारक होइत छल। एक भारतीय आ दोसर चीन देशसँ आनल चीनांशु। कीटज वस्त्र जैन ग्रन्थसभमे पाँच प्रकारक कहल गेल अछि– **पट्ट, मलय, अंकुश, चीनांशुक** आ **कुमिराग**। अतएव चीनांशु कीट द्वारा निर्मित कोनो वस्त्र छल होयत। स्त्रीलोकनि **स्तनांशुक** धारण करैत छलीह जे अँगिया अथवा ब्लाउज छल। **कूर्पासक** चोलीक रूपमे प्रयुक्त होइत छल।[95] महाकवि शूद्रकक **मृच्छकटिक** धरि विवाहित नारी द्वारा **अवगुण्ठन** (घोघ) ओढ़बाक प्रथा भऽ गेल छल। एहि समय धरि **स्नान शाटिका** (नहयबाक तौलिया)क उपयोग होमय लागल छल। रेशमी वस्त्रकेँ **पट्ट प्रावारक** कहल जाइत छलैक।[96]

कालिदास-साहित्य– कालिदासक साहित्यमे वर्णित वस्त्रविन्याससँ स्पष्ट होइछ जे ऋतुक अनुकूल वस्त्र धारणक रीति अति प्राचीने कालसँ छल। हेमन्तऋतुमे दुकूलक साड़ी आ सूक्ष्म अंशुकक स्तन-पट स्त्री नहि धारण करैत छलीह।[97] शिशिरमे भारी भरकम वस्त्र धारण कयल जाइत छल।[98] शिशिरक मनोज्ञ कपासिक स्तनपर कसल होइत छल। एहि ऋतुमे कौशेय विशेष अभिरुचिसँ धारण कयल जाइत छल।[99] दिन आ रातिक लेल पृथक-पृथक वस्त्र होइत छल।[100] कुसुम्भी रंगसँ स्त्रीक साड़ी तथा कुंकुमसँ स्त्रीक स्तनांशुकक रंगाइ होइत छल।[101] एहि ऋतुमे नारीलोकनि भारीवस्त्र उतारि सूक्ष्म आ लाक्षारससँ रँगल तथा कालागुमसँ धूपित वस्त्र पहिरैत छलीह।[102]

वस्त्रक अनेक रंग ओ प्रकारक उल्लेख कालिदासक साहित्यमे भेटैत अछि जेना सित दुकूल,[103] **अरूपरागांशुक,**[104] **नीलांशुक,**[105] **श्याम स्तनांशुक,**[106] **सरागकौशेयक**[107] इत्यादि। वस्त्रपर कसीदाक काज सेहो कयल जाइत छल।[108] कपड़ा ततेक पातर होइत छल जे ससन परससँ खसि पड़ैत छल। नीवी ओ नीवीबन्धक प्रयोग होइत छल।[109] वस्त्रकेँ रत्नसँ अलंकृत करबाक विधान छल। स्त्रीक उत्तरीयमे रत्न गूहल जाइत छल।[110]

एहि कालमे अलंकरण ओ प्रसाधनक प्रति जनरुचि सर्वाधिक मुग्ध छल। खासकऽ पुष्प सज्जाक विशेष उल्लेख एहिकालक विशिष्टता थिक। राजाक मौलिमे पुष्पक माला गूथल जाइत छल।[111] स्त्री अपन केशकेँ विभिन्न पुष्पसँ सजबैत छलीह।[112]

वर्षामे नारीलोकनि नाकेसर, केतकी ओ कदम्बक नव फूलक माला गाँथि कऽ माथपर धारण करैत छलीह।[113] पुरुष अपन प्रेयसीक माथपर शोभाक हेतु मालती यूथिकाक कली आओर बकुल पुष्पक माला बनबैत छलाह।[114] वसन्तमे स्त्रीक माथ चम्पकसँ सुवासित होइत छल। हुनक अलकमे अशोक आ नवमल्लिका पुष्प सुशोभित होइत छल।[115] केशपाशमे नवकुरबक पुष्प भरल जाइत छल।[116] वर्षामे पुष्पसँ माथक आभरण बनाओल जाइत छल।[117] शरद ऋतुमे विकुंचित केशमे स्त्री नवमालती कुसुम भरिकऽ रखैत छलीह।[118] हेमन्तमे रातिक समय सेहो पुष्पक माला धारण कयल जाइत छल जाहिसँ सूतैत काल ओकर सुगन्धिक आनन्द लेल जा सकय।[119] शिशिरमे केशक बीच कुसुम निवेशित कयल जाइत छल।[120] वर्षाऋतुमे मंजरीसँ कानक लेल गहना बनाओल जाइत छल।[121] ग्रीष्ममे कानपर शिरीष पुष्प राखल जाइत छल।[122] शरदमे कानमे नीलोत्पल सुशोभित होइत छल।[123] वसन्तमे कनैलक फूल खोँसल जाइत छल।[124] कुमुदक दलसँ कर्णपूर बनाओल जाइत छल।[125] एहि कालक साहित्यक अनुसार प्रसाधनक विविधता अनुपम छल। ऋतुक अनुकूल प्रसाधन होइत छल। राजकुलमे प्रसाधक नियुक्त होइत छलाह।[126] चन्दनक लेप शिशिर ऋतुकेँ छोड़ि कऽ वर्ष भरि होइत छल। चन्दनकेँ ऋतुक अनुकूल बनयबाक हेतु ओहिमे विभिन्न वस्तु मिलाओल जाइत छल। वर्षा ऋतुमे चन्दनमे विशेष रूपसँ **कालगुरु** मिलाओल जाइत छल।[127] नीपक पराग सेहो अंगराग बनि जाइत छल।[128] हेमन्तमे स्त्रीगण कपालपर **पत्रलेख** चित्रित करैत छलीह।[129] पत्रलेख चित्रण प्रसन्नचित स्त्रीक नित्यक कर्म छल। वसन्तमे सित चन्दनक लेप कयल जाइत छल। स्त्रीगण चन्दनकसंग **प्रियंगु, कालीचक, कुंकुम** आओर **कस्तूरी** मिलाकऽ स्तनपर लेप करैत छलीह। कस्तूरी कपूर आओर केशरसँ सुगन्धित चन्दन द्वारा समस्त अंगक अनुलेपन होइत छल।[130] स्त्रीगण छातीपर लालचन्दन लगबैत छलीह। हरिचन्दनक अंगराग बहुत मनोरम होइत छल। ई सम्पूर्ण शरीरपर लगाओल जाइत छल।[131] अनुलेपन भाँति भाँतिक चन्दनसँ होइत छल। भिन्न-भिन्न प्रकारक चन्दनक गुण, गन्ध ओ रंग भिन्न-भिन्न होइत छल। अर्थशास्त्रमे अनेक प्रकारक चन्दनक उल्लेख भेल अछि यथा– गोशीर्षक, ग्रामेरुक, जपक, जोङ्गक, कालापर्वतक कुचन्दन, मलेयक, तौरूप, देवसमेयक, शीतोदकीय, शाकल इत्यादि।[132] पैरकेँ अलतासँ रंगबाक प्रथा छल। हर्षचरितमे **पिण्डालक्तकेन पल्लवितस्य कुङ्कुम पिञ्जरित पृष्ठस्य चरण युगलस्य**सँ ई स्पष्ट अछि। नारीलोकनि ललाटपर तमाल जकाँ कारी तिलक करैत छलीह। तिलकमे मृगमदक उपयोग होइत छल जे एहि वर्णनमे भेटैत अछि– **तमालस्यमलेन मृगमद मोदनीस्यन्दिन तिलकबिन्दुना**। हर्षचरितमे सिन्दूरसँ मण्डनक सेहो चित्रण भेल अछि– **सिन्दूरच्छटाच्छुरित मुखमुद्रा**।[133] केशसज्जा सेहो विविध प्रकारेँ कयल जाइत छल।

भारतीय नाट्यशास्त्र– भारतीय वेशभूषा प्रसाधन परम्पराक उल्लेख ओ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक पुष्कल निवेश भारतीय नाट्यशास्त्रमे भेटैत अछि। एहि ग्रन्थमे खास कऽ

आहार्य अभिनयक परिचयक क्रममे वेशभूषा प्रसाधनक साङ्गोपाङ्ग ओ वैज्ञानिक वर्णन भेल अछि । वेशभूषा प्रसाधन द्वारा पात्रलोकनिमे चमत्कृति उत्पन्न करबाक हेतु व्यवहृत विन्यासकेँ **भरत** अलंकारक संज्ञा देलनि अछि ।[134]

एहि तरहेँ पात्रक अलंकारकेँ भरत तीन कोटिमे प्रधानत: रखलनि अछि– **मालाधारण, आभूषण-परिधान ओ वस्त्रविन्यास** । माला द्वारा शरीरक प्रसाधनक पाँच गोट प्रकारक उल्लेख नाट्यशास्त्रमे भेटैत अछि ।[135] एहि पाँचो प्रकार **वेष्टित, वितत, संघात्य, ग्रन्थिम** तथा **प्रलम्बितकक** पारिभाषिक स्वरूप छल ताहिपर भरत विचार नहि कयने छथि । ओ सोझे नाम गना देने छथि । आचार्य **अभिनवगुप्त** मालाक एहि चारू प्रकारकेँ व्याख्यात कयने छथि । वेष्टित मालामे हरियर पत्ती तथा रंग-विरंगक फूलकेँ एकत्र कऽ आवेष्टित कऽ देल जाइछ । विततमे फूलक माला पसरल रहैछ । संघात्यमे फूलक डंटी सूतमे अदृश्य धावसँ संगृहीत रहैछ, ग्रथितमे फूल सभकेँ गाँथि देल जाइछ तथा प्रलम्बितमे माला फूलसँ गाँथल, नाम ओ लटकैत रहैत अछि ।[136]

नाट्यशास्त्रमे तत्कालीन समाजमे प्रचलित विविध आभूषणक प्रसंगात् उल्लेख भेल अछि । आचार्य **भरत** आहार्य अभिनयक वर्णनक क्रममे शरीरक विभिन्न अंग उपांगमे पहिरबाक योग्य आभरणेटाक उल्लेख नहि कयलनि अछि अपितु एकर खण्डविभाजन सेहो कयलनि अछि । शरीर पर आभूषणकेँ प्रयोग करबाक विविध शैलीक आधारपर एकर चारि गोट प्रकार कहल गेल अछि– **आवेध्य, बंधनीय, प्रक्षेप्य** ओ **आरोप्य** । आवेध्यक अन्तर्गत ओहि आभरण सभकेँ परिगणित कयल गेल अछि जे अंगकेँ छेदि कऽ पहिरल जाइछ । कानक कुण्डल तथा नाकक विविध आभूषण एहि कोटि मध्य राखल गेल अछि । आरोप्यक अन्तर्गत हेमसूत्र, मणिमाला तथा अन्य अनेक प्रकारक मनोहर आभूषण सभक परिगणना कयल गेल अछि जकरा अंगपर आरोपया कऽ लेल जाइछ । बंधनीय आभूषणक अन्तर्गत ओ आभूषण सभ परिगणित भेल अछि जकरा अंगविशेषसँ बान्हि कऽ धारण कयल जाइछ । प्रक्षेप्य आभरणक अन्तर्गत नूपुर सन आभरण तथा ऊपरसँ प्रक्षेप्य वस्त्राभरण सेहो परिगणित भेल अछि ।[137]

आभरणक एहि खण्डविभाजनमे प्रक्षेप्य श्रेणीक अन्तर्गत वस्त्राभरणक उल्लेखसँ ई स्पष्ट होइछ जे शारीरिक सौन्दर्यक अभिवर्द्धनाक दृष्टिसँ वस्त्रोकेँ धारण करबामे भरतकालीन समाज सजग छल । वस्त्र केवल लज्जानिवारणेक हेतु प्रयुक्त होइत छल, से नहि । अपितु ई शरीरकेँ सजयबामे सेहो विशिष्ट सहायक छल । **आचार्य भरत** नाट्यमे प्रयोज्य आभूषणक विभिन्न नामावली प्रस्तुत कयने छथि । एहि नामावलीकेँ पुरुष ओ स्त्रीक हेतु प्रयोज्य आभरणक अनुरूप सेहो वर्गीकृत कयने छथि । एतेक प्रकारक प्रयोज्य मनोहर आभूषण सभक नामावलीसँ भरतकालीन समाजक समृद्धि तथा उच्च संस्कृतिक संगहि भूषणक प्रति रूचि सेहो द्योतित होइछ ।

नाट्यशास्त्रमे पहिने देवता ओ मानवक शृंगारमे प्रयुक्त आभूषणक नामावली गनाओल गेल अछि । एहिमे शिरक हेतु **चूड़ामणि** ओ **मुकुट**, कानक हेतु **कुण्डल, मोचक** तथा **कील**, कण्ठक हेतु **मुक्तावली, हर्षक, ससूत्र**, आङ्गुरक हेतु **अङ्गुलिमुद्रा** बाहुनालीक हेतु **हस्तवी तथा वलय**, बाजूक हेतु **रूचक** तथा **उच्छितक**, बाजूक उपरका भाग हेतु **केयूर** आ **अंगद**, वक्षस्थलक हेतु, **त्रिसर, हार, मोतीमाला** तथा डाँड़क हेतु **तरल** ओ **सूत्रक** आदि आभरणक परिगणना भेल अछि जाहिसँ पुरुष समाजमे सेहो आभूषणक प्रति आसक्तिक उदाहरण भेटैछ ।[138]

पुरुष लोकनिक शिरपर धारण करबा योग्य **मुकुटक** अनेक प्रभेदक चर्चा नाट्य-शास्त्रमे भेल अछि । एहिमे मुकुटक तीन गोट प्रमुख प्रभेदक उल्लेख अछि– **पार्श्वगत, मरत किन** तथा **किरीटि** । उत्तम कोटिक पुरुष तथा दिव्य पात्रक हेतु कीरीटक विधान कयल गेल अछि । मध्यमकोटिक पुरुष पात्रक हेतु पार्श्व मौलिक तथा कनिष्ठ कोटिक पात्रक हेतु शीर्ष मौलिक विधान कयल गेल अछि । देव, गन्धर्व, यक्ष, नाग, राक्षस आदिक हेतु मुकुटक विधान नहि कयल गेल अछि । राजाक हेतु मुकुटक विधान कयल गेल अछि । विधाधर, सिद्ध, चारण, ग्रन्थी आदिक हेतु केशमुकुटक विधान कयल गेल अछि । उदास पात्रक हेतु पार्श्वमौलिक विधान अछि । एहि तरहेँ मुकुटक विधानकेँ **भरत** अत्यन्त श्लिष्ट प्रयोग कहलनि अछि ।[139]

सेनापति ओ युवराजक हेतु मस्तक पर **अर्द्धमुकुटक** विधान कयल गेल अछि ।[140]

शिरोवेषपर विमर्श करैत **सुरेन्द्रनाथदीक्षित** कहलनि अछि जे शिरोवेषमे **किरीट** सर्वश्रेष्ठ होइत अछि आ एकर रचना बहुमूल्य रत्नसँ होइत छैक । ओ शिरपर उठल रहैत छैक । मस्तकी किरीट जकाँ ऊपर उठल नहि रहैछ मुदा शिरकेँ झँपने रहैछ । एकरो रचना स्वर्ण आदि रत्नसँ होइछ । पार्श्वमौलिक ऊँचाइ बहुत कम रहैत छैक । सम्भवत: ई शिरक पार्श्वमे पहिरल जाइछ, सम्पूर्ण शिरकेँ झाँपि नहि पबैछ । तेँ एकरा **अर्धमुकुट** सेहो कहल जाइछ । एकरो रचना स्वर्ण रत्नादिसँ होइछ । केश मुकुट केशक ग्रन्थिसँ बनाओल जाइछ ।[141]

महिलालोकनि तँ स्वभावत: आभूषण-प्रिय होइत छथि । भारतीय नाट्यशास्त्रमे महिलालोकनि हेतु प्रस्तुत आभूषणक नामावली अत्यन्त व्यापक अछि । प्रत्येक अंग-उपांगक हेतु आभूषणक विधान संकेतित भेल अछि । नारीक शिरक आभूषणमे भरत **शिखापाश, शिखाजाल, पिण्डपात्र, चूड़ामणि, मकरिका, मुक्ताजल, गवादाक, शीर्षजालक** परिगणना कयने छथि ।[142]

आचार्य अभिनवगुप्त शिरक एहि आभूषण सभक रूपरेखा स्पष्ट करबाक प्रयास कयने छथि । **शिखाव्याल** नाग सदृश ग्रंथिसँ उपनिबद्ध होइत छल । **चूड़ामणि** शिरक मध्यभागमे तथा **मुक्ताजाल**-ललाटक अन्तमे मोतीक सूक्ष्म चमत्कारपूर्ण जाली सभसँ

निर्मित रहैत छल ।[143] कानक आभूषणमे आचार्य भरत **कर्णिका, कर्णवलय, पत्रकर्णिका आवेष्टित, कर्णमुद्रा, कर्णपूर** तथा **कर्णोत्कीलकक** परिगणना नारीक हेतु कयलनि अछि। नाट्शास्त्रमे एहि आभूषण सभक रचनाक हेतु नाना वर्णनक रत्न तथा दन्त पत्रक प्रयोगक उल्लेख भेल अछि ।[144]

कण्ठक आभूषणमे भरत **मुक्तावली व्यालपंक्ति, मंजरी, रत्नमालिका, रत्नावली** तथा **शृंखलिकाकें** परिगणित कयने छथि । **शृंखलिका** एक लड़सँ लऽ कऽ चारि लड़ धरिक भऽ सकैत छल ।[145]

नारीक वक्षस्थलक भूषणक हेतु भरत **हार** तथा **निवेमी** शब्दक प्रयोग कयने छथि। हारकें ओ **नानारत्न कृता**:[146] कहने छथि । अवश्ये हारमे विभिन्न प्रकारक रत्न लागल रहैत छल होयत । मणिजालसँ निर्मित आभूषण द्वारा नारीक स्तनकें शोभायमान करयबाक उल्लेख अछि ।[147] भरत नारीक **मुक्ताहारक** विविध प्रभेदक उल्लेख सेहो कयने छथि । ई मुक्ताहार बत्तीस, चौंसठ तथा एक सौ आठ मुक्तासँ गाँथल रहैत छल ।[148] बाहुमूलक आभूषणमे **अङ्गद** ओ **वलय**, बाहुनालीक आभूषणमे **खर्जुर, स्वेच्छितीक**, आँगुरक आभूषण **कटक, कलशाखा, हस्तपन, सुपुरक, मुद्रा** तथा **अङ्गुलीयकक** उल्लेख भेल अछि ।[149] श्रोणीक आभूषणमे **काञ्ची, कुलक, मेखला, रशना** तथा **कलापक** उल्लेख भेल अछि। ई समस्त आभूषण मोतीक सूक्ष्म लड़सँ युक्त होइत छल। नाट्यशास्त्रमे एहि आभूषण सभक स्वरूपक किंचित स्पष्टीकरण कऽ देल गेल अछि । तदनुसार कहल गेल अछि– जे **काञ्चीमे** एकटा लड़ रहैत छल । **मेखलामे आठ, रशनामे सोलह** तथा **कलापमे पच्चीस** गोट लड़ रहैत छल ।[150] नारीक पैरक आभूषणमे नाट्यशास्त्रकार **नूपुर, किंकिणी रत्नजालक तपासघोष कटक** (बाजवला कारा)क उल्लेख कयने छथि । सघोषकटक भीतरसँ फोक होइत छल होयतैक तथा ओहिमे कंकड़ देल रहैत होयतैक जाहिसँ गतिक अनुरूप ई गुन्जायमान होइत रहैत होयतैक । जाँघक हेतु नाट्यशास्त्रकार **पादपात्र** नामक आभूषणक तथा पैरक आङ्गुरक हेतु **अंगुलीयकक** विधान कयलनि अछि जे सम्भवत: आधुनिक **बिछिया** छल होयत ।[151]

महिलालोकनिक प्रसाधन विन्यासकें सेहो **भरत** हुनक विभूषणेक अन्तर्गत परिगणित कयलनि अछि। नाट्यशास्त्रमे कहल गेल अछि जे ललाट पर **शिखिपत्र, वेणी पुच्छ** तथा कुसुमसदृश **ललाटतिलकक** रचना नानाशिल्प प्रयोजित होमक चाही ।[152] **शिखि पत्रकें** अभिनव भारतीक आधारपर **सुरेन्द्रनाथदीक्षित** कहने छथि जे ई मयूर पिच्छक आकारक विचित्र वर्णक मणि द्वारा बनाओल जाइत छल तथा कर्णावतंस होइत छल ।[153] भौंहक उपरका भागमे कुसुमाकृति रचना करबाक उल्लेख '**भ्रूकक्षोपरि गुच्छश्च कुसुमानुकृति भवेत्**'सँ स्पष्ट होइछ । अवश्ये भौंहकें सेहो नारीलोकनि सजबैत छलीह । कपोलक प्रसाधनमे **तिलक** ओ **पत्ररेखाक** उल्लेख भेल अछि । आँखिमे **अंजन** करबाक तथा

ठोरकें रंजित करबाक उल्लेख सेहो भेल अछि । भरतक अनुसार दाँतकें विभिन्न रंगसँ रंजित कऽ अलंकृत करबाक विधानक सेहो उल्लेख भेल अछि । तथापि अगिला भागमे अवस्थित चारिगोट दाँतकें शुभ्र रखबाक उल्लेख अछि । रंजित लाल अधर-पल्लवक मध्य शुभ्र दंतपंक्तिसँ नारीक हास्य अत्यन्त मधुरतासँ स्फुरित होइत छैक । तें भरत दाँतकें एक कमलाभ रंगसँ रंगबाक विधान कयलनि अछि । अधर पल्लवक प्रभा नवपल्लव सदृश ताम्र वर्णक होयबाक विधान कयल गेल अछि ।[154]

नारीक पैरक आभूषणक वर्णनक क्रममे **भरत** पैरक अउँठामे तिलकक विधानक उल्लेख कयने छथि तथा अशोकक पल्लव सदृश रक्तवर्णक **आलक्तक** रागक प्रयोगक पैरमे करबाक विधान कयने छथि ।[155] एहि तरहें भरतक भूषण-विधानसँ ई परिलक्षित होइछ जे **भरत** अलंकारक अन्तर्गत वेशभूषा प्रसाधन तीनूक संहतिकें समेटने छलाह । भरतक आभूषण विधान नारी सौन्दर्यक अनुसारिणी छल । तत्कालीन समाजक समृद्ध जीवनमे नानाविध भूषण ओ प्रसाधनक प्रयोग होइल छल ।

नारीक विविध अंग-उपांगक हेतु नाना वर्ण आ आकारक कलात्मक आभूषणक विधान **भरत** नारी सौन्दर्यक भावानुकूल ओ रसानुकूल समृद्धिक हेतु कयने छथि । नारीक शरीरक वेश आभरण तथा केशविन्यासक द्वारा विशिष्ट जाति ओ विशिष्ट देशवासिनी महिलाक परिचय उपस्थित करब सेहो हिनक अन्यतम अभीष्ट रहल अछि । स्वभावत: एहि विधानक मूलमे जाति भेद ओ देश भेदक अनुरूप वेश-प्रकृति, आभरण-परिधानक कौशल एवं केशरचनाक सौन्दर्यक विशिष्टताक विवरण सेहो भरतक दृष्टि देखि पड़ैछ ।

आचार्यअभिनवगुप्त उपर्युक्त तीनू शब्दक बहुत अर्थपूर्ण व्युत्पत्ति कएलनि अछि । जे हृदयकें व्याप्त कऽ लिअय, आविष्ट कऽ लिअय, सैह वेश थिक । केशक मनोहारी रचनाविधि सेहो वेशे थिक । आभरण द्वारा चारू दिशिसँ कान्तिक आभरण अथवा पोषण होइत अछि । अतएव **शिर** अथवा **व्याल** आदि आभूषण अथवा आभरण होइत अछि । क्षुरकर्म द्वारा ललाट पर **अलक** अथवा **ककुरिया केशक** रचना होइत छैक आ परिच्छद शरीरकें चारू दिशिसँ आच्छादित करऽवला विचित्र वस्त्रक योगसँ सम्पन्न होइछ । नारीक शरीरक साज-सज्जाक रचना एही सब विधिसँ प्रधानत: सम्पन्न होइत अछि ।[156] **आचार्य भरतक** स्पष्ट उक्ति छनि जे–

देशजातिविशेषेण देशानामपि कारयेत । वेषं तथा चाभरणं क्षुरकर्मपरिच्छदम् ॥
अदेशजो हि वेषस्तु न शोभां जनयिष्यति । मेखलोरसि बन्धेच्च हास्यायैवोपजायते ॥[157]

अर्थात् जेहन देश तेहन वेशक अवधारणा भारतीय नाट्यशास्त्रोक कालमे युगीन सत्य जकाँ परिगृहीत छल ।

आचार्यभरत जाति ओ देशक अनुरूप जे नारीवेश विन्यासक वर्णन कयने छथि

ताहिमे वस्त्र-आभूषण आ प्रसाधन तीनूक विशिष्टताकेँ अन्तर्भुक्त कयने छथि । एहि वर्णनसँ वेशभूषाप्रसाधन अनेकशः कोटिक निर्वचन होइछ । वेशकेँ भरत तीन प्रमुख कोटिमे विभाजित कयने छथि– **शुद्ध, विचित्र** आ **मलिन** । हिनक ई विभाजन वेशधारण करबाक समय तथा जातिविशेषपर आधृत बुझना जाइछ जेना धर्मपूर्ण कार्यमे विवाहादिमे जे वेश लोकस्वभावतः धारण कयल जाइछ सएह शुद्ध वेश थिक । कञ्चुकी, अमात्य, सेठ, सिद्ध, विद्याधर, वर्णिक, पंडित, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा स्थानीय व्यक्तिक हेतु शुद्ध वेश धारण करबाक विधान कयल गेल अछि । देव, दानव यक्ष, गन्धर्व राक्षस, राजा तथा कर्कशलोकनिक वेश विचित्र प्रकृतिक कहल गेल अछि । उन्मत, प्रमत, नीच ओ व्यसनीक वेशकेँ मलिन कहल गेल अछि । अवस्था विशेषमे शुद्ध आ विचित्र वेशोक समायोजन कयल जा सकैछ मुदा मलिन वेशधारीक वेश प्रत्येक अवस्थामे मलिने रखबाक विधानक उल्लेख भेल अछि ।[158]

नाट्यशास्त्रमे दिव्यांगनालोकनिक वेशविन्यासक विशद् वर्णन कयल गेल अछि । एहिमे कहल गेल अछि जे विद्याधरी, यक्षिणी, अप्सरा, नागकन्या, ऋषि कन्या, देवकन्या आदि अपन अपन वेशेसँ भिन्न प्रतीत होइत छथि । वैह स्थिति सिद्ध गन्धर्व, राक्षस तथा असुर पत्नी ओ दिव्य मानुषीमे सेहो होइछ । सिद्ध गन्धर्व, राक्षस, असुरपत्नी तथा दिव्य नारीक माथपरक केशाग्र बान्हल रहैछ तथा ओहिमे प्रचुर मात्रामे मोती जटिलता कयल रहैछ । विद्याधरीक वेष ओ परिच्छद शुद्ध होइत अछि । यक्षिणी एवं अप्सराक आभरण रत्न जटित होइत अछि । केशविन्यास हिनकालोकनिक सम होइछ तथापि यक्षिणी अपन केशमे शिखाक योजना कयने रहैत छथि । दिव्य एवं नाथस्त्रीक केशविन्यास विधि अत्यन्त आकर्षक होइत अछि । ओ मुक्तामणि मंडित फणाकार केश-गुच्छक रचना करैत छथि । मुनिकन्याक केशविन्यास एवं आभरणक विधि अत्यन्त सरल तथा वन्य प्रकृतिक अनुकूल होइत अछि । ई लोकनि शिरमे एकगोट वेणी मात्र धारण करैत छथि तथा भूषण-विहीना होइत छथि । सिद्धलोकनिक नारीक मण्डन मुकता ओ भरतकक आभरणसँ होइत अछि । ई सभ पीतवस्त्र धारण करैत छथि । गन्धर्वी लोकनि पद्मराग मणिसँ निर्मित आभूषण पहिरैत छथि तथा **कुसुमी लाल** रंगक वस्त्र धारण करैत छथि । राक्षसीलोकनिक भूषण इन्द्रनीलमणिसँ बनल रहैत अछि । हिनकालोकनिक दाँत चमकैत तथा वस्त्र कारी रंगक होइत अछि । देवताक स्त्रीलोकनिक आभरण **वैदूर्यमणि** तथा **मोतीसँ** बनल रहैछ । ई लोकनि सुग्गाक कोमल पंख सदृश **हरित वर्णक वस्त्र** धारण करैत छथि । कखनो कखनो दिव्य तथा **बानर** नारीलोकनिक परिच्छद सेहो नील वर्णक होइत छैक आ आभूषण **पुष्परागमणि** तथा **वैदूर्यमणिसँ** निर्मित । दिव्यांगना लोकनिक वेश-विन्यासक एहिवर्णनसँ तत्कालीन समाजमे प्रचलित विविध रंगक वस्त्र, आभूषण, केशविन्यास आदिक प्रचुर उल्लेख भेटैत अछि ।[159]

नाट्यशास्त्रमे पार्थिव नारीक वेश, आभरण तथा परिच्छदक सम्बन्धमे सेहो विलक्षणताक विपुल विधान निर्देशित अछि । एहि विधानक योजनाक क्रममे **भरत** विभिन्न प्रदेशक नारी वस्त्राभूषण प्रसाधनक विशिष्टताकेँ द्योतित कयलनि अछि तथा एहिसँ वस्त्राभूषणप्रसाधनक तत्कालीन विशिष्ट विधि ओ शब्दावलीक परिचय भेटैत अछि । नाट्यशास्त्रमे कहल गेल अछि जे आवन्ती देशक युवतीलोकनिक शिरपर **कुन्तल युक्त अलक** होइत छनि । गौड़ देशक स्त्रीकवेणीमे **शिखापाशक** रचना रहैत अछि । आभीर युवती लोकनि दुइ गोट **बेणीसँ** केशक रचना करैत छथि । हिनका लोकनिक वस्त्र **नीलवर्णक** होइत छनि तथा ई वस्त्रसँ केशकेँ झँपने रहैत छथि । पूर्वोत्तर देशक स्त्रीलोकनिक **शिखंडक** माथपर उठल रहैछ । ई लोकनि केशसँ लऽ कऽ पैर धरि अपन शरीरकेँ परिच्छदसँ झँपने रहैत छथि । दक्षिण देशक स्त्रीलोकनि **उल्लेख** नामक आभरण पहिरने रहैत छथि तथा ललाटपर गोल **तिलकक** रचना कयने रहैत छथि । गणिकालोकनि अपना इच्छाक अनुरूप मण्डन करैत छथि ।[160]

आहार्य अभिनयमे अङ्गरचनाक विशेष महत्त्व अछि । **आचार्य भरत** अंगरचनाक वर्णनक क्रममे विभिन्न प्रकारक रंगक निर्माणक विधिक उल्लेख कयलनि अछि । हिनका मतेँ चारि गोट स्वाभाविक रंग अछि– **नील, सित** (उज्ज्वल) **पीत** आ **रक्त** (लाल) । नील वर्ण सर्वाधिक बलवान अछि । नील वर्ण ओ सित वर्णक योगसँ **पाण्डुवर्ण** बनैत अछि । सित आ रक्त वर्णक संयोगसँ **पद्म वर्ण** बनैत अछि । पीत आ नील वर्णक संयोगसँ **हरित्त वर्ण** बनैत अछि । नील आ रक्त वर्णक संयोगसँ **कषाय वर्ण** बनैत अछि । रक्त आ पीत वर्णक संयोगसँ **गौर वर्ण** बनैत अछि । एही तरहेँ संयोगज वर्ण तथा विभिन्न उपवर्णक सेहो निर्माण कयल जा सकैछ ।[161]

वर्णक एहि समाहारसँ ज्ञात होइछ जे भरतकालीन भारतवर्षमे रंगनिर्माण ओ रंजनक कार्य अत्यन्त उन्नत छल । अवश्ये वस्त्रकेँ रंजित करबाक कला सेहो सुविकसित होयत । क्षुरकर्म द्वारा नारीकेँ अलंकृत करबाक उल्लेखक संगहि पुरुषक केशविन्यासक विविध विधिक सेहो नाट्यशास्त्रमे अभिलेख भेटैत अछि । **भरत** पृथकसँ श्मश्रुकर्मक विवेचना कयने छथि । हिनका अनुसार श्मश्रु चारि प्रकारक कहल गेल अछि– **शुक्ल, श्याम, विचित्र** तथा **रोमश** । **कुञ्चित केशक** उल्लेख सेहो भेटैत अछि । नेनाक शिरपर शिखा होयबाक उल्लेख भेल अछि । विदूषककेँ चानिपर उड़ल केशवला (खल्वाट) स्वरूपमे उपस्थापित करबाक उल्लेख अछि । चेटकेँ त्रिशिख कहल गेल अछि । एहि तरहेँ श्मश्रुकर्ममे केशरचनाक विविध पक्षक उद्घाटन भेल अछि ।

आहार्य अभिनयक क्रममे परिच्छदक अतिरिक्त विभिन्न प्रसंगमे विभिन्न प्रकारक वस्त्रक सेहो उल्लेख भेटैछ जेना– **चीरवल्कल चर्माणि ताप सानां तु योजयेत्**[162] अर्थात् तापसलोकनि **चीर वल्कल** (वृक्षक छाल) तथा **चमड़ासँ** बनल वस्त्र धारण करथि ।

अमात्यानां कञ्चुकिनां तथा श्रेष्ठिपुरोधसाम् । वेष्टनं बन्धपट्टादि प्रतिशीर्षाणि कारयेत्[163]
अर्थात् मंत्री **कंचुकी**, सेठ आदिकें **वेष्टन, बन्धपट्ट प्रतिशीर्ष** इत्यादि विशिष्ट वस्त्र धारण करबाक चाहियनि । एहिमे प्रतिशीर्ष संभवतः पगड़ीक पर्याय छल ।[164]

एहि तरहेँ भारतीय नाट्यशास्त्रमे वेशभूषाप्रसाधनक व्यापक विवेचना भेल अछि । नाटकक आहार्य अभिनयक हेतु आवश्यक एहि वस्तुक वर्णनक क्रममे **आचार्य भरत** एकर विभिन्न प्रकार भेदक पुष्कल निवेश ओ वर्गीकरण कयलनि अछि । तथापि नाट्य संदर्भमे **भरत** वेशभूषा आ प्रसाधन तीनूकें अलंकारक अन्तर्गत अनुगुंफित रखलनि आ स्वभावतः हिनक दृष्टिमे वेश भूषा ओ प्रसाधन तीनू अंगसज्जाक सामग्रीएक रूपमे परिगृहीत भेल अछि ।

महाभाष्य– पतञ्जलिक महाभाष्यसँ सेहो भारतीय वेशभूषा प्रसाधनक अत्यन्त सूक्ष्म विवरण भेंटैत अछि । एहिमे वस्त्रक अवयवक रूपमे **वस्त्रान्त** ओ **वसनान्त** शब्द प्रयुक्त भेल अछि । एहिसँ पैघ वस्त्रक अनुमान होइछ । **वस्त्र, वसन, चीर, चीवर** ओ **चेलक** परिधानीय वस्तुक विभिन्न शब्दावली छल । **वस्त्र** ओ **वसन** सामान्यतः सीअल वा बिन सीअल भऽ सकैत छल । **चीर** बिना सीअल कम चाकर, खण्डित ओ छोट वस्त्र होइत छल । **चीवर शब्द** सन्यासीक वस्त्रक हेतु प्रयुक्त छल । जैन ओ बौद्ध भिक्षुकलोकनिमे ई शब्द विशेष प्रचलित छल । **चेल** सीअल ओ बिन सीयल पहिरल वस्त्रक लेल प्रयुक्त होइत छल । सामान्य वस्त्रक अर्थमे **पट** शब्दक सेहो व्यवहार छल ।

वस्त्र **कार्पास, उमा, भंगा, कौशेय** आओर **उर्णा**क तन्तुसँ बनाओल जाइत छल ।- भाष्यकार **कार्पासक** हेतु मृदु विशेषणक व्यवहार कयलनि अछि । ओ **कार्पास**सँ वस्त्र तैयार करबाक विभिन्न प्रक्रियासँ अवगत छलाह । ओ कार्पासकें **पिचव्य** कहलनि अछि । उमा आओर भंगासँ बनल वस्त्र **औम** अथवा **औमिक** तथा **भाङ्ग** आओर **भांगीन** कहल जाइत छल । **ऊर्णा** अथवा ऊनसँ बनल वस्त्र **और्ण** अथवा **और्णक** कहाइत छल । **कोशसँ** बनल वस्त्रकें **कौशेय** कहल जाइत छल । कोश वस्तुतः कृमिकोश होइत छल । ई कृमि हरियर पात खा कऽ जीबैत छल आ कोश प्रजनन करैत छल । भाष्यकार कोशक बिकारकें **कौशेय** कहलनि अछि ।

एहि चारू प्रकारक वस्त्रमे गुण अथवा अर्हताक दृष्टिसँ अन्तर रहैत छल । भाष्यकार कहलनि अछि जे जाहि तरहेँ वस्त्र बनबऽवला अधिक वस्त्र तैयार करैत अछि ओही प्रकारेँ ओहिमे श्रेष्ठताक अनवाक उद्योग सेहो करैत अछि । ओ चाहैत अछि जे हमर वस्त्र अधिक सूक्ष्म हो । सूक्ष्मतर वस्त्र बनयबाक बात भाष्यकार बेर-बेर कहलनि अछि । ओ कहलनि अछि जे वस्त्रक वस्त्रसँ स्पर्द्धा होइत अछि अर्थात् वस्त्र बनबऽवला वस्त्रक विषयमे दोसर वस्त्र निर्माणकर्त्तासँ स्पर्द्धा करैत अछि ।

एहिसभ उद्धरणसँ प्रमाणित होइत अछि जे **भाष्यकार**क युगमे सूक्ष्म वस्त्रकें बनेबाक कला बहुत उन्नत छल आ एहि दिशामे जनरूचि सेहो बहुत जाग्रत छल । पहिरबामे दूनू प्रकारक वस्त्रक व्यवहार होइत छल– बिना सीअल आ सीअल । तीक्ष्ण सूइसँ सूक्ष्मतर वस्त्रक सिआइ कयल जाइत छल । फाटल वस्त्रकें **रफू** करबाक प्रचार भाष्यकारक समयमे छल ।

काशिकाकार शरीरकें वस्त्रयुगिन कहलनि अछि अर्थात् वस्त्र युगसँ शरीरक शोभा बढ़ैत अछि । ई कथा एहि बातक प्रमाण अछि जे लोक सामान्यतः दू टा वस्त्र धारण करैत छल । ई वस्त्र **उत्तरीय** आ **अन्तरीय** कहल जाइत छल । **अन्तरीय** शरीरमे पहिरऽवला वस्त्र छल आ उत्तरीय **ओढ़ऽवला** । ई दूनू मीलि **उपसंख्यान** कहल जाइत छल । सामान्यतया **उत्तरीय** वस्त्र छोट होइत छल आ **अन्तरीय** पैघ । जेना कि नामसँ स्पष्ट अछि, अन्तरीय वर्तमान **धोती** अथवा **साड़ीक** स्थानपर आ उत्तरीय **चद्दरि** अथवा **दुपट्टाक** स्थानपर धारण कयल जाइत छल । धोती आओर साड़ीकें सामान्यतः **शाटक** कहल जाइत छल । बिना सीअल निश्चित परिमाणक वस्त्र जेना **चद्दरि** सेहो **शाटक** कहबैत छल । शाटकक प्रचार बहुत अधिक छल । रंगीन वस्त्रक स्मरण करितहिँ **शुक्लशाटी**क चित्र भाष्यकारक समक्ष आबि जाइछ । ई एहि तथ्यक संकेत करैछ जे **शाटक** पुरुषक अनिवार्य आच्छादन छल आओर **शाटी** स्त्रीक । **शाटक** पैर धरि नाम पहिरल जाइत छल तेँ ओकरा **आप्रपदीन** कहल जाइत छलैक । कन्या सभ **अधरोरूक** अथवा छोट **लहङ्गा** पहिरैत छलीह । शाटक, शाटी आओर अधरोरूकक गीरहकें **नीवी** कहल जाइत छल । जाहि स्थानपर नीवी बान्हल जाइत छल ओहि स्थानकें **उपजीवी** ओ उपजीवीक लगवला वस्तु **औपनीविक** कहल जाइत छल ।

शाटकक अतिरिक्त **प्रावार** अथवा **प्रावारक**क उपयोगी उत्तरीय वस्त्रक रूपमे होइत छल । प्रावारकें **प्रवर** सेहो कहल जाइत छल । प्रावार चद्दरि वा शालकें कहल जाइत छल **वृहतिका** सेहो आच्छादन छल जे प्रवारे जकाँ कान्हसँ ओढ़ल जाइत छल । **वृहतिका** प्रावारसँ पैघ होइत छल आ डाँड़सँ नीचा ठेहुन धरि पहुँचैत छल । संभव अछि ई नाम सीअल वस्त्र **अचकन**क पूर्वज हो । ई ठेहुन धरि नाम कुर्त्ता सन वस्त्र छल । **पतंजलि** वस्त्र आओर कम्बलक संग **वृहतिका**क उल्लेख कयलनि अछि आ जाहिसँ ई लम्बा चद्दरि सन **ओढ़ना** लगैत अछि । **प्रावारक**क एक प्रभेद **वर्णका** सेहो छल । तान्तव अर्थमे **वर्णका** शब्द प्रचलित छल अन्यथा **वर्णिका** शब्दक व्यवहार होइत छल । **भाष्यकार** ओ **कुतप** वस्त्रक चर्चा कयलनि अछि ओ कुतप वस्त्र पहिरऽवलाकें कुतप सौश्रुत कहलनि अछि । कुतप वस्त्र हल्लुक गर्म ऊनी शाल होइत छल ।

पहिरलाक बाद वस्त्रकें ठीकसँ तह लगा कऽ राखि देबाक प्रथा छल जाहिसँ ओ मैल नहि देखि पड़य । वस्त्र अनेक रंगक होइत छल । रंग विरंगक वस्त्रवला **देवदत्त**कें

भाष्यकार विचित्राभरण कहलनि अछि । **भाष्यकार नील, मंजिष्ठा, शकल कर्दम, काषाय, हरिद्रा, पीत** आदि अनेक रंगसँ वस्त्रकेँ रंगल जयबाक उल्लेख कयलनि अछि । शुक्ल वस्त्रक प्रचार उच्च संस्कृत लोकमे अधिक छल । कखनहु **शुक्लत्तर** विशेषणक सेहो प्रयोग भेल अछि । **लाल वस्त्र** सेहो व्यवहारमे अबैत छल । **भाष्यकार** कहलनि अछि जे दू लाल वस्त्रक बीच राखल शुक्ल वस्त्र सेहो लाल देखबामे अबैछ ।

कम्बलक व्यवहार प्राचीन भारतमे बहुत छल । **शाटके** जकाँ कम्बलो निश्चित आकार ओ वजनक बनैत छल । सामान्यत: पैह कम्बल बिकाइतो छल आ एकरा **पण्यकम्बल** कहल जाइत छलैक । पण्यकम्बल ऊर्णापलशतम्‌सँ बनैत छल जकर वजन लगभग पाँच सेर होइत छल । एक कम्बलक ऊनकेँ **कम्बल्य** कहल जाइत छल । अत: **कम्बल्या ऊर्णाक** अर्थ पाँच सेर ऊन होइत छल । कम्बल बनयबाक योग्य सामान्य ऊन **कम्बलीय** कहाइत छल । कम्बल्य संज्ञा शब्द छल जे विशिष्ट परिमाणक द्योतक छल । कम्बल प्राय: शुक्ल वर्णक बनैत छल । शिष्टवर्गमे शुक्लवर्णीय कम्बलक प्रचार अधिक छल । **भाष्यकार** कम्बलकेँ **अजरिता** कहलनि अछि जकर अर्थ अछि नहि फाटऽवला । **कन्था** बहुत परिश्रमसँ बनाओल जाइत छल । एकरा लेल धैर्यक संग कला सेहो अपेक्षित छल । कन्थासँ सम्बद्ध वस्तु **कान्थिक** कहाइत छल । कन्थाक व्यापक प्रचार छल । कन्थाक विशेषणक रूपमे **चिल्कण** शब्द प्रयुक्त भेल अछि । अवश्ये **कन्था** बनयबाक कला उन्नत छल ।

उपानह् वासस्क अतिरित वेशक पूर्णताक हेतु आवश्यक मानल जाइत छल । ई चर्म आ काष्ट दूनूक बनैत छल । **भाष्यमे औपानध्य दारू** तथा **औपानत्य चर्म** दुहुक उल्लेख अछि । ब्रह्मचारी तथा वैश्वानस् दारुक उपानह धारण करैत होयताह । उपानत् अनुपदीन होइत छल अर्थात् ई पैरक नापसँ तैयार कयल जाइत छल । वेशक संग उपानह भूषाक लेल सेहो उपयोगमे आनल जाइत छल । नीक आकार, बनावटिक मजगुती, सुन्दरता ओ कोमलता ओकरा आकर्षक बना दैत छलैक । तेँ किछु लोककेँ उपानत्‌क प्रति विशेष आसक्ति रहैत छलैक । **भाष्यमे** एहन व्यक्तिकेँ जकरा **छत्र** ओ **उपानह** प्रिय हो **छत्रोपानहप्रिय** कहल गेल अछि । **उपानह** लकड़ीक एहनो बनैत छल जाहिमे छिद्र रहैत छल आ आधुनिक चप्पलक पट्टाक समान मूंजक रस्सी ओहि छिद्रमे एहि तरहेँ पैसाओल जाइत छल जे ओ पैरकेँ सम्हारि सकय । एहि प्रकारक उपानह आइयो कालिह देहातमे पहिरल जाइछ । चमड़ाक जूतामे जे काँच चमड़ाक बनाओल जाइत छल, कोमलता उत्पन्न करबाक हेतु **तिलक कल्क** (तेलक नीचा जमल मैली) लगाओल जाइत छल ।

यष्टि आत्मरक्षाक साधन तँ रहबे करय, वेष भूषाक हेतु सेहो उपयोग अबैत छल । लोक सदैव हाथमे **यष्टि** लऽ चलैत छलाह । **यष्टि** लऽ कऽ चलऽबलाकेँ **यष्टिक** कहल जाइत छल । **दण्ड** यष्टिसँ पैघ होइत छल । ब्रह्मचारीक दण्ड पलाशक होइत छल । जकरा **आषाढ़** सेहो कहल जाइत छल । दण्डक लेल **साड** शब्द सेहो व्यवहृत छल ।

पाणिनि ओ **पतञ्जलि** दूनूमे एहि प्रकारक अनेक उल्लेख भेटैत अछि जाहिसँ तत्कालीन सौन्दर्यप्रियताक पता लगैत अछि । **प्रावीण्यक** आधारपर व्यक्तिक दुइ वर्ग छल– नागरक आओर प्राकृत । अलंकार द्वारा शरीरकेँ सजयबाक दिस लोकक विशेष ध्यान रहैत छल । पुरुष आ स्त्री दूनू अलंकार धारण करैत छलीह । अलंकार प्राय: सुवर्णक होइत छल । ओना **मणि** ओ **मुक्ता** सेहो धारण कयल जाइत छल तथापि ई धनिके वर्ग धरि सीमित छल । **मणिकार** (आभूषण बनबय ओ बेचयवला) **वैकटिक** (हीरा, मणि काटयवला ओ तराशयवला) रंजक विशेषत: **निलकुसुम्भ रंजक, मालाकार** ओ **सौगन्धिक** सौन्दर्यसज्जामे सहायक छलाह ।

पुरुषक आभूषणमे **अंगद, कुण्डल** ओ **किरीट** प्रमुख छल । अंगद भुजामे पहिरल जाइत छल । कुण्डल वर्तुलाकार कर्णाभूषण छल । किरीट शिरोभूषण छल । **ग्रैवेयक** ग्रीवा वा कण्ठमे पहिरल जाइत छल । ई आधुनिक **कण्ठाक** प्रतिनिधि छल । स्त्री **अंगुलीय, रूचक कटक, वलय, स्वस्तिक, कुण्डल, वध्र** ओ **पुटक** पहिरैत छलीह । **कटक** बाँहिमे पहिरल जाइत छल । **स्वस्तिकक** आकारक स्वस्तिककेँ कानमे पहिरबाक प्रथा छल । **वध्र** सोनाक मजगूत माला जकाँ होइत छल जे कण्ठ तथा कटिमे पहिरल जाइत छल । **कर्णिका** कानमे पहिरल जाइत छल । **ललाटिका** माथपर लटकऽवला सोनाक तिलक छल । **कर्णवेष्टक** कानक आभूषण होइत छल । **स्त्रक** पुरुष आ नारी दूनू पहिरैत छलाह । ई माला होइत छल । मालाधारीकेँ **स्त्रग्वी** कहल जाइत छल । स्नान ओ अनुलेपनक बाद माला पहिरल जाइत छल । माला सुगन्धित फूलसँ बनैत छल । **उत्पलमालाक** प्रयोग खूब छल ।

केश वेशक प्रति लोकक रूचि बहुत अधिक छल यद्यपि दाँत ओ ठोरक शृंगार सेहो कयल जाइत छल । शृंगारमे आसक्त व्यक्तिक नामकरण हुनक असक्तिक आधारपर होइत छल । केशसज्जामे आसक्त व्यक्तिकेँ **केशक,** दाँत ओ ठोर सजयबामे तत्परकेँ **दन्तौष्ठक** तथा नहक शृंगारमे आसक्त व्यक्तिकेँ **केशनखक** कहल जाइत छल ।

पुरुष ओ स्त्रीक केशसज्जामे अन्तर छल । किछु पुरुष केश कटबितहिँ नहि छलाह । ओ जटिल होइत छलाह । तापस तँ जटिल होइतहि छलाह अनेक अध्यापक, नट तथा सामान्यो जन केश नहि कटबैत छलाह । नटकेँ पतञ्जलि **सर्वकेशी** कहलनि अछि । किछु लोक केश मुड़ा लैत छलाह मुदा **शिखा** रखिते छलाह । किछु लोक समटा केश कटा लैत छलाह । ई लोकनि **जटी, शिखी** ओ **मुण्डी** कहल जाइत छलाह । केश कटेबाक क्रिया **वपन** होइत छल । लोक दाढ़ी सेहो बनबैत छलाह । दाढ़ी बनबयवला अपना शिल्पमे विशेष दक्ष होयबाक प्रयत्न करैत छलाह । नागरक नापित ओ राजनापित चतुर नापितक संज्ञा छल । केश बनेबाक ढंग एतेक भिन्न-भिन्न छल जे केश देखि कऽ मनुष्यकेँ चीन्हि लेल जाइत छल । केश द्वारा चीन्हल गेल व्यक्ति **केशचंचु** अथवा

केशचण कहल जाइत छलाह । जे व्यक्ति केश नहि कटबैत छलाह से **जूड़ा** जकाँ बान्हि लैत छलाह । एहन लोक **केशचूड़** कहल जाइत छलाह ।

केशाक समूहकेँ **कैश्य** अथवा **कैशिक** कहल जाइत छल । कखनो कखनो ओकर लट आगू निकालि लेल जाइत छल । स्त्रीलोकनि केशकेँ **लटुरिया** बनाय **लट** छिलका लैत छलीह । हिनका **प्रागुल्फा** कहल जाइत छल । जूड़ाकेँ बन्हबाक कला प्रदेशमे भिन्न-भिन्न छल । केश विन्यासमे सीथकेँ **सीमन्त** कहल जाइत छल । सीमन्त स्त्रीक केश सज्जाक आवश्यक अंग छल । तेँ स्त्रीकेँ **सीमन्तिनी** कहल जाइत छल । स्त्रीलोकनि **कबरी** बनबैत छलीह आ **चूड़ा** सेहो । चूड़ा माथक ऊपर उठल रहैत छल आ कबरी पाछू दिस । दुनू पुष्पसँ मण्डित होइत छल । **मल्लिका** ओ **चम्पकक** **पुटकक** चर्चा भाष्यमे भेल अछि । नेत्रमे **काजर** वा **अंजनक** प्रयोग होइत छल । अंजन लागल नेत्र **अंकत** कहल जाइत छल ।

स्नान ओ **अनुलेप** सेहो प्रचलित छल । स्नानसँ पूर्व **तेलक मालिश**, **उबटन** ओ तकर बाद **चन्दनादि** सुगन्धिद्रव्यक लेपनक प्रथा छल । धनिक परिवारमे एहि कार्यक हेतु **उत्सादक**, **उद्वर्तक परिषेचक**, **अनुलेपक**, **विलेपक**, **प्रलेपक** आदि परिचारक नियुक्त छलाह । **किशर**, **नलद**, **तगर**, **गुग्गुल्य**, **उसीरक** आदि सुगन्धिद्रव्यक उल्लेख भाष्यमे भेल अछि । **शलालु** एकटा सुगन्धिद्रव्य छल जकरा बेचएवला **शलालुकी** कहबैत छल । **चन्दनक** प्रयोग सेहो प्रचुर होइत छल ।[165] एहि तरहेँ **भाष्यकारक** युग धरि भारतीय वेश-भूषा-प्रसाधन अत्यन्त उच्च कोटिक अवस्था धरि पहुँचि गेल छल ।

कोषग्रन्थ– शब्दावली संचयनक दृष्टिजे **कोषग्रन्थ** अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । लोकजीवनमे व्याप्त शब्दावलीकेँ रूपवैविध्य एवं पर्यायक आधारपर एकत्र करब एहि प्रकारक ग्रन्थक उद्देश्य रहल अछि । संस्कृतोमे अनेक प्रकारक कोषग्रन्थ लिखल गेल मुदा उत्तमता ओ व्यापकताक दृष्टिजे **अमरकोष** विशिष्ट मानल जाइत रहल अछि । एहि ग्रन्थमे वर्णित वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक शब्दावली आधुनिक वेशभूषाप्रसाधनक शब्दावलीक विकास क्रमक महत्त्वपूर्ण कड़ी थिक । **अमरकोशक** मनुष्य वर्गमे वस्त्रक विभिन्न प्रभेद, आभूषणक विभिन्न प्रकारक तथा प्रसाधनक अनेक सामग्रीक उल्लेख भेल अछि । तथापि एहिमे वस्त्राभूषणप्रसाधनसँ सज्जितक हेतु निर्दिष्ट शब्दावलीकेँ देखला उत्तर ई स्पष्ट होइछ जे सम्पूर्णतामे शरीरकेँ सुसज्जित रखने मानल जाइत छल जखन तीनूक समंजित साजसँ ओकरा सजा लेल जाइत छल । एहन सुसज्जाक समाहारे आकल्प **वेश**, **नेपथ्य**, **प्रतिकर्म**, **प्रसाधन** कहल गेल अछि– **आकल्पवेषौ नेपथ्ये प्रतिकर्म प्रसाधनम्** ।[166]

वेशभूषाप्रसाधनसँ सुसज्जित व्यक्तिक हेतु **अलंकृत**, **अलङ्करिष्णु**, **मण्डित**, **प्रसाधित**, **अलंकृत**, **भूषित**, **परिष्कृत** आदि शब्दक उल्लेख भेल अछि । विन्यस्त शरीर सज्जासँ उत्पन्न शोभासँ युक्त व्यक्तिकेँ **बिताङ**, **भ्राजिष्णु**, **रोचिष्णु** कहल गेल अछि ।[167]

एहि शब्दावली सभक विकल्प ओ पर्याय रूपमे व्यवहारसँ स्पष्ट होइछ जे वेशभूषा प्रसाधन तीनूक समंजनेसँ शरीर सज्जाकेँ पूर्ण मानल जाइत छल ।

वस्त्र बनयबाक साधनकेँ एहिमे **वस्त्रयोनि** कहल गेल अछि । वस्त्रयोनिक अन्तर्गत त्वक् (वृक्षक त्वचा), फल (वृक्षक फल), कृमि (कीटज तन्तु) तथा रोम (जन्तुक केश)केँ परिगणित कराओल गेल अछि । त्वक्वस्त्रमे क्षौमादि (तीसी आदिक छाल)सँ निर्मित वस्त्र, वृक्षक फलसँ निर्मित वस्त्रमे **कपास**, **खादर** आदिसँ निर्मित वस्त्र, कृमिकोशसँ निर्मित वस्त्रमे **रेशमी** वस्त्र तथा रोमज वस्त्रमे **ऊनी** वस्त्रकेँ राखल गेल अछि ।[168]

नव वस्त्रकेँ **अनाहत**, **निष्प्रवाणि**, **तन्त्रक** ओ **नवाम्बर** कहल गेल अछि । धोअल जोड़ा धोतीकेँ **उद्गमनीय** कहल गेल अछि । धोअल रेशमी कपड़ाकेँ **धौतकौशेय** कहल गेल अछि । ई बेशकीमती होइत छल तेँ एकर अपन नाम **बहुमुल्य**, **महाधन** सेहो छल । ओढ़नीक हेतु **दूकूल** शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ । **डा.पाण्डेयरामेश्वरप्रसादशर्मा** एकरा **मलमल** जकाँ उज्जर रंगक वस्त्र कहलनि अछि । पुरुष एकरा **उत्तरीयक** रूपमे तथा स्त्री **दुपट्टा** तथा **साड़ीक** रूपमे धारण करैत छलीह ।[169] कपड़ाक किनारीक हेतु **दशा** तथा **वस्ति** शब्दक उल्लेख भेल अछि । कपड़ाक लम्बाइकेँ **दैर्घ्य**, **आरोह** तथा चौड़ाइकेँ **परिणाह**, **विशालता** कहल गेल अछि । पुराण कपड़ाकेँ **अमरकोशकार** **पटच्चर**, **नक्तक** ओ **कर्पट** कहने छथि– **पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तक कर्पटौ** ।[170]

यैह **पटच्चर** शब्द आधुनिक **फटीचर** शब्दक रूपमे अर्थादेशक संग जीवन्त अछि । लत्ता शब्द **नक्तक-लत्तक-लत्तअ-लत्ता-लत्ता-पत्ता** शब्दक रूपमे देखि पड़ैछ । कपड़ाक हेतु **कर्पट-कप्पड़-कापड़-कपड़ा** शब्द भेटैत अछि ।[171] वस्त्रक हेतु **आच्छादन**, **वास**, **चैल**, **वसन**, **अंशुक**, **सुचेलक**, **पट** आदि शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[172]

अंशुक वस्तुतः अत्यन्त मोलायम ओ महीन वस्त्र होइत छल । ई रेशमक कीड़ासँ उत्पन्न होइत छल । एकर अनेक प्रकार छलैक– **पट्टांशुक**, **चलितांशुक**, **रक्तांशुक**, **चीनांशुक**, **नितम्बांशुक**, **कदलीदलांशुक** ओ **नीलांशुक** । **चलितांशुक** रेशमी दुपट्टा छल जे चलैत काल हवामे उधियाइत रहैत छल । **रक्तांशुक** लाल रंगक रेशमी वस्त्र छल जे विवाहादिक मांगलिक अवसरपर वरवधूकेँ आच्छादनार्थ प्रयुक्त होइत छल । चीन देशसँ आयातित रेशमी वस्त्र **चीनांशुक** कहबैत छल । **नितम्बांशुक** प्रायः साड़ी अथवा साया‍क प्रकृतिक वस्त्र छल । ई चुस्त होइत छल आ स्त्री अपन त्रिवलीसँ लऽकऽ जाँघ धरि एकरा कसिकऽ पहिरैत छली । **कदलीदलांशुक** केराक कोमल पात सदृश मोलायम रेशमी वस्त्र होइत छल । **नीलांशुक** नील रंगक रेशमी वस्त्र छल जे प्रायः गोर रंगक पुरुष अपन कान्ह पर दुपट्टा जकाँ धारण करैत छलाह ।[173]

सुचेलक महीन सूती वस्त्रक हेतु प्रयुक्त शब्द छल । **डा.पाण्डेयरामेश्वरप्रसादशर्मा**

उत्तरीयक फहराइत अग्रभागकेँ **चेलाञ्चल** कहलनि अछि ।[174] ओढ़बाक चद्दरि वा साधारण वस्त्रकेँ **पट** कहल जाइत छल । अपेक्षाकृत मोट प्रकृतिक सूती वस्त्रकेँ **पट** कहल जाइत छल । अपेक्षाकृत मोट प्रकृतिक सूती वस्त्रकेँ **शाटक** कहल जाइत छल, जकर आधुनिक रूप **शाटक-शाटिका-साडिआ-साड़ी** भेटैत अछि ।

ओढ़बाक वस्त्रक हेतु **अमरकोशमे** निचोल ओ **प्रच्छदपट** शब्द भेटैत अछि । अधोवस्त्रक हेतु **अन्तरीय, उपसंख्यान, परिधान** तथा **अर्धोशुक** शब्द भेटैत अछि । रल्लक ओ **कम्बल** प्रच्छदपटक रूपमे व्यवहृत छल । उर्द्धवस्त्रकेँ प्रावार, उत्तरासंग तथा **बृहतिका** कहल गेल अछि । स्त्रीक उर्द्धवस्त्रकेँ **संकान, उत्तरीय, चोल, कूर्पासक** कहल गेल अछि । उत्तरीय कान्हक उपरसँ नीचा दिस लटकैत वस्त्र छल ।[175] **कूर्पासक-कुप्पासअ** स्त्री ओ पुरुष दूनूक पहिरावा छल मुदा दूनूक पहिरावामे कनेक अन्तर छल । स्त्रीक हेतु ई **चोली** जकाँ बनैत छल आ पुरुषक हेतु **मिर्जई** जकाँ । एकर लम्बाई डाँड़ धरि होइत छल आ एहिमे बाहू नहि होइत छल ।[176]

ठंढा आ हवासँ बचबाक हेतु वस्त्रक प्रभेदकेँ **नीशार** कहल गेल अछि । कुलीन वधूलोकनिक **लहँगाकेँ** **चण्डातक** कहल गेल अछि । संभवतः आधुनिक **चड्डी** एकरे विकसित रूप हो । पैर धरि झुलैत वस्त्रकेँ **आप्रपदीन** कहल गेल अछि । चनवाक हेतु **वितान, उल्लोच, दूष्य** आदि शब्दक प्रयोग भेल अछि । **उल्लोच** शब्द परिवर्तित अर्थमे **उलेँच**मे जीवन्त भेटैछ । **दूष्य-धुस्स-धुस** आधुनिक प्रच्छदपटक प्रकारविशेषक रूपमे जीवन्त अछि । एकर अतिरिक्त **अमरकोशमे** वस्त्रक विभिन्न प्रकारक घर यथा **प्रतिसीरा, जवनिका, तिरस्करिणी** आदिक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[177]

आभूषणक हेतु अमरकोशमे **अलंकार**, आभरण, **परिष्कार**, **विभूषण**, मण्डन आदि शब्द भेटैत अछि । माथक आभूषणमे **मुकुट** ओ **किरीटक** उल्लेख अछि । **मुकुटमे** अनेक प्रकारक रत्न जटित कयल जयबाक उल्लेख भेटैछ । एहि मणि समकेँ **चूडामणि**, शिरोरत्न कहल जाइत छलैक । हारक सुमेरुकेँ तरल कहल जाइत छल । केशाक आभूषण **बालपाश्या, पारितथ्या** तथा ललाटक आभूषण **पत्रपाश्या, ललाटिका** कहल जाइत छल । कानक आभूषणमे **कर्णिका**, **तालपत्र**, **कुण्डल**, **कर्णवेष्टनक** उल्लेख भेल अछि । गर्दनिक आभूषणकेँ **ग्रैवेयक** कहल जाइत छल । नाम ग्रैवेयककेँ **लम्बन**, **ललन्तिका** कहल गेल अछि । सोनाक पैघ मालाकेँ **प्रालम्बिका** तथा छातीधरि नाम स्वर्णसूत्रक मालाकेँ **उरसूत्रिका** कहल जाइत छल । एहिमे मोती जड़ल रहैत छलैक । परिवर्तित अर्थमे आधुनिक भाषाक **सूति** (सूतिआ - सूत्रिका) सूत्रिकेसँ निष्पन्न बुझना जाइछ । हारक अनेक भेदक उल्लेख **अमरकोशमे** भेल अछि– **मुक्तावली** अथवा देवच्छन्द, **गुच्छ, गुच्छार्द्ध, गोस्तन, अर्द्धहार, माणवक, एकावली, नक्षत्रमाला** आदि । **मुक्तावली** अथवा **देवच्छन्द सौ लड़ीक मुक्ताक** हार होइत छल । **गुच्छ** 32 लड़वला, **गुच्छार्द्ध** चौबीस

लड़वला, **गोस्तन** चारि लड़वला, **अर्द्धहार** बारह लड़वला, **माणवक** बीस लड़वला तथा **एकावली** एक लड़वला हारकेँ कहल जाइत छलैक । सत्ताइसगोट लड़सँ युक्त मोतीक हारकेँ **नक्षत्रमाला** कहल जाइत छलैक ।[178]

गट्टाक आभूषणमे **आवापक, पारिहार्य, कटक** ओ **वलयक** उल्लेख भेल अछि । कटक ओ वलय नारीलोकनिक आभूषण छल । **कटक-कडअ-कड़ा / काड़ा** तथा **वलय-वलया-वलआ** वाला आधुनिक भाषामे जीवन्त अछि । बाजूबन्दक आभूषणमे **केयूर, अंगद**, हाथक आभूषणमे **कङ्कण** तथा आंगुरक आभूषणमे **अङ्गुलीयकक** उल्लेख भेटैछ । **कङ्कण-कागन-कङ्गन-कङ्ना** आधुनिक भाषामे भेटैछ । **अँठीपर** नाम लिखबाक प्रचलनक ज्ञान सेहो अमरकोशक **साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा** शब्दसँ होइत अछि । यैह **मुद्रा-मुद्रिका-मुन्द्रिका-मुनरिआ-मुनरी** शब्दक रूपमे आधुनिक भाषामे प्रयुक्त देखि पड़ैछ ।[179]

स्त्रीलोकनिक डाँड़क आभूषणमे **मेखला, काञ्ची, सप्तकी** तथा **रसनाक** उल्लेख भेल अछि । पुरुष लोकनिक करधनी **सारसन** तथा **शृंखला** कहल जाइत छल । पैरक आभूषणमे **पादाङ्गुद, तुलकोटि, मञ्जीर, नूपुर, हंसक, पादकटक, किंकिणी** तथा **क्षुद्रघण्टिकाक** उल्लेख भेल अछि जाहिमे अन्तिम चारि बाजसँ युक्त होइत छल ।[180] एहि तरहेँ **अमरकोशमे** आभूषणक विविध शब्दावलीक उल्लेख भेटैत अछि जाहिमे कतोक आधुनिको भाषामे तत्सम वा तद्भव रूपमे प्रचलित देखि पड़ैछ ।

अमरकोषमे प्रसाधनक विविध सामग्रीक सेहो संकेतिक उल्लेख भेल अछि । खासकऽ केशसज्जाक प्रति अमरकोशकारक संपृक्ति अत्यधिक बुझना जाइछ । सुन्दर केशसँ युक्त व्यक्तिक हेतु **केशव, केशिक** ओ केशी शब्दक उल्लेख भेल अछि । केशक हेतु **चिकुर, कुन्तल, वाल, कच, केश** ओ शिरोरुह शब्द भेटैछ ।[181] केशक, समूहक हेतु **कौशिक कैश्य, अलक** ओ **चूर्णकुन्तल** शब्द भेटैछ । ललाटपरक केशकेँ **भ्रमरक, काकपक्ष** ओ **शिखण्डक** कहल गेल अछि जे **जुलफी, बाबरी** आदिक हेतु प्रयुक्त शब्द छल । विन्यस्त केशकेँ **कबरी** कहल गेल अछि । नीक जकाँ धकड़िकऽ बान्हल संयत केशराशिकेँ **धम्मिल्ल** कहल गेल अछि । पुरुषक टीककेँ **शिखा** ओ स्त्रीगणक चोटीकेँ **चूड़ा-जूडा-जूड़ा** कहल गेल अछि । व्रतीलोकनिक ओझरायल केशराशिकेँ **जटा** तथा स्त्रीलोकनिक एहन केश सटा कहल गेल अछि । स्वच्छ गूहल केशकेँ **वेणी, प्रवेणी** कहल गेल अछि । स्वच्छ केशक समूहक हेतु **शीर्षण्य, शिरस्य, केशपाश, केशपक्ष, केशहस्त** आदि शब्द भेटैत अछि ।[182]

प्रसाधनपूर्वक शरीरकेँ सजयबाक प्रक्रिया परिकर्म, **अङ्गसंस्कार** कहल जाइत छल ।[183] शरीरकेँ साफ करबाक क्रियाक हेतु **मार्ष्टि, मार्जना, मृजा** शब्दक उल्लेख भेल अछि । उबटनसँ शरीरकेँ साफ करबाक क्रिया **उद्धर्त्तन, उत्सादन** कहल गेल अछि । शरीरकेँ सुवासित करबाक प्रक्रियाक हेतु **चार्चिक्य, स्थासक** ओ **प्रबोधन** शब्दक

उल्लेख भेल अछि । कपोल इत्यादिकेँ रंगबाक प्रक्रियाक हेतु **अनुबोध**, **पत्रलेखा**, **पत्राङ्गुलि** शब्दक उल्लेख भेल अछि । शिरक तिलकक हेतु **तमालपत्र**, **तिलक**, **चित्रक**, **विशेषक** आदि शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[184]

तिलकक हेतु **कुङ्कुम**, **लाह**, **लवंग**, **अगर**, **धूप लोहबान**, **कस्तूरी**, **श्रीखण्डचन्दन**, **रक्त चन्दन**, **जायफल** आदिक उल्लेख भेल अछि । **अमरकोश**मे एहि समस्त पदार्थक विभिन्न प्रभेदक परिगणना भेल अछि । लाहसँ **अलता** बनैत छल होयत जकर संकेत तकर पर्याय **अलक्तसँ** भेटैछ ।[185] लाहक अन्य पर्याय '**याव**' कहल गेल अछि । **विद्यापति** पदावलीमे अनेकठाम नायिकाक पैरकेँ **जावकसँ** रँजित कहल गेल अछि । देहमे लगएबाक हेतु सुगंधित पदार्थक गील मिश्रणकेँ **विलेपन**, **वर्ति**, **वर्णक**, **गन्धानुलेपनी** कहल गेल अछि । ई **कर्पूर**, **अगुरू**, **कस्तूरी कङ्कोल** तथा **यक्षकर्दमसँ** निर्मित होइत छल । सुगंधित वस्त्रादिकेँ **वासयोग्मावित**, **वासित** कहल गेल अछि ।[186]

शरीरकेँ सुगन्धिद्रव्य पुष्पमाला आदिसँ सुवासित करबाक प्रक्रियाकेँ **अधिवासन** कहल गेल अछि । मालाक अनेक प्रभेदक उल्लेख **अमरकोश**मे भेटैत अछि । केशमे लगाओल मालाकेँ **गर्भक** कहल गेल अछि । शिखासँ लटकैत मालाकेँ **प्रभ्रष्टक**, **शिखालम्बि**, **पुरोन्यस्त**, **ललामक** कहल गेल अछि । गर्दनिसँ लटकैत पैघ पुष्पमालाकेँ **मृजुलम्बि** कहल गेल अछि । कण्ठसँ लटकैत यज्ञोपवीतसदृश मालाकेँ **वैकक्षिक** कहल गेल अछि । शिखामे लपेटल पुष्पमाल्यकेँ **आपीड़**, **शेखर** कहल गेल अछि । मालाक संयोगसँ केशविन्यासकेँ **रचना**, **परिस्यन्द**, **आभोग**, **परिपूर्णता** कहल गेल अछि ।[187]

सुगन्धिद्रव्य आदि रखबाक डिबियाकेँ **समुद्गक संपुष्टक** कहल गेल अछि । केश थकरबाक साधन **प्रसाधनी**, **कङ्कतिका** कहल गेल अछि । वस्त्रादिकेँ सुगन्धित करबाक चूर्णकेँ **पिष्टात**, **पटवासक** कहल गेल अछि । अयनाक हेतु **दर्पण**, **मुकुर**, **आदर्श** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[188]

एहि तरहेँ भारतीय वेशभूषाप्रसाधन परम्पराक विशिष्ट अभिलेख ओ तत्सम्बन्धी परम्पराक विशिष्ट अभिलेख ओ तत्सम्बन्धी प्रचुर शब्दावली **अमरकोश**मे भेटैत अछि । तथापि अमरकोशकेँ संस्कृत शब्दावलीक सम्पूर्ण कोषग्रन्थ नहि कहल जा सकैछ आ ने वेशभूषाप्रसाधनक समस्त शब्दावलीकेँ समेकित रूपेँ समेटि सकबाक स्थितिये एहि कोषग्रन्थमे देखि पड़ैछ । एहि कोषग्रन्थक निर्माणकाल गुप्तयुग मानल गेल अछि तेँ ओहिकाल धरिक संस्कृत शब्दावलीक सम्पूर्णतामे निर्वचन एकर साध्य कहल जा सकैछ मुदा एहन कतोक वैदिको एवं परवर्ती शब्दकेँ समेटि सकबामे अमरकोषकारक नैपुण्य शिथिल देखि पड़ैछ यथा– **द्रापि**, **नीवी**, **कुम्ब**, **कूर्चा**, **ताटङ्क** आदि । अवश्यं अमरकोषकारक एहि असौकर्यक कारण शब्द विशेषक क्षेत्र विशेष धरि प्रचलन वा स्थानापन्नता होयत ।

एतावता वेषभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा क्रमशः सिन्धुघाटी सभ्यता कालहिसँ क्रमशः विकसित होइत अत्यन्त उच्च कोटिधरि पहुँचि गेल छल तथा एकर विभिन्न प्रभागक अभिव्यंजनाक हेतु विपुल शब्दावलीक प्रयोग होइत छल से विभिन्न कालखण्डक ग्रन्थक अवलोकनसँ स्फुट होइत अछि । संस्कृत वाङ्मयक एहि विपुल शब्दावलीमे कतोक एखनो तत्सम वा तद्भव रूपमे प्रचलित देखि पड़ैछ ।

गुप्तकालधरि भारतीय वेशभूषा प्रसाधनक परम्परा हिन्दू संस्कृति ओ सभ्यताक सर्वथा अनुकूल रहल । स्वभावतः एकर शब्दावलीक मूल बहुलांश संस्कृत वाङ्मय सभमे भेटि जाइत अछि । एहिकाल धरि जे भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर उथल-पुथल होइत रहल, ओ क्रमशः हिन्दू संस्कृतिमे अन्तर्मुक्त भऽ गेल आ स्वभावतः एहिकाल धरि शब्दावली संक्रमणक जे कोनो स्थिति उत्पन्न भेल होयत से कालक्रमे संस्कृत शब्दावली द्वारा आच्छन्न ओ ओहीमे रचल-खपल देखि पड़ैछ ।

एही क्रममे संस्कृतक अतिरिक्त देशज शब्दावलीक विकासक क्षिप्त प्रक्रिया भारतीय भाषा जगतमे परिव्याप्त भेल । ई देशज शब्द सभ क्रमशः प्राकृत, पाली, अपभ्रंस, अवहट्ठक माध्यमसँ आधुनिक भारतीय भाषा सभमे अपन स्थान बनौने गेल। देशजो शब्दसभ अन्तर्प्रान्तीय ओ अन्र्देशीय प्रभावसँ परिवर्त्तित-परिवर्द्धित होइत रहल । पश्चाद्वर्ती मुस्लिम ओ मुगल साम्राज्यक स्थापनाक बाद वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा ओ तकर शब्दावलीमे विशिष्ट परिवर्तन भेल । क्रमशः पहिराबा ओढ़ाबाक वस्तु ओ शब्दावली संक्रमित भेल आ एही क्रममे **नीमा**, **जामा**, **पएजामा**, **आस्तीन मिर्जई**, **कुर्ता सलवार**, **इत्र** आदि शब्द जनप्रचलित होइत गेल । संगहि वस्तु विलोप भेने आदिकालहिसँ प्रचलित अनेक शब्द क्रमशः लुप्त होइत चल गेल । किछु शब्द अपन सहअस्तित्व बनौने रहल ।

वैह स्थिति परवर्त्ती यूरोपीय सभ्यता ओ संस्कृतिक सम्पर्कमे भारतीय जनसमाजक अयला उत्तर देखि पड़ैछ । क्रमशः अनेकानेक डच, पोर्तगीज ओ अंग्रेजी शब्द भारतीय शब्द समाजक अभिन्न अंग भऽ गेल । एही क्रममे **कोट**, **बूट**, **पैंट**, **हैट**, **टाइ**, **मीडी मैक्सी**, **स्नो**, **पॉडर**, **क्रीम**, **चेन**, **लाकेट** आदि शब्दक प्रादुर्भाव ओ प्रचार होइत रहल अछि । युगजीवनक क्रमशः औद्योगिक पुनर्जागरणसँ प्रभावित भेने, वैज्ञानिक प्रगतिक कारणेँ सम्पूर्ण भूगोलसँ भारतीय परम्पराक प्रभावित होइत रहबाक विवशता ओ आवश्यकताक कारणेँ आइ भारतीय वेशभूषा प्रसाधनोक शब्दावलीमे नित्य नूतन शब्दक समावेश ओ लोप भऽ रहल अछि आ किछु अपन पारिभाषिक स्वरूपहुमे दृष्टिगोचर होइत अछि ।

सन्दर्भ सूची :

1. कास्ट्यूम्स, टेक्सटाइल्स कास्मेटिक्स एण्ड क्वाइफर इन एन्सिएन्ट एण्ड मिडिव्हल इण्डिया- डा० एस०पी० गुप्ता, ओरिण्टल पब्लिशर्स, दिल्ली- 6 ।
2. वेदकालीन समाज- डा.शिवदत्तज्ञानी, पृ. 107-108 ।
3. ऋ० 1/34/1, 1/115/4, 1/162/16, 8/3/24, 10/26/6 ।
4. तत्रैव, 10/26/6
5. तत्रैव, 9/97/50
6. तत्रैव, 1/114/7
7. तत्रैव, 6/29/3
8. तत्रैव, 2/3/6, 4/26/7, 7/34/11
9. तत्रैव, 5/55/6
10. तत्रैव, 1/25/13
11. तत्रैव, 1/92/5, 5, 2/3/6, 4/36/7
12. यजु० 30/9
13. ऋ० 4/3/2, 10/71/4, 10/107/9
14. ऋ० 1/92/4, 10/1/6
15. तत्रैव, 5/52/9
16. अथर्ववेद 18/4/31
17. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 442
18. तत्रैव, पृ. 441
19. ऋ० 1/66/10
20. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 442
21. ऋ० 10/102/2
22. तत्रैव, 1/140/9
23. अथर्व० 14/1/8
24. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 444-445
25. एस०पी० गुप्ता, पृ. 6-7
26. ऋ० 1/133/2
27. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 445
28. अथर्व० 19/26/1
29. ऋ० 1/33/8
30. ऋ० 2/33/10
31. तत्रैव 5/19/3
32. तत्रैव, 1/122/14, 5/54/11
33. तत्रैव, 2/34/2
34. ऋ० 8/78/3
35. अथर्व० 15/2/25
36. ब्राह्मणस थ्रू द एजेज- डा.राजेन्द्रनाथ शर्मा, अजन्ता पब्लिकेशन्स, दिल्ली-7, पृ. 6-7
37. तत्रैव, पृ. 7
38. तत्रैव, पृ. 6
39. गुप्ता, पृ. 183
40. तत्रैव, पृ. 184
41. तत्रैव, पृ. 184
42. अथर्व० 6/102 (3, 9/6/11)
43. गुप्ता, पृ. 186
44. गुप्ता, पृ. 188
45. अथर्व० 4/15/9
46. ऋ० 7/32/1
47. तत्रैव, 10/114/3
48. तत्रैव, 1/173/6
49. तत्रैव, 10/85/8
50. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 446-447
51. अथर्व० 6/68/1
52. तत्रैव, 8/2/68
53. रामायण, बालकाण्ड 6/10-11
54. रामायण, बालकाण्ड, 2/7
55. तत्रैव, अयोध्याकाण्ड, 37/6
56. तत्रैव, 2/37/10
57. तत्रैव, 5/4/15
58. तत्रैव, 5/50/4
59. तत्रैव, 3/46/16
60. तत्रैव, 2/37/7
61. तत्रैव, 5/9/53
62. रामा०, 3/52/14
63. तत्रैव, 3/49/9
64. तत्रैव, 4/9/33
65. तत्रैव, 1/74/4
66. तत्रैव, 2/70/19
67. तत्रैव, 6/75/9
68. महाभारत, सभापर्व, 27/26
69. रामा० 2/88/15
70. तत्रैव, 2/32/32
71. तत्रैव, 4/7/15
72. तत्रैव, 5/9/53, 59
73. रामा० 3/46/3
74. तत्रैव, 21/112/29
75. तत्रैव, 2/83/12-15
76. रामायण, 4/6/22-23
77. तत्रैव, 4/44/12
78. रामायण, 2/91/74-77
79. रामायण, 2/17/35
80. तत्रैव, 2/83/17
81. तत्रैव, 2/118/18
82. तत्रैव, 2/92/62, 3/52/25
83. तत्रैव, 2/88/5
84. तत्रैव, 3/52/43
85. तत्रैव, 5/8/45
86. तत्रैव, 5/4/15
87. तत्रैव, 3/34/16
88. तत्रैव, 3/63/9
89. तत्रैव, 2/10/9
90. देवीभागवतपुराण, प्रथमखण्ड संस्कृति संस्थान ख्वाजाकुतुब वेदनगर बरेली-243003, अध्याय 14, श्लोक 38-39 ।
91. दुर्गासप्तशती, 2/25-27
92. बुद्धकालीन समाज और धर्म- डा. मदनमोहनसिंह, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972, पृ. 76-77
93. गुप्ता, पृ. 12-13
94. बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 78-81
95. महाकवि भास- डा.नेमिचन्द्रशास्त्री, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1972, पृ. 527-528
96. महाकवि शूद्रक- डा.रमाशंकरतिवारी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1967, पृ. 395
97. ऋतुसंहार 4/3
98. तत्रैव, 5/2
99. तत्रैव, 5/8
100. तत्रैव, 5/14
101. तत्रैव, 6/5
102. तत्रैव, 6/15
103. ऋतु० 2/25
104. रघुवंश 9/43
105. इण्डिया इन कालिदास- भगवतशरण उपाध्याय, एस.चान्द एण्ड को० नई दिल्ली, 1968, पृ. 198
106. तत्रैव
107. ऋतु० 5/8
108. रघु० 17/25
109. तत्रैव 16/43
110. रघु० 7/9 कुमारसंभव 8/4
111. रघु० 16/43
112. रघु० 17/23
113. उत्तरमेघ /21

114. ऋतु० 2/21
115. तत्रैव 2/25
116. ऋतुसंहार 6/36
117. तत्रैव, 6/33
118. तत्रैव, 2/22
119. तत्रैव, 3/19
120. तत्रैव, 4/16
121. तत्रैव, 5/8
122. तत्रैव, 2/11
123. रघु० 16/48
124. तत्रैव, 6/6
125. कुमारसंभव 3/62
126. रघुवंश, 17/22-24
127. ऋतु०- 2/22
128. रघुवंश 19/37
129. ऋतु० 4/5
130. तत्रैव, 6/7-14
131. रघुवंश 6/60
132. गुप्ता, पृ. 196-197
133. तत्रैव, पृ. 218
134. नाट्यशास्त्रम्- भरत, सं. पंडितकेदारनाथ, निर्णयसागर मन्त्रालय, मुम्बई, 1943, 21/10
135. तत्रैव, 21/11
136. भरत और भारतीय नाट्यकला- सुरेन्द्रनाथदीक्षित, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 8 फैजबाजार, दिल्ली-6, पृ० 301 ।
137. नाट्यशास्त्र, 21/12-14
138. नाट्यशास्त्र, 21/15-20
139. नाट्यशास्त्र, 21/131-136
140. नाट्यशास्त्र, 21/140
141. भारत और भारतीय नाट्यकला, पृ. 389
142. नाट्यशास्त्र, 21/21-22
143. भरत और भारतीय नाट्यकला, पृ. 382
144. तत्रैव, 21/25-26
145. तत्रैव, 21/31-32
146. तत्रैव, 21/33
147. तत्रैव, 21/33
148. तत्रैव, 21/38
149. तत्रैव, 21/34-35
150. नाट्यशास्त्र, 21/36-37
151. नाट्यशास्त्र-भरत, 21/23-24
152. भरत और भारतीय नाट्यकला, पृ. 382
153. नाट्यशास्त्र, 21/24
154. नाट्यशास्त्र, भरत 21/27-30
155. तत्रैव, 21/40-41
156. भरत और भारतीय नाट्यकला, पृ. 384
157. नाट्यशास्त्र, 21/70-71
158. नाट्यशास्त्र, 21/114-121
159. नाट्यशास्त्र, 21/52-62
160. नाट्यशास्त्र-भरत, 21/65-69

161. नाट्यशास्त्र-भरत, 21/75-77
162. नाट्यशास्त्र, 21/123
163. तत्रैव, 21/139
164. भरत और भारतीय नाट्यकला, पृ. 389
165. पतंजलि कालीन भारत, डा. प्रभुदयालअग्निहोत्री, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1963, पृ. 197-206
166. अमरकोष, सं. चन्द्रधारीसिंह, मधुबनी, 1957, 2-6-99 ।
167. तत्रैव, 2/6/100-101
168. अमरकोष, 1/6/110-111
169. राजशेखर और उनका युग- डा.पाण्डेय रामेश्वरप्रसादशर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1977, पृ. 154 ।
170. अमरकोष, 216/115

171. कीर्त्तिलता-विद्यापति, द्वितीयपल्लव ।

    काहुकापल काहु घोल । काहु सम्बल देल थोल ।।

    तत्रैव, तृतीय पल्लव

    लेरे' कौनि पानि आनिअ । पीबए घणे कापड़े छानिअ ।।
172. तत्रैव, 2/6/115/116
173. राजशेखर और उनका युग, पृ. 154-155
174. तत्रैव, पृ. 156
175. राजशेखर और उनका युग, पृ. 154
176. तत्रैव, पृ. 152
177. अमरकोष, 2/6/118-120
178. अमरकोष, 2/6/101-106
179. अमरकोष, 2/6/106-108
180. अमरकोष, 2/6/108-110
181. अमरकोष, 2/6/5
182. तत्रैव, 2/6/95-98
183. द्रष्टव्य विद्यापति मित्र मजुमदार, पद सं.38
184. अमरकोष, 2/6/121-123
185. अमरकोष, 2/6/25
186. तत्रैव, 2/6/133-134
187. अमरकोष, 2/6/134-137
188. अमरकोष, 2/6/138-139

●

द्वितीय अध्याय

वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा

मैथिल वेशभूषा प्रसाधन परम्परा भारतीय परम्परासँ भिन्न नहि रहल अछि तथापि भौगोलिक ओ सांस्कृतिक वैशिष्ट्यजन्य विलक्षणताक निदर्शनार्थ एहिठामक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक विवरणसँ सम्बद्ध कतिपय अन्तःसाक्ष्यपर विवेचन करब संगत अछि। मैथिली साहित्यक जाहि ग्रन्थ सभसँ वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्पराक परिज्ञान संभव अछि तकर विवेचन अग्रिम अध्यायमे कर्तव्य अछि। एहिठाम मैथिली साहित्यसँ इतर मिथिलामे रचित स्मार्त्त, निबन्ध ओ अन्य ग्रन्थक आधारपर एहि परम्पराक निदर्शन मात्र संभव अछि।

मिथिलामे प्राचीनेकालसँ स्मार्त ग्रन्थ रचनाक विशिष्ट परम्परा रहल अछि। निबन्ध-न्याय-तन्त्र कामशास्त्र आदि विविध विधाक ग्रन्थक प्रणयन एहिठाम होइत रहल अछि। संस्कृत ग्रन्थक रचनामे निष्णात पण्डित लोकनि अपन ग्रन्थक तथ्यकेँ स्पष्ट करबाक हेतु मिथिलादेशीय शब्दक सेहो प्रभूत संख्यामे उल्लेख करैत रहलाह अछि। एहि ग्रन्थ सभमे व्यवहृत देशीय शब्द आ खास कऽ वेशभूषा-प्रसाधनक शब्दावलीक संकलन, अनुशीलन, व्याख्या ओ विवेचन स्वतंत्रे विषय भऽ सकैछ। तेँ मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक परम्पराक निदर्शनार्थ एहिठाम स्थालीपुलाक न्यायेन किछु विशिष्ट ग्रन्थमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधनक निदर्शन प्रस्तुत्य अछि।

मैथिल वेषभूषा प्रसाधन परम्पराक प्राचीनतम अभिलेखक रूपमे याज्ञवल्क्य स्मृतिकेँ स्वीकारल जा सकैछ। महर्षि याज्ञवल्क्य राजा जनकक सभासद्मे प्रमुख छलाह। बृहदारण्यकोपनिषदक अनुसार देशविदेशसँ आयल विद्वान ओ विदुषीकेँ ब्रह्मज्ञानक प्रश्नोत्तरी द्वारा पराजित कयने छलाह। तेँ हिनक मैथिल होयब निश्चित। **याज्ञवल्क्य स्मृतिमे** सेहो कहल गेल अछि -

> मिथिलास्थः स योगीन्द्रः क्षणंध्यात्वाऽ ब्रवीन्मुनीन्।
> यस्मिन्देशे मृगः कृष्णास्तस्मिन्धर्मान्निबोधत ॥[1]

हिनका द्वारा प्रणीत स्मृतिमे वेषभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्पराक पर्याप्त उल्लेख भेटैत अछि। एहिमे ब्रह्मचारीक धारण करबाक योग्य वस्त्रादिमे **पलाशदण्ड, अजिन, उपवीत** तथा **मेखलाक** परिगणना कराओल गेल अछि।[2] विवाह प्रकरणमे स्मृतिकार ब्राह्म विवाहक प्रकरणमे अलंकृत कन्या प्रदान करबाक उल्लेख कयलनि अछि।[3] रक्षणीया ओ प्रसादयोग्याक रुपमे स्त्रीक उल्लेख करैत हिनका भूषणक आच्छादनसँ समर्पित करबाक वर्णन भेल अछि।[4]

स्नातकधर्म प्रकरणमे स्नातककेँ स्वच्छ वस्त्र धारण करबाक, दाढ़ी मोँछ ओ नह काटि कऽ छोट रखबाक विधान देल गेल अछि तथा पत्नीक सम्मुख एकवस्त्र पहीरि कऽ भोजन नहि करबाक अनुदेश अछि।[5]

एहि तरहेँ एहि ठाम **वास** शब्दक प्रयोग वस्त्रक हेतु भेल अछि। शुक्ल वस्त्रकेँ मर्यादित होयबाक सेहो संकेत भेटैत अछि। **दाढ़ी, केश, मोँछ** तथा **नहकेँ** काटि कऽ प्रसाधित करबाक सेहो संकेत भेटैत अछि। **एकवाससँ** ई संकेत भेटैत अछि जे लोक उपरिवस्त्र रहितो रहैत छल होयत जे आर्याक सम्मुख वर्जनीय बूझल जाइत छल।

स्नातकक आभूषणमे **दाक्षायणक** उल्लेख कयल गेल अछि।[6] **दाक्षायण सुवर्णकेँ** कहल जाइत अछि। अवश्ये स्नातक सुवर्णक आभूषण धारण करैत छल होयताह। **डा.उमेशचन्द्रपाण्डेय** एकरा सोनाक **कुण्डल** कहलनि अछि।[7] **यज्ञोपवीत** स्नातकक वस्त्रमे अनिवार्य छल। एकरा हेतु **ब्रह्मसूत्र** शब्दक प्रयोग भेल अछि।[8] द्रव्यशुद्धि प्रकरणमे स्मृतिकार **आविक, कौशक, अंशुपट्ट** ओ **कुतप** शब्दक उल्लेख कयलनि अछि।[9] एकर व्याख्या करैत **मिताक्षरामे** कहल गेल अछि- उषरमृतिका सहितेन गोमूत्रेणोदकेन वा लेपापेक्षया। आविकमूर्णाभवम्, कौशिकं कोशप्रभवं तसरी-पट्टादि प्रक्षालितं शुद्धयति। उदगोमूत्रैः इति बहुवचनं पश्चादप्युदक प्राप्त्यर्थमे। अंशुपट्टं वल्कलतन्तु निर्मितं, सश्रीफलैर्बिल्वफल सहितैः कुतपः पार्वतीय छागरोमनिर्मित-कम्बलः, अरिष्टसहितैरुदकगोमूत्रैः शुद्धयतीत्यनुवर्तते।[10] अर्थात् **आविक** ऊनीवस्त्र छल। **कौशिक** कोशसँ निर्मित तसर सदृश वस्त्र छल। **अंशुपट्ट** वल्कल तन्तुसँ निर्मित होइत छल आ **कुतप** पार्वतीय छागरसँ निर्मित कम्बलक प्रभेद छल। एकर अतिरिक्त स्मृतिकार **क्षौम** वस्त्रक सेहो उल्लेख कयल अछि।[11] क्षौम क्षुमा अर्थात् तीसीक सूत्रसँ निर्मित होइत छल। दानप्रकरणमे स्मृतिकार जूता, छाता, माला ओ अनुलेपनक उल्लेख कयलनि अछि- **कृध्यान्याभयोपानच्छत्रमाल्यानुलेपनम्** ॥[12]

एहिमे जूताक हेतु **उपानह**, छाताक हेतु **छत्र** शब्दक प्रयोग भेल अछि। मालासँ पुष्पमाल्य आ **अनुलेपनसँ** कुंकुमचन्दनादिक बोध होइत अछि। एहि विभिन्न दानीय वस्तुक उल्लेखसँ स्पष्ट होइछ जे ई वस्तु सभ जनसामान्यक वेष ओ प्रसाधन सामग्रीक रूपमे व्यवहृत छल।

गणपति **कल्पप्रकरण**मे स्मृतिकार **काषायवासस** ओ **मुण्डा** शब्दक प्रयोग कयलनि अछि ।[13] अवश्ये वस्त्रकेँ काषाय रंगमे रंगबाक प्रचलन छल आ अनेक लोक केश मुड़ाय मुण्डी सेहो भऽ जाइत छलाह । स्नपनविधिक उल्लेख करैत स्मृतिकार-अनेक प्रकारक उबटन आदिक उल्लेख कयलनि अछि । उबटनक हेतु **उद्धर्त्तन** शब्द सेहो भेटैत अछि ।[14]

मिताक्षरामे एकर व्याख्या करैत कहल गेल अछि- जे विनायकसँ अभिभूत व्यक्तिकेँ शुभ तिथिमे पीयर सरिसोकेँ पीसि कऽ तैयार कयल गेल उबटनसँ उत्सादन करबाक चाही । एहि उबटनमे घी मिलल रहबाक चाही । पश्चाति **प्रियङ्गु**, **नागकेसर** आदि औषधि, **चन्दन**, **अगुरु**, **कस्तूरी** आदि गन्धद्रव्य ओकर माथपर लेपबाक चाही तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणलोकनिसँ गृह्यसूत्रक अनुरुप स्वस्तिवाचन कराबक चाही । घोड़सार, हथिसार, चुट्टीक बीयरि, नदीक संगम तथा पोखरिक **माटिगोरोचन**, **चन्दन**, **कुङ्कुम**, **अगुरू गुग्गुल** आदिकेँ ओकर देहपर मलबाक चाही ।[16]

स्मृतिकारक एहि व्यवस्थासँ तत्कालीन उत्सादन प्रक्रियाक वृहत अभिलेख भेटैत अछि । अवश्ये पीअर सरिसोक उबटन लगयबाक, उबटनकेँ गन्धद्रव्यसँ युक्त कऽ उत्सादन करबाक तथा माटिसँ शरीरकेँ स्वच्छ करबाक प्रसाधन प्रक्रिया प्रचलित छल ।[17] एखनो स्मृतिकार एही प्रसंगमे **वस्त्रयुग्म**क उल्लेख कयने छथि ।[18] एहिसँ ई स्पष्ट होइछ जे सामान्यतः दुइ गोट वस्त्र **अधोवस्त्र** ओ **उत्तरीय** धारण करबाक प्रथा छल ।[19]

ग्रहशान्तिप्रकरणमे स्मृतिकार कहने छथि- जे विभिन्न ग्रहक शान्तिक हेतु भिन्न भिन्न वर्णक वस्त्रपर मण्डल बनयबाक चाही । एहि उल्लेखसँ रञ्जन प्रक्रियाक विविधताक आलेख भेटैत अछि । '**पट**' शब्दक व्यवहार सेहो स्मृतिकार वस्त्रेक हेतु कयलनि अछि ।[20] स्मृतिकारक समयमे **स्थूल सूत** तथा **मध्यम सूत** तथा **सुसूक्ष्मसूत**क प्रयोग होइत छल ।[21]

मिताक्षराकार एकर व्याख्या एहि प्रकारेँ प्रस्तुत कयने छथि- जे ऊन आ कपासक मोट सूतसँ बनल कम्बल आदि बनयबामे सौ पलमे दस पल, मोटाइमे मध्यम श्रेणीक सूतमे पाँच पल तथा पातर सूतसँ बनल वस्तुमे सौ पलमे तीन पलक वृद्धि बुझबाक थिक ।

अवश्ये तीनू प्रकारक वस्त्र एहि स्मृतिकालक मिथिलामे प्रचलित छल । एही तरहक एक गोट उल्लेखसँ स्पष्ट होइछ जे वस्त्र पर **कसीदा**क काज सेहो होइत छल । एहन वस्त्रकेँ **कार्मिक** कहल जाइत छल । जाहि वस्त्रमे कोर पर रोम बान्हल जाइत छल ओकरा **रोमबद्ध** कहल जाइत छल । अर्थात् वस्त्रक किनारीकेँ सजयबाक प्रथा छल । कोशसँ उत्पन्न वस्त्र **कौशेय** तथा वृक्षक अंगसँ निर्मित वस्त्रकेँ **वल्कल** कहल जाइत छल ।[22] मिताक्षरामे कार्मिक, रोमबद्ध **कौशेय** ओ वल्कल वस्त्रक व्याख्या अछि ।

एहि तरहेँ कसीदाक काजमे **चक्र**, **स्वस्ति** आदि वस्त्र पर बनाओल जाइत छल । मिताक्षराकार कोरक हेतु प्रावार शब्दक प्रयोग कयने छथि ।[23]

नारीवस्त्रमे स्मृतिकार खास कऽ दुइ गोट वस्त्रक उल्लेख कयलनि अछि- **नीवी** आ **स्तनप्रावरण** । नीवीकेँ परिधानग्रन्थि प्रदेश तथा स्तनप्रावरणकेँ **चोली** अथवा **आँचर** कहल गेल अछि ।[24] एहि स्मृतिमे आपद्धर्म प्रकरणमे वैश्यवृत्तिक ब्राह्मण द्वारा जाहि जाहि वस्तुक विक्रीक निषेध कयल गेल अछि तकरहिमे एकटा वस्तु अछि **कुतप** ।[25] एकरा अजलोमकृतः कम्बलः अर्थात् बकरीक रोआँसँ निर्मित वस्त्र कहल गेल अछि । वानप्रस्थ धर्म प्रकरणमे वानप्रस्थीकेँ श्मश्रुजटालोमभृत कहल गेल अछि ।[26] अर्थात् वानप्रस्थीकेँ **मोँछ**, **जटा** ओ शरीरक रोआँ बढ़ौने रहबाक चाही । अवश्ये सामान्य जनजीवनमे केशविन्यासक विविध प्रकार रहल होयत आ शरीरक विभिन्न अंगक केशकेँ कटबाक प्रथा होयत ।

एहि स्मृतिमे **सोन**, **चानी**, **मणिमाणिक्य** विभिन्न प्रकारक पत्थल आदिक उल्लेख तेँ भेल अछि मुदा **अलंकरण**, **भूषण आभूषण** आदि शब्दक अतिरिक्त गहनाक नामोल्लेख नहि भेल अछि । तथापि ई तँ संकेतित होइते अछि जे लोक विविध भूषणसँ परिचित छलाह आ भूषणमे विभिन्न धातु ओ मणिक उपयोग होइत छल । एहि तरहेँ **याज्ञवल्क्यस्मृति**मे मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक प्राचीनतम आलेख भेटैत अछि ।

महर्षि याज्ञवल्क्यक पश्चात् मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेखक दृष्टिञे **चण्डेश्वरठाकुर**क ग्रन्थ सभ द्रष्टव्य अछि । **चण्डेश्वरठाकुर** मिथिलाक महान नैबन्धिक भऽ गेल छथि । हिनक प्रादुर्भाव चौदहम शताब्दीमे भेल छलनि । हिनका द्वारा लिखित सात गोट रत्नाकर श्रेणीक ग्रन्थक उल्लेख भेटैत अछि । ई रत्नाकर ग्रन्थ सभ थिक- **गृहस्थरत्नाकर**, **कृत्यरत्नाकर**, **विवादरत्नाकर**, **दानरत्नाकर**, **पूजारत्नाकर**, **शुद्धिरत्नाकर** ओ **व्यवहाररत्नाकर** । हिनक आठम रत्नाकरग्रंथ राजनीतिरत्नाकर कहल जाइछ । **मन्त्र प्रदीप** ओ **रत्नाकरमत** नामक ग्रन्थक सेहो ई प्रणयन कयने छलाह ।

रत्नाकर ग्रन्थ सभहिक आधार पर हिनक अपर नाम सप्तरत्नाकरकार सेहो कहल जाइछ । अपन रत्नाकर ग्रंथ सभमे **चण्डेश्वरठाकुर** विभिन्न स्मृति पुराणादिक आधारपर धर्मशास्त्रीय आ समाजशास्त्रीय मत सभक संकलन ओ व्याख्या प्रस्तुत कयलनि अछि जे मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक जीवनकेँ शताब्दी दर शताब्दीसँ विनियमित करैत रहल अछि ।

चण्डेश्वरठाकुरक पितामह **देवादित्य** छलाह जे मिथिलाक राजा हरिसिंह देवक राजमंत्रीक पदकेँ सुशोभित कयने छलाह । हिनक पिता वीरेश्वर सेहो मंत्रित्वकेँ प्राप्त कयल । चण्डेश्वर ठाकुर हरसिंहदेवक सान्धिविग्रहिकक पद ग्रहण कयने छलाह । लखिमा देवी हिनक परम विदुषी पत्नी छलथिन । मैथिल कोकिल **विद्यापति**क ई पूर्वज छलाह आ हिनके तेसर पुरुषमे विद्यापतिक प्रादुर्भाव भेल छल । एहि तरहेँ विद्याक क्षेत्रमे ई वंश अत्यन्त प्रतिष्ठित रुपमे ख्यात रहल अछि ।

चण्डेश्वरक रत्नाकर ग्रंथसभमे मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्रक कोनहु

अंशकेँ अछोप नहि छोड़ल गेल अछि । हिनक एहि ग्रन्थ सभमे मिथिलाक वेशभूषा प्रसाधनक तत्सम ओ देशी शब्दावलीक उल्लेख भेटैत अछि तथा एहिसँ मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक जीवनमे वेशभूषा प्रसाधनक परिचय भेटि सकैत अछि ।

वस्त्रक हेतु **चण्डेश्वर वस्त्र, वास, अम्बर, चेल परिधान** आदि शब्दक व्यवहार कयलनि अछि । वस्त्र शब्दक प्रयोग अनेक प्रसंगमे भेल अछि तथा– गन्धालंकार वस्त्राणि[27] वस्त्र समन्वितम्[28] विविधैर्वस्त्रैः[29] वस्त्रप्रदानेन[30] आदि । वस्त्र युगं वस्त्रयुगानि[31] शब्दसँ ई स्पष्ट होइछ जे सामान्यतः दुइ गोट वस्त्र पहिरबाक प्रचलन रहल अछि । **अधोवस्त्र** ओ **उत्तरीयवस्त्र** । उत्तरीयवस्त्रक हेतु रत्नाकरमे **उत्तरवस्त्र**[32] शब्दक उल्लेख भेल अछि ।

धोआवस्त्रक हेतु **धौतवस्त्र** शब्द कथित भेल अछि ।[33] वस्त्रक हेतु **वास** शब्दक उल्लेख वासोभि: परिवेष्टिता:[34] मे दृष्टिगोचर होइछ । वाससँ सम्बद्ध अनेक शब्द भेटैत अछि यथा– **रक्तवासोभि:, काषायवासा:**[35] **सितवाससी**[36] **पीतवाससी**[37] **शुक्लवाससी**[38] **धौतेवाससी**[39] **शुक्लवासा**[40] **अहतवास:**[41] **चित्रवासस:**[42] आदि ।

एहिमे अधिकांश शब्द वस्त्रक रंगक आधारपर नामांकित बुझना जाइछ । **कषाय** रंगक वस्त्रक हेतु **कषायवास**, उज्जर रंगक वस्त्रक हेतु **सितवासस** ओ **शुक्लवास**, पीयर रंगक वस्त्रक हेतु **पीतवासस, धोआ वस्त्र** अथवा धोतीक हेतु **धौतवासस** तथा विभिन्नरंगसँ युक्त अथवा **चितकाबर** रंगक वस्त्रक हेतु **चित्रवासस** शब्दक प्रयोग भेल अछि । चित्रवाससक स्थान पर **विचित्रवस्त्र** शब्दक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[43] नव ओ बिनु पहिरल वस्त्रक हेतु **अहतवास** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[44] वस्त्रक हेतु **अम्बर**- शब्दक उल्लेख **श्वेताम्बर रक्ताम्बर घृताम्बरम्**[45] आदि रूपमे भेटैत अछि । **चेल** शब्दक प्रयोग **चेलधावो** शब्दमे भेटैछ ।[46] एहिमे कहल गेल अछि जे **चेलधावो वस्त्रनिर्णेजनकर्त्ता** । वस्त्रक हेतु **परिधान** शब्दक उल्लेख एहि श्लोकमे भेटैछ– **परिधानाद्बहि: कक्षा निबद्धा ह्यासुरी मता** ।[47]

वस्त्रक अत्यन्त सूक्ष्म प्रकृतिक सेहो उल्लेख भेल अछि **दद्याद्वस्त्राणि सूक्ष्माणि रसपात्रैर्युतानि च** ।[48] एहन वस्त्र अत्यन्त महग होइत छल । **वस्त्राणि सुमद्टार्हाणि**[49] सँ एकर संकेत भेटैत अछि ।

वस्त्रक अनेक प्रभेदक उल्लेख **रत्नाकर** ग्रंथमे भेटैत अछि । सामान्य सूती वस्त्रक हेतु **कार्पासिक**[50] शब्दक उल्लेख भेल अछि । रेशमी वस्त्रक एक गोट प्रभेद **प्रतिसर** कहल जाइत छल ।[51] प्रतिसरक व्याख्या करैत **रत्नाकरमे** कहल गेल अछि जे **प्रतिसर: पट्टादिरचित सूत्रं मुख्यमुल्कृष्टम्** । अवश्ये एहिमे मुख्य रुपसँ रेशमक तन्तुक उपयोग होइत होयबाक संकेत भेटैछ । एकर अतिरिक्त रत्नाकरमे जाहि विभिन्न वस्त्रक कोटिक उल्लेख भेल अछि से सब थिक– **कौशेय, सरोम, नानाभक्ति विचित्र, चीरज** आदि ।[52]

एहिमे **कौशेयकेँ कृमितन्तु** निर्मित वस्त्र, **सरोमकेँ रोमज तूल** पट्टादिरुप वस्त्र, **नानाभक्ति विचित्रकेँ** सूक्ष्म सूच्यादिकर्मनिर्मित अर्थात **स्यूत** तथा **चीरजकेँ** वल्कलसँ निर्मित कहल गेल अछि । वस्त्रकेँ सीयल जाइत छल जे सूचीकर्मसँ स्पष्ट अछि ।

रत्नाकरमे **कम्बलक** सेहो उल्लेख भेल अछि ।[53] भोजनकाल आसनपर विचार करैत कहल गेल अछि जे न **नाविभुञ्जीत** अर्थात् **आवी** अथवा ऊनसँ बनल आसनपर बैसि कउ नहि खयबाक चाही । एहि स्थलपर ऊनी वस्त्रक हेतु **आवी** शब्दक उल्लेख भेटैछ ।

वस्त्रक हेतु विभिन्न प्रकारक तन्तुक व्यवहारक उल्लेख **रत्नाकरमे** भेटैत अछि । एहि आधार वस्त्रक विभिन्न प्रभेद **क्षौम, कौशेय, और्ण, शाणभव** आदि भेटैत अछि ।[54] **क्षौम वस्त्र** क्षुमा अर्थात् **तीसीक छालसँ** बनल वस्त्रकेँ कहल गेल अछि । **रत्नाकरमे** क्षौमक व्याख्या करैत कहल गेल अछि– **क्षौमाणि अतसी तन्तु भवानि** ।[55] अतसी तीसीकेँ कहल जाइछ । एहिसँ बनल वस्त्र सम्प्रति **तिसियौटा** कहल जाइछ । शाणभव शब्दसँ ई प्रतीत होइछ जे ई वस्त्रप्रकार सनक तन्तुसँ निर्मित होइत छल । **और्ण** वस्त्र ऊनी तन्तुसँ बनैत छल ।

रत्नाकरमे विभिन्न पशुक छालक सेहो परिधानक रुपमे व्यवहृत होयबाक उल्लेख भेटैछ । एहि प्रकारक छालसँ बनल परिधानमे **कृष्णाजिन, वैयाघ्र, वस्ताजिन** आदिक उल्लेख भेल अछि । कृष्णाजिन कृष्णमृगक छालसँ बनल परिधान, वैयाघ्र बघछाला ओ वस्ताजिन बकरीक छालसँ बनल परिधानक हेतु उल्लिखित भेल अछि । रत्नाकरकार **वस्तश्छाग:** कहि एहि तथ्यकेँ स्पष्ट कयलनि अछि ।[56]

शिरोवस्त्रक रुपमे रत्नाकरमे **उष्णीष** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[57] **अनवलोकनीयानि** प्रकरणमे **गृहस्थरत्नाकरमे** जाहि जाहि वस्तुक अवलोकनक वर्जना कयल गेल अछि ताहिमे **अवगुण्ठित इहावगुण्ठित शिरा:** कहल गेल अछि । अर्थात् एहिमे घोघक हेतु अवगुण्ठन शब्दक व्यवहार भेल अछि जे मैथिल वेशविन्यासक विशिष्ट शब्द थिक ।[58]

वस्त्रक रंजनक उल्लेख रत्नाकरमे उल्लिखित विभिन्न प्रकारक रंगीन वस्त्रक वर्णनमे भेटैत अछि । संगहि एहिमे वस्त्ररंजनक स्पष्ट उल्लेख रजककेँ परिभाषित करैत कयल गेल अछि– **रजको वस्त्रादीनां रागकारी** ।[59] ओछाओनक वस्त्रक विशिष्ट प्रभेदमे रत्नाकरमे उत्तरच्छद शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[60] उत्तरच्छदकेँ परिभाषित करैत कहल गेल अछि **उत्तरच्छद: शय्यायामाच्छादनवस्त्रम्** । अवश्ये ई उछौँचक हेतु प्रयुक्त शब्द छल ।

पहिरबाक अर्थमे रत्नाकरमे दुइ गोट शब्द दृष्टिगोचर होइछ– **आच्छाद्य** तथा **परिदधीरन्** । आच्छादक व्याख्या करैत रत्नाकरमे कहल गेल अछि **वस्त्रयुगं परिधाप्य** ।[61] अर्थात् अधोवस्त्र ओ उत्तरीय वस्त्र पहिरायबकेँ **आच्छादन** कहल जाइत छल ।

वेशक अन्य शब्दावलीमे रत्नाकरमे **छत्र, यज्ञोपवीत, पादुका** ओ **उपानहक**

उल्लेख भेल अछि ।[62] पादुकाक व्याख्या करैत कहल गेल अछि '**पादुका काष्ठोपानहो**' । अर्थात् ई **काठक** बनल **उपानह** छल । यज्ञोपवीत मिथिलाक वेशक विशिष्ट वस्तु रहल अछि । रत्नाकरमे कहल गेल अछि- **यज्ञोपवीतदानेन वस्त्रदान फलं लभेत्** ।[63] **छत्र** शब्द **छाताक** हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

दानीय वस्तुमे रत्नाकरमे **यष्टि** अर्थात् **छड़ीक** सेहो उल्लेख भेल अछि ।[64] गेड़ुआक हेतु **गेण्डुक** शब्द भेटैत अछि ।[65] **रत्नाकरमे प्रावार** शब्द **प्रच्छदपटः**[66] अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि । संभवतः ई **कोरक** हेतु प्रयुक्त छल । एकस्थल पर **वस्त्रोत्तर**[67] शब्द भेटैत अछि । एकर अर्थ **परिधान वस्त्राधिकम्** कहल गेल अछि ।

रत्नाकरमे आभूषणक नामावली, सम्बद्ध धातु ओ आभूषणमे जटित करबाक विविध मणि-माणिक्यक उल्लेख भेल अछि । सोनाक हेतु **सुवर्ण** तथा चानीक हेतु **रजत** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[68] एहिमे **सर्वरत्न** ओ **पञ्चरत्न** क्रमशः विभिन्न प्रकारक रत्नक समूहक हेतु उल्लिखित अछि ।[69] सर्वरत्नमे **मुक्ता, हीरक, गोमेद, इन्द्रनील, पुष्पराग, वैदू, विद्रुम, मरकत** ओ **पद्मरागकें** परिगणित कयल गेल अछि । पञ्चरत्नमे **कनक, कुलिश,** नील, पद्मराग ओ मोतीकें परिगणित कयल गेल अछि । अन्य सन्दर्भक अनुसार **कनक, कुलिश**, नील रजत, मुक्ता, राजपट्ट, **प्रवाल ओरूपाकें** पञ्चरत्न मध्य परिगणित कयल गेल अछि । **कुलिशक** हेतु रत्नाकरमे हीरा शब्दक उल्लेख भेटैछ । राजपट्टक हेतु देशी शब्द **रावटक** उल्लेख भेल अछि, जकरा सम्प्रति **लाजवत** कहल जाइछ ।

आभूषणक विभिन्न पर्यायक उपयोग रत्नाकरमे भेल अछि यथा- **अलंकार**[70] **आभरण**,[71] **विभूषण**[72] आदि । विभूषणक व्याख्या करैत कहल गेल अछि **विभूषण मलंकारः किरीटादिः** ।[73] विभिन्न प्रकरणमे रत्नाकरमे आभूषणक विभिन्न नामावलीक उल्लेख भेल अछि यथा **केयूर, कटक, मुकुट, कुण्डल, कङ्कण, कर्णपूर, केयूर ग्रैवेयक, हस्ताङ्गुरीय, अंगद, श्रोणीसूत्र**, आदि । शिवगौरीक विवाहक हेतु वस्त्रालंकारक वर्णन करैत **रत्नाकरमे केयूर** ओ **कटकक** उल्लेख भेल अछि ।[74] कटक सम्प्रतिक भाषामे **कड़ा** / **काड़ा** कहल जाइत अछि । महादेवक **स्वरूप** निर्माणमे रत्नाकरमे कटक ओ केयूरक अतिरिक्त **मुकुट, कटिसूत्र** ओ **कुण्डलक** उल्लेख भेल अछि ।

देवीपूजाक वर्णनक क्रममे रत्नाकरमे **कङ्कणक** उल्लेख भेल अछि । कङ्कण शब्दक व्याख्या करैत रत्नाकरमे एकर अर्थ **सिन्दूर** देल अछि ।[75] रत्नाकरमे अनेक स्थलमे सिन्दूरक अर्थमे कङ्कणक प्रयोग देखि पड़ैछ ।[76]

मुदा कङ्कण शब्दक सामान्यतः **कंगनाक** अर्थमे सम्प्रतिक भाषामे प्रयुक्त अछि । संभवतः सिन्दूरक ई पर्याय आब लुप्त भऽ गेल अछि ।[77] नारीक आभूषणमे रत्नाकरक **कर्णपूरक** सविशेष उल्लेख कयलनि अछि ।[78] ई **कर्णफूलक** हेतु प्रयुक्त शब्द थिक ।

नारीक अलंकरण ओ प्रसाधनक विशिष्ट शब्द **चूड़िक** सेहो रत्नाकरमे उल्लेख भेल अछि । रत्नाकरमे कहल गेल अछि- **'कर्णपूरैः समाल्यैश्च सदामलः सचूड़िनः'**

चूड़िक ई अत्यन्त प्राचीन उल्लेख थिक ।

रत्नाकारक दान प्रकरणमे विभिन्न प्रकारक गहनाक उल्लेख भेल अछि जाहिमे **मूर्द्धाभरण, कर्णपूर, केयूर, ग्रैवेयक, हस्ताङ्गुलीय, अंगद, श्रोणीसूत्र, पादाङ्गुलीय** आदि प्रमुख अछि ।[79] मूर्द्धाभरणक व्याख्या करैत कहल गेल अछि **मूर्द्धाभरणं किरीटादि** । **कर्णपूरकें** कर्णाभरण विशेष कहल गेल अछि । **ग्रैवेयक** गरदनिक कोनो गहना छल । संभवतः ई सोनक **हंसुलीक** सदृश गहनाक हेतु प्रयुक्त होइत छल । हस्ताङ्गुलीयक व्याख्या करैत **रत्नाकरमे** कहल गेल अछि- **हस्ताङ्गुलीयपरिधानयोग्यं मुद्रिकादि** । अवश्ये ई **मुनरी**, अऊँठी आदिक हेतु प्रयुक्त छल । **पुरुषपरीक्षामे** महाकवि **विद्यापति सुवर्णस्याङ्गुलीयकं** शब्दक प्रयोग **वेदविद्य** कथामे कयलनि अछि ।[80] पादाङ्गुलीयकें चरणाङ्गुलि परिधान योग्य **अंगुलिका** कहल गेल अछि । अवश्ये ई आधुनिक पैरक **बिछिआपरक** कोनो गहना थिक अथवा बिछिआक हेतु रत्नाकरकार ई शब्द देलनि अछि ।

अंगद आधुनिक बाजू सदृश बाँहिपर पहिरबाक कोनो गहना तथा श्रोणीसूत्र **मेखला** वा **डड़कसक** सादृश्य रखैत कोनो गहना छल । श्रोणीसूत्रक व्याख्या करैत **रत्नाकरमे** एकर अपर पर्याय **काञ्चीदाम** कहल गेल अछि । रत्नाकर ग्रंथमे प्रसाधनसँ सम्बद्ध प्रचुर शब्दावलीक उल्लेख भेल अछि । प्रसाधनक व्याख्या करैत **रत्नाकरमे** कहल गेल अछि- **प्रसाधनं केशरचनानुलेपनादि**[81] । एहि तरहें प्रसाधनक अन्तर्गत केशविन्यास ओ सुगन्धि द्रव्यक राखल गेल अछि ।

केशकें पुष्पादिक चूर्ण ओ धूपादिक गन्धसँ सुगन्धित करबाक उल्लेख **चूर्णश्चम्पक पुष्पार्यः रुक्ष श्लिष्ट शिरोरुहाः** सँ स्पष्ट अछि ।[82] श्लिष्टसँ स्पष्ट अछि जे केशकें सीटल जाइत छल । **बद्धशिख**[83] शब्दसँ द्योतित होइत अछि जे पुरुष वर्गमे शिखाकें बान्हि कऽ रखबाक प्रचलन छल । केशकें सिटाबक हेतु उपकरणमे **रत्नाकरमे कङ्कत** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[84] **कङ्कतकें केशप्रसाधनोचितं द्रव्यं चीरण इति प्रसिद्धं** कहल गेल अछि । अवश्ये **चीरण** कंघीक हेतु मिथिला देशीय शब्द छल । केश प्रसाधनक हेतु प्रयुक्त दोसर उपकरण **उशीरकूर्च्यकक** सेहो उल्लेख भेल अछि ।[85] एकर व्याख्या करैत कहल गेल अछि- **उशीर कूर्च्चकं देवाङ्गन शोधनार्थं वीरणमूलघटितं कोञ्चीति प्रसिद्धम्** । अवश्ये **कोञ्ची** देशी शब्द अछि । आधुनिक कतराक झारसँ बनल कूच्चीकें **कोञ्ची** कहल जाइत छल ।

केशकें नारीलोकनि जुट्टी गुहैत छथि । जुट्टीक हेतु **वेणी** शब्दक उल्लेख रत्नाकरमे देवीक प्रसाधनक वर्णनक क्रममे भेटैत अछि- **वेणीबद्ध समायुक्तान् केशान्**

कुर्यात् विचक्षण:[86] । केशमे सुगन्धित तेल देबाक उल्लेख **गन्धतैलानि** शब्दसँ स्पष्ट होइछ ।[87] केशकेँ धूपित करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक सुगन्धिद्रव्यसँ धूप तैयार कयल जयबाक उल्लेख भेल अछि । रत्नाकरमे विभिन्न प्रकारक धूपक नामावली भेटैत अछि यथा- **विजयधूप, पञ्चरस, अनन्तधूप, महाङधूप, महाधूप** ओ **प्रजापत्य धूप** ।[88] एहि धूप सभक निर्माणमे **वृषण, सिंहलक, विप्र, श्रीखण्ड, अगुरु, कर्पूर, मुस्ता, शर्करा, त्वच, कृष्णागुरु बालक, तगर, प्रबोध, गुग्गुल, कुष्ठ, शशी** आदि वस्तुक उपयोगक उल्लेख भेल अछि । वृषणकेँ रत्नाकरकार **कस्तूरी** त्वचकेँ **गुरुत्वची** कहलनि अछि ।

नयनप्रसाधनक हेतु रत्नकारमे **अञ्जनक** उल्लेख भेल अछि । **कुंकुमाञ्जन उरश्चैश्च नितम्बिन्यूपयागिमि:**[89]सँ स्पष्ट होइछ जे अञ्जन नारीलोकनिक व्यवहारक प्रसाधन मध्य परिगणित अछि । ई **काजरक** पर्यायक रुपमे व्यवहृत देखि पड़ैछ । मुखप्रसाधनमे **ताम्बूलक** उल्लेख भेल अछि ।[90] सुपारीक हेतु **पूगफल** शब्द भेटैत अछि ।[91]

हस्तप्रसाधनमे चूड़ीक हेतु **चूड़ि** शब्द भेटैत अछि- **कर्णपूरः समाल्यैश्च** सदामाल: **सचूड़िनः** ।[92] चूड़ी आभूषण ओ प्रसाधन दुहू मध्य परिगणनीय बुझना जाइछ । सीमन्तक प्रसाधनमे **सिन्दूरक** उल्लेख भेल अछि ।[93] रत्नाकरमे कतोक प्रसंगमे सिन्दूरक हेतु **कङ्कण** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[94] पुष्पप्रसाधनमे फूलक मालाक उल्लेख अनेक प्रसंगमे **पुष्पमाल्य**[95], **माल्यस्रग**[96] आदि शब्द द्वारा भेल अछि । शिव ओ शिवाक पूजनक हेतु विभिन्न प्रकारक पुष्पमे **कुब्जक, करवीर, मल्लिका, अशोक, कदम्ब, उत्पल, मालती, सिन्धुवार, जवा, कुसम्भ, शतपत्रिका** आदिक उल्लेख भेल अछि ।[97]

ललाटक प्रसाधनमे **तिलकक** विशेष उल्लेख भेल अछि ।[98] तिलकक हेतु **गोरोचन, दधि, चन्दन** आदिक मिश्रणकेँ प्रशस्त कहल गेल अछि ।[99] नारीप्रसाधनमे **तिलक** उल्लेख सेहो भेल अछि- **तिलं कर्ण ललाटे वै कर्तव्यन्तु विजानता**[100] सँ ललाट पर **तिल** बनयबाक उल्लेख भेटैछ । चरण प्रसाधनमे आलक्तकक (अलता) उल्लेख भेल अछि ।[101] शृंगारक विशिष्ट सामग्रीमे अयनाक हेतु **मुकुर** ओ **दर्पण** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[102]

शरीरक वाह्य भागकेँ स्वच्छ करबाक हेतु **उबटनक** उपयोग होइछ । उबटनक हेतु रत्नाकरमे **उद्वर्त्तन**[103] ओ **उत्सादन**[104] शब्द भेटैत अछि । **उद्वर्तनमे नागकेशर, कर्पूर, मुरा, मांसी** ओ **वालिका** नामक द्रव्यक मिश्रण होयबाक उल्लेख भेल अछि । **मुरा मोट्ठर इति प्रसिद्धा:** तथा **वालिका वार इति प्रसिद्धा:** उल्लेखसँ ई स्पष्ट होइछ जे मुराक देशी पर्याय मोट्ठर ओ वालिकाक बार छल । शरीरकेँ परिशुद्ध करबाक हेतु **गौरसर्षपकल्कक** सेहो उल्लेख भेल अछि ।[105] गौर सर्षप पीयर सरिसोक हेतु तथा **कल्क** खैरक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । **सर्वौषधि युतैः** जलैः स्नान कृत्वासँ स्नानमे सर्वौषधियुक्त जलक उपयोगक उल्लेख भेटैछ ।[106]

'मांसी जटामांसी, शैलेयं सन इति प्रसिद्धं रजनीद्वयं हरिद्रा दारुहरिद्रा' सँ स्पष्ट

अछि जे मांसीक हेतु देशी शब्द **जटामांसी**, शैलेयक हेतु देशी शब्द **सन** तथा रजनीद्वयक हेतु **हरिद्रा** ओ **दारुहरिद्रा** अछि । स्नानक हेतु प्रयुक्त द्रव्यक हेतु **स्नानानि** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[107] स्नानानिक व्याख्या करैत कहल गेल अछि जे '**स्नानानि स्नानाधनानि तिलमलकादीनि इति** ।[108] एहिसँ स्नानपूर्व शरीरपर तेल, **आँवला** आदिक उपयोगक उल्लेख भेटैछ । तेलक हेतु **तैल** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[109]

शरीरक अंगकेँ सुगन्धिद्रव्यसँ सुवासित करबाक हेतु **अङ्गराग** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[110] शरीरपर लेपबा योग्य द्रव्यक हेतु **अनुलेपन**[111] ओ **विलेपन**[112] शब्दक प्रयोग भेल अछि । सुवासक हेतु प्रयुक्त द्रव्यक हेतु गन्ध,[113] सुगन्ध, गन्धभृत ओ सुगन्धीनि[114] शब्दक उल्लेख भेल अछि । सुगन्धिद्रव्यक विशिष्ट मिश्रणकेँ **सर्वगन्ध** कहल गेल अछि ।[115] सर्वगन्धमे **कुंकुम, अगुरु, कस्तूरी** ओ **जातीफलकेँ** परिगणित कयल गेल अछि ।[116] गन्धशास्त्रक आधारपर सर्वगन्धकेँ परिभाषित करैत कहल गेल अछि जे सर्वगन्धक निर्माणमे दूभाग **कस्तूरी**, चारि भाग **कुंकुम**, सोलह भाग **चन्दन** आ चारि भाग **कर्पूरकेँ** मिश्रित कयल जाइछ ।[117]

एहि तरहेँ सर्वगन्धमे **जायफल** ओ चन्दनमे कोनो एक गोटकेँ **कर्पूर कुंकुम** ओ **कस्तूरीक** संग मिश्रित करबाक उल्लेख भेटैत अछि । सुगन्धिद्रव्यक रूपमे **रत्नाकरमे** सर्वगन्धेक पदार्थक बहुशः उल्लेख विभिन्न प्रकरणमे देखि पड़ैछ । अन्य सुगन्धिद्रव्यमे **'नख'** क उल्लेख भेटैत अछि । **नखं सुगन्धिद्रव्य विशेषः नखीति व्याख्यातम्**'[118] सँ ई द्योतित होइछ जे एहि सुगन्धिद्रव्यक देशी नाम **नखी** अछि ।

एहि तरहेँ **चण्डेश्वरक रत्नाकरग्रन्थमे** वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक प्रचुर उल्लेख भेटैत अछि जाहिसँ मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासपर पर्याप्त प्रकाश पड़ैत अछि । रत्नाकरकारक ई विलक्षणता थिक जे ई अपन विवरणमे संस्कृतक कठिनाह शब्दकेँ स्पष्ट करबाक हेतु देशी शब्दक उपयोग कयलनि अछि आ एहि तरहेँ वेशभूषा प्रसाधनक कतोक मैथिली शब्द एहि माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि यथा **नखी, कोञ्ची, चौरण रावट, मोट्ठर, वार, जटामांसी**, इत्यादि । एहिमे उल्लिखित किछु विशिष्ट संस्कृतसम शब्द अछि **चूड़ि, मुद्रिका, कङ्कन, आलक्तत** आदि । कंकण शब्दक एहिमे विलक्षण प्रयोग सिन्दूरक अर्थमे भेल अछि जे जकर अप्रतिम विशिष्टता बुझना जाइछ ।

कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर मैथिली साहित्यक आदि ग्रन्थ **वर्णरत्नाकरक** प्रणेता छथि । मैथिली साहित्यमे हिनक एहि विशिष्ट अवदानमे प्रयुक्त मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेखकेँ अवडेरि कऽ एकर सम्यक् मूल्यांकन नहि कयल जा सकैछ । मुदा हिनक अन्यो ग्रन्थमे वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेख भेल अछि जाहिमे हिनका द्वारा प्रणीत **धूर्तसमागम** प्रहसन ओ कामशास्त्रक ग्रन्थ **पञ्चशायककेँ** राखल जा सकैछ । **धूर्त्तसमागम** प्रहसनमे प्रयुक्त मैथिली गीतमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावली तथा **वर्णरत्नाकरक**

शब्दावलीपर अग्रिम खण्डमे विवेचन कयल गेल अछि । एतय हिनक **धूर्त्तसमागम**क संस्कृत श्लोक तथा संस्कृत रचना पञ्चशायकमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावली विवेच्य अछि ।

धूर्त्तसमागम नाटकमे अनेक स्थलपर मैथिल वेश भूषाप्रसाधनक वर्णन भेल अछि । एहिमे संन्यासीक वर्णन करैत कहल गेल अछि-

> **दण्ड कमण्डलु मण्डित हस्तः सुललित तिलक विभूषित मस्तः ।**
> **अयमुपसर्पति अङ्गम लोभः चल काषायपटार्पित शोभः ॥**[119]

एतय संन्यासीक वेशमे **दण्ड** ओ **कमण्डलु** तथा प्रसाधनमे माथपर **तिलक**क उल्लेख भेटैत अछि ।

एहि नाटकमे कविशेखर एक स्थलपर नारीक अनुलेपनक विविध सामग्रीक उल्लेख कयलनि अछि । नारीलोकनिक हाथक मण्डनक हेतु **मृगमद** ओ **कर्पूर**क उपयोगक उल्लेख अछि ।[120]

कविशेखराचार्यक अपर ग्रंथ **पञ्चशायक** कामशास्त्रक ग्रंथ थिक आ एहिमे प्रयुक्त शब्दावलीमे सर्वथा संस्कृतक पारम्परिके शब्द उल्लिखित भेटैछ । तथापि एहि ग्रन्थमे प्रसाधन विन्यासक किछु विशिष्ट उपचारक विशेष उल्लेख भेल अछि जाहिसँ लोकजीवनमे प्रसाधन विन्यासक किछु विशिष्टताक निदर्शन भेटैछ ।

एहि ग्रन्थक विभिन्न प्रकरणमे **रुचिरवेषा**[121] **चारुवेषा**[122] आदि शब्दक उल्लेख भेल अछि जाहिसँ वस्त्रसज्जाक विशिष्टता कथित भेल अछि । वस्त्रक हेतु **वस्त्र**,[123] **वसन**[124] **अम्बर**[125] आदि शब्द भेटैछ । **पट्टवसन**[126] **सितवसन**[127] ओ **रक्ताम्बर**[128] क सेहो, उल्लेख भेल अछि जाहिसँ रेशमी वस्त्र, श्वेतवस्त्र ओ लाल रंगक वस्त्रकेँ विज्ञापित कयल गेल अछि । **कार्पासिक** वस्त्रक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[129] अधोवस्त्रमे **नीवी**क[130] उल्लेख भेल अछि । एहि तरहेँ वस्त्रसँ सम्बद्ध समस्त शब्दावली पारम्परिके कोटिक अछि ।

आभूषणक शब्दावलीमे एहि ग्रन्थमे सामान्य गहनाक हेतु **भूषण**[131] **विभूषण**[132] आदि शब्दक उल्लेख भेटैछ । आभूषणक दुइ गोट प्रभेद एहि ग्रन्थमे देखि पड़ैछ– **कुण्डल**[133] ओ **ताटङ्क**[134]; कुण्डल कर्णाभूषण विशेषक हेतु तथा ताटङ्क आधुनिक भाषाक तड़कीक हेतु कथित अछि । **नानारत्नसुवर्ण वस्त्र कुसुमै राभूषिताङ्गी**[135] सँ विभिन्न प्रकारक रत्न जटित आभूषणक विज्ञापन होइछ । संगहि एहि प्रयोगमे भूषणसँ वेशभूषा प्रसाधनक सम्मिलित स्वरुपक विज्ञापन होइछ ।

प्रसाधन विन्यासमे **ज्योतिरीश्वर** एहि ग्रन्थमे जाहि विशिष्ट तत्व सभक विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि ताहिमे **सुगन्धौषधि** प्रकरण[136] **दुर्गन्धिहरण** प्रकरण[137] **स्नानीय**[138]

सामान्याङ्गराग[139] **सर्वोत्तमसुगन्धि प्रकरण**[140] **मुखवास प्रकरण**[141] **रोमशातन**[142] **केशसंस्कार**[143] **मुखकण्टकहरण**[144] आदिकेँ परिगणित कयल जा सकैछ । सुगन्धौषधिप्रकरणमे शरीरक स्वाभाविक दुर्गन्ध, घामजन्य दुर्गन्ध, कक्षादिक दुर्गन्ध, ग्रीष्मऋतुजन्य गन्ध आदिकेँ समाप्त करबाक तथा अतिशय ग्रीष्म रहलो उत्तर घाम नहि अयबाक औषधि सभक वर्णन देखि पड़ैछ । स्नानीयसुगन्धि प्रकरणमे शरीरक सौरभ, कान्ति, चिक्कनता आदिकेँ बढ़यबाक हेतु विभिन्न प्रकारक **विलेपन** ओ **परिमल तैल**क उल्लेख भेल अछि । सर्वोत्तमगन्ध ओ सामान्याङ्गराग प्रकरणमे शरीरकेँ सुवासित करबाक द्रव्य ओ विलेपनक उल्लेख भेल अछि । मुखवास प्रकरणमे किछु एहन चूर्णक उल्लेख भेल अछि जकर सेवनसँ मुखसँ सुवास प्रकाशित होमय लगैछ । रोमशातन प्रकरणमे अनपेक्षित केशकेँ निर्मूल करबाक विभिन्न विलेपक निर्माण प्रक्रिया वर्णित भेल अछि । केशसंस्कार प्रकरणमे केशकेँ निर्मल, दीर्घ, आघूर्णित, सघन, कारी बनयबाक विभिन्न प्रकारक तैलादिक वर्णन कयल गेल अछि । मुखकण्टकहरण प्रकरणमे मुँहक बर्रे आदि समाप्त कए ओकरा आकर्षक बनयबाक विलेपनादिक वर्णन भेल अछि ।

एहि प्रकरण सभक अतिरिक्त **केशरञ्जन, चिप्पटहरण** ओ अन्य अनेक वस्तुक वर्णन भेल अछि जकरा माध्यमे शरीरकेँ साजसज्जासँ सम्यक्रूपेण पूर्ण राखल जा सकैछ । एहि समस्त प्रकरणमे विभिन्न प्रकारक वनस्पति ओ सुगन्धिद्रव्यादिक मिश्रणसँ औषधि तैयार करबाक विवरण भेटैत अछि । एहि औषधिमे अधिकांश विलेपक रूपमे बनयबाक उल्लेख देखि पड़ैछ । स्वभावतः एहि ग्रन्थमे बेर बेर **विलेपन**[145] **परिलेपन**[146] **प्रलेप**[147] आदि शब्दक व्यवहार भेल अछि ।

यावन्तो विलेपन ओ औषधि निर्माण प्रक्रियाक उल्लेख **पञ्चशायक**मे भेल अछि ताहिमे प्रयुक्त अधिकांश सामग्री वैद्यकसँ सम्बन्ध रखैछ आ रसायन शास्त्रक अनुरुप ओकरा सभक नामावली भेटैत अछि । तथापि ओहिमे प्रयुक्त किछु सुगन्द्रिव्य सभमे **गोरोचन, केशर, गजकेशर, कर्पूर, चन्दन, कुष्ठ, अगुरु, उशीर, तुरुष्क** (लोहवान), **मांसी वचा, जातीफल** आदि उल्लेखनीय अछि ।

अङ्गरागक सम्बन्धमे एहि ग्रन्थमे कहल गेल अछि– **प्रायोङ्गरागो पुरुषेण कार्य्यः स्त्रियोपि सम्भोगसुखाय गात्रे** ।[148] एहि कथासँ पुरुष ओ स्त्री दूहूक द्वारा अङ्गरागक व्यवहारक उल्लेख भेटैछ । **पुष्पाङ्गरागरुचिरा**[149] शब्दसँ अङ्गरागमे पुष्पक उपयोगक उल्लेख भेटैछ । **सुगन्धिमाला वसनस्रग अङ्गरागादि**[150] सँ पुष्पमाला ओ सुगन्धिद्रव्यक अङ्गरागमे व्यवहारक उल्लेख भेटैछ । नयनप्रसाधनक हेतु **कज्जल**[151] ओ **अञ्जन**[152] शब्दक उल्लेख भेल अछि । ललाटपर विभिन्न प्रकारक द्रव्यसँ निर्मित **तिलक**क निर्देश भेटैत अछि ।[153] मुखप्रसाधनामे **ताम्बूल**क तथा **एला**क उल्लेख भेल अछि ।[154] विभिन्न प्रकारक तेलक वर्णन भेल अछि ।

केशप्रसाधनसँ सम्बद्ध बहुल शब्दावलीक प्रयोग एहि ग्रन्थमे भेल अछि । केशक हेतु केश, कच, ओ कुन्तल शब्दक प्रयोग **सुचारुकेशादि**[155] **दीर्घकचा**[156] **पिङ्गलकुन्तला**[157] आदि शब्दमे देखि पड़ैछ । खोपाक हेतु **मिल्ल**[158] शब्दक उल्लेख भेल अछि । **सन्माल्यकेशः**[159] सँ केशमे पुष्पमाल्यक प्रसाधनक संकेत भेटैछ । केशक विभिन्न गुणमे ओकर सघनता, अरूक्षता, चैक्कण्य, श्यामता, विशालता, बहुलता, कुटिलता, निर्मलता आदिक उल्लेख **भाव्या घना रौक्ष्यविवर्ज्जिताश्च श्यामा विशाला बहुला कचाः स्युः**[160], **दीर्घाः प्रचुराश्च केशाः**[161], **केशस्यसर्वत्वमलं निहन्ति**[162], **शिरोरुहं मेचकतामुपैति**[163], **केशान्करोति शुक्लानपि कृष्णावर्णान्**[164], **कृष्णाः कुटिलाः विशालाः**[165], **शिरोरुहं मेचकतामुपैति**[166] **स्तोकपिङ्गलकुन्तलाः**[167] आदिमे भेटैछ ।

एहि तरहेँ ज्योतिरीश्वरक एहि कामशास्त्रीयकेँ ग्रन्थ खास कऽ प्रसाधनसँ सम्बद्ध शब्दावलीक हेतु विशिष्ट कहल जा सकैछ ।

ओना तँ वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक दृष्टिये महाकवि **विद्यापतिक** पदावली साहित्यकेँ अत्यन्त समृद्ध कहल जा सकैछ आ एहिसँ मैथिल वेश भूषा प्रसाधन परम्पराक सम्यक परिज्ञान होइत अछि मुदा एहिपर मैथिली साहित्य खण्डमे पृथकसँ विचार कयल गेल अछि । पदावली साहित्य ओ अवहट्ठ कृतिसँ इतर स्मार्त निबन्धकारक रूपमे हिनक अनेक संस्कृत ग्रन्थावली भेटैछ यथा **शैवसर्वस्वसार**, **शैवसर्वस्वभार प्रमाण-भूतपुराण संग्रह**, **दानवाक्यावली**, **गयापत्तलक**, **दुर्गाभक्तितरंगिणी**, **लिखनावली**, **विभागसार**, इत्यादि । हिनक एकगोट संस्कृत नाटक **मणिमञ्जरी** नामसँ भेटैछ ।

एहि विभिन्न संस्कृत ग्रन्थमे मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक अप्रत्यक्ष उल्लेख भेल अछि । मुदा एहि ग्रन्थ सभमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्द सभ संस्कृतक पारम्परिके स्वरूपक अछि ।

शिवक स्नपनमे सर्वोषधिक परिभाषा करैत एहिमे **मुरा** ओ **शठी** नामक दुइ गोट वस्तुकेँ स्पष्ट करैत महाकवि ओकर प्रचलित देशी शब्द एहि रूपेँ विज्ञापित कयलनि अछि- **मुरा मोटउर इति प्रसिद्धम्, शठी कञ्चोर इति प्रसिद्धम्** ।[168] एहिसँ स्पष्ट अछि जे मोटउर ओ कञ्चोर देशी मैथिली शब्द थिक ।

उबटनक हेतु **उद्वर्त्तन** शब्दक उल्लेख करैत **शैवसर्वस्वसार**मे एहि श्लोकार्द्धमे ओकर सामग्रीक उल्लेख भेल अछि- **यवगोधूमजैश्चूर्णैः कषायैर्गन्धसंयुतैः**[169] अर्थात् उद्वर्तनमे **कषाय**, **यव** ओ **गहूम**क चूर्णक उपयोग वाञ्छित अछि । अवश्ये ई चूर्ण सभ उबटनक हेतु प्रयोक्तव्य कहल गेल अछि ।

शिवक स्नपन विधिमे **तिलक तेल**, **हस्तयन्त्रोद्भव तेल**, चन्दन मिश्रित जल, **फलोदक**, **पुष्पोदक**, **कर्पूरागुरु तोय**, **वस्त्रपूततोय**, धूपित जल, पाटलोदक आदिक

उल्लेख भेल अछि जाहिसँ स्नानक हेतु प्रयुक्त विभिन्न प्रकारक धूपित ओ सुगन्धित जलक उपयोगक उल्लेख देखि पड़ैछ ।[170]

शिवलिंगक विभिन्न प्रकार भेदमे **इन्द्रनीलमयं**, **मणिमयं**, **हेममयं**, **रौप्यलिङ्ग**, **कांस्यजं**, **स्फाटिकं**, **ताम्रलिङ्ग**, **मुक्ताफलमयं**, आदिक उल्लेख भेल अछि जाहिसँ आभूषणमे प्रयुक्त विभिन्न प्रकारक धातु ओ रत्नक नामावली भेटैत अछि ।[171]

शिवलिङ्गकेँ सुगन्धिद्रव्यानुलेपनक क्रममे सुगन्धि द्रव्यमे **चन्दन**, **अगुरु** **कृष्णागुरु**, **कुङ्कुम**, **उशीर**, **पद्मक** **कालेयक**, **तुरुष्क** आदिक उल्लेख भेल अछि । **पद्मकं पद्मकाष्ठम्**, **कालेयकं कालकाष्ठम्**, **तुरुष्कं शुष्ककाष्ठम्** आदि द्वारा किछु शब्दक पर्याय देल गेल अछि । कालेयककेँ **डा.जयमन्तमिश्र** **दारुहल्दी** तथा **सिह्लक**केँ **तुरुष्क** कहलनि अछि । संगहि एहिमे **तुरुष्क** शब्दक अर्थनिर्वचन करैत ओ एकरा **लोहवान** कहलनि अछि ।[172] लोहवान मुस्लिम प्रभावक शब्द थिक **तुरुष्क**सँ सेहो स्पष्ट होइछ । एहि शब्दक प्रयोग **ज्योतिरीश्वरक पञ्चशायक**मे सेहो भेल अछि ।[173] चन्दन, अगुरु, कृष्णगुरु, कुंकुम ओ कर्प्पूरक अनुलेपक आधारपर शिवाराधनक फलकेँ क्रमशः गुणित कहल गेल अछि । लोकजगतमे एहि सुगिन्धिद्रव्य सभक क्रमशः उत्तम अनुलेपक रूपमे मान्य होयबाक सम्भावनाकेँ एहि आधारपर असंगत नहि कहल जा सकैछ ।[174]

कुंकुमक हेतु **रक्त** शब्दक उल्लेख '**रक्त विल्वाक्षतैः पुष्पैर्दधिदूर्वातिलैः कुशैः**' केँ व्याख्यात करैत **रक्तमत्र कुङ्कुमः**' उल्लेखमे भेटैछ ।[175]

विभिन्न प्रकारक पुष्पसँ पूजा करबाक उल्लेखमे **अर्क**, **करवीर**, **पाटल**, (गुलाब) **श्वेतमन्दार**, **वकपुष्प** (अगस्त) **द्रोण**, **जाती** (चमेली), **विजय**, **सितकमल** (श्वेत कमल), **पद्म** (कमल), **अपामार्ग** (भटकरैया), **शमी** (सैनी), **नीलोत्पल** (नीलकमल), **वृहत्या** (वृहतीपुष्प), **नाग** (नागकेशर), **चम्पक** (चम्पा), **पुन्नाग** (केशरवापुनाल), **मल्लिका** (बेली), **अशोक**, **अश्वेतमन्दार** (पारिजात वा फरहद), **कर्णिकार** (कनैल), **अपामार्ग** (चिरचिरी), **तगर**, **कुमुद**, **कदम्ब** आदि पुष्प ओ पुष्पमालाक कथित भेल अछि[176] जाहिमे अधिकांश पुष्पप्रसाधनसँ सम्बद्ध अछि ।

शैवसर्वस्वसर प्रमाणभूत पुराण संग्रहमे धूपक वर्णन करैत विभिन्न प्रकारक सुगन्धिद्रव्य यथा- **गुग्गुल**, **सरल**, **देवदारु**, **नमेरु** (रुद्राक्ष वा पुन्नाग), **शालरस**, **श्रीनिवास**, **कुन्दुरु** आदि ।[177] धूपद्रव्यमे **अगुरु**, **कर्पूर**, **सितचन्दन** अर्थात **श्रीखण्ड चन्दन** ओ **गुग्गुलु**केँ विशेषरूपेँ परिगणित कयल गेल अछि ।[178]

विशिष्ट शैव प्रसाधनमे महाकवि **भूति** ओ **त्रिपुण्ड्र**क उल्लेख कयलनि अछि ।[179]

विद्यापतिक संस्कृत ग्रंथावलीमे मिथिलाक विशिष्ट मुखप्रसाधन **पानक** वर्णन भेटैत अछि । एहि क्रममे **कर्पूर**, **पूग**, **कक्कोल**, **जातीफल**, **लवंग** एहि पाँचटा वस्तुक

संयोगसँ पान तैयार करबाक उल्लेख भेल अछि । एहि वस्तुक हेतु **पाञ्चसौगन्धिक** शब्दक व्यवहार भेल अछि-[180]

कर्पूर पूग कक्कोल जातीफल लवङ्गकैः । सुगन्धैः पञ्चभिर्द्रव्यैः पञ्च सौगन्धिकंमतम् ॥[181]

वस्त्रदान प्रकरणमे वस्त्रक किछु विशिष्टताक वर्णन भेल अछि जाहिमे नवीनता, पवित्रता, मजगुती, कोमलता, केशराहित्य ओ धूपित होयबाक उल्लेख अछि ।[182]

एहिसँ चिक्कण वस्त्रक अभिज्ञान होइछ । संगहि वस्त्रकेँ सुगन्धित करबाक उल्लेख सेहो भेटैछ ।

यज्ञोपवीतक दानक उल्लेखक क्रममे **त्रिवृत**, **सुपीत**, **पट्टसूत्र** आदि शब्दक उल्लेख भेल अछि । तानीक हेतु **वृत्त** शब्दक उपयोग भेल । **सुपीत** (खूबपीयर)सँ वस्त्रक रञ्जन-प्रक्रियाक उल्लेख भेटैछ तथा **पट्टसूत्र**सँ रेशमी तन्तुक उपयोगक अभिज्ञान होइछ । वस्त्रक हेतु **वस्त्र** ओ **वास** शब्दक उपयोग भेल अछि । वस्त्रदानक उल्लेखक क्रममे चंदोआक हेतु **वितान** ओ **वितान**क शब्द आयल अछि । वितानकक अर्थ **शामियाना** वड़का तम्बू चंदवा अथवा खेमा कहल गेल अछि ।[183] **दुकूलपट्ट** शब्दक प्रयोगसँ दोपटाक बोध होइछ ।[184] तोशक ओ सीरकक हेतु **पञ्चतूली** ओ **तूलवस्त्र** शब्द उल्लिखित भेल अछि ।[185] छाताक हेतु **छत्र** शब्द भेटैछ । ई शब्द **छतरी**क हेतु सेहो उल्लिखित भेल अछि ।[186] छतरी शरत्कालीन चन्द्रक समान धवल, मुक्तामालसँ सुशोभित मणिमय पण्डसँ युक्त तथा सुवर्णरचित देबाक थिक । **शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूतपुराण संग्रह** ग्रंथमे शिवकेँ ध्वज ओ पताकादान करबाक सेहो उल्लेख अछि । **श्वेतध्वज**क हेतु **सितवस्त्र**क (उज्जर वस्त्र) उल्लेख भेल अछि ।[187]

पताकालक्षणक वर्णन करैत एहिमे नापक किछु विशिष्ट शब्दावली वर्णित अछि । लम्बाइक हेतु **दीर्घा**, चौड़ाइक हेतु **आयाम** शब्दक तथा नापक हेतु **अंगुलि**, ओ **हस्त** (हाथ) प्रमाणक उल्लेख भेल अछि । पताकाक वर्णमे पीत (पीयर), रक्त (लाल), कृष्ण (कारी), नील (नील), धूम्र (आसमानी), पीतरज (नारंगी) तथा अरुण (लाल) रंगक उल्लेख भेल अछि । पताकाकेँ अश्व, वृष, गरुड़, सिंह आदिक चिह्नक वर्णनसँ वस्त्र पर कढ़ाइक काज वा चित्रांकन द्वारा विभिन्न प्रकारक चित्र उरेहल जयबाक वर्णन भेटैछ ।

आभूषणमे **केयूर** तथा **कटक**क दान द्वारा शिवकेँ प्रसन्न करबाक उल्लेख भेल अछि । प्रसाधन सामग्रीमे दर्पण दानक उल्लेख भेल अछि । शिव मन्दिरमे वितानक अर्थात **चँदोआ** दान करबाक सेहो उल्लेख भेल अछि । विविध प्रकारक रत्न यथा **इन्द्रनील**, **पद्मराग कीटपक्ष**, **वज्र** तथा **रत्नावली**क दानक उल्लेख संगहि **छाता**क दानक सेहो उल्लेख भेल अछि । शिवमन्दिरमे वस्त्रसँ शोभा करबाक विधिमे **दुकूल पट्ट**क उल्लेख भेल अछि । संगहि **मेखला** ओ **कटिसूत्र** प्रदान करबाक सेहो उल्लेख अछि ।

एहि तरहेँ **शैव सर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराणसंग्रह** ग्रंथमे शिवपूजासँ सम्बद्ध वेश भूषा प्रसाधनक उल्लेखक क्रममे लोक जगतक विभिन्न वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक परिचय भेटैत अछि ।[188]

महाकवि **विद्यापति**क '**शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराण संग्रह**'मे गहनाक विविध प्रकारमे **केयूर**, **कटक**,[189] **मेखला** ओ **कटिसूत्र**[190] तथा **रत्नावली**[191]क उल्लेख भेल अछि । **हेमनिबद्ध क्षुद्र बहुरत्नदाने**[192] **सुवर्ण रजतान्यतरमय रचित महारत्न महीदाने**[193]सँ सोना ओ चानीमे रत्न जटित होयबाक उल्लेख भेटैछ । विविध प्रकारक आभूषणीय रत्नमे **वज्र** (हीरा), **इन्द्रनील** (नीलम) **वैदूर्य** (लहसुनिआ), **पद्मराग** (मानिक वा लाल) **मौक्तिक** (मोती), **कीटपक्ष** तथा **सोना**केँ महारत्न मध्य परिगणित कयल गेल अछि ।[194] एहि तरहेँ **शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराण संग्रह** ग्रंथमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक पुष्कल शब्दावलीक उल्लेख देखि पड़ैछ ।

महाकविक **शैवसर्वसार** ग्रन्थमे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावली हिनक **शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराण संग्रह**क सर्वथा अनुवर्तीए बुझना जाइछ किन्तु एहिमे किछु अन्यतम विशिष्टता सभ देखि पड़ैछ । एहिमे शिवलिंगक हेतु प्रयुक्त द्रव्यमे किछु धातु ओ धातुमिश्रणक उल्लेख भेल अछि जाहिसँ आभूषणमे मिश्रणक उपयोगक संकेत भेटैछ । एहन धातु मिश्रण ओ धातुमे **त्रपु** (राङा) **त्रैलोहिक** (कारीलोहा, सोना ओ राङाक मिश्रण), **रौप्य** (चान्दीनिर्मित), **पित्तल** (पित्तर) आदि ।[195] पुष्पविन्यासक शब्दावलीमे एहिमे किछु विशिष्ट शब्द अछि- मुक्त पुष्प ओ संग्रथित पुष्प ।[196] मुक्तपुष्पसँ फुटकायल एकल पुष्प ओ संग्रथित पुष्पसँ परस्पर आबद्ध पुष्पक परिज्ञान होइछ । तदतिरिक्त पुष्पमालाक उल्लेखसँ स्पष्ट अछि जे वृत्ताकार संग्रथित भेलापर पुष्पक समूहकेँ माला रूपमे परिगणित कयल जाइत छल । अनुलेपनक योग्य विविध सामग्रीक सम्मिश्रणकेँ **बहुगन्धकरण**क कहल गेल अछि ।[197] तुरुष्क गन्धद्रव्यक हेतु **सिहलक** पर्याय देल अछि ।[198] एहि ग्रन्थमे शिवक पूजाक हेतु व्यवहारयोग्य वा वर्जित पुष्पक अनेक नवोनाम सभ भेटैत अछि यथा- केतकी (केवड़ा), बालक (जूहीक एकटा प्रकार विशेष), ग्रन्थिका, व्याघ्री (रेंगनी), डिम्बाक्षी, नीम, भण्टिका (भाँटि), मदमत्ती (धतूर); हस्तिपुष्पी, वज्रजरी, शतपुष्प, कोकिलाक्ष इत्यादि ।[199] एहिमे केयूर कटकक मेखला ओ कटिसूत्रक अतिरिक्त हेममुकुट (स्वर्णमुकुट)[200] हेमाभरण (स्वर्ण आभूषण)[201] क उल्लेख आभूषणक शब्दावलीक रूपमे भेल अछि । किङ्किणी[202] शब्दमे **किङ्किणी** नामक कटिक गहनाक उल्लेख भेटैछ । शृंगारक सामग्री विशेषमे **दर्पण**क उल्लेख भेल अछि ।[203] शैवमतावलम्बीलोकनिक विशिष्ट आभूषणक रूपमे **रुद्राक्षमाला**क उल्लेख भेल अछि ।[204]

एहि तरहेँ **शैवसर्वस्वसार**मे शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराणसंग्रहक शब्दावलीक अपेक्षा किंचिते क्वचित् नव शब्द देखि पड़ैछ ।

महाकवि विद्यापतिक **दानवाक्यावली**मे दानीय वस्तुक सूचीमे वेशभूषा प्रसाधनसँ सम्बद्ध किछुए एहन शब्द देखि पड़ैछ जे हिनक उपर्युक्त ग्रन्थद्वयमे उल्लिखित नहि भेल हो यथा **कृष्णाजिन**[205] **उपानह**[206] **चेल**[207] (वस्त्र), **पट** (वस्त्र), **पञ्चरङ्गेन सूत्रेण** (पाँच रंगक सूत)[208], **वस्त्रसंवीत** (वस्त्रसँ झाँपल)[209], **सितसूक्ष्माम्बरावृत्ता** (उज्जरमहीनवस्त्रसँ आवृत)[210], **रक्ताम्बर युगोपेतं** (लालवस्त्रसँ युक्त), **काष्ठपादुका** (खड़ाम)[211], **उपानत्** (जूता)[212], **कङ्कट** (ककही)[213], **वर्म** (सन्नाह कवच)[214], **कुसुम्भ** (कुसुमरंग)[215], आ **विकवस्त्र** (उनी वस्त्र) **कम्बल**[216], **उष्णीष** (पगड़ी)[217] **चित्रवस्त्र** (चितकाबर), **तूलपटी** (सीरक, तोसक), **सरोमवस्त्र**[218], **वस्त्रच्छादित कम्बल** (खोल लगाएल कम्बल)[219], **आमलक** (धात्री, आँवला स्नानीय द्रव्य)[220] आदि ।

एहि ग्रन्थमे सुगन्धि द्रव्यक परिभाषा दैत कहल गेल अछि जे स्नानमे, मुख प्रसाधनमे, धूपमे जे लोककेँ प्रिय लगैछ सैह सुगन्धि कहल जाइछ ।[221]

एहिना **ताम्बूल**क परिचय दैत एहि ग्रन्थमे एहि विशिष्ट मुखप्रसाधानक अत्यन्त सुष्ठु वर्णन देल गेल अछि । कहल गेल अछि जे **ताम्बूल** एकटा समुदित वस्तु थिक जे आमोदप्रद अर्थात् सुखद होइछ । ओहिमे काँच अथवा सुक्खल सुपारीक छोट टुकड़ी **नागवल्ली** अर्थात पानक पात, **पलाश** अर्थात कत्थ तथा **सीप** अथवा पाथरक भस्म अर्थात चून एहि सभक एकत्र मिलन होइछ । एही चारू मिलल वस्तुकेँ **ताम्बूल** कहल जाइछ ।[222]

एहि तरहेँ **दानवाक्यावली**मे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक किछु विशिष्ट शब्द ओ तकर व्याख्या दृष्टिगोचर होइछ ।

विद्यापतिक मणिमञ्जरी नाटिकामे श्रृंगार रसक अनुकूल उद्दीपन विभावक चित्रणक क्रममे **अङ्गराग**सँ सम्बद्ध सुगन्धि द्रव्यमे **चन्दनपंक**क उल्लेख भेटैछ ।[223] एहिना **भूषण**, **परिहावेह** (परिधापय), **वलय**, **शुद्धामणि श्रेणी**, **काञ्चननूपुर** **प्रसाधन** आदिक उल्लेख भेटैत अछि ।[224]

मिथिलामे तन्त्रग्रन्थ लिखबाक सेहो परिपाटी रहल अछि– । **देवनाथठाकुर**क तन्त्रपद्धतिक ग्रन्थ अछि **तन्त्रकौमुदी** । एहि ग्रन्थक प्रणयनकाल सोलहम शताब्दी कहल जाइछ । एहिमे तन्त्रक विभिन्न पद्धतिक आधारपर देवीपूजाक विविधोपचारक वर्णन भेल अछि । एहि क्रममे देवीक स्वरूपक ध्यान, उपचार ओ निवेद्य वस्तुमे वस्त्राभूषण प्रसाधन सामग्रीक विपुल उल्लेख भेल अछि ।

एहि ग्रन्थमे त्रिपुरसन्दरीकेँ **सर्वश्रृंगार वेशाढ्य**[225] ओ **सकल श्रृंगार वेशाढ्य**[226] कहल गेल अछि । ई दुहू शब्द समस्त वेशभूषा ओ प्रसाधनसँ युक्तिक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । वस्त्रक हेतु एहि ग्रन्थमे **वास** ओ **अम्बर** शब्दक उल्लेख भेल अछि । एहि शब्द सभक सामाजिक प्रयोग **रक्ताम्बरं**,[227] **पीतवस्त्र**,[228] **रक्तवस्त्रा**,[229] **कृष्णवस्त्र**,[230] **रक्तवाससी**[231]

आदि शब्दमे भेटैत अछि । संगहि एहि प्रयोगसँ वस्त्रक विविध रंगक सेहो उल्लेख भेटैत अछि । एहि ग्रन्थमे कृष्णताक अर्थ निर्वचन करैत कहल गेल अछि जे– **कृष्णता वस्त्रस्य नीलीरसेन** अर्थात वस्त्रकेँ कारी रंगसँ रङ्बाक हेतु नीली रसक उपयोग होइत छल ।[232] एहि विभिन्न प्रकारक सामान्य वस्त्रक अतिरिक्त तन्त्रकौमुदीमे **पट्टवस्त्र**क सेहो उल्लेख भेल अछि जे रेशमीवस्त्र प्रभेदक हेतु प्रयुक्त शब्द थिक । रेशमी वस्त्रकेँ प्रभेद **रक्तांशुक**क सेहो उल्लेख अछि ।[233] वस्त्रसँ सम्बद्ध अन्य शब्द **पुत्तला**क उल्लेख भेल अछि ।[234] ई पुत्तला संभवत: आधुनिक **पुतरी** अछि ।

सुन्दरी पटलमे देवीक पूजाक क्रममे '**अवगुंठिता भव**' कहल गेल अछि ।[235] ई अवगुंठन घोघक हेतु प्रचलित शब्द थिक । पहिरनाक हेतु **परीधान** शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ ।[236] एहि ग्रन्थमे आभूषणक हेतु **भूषा**[237], **भूषण**[238], **विभूषा**[239] **आभरण**[240] शब्द भेटैत अछि । **नवरत्नविभूषाढ्यो**[241] सँ आभूषणमे जटित होयबा योग्य नौ प्रकारक रत्नक उल्लेख स्फुट होइछ । जाहि जाहि आभूषणक उल्लेख एहि ग्रन्थमे भेल अछि से सब थिक– **मुकुट**, **किरीट**, **कुण्डल**, **मुक्ताहार**, **ग्रैवेय**, **अङ्गद**, **कङ्कन** ओ **मंजीर** ।[242]

देवनाथठक्कुरक कालधरि मिथिलामे मुसलमानी प्रभाव अत्यन्त जमि गेल छल से हिनक निम्नलिखित प्रयोग सभसँ स्पष्ट भऽ जाइछ–

दीनारानां सहस्रं तु रत्नं चैव रसायनम्[243], दीनारं वस्त्रयुगलं दधाद्रसरसायनम्[244], पञ्चविंशति दीनारान् वस्त्रालंकारभूषणम्[245] ।

दीनार मुसलमानी शासनकालमे प्रचलित स्वर्णमुद्रा छल । संभवत: एकरो **असर्फी** जकाँ गाथि कऽ आभूषणोक रूपमे गर्दनिमे पहिरल जाइत छल ।

केश प्रसाधनक शब्दावलीमे एहि ग्रन्थमे **धम्मिल्ल** शब्दक उल्लेख भेल अछि । ई शब्द **खोपा**क हेतु प्रयुक्त भेल अछि । खोपामे फूल लगयबाक उल्लेख '**धम्मिल्लाभलपुष्पिणीम्**' शब्दमे भेटैत अछि ।

पुष्प प्रसाधनक पृथक्सँ उल्लेख तँ नहि भेटैछ मुदा हविष्य पुष्प सभमे **रक्तोत्पल**, **हयारि**, **गिरिकर्णी**, **कल्हार**, **कर्णिकार**, **मल्लिका**, **कोरण्ट**, **पाटल**, **कुन्द**, **उत्पल**, **नागचम्पक**, **ननधावर्णा** आदिक उल्लेख भेल अछि जाहिमे अधिकांश सुगन्धित प्रकृतिक ओ पुष्पप्रसाधनक हेतु प्रशस्त देखि पड़ैछ । **हयारि**क हेतु **करवीर**, **गिरिकर्णी**क हेतु **अपराजिता**, **कोरण्ट**क हेतु **कटासेर** तथा **ननधावर्णा**क हेतु **पिण्डीतगर** विशेष लोकप्रचलित छल ।

मुख प्रसाधनमे ताम्बूल शब्दक उल्लेख '**ताम्बूलरागवदनो**'[246] आदि शब्दमे भेटैछ । ताम्बूलमे **पूगीफल**, **नागपत्र** ओ **कर्पूर**क समायोजनक उल्लेख एहि स्वरूपक भेल अछि ।[247]

पूगीफल सुपारीक हेतु तथा **नागपत्र** पानक पातक हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

ललाट प्रसाधनमे तिलकक बहुश: उल्लेख भेल अछि ।[248] तिलकक हेतु **मलयज, कुंकुम, केसर, गोरोचन, कुष्ठक** आदि सुगन्धिद्रव्यक उल्लेख भेल अछि ।[249] **कुष्ठ कूठ इति प्रसिद्ध:** 'सँ स्पष्ट अछि जे कुष्ठक हेतु देशीनाम **कूठ** छल । **मलयजक** हेतु **चन्दन**[250] पर्यायक बहुश: उल्लेख भेल अछि । रक्तचन्दनक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[251] एक स्थल पर गोरोचनादिक हेतु पीतद्रव्य शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[252] विभिन्न अभिचार क्रियामे उपरोक्त विभिन्न सुगन्धिद्रव्यक अतिरिक्त **अगुरु, सिन्दूर, कस्तूरी, गुग्गुल** इत्यादिक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[253] एहि ग्रन्थमे **रोचन** नामक सुगन्धिद्रव्यक मिश्रणक उल्लेख अछि ।[254]

जटामांसीक उल्लेख सुगन्धिद्रव्यक रूपमे भेल अछि । एहि ग्रन्थमे त्रिपुरसुन्दरीक ध्यानमे हुनका **महामृगमदोदार लिप्ताङ्ग:** कहल गेल अछि ।[255] एहि तरहेँ **मृगमदक** उल्लेख अंगरागक सामग्रीक रूपमे भेल अछि । **अनुलेपन** शब्दक सेहो उल्लेख भेल अछि ।[256]

चरण प्रसाधनमे **लाक्षालक्तक** शब्द भेटैत अछि ।[257] ई **अलताक** हेतु प्रयुक्त भेल अछि । **जतु** शब्द लाक्षाक पर्यायक रूपमे उल्लिखित भेल अछि ।[258] **अलताक** हेतु व्यवहृत अपर शब्द **याव** देखि पड़ैछ ।[259] **यावक** व्याख्या करैत कहल गेल अछि- **यावोऽलक्तकम्** । **विद्यापतिक** कतोक गीतमे **पदजावक** शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा-

चरणजावक हृदयपावक[260], **पद जावक** रस जहिरि हृदयवस[261]

एहि तरहेँ **तत्वकौमुदीमे** सेहो वेशभूषा प्रसाधनसँ सम्बद्ध पारम्परिक शब्दावलीक बहुश: उल्लेख भेल अछि तथा कतोक शब्दावलीक अर्थनिर्वचनक क्रममे देशी शब्दक प्रयोग भेल अछि । एकर अनेक शब्द आधुनिक प्रयोगक बहुतो शब्दक संस्कृत स्वरूपक सेहो उद्घाटन करैछ ।

मैथिल वेशभूषा प्रसाधन परम्पराक आधुनिक कालक लोकसिद्ध उल्लेखक दृष्टिये **डा.उमेशमिश्रक मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता** पोथी अत्यन्त उत्कृष्ट अछि । ई पारम्परिक मैथिल जीवनक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक अत्यन्त् प्रमाणिक अभिलेखक रूपमे स्वीकारल जा सकैछ । विगत शताब्दीमे मैथिल वेशभूषाक स्वरूपक सम्बन्धमे हिनक ग्रन्थ प्रचुर प्रकाश दैत अछि । **राजेश्वरझाक** गण्वेषणात्मक निबन्ध एवं मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विषयक अन्यान्यो लेखकक निबन्ध सभसँ मैथिल परम्पराक परिज्ञानमे पर्याप्त सहायता भेटैत अछि । किछु विशिष्ट निबन्ध सभ थिक-

वेशभूषा : ईशदत्त झा ।[262] मैथिलक बदलैत परिधान : उमानाथ झा ।[263] आधुनिक शृंगार प्रसाधन : कमल आनन्द ।[264] आधुनिक फैसन : कृष्णदेव मैथिलीपुत्र ।[265] फैसन : धनचक्र ।[266] मिथिलाक कसीदा परम्परा : दयाशंकर मिश्र ।[267] दुलरैतिनबेटी: नागवल्ली : रामदेव झा ।[268] मिथिलामे व्यवहृत आभरण : राजेश्वर झा ।[269] डाँड़क आभरणक परम्परा[270] । औँठीक परम्परा[271] । कानक गहना[272] । मिथिलाक वेशभूषामे धार्मिक तथ्यक

समावेश:[273] । शृंगारिक प्रसाधनमे केशविन्यास:[274] । मिथिलामे अलताक व्यवहार[275] । मिथिलामे मेहदीक परम्परा[276] । मिथिलामे काजरक प्रचलन : रामेश्वर चौधरी[277] । विद्यापतिक नायिकाक वस्त्र एवं आभूषण: वीरेन्द्र मल्लिक[278] । मिथिलाक परम्परागत वस्त्राभूषण : सतीशचन्द्र झा[279] ।

डा.माखनझाक फोकलोर, मैजिक एण्ड लीजेन्ड्स आफ मिथिला पोथी मैथिल नारी जगतमे प्रचलित किछु विशिष्ट गहना सबहिक सूची प्रस्तुत कयल गेल अछि यथा-

Mangtikas (forhead ornaments), khutis (ear ornaments and tarkis (ear rings), nakmunis(small nose-rins) ketsari (Necklets), bich hia (toerins), Jhim-jhimis (tinkling toe ornaments), bajus and baks (two kinds of aml ets), Chandrahar, haikals, sikaris (three kind of neckless), and ghamauris (seed neckles), sufis (neckrins), Navagrahs and pachkharis (two kinds of amlets), and Lasunis (Gracelets) were all expended.[280]

मिथिला व्यवहार शीर्षक निबन्धमे महावैयाकरण **पं.दीनबन्धुझा** मिथिलाक किछु एहन व्यवहारकेँ प्रदर्शित कयलनि अछि जकर शास्त्रीय प्रमाण प्रदर्शित नहि अछि । मैथिल विवाह पद्धतिक उल्लेख **'आचारात् सिन्दूरदानम्'** पर विचार करैत निबन्धकार एकर अर्थ एतद्विषियक शिष्टवर्गक प्रवृति (प्रयत्न) कहलनि अछि तथा सिन्दूरदान पद्धतिक विशेष वर्णन कयलनि अछि । ई सिन्दूरदान मैथिल विवाह पद्धतिक विशिष्ट अंग होइतहुँ शास्त्रीय नहि अपितु लोकव्यवहारकृत अछि । विवाहोपरांत सधवा नारीलोकनिक सर्वाधिक विशिष्ट प्रसाधनमे सिन्दूरकेँ परिगणित कयल जाइत अछि । सिन्दूरदान पद्धतिक वर्णन करैत निबन्धकार एहिसँ सम्बद्ध प्रक्रियाक उल्लेख एहि शब्देँ कयलनि अछि जाहिमे **सोन** (सोनक अउँठी), **सांख** (शंखक औँठी) आदि आभूषणक प्रसाधनक अतिरिक्त उल्लेख भेटैछ ।

विवाह पद्धतिमे लिखल अछि जे **आचारात् सिन्दूरदानम्** ई व्यवहार मिथिला भरिमे अछि । ई विवाहक एक प्रधान कर्म मानल गेल अछि, तेँहि वर्न्य अवपहरामे नहि कराओल जाइत अछि । सिन्दूरदान कालमे स्त्रीसमाज कन्यावरकेँ शुभाशीर्वाद गीत द्वारा दैत अछि ओ विधवा स्त्रीक सम्पर्क कन्याकेँ हटाय देल जाइत अछि । सिन्दूरदानमे इतिकर्तव्यता पैघ अछि, से सभ केवल व्यावहारिके थीक । प्रसिद्ध अछि जे सात सकारे सिन्दूरदान यथा 1- **सौहगैली** (सोन वा चानीक बनाओल सिन्दूर-पात्र) 2- **सोन** (सोनाक औँठी) 3- **सांख** (शंखनिर्मित औँठी) 4- **सोहगैली** (द्वितीय काठक बनल कोआक खप्पा जकाँ सिन्दूरक प्रकारान्तर पात्र । पूर्वोक्त सिन्दूरपात्र तथा ई औँठी दूहू सोहगैली कहबैत अछि । 5- **सन** (शण) 6- **सैनि** (शमीपत्र) 7- **सिन्दूर** (मटिआ सिन्दूर) ई सात सकार अर्थात सात गोट सकारादि नामक वस्तु एहि सबहिसँ सिन्दूरदान होइछ । वर पाग पहीरि ठाढ़ भऽ बामा हाथमे उक्त छवो वस्तुसँ युक्त सिन्दूरपात्र राखि

ओहि पात्रसँ दहिना हाथेँ छवो वस्तु लऽ कन्याक सीमान्त (सौँथ)मे हाथ भिराय नीचासँ उपर धरि तीन बेर सिन्दूर देथि तदुत्तर तामामे राखल जलमे हाथ डुबाय लेथि ।

केओ उक्त सातो वस्तु, केओ सातमे यथालब्ध ओरिआय सिन्दुरदान करबैत छथि । सिन्दूर, सौँख, सन ई तीन शूद्र वर्ग पर्य्यन्तमे अपेक्षित होइत अछि ।[281]

श्रीगिरिधरझाक मिथिलाक लोककला शीर्षक, निबन्धमे मैथिल वेश विन्याससँ सम्बद्ध दुइ गोट कलापर विशेष विचार कयल गेल अछि- **कसीदा** ओ जनउ । कसीदाक प्रति लोकरुचिक रुझानक उल्लेख करैत निबन्धकार कहलनि अछि जे पाश्चात्य सभ्यताक प्रवेशसँ एहि व्यवसायक प्रगति खूब चलि गेल अछि । अपटूडेट स्त्रीगण समाजमे एहि कलाक विकास दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि । कोनो एहन घर नहि भेटत जतय क्रूस, कांटा तथा सूत नहि भेटत । रंग-रंगक चद्दरि तकियाक **खोल, झोड़ी, रूमाल** देखि देखि आँखि चौन्हिआ जाइत अछि । जमाय-बेटीक साँठमे आब ई कलाक उपयोग खूब बढ़ि रहल अछि । नाना तरहक साड़ी ब्लौज पर फूलपतीक विन्यासक प्रदर्शन देखैक योग्य रहैत अछि ।[282]

मैथिलक द्विजवर्ण सभमे जनउक उपयोग सांस्कृतिक अस्मितासँ आरम्भ होइछ आ वेशक विशिष्ट अंग बनल रहैत अछि । एकर परम्परा ओ स्थितिपर विचार करैत निबन्धकार कहलनि जे- 'ई व्यवसाय अति प्राचीनकालसँ चल आयल अछि । वैदिकालसँ एकर व्यवसाय चल आबि रहल अछि । उत्तरोत्तर एहि कलामे विकास होइत आयल अछि । जनोऊक सांठक विन्यास हमरा मिथिलामे खूब प्रचलित छल आबहु अछिए । कोजागरा तथा द्विरागमक अवसर पर जमाय तथा बेटीकेँ बहु संख्यामे **जनौऊ** तथा **टकुरी** काटल सांठक प्रथा खूब अछि । रंग विरंगक जनउ देखि एक बेर मन मुग्ध भऽ जाइत अछि । मेंही सँ मेंही जनउ एक अढ़ौंचीक खोलीमे राखल अहाँकेँ भेटि सकैत अछि । ब्राह्मणक कोनो एहन घर नहि भेटत जतय एकर व्यवसाय नहि हो । एहिमे स्त्रीलोकनि अपन गौरव बुझैत छथि जे अपन काटल जनउ अपन लोककेँ तथा आनोकेँ पहिरक हेतु दी ।[283]

श्रीमतीमीनारानीझाक 'मिथिलाक भोजन वेष-भूषा' निबन्धमे मिथिलाक भेशभूषा (पहिरन) तथा आभूषणक सविशेष उल्लेखपूर्वक एहिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्या कयल गेल अछि । एहि निबन्धमे पुरुषक भेशभूषामे **धोती, कुर्ता, दोपट्टा, मिरजइ, पाग, गोलगला गंजी, पनही, खराउ,** नेनाक पहिरनमे **धरिआ, घघरी ओ ब्लाउज, गाँती, टोपी** तथा नारी वर्गक वेशभूषामे **साड़ी, चोली, आँचल, ब्लाउज, फराक, केचुवा** आदिक उल्लेख भेल अछि । निबन्धकर्त्री एहि निबन्धमे आभूषणक वर्गीकृत सूची प्रस्तुत कयलनि अछि जाहिमे विशिष्ट वर्ग सभ अछि- पाखुर, हाथ, कमर, गर्दनि, माथ, कान, पैर (गोड़ामे) लगयबाक आभूषण । एहि निबन्धमे उपनयनक समयमे पहिरबाक गहना सबहिक वर्गीकृत सूची तथा केशविन्यासक सेहो वर्णन भेल अछि ।[284]

धनुषा लोकचित्रकला शीर्षक निबन्धमे **डा.धीरेश्वरझा'धीरेन्द्र'** मिथिलाक पटचित्रक उल्लेख करैत कहलनि अछि- **'यस्ता चित्रहरु सूती र रेशमी कपड़ा हरुमा वा कैनवासमा अङ्कित गर्छन । दुलहालाइ ससुराली बाट विदा गर्दा सूती दुपट्टामा यस्ता चित्र हरु अङ्कित गर्ने अनिवार्य चलन छ, अन्यथा यस वर्ग का चित्रहरु झुन थोरै संख्यामा देखिन्छन ।**[285]

एहि तरहेँ निबन्ध विधामे तँ मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक परम्परापर पर्याप्त विवेचन भेले अछि संगहि आधुनिक मैथिली साहित्यक समस्त विधा खास कऽ कथा विधामे एहि विषयपर कथाकारलोकनि पर्याप्त संपृक्त देखि पड़ैत छथि । उदाहरणस्वरूप किछु कथाक नामावली एतय प्रस्तुत अछि । विशेष विवेचन आधुनिक मैथिली कथा साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास शीर्षक अन्तर्गत अग्रिम खंडमे भेल अछि-

सिन्दूर - डा.शैलेन्द्रमोहनझा ।[286] यारक कुरता- श्रीअरुणकुमार ।[287] हमपान देलहुँ- श्रीविनोदगोपाल ।[288] नोरसँ काजर- श्रीप्रभाकर ।[289] लाल गमछी- श्रीजीवकान्त ।[290] भारत केर बेटी । दान करु सिन्दुर- श्रीविभाकर ।[291] सलवारक महिमा -श्रीराजवल्लभसिंहराठोर ।[292]

मैथिल प्रसाधन परम्पराक एकगोट विशिष्ट तत्त्व अछि **गोदनाक** परम्परा । एहि विशिष्ट परम्परापर विचार करब अनपेक्षित नहि ।

सौंदर्य वृद्धिक प्राचीन परम्परा गोदना- गोदना अथवा अंग आलेखनक प्रथा अत्यंत पुरान अछि । गोदना शब्द द्वारा एहि अंग आलेखन प्रक्रियाकेँ सम्बोधित कैल जयबाक कारण ई अछि जे एकरा शरीरपर सुइक कांट द्वारा गोदि-गोदि कऽ परम्परागत रूपसँ बनाओल जाइत छल । गोदना-गोदल जयबाक मुख्य उद्देश्य स्त्रीक सौंदर्य राशिमे सहज अभिवृद्धि करब होइत छल । प्राचीन समाजमे मेकअपक कोनो अन्य साधन नहि छल, अतएव गोदनाकेँ शृंगारक लेल अपनाओल जाइत छल । अर्द्ध-सभ्य तथा आदिम समाजमे आइयो एहि प्रकारक शृंगार परम्परा देखबा लेल भेटैत अछि ।

मैथिल प्रसाधन परम्परामे **गोदनाक** प्रयोगपर विचार कयलासँ स्पष्ट होइछ जे ई जनजातीय प्रभाव क्रमशः मुस्लिम आक्रान्ता ओ प्रशासक लोकनिक अत्याचारसँ बचबाक हेतु नारी अंगकेँ विरूपित करबाक साधनक रूपमे प्रचलित भेल होयत आ परवर्ती कालमे कतिपय रूढ़िक कारणेँ अंगसौन्दर्य ओ प्रसाधनक रुपमे परिगृहीत भऽ गेल होयत ।

एहि तरहेँ मैथिल वेश भूषा प्रसाधन परम्परा भारतीय परम्पराक अनुशरण करितहुँ किछु विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम रखने अछि । लोकजीवनमे पावनि-तिहार, संस्कारादिमे तेल-सिनूर बाँटब, जराउरक भार पठायब, सम्बन्धीवर्गकेँ यथासंभव **पाँचो टूक कपड़ा** दऽ विदा करब, तेलकबायक विध, आदि एहिठामक वेशभूषा प्रसाधनक अलिखित विधान थिक, पंचदेवोपासक मैथिल जीवन पद्धतिमे **ताम्बूल**, अनुलेपनालंकार प्रयोग तँ वैदिके परम्पराक थिक ।

सन्दर्भ सूची :

1. याज्ञवल्क्यस्मृति- चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी (भारत) सं.2036, आचाराध्याय। 2 पृ.-2
2. तत्रैव, पृ.-12
3. तत्रैव, पृ.-24
4. तत्रैव, पृ.-35
5. तत्रैव, पृ.-59
6. तत्रैव, पृ.-60
7. तत्रैव, पृ.-60
8. तत्रैव, पृ.-60
9. तत्रैव, पृ.-82
10. तत्रैव, पृ.-82
11. तत्रैव, पृ.-83
12. तत्रैव, पृ.-95
13. तत्रैव, पृ.-126
14. तत्रैव, पृ.-67
15. तत्रैव, पृ.-128-129
16. तत्रैव, पृ.-129
17. एखनो मारिसँ हाथ स्वच्छ करब तथा नारी द्वारा मारिसँ केश साफ करबाक प्रचलन देखि पड़ैछ। मारिसँ साफ करबाक अर्थमे नामधातुए बनि गेल अछि- मटिआएब।
18. याज्ञवल्क्यस्मृति, पृ.-133
19. तत्रैव, पृ.-136
20. तत्रैव, पृ.-135, पृ.-143
21. तत्रैव, पृ.-326
22. तत्रैव, पृ.-327
23. तत्रैव, पृ.-327
24. तत्रैव, पृ.-377
25. तत्रैव, पृ.-432, श्लोक 37
26. तत्रैव, पृ.-437, श्लोक 46
27. कृत्यरत्नाकर- चण्डेश्वरठाकुर, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1925, पृ.-56
28. तत्रैव, पृ.-93
29. तत्रैव, पृ.-286
30. तत्रैव, पृ.-562
31. तत्रैव, पृ.-577-109
32. गृहस्थरत्नाकर-चण्डेश्वरठाकुर, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1928 पृ.-32
33. कृत्यरत्नाकर पृ.-46
34. तत्रैव, पृ.- 392
35. तत्रैव, पृ.- 267,48
36. तत्रैव, पृ.- 83
37. तत्रैव, पृ.- 266
38. तत्रैव, पृ.- 266
39. गृहस्थरत्नाकर, पृ.- 220
40. तत्रैव, पृ.- 116
41. तत्रैव, पृ.- 316
42. तत्रैव, पृ.- 113
43. कृत्यरत्नाकर, पृ.- 83
44. गृहस्थरत्नाकर, पृ.- 113-316
45. कृत्यरत्नाकर, पृ.- 48-109
46. गृहस्थरत्नाकर, पृ.- 341
47. कृत्यरत्नाकर, पृ.- 47
48. कृत्यरत्नाकर, पृ.- 85
49. तत्रैव, पृ.- 109
50. तत्रैव, पृ.- 577
51. तत्रैव, पृ.- 579
52. तत्रैव, पृ.- 578
53. तत्रैव, पृ.- 552
54. गृहस्थरत्नाकर, पृ.- 113
55. तत्रैव, पृ.- 114

56. गृहस्थरत्नाकर, पृ.- 114, कृत्यरत्नाकर, पृ.-248-562
57. तत्रैव, पृ.-220
58. तत्रैव, पृ.-561
59. गृहस्थरत्नाकर, पृ.-341
60. कृत्यरत्नाकर, पृ.-577
61. गृहस्थरत्नाकर, पृ.-65
62. कृत्यरत्नाकर, पृ.-564-567
63. तत्रैव, पृ.-564
64. तत्रैव, पृ.-561
65. तत्रैव, पृ.-109
66. तत्रैव, पृ.-551
67. तत्रैव, पृ.-551
68. कृत्यरत्नाकर, पृ.-47
69. तत्रैव, पृ.-71
70. तत्रैव, पृ.-49, 56, गृहस्थरत्नाकर पृ.-65
71. तत्रैव, पृ.-286
72. तत्रैव, पृ.-568
73. तत्रैव, पृ.-568
74. कृत्यरत्नाकर, पृ.-109
75. तत्रैव, पृ.-348
76. कृत्यरत्नाकर, पृ.-286
77. तत्रैव, पृ.-348
78. तत्रैव, पृ.-392
79. कृत्यरत्नाकर, पृ.-579-80
80. पुरुषपरीक्षा-विद्यापति, स. रमानाथझा, पृ.-78
81. गृहस्थरत्नाकर, पृ.-183
82. कृत्यरत्नाकर, पृ.-392
83. तत्रैव, पृ.-46
84. तत्रैव, पृ.-564
85. तत्रैव, पृ.-576
86. कृत्यरत्नाकर, पृ.-111
87. तत्रैव, पृ.-581
88. तत्रैव, पृ.-78
89. कृत्यरत्नाकर, पृ.-348
90. तत्रैव, पृ.-560
91. तत्रैव, पृ.-560
92. तत्रैव, पृ.-362
93. तत्रैव, पृ.-267
94. तत्रैव, पृ.-286-348
95. कृत्यरत्नाकर, पृ.-56
96. तत्रैव, पृ.-86-267,286
97. तत्रैव, पृ.-116
98. तत्रैव, पृ.-266
99. तत्रैव, पृ.-266
100. तत्रैव, पृ.-111
101. कृत्यरत्नाकर, पृ.-348
102. तत्रैव, पृ.-147,267,576
103. तत्रैव, पृ.-306
104. तत्रैव, पृ.-485
105. तत्रैव, पृ.-484
106. तत्रैव, पृ.-484
107. कृत्यरत्नाकर, पृ.-70
108. तत्रैव, पृ.-562
109. तत्रैव, पृ.-562
110. गृहस्थरत्नाकर, पृ.-222
111. कृत्यरत्नाकर, पृ.-286
112. तत्रैव, पृ.-56-267
113. तत्रैव, पृ.-286
114. तत्रैव, पृ.-581
115. कृत्यरत्नाकर, पृ.-71
116. तत्रैव, पृ.-71
117. तत्रैव, पृ.-71
118. तत्रैव, पृ.-306

119. मिथिला परम्परागत नाटकसंग्रह-डा. शशिनाथझा, धूर्तसमागम, प्रथमअंक । प्रस्तावना श्लोक-
120. तत्रैव, पृ.-71
121. पञ्चशायकः- कविशेखर ज्योतिरीश्वर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, बनारससिटी सं.1995, पृ.-13
122. तत्रैव, पृ.-14
123. तत्रैव, पृ.-50
124. तत्रैव, पृ.-12
125. तत्रैव, पृ.-18
126. तत्रैव, पृ.-31
127. तत्रैव, पृ.-13
128. तत्रैव, पृ.-3
129. तत्रैव, पृ.-52
130. तत्रैव, पृ.-52
131. तत्रैव, पृ.-52
132. तत्रैव, पृ.-18
133. तत्रैव, पृ.-34
134. तत्रैव, पृ.-14
135. तत्रैव, पृ.-50
136. तत्रैव, पृ.-19
137. तत्रैव, पृ.-20
138. तत्रैव, पृ.-20
139. तत्रैव, पृ.-21
140. तत्रैव, पृ.-21
141. तत्रैव, पृ.-22
142. तत्रैव, पृ.-40
143. तत्रैव, पृ.-45
144. तत्रैव, पृ.-46
145. तत्रैव, पृ.-32
146. तत्रैव, पृ.-33
147. तत्रैव, पृ.-45
148. तत्रैव, पृ.-19
149. तत्रैव, पृ.-65
150. तत्रैव, पृ.-46
151. तत्रैव, पृ.-30
152. तत्रैव, पृ.-50
153. तत्रैव, पृ.-30
154. तत्रैव, पृ.-36
155. तत्रैव, पृ.-10
156. तत्रैव, पृ.-3
157. तत्रैव, पृ.-48
158. तत्रैव, पृ.-52
159. तत्रैव, पृ.-41
160. तत्रैव, पृ.-59
161. तत्रैव, पृ.-45
162. तत्रैव, पृ.-45
163. तत्रैव, पृ.-45
164. तत्रैव, पृ.-45
165. तत्रैव, पृ.-45
166. तत्रैव, पृ.-45
167. तत्रैव, पृ.-3
168. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-1, पृ.-32
169. तत्रैव, पृ.-26
170. तत्रैव, पृ.-34-38
171. तत्रैव, पृ.-84
172. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-2, पृ.-92-93
173. पञ्चशायक, पृ.-21
174. तत्रैव, पृ.-90
175. तत्रैव, पृ.-82
176. तत्रैव, पृ.-96-98
177. तत्रैव, पृ.-114
178. तत्रैव, पृ.-116

179. तत्रैव, पृ.-188
180. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-2, पृ.-92-93
181. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-1, पृ.-126
182. तत्रैव, पृ.-140
183. तत्रैव, पृ.-150-151
184. तत्रैव, पृ.-156
185. तत्रैव, पृ.-148
186. तत्रैव, पृ.-154
187. तत्रैव, पृ.-156
188. तत्रैव, पृ.-156-158
189. तत्रैव, पृ.-140
190. तत्रैव, पृ.-156
191. तत्रैव, पृ.-154
192. तत्रैव, पृ.-152
193. तत्रैव, पृ.-154
194. तत्रैव, पृ.-154
195. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-1, स. डा. जयमन्त मिश्र, कामेश्वरसिंह, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा । 1980, पृ.-348-352 ।
196. तत्रैव, पृ.-386
197. तत्रैव, पृ.-368
198. तत्रैव, पृ.-368
199. तत्रैव, पृ.-418-422
200. तत्रैव, पृ.-486
201. तत्रैव, पृ.-504
202. तत्रैव, पृ.-488
203. तत्रैव, पृ.-558
204. विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-2 दानवाक्यावली, पृ.-35
205. तत्रैव, पृ.-37
206. तत्रैव, पृ.-89
207. तत्रैव, पृ.-91
208. तत्रैव, पृ.-97
209. तत्रैव, पृ.-147
210. तत्रैव, पृ.-106
211. तत्रैव, पृ.-265
212. तत्रैव, पृ.-265
213. तत्रैव, पृ.-285
214. तत्रैव, पृ.-285
215. तत्रैव, पृ.-297
216. तत्रैव, पृ.-298
217. तत्रैव, पृ.-299
218. तत्रैव, पृ.-305
219. तत्रैव, पृ.-326
220. तत्रैव, पृ.-326
221. तत्रैव, पृ.-247
222. तत्रैव, पृ.-247
223. तत्रैव, पृ.-247
224. मणिमञ्जरी-विद्यापति, स. रमानाथझा, मैथिली डेभलपमेन्ट फण्ड, पटना विश्वविद्यालय, शाके 1888, पृ.-32
225. तत्रैव, पृ.-48
226. तन्त्रकौमुदी, पृ.-40
227. तत्रैव, पृ.-75
228. तत्रैव, पृ.-23, 40
229. तत्रैव, पृ.-147
230. तत्रैव, पृ.-75
231. तत्रैव, पृ.-146
232. तत्रैव, पृ.-25
233. तत्रैव, पृ.-147
234. तत्रैव, पृ.-82
235. तत्रैव, पृ.-166
236. तत्रैव, पृ.-82

237. तत्रैव, पृ.-25
238. तत्रैव, पृ.-12
239. तत्रैव, पृ.-12
240. तत्रैव, पृ.-40
241. तत्रैव, पृ.-75
242. तत्रैव, पृ.-75
243. तत्रैव, पृ.-11
244. तत्रैव, पृ.-216
245. तत्रैव, पृ.-217
246. तत्रैव, पृ.-217
247. तत्रैव, पृ.-40
248. तत्रैव, पृ.-83
249. तत्रैव, पृ.-35-213
250. तत्रैव, पृ.-35
251. तत्रैव, पृ.-11
252. तत्रैव, पृ.-104
253. तत्रैव, पृ.-101
254. तत्रैव, पृ.-35
255. तत्रैव, पृ.-135
256. तत्रैव, पृ.-40
257. तत्रैव, पृ.-75
258. तत्रैव, पृ.-101
259. तत्रैव, पृ.-147
260. तत्रैव, पृ.-221
261. विद्यापति गीतावली, पद सं.-421
262. विद्यापति की पदावली, पद सं.-32
263. मिथिला मिहिर मिथिलांक
264. संकल्प, 1985
265. मि.मि., 11 फर. 68
266. मि.मि., 3 अप्रैल, 82
267. मि.मि., 21 अप्रैल 68
268. मिथिला भारती अंक 3 भाग 1-4
269. मि.मि. 15 जन.-61
270. मि.मि. 6 जून 71
271. मि.मि. 27 जून 71
272. मि.मि. 18 जुला. 71
273. मि.मि. 27 अग. 072
274. मि.मि. 15 अग. 61
275. मि.मि. 4 नव. 62
276. मि.मि. 28 फर. 71
277. मि.मि. 4 अप्रै. 71
278. मि.मि. 25 अक्टू. 70
279. मि.मि. 29 अक्टू. 78
280. Folklore, Magic and legends of Mithila.
281. स्वदेश वर्ष 1 अंक 3 मार्च 1948
282. रचनासंग्रह-प्रथम भाग आलोचना विभाग वैदेही समिति, दरभंगा पृ.-2-3
283. तत्रैव, पृ.-3
284. सिंहावलोकन-नेपालीय मैथिली पाक्षिक (विशेषांक) सं. 2046 स. नमोनारायण झा एवं कुलराजधिमिरे, जनकपुरधाम, ध नुषा, नेपाल, पृ.-149-153
285. तत्रैव, पृ.-90
286. वैदेही, जुलाई 1954
287. वैदेही, सितम्बर 1960
288. वैदेही, मई 1961
289. वैदेही, जून 1961
290. वैदेही, मई अगस्त 37
291. वैदेही, फर. 166
292. वैदेही, अगस्त 69

●

तृतीय अध्याय

मैथिल परम्परापर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्त्तन

मिथिला नैयायिकक भूमि रहल अछि । स्वभावत: एहि ठाम प्राचीन कालसँ बाह्य उपकरणकेँ विशेष महत्त्व नहि देल गेल अछि । एहि ठामक लोक बाहरी चमकदमकसँ अत्यन्त दूर रहबाक मानसिकता रखैत आयल छथि । सादा जीवन आ आध्यात्म चिन्तन मिथिलावासीक जीवन पद्धतिक मूलमंत्र रहल अछि । तेँ एहि ठामक धनिको लोकक वेशभूषा अत्यन्त साधारणे कोटिक देखल जाइछ ।

मुदा एकर ई अर्थ कथमपि नहि लेल जा सकैछ जे वेशभूषा प्रसाधन हेतु एहि ठामक लोकक पराबलम्बिता रहलैक अछि । वेशक हेतु यावन्तो सामग्रीक उत्पादक ई प्रदेश स्वयं रहल अछि । कोकटी बाङ्गक खेती मिथिलाक प्रसिद्ध कहल जाइछ । सूत एहि ठाम गाम-गाममे अदौसँ गृह उद्योगक रूपमे काटल जाइत रहल अछि । मिथिलाक संतुलित ग्राम्य व्यवस्थामे प्राचीने कालसँ वस्त्र बिनबाक, कढ़ाइ करबाक तथा वस्त्रकेँ रङ्गबाक हेतु समाजक विभिन्न वर्ग ओ जातिक लोक लागल रहल अछि ।

वेशविन्यासक हेतु एतेक विकसित व्यवस्थाक अछैतो एहि ठामक जनसमुदाय वस्त्रकेँ अनिवार्य आवश्यकताक रूपमे तँ परिगृहीत कयल मुदा कहियोसँ एकरा साजसज्जाक वृहत्तर उपादानक रूपमे स्वीकृत नहि कयल । ई तथ्य एहि ठामक प्रसिद्ध लोकोक्ति 'इसखीक मौअति माघ मास'सँ स्पष्ट होइत अछि ।

साधारण ओ कम वस्त्र धारणक करबाक स्वभावज मानवीय प्रवृत्तिक एकटा अन्य कारण एहि ठामक भौगोलिक परिवेश सेहो रहल अछि । एहि ठामक जलवायु समशीतोष्ण अछि । ने अत्यन्त कड़गर गर्मी एहि ठाम पड़ैक छैक आ ने हड्डीकेँ गलबयबला जाड़ । तेँ सामान्यत: एकटा धोती आ एकटा अंगपोछा धारण क३ एहि ठामक कृषक समाज सन्तुष्ट रहैत छथि । नारीलोकनि सेहो अपन परिधानमे साड़ीयेकेँ प्रधान रूपेँ परिगृहीत करैत आयल छथि । शरीरक अधोभागमे साथाक स्थानपर एकगोट अतिरिक्त वस्त्रखंड लपेटबाक सेहो प्रचलन रहल अछि । साड़ीयेसँ शरीरक समस्त अंगकेँ नीक जकाँ

परिवेष्टित करबामे दक्ष एहि ठामक महिला बीस हाथ, बारह हाथक साड़ी धारण करैत रहलीह अछि, घोप काढ़ैत रहलीह अछि । **आँचर, खोइंछा, फाँफड़, कोर, किनारी, मरौत, कोँचा, गोझनौट** आदि विविध शब्द साड़ीएसँ सम्बद्ध रहल अछि । साड़ीक हेतु **नुआ, लुंगा** शब्दक प्रचलन रहल अछि । नेना लोकनिकेँ **विष्ठी, धरिआ, केचुआ, पुतरी, घघरी** आदि वस्त्र पहिराओल जाइत रहल अछि ।

तथापि उच्च भारतीय संस्कृतिक अनुकूल वस्त्र विन्याससँ मिथिलाक समाज अपवारित नहि रहल अछि, खास कऽ विशेष अवसरादिक आयोजन भेलापर यथा मुण्डन, उपनयन, विवाहादि संस्कारक अवसरपर । एहन अवसरपर वस्त्रविन्यासक वैविध्य ओ कलाकारितामे साजसज्जा ओ वैभव-प्रदर्शनक मानसिकता रहल अछि ।

मिथिलामे स्यूत वस्त्रकेँ आदिकालेसँ अपवित्र मानल जाइत रहल अछि आ एखनो किछु खास वर्गमे ई वस्त्र धारण कऽ भोजन करबापर निषेध अछि । बुतामक प्रयोग सेहो अपवित्रताक प्रतीक बूझल जाइत रहल अछि ।

आभूषणक भारतीय परम्परासँ मिथिलाकसमाज सर्वदासँ प्रभावित रहल अछि । आभूषण एहि ठाम **सम्पत्तिक शृंगार आ विपत्तिक आहार**क रूपमे अवधार्य रहल अछि । स्वभावत: खास कऽ मैथिल ललनामे आभूषणक प्रति खास व्यामोह दृष्टिगोचर होइछ । परिधेय सामग्रीसँ विशेष एकरा संचित धनराशिक रूपमे रखबाक तथा वैभव प्रदर्शनक विशिष्ट सामग्रीक रूपमे धारण करबाक प्रथा रहल अछि । नारी-शरीरक प्राय: एहन कोनो अंग अवशिष्ट नहि जकरा हेतु आभूषणक निर्माणक परम्परा नहि रहल हो तेँ एहिसँ सम्बद्ध विपुल शब्दावली प्राचीनकालसँ भेटैत अछि । नेनाकेँ नाक-कान छेदयबाक **कर्णवेध संस्कार** संभवत: आभूषण-विन्यासेक अंगक रूपमे प्रचलित रहल अछि । पुरुषवर्गमे **कनौसी** धारण करबाक परम्परा अछि । हाथक आङ्गुरकेँ शून्य नहि रखबाक परम्परे जकाँ प्रचलित अछि । कन्याकेँ सेहो कान, गरा आदिमे गहना देब वैवाहिक दायित्वक अभ्यन्तर राखल गेल अछि ।

जतय धरि प्रसाधनक स्थिति अछि एहि ठामक लोक मुख प्रसाधनमे पानक विशेष प्रयोग करैत रहलाह अछि । एकर कारण मिथिलामे पानक विभिन्न प्रकारक उपलब्धि तथा एकर जीविकापर आधारित विशेष जातिक अदौसँ निवासक स्थितिकेँ कहल जा सकैछ । पानकेँ अत्यन्त शुभ मानल जाइत रहल अछि आ कोनो देव तथा पितर कर्ममे एकरा अत्यावश्यक बूझल जाइत रहल अछि । मिथिलाक पान प्रसिद्ध रहल अछि । **आम, पान, माछ, धान ओ मखान** हेतु प्रसिद्ध मिथिलाक नगर तमुरिया ताम्बूलसँ सम्बद्ध अछि । **'पान पतैली बेल पचाड़ा गहूम खाइ के मोन होअय त जाउ झखड़ा'**, फकड़ामे **पतैली** गामक पानक प्रशंसा कयल गेल अछि ।

अन्य प्रसाधन सामग्रीमे मिथिलाक नारी मध्य **मेंहदीक** परम्परा अत्यधिक

लोकप्रिय रहल अछि । मेंहदीक पातकेँ थूरि कऽ ओकर अवलेहकेँ हाथपर लगाय हाथकेँ रंजित करबाक परम्परा बड़ पुरान अछि ।

नयनप्रसाधनमे **आँजन** ओ **काजरक** प्रयोग चरण प्रसाधनमे **अलताक** प्रयोग, **ठोप, सिन्दूर, चानन, बिन्दी, तेल कषाय, खुदिया-चमकी** आदिक प्रयोग तथा केशप्रसाधनमे **सीथ फारब, जुट्टी गूहब, बकरब, बान्हब, सिन्दूर करब** आदिक प्रक्रिया देखि पड़ैछ । **गोदना गोदायब** सेहो प्रसाधनीय मानल जाइत रहल अछि ।

भारतीय ऐतिहासिक रंगमंचपर पृथ्वीराजक अध:पतनक बाद क्रमश: मुस्लिम प्रभाव बढ़ैत गेल । सम्पूर्ण देश मुस्लिम आक्रान्तालोकनिक अत्याचारसँ सीदित होइत गेल । मुगल साम्राज्यक स्थापनासँ देशमे धार्मिक उन्माद तँ शान्त भेल मुदा तावत धरि भारतीय सभ्यता ओ संस्कृतिक स्वरूपमे पर्याप्त परिवर्तन भऽ गेल छल । मुस्लिम जीवन-पद्धतिक अनुरूप वेशभूषाप्रसाधनक अनुकरण भेल आ क्रमश: **कुर्ता, जामा, पैजामा, चुस्त, सुरवाल** (सलवार) आदि शब्दक आगम वस्त्रविन्यासक शब्दावली मध्य भऽ गेल छल ।

मुसलमानी शासनकालमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासपर प्रभाव दू तरहेँ भेल । प्रथमत: एहि शासनकालमे जे जनता मुसलमानलोकनिक धर्म ग्रहण करबाक हेतु बाध्य भेलापर वा स्वत: धर्म परिवर्त्तित कराय इस्लाम धर्म स्वीकार कऽ लेलक से परिवर्त्तित धर्मक अनुकूल वेशभूषाप्रसाधनक परम्पराकेँ परिगृहीत करबाक हेतु बाध्य भऽ गेल । एहि क्रममे **खलता, जेबी, चपकन, मिर्जई** आदि वस्तु ओ तकर शब्दावलीक परिग्रहण भेल जे कालान्तरमे आत्मसात कऽ लेल गेल ।

मुसलमानी शासनमे जे लोकनि इस्लाम धर्म ग्रहण नहिओ कयल मुदा जागीरदार ओ सामन्त तथा हुनकालोकनिक सम्पर्कीक वर्गक रूपमे उभरलाह ओ लोकनि शासक वर्गसँ क्रमश: परिग्रहण करैत कतोक वस्तु ओ तकर शब्दकेँ परिगृहीत कऽ लेलनि । एहि तरहेँ एहि शासनकालमे शनै: शनै: वेशभूषाप्रसाधनक संक्रमण सामान्यजनधरि भेल आ तकरा संग ओकर शब्दावली सेहो संक्रमित भेल ।

मुस्लिम प्रभावक संगहि परवर्त्तीकालमे पाश्चात्य प्रभाव सेहो वेशभूषाप्रसाधनक शब्दावलीकेँ संक्रमित कयलक । **कोट, बूट, हैट, पैन्ट, शर्ट, स्नो, पौडर, पतलून, मीडी, मैक्सी, रोलगोल्ड** आदि शब्द एही प्रभावक कारणेँ मैथिल वेश भूषाकेँ प्रभावित कयलक । अंग्रेज, डच, पुर्तगाली लोकनिक वेशभूषाक अनुकरणमे तथा परवर्तीकालमे अंग्रेज हाकिमक संग अनुकूलनक हेतु पाश्चात्य सभ्यताक पश्चात्पद भारतीय लोकनिकेँ वेशभूषाप्रसाधनमे जे अनुकरणपरक परिवर्तनसँ प्रभावित होमय पड़लनि तकरो कारणेँ बहुतो वस्तु आयल तकर संगहि नव नव शब्दो वेशभूषाप्रसाधनक शब्दावलीमे स्थान पओलक ।

अंग्रेजक शासनकालमे आधुनिक शिक्षासँ सम्पन्न एक गोट वर्गक निर्माण भेल ।

ई लोकनि अंग्रेज हाकिमलोकनिक सम्पर्कमे अयबाक हेतु विवश छलाह तथा ओकर अनुकरणमे विविध प्रकारेँ वेशभूषाप्रसाधनमे परिवर्त्तन अनलनि । ब्रिटिश सरकारसँ सम्पृक्त जमीन्दार, अमला ओ पदाधिकारीलोकनिकेँ सेहो वेश भूषाप्रसाधनमे अंग्रेजक अनुकरणक बाध्यता छले होयतनि । एहि तरहेँ अंग्रेजलोकनिक आगमनसँ मैथिल वेशभूषा प्रसाधन ओ तकर शब्दावलीमे पर्याप्त संक्रमण भेल ।

यद्यपि वेशभूषा प्रसाधनमे परिवर्त्तन ओ तज्जन्य शब्दपरिवर्त्तनक प्रक्रियामे अंग्रेज प्रशासनक प्रभाव पर्याप्त रहल मुदा क्रमशः स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद अंग्रेज लोकनिक चलि गेलाक बादो ओकर सभ्यताक छापक रूपमे वेश भूषाप्रसाधनक कतोक वस्तु ओ तकर शब्दावली रहिये गेल । क्रमशः शरीर-सौन्दर्यक विवर्द्धनक हेतु नित्य नव वैज्ञानिक खोजक परिणामक रूपमे विपुल वस्तु ओ तकर शब्दावली भाषामे प्रवेश करैत जा रहल अछि आ ओहि वस्तुक अप्रचलित भेने शीघ्रे लोप सेहो भऽ जाइछ ।

मैथिल वेशभूषाप्रसाधनक शब्दावलीमे संक्रमणक तीव्रता स्वातंत्र्योत्तरे भारतमे भेल होयत जे सहज संभाव्य अछि । एहिसँ पूर्व धरि मिथिलाक ग्राम्य व्यवस्था स्वयंमे पूर्ण छल । कृषिपर आधारित मिथिलाक जनसमूह पारम्परिक संस्कृत शिक्षासँ आगू नहि बढ़ि सकल छलाह जकर परिणामस्वरूप पारम्परिके वेशभूषाप्रसाधन अवधार्य छल । मुदा परवर्त्ती कालमे ग्राम्य शिक्षामे परिवर्तन भेल । आधुनिक शिक्षा पद्धति द्वारा शिक्षा पओलासँ ग्राम्य वर्गकेँ सेहो ओहि समस्त संक्रमणसँ प्रभावित होमय पड़ल जाहिसँ शहरी जीवन ओ शिक्षित समुदाय बहुत पहिने प्रभावित भऽ गेल छल । मुदा एहि प्रकारक संक्रमणकेँ परिगृहीत करबामे कतेक बाधा ओ असौकर्य शैक्षणिक जड़ताक कारणेँ छल से **हरिमोहनझाक** एहि उक्तिमे देखल जा सकैछ–**नाकपर स्नो लागल । कनपट्टीपर पाउडर पोतल । गाल पर लिपस्टिक ढेउरल । ठोरपर नेलपालिस चभरल** । हाय ! हाय ! बहुरूपियाक वेश बना लेलनि ।[1]

शिक्षित समाजमे यद्यपि **स्नो, पाउडर, लिपस्टिक, नेल पालिस** आदि आधुनिक प्रसाधनक उपयोग होमय लागल छल मुदा अशिक्षिता मिथिलाक नारीकेँ एकर प्रयोगसँ अज्ञात रहने कतेक असौकर्य भेल तकरा **हरिमोहनझा** उपर्युक्त उद्धरणमे स्पष्ट कऽ देलनि अछि । क्रमशः ई समस्त वस्तु प्रचलित होइत-होइत आधुनिक मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक अनिवार्य अंग भऽ गेल अछि ।

मैथिल वेशभूषाप्रसाधनमे होइत परिवर्त्तनक क्षिप्र गतिकेँ अभिव्यक्त करैत हिनक ई उक्ति सेहो द्रष्टव्य अछि– 'आब ओ युग नहि छैक जे हमर तोहर तिरहुत तिलकोर ओ पटुआक झोरमे, करमीक साग ओ **कोढ़िलाक** पागमे, **कोकटीक** तौनी आ सीकीक मौनीमे, डालाक भार ओ महफाक ओहारमे सीमित रहि जाय । देखै छहौक नहि, आब **साड़ी सलवार**, दोसा-दलिपूड़ी, चैले-विद्यापति, मुर्गी महादेव-सभ संगहि चलैत छैक । आब पंडौलमे पावरोटी, सौराठमे सैंडविच, रहुआरमे टोस्ट और कपलेश्वरमे कटलेट भेटतौह । **नेहरामे**

नायलोन, जनकपुरमे जार्जेट, लोहनामे लिपस्टिक और **हाबीभौआरमे हाइहील** देखबह । आइ फुलपरासक कन्या **फ्राक** पहीरि कऽ फूल तोड़ै छथि । कालिह गंधवारिक पुतहु **गाउन** पहीरि कऽ गोसाउनिकेँ पुजतीह । सेहो गोसाउनि कतबा दिन रहै छथि से के जानय ।[2]

एहि तरहेँ **हरिमोहनझा** ओहि संक्रमण कालक अभिव्यक्ति कयलनि अछि, जखन मैथिल वेशभूषा प्रसाधनमे पारस्परिक सम्पर्क जन्य परिवर्त्तनक गति तीव्र छल मुदा संगहि पारम्परिकताकेँ सेहो पूर्णतः परित्याग नहि कयल गेल छल ।

अन्यत्र पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावकेँ **हरिमोहनझा** 'पछवा बिरड़ो' कहि तज्जन्य मैथिल वेशभूषाप्रसाधनमे परिवर्त्तनकेँ इंगित कयलनि अछि । एही क्रममे पारम्परिक वेशभूषा प्रसाधनक लोप ओ नव वेशभूषा प्रसाधनक संक्रमणकेँ एहि शब्देँ अभिव्यक्त कयल गेल अछि– हौ ! जकरा उठबाक हेतैक से कि हमर विचार पूछि कऽ उठत । **टीक** ओ **मोछ** कहिया पूछय आयल जे **धोध** ओ **आँचर** पूछय आओत ? जकरा जैबाक होइ छै से स्वतः चलि जाइत अछि । जेना **गोदना, मिस्सी, खुदिया-चमकी** । जकरा ऐबाक होइछै से स्वतः आबि जाइत अछि जेना **स्नो, पाउडर, नेलपालिस, ब्रेसरी** । जखन स्वयं पंडितलोकनि **सालमसाही पनही** छोड़ि कऽ अंगरेजी जूता पहिरय लागलाह अछि तखन पंडिताइन **लहठी** फोड़िकऽ **प्लैस्टिकक चूड़ी** किएक ने पहिरतीह । हुनक बेटा **टोप** मेटा कऽ **टोप** किऐक ने लगौतैन्ह । आब बूढ़-पुरानुस माथ पटकि कऽ मरि जैताह तथापि ने हुनक बेटा **ठढ़ौका चानन** करतैन्ह ने पुतहु **पटमासी सिन्दूर** करथीन्ह । छोटका पोताके **रिट्ठा-रिट्ठी** पहिरा कऽ देखथु तऽ जे पहिरै छैन्ह ! पोतीसँ **तुसारी** पुजबाक देखथु तऽ जे पुजै छैन्ह । हौ, ई पछवा बिरड़ो सभटा पुरान पोथी-पतराकेँ उधिया कऽ फेंकि देतैह । यैह युगधर्म थिकैक ।[3]

तथापि मैथिल मानसमे अपन पारम्परिक वेशभूषाप्रसाधनक प्रति जड़ता बनले छैक । वेशभूषाप्रसाधनमे आधुनिक प्रवृत्तिसँ युक्त लोककेँ फैसनपरस्त कहि मखौल उड़ाओल जाइछ । सामाजिकलोकनि फैशनपरस्तीकेँ नीक नहि मानैत छथि । एही तथ्यकेँ स्पष्ट करैत **श्रीराजवल्लभराठौर** अपन **सलवारक महिमा**[4] शीर्षक गल्पमे कहलनि अछि । एहिमे हिनक दोष नञि, दोष फैसनपरस्त संसारक, दोष ओहि अभिभावकक जे अपन भारतीय परम्पराकेँ हवन कुण्डमे दैत, पछिमवरिया रीति रेवाजक अनुसार सन्तानकेँ चलयबामे सहयोगी होइत छथिन्ह ।[5]

अपन एहि गल्पमे नायिकाक संकीर्ण सलवारक कारणेँ हुनक पराभव तथा पुनश्च साड़ीपर हुनक ममत्वक जागरणकेँ अंकित कयलनि अछि । गल्पकार कहैत छथि– जहन आरती **'आर्मलेस' चुस्त फराक, पैर बुताम्बला संकीर्ण सलवार** आ **पारदर्शक ओढ़नीसँ** उन्नत उरोजकेँ झपैबाक असफल प्रयास करैत... आदि । एतय आधुनिकताक परिणामस्वरूप प्रचलित अभिलेख, चुस्त आदि शब्दक आगमक उल्लेख तथा ओकर प्रति सामाजिक लोकनिक घृणाभावक द्योतन भेल अछि ।

अन्तत: नायिकाकेँ साड़ी मात्रकेँ उचित परिधानक रूपमे स्वीकार कराय लेखक सामाजिक जगतक मान्यताकेँ आख्यात कयलनि अछि तथा एहि माध्यमे वेशभूषा प्रसाधनक प्रति मैथिलक जड़त्वकेँ उद्भासित कयलनि अछि। काकु, वक्रोक्तिमे एखनो आधुनिक वेशभूषा-प्रसाधनसँ सम्पृक्तिक हेतु जिट-जाट, फीट-फाट आदि शब्दक व्यवहार देखल जाइत अछि।

साम्प्रतिक स्थितिमे मिथिलाक प्राचीन परम्परापर सब दिशासँ प्रहारे प्रहार भऽ रहल अछि। प्राचीन परम्परा रूपान्तरित भऽ बदलि गेल अछि। नगरीय संस्कृति व्यामोहक कारणेँ ग्राम्य जनताक शहर दिस पलायन भऽ रहल अछि। वैज्ञानिक प्रगतिक कारणेँ गाम गाममे शहरी सौविध्यकेँ जनसुलभ करबाक प्रयत्न भऽ रहल अछि। सिनेमा टीवीक माध्यमसँ वेशभूषा प्रसाधनक प्रत्येक नव उपादानकेँ देश ओ प्रान्तक कोन-कोनमे प्रचारित करबाक व्यवस्था भऽ गेल अछि खाहे ओ स्वदेशी वस्तु हो वा परदेशी, अपन प्रान्त हो वा आन प्रान्तक। एहि तरहेँ पारस्परिक सम्पर्कसँ वेशभूषा प्रसाधनमे परिवर्त्तन भेल जा रहल अछि।

रोजीरोटीक हेतु प्रवास जीवनक हेतु बाध्य मिथिलाक समाजक व्यक्ति जखन बाहर जाइत छथि तँ ओहि समाजसँ कतोक वस्तु सीखि अनैत छथि। बंगलाक प्रभावसँ मैथिलानीक साड़ी-परिधानमे उनटा पल्लाक आत्मसातीकरण एही तथ्यक द्योतक अछि। **सलवार, शेमीज, गराड़ा** एही तरहक प्रान्तीय संक्रमण थिक।

जनजातीय संस्कृतिसँ पल्लवित गोदनाक परम्परा अशिक्षित ओ अल्पशिक्षित नारी समाजमे पूर्णतया प्रचलित छल मुदा आधुनिक शिक्षिता वर्गमे एकर सर्वथा अभाव देखल जाइछ। शिक्षाक कारणेँ रूढ़िगत एहि प्रसाधनक प्रति नारीलोकनिक व्यामोह समाप्त भऽ गेल अछि आ एहि कष्टप्रद प्रसाधनसँ विरक्ति भऽ गेल अछि। शिक्षित महिलासमाज सर्वथा एकरा अपवारित कऽ देने छथि।

गहनाक प्रति नारीक व्यामोह सेहो प्राचीन मिथिलामे अत्यधिक होयबाक संकेत भेटैत अछि। मुदा आभूषणक महार्घताक कारणेँ एकर स्थानापन्न धर्मत्वक मिश्रणसँ निर्मित आभूषणे आब सुरक्षित मानल जाइछ।

एहितरहेँ वेशभूषाप्रसाधनपर निरन्तर प्रभाव पड़ैत जा रहल अछि आ नव शब्दक आगम तथा वस्तुक अप्रचलन भेने पुरना शब्दक क्रमश: लोप भेल जा रहल अछि।

सन्दर्भ सूची :

1. रंगशाला-हरिमोहन झा, पृ. 272
2. खट्टरकाकाक तरंग-हरिमोहन झा, पृ. 160
3. तत्रैव, पृ. 161
4. वैदेही, अगस्त 69
5. तत्रैव, पृ. 140

●

चतुर्थ अध्याय

प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। मानव समाजक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक गतिविधिक प्रत्यक्ष ओ परोक्ष आलेखन साहित्यक उपजीव्य होइत अछि। मानव जीवनक स्फुट अभिव्यक्ति साहित्यमे समस्त मानवीय क्रियाकलापक भावनापूर्ण निवेश रहैत अछि। वेशभूषा प्रसाधन जे मानवीय सौन्दर्यदृष्टिक विशिष्ट प्रतीक तथा मूलभूत आवश्यकता मध्य परिगणित रहल अछि। मानवजीवनक व्याख्याक क्रममे साहित्यमे स्थान पबैत रहल अछि। मैथिली साहित्यमे सेहो वर्ण्य जनजीवनक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णनकेँ पुष्कल अवकाश भेटलैक अछि। विभिन्न कालखण्डमे प्रणीत साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधनक वर्णनसँ ओहि कालखण्ड विशेषमे वेशभूषा प्रसाधनक प्रचलित शब्दावली ओ ओकर महत्ताक परिज्ञान होइत अछि। शब्द-परिवर्त्तन ओ परिग्रहण-विलोपनक, स्थितिक पता लगैत अछि। अध्ययनक सुविधाक हेतु मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासकेँ तीन भागमे साहित्यिक काल, विभाजनक आधारपर बाँटल जा सकैछ–

(क) **प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास।**

(ख) **मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास।**

(ग) **आधुनिक मैथिली साहित्य ओ लोकसाहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास।**

प्राचीन मैथिली साहित्य मध्य **विद्यापतिपूर्व** मैथिली साहित्य परिगणनीय अछि। वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीसँ सम्बद्ध जे प्राचीन मैथिली साहित्यिक ग्रन्थ विवेच्य अछि से थिक **चर्यागीत, दोहाकोश, धूर्त्तसमागम** ओ **वर्णरत्नाकर**।

चर्यागीत ओ दोहाकोशमे बौद्ध सिद्ध लोकनिक दर्शनक वर्णन अछि। चर्यागीतमे एक स्थलपर वेशभूषा प्रसाधनक दुइगोट शब्द क्रमश: कंगना ओ दर्पणक उल्लेख **काङ्कन** ओ **दापण** शब्द द्वारा भेल अछि– **हाथे रे काङ्कन मा लेउ दापण।**[1]

अर्थात् एहिमे कहल गेल अछि जे हाथमे **कङ्ना** रहने **दर्पणक** कोन काज ? एही तथ्यकेँ दोहाकोशमे एहि रूपेँ अभिव्यक्त कयल गेल अछि–

हत्थहि **कङ्कण** ट्ठिअउण्णाइ । गुणदोश विअक्खण **दप्पणहि** ण जाणइ ।।[2]

अर्थात् हाथमे कंगनाक स्थिति नहि अछि । विचक्षण लोक गुणदोषकेँ दर्पणसँ नहि जनैत छथि । परवर्त्ती साहित्यमे सेहो एहि लोकोक्तिक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा– **हाथ कंगन की आरसि काज ।**

एहि पदमे **दर्पणक** स्थानापन्न **आरसि** शब्दक व्यवहार भेल अछि । एहि तरहेँ भूषणक विशिष्ट प्रभेद **कंगन** ओ प्रसाधन सामग्रीक विशिष्ट उपकरण **दर्पण** लोकजगतमे अत्यन्त प्रचलित रहल अछि तथा अति प्राचीनेकालसँ एकर प्रयोग मैथिली साहित्य मध्य होइत रहल अछि, से सूचित होइत अछि । चर्यागीतमे अनेक स्थलपर विभिन्न प्रकारक आभूषणक वर्णन देखि पड़ैछ । एक स्थलपर कहल गेल अछि– **कानेट** चौरे लेल अधराती ।[3]

अर्थात् **कर्णफूल** अर्द्धरात्रिमे चोर चोरा लेलक । एहिठाम कर्णफूल आभूषणक हेतु **कानेट** शब्दक प्रयोग भेल अछि । एकटा अन्य पदमे **नूपुर (नेउर) कुण्डल** तथा आभरणक उल्लेख भेल अछि– आलि कालि घण्टा **नेउर** चरणे । रवि शशि **कुण्डल** किउ आभरणे ।।[4]

अर्थात् साधनाक क्रममे इड़ा-पिङ्गलागत पवनक सन सन शब्द ओहि नाड़ीयुगल मध्य उर्द्धसंचारिणी कुण्डलिनी शक्तिक नूपुर ध्वनि थिक, शरीरस्थ सूर्यमण्डल ओ चन्द्रमण्डल ओहि महती शक्तिक ताटङ्कद्वय थिक । एहि तरहेँ साधना मार्गक विशिष्ट परिवेश सभकेँ स्पष्ट करबाक हेतु विविध वस्त्र प्रसाधन ओ आभूषणक वर्णन चर्यागीतमे भेल अछि, यथा– मोरङ्गि पीच्छ परहिण गिवत **गुञ्जरी माली** ।

अर्थात् हुनक परिधान मयूरपुच्छ सदृश चित्र विचित्र छल तथा ग्रीवामे गुञ्जामाला सदृश वर्णमाला छल । एहिठाम पहिरन शब्दक हेतु **परिहण** तथा गुञ्जामालाक हेतु **गुञ्जरीमाली** शब्दक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ–

एकेली सबरी ए वण हिण्डइ **कर्णकुण्डल** वज्रधारी ।

अर्थात् सबरी एसगरे वनमे मचकोपर झुलैत छथि । कानमे वक्रताक प्रतीक कुण्डल तथा वज्र धारण कयने छथि– पाञ्च केडुआल पड़न्ते माङ्गे पिठत **काच्छी** बान्धी ।

अर्थात् पञ्च उपदेशक रूप कर्णधार मार्गमे पीठमे कच्छी वा रस्सी बान्हि शून्य रूपसे धनीसँ जल उपछि फेकैत छथि । एहि पदमे **काच्छी** शब्दक प्रयोग भेल अछि । ई शब्द **कछिया, कछिनी** स्वरूपमे आधुनिक शब्दावलीमे जीवन्त अछि । एहीसँ **काछब** क्रियापद व्युत्पन्न अछि– **चीअण वाकलअ** वारुणीबान्धअ ।

अर्थात् चिक्कन वल्कल रूप ब्रह्मनाड़ी वा गुरुपदेशसँ वारुणीकेँ बन्हैत छथि ।

एहिठाम वस्त्रक विशेषणक रूपमे **चीअण-चिक्कन** शब्दक प्रयोग भेल अछि । वाकल अ शब्द **वल्कल > वक्कल > वाकल** रूपमे प्राचीन मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त भेटैछ । यथा– नाङटसँ भल **वाकल** डोर । वल्कल तरुत्वचसँ बनल वस्त्रक हेतु शब्द छल– सोन-रूप मोर किछु न रहल ।

अर्थात् हमरा (साधकक) लेल सोन वा रूप किछु मूल्यवान नहि रहल । एहिठाम आभूषण निर्माणक सामग्री सोन ओ रूपाक प्रति साधकक विरक्तिक वर्णन भेल अछि । सोन-रूपक प्रयोग **विद्यापतियोक** पदमे एहि रूपेँ देखि पड़ैछ– **सोना-रूपा, अनका सुत अभरण अपना लब रूपइमाल** । सोन कानक आभूषण विशेष सेहो थिक यथा एहि लोकोक्तिमे देखल जा सकैछ– **सोन छल तँ कान नहि, कान भेल तँ सोन नहि । राजाक सेवने कान हुनू सोन** इत्यादि ।

हिअ **तांबोला** महासुहे **कापुर** खाह । हृदयक महाराग ताम्बूलक ओ सामरस्य सौरभयुक्त कर्पूरक योगक संग कयल । एहि पदमे पानक हेतु **तांबोला** < ताम्बूल शब्दक प्रयोग भेल अछि तथा ताम्बूलकेँ सुवासित करबाक मशाला **कर्पूर > कप्पूर > कापुरक** सेहो सविशेष उल्लेख भेल अछि ।[5]

चर्यागीत ओ दोहाकोशक अतिरिक्त प्राचीन मैथिली साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक दृष्टिजे कविशेखराचार्य **ज्योतिरीश्वर**कृत **धूर्त समागम** प्रहसन उल्लेखनीय अछि । एहि प्रहसनमे अनेक मैथिली गीतक नियोजन भेल अछि जाहिसँ मैथिल वेशभूषाक संक्षिप्त संकेत भेटैत अछि । यथा एक स्थलपर संन्यासीक वेशक वर्णन एहि रूपेँ भेल अछि– **कांकन** बाँह गरा रुदराख । चान्दन **बिन्दा** लाइ सुललाट ।[6]

एहि तरहेँ संन्यासीक आभरणमे बाँहिपर **कंगना**, गरदनिमे **रूद्राक्षक** माला तथा प्रसाधनमे ललाटपर चन्दनक **बिन्दी** लगयबाक वर्णन देखि पड़ैछ । एकठाम संन्यासीक मठोमाठ भऽकऽ धोती पहिरबाक उल्लेख भेल अछि– **धोती** गरूअ तम्योस देखावे ।[7]

तथापि मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक अत्यन्त विशद वर्णन प्रस्तुत करबाक दृष्टिजे कविशेखराचार्य **ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर** सर्वाधिक सशक्त सिद्ध होइछ । मैथिली साहित्यक एहि आदि गद्यग्रन्थमे नायिकावर्णना, सखी वर्णना, आस्थानवर्णना, शयनवर्णना, चन्द्रमावर्णना, रत्नवर्णना, उपमणिवर्णना, वस्त्रवर्णना, समरहरवर्णना, अभिषेकवर्णना, वेश्यावर्णना, प्रयाणक वर्णना, भाटवर्णना, विद्यावनतावर्णना, विवाहवर्णना आदि विविध स्थलमे वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक प्रचुर प्रयोग देखि पड़ैत अछि ।

वेश सम्बन्धी शब्दावली– वर्णरत्नाकरमे विभिन्न प्रसंगमे विविध प्रकारक वेश सम्बन्धी शब्दावलीक बहुशः उल्लेख भेल अछि । वस्त्रक हेतु सामान्य शब्द **वस्त्र, चीरि, वसन, वासनिक** ओ **अम्बर** प्रयुक्त भेल अछि । यथा समरहर वर्णनामे **देवनायकेँ वस्त्र परिहु**,

ग्रीष्मवर्णनामे **वस्त्रक विरक्ति**, हेमन्तवर्णनामे **वस्त्रक विनियोग** आदि कहल गेल अछि। वास ओ अम्बर शब्दक स्वतन्त्र प्रयोग तँ नहि अछि मुदा वास ओ अम्बरक विभिन्न यौगिकक प्रयोग देखि पड़ैछ। एहन यौगिक शब्दमे **द्वारवास**, **अन्तर्वास**, **बहिर्वास अङ्गवास** आदि शब्द भेटैत अछि। **सफुर द्वारवासनिक अँचरा एक परिहि**[10]मे द्वारवासक प्रयोग भेल अछि। द्वारवासकेँ देशीय वस्त्रक प्रभेद विशेष कहल गेल अछि।[11] सम्भवतः ई द्वारावती वा द्वारिकामे निर्मित वस्त्रक कोनो प्रभेद छल। अन्तर्वास ओ बहिर्वासक उल्लेख शृष्याश्रम वर्णनामे भेल अछि।[12] अन्तर्वास अन्तरीय पटक हेतु तथा बहिर्वास बाह्य वस्त्रावरणक हेतु प्रयुक्त शब्द अछि। अङ्गवास सम्भवतः अंगवस्त्र हेतु प्रयुक्त अछि।[13] एहिना अम्बर शब्दक अनेक यौगिकक प्रयोग भेल अछि यथा **विचित्राम्बर**[14], **दिव्याम्बर**[15], **पट्टम्बर**[16], **नीलाम्बर**[17] आदि। एहिमे विचित्राम्बर विभिन्न रंगमे रँगल वस्त्रक प्रभेद छल होयत। पट्टम्बरसँ रेशमी वस्त्रक द्योतन होइछ। वर्णरत्नाकरकार तीस प्रकारक पट्टम्बर जातिक वस्त्रक उल्लेख कयने छथि।[18] नीलाम्बर नील रंगक वस्त्रक प्रभेद छल। दिव्याबर ओ पट्टम्बरक अनेक प्रभेद यथा **उब्ब**, **विचित्र**, **पञ्चमय**, **देशाउरि**, **दुर्ल्लभ** आदि भेटैछ।[19]

वस्त्रक हेतु **वसन** शब्दक सेहो उल्लेख भेल अछि। वसन विधिक परिगणना चौंसठि कला मध्य कयल गेल अछि।[20] वसन विधिकेँ **पं.गोविन्दझा** वस्त्र रंगबाक कला मानलनि अछि।[21] चौंसठिकला मध्य वस्त्रविद्या वसन विधिक अतिरिक्त उल्लिखित अछि। अवश्ये वस्त्रविद्यासँ वस्त्रक प्रकार भेदकेँ चिन्हबाक कलाक परिज्ञान होइत छल होयत। सखीवर्णनामे नायिकाकेँ **चित्रवसना** कहल गेल अछि।[22] विविध रंगसँ युक्त वस्त्रकेँ धारण कयनिहारिक हेतु एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि।

वस्त्रक हेतु **चीरि** शब्दक उल्लेख सेहो भेल अछि। विद्यावन्तवर्णनामे ओकरा **चवआब्बरि चीरि एक होड़क परिहने**[23] कहल गेल अछि। **कापल** शब्द सेहो कपड़ाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि।[24] परवर्ती साहित्यमे सेहो **कीर्त्तिलतामे** एकर प्रयोग देखि पड़ैछ।

वस्त्रक हेतु एहि सामान्य शब्दावलीक अतिरिक्त जाहि वर्गीकृत शब्दावलीक प्रयोग वर्णरत्नाकरमे विशिष्ट प्रसंग सभमे देखि पड़ैछ ताहिमे कतोकसँ परम्परित स्वरूपक अछि आ कतोक विशुद्ध देशज शब्द बुझना जाइछ यथा, **कृष्णाजिन**, **तरुत्वच**, **कौपीन**, **घाघर**, **कछिनी**, **धोती**, **उत्तरीयपट**, **साँची**, **अँचरा**, **बेटरा**, **नेत**, **चनवा**, **गेण्डुआ**, **पाग**, **दशरइचा**, **मेजा**, **सरमोजा**, **गान्ती**, **मारुपरिकेली**, **पछेओला**, **फाण्ड** **उनच** इत्यादि।

कृष्णाजिन– एहि शब्दक प्रयोग शृष्याश्रमवर्णनामे भेल अछि।[25] कृष्णमृगक छालसँ बनल वस्त्र छल जकर प्रयोग प्राचीनेकालसँ ऋषिलोकनि करैत रहलाह अछि।

तरुत्वज– एकरो प्रयोग शृष्याश्रम वर्णनिमे भेल अछि। ई गाछक छालसँ बनल वस्त्र होइत छल। एकरा **वल्कल** सेहो कहल जाइत छलैक।

कौपीन– कौपीनक उल्लेख शृष्याश्रमवर्णनामे भेल अछि। वस्त्रक छोट सन टुकड़ी जाहिसँ अधोभागकेँ झँपबाक व्यवहार रहल अछि कौपीन कहल जाइत अछि।

घाघर– एहि शब्दक प्रयोग प्रेरण नृत्यक वर्णनक क्रममे दुइ बेर भेल अछि। प्रेरण नृत्यमे नायककेँ **घाघर कछने** कहल गेल अछि। घाघर आधुनिक **घघराक** पर्याय थिक। ई नृत्यविध लोकनिक विशिष्ट ओ फल्लर अधोवस्त्र होइत अछि। नेनालोकनिकेँ एहि प्रकारक वस्त्र सेहो पहिराओल जाइछ जे **घघरी** कहल जाइछ।

धोती– ई सामान्य अधोवस्त्र अछि। **वर्णरत्नाकर**मे समरहरवर्णनामे नायक द्वारा **पट्टम्बर** धोती धारण करबाक उल्लेख भेल अछि।

उत्तरीय पट– ई **चद्दरि** वा **दुपट्टा** सदृश वस्त्र सेहो धोतीक संगहि धारण कयल जाइत छल। एहिसँ शरीरक उपरका भाग झाँपल जाइत छलैक।

साँची– वर्णरत्नाकरमे समरहरवर्णनामे नायककेँ **वित्पनि सांची करू** कहल गेल अछि। धोतीक अग्रभागकेँ कोँचिआकऽ अग्रभागमे खोंसलासँ बनल आकृतिकेँ साँची कहल जाइछ।

आँचर– आँचर ओ अँचरा शब्दक बहुशः उल्लेख **वर्णरत्नाकर**मे भेल अछि। परवर्त्ती **विद्यापति** साहित्यहुमे **आँचर** ओ **अँचराक** प्रयोग नारीलोकनिक साड़ीक ओहि भागक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि जाहिसँ छातीक भाग झाँपल जाइत छैक आ वैह अर्थ आँचरक सम्प्रतियो प्रयुक्त अछि। मुदा **वर्णरत्नाकर**मे अस्थानवर्णनामे आँचर शब्दक प्रयोग राजप्रक्रिया विशेषक अर्थमे आयल अछि।[26] एकर ई अर्थ सर्वथा अनुसन्धेय अछि। दोसरठाम **आञ्चरि** शब्द विशेषक स्वरूपमे देखि पड़ैत– **चउआञ्चरि चीर**।[27] एहिठाम आँचरि शब्दक अर्थ पं.गोविन्दझा **झालरि** कहलनि अछि जे विद्यावन्तक चीरक हेतु समीचीन बुझना जाइछ।[28] अन्यत्र कहल गेल अछि– **सफुर द्वारवासनिक अँचरा एक परिहि**[29]। एहिठाम **गोविन्दझा** एकर अर्थ लुंगी कहने छथि।[30] एही प्रकरणमे स्नानक अनन्तर नायककेँ **अङ्गक पानि सुफुर अँचरा एक तेँ उपनहि इलु**[31] कहल गेल अछि। एहिठाम अँचराक अर्थ **गोविन्दझा गमछा** कहलनि अछि।[32] एहि तरहेँ **आँचर**, **अँचरा** शब्द वस्तुतः छोट सन वस्त्र खण्डक हेतु प्रयुक्त बुझना जाइछ। सम्प्रतियो भगवतीकेँ **अँचरी-घघरी** चढ़यबाक प्रथा वर्तमान अछि। **अँचरीक** पैघ आकृति **अँचरा** कहल जाइत होयत। द्विरागमनमे कन्याकेँ खोइंछक सामान सम्प्रति जाहि वस्त्रखण्डमे बान्हिकऽ देल जाइत छनि से **अँचरा** कहबैछ। द्यूतवर्णनामे **अञ्चरी** शब्द सेहो भेटैछ मुदा ई जूआक खेल विशेषक नामक अर्थ रखैछ।[33]

बेटरा– **वर्णरत्नाकरक** विद्यावन्त वर्णनामे कहल गेल अछि– **गुजर परि बेटरा एक मथा बन्धने**।[34] एहिसँ स्पष्ट अछि जे बेटरा शब्द माथमे बन्हबाक मुरेठा सदृश कोनो वस्त्र होइत छल।

नेत– नेत शब्दक बहुश: प्रयोग **वर्णरत्नाकरमे** भेल अछि यथा **वेड्रा नेतक माण्डलि पटिआ एक विथरन**[35] **नेतक माण्डल गेण्डुआ एक**[36] **नेते हाथ रूचाओल**।[37] एहि समस्त वर्णनसँ प्रतीत होइछ जे नेत वस्तुत: कोनो छोटछीन वस्त्रखण्डक हेतु प्रयुक्त शब्द छल।

चनवा– एहि शब्दक प्रयोग क्रमश: आस्थानवर्णना ओ शयनवर्णनामे भेल अछि। आस्थानवर्णनामे **मञ्जुरूखी काचक चनवा**[38] कहल गेल अछि। शयनवर्णनामे **चारिहु कोन बान्धल चँदोआ माइल ऊपर देल अछ**[39] कहल गेल अछि। वस्तुत: **चनवा** वा **चन्दोआक** प्रयोग वितानक रूपमे भेल अछि। सम्प्रतियो वस्त्रक वितान विशेषकें **चनवा** कहल जाइत अछि।

कम्बल– एहि शब्दक प्रयोग शयनवर्णनामे भेल अछि।[40] ई सामान्य ऊनी वस्त्र अछि, जकर उपयोग ओढ़ब ओ ओछायब दुहूमे सामान्य अछि।

गेण्डुआ– इहो शब्द शयनवर्णनामे आयल अछि। ई साम्प्रतिक गेंडुआक पूर्वरूप थिक जकर पर्याय अछि **बलिश्ता**, **तकिया** इत्यादि।

पाग– ई शब्द प्रयानकवर्णनामे उल्लिखित अछि।[41] ई माथपर धारण करबाक मिथिलाक विशिष्ट परिधान थिक। भाटवर्णनामे **खड्नीक** पाग शब्द आयल अछि। संभवत: ई **कोढ़िलाक पाग** छल जे सम्प्रति प्रचलित अछि। पूर्वमे **साठापागक** प्रचलन रहल अछि।

दशरइचा– इहो शब्द प्रयानकवर्णनामे आयल अछि मुदा एकर अर्थ अनुसन्धेय अछि।

मोजा– ई पैरकें सुरक्षित करबाक वस्त्रक प्रचलित शब्द थिक। **वर्णरत्नाकरमे** एकर विवरण प्रयानकवर्णनामे सिपाही लोकनिक वस्त्रक रूपमे भेल अछि।

सरमौजा– ई माथमे बन्हबाक मोजा सदृश वस्त्र छल।

गान्ती– एकरा सम्प्रति **गाँती** कहल जाइत छैक। शरीरकें परित: आवेष्ठित करबाक हेतु एहि विशिष्ट वस्त्रक उल्लेख सेहो प्रयानक वर्णनामे भेल अछि।

सकलात– ई शब्द गलैचाक हेतु प्रयुक्त अछि।[42]

मारपरिकली– ई शब्द भाटवर्णनामे आएल अछि।[43] **गोविन्दझा** एकरा एक प्रकारक **अंगा** कहलनि अछि जे देहमे कसल रहैत छलैक आ ओहिमे बहुँआ नहि रहैत छलैक।

पछैओला– ई शब्द भाटवर्णना ओ विधावन्तवर्णनामे अछि। ई भाटलोकनिक अंगवस्त्र विशेष छल जे संभवत: पाछू दिस पहिरल जाइत छल। सम्प्रति **दोपट्टाक** पृष्ठभागपर फेकल भागकें **पछोड़ा** कहल जाइत छैक। नारीलोकनिक साड़ीक पृष्ठवर्ती अंश पछोर कहल जाइत अछि। ई **पछोड़ा** संभवत: पुरुषक पाछूदिस एक प्रदेशीय झूल सनक वस्त्र छल।

पाढ़ि– ई शब्द विधावन्तवर्णनामे विसहत्थी पछेओड़ाक संग आयल अछि जे पछेओराक कोरकें अभिव्यंजित करैछ।

आंगी– ई शब्द आषेटकवर्णनामे प्रयुक्त भेल अछि। **गोविन्दझा** एकरा **झूल** कहने छथि।[44]

कछनी– ई शब्दप्रेरणनृत्य वर्णनामे नर्तकक वस्त्रविशेषक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि। ई आधुनिक **कछिया, कच्छाक** पर्याय थिक।

कछने– ई शब्द क्रियापदक रूपमे प्रेरणनृत्य वर्णनामे आयल अछि। नर्तकक स्वरूपवर्णनक क्रममे कहल गेल अछि– **घाघर कछने**। अर्थात् घघरा सदृश वस्त्र धारण करबाक हेतु **कछब** क्रियापद छल होयत।

कुचओटा– ई शब्द प्रयानकवर्णनामे घोड़सवारक अंगवस्त्रविशेषक रूपमे प्रयुक्तभेल अछि। संभवत: ई **कवचक** हेतु प्रयुक्त भेल हो। **वर्णरत्नाकरमे** कहल गेल अछि– '**कत्ते एक पुनु कचओटा लोहाक कतरा हीराक वेधल सोनमानिक्रारल**...' अवश्ये ई वस्त्र लोहासँ बनैत छल तथा हीरा आदिसँ ओ सोन सन चमकयला रहैत छल।

घलि– ई शब्द आषेटकवर्णनामे **पाटघलि** स्वरूपमे आयल अछि। आषेटकवर्णनामे कुकुरवाह सभक स्वरूपक वर्णन करैत कहल गेल अछि– **पाटघलि एकहोक मथा बन्धने**। अर्थात् ई लोकनि पाटक (रेशमी) एक एकटा छलि माथमे बन्हने छथि। घलिकें गोविन्दझा **धरिया, कप्पा** अर्थ कयलनि अछि।[45]

कवाइ– ई शब्द प्रयानक वर्णनामे आयल अछि। कहल गेल अछि– '**गादीपलि, गाजीपलि, सोनपलि प्रभृति ये पट्टेम्बर तकरि कवाइ वरिहले**'। **गोविन्दझा** कवाइक हेतु कवच ? अर्थक संभावना कयलनि अछि[46] मुदा से एहिठाम समीचीन नहि बुझना जाइछ। वस्तुत: कवाइसँ एतय वस्त्रक समूहक अर्थ निर्वचन अधिक प्रासंगिक बुझना जाइछ।

सुवेष– ई शब्द नृत्य वर्णनामे **मुरजिक** विशेषणक रूपमे प्रयुक्त अछि। नीक वस्त्र धारण कयनिहारक हेतु ई विशेषण शब्द अछि।

साज, साजि, साजिहलु, साजन, सजोअ– ई समस्त शब्द विभिन्न स्थलपर प्रयुक्त भेल अछि आ साज-सज्जाक अर्थ दैत अछि। वेशसज्जाक क्रियापद ओ भाववाचकक रूपमे साजब क्रियापद प्रयुक्त छल से एहिसँ स्पष्ट अछि।

फाण्ड– ई शब्द सेहो प्रयानकवर्णनामे प्रयुक्त भेल अछि। ई आधुनिक **फाँड़क** पर्याय थिक। धोती इत्यादिकें आगू दिस खोंसि धोकड़ी सदृश बनल भागकें **फांड़** कहल जाइछ। प्रयानकवर्णनाक अतिरिक्त ई शब्द समरहरवर्णनामे सेहो प्रयुक्त भेल अछि मुदा एतय एकर अर्थ चाकर अछि। **गोविन्दझा** एहि **फाण्डक** आधुनिक रूप **फानक** संभावना कयलनि अछि।[47] उलच[48]-उँलच, उलेँचक पर्याय थिक। एकर अर्थ छैक बिछाओनक चादर। एहि विशिष्ट शब्दावलीक अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** किछु आर छिटफुट शब्द अछि जकरा वेशविन्याससँ सम्बद्ध कहल जा सकैछ– एहिमे सर्वाधिक प्रचलित शब्द

अछि सफुर । ई शब्द अनेक बेर विभिन्न वस्त्रक विशेषणक रूपमे प्रयुक्त देखि पड़ैछ । **गोविन्दझा** एकर अर्थ कयलनि अछि– **चकचक, चिकन ओ कोमल** ।[49] वस्त्रक विशेषणक रूपमे तँ एकर ई अर्थ समीचीन अछि मुदा सीमन्तक हेतु सफुर विशेषणक प्रयोग[50]मे एकर ई अर्थ समीचीन नहि बुझना जाइछ । संभवत: ओतय ओकर अर्थ 'फुटकायल' हो । पादत्राणक रूपमे वर्णरत्नाकरमे **बधा**[51] शब्दक प्रयोग भेटैछ । ई खराम स्थानापन्न **खड़पा** सदृश पादत्राण होइत अछि जकरा **बधा-बाधा-बदहा** कहल जाइत छैक । एहिमे लकड़ीक आधारपर रस्सीक फानी लागल रहैत छैक जाहिमे पैर फँसाय चलल जाइछ आ एवंक्रमे पृथ्वीपर नाङट पैरेँ चलबाजन्य क्लेशसँ बचल जाइछ । एकर प्रचलन सम्प्रति निम्नवर्गधरि देखल जाइछ । ताहूमे खासकऽ चिमनी, अलकतरा आदि काजसँ सम्बद्ध मजदूरमे । पहिरब क्रिया पदक हेतु **वर्णरत्नाकरमे** सर्वत्र **परिहब** क्रियापदक उपयोग भेल अछि जकर विविध स्वरूप यथा **परिहु**[52], **परिहि**[53], **परिहाओल**[54], **परिहने**[55] **परिहाडौ-परिहाउलि**[57] आदि देखि पड़ैछ । **कछिनीकेँ** पहिरबाक क्रियापदक रूपमे **कछब** शब्द प्रयुक्त भेल अछि ।[58] सूचीकार्यकेँ एहिमे चौंसठिकलामे परिगणित कराओल गेल अछि । भाटवर्णनामे ओकर पछोराकेँ सोनाक तारसँ युक्त कहल गेल अछि ।

एहि तरहेँ वर्णरत्नाकर वेशविन्यासक बहुश: शब्दावलीक परिग्रहण कयने देखि पड़ैत छथि । छिटफुट प्रासंगिक प्रयोगक अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** वस्त्रवर्णनाक वर्गीकृत उल्लेख सेहो भेल अछि । एहि वर्गीकृत वर्णनमे वस्त्रक विभिन्न प्रभेद तथा वस्त्रगृहक वर्णना अबैत अछि । वस्त्रवर्णनामे ज्योतिरीश्वर वस्त्रक चारिगोट कोटि विभाजन कयने छथि– **सामान्य पट्टाम्बर वस्त्र, देशीयवस्त्र, निर्भूषण वस्त्र** ओ **नेत वस्त्र** । पट्टाम्बर वस्त्र सामान्य वा रेशमी प्रकृतिक वस्त्र छल । देशीय वस्त्र भिन्न-भिन्न प्रदेशमे बनयवला खास-खास रेशमी वस्त्रक प्रभेद सभ छल । निर्भूषण वस्त्रक मध्य साधारण मलमल प्रकृतिक वस्त्र सभ छल आ नेत्रवस्त्र पातर, रंगीन तथा छोट आकारक वस्त्र सभ छल ।

दूकूल– खट्टाम्बर वस्त्रमे **दुकूलकेँ** परिभाषित करैत **गोविन्दझा** एकरा एक खास प्रकारक गाछक सोनसँ बनल वस्त्र कहलनि अछि जे सामान्यत: **घोघट** वा **ओढ़नीमे** प्रचलित छल ।[59] ई संस्कृतक शब्द थिक । अर्थशास्त्रमे एकरा बंगालमे बनल सूती वस्त्रक उज्जर रंगक विशिष्ट प्रभेद कहल गेल अछि । कखनो ई सूती ओ रेशमी सूतक मिश्रणसँ सेहो तैयार कयल जाइत छल । ई वस्त्र अत्यन्त पातर होइत छल । किन्तु विद्वान एकरा भोजक गाछक रेशासँ निर्मित कहैत छथि ।[60]

क्षोम– ई वस्त्र तीसीक रेशासँ बनैत छल । चीनी भाषामे तीसीकेँ **क्षुम** कहल जाइत अछि । ताहिसँ बनल होयबाक कारणेँ एहि वस्त्रकेँ **क्षौम** कहल गेल अछि । एकरे **तिसिऔटा** कहल जाइछ ।[61]

कौशेय– ई वस्त्र कीट कोशसँ बनल तसर वस्त्र छल ।[62]

कनकपत्र– एहि वस्त्रक सम्बन्धमे विशेष परिज्ञान नहि अछि । संभवत: एहि वस्त्रपर सोनक रेशासँ पातक आकृतिक जड़ी काढ़ल रहैत छल ।[63]

विचित्र– संभवत: ई वस्त्रक अनेक रंगमे रञ्जित प्रभेद छल ।[64]

मेघवर्णा– सम्भवत: ई आसमानी रंगक वस्त्रक प्रभेद छल जे बंगालमे निर्मित होइत छल ।[65]

मेघउदुम्बर– इहो कारीवर्णक रेशमीवस्त्रक प्रभेद बंगालमे उत्पादित होइत छल ।[66]

गरम– एकर अर्थ अस्पष्ट अछि ।[67]

क्षीरोदक– ई अत्यन्त पातर रेशमी वस्त्रक प्रभेद छल जकर उल्लेख भारतीय साहित्यमे सातम शताब्दीसँ भेटैत अछि ।[68]

कर्प्पूरचौक– ई कर्प्पूर सदृश उज्जर रंगक रेशमी वस्त्रक प्रभेद होइत छल ।[69]

कर्प्पूरतिलक– इहो वस्त्र कर्प्पूरचौके जकाँ उज्जररंगक रेशमी वस्त्र छल । संभवत: एहिपर तिलकक आकृतिक चित्रावली बनल रहैत छल होयतैक ।[70]

गङ्गासागर– ई अत्यन्त पातर प्रकृतिक रेशमी वस्त्र छल जे बंगालमे निर्मित होइत छल । आइने अकबरीमे गंगाजल नामक महीन रेशमी वस्त्रक उल्लेख भेल अछि । संभवत: ई एकरे अपर नाम हो ।[71]

सूर्यबन्ध– संभवत: रेशमी वस्त्रक एहि प्रभेदमे सूर्यक गोलाक आकृतिक **कसीदा** कयल रहैत छलैक ।[72]

गजबन्ध– ई वस्त्र संभवत: उड़ीसासँ आयातित होइत छल । एहिमे हाथीक पंक्तिक आकृतिक **कसीदा** कयल रहैत छल होयतैक ।[73]

अहिनवाल– वस्त्रक ई प्रभेद स्थानविशेषक नामपर जानल जाइत छल । एकर उत्पादन स्थल गुजरात राज्यक अनहिलवाड़ा स्थल छल जे आधुनिक पाटन कहल जाइत अछि ।[74]

देवाङ्ग– रेशमी वस्त्रक ई प्रभेद उड़ीसा अथवा फारससँ आयातित वस्त्रक प्रभेद छल ।[75]

शुचीसोन– जेना कि एहि वस्त्रक नामसँ ज्ञात होइत अछि, एहि पर **सोनाक** तारसँ चित्रांकन कयल रहैत होयत ।[76]

शुचीपलि– 'पलि' शब्द अनेक प्रकारक वस्त्रक संग जुड़ल देखि पड़ैछ यथा **सोनपलि**, **गाजीपलि** इत्यादि । संभवत: ई शब्द पटोसँ सम्बद्ध हो । अवश्ये ई शब्द रेशमी प्रकृतिक अत्यन्त महीन वस्त्र होइत होयत । **सी.बी. गुप्ताक** अनुसार ई वस्त्र दुपट्टाक रूपमे व्यवहृत होइत छल । एकर चौड़ाइ कम रहैत छलैक । आ ई चित्रांकनसँ युक्त होइत छल ।[77] जेना कि नामसँ स्पष्ट अछि ई वस्त्र सुइसँ चित्रांकित कयल जाइत होयत ।

पाञ्चीन– संभवत: ई वस्त्र पाँच रंगक धारीसँ युक्त होइत छल ।[78]

सोनपलि– सी.बी. गुप्ताक अनुसार रेशमी वस्त्रक ई प्रभेद संभवत: ढाका जिलाक सोनार गांवमे बनैत छल ।[79] भऽ सकैछ ई स्वर्णक चित्रांकनक कारणेँ **स्वर्णपटी, सोनपटी सोनपलि** भऽ गेल हो ।

गाजीपलि– सी.बी. गुप्ताक अनुसार रेशमी वस्त्रक ई प्रभेद उत्तर प्रदेशक गाजीपुरमे निर्मित होइत छल । अकबरक समयमे गाजीपुरक निकटवर्ती प्रदेश बनारस, जलालाबाद, मऊ इत्यादि वस्त्रनिर्माणक प्रमुख केन्द्र छल ।[80]

इहो संभव अछि जे ई वस्त्र **गजिया** सदृश दोहरिक हेतु प्रयुक्त हो । आधुनिक गंजी अथवा गञ्जीसिल्कक मूलमे यैह शब्द हो । 'गजब' क्रियापद सम्प्रतियो कसीदा करबाक अर्थमे प्रयुक्त अछि । **गजपट** शब्द ओझरायलक अर्थमे संभवत: एही शब्दसँ आयल हो ।

कदलीगर्भ– रेशमी वस्त्रक ई प्रभेद अत्यन्त मोलायम प्रकृतिक होइत छल ।[81] संभवत: केराक **इपौर** सदृश मोलायम होयबाक कारणेँ एकर ई नामकरण भेल होयत । इहो संभव अछि जे ई केराक उपौरक रेशासँ बनैत हो । इहो संभव अछि जे ई शब्द वस्त्रक हेतु विशेषणीभूत हो खास कऽ एहन वस्त्रकेँ द्योतित करैत हो जे कोमल प्रकृतिक ओ पीताभ रंगक होइत होयत ।

मुक्तापद– संभवत: ई वस्त्र उड़ीसाक मुक्ताजरी वस्त्र सदृश होइत छल । ई वस्त्र मोती जकाँ चमकसँ युक्त होयबाक कारणेँ **मुक्तापद** कहल जाइत छल । भऽ सकैछ एहि वस्त्रमे मोतीक **झालर** लागल हो ।

मालाविद्याधर– रेशमी वस्त्रक एहि प्रभेदमे संभवत: स्वर्गक गानविद्याविशारद विद्याधर लोकनिक अंकन रहैत छल ।[82]

श्रीकण्ठ– ई थानेश्वरमे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल ।[83]

लक्ष्मीविलास– प्राय: ई वस्त्र भाग्यक अधिष्ठात्री भगवती लक्ष्मीक नामपर नामकरण कयल गेल वस्त्रक प्रभेद छल ।[84] ई अत्यन्त महग ओ उत्तम कोटिक वस्त्र ऐश्वर्यवाने लोकनिक द्वारा धारण कयल जयबामे समर्थताक कारणेँ **लक्ष्मीविलास** कहल जाइत होयत ।

विचित्रांगद– संभवत: ई रेशमीवस्त्र चित्रावलीसँ युक्त होइत छल ।[85]

चक्रेश्वरी– संभवत: एहि वस्त्रक निर्माणक केन्द्र छल हावड़ा जिलाक चक्रवाड़ी जतय एखनो धोती ओ साड़ीक निर्माणक विशिष्ट केन्द्र अछि ।[86]

दण्डप्रकार– संभवत: ई **डोरिया** प्रकृतिक रेशमी वस्त्र छल ।[87]

एहि तरहेँ **ज्योतिरीश्वर** तीस प्रकारक रेशमी वस्त्रक उल्लेख कयलनि अछि जकर नामकरण निर्माणकेन्द्र, कसीदाक आकृति, कोमलता आदिक आधारपर छलैक ।

ज्योतिरीश्वरक वस्त्रवर्णनाक दोसर सूची देशीय वस्त्रक अछि । सम्भवत: ई वस्त्र सभ **पट्टम्बर** वस्त्रसँ न्यून कोटिक होइत छल आ एकर सभक नामकरण उत्पादक देशक आधारपर छलैक यथा–

तञ्चेर– ई वस्त्र तंजौरमे बनैत छल । अठारहम शताब्दी धरि तञ्जौर साड़ी निर्माणक विशिष्ट केन्द्र रहल अछि ।[88]

गाङ्गौर– **पंडितगोविन्दझा** एकरा गंगापुरसँ सम्बद्ध मानलनि अछि ।[89] किछु विद्वान एकरा उड़ीसाक **गंजम** स्थलसँ सम्बद्ध कहने छथि ।[90]

सिलहटी– एकर निर्माण केन्द्र बंगलादेशक सिलहट स्थल छल ।[91]

अजयमेरु– ई वस्त्र अजमेरमे बनैत छल ।[92]

गांडीपुर– संभवत: ई वस्त्र आन्ध्रप्रदेशक गाँधीकोट नामक स्थानमे बनैत छल ।[93]

राजपुर– यद्यपि देशमे अनेकानेक राजपुर अछि । तथापि एहि वस्त्रक निर्माणकेन्द्र संभवत: गोआक निकटवर्ती राजापुर छल होयत जे सत्रहम शताब्दी धरि वस्त्रनिर्माणक प्रमुख केन्द्र छल ।[94]

जगद्धरपुर– संभवत: एहि वस्त्रक निर्माणकेन्द्र मध्यप्रदेशक जगदलपुर छल ।[95]

कञ्चिवनि– संभवत: एहि वस्त्रक निर्माणकेन्द्र काञ्चीपुरम छल जे सम्प्रतियो रेशमी वस्त्रनिर्माणक प्रमुख केन्द्र अछि ।[96]

चोलपाटन– एगारहम शताब्दीमे चोल राज्यवंशक तीनगोट राजधानीमे काञ्चीपुरम्, कुम्भकोणम् ओ तंजौर रहल अछि । संभवत: चोलपाटन कुम्भाकोणम् स्थलक प्रतिनिधित्व करैछ ।[97]

द्वारवास– संभवत: ई द्वारावती अर्थात् द्वारिकामे बनल वस्त्रक प्रभेद हो ।

नीस– सन्तोस-बंगला देशमे एकटा छोटसन शहरक नाम अछि सन्तोस । संभवत: नीस-सन्तोस वस्त्रक यैह निर्माणकेन्द्र रहल होअय । नीस संभवत: एहि वस्त्रक दुर्लभता ओ महग प्रकृतिक द्योतक अछि ।[98]

षडपी– ई संभवत: आन्ध्र प्रदेशक षडपह जिलामे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल ।[99]

पटोर– पटोर मिथिलाक अत्यन्त प्रचलित वस्त्र रहल अछि । एकरा संग कोनो विशिष्ट स्थलक सम्बद्धता नहि सूचित होइछ । ई अत्यन्त मोलायम प्रकृतिक रेशमी साड़ी होइत छल ।

माङ्गल– वस्त्रक ई प्रभेद संभवत: कर्नाटकक बंगलोरमे निर्मित होइत छल ।[100]

पारिजात– एहि रेशमीवस्त्रक सम्बन्ध कोन स्थलसँ अछि से नहि बुझना जाइछ ।

संभवतः एकर नामकरण एहि पर पारिजातक पातक अनुकृतिमे काढ़ल चित्रांकनक आधारपर भेल होयत ।[101]

मणि एवं मणिजाल– संभवतः वस्त्रक एहि प्रभेदक सेहो मणिक आकृतिक कसीदाक आधारपर नामकरण कयल गेल होयत अथवा ई मणिजटित रहैत होयत ।[102]

सर्वाङ्ग– संभवतः ई वस्त्र सम्पूर्ण शरीरकेँ आवृत करबाक हेतु व्यवहृत होइत होयत । सी.बी.गुप्ता एकरा प्राक्साहित्यमे प्रचलित शब्द कहने छथि ।[103]

रूपमञ्जरी– संभवतः ई कोनो विशिष्ट रेशमी वस्त्रक काव्यपरक नामकरण अछि जे ओकर सौन्दर्यक आधारपर भेल होयत ।[104]

सम्बलहरी– रेशमी वस्त्रक एहि प्रभेदक निर्माण केन्द्र उड़ीसाक सम्बलपुर छल ।[105]

सूर्यमण्डल– संभवतः वस्त्रक एहि प्रभेदपर सूर्यक वृत्ताकार आकृति बनल रहैत छल ।[106]

तारामण्डल– ई नीलवर्णक साड़ी होइत छल जाहिपर चित्रांकन द्वारा ताराक आकृति बनाओल रहैत छलैक ।[107]

चन्द्रमण्डल– नामकरणक आधारपर ई द्योतित होइछ जे वस्त्रक एहि प्रभेदमे चन्द्रक आकृतिक चित्रांकन रहैत छल ।[108]

एहि तरहेँ **वर्णरत्नाकरमे** देशीयवस्त्रक रूपमे जाहि सूचीकेँ प्रस्तुत कयल अछि ताहिमे अधिकांशक निर्माणकेन्द्रक आधारपर नामकरण कयल गेल बुझना जाइछ । किछु देशीयवस्त्र आकृति ओ चित्रांकनक आधारपर नामकरण ग्रहण कयने बुझना जाइछ ।

वस्त्रक तेसर प्रभेदकेँ वर्णरत्नाकरकार **निर्भूषण वस्त्र** कहलनि अछि । ई सामान्य कोटिक वस्त्र होइत छल होयत आ सामान्य जनक उपयोगमे अबैत होयत ।

कमरूवाल– ई कामरूप (आसाम)मे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल ।[109]

बङ्गाल– ई बंगालमे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल ।

गुज्जर– ई गुजरातमे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल । **गोविन्दझा** गुर्जरसँ एकर साम्य बैसौलनि अछि ।[110]

कठिवाल– ई काठियावाड़मे निर्मित वस्त्रक प्रभेद छल ।[111]

तेलकण्टा– संभवतः ई वस्त्र मुम्बइक तेर-तगर स्थानमे बनैत छल ।[112]

शुद्धओट– संभवतः ई अति स्वच्छ ओ विरंजित वस्त्रक प्रभेद छल ।[113]

काची– ई काञ्चीपुरम्मे निर्मित सूतीवस्त्रक प्रभेद छल ।[114]

निचड़ी– हिन्दीमे छोट सन अधोवस्त्रकेँ बड्डी कहल जाइछ । संभवतः निचड़ी एहि वस्त्रकेँ निरूपित करैछ जे आधुनिक **जङ्घिया** तरहक होइत छल होयत ।[115]

जीली– एकर व्याख्या संभव नहि भऽ सकल अछि ।

बरहथी– ई साड़ीक प्रभेद छल । एकर लम्बाइ बारह हाथ होइत छलैक ।

मझओतरि– संभवतः ई वस्त्र ने बहुत पैघ होइत छल होयत ने अत्यन्त छोट । मध्य आकृतिक होयबाक कारणेँ **मझओतरि** कहल जाइत छल । ई जाँघसँ छाती धरिक भागकेँ झँपैत छल ।

झुरण– सम्भवतः ई झुना **मलमल** छल ।[116]

वपया– एकर अर्थ अनुसन्धेय अछि ।

वस्त्रवर्णनाक अन्तमे **ज्योतिरीश्वर** नेतवस्त्रक सूची देने छथि । नेतवस्त्र सम्भवतः आधुनिक **गमछा** वा **रूमालक** स्वरूपक छोट सन वस्त्र होइत छल होयत । एहिमे अधिकांशक नामकरण ओकर रंगेक आधारपर देखि पड़ैछ–

हरिणा– हरिण सन रंगवला ।

बैङ्गना– बैगनक रंगवला ।

नखी– अत्यन्त भुल्ल रंगवला ई एकगोट सुगन्धि द्रव्य नाम थिक । संभवतः एहन वस्त्र जाहिमे ई सुगन्धिद्रव्य पड़ल हो, नखी कहबैत छल होयत ।

गुरू– अत्यधिक गाढ़रंगवला अथवा भारी प्रकृतिक वस्त्र विशेष ।[117]

शुचीन– विरंजित अथवा **जरीदार** ।[118]

राजन– सी.बी.गुप्ता एकरा रजतसँ सम्बद्ध कऽ चाँदी सन चकमक कहलनि अछि । मुदा हिनक ई परिकल्पना ठीक नहि बुझना जाइछ । संभवतः ई वस्त्र रञ्जन अर्थात् राङ्बसँ सम्बद्ध हो । अवश्ये राङल नेतवस्त्रकेँ राजन कहल जाइत होयत ।

पञ्चरंग– पाँच रंगसँ युक्त ।

नील– नीलवर्णक ।

हरित– हरियर वर्णक ।

पीत– पीयर वर्णक ।

लोहित– लाल रंगक ।

चित्रवर्ण– विभिन्न वर्णक ।

वस्त्रक विभिन्न प्रभेदक अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** वस्त्रसँ बनल विभिन्न प्रकारक घरक वर्णन सेहो आयल अछि । एहिमे **गुडरू, गुरइनी, तोंदोताल, धन, पलसा, बेमान,**

घोरमयूर, सरबाल, टङ्गौटी, सरइचा, सरमान आदिक अर्थ अनुसन्धेय अछि । एकर अतिरिक्त वर्णित वस्त्रगृह सभ थिक–

वारिगह– वारिगृह, हथिसार वा घोड़सार ।

षेमा– **खीमा**, राजा वा सैनाक अस्थायी निवास ।

मसहरी– मच्छड़सँ बचबाक हेतु वस्त्रक **ओहार** विशेष ।

एकचोइ– एक मुख्य स्तंभवला वस्त्रगृह-**एकचोपा** ।

दोचोइ– दुइ मुख्य स्तंभवाला वस्त्रगृह-**दोचोपा** ।

मण्डवा– मण्डप, मड़वा ।

कपलघर– सामान्य कपड़ाक घर ।

वस्त्रगृह सभ यद्यपि वेशसज्जाक वस्तु नहि थिक तथापि वस्त्रसँ सम्बद्ध रहबाक कारण एकरो सभक परिगणना कऽ लेल गेल अछि ।

भूषणक शब्दावली– वर्णरत्नाकरमे भूषणक शब्दावलीक सेहो अनेक प्रसंगमे उल्लेख भेल अछि । एहि शब्दवलीमे अनेक एखनो, यथावत प्रचलित अछि तथा अनेकमे ध्वनि परिवर्तन भऽ गेल अछि । यथा–

खुटी– ई कर्णाभूषण थिक । एकर विवरण **वर्णरत्नाकरक** नायिकावर्णनमे नायिकाक अलंकारक रूपमे भेल अछि ।[119] अन्यत्र विद्यावन्त वर्णनामे सेहो एकर उल्लेख भेल अछि मुदा एहि हेतु शब्द **खुनी** देखि पड़ैछ । एहि कर्णाभूषणकेँ स्त्री धारण करैत छलीह ।

सिङ्कली– ई गरदनिक आभूषण **सिकड़ीक** हेतु प्रयुक्त शब्द छल । नायिकाक अलंकार वर्णनमे तँ एकर उल्लेख अछिए[120] संगहि विद्यावन्त वर्णनामे सेहो ई उल्लिखित अछि ।[121] तथापि विद्यावन्त वर्णनामे एकर किंचित ध्वनि परिवर्तित रूप **सिङ्कलीक** प्रयोग भेल अछि । इहो आभूषण नारीमात्र द्वारा ग्रहण कयल जाइत छल ।

सुता– ई साम्प्रतिक भाषामे **सूति** कहल जाइछ । सोनक मोट पतरसँ निर्मित गर्दनिक परित: नारीलोकनि द्वारा धारण करबाक हंसुलीक ई विशिष्ट प्रभेद थिक ।

चूलि– ई शब्द **चूड़ि-चूड़ीक** प्राचीन शब्द थिक ।[122] नारीलोकनि द्वारा पहुँचीपर धारण करबाक ई वलयाकार आभूषण सोन, चानी, इत्यादिसँ बनैत छल ।

वलया– ई शब्द **बालाक** पूर्वरूप थिक । पहुँचीपर पहिरबाक ई विशेष प्रकरणक आभूषण होइछ । **वर्णरत्नाकरमे** एकठाम एकरा हेतु **वलय** शब्द सेहो आयल अछि ।[123]

शाख– ई आभूषण नारीक चूड़ीक विशेष प्रभेद थिक जकरा **शंखा चूड़ी** कहल जाइत

छैक ।[124] ई शंखक अस्थिसँ बनैत अछि । **वर्णरत्नाकरमे** चन्द्रमा वर्णनामे चन्द्रमाकेँ **निशा नायिकाक शंखवलय अइसन** कहल गेल अछि ।[125] इहो शंखवला **शंखाचूड़ीक** हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

एकावली– एहि आभूषणक उल्लेख नायिकाक अलंकरणमे भेल अछि ।[126] ई गरदनिमे पहिरबाक **एकलड़** वला हार थिक ।

वीर– एहि आभूषणक उल्लेख विद्यावन्तवर्णनामे चित्रिणी जाति नायिकाक अलंकरणक रूपमे भेल अछि । ई कर्णाभूषण थिक जकरा **वीर, वीरझुम्मक** कहल जाइत छैक ।

मेषला– एहि शब्दक उल्लेख **वर्णरत्नाकरमे** नायिकाक अलंकारक रूपमे अनेक बेर भेल अछि । ई डाँड़मे पहिरबाक आभूषण थिक जकरा सम्प्रति **डँड़कस** कहल जाइत छैक । वर्णरत्नाकरकार नायिकाक कटिक वर्णन करैत कहलनि अछि– **सोनाक डोरेँ मध्यभाग बाँधल कइसन देषु जनि सौन्दर्यु तुलापुरुष काछल (काञ्चन) बान्धल अछ** ।[127] एहुसँ सिद्ध होइछ, जे डाँड़मे सोनक डोरी सदृश कोनो गहना धारण करबाक प्रथा छल ।

तुका– ई वस्तुत: टीकाक पर्याय थिक ।[128] माथमे धारण करबाक आभूषण विशेषकेँ **टीका वा मङटीका, माङटीका** कहल जाइत छैक ।

कङ्कन– ई बाहुक वलयाकार गहना थिक जकरा **कंगना, कंगन** कहल जाइत छैक । **वर्णरत्नाकरमे** एकठाम एहि हेतु **ककना** शब्द सेहो देखि पड़ैछ ।[129]

कुण्डल– ई कानमे धारण करबाक सोनक ठोस गहना होइछ । सखीवर्णनामे नायिका-सखीक सौन्दर्यक वर्णन करैत कहल गेल अछि जे '**कुण्डल दुइ रत्नमण्डित तकरौं कान कइसन देषु जनि कामदेव कौं रथैं चक्रदुइ जोलल अछ** ।' एहिसँ एहि गहनाक चक्राकार होयबाक सूचना भेटैछ ।[130]

कलिआ– विद्यावन्तवर्णनामे विद्यावन्तकेँ **हिराधारक कलिआ चारिकान पहिरहले**[131] कहल गेल अछि । एहिसँ स्पष्ट अछि जे कलिआ कानक आभूषण छल । **गोविन्दझा** एकर मूल शब्द **कर्णिका** कहने छथि । विद्यावन्तक गहना होयबाक कारण ई पुरुषक कर्णाभूषण सिद्ध होइछ ।

टाड– टाडक उल्लेख भाटवर्णना तथा विद्यावन्त वर्णनामे देखि पड़ैछ । दूनू ठाम कहल गेल अछि जे **साख सोनाक टाड चारि परिहने** ।[132] एहि तरहेँ टाडक सोनसँ निर्मित होयबाक सूचना भेटैछ । सम्प्रति ई टाँड/टयरा कहबैछ आ रजत, पित्तर आदि धातुसँ बनाओल बाहुवलय थिक ।

नूपुर– एहि शब्दक अनेकश: उल्लेख **वर्णरत्नाकरमे** भेल अछि । ई चरणक गहना थिक । **वर्णरत्नाकरक** दुइ गोट प्रसंगसँ जाहि नूपुरक ध्वनन होइछ से बाजवला नूपुर बुझना जाइछ

यथा 'नूपुर दुइ शब्दायमान ताकाँ कइसन देषु जनि त्रिभुवनमोहिनी मन्त्र जपइतेँ अछि' तथापि **'अस्थिविवर प्रविष्ट ये वतास से कइसन अखलु जनि सञ्चरइतेँ योगिनीगन तकर नूपुर'** ।[133]

हार– ई गरदनिक हारक हेतु प्रयुक्त शब्द अछि ।[134]

मुन्दरी– ई मुद्रिका अथवा औंठीक प्रभेद विशेष थिक जे हाथक आङुरमे पहिरल जाइछ । सम्प्रति ई **मुनरी** स्वरूपमे जीवित अछि । नाम खोधल **अउँठीक** हेतु मुद्रा शब्दक उल्लेख संस्कृत वाङमयमे अनेकठाम भेल अछि जकर संपुष्टि अमरकोषक **अङ्गुलिमुद्रा** शब्द सेहो करैछ । तुलसीदास सेहो कहने छथि–

> **तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुन्दर ॥**
> **चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष विषाद हृदय अकुलानी ॥**[135]

प्राय: मुद्रिका-मुन्द्रिका-मुनरिआ-मुनरी-मुन्दरी आदि एकर विकासक्रम थिक ।

डोर– ई केश बन्हबाक सूत थिक । सम्प्रति विवाहमे **डोर-सिनूरक** प्रचलन अछि ।

एकर अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** जाहि गहना सभक उल्लेख देखि पड़ैछ से सभ थिक– **पद्मसूत्र**[136], **सवन**, (सरल)[137] **खिनान**[138] **दवनीयारी**[139] **पताका**, **दत्छाचीन्ह**[140] इत्यादि जकर अर्थ स्पष्ट नहि होइछ । गहनाक हेतु **वर्णरत्नाकरमे अलंकार** ओ **अभरण** शब्द भेटैत अछि यथा **अनेक अलंकार संयुक्ति**[141] **कनकाभरणभूषित कान**[142] इत्यादि । अलंकार निर्माणक धातुमे वर्णरत्नाकरकार सोना (सुवर्ण) तथा रजतक उल्लेख कयने छथि । ओना **काँस्य**, **जएसत**, **सङ्ख**, **पितलि** आदिक सेहो उल्लेख अछि । सोनाक विशेषण अनेकठाम **साऊ** कहल गेल अछि जकर अर्थ **पंडितगोविन्दझा** परिशुद्ध कहने छथि । **वर्णरत्नाकरमे** गहनाक रत्न जटित होयबाक अनेक बेर उल्लेख अछि । गहनामे जटित करबायोग्य रत्न ओ उपमणि सभक वर्णनक हेतु पृथक परिच्छेदे अछि । तदतिरिक्तो विभिन्न स्थलमे रत्न ओ उपमणिक शब्दावली देखि पड़ैछ । रत्नपरीक्षाकेँ एहिमे चतु:षष्टिकलाक रूपमे उल्लेख भेल अछि ।

रत्नवर्णनामे **गोमेद**, **मरकत**, **मुकुता पदमराग**, **हीरा**, **गरूरोद्गार**, **माँसखण्ड**, **रैणुज मारासोस**, **सौगन्धिक**, **चन्द्रकान्त**, **सूर्यकान्त**, **प्रवाल**, **राजावर्त्त**, **लाजवर्त**, **कषाय** ओ **इन्द्रनीलक** उल्लेख भेल अछि । हीरक हेतु **हीरा** शब्दक प्रयोग सेहो देखि पड़ैछ । मोतीक हेतु **मुकुता** ओ **मुक्ता** शब्द सेहो भेटैछ । ओना रत्नक नओ गोट प्रसिद्ध भेद अछि– **मुक्ता**, **माणिक्य**, **वैदूर्य**, **गोमेद**, **हीरा**, **मूँगा**, **पन्ना**, **नीलम** ओ **मरकत** । एहिमे माणिक्यक हेतु **माणिक** शब्द आयल अछि । नीलमक हेतु संभवत: **इन्द्रनील** शब्दक पर्याय थिक । वैदूर्य, गोमेद, मरकत ओ हीराक प्रयोग अनेक स्थल पर भेटैछ । राजावर्त रत्नक हेतु एकठाम **रावट** शब्द भेटैत अछि ।[143] संभवत: ई नीलम सदृश रत्न थिक जकरा **लाजवर्त** कहल जाइत छैक । एकर सभक अतिरिक्त जाहि रत्नसभक परिगणन वा विवरण अस्थानवर्णना,

समुद्रवर्णना, वणिकपुत्रवर्णना आदिमे भेल अछि से सभ थिक **मरकत**, **वेकण्ठज**, **स्फटिक**, **मेस**, **अहिकान्त**, **समार**, **गनुर्क्क**, **टीकपक्ष** इत्यादि । चन्द्रकान्तक हेतु **शशिकान्त** शब्दक सेहो प्रयोग भेल अछि ।

रत्नक अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** बत्तीस प्रकारक उपमणिक वर्णन क्रमश: उपमन्विवर्णना ओ पोखरावर्णनामे देखि पड़ैछ । ई उपमणि सभ थिक– **कूर्म्म**, **महाकूर्म्म**, **अहिछत्र**, **श्यावगन्ध**, **व्योमराग**, **कीटपक्ष**, **कुरुविन्द**, **सूर्यमाल**, **हरीतसार**, **जीवित**, **पवजाति**, **शिखिनिल**, **वंशपत्र**, **धूलिपरकत**, **भस्माङ्ग**, **ज-भुकान्त**, **स्फटिक**, **कक्केर्तर**, **पारिपात्र**, **नन्दक**, **अञ्जनक**, **लोहितक**, **शैलेयक**, **शुक्तिचूर्ण**, **तुत्थक**, **शुकग्रीव**, **गरूत्पक्ष**, **पीतराग**, **कर्प्पूरक** **वर्णरस** ओ **काच** ।[144] एहि तरहेँ **वर्णरत्नाकरमे** आभूषणक विभिन्न प्रभेद, एकरा हेतु व्यवहृत धातु, एहिमे जड़बाक योग्य रत्न ओ उपमणिक बहुश: शब्दावलीक उल्लेख देखि पड़ैत अछि ।

प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली– **वर्णरत्नाकरमे** प्रसाधनसँ सम्बद्ध शबदावलीक सेहो बहुश: उल्लेख भेल अछि । एहिमे उल्लिखित शब्दावलीमे प्रसाधनक शब्दावलीक वर्गीकरण निम्नरूपमे कयल जा सकैछ–**पुष्पप्रसाधन**, **केश प्रसाधन**, **अङ्गराग** ओ **मुखप्रसाधन** ।

पुष्प प्रसाधन– पुष्पप्रसाधनकेँ **वर्णरत्नाकरक** चौंसठि कलामे एकगोट कला मध्य स्थान देल गेल अछि । एहिमे पुष्पप्रसाधनकेँ **मालाग्रन्थन** कहल गेल अछि ।[145] पुष्पक माला बनायब एकटा विशिष्ट कला छल । वेश्यावर्णनामे सेहो **कुसुमकइ प्रबनाकेँ** वेश्याक आचारक कोटिमे राखल गेल अछि ।[146] पुष्परसकेँ सेहो चौसठिकला मध्य गनल गेल अछि । **गोविन्दझा** एकरा **पुष्पवास** कहलनि अछि जकर अर्थ निर्वचन करैत कहल गेल अछि जे ई फूलसँ वस्त्र, जल आदिकेँ सुवासित करबाक प्रक्रिया छल ।[147] आस्थानवर्णनामे राजाक परिचारकमे पुष्पभट्टक उल्लेख भेल अछि जे संभवत: राजाक हेतु पुष्पमाल्यक निर्माण आदि कर्ममे नियुक्त होइत छल ।[148] कामावस्था वर्णनामे पुष्पक विनियोगक उल्लेख भेल अछि ।[149] उपवनवर्णनामे उपवनकेँ **पुष्पक परागेँ पिञ्जलित तथा कुसुमक सौरभतेँ** धूपित कहल गेल अछि ।[150] नृत्यवर्णनामे पुष्पक विरचनासँ लक्षित होइछ जे नट सेहो पुष्पमाल्य धारण कऽ नचैत छलाह ।[151] प्रेरणनृत्यवर्णनामे प्रेरणकेँ पुष्पविभूषित कहल गेल अछि ।[152] भाटवर्णनामे भाटकेँ **ओड़हुलक माला एकहोंक परिहलेँ** कहल गेल अछि ।[153] शयनवर्णनामे नायकक सेजकेँ विविध प्रकारक पुष्पराशिसँ सजयबाक उल्लेख भेल अछि ।[154] एकर अतिरिक्त केशसज्जामे सेहो पुष्पक व्यवहारक उल्लेख अछि । एहि तरहेँ **वर्णरत्नाकरकार** पुष्पसज्जाक वृहत् उल्लेख कयलनि अछि ।

ओड़हुलक अतिरिक्त **वर्णरत्नाकरमे** आन पुष्पक मालाक उल्लेख नहि अछि । शयनवर्णनामे जाहि फूल सभकेँ आस्तरणपर उपगत कयल गेल वर्णन भेल अछि ताहिमे **मालती**, **मनमोदा**, **लेवारि**, **करुण**, **सुवर्णकेतकी**, **चम्पक** प्रभृतिक उल्लेख अछि ।[155] एहि फूलसभमे **मालती** ओ **चम्पक** (चम्पा) सम्प्रतियो ज्ञात अछि । **सुवर्णकेतकी** संभवत:

सुवर्ण वर्णक केओड़ाक पुष्पक हेतु आयल अछि । करुप, मनत्रोदाक अर्थ स्पष्ट नहि अछि । **लेवारि नेवार** नामक पुष्पक हेतु आयल अछि । अन्य पुष्पमे **कर्णिकार** ओ **काञ्चनालक** उल्लेख वनवर्णनामे भेटैछ ।[156] **कर्णिकार कनैलक फूलक** हेतु तथा **काञ्चनाल कचनारक** हेतु आयल अछि । कर्णिकारक हेतु **वर्णरत्नाकरमे** अपर शब्द अछि **कनिअरा** ।[157] वर्णरत्नाकरकार नायिकाक नाकके **कनिअराक कर अइसन** कहलनि अछि ।[158] करसँ कली अथवा **कोंढ़ीक** बोध होइत अछि । अभिषेकवर्णनामे नायकक अभिषेक सामग्रीमे **श्वेत कुसुमक** सेहो परिगणना भेल अछि ।[159] सरोवरवर्णनामे पानिमे होमयवला कमल, कुमुद, कोकनद कल्हार, कुवलय ओ कुमुद पुष्पक उल्लेख भेल अछि ।[160]

तेल– **वर्णरत्नाकरमे** समरहर वर्णनामे स्नानपूर्व नायकक अभ्यङ्ग मर्दनक हेतु विभिन्न प्रकारक तेलक वर्णन कयल गेल अछि । ई तेल सभ अछि– **माषतैल, षटलक्र, छागलादि, नारायण, वडनारायण, मध्यमनारायण, केतक्यादि, सुगन्ध, एलातैल, महासुगन्धतैल** इत्यादि । माषतैल संभवत: उड़ीदक तेल छल होयत । **गोविन्दझा** एकरा विशिष्ट **आयुर्वैदिक** तेल कहने छथि ।[161] **केतक्यादि संभवत:** केओड़ाक परागसँ सुगन्धित तेल छल । **एला तेल** इलायचीक योगसँ बनाओल जाइत छल । अन्य तेलक निर्माण प्रक्रिया ओ आधारसामग्री नहि भेटैत अछि । स्पष्ट अछि जे **वर्णरत्नाकर** जाहि तेल सभक सूची प्रस्तुत कयने अछि से सभ सुवासित प्रकृतिक होइत छल । एहि तरहेँ अङ्ग प्रसाधनमे सुगन्धित तेल लगयबाक प्रक्रियाक अभिज्ञान होइत अछि ।

अङ्गराग– वर्णरत्नाकरमे चतु:षष्टिकलावर्णनामे **अंगराग** शब्दक उल्लेख भेल अछि । अंगकेँ विभिन्न प्रकारक विलेपन द्वारा शुष्क ओ सुवासित करबाक ई प्रक्रिया कला मध्य परिगणित होइत छल आ अंगप्रसाधनक विशिष्ट प्रक्रिया बूझल जाइत छल । वेश्यावर्णनामे वेश्याक क्रियाकलापमे '**अंगरागक पेषण**'[162] तथा '**शरीरक परिष्कारक**'[163] उल्लेख अछि । अंगरागक विभिन्न विधिक उल्लेख चौसठिकला मध्य देखल जाइत अछि यथा–

विशेषकच्छेद– गोविन्दझा एकरा **पसाहनि** करब वा कपार, गाल आदि पर **कस्तूरी** आदिसँ चित्र बनायब कहलनि अछि ।[164]

दशनविधि– एकरा **दशनवसनाङ्गराग** कहल गेल अछि जकर अर्थ थिक **दाँत ओ ठोर रँगब** ।[165]

पत्रभंगि– शरीर पर **कस्तूरी** आदिक विलेपन करब ।

गन्धयुक्ति– **अतर** ओ **फुलेल** बनायब ।

अंगरागकेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत छल । नायिका सखीवर्णनामे सखीकेँ जाहि समस्त कर्ममे कुशल कहल गेल अछि ताहिमे **मण्डन** सेहो अछैछ ।[166] ई मण्डन वस्तुत: नायिकाकेँ वस्त्राभूषण प्रसाधनसँ सुशोभायमान बनयबाक प्रक्रिया छल । नायकक

भोजनवर्णनामे **आचमनिक** उपरान्त हुनक हाथकेँ चतु:समसँ मण्डित करबाक उल्लेख भेल अछि । चतु:समक उल्लेख **वर्णरत्नाकरमे** अनेक स्थलपर भेल अछि यथा– आस्थानमण्डपकेँ चतु:समक विलेपनसँ युक्त कहल गेल अछि ।[167] समरहर वर्णनामे समरहरक भूमिकेँ चतु:समसँ अनुलेपल कहल गेल अदि ।[168] एही स्थलपर नायककेँ स्नानोपरांत चतु:समसँ **तिलक** करबाक उल्लेख भेल अछि ।[169] विद्यावन्तवर्णनेमे विधावन्तकेँ '**चतु:समे अङ्गराग कएले**'[170] कहल गेल अछि । एहि सभसँ प्रतीत होइत होइछ जे चतु:सम नामक अंगराग अत्यन्त प्रचलित छल । संख्यापरिमामग्रन्थक आधारपर **गोविन्दझा** चतु:समेकेँ परिभाषित करैत कहने छथि जे एकर प्रत्येक दस भागमे दू भाग **कस्तूरी**, चारि भाग **चन्दन**, तीन भाग **कुंकुम** ओ एक भाग **कर्पूरक** चूर्ण रहैत छल । एकर उपयोग आजुक स्नोपाउडर जकाँ देहहाथकेँ रूख ओ सुगन्धित करबाक हेतु होइत छल ।[171] चतु:समे जकाँ **पञ्चसम** नामक एकगोट अंगरागक उल्लेख सेहो **वर्णरत्नाकरमे** भेटैत अछि । संख्यापरिमापक आधारपर **गोविन्द झा** एकरा **चन्दन, अगर, कस्तूरी, कर्पूर** ओ **कुंकुमक** मिश्रण कहलनि अछि ।[172] एकर वर्णन अभिषेक वर्णनामे **मङ्गलद्रव्यक** रूपमे भेल अछि । अङ्गरागक महता सखी वर्णनाक **अङ्गरागवती** शब्दसँ सेहो द्योतित होइछ ।[173] अंगरागक कारणेँ शरीरक सुवास दिशा विदिशाकेँ सुगन्धितसँ भरि दैत छल जकर उल्लेख राज्यवर्णनामे एहि शब्देँ भेल अछि– '**अंगराग ते परिमले दिश विदिश धुपङ्ले आह**' ।[174] कर्पूरक अंगराग अत्यन्त प्रचलित छल । राज्यवर्णनामे कहल गेल अछि– '**कर्प्पूरक अङ्गराग तेँ संयुक्त मउअ**' ।[175]

अंगरागक हेतु जाहि सुगन्धिद्रव्यक उपयोग होइत छल ताहिमे **कस्तूरी, कर्प्पूर, कुंकुम, अगर, चन्दन, यावाद, मायाशिर** ओ **पानीरकेँ** परिगणित कयल गेल अछि ।[176] एहिमे अन्तिम तीनक अर्थ स्पष्ट नहि अछि । शेष पाँच चतु:सम ओ पञ्चसम बनयबामे उपयोगी छल । **वर्णरत्नाकरक** वणिकपुत्रवर्णनामे **कर्पूर, चन्दन** ओ **अगरक** अनेक जातिक उल्लेख भेल अछि । कर्पूरक नौगोट प्रभेद एहिमे उल्लिखित अछि– **काञ्च, पाकल, राजराशि, मिसेन, चन्द्रोदय, उदयभास्कर, हासरोस, चिनी** आ **कउत्र त्रिकनी** ।[177] एहिना चन्दनक पाँच गोट प्रभेद क्रमश: **श्रीखण्ड, मलय, सम्मराली, सुरतीवेण्ठा** ओ **पचाकरहीक** उल्लेख तथा नगरक पाँच जाति क्रमश: **कृष्णागुरु, कालाशय, काकतण्ड, खेलाङ्ग** ओ **खदिरकक** उल्लेख अछि । अभिषेकवर्णनामे कर्पूरक एकगोट प्रभेद **कदलीकर्पूरक** उल्लेख भेटैत अछि ।[178] कस्तूरीक हेतु **मृगनाभि** शब्दक सेहो प्रयोग अछि ।[179] वणिकपुत्रवर्णनामे मायाशिरक हेतु **भाषाशिर** शब्द भेटैछ ।[180]

संन्यासीक अङ्गरागमे विभूतिक उल्लेख ऋष्याश्रम वर्णनामे देखि पड़ैत अछि । उबटन शब्दक प्रयोगसँ द्योतित होइछ जे स्नानपूर्व **उबटन** लगयबाक प्रथा छल ।[181] पुनर्भोजनवर्णनामे भोजनपूर्व नायकक पैर पखारबाक हेतु जलकेँ **कर्पूरसँ** सुवासित होयबाक उल्लेख अछि ।[182]

अंगरागमे विलेपन सामग्रीक अतिरिक्तो अनेक एहन शब्द सभक उल्लेख **वर्णरत्नाकर**मे भेल अछि जाहिसँ प्रसाधनविन्यासक वैविध्यक परिचय होइत अछि । यथा–

अलकपत्रावली– ई शब्द राज्यवर्णनामे भेटैत अछि । एकरा **मुखलिखन** कहल गेल अछि ।[183] परवर्ती साहित्यमे एहिपर **कस्तूरी** आदि **सुगन्धिद्रव्य** द्वारा चित्र बनयबाक हेतु एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

तिलकपत्रालंकार– इहो अलकपत्रावलीये सदृश सुगन्धिद्रव्य द्वारा कपोलादिपर चित्र बनयबाक प्रक्रिया थिक । कुट्टनी वर्णनामे एहि हेतु **रेखटीय** शब्द देखि पड़ैछ ।[184]

तिलक– चन्द्रमावर्णनामे चन्द्रमाकेँ **पश्चिमांचलक तिलक अइसन** कहल गेल अछि ।[185] वस्तुतः ई नायक वा नायिका द्वारा गोलाकार **ठोपक** हेतु व्यवहृत अछि ।

टीका– अभिषेकवर्णनामे ई शब्द नायकक माथमे लगयबाक दण्डाकार **ठोपक** हेतु व्यवहृत अछि आ सम्प्रतियो एही रूप आ अर्थमे प्रचलित अछि ।[186]

सिन्दूर– सिन्दूर शब्दक अनेकशः प्रयोग **वर्णरत्नाकर**मे भेल अछि । सखीवर्णनामे नायिकाक सखीक दाँतक सौन्दर्य वर्णनामे कहल गेल अछि– **'सीन्दूर मोन्ति, लोटाएल अइसन दान्त'** मुक्ताक हेतु **मोन्ति** शब्द प्रयोग एहि ठाम देखि पड़ैछ । सखीक **सीमन्तकेँ सिन्दूर दण्डिकालंकृत** कहल गेल अछि ।[187] अवश्ये माथक बीचोबीच दण्डक आकृतिमे सोझ सोझ सीमन्त रखबाक तथा ओहिपर **सिन्दूर** करबाक प्रथा होयत । सीमन्तक विशेषणक रूपमे **सफुर** (स्फुट–सफुड–सफुर= फुटकाएल) शब्दक सेहो प्रयोग भेल अछि ।[188] वेश्यावर्णनामे वेश्याकेँ **निर्म्मुक्तस्वामि सिन्दूर**[189] कहल गेल अछि अर्थात् ई लोकनि स्वामीक द्वारा प्रदत्त सिन्दूरसँ स्वतंत्र भऽ गेल रहैत छथि । एहिसँ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे स्वकीया सैहटा सिन्दूर करैत छलीह । से नहि, वेश्योलोकनि स्वामी नहिओ रहैत सिन्दूर धारण करैत छलीह । विवाह वर्णनामे वर्णरत्नाकरकार सिन्दुरदानक पद्धति सविशेष उल्लेख कयलनि अछि जाहिमे **सनशंखसोन** लऽकऽ सिन्दुरदान करबाक मैथिल परम्पराक वर्णन भेटैत अछि ।[190]

अञ्जन– नयन प्रसाधनक रूपमे व्यवहृत एहि शृंगारसामग्रीक उल्लेख **वर्णरत्नाकर**मे दुइ स्थानमे दुइ भिन्न अर्थमे भेल अछि । कुट्टनीवर्णनामे ई शृंगारसामग्रीक रूपमे उल्लिखित अछि ।[191] आ वैद्यवर्णनामे भेषजक रूपमे ।[192] एहिसँ ई प्रतीत होइछ जे अञ्जन शब्द वर्णरत्नाकरक काल धरि नयन प्रसाधनसामग्री काजरक पर्यायेक रूपमे चलैत छल आ रसायनक रूपमे सेहो ।

काजर– **वर्णरत्नाकर**मे एहि नयन प्रसाधनक हेतु दुइ गोट शब्द भेटैछ– काजर ओ कज्जल । काजरक प्रयोग सर्वत्र उपमानक रूपमे भेल अछि यथा– **काजरक कल्लोल अइसन भजुह** ।[193] **काजरक भीति तेलेँ सीचलि अइसनि रात्रि** ।[194] **काजरक पथार अइसन** इत्यादि ।[195]

केशविन्यास– केश विन्यासक अत्यन्त सुललित वर्णन **वर्णरत्नाकर**क शब्दावली ओ विवरणमे भेटैत अछि । सखीवर्णनामे नायिकाक केशकेँ सुरभि, स्निग्ध, प्रचुर, घन, कुञ्चित, सुकुमार, सुष्म, श्याम, सुसंयत ओ सकुसुम विशेषणसँ युक्त कहल गेल अछि ।[196] अवश्ये केशविन्यासमे ओकरा सुरभित करब, सुकोमल राखब, नीक जकाँ सीटि कऽ राखब पुष्पसँ सजयबाक प्रचलनक द्योतन होइछ । प्रचुर, सघन, श्याम सुकुमार ओ सूक्ष्मकेँ नीक ओ सौन्दर्य विधायक बूझल जाइत छल । वर्णरत्नाकरकार **'केशक शोभा देखि चमरी पलाएन कऽल**[197] पदक प्रयोग द्वारा नायिकाक केशविन्यासकेँ अलंकारपूर्ण अभिव्यक्ति देलनि अछि । अन्धकारवर्णनामे अन्धकारक तुलना केशक संग कयल गेल अछि ।[198] पात्रनृत्यवर्णनामे नर्तकीकेँ प्रचुरकेशसँ युक्त कहल गेल अछि ।[199] राज्यवर्णनामे केश विरचनाक छओ गोट गुणक उल्लेख अछि– **गलित, वलित, मनोहर, सुकुसुम, विचित्र** आ **छायामुह** ।[200] गलित अर्थात् **दोलायमान**, वलित अर्थात **गोलकय** बान्हल, विचित्र अर्थात् **विभिन्न आकार** रचना, मनोहर अर्थात् मनकेँ मोहित कऽ लेबयवला, सुकुसुम अर्थात् **पुष्पसँ** सजाओल एवं छायामुह अर्थात् **पसरल केशराशिकेँ** उत्तम मानल जाइत छलैक । वेश्यावर्णनमे वेश्याकेँ केशक सम्मार्जनमे लागल कहल गेल अछि ।[201] केशकेँ **झकरबाक** तथा साफ करबाक हेतु **सम्मार्जन** शब्द आयल अछि ।

चतुःषष्टिकला वर्णनमे **केशबन्ध** ओ **शेखरयोजन** नामक दुइ गोट कला केशविन्याससँ सम्बद्ध उल्लिखित अछि ।[202] केशबन्धक तात्पर्य्य अछि केशकेँ बन्हबाक अर्थात् गुहबाक विविध विधि तथा शेखरयोजनसँ तात्पर्य्य अछि **जूड़ा, चोटी, खोँपा** इत्यादि बनयबाक कला । खोँपाक हेतु वर्णरत्नाकरमे **थोम्पा**[203] शब्द आयल अछि । फूलयुक्त थोम्पाकेँ करिआ पाथरक शिवलिंगक तुलना करैत कहल गेल अछि– **गथले फूले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसनथोम्पा** ।[204] केशविन्यासमे केशकेँ फूलसँ सजयबाक उल्लेख **वर्णरत्नाकर**क अनेक शब्दावलीसँ ध्वनित होइछ यथा– **सकुसुमकेशपाश**[205], **पुष्पमोदित केशपाश**[206] इत्यादि ।

मुखप्रसाधन– मुखप्रसाधनमे पानक व्यवहार मिथिलामे सुदूर प्राचीनेकालसँ रहल अछि । लोकोक्ति प्रचलित अछि जे **आम, पान, माछ** आ मखान स्वर्गहुमे दुर्लभ छैक । ई समस्त वस्तुक प्रमुख उत्पादक ओ प्रसिद्ध प्रदेश मिथिला रहल अछि । भोजनोत्तर मुखक स्वादकेँ बदलबाक हेतु पानक प्रसाधन अत्यन्त प्रचलित अछि । पान ग्रहण करबाक ई प्रक्रिया **मुखशुद्धि** करब कहल जाइछ । **वर्णरत्नाकर**मे अनेकठाम मुखशुद्धिक उल्लेख भेल अछि यथा– **नायकेँ पान लए मुखशुद्धि कएल । नायकेँ पानलेल मुखशुद्धि वथमल** । इत्यादि । पानकेँ[207] स्वर्गदुर्लभताक निर्वचन सेहो **वर्णरत्नाकर**मे एहि शब्देँ भेल अछि– **देवराजभोग्य देले पाविअ स्वर्ग दुर्ल्लभ अइसन पान** ।[208]

पानक परिष्कृत ओ विन्यस्त वर्णन **वर्णरत्नाकर**मे एहि स्वरूपक अछि–

से कइसन ताम्बूल । रूपाक सीप दुबे चुम्बाओल अइसन आकार । आषाढ़क

क्षणीक काटल वीर । पतरल झोल । मुक्ताक चून, सिन्धुक कङ्कोला, श्रीहट्टक एला, सिंहलद्वीपक जातीफल, काञ्चीक मुखमेन, मलय, पाञ्चौरक भीमसेन कर्पूर, लषनावतीक सरसा पूग, तिरहुतिक साहर, एकोँ संयोगे लगाओल पञ्चफल संयुक्त कटु तिक्त कषाय क्षार उष्ण मधु मुखशोभक सुरस स्वादु सरस सन्दीपक कामाग्निक सम्मानक पवित्र तेरह गुण सम्पूर्ण देवराजभोग्य देले पाविअ स्वर्गदुर्लभ अइसन पान । सुवर्णक सराइ एकेँ कएे आगाँ धएल । नायकेँ पान लए मुख शुद्धि उद्गमल ।[209]

अर्थात् नायक जाहि पानक उपयोग करैत छलाह, तकर आकार एहन होइत छलैक जेना चानीक टूटा सीप परस्पर मुँहमे मुँह सटाकऽ जोड़ल हो । एकर वर्ण आषाढ़ मासमे तत्क्षण काटल केराक नवोद्गत पात सन होइत छलैक । एहि पानमे जे सामग्री सभ देल जाइत छल से निम्नलिखित छल–

चून– ई पानमे देबाक खाद्य थिक जे सीपकेँ पकाकऽ प्राप्त कयल जाइछ । **वर्णरत्नाकर**मे मुक्ताक चूनक प्रयोगक उल्लेख अछि ।

कङ्कोला– ई फलविशेष थिक । अभिषेकवर्णनामे एकरा हेतु **कक्कोल** शब्द देखि पड़ैछ । एतय एकरा मङ्गलद्रव्यक रूपमे परिगणित कयल गेलैक अछि । वणिकपुत्र वर्णनामे एकरा वणिकद्रव्यमे परिगणित कयल गेल अछि । संभवतः ई सिन्धु प्रदेशमे उपजैत छल अथवा सिन्धुप्रदेशक **कङ्कोला पानक** हेतु प्रसिद्ध छल ।

एला– ई इलायचीक पर्याय अछि । **वर्णरत्नाकर**मे नायकक पानमे **श्रीहट्टक एला** देबाक विधान कयल गेल अछि । एहि इलायचीक प्रसिद्ध उत्पादन केन्द्र सिलहट छल, जे आब बंगलादेशमे अछि ।

जातीफल– एकरा जायफल वा **जाफर** कहल जाइत छैक । सिंहलद्वीपक जातीफल विशिष्ट प्रकृतिक होइत होयत ।

मुखमेन– ई कोन वस्तु छल से अनुसन्धेय अछि । एकर उत्पादनकेन्द्र काञ्ची उल्लिखित अछि ।

कर्पूर– एकर उत्पादन केन्द्र मयल पाञ्चौर अर्थात् पाञ्चाल प्रदेश (पंजाब) कहल गेल अछि । ई सुगन्धिद्रव्य थिक ।

पूग– ई **सुपारी**क हेतु व्यवहृत शब्द थिक । संभवतः लषनावती नगरक **सरसा** नामक सुपारी बेस प्रसिद्ध छल । एकरा हेतु **गुआ** शब्दक सेहो व्यवहार भेल अछि ।

साहर– एकरा पकुहा सेहो कहल जाइत छैक । आमक आंठीक गुद्दावला भागकेँ रौदमे सुखाकऽ तैयार कयलापर कषाय स्वादसँ युक्त पदार्थ भेटैत छैक जकरा पानमे दऽकऽ खयबाक विधान रहल अछि । एकर प्रचार तिरहुतिए क्षेत्रमे रहल अछि आ यैह क्षेत्र एकर विशिष्ट उत्पादन केन्द्रो छल तेँ **'तिरहुतिक साहर'** कहल गेल अछि ।

लवङ्ग– यद्यपि **वर्णरत्नाकर**कार एकर परिगणना पानक मशाला मध्य नहि करओने छथि, तथापि ई पानक संग खाद्य मशाला थिक । अन्यत्र, मङ्गल द्रव्यक रूपमे एकर परिगणना भेल अछि ।

वर्णरत्नाकरकार पानक जाहि तेरह गोट गुण ओ स्वादक वर्णन कयलनि अछि से थिक– **कटु, तिक्त, कषय, क्षार, उष्ण, मधु, मुखशोभक, सुरस, स्वादु, सरस, सन्दीपक, कामाग्निक सम्मानक** ओ **पवित्र** ।' एहि तरहेँ मुखप्रसाधनमे पानक प्रयोगक अत्यन्त विशद् वर्णन **वर्णरत्नाकर**मे देखि पड़ैछ । पानक हेतु अनेक स्थलपर एकर पर्याय **ताम्बूल**क सेहो प्रयोग भेल अछि ।[210] ताम्बूलक आदान प्रदानक हेतु विनियोग शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[211] पानक पात्रक हेतु **पनवास**[212] ओ **सराञि** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[213]

एकर अतिरिक्त **वर्णरत्नाकर**मे जाहि प्रसाधन सामग्रीक उल्लेख देखि पड़ैछ से थिक **अएना** । एकरा हेतु क्रमशः **आदर्श** ओ **आरसि** शब्द आयल अछि ।[214] दाँत खोधबाक सामग्री **खलिका** (खड़िका) सेहो प्रसाधनोपकरणक रूपे उल्लिखित कहल जा सकैछ ।[215]

एहि तरहेँ प्राचीन मैथिली साहित्यमे वेशभूषाप्रसाधनविन्याससँ सम्बद्ध प्रचुर शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि । खासकऽ **वर्णरत्नाकर**केँ एहि शब्दावलीक भंडार कहल जा सकैछ जाहिमे वस्त्राभूषण ओ प्रसाधनक अनेक विशिष्ट तत्व सभकेँ समेटि लेल गेल अछि । तथापि बहुतो शब्दक अर्थानुसन्धान एखनो अपेक्षित अछि । वर्णरत्नाकरक शब्दक महत्ता खास कऽ एकर परवर्ती प्रयोगमे अनुगमनक प्रवृतिसँ बढ़ि जाइछ ।

सन्दर्भ सूची :

1. बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त- डा. जयधारी सिंह, मधुबनी, दरभंगा, मार्च 1969, पृ. 68
2. दोहाकोश (सिद्ध सरहपाद) स. महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना 1957, पृ. 20
3. बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धान्त, पृ. 116
4. तत्रैव, पृ. 137
5. द्रष्टव्य, चर्यापद- सं. अतीन्द्र मजुमदार, नयाप्रकाश, 206, कर्णवालिस स्ट्रीट, कलिकाता-6, बंगाब्द 1367।
6. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह- डा. शशिनाथ झा, का.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1986, धूर्तसमागम, प्रथम अंक, पृ. 43
7. तत्रैव, द्वितीय अंक, पृ. 63
8. वर्णरत्नाकर (मैथिली अकादमी), पृ. 30
9. तत्रैव, पृ. 37
10. तत्रैव, पृ. 29
11. तत्रैव, पृ. 40
12. तत्रैव, पृ. 61
13. तत्रैव, पृ. 82
14. तत्रैव, पृ. 25
15. तत्रैव, पृ. 28
16. तत्रैव, पृ. 30
17. तत्रैव, पृ. 36
18. तत्रैव, पृ. 39-40
19. तत्रैव, पृ. 81-82
20. तत्रैव, पृ. 38
21. तत्रैव, पृ. 107
22. तत्रैव, पृ. 24
23. तत्रैव, पृ. 64
24. तत्रैव, पृ. 81
25. तत्रैव, पृ. 61
26. तत्रैव, पृ. 28
27. तत्रैव, पृ. 64
28. तत्रैव, पृ. 124-125
29. तत्रैव, पृ. 29
30. तत्रैव, पृ. 102
31. तत्रैव, पृ. 30
32. तत्रैव, पृ. 102
33. वर्ण (झा एवं चटर्जी), पृ. 25
34. तत्रैव, पृ. 63
35. तत्रैव, पृ. 39
36. तत्रैव, पृ. 32
37. तत्रैव, पृ. 88
38. तत्रैव, पृ. 27
39. तत्रैव, पृ. 32
40. तत्रैव, पृ. 32
41. तत्रैव, पृ. 32
42. तत्रैव, पृ. 50
43. वर्ण० (अकादमी), पृ. 133
44. वर्ण० (अकादमी), पृ. 118
45. वर्ण० (अकादमी), पृ. 118
46. तत्रैव, पृ. 50
47. तत्रैव, पृ. 102
48. तत्रैव, पृ. 102
49. तत्रैव, पृ. 87
50. तत्रैव, पृ. 68
51. तत्रैव, पृ. 32
52. तत्रैव, पृ. 30
53. तत्रैव, पृ. 29
54. तत्रैव, पृ. 40,52,81
55. तत्रैव, पृ. 64
56. तत्रैव, पृ. 81
57. तत्रैव, पृ. 81
58. तत्रैव, पृ. 69
59. वर्ण० (अकादमी), पृ. 108
60. तत्रैव, पृ. 115
61. वर्ण० (अकादमी), पृ. 108
62. तत्रैव, पृ. 108
63. गुप्ता, पृ. 149
64. तत्रैव, पृ. 150
65. गुप्ता, पृ. 150
66. तत्रैव, पृ. 150
67. तत्रैव, पृ. 150
68. तत्रैव, पृ. 150
69. तत्रैव, पृ. 149
70. तत्रैव, पृ. 149
71. तत्रैव, पृ. 149
72. तत्रैव, पृ. 150
73. तत्रैव, पृ. 150
74. तत्रैव, पृ. 149
75. गुप्ता, पृ. 149
76. तत्रैव, पृ. 150
77. तत्रैव, पृ. 150
78. तत्रैव, पृ. 150
79. तत्रैव, पृ. 150
80. तत्रैव, पृ. 149
81. तत्रैव, पृ. 149
82. तत्रैव, पृ. 150
83. तत्रैव, पृ. 150
84. तत्रैव, पृ. 150
85. तत्रैव, पृ. 150
86. तत्रैव, पृ. 149
87. तत्रैव, पृ. 149
88. तत्रैव, पृ. 151
89. वर्ण० (अकादमी), पृ. 109
90. गुप्ता, पृ. 150
91. तत्रैव, पृ. 151
92. वर्ण० (अकादमी), पृ. 150
93. गुप्ता, पृ. 150
94. तत्रैव, पृ. 151
95. तत्रैव, पृ. 150
96. तत्रैव, पृ. 151
97. तत्रैव, पृ. 150
98. तत्रैव, पृ. 151
99. तत्रैव, पृ. 151
100. तत्रैव, पृ. 151
101. तत्रैव, पृ. 151
102. तत्रैव, पृ. 151
103. तत्रैव, पृ. 151
104. तत्रैव, पृ. 151
105. तत्रैव, पृ. 151
106. तत्रैव, पृ. 151
107. तत्रैव, पृ. 151
108. तत्रैव, पृ. 151
109. तत्रैव, पृ. 151
110. वर्ण० (अकादमी), पृ. 109 गुप्ता, पृ. 151
111. वर्ण० (अकादमी), पृ. 109
112. गुप्ता, पृ. 151
113. तत्रैव, पृ. 152
114. तत्रैव, पृ. 151
115. तत्रैव, पृ. 152
116. तत्रैव, पृ. 151
117. तत्रैव, पृ. 152
118. तत्रैव, पृ. 152

119. वर्ण० (अकादमी), पृ. 22
120. तत्रैव, पृ. 64
121. तत्रैव, पृ. 22
122. तत्रैव, पृ. 22
123. तत्रैव, पृ. 22-68
124. तत्रैव, पृ. 64
125. तत्रैव, पृ. 35
126. तत्रैव, पृ. 22-68
127. तत्रैव, पृ. 25
128. तत्रैव, पृ. 64
129. तत्रैव, पृ. 22-64
130. तत्रैव, पृ. 64
131. तत्रैव, पृ. 62-64
132. तत्रैव, पृ. 2
133. तत्रैव, पृ. 72
134. तत्रैव, पृ. 64
135. रामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, सुन्दरकाण्ड
136. तत्रैव, पृ. 22
137. तत्रैव, पृ. 22
138. तत्रैव, पृ. 64
139. तत्रैव, पृ. 68
140. तत्रैव, पृ. 68
141. तत्रैव, पृ. 68
142. तत्रैव, पृ. 22
143. तत्रैव, पृ. 74
144. वर्णरत्नाकर-रायल एसियाटिक सोसाइटी, पृ. 21-41
145. वर्ण० (अकादमी), पृ. 38
146. तत्रैव, पृ. 44
147. तत्रैव, पृ. 107
148. तत्रैव, पृ. 27
149. तत्रैव, पृ. 46
150. तत्रैव, पृ. 57
151. तत्रैव, पृ. 77
152. तत्रैव, पृ. 71
153. तत्रैव, पृ. 63
154. तत्रैव, पृ. 32
155. तत्रैव, पृ. 32
156. तत्रैव, पृ. 55
157. तत्रैव, पृ. 23
158. तत्रैव, पृ. 23
159. तत्रैव, पृ. 40
160. तत्रैव, पृ. 57
161. तत्रैव, पृ. 103
162. तत्रैव, पृ. 45
163. तत्रैव, पृ. 45
164. तत्रैव, पृ. 107
165. तत्रैव, पृ. 107
166. तत्रैव, पृ. 23
167. तत्रैव, पृ. 27
168. तत्रैव, पृ. 29
169. तत्रैव, पृ. 30
170. तत्रैव, पृ. 64
171. तत्रैव,
172. तत्रैव, पृ. 109
173. तत्रैव, पृ. 24
174. तत्रैव, पृ. 82
175. तत्रैव, पृ. 82
176. तत्रैव, पृ. 29
177. तत्रैव, पृ. 84
178. तत्रैव, पृ. 40
179. तत्रैव, पृ. 40
180. तत्रैव, पृ. 84

181. तत्रैव, पृ. 30
182. तत्रैव, पृ. 87
183. तत्रैव, पृ. 81
184. तत्रैव, पृ. 46
185. तत्रैव, पृ. 35
186. तत्रैव, पृ. 40
187. तत्रैव, पृ. 23
188. तत्रैव, पृ. 25
189. तत्रैव, पृ. 24-68
190. तत्रैव, पृ. 45
191. तत्रैव, पृ. 46
192. तत्रैव, पृ. 87
193. तत्रैव, पृ. 23
194. तत्रैव, पृ. 24
195. तत्रैव, पृ. 36
196. तत्रैव, पृ. 24
197. तत्रैव, पृ. 24
198. तत्रैव, पृ. 35
199. तत्रैव, पृ. 68
200. तत्रैव, पृ. 81
201. तत्रैव, पृ. 45
202. तत्रैव, पृ. 38
203. तत्रैव, पृ. 23
204. तत्रैव, पृ. 23
205. तत्रैव, पृ. 24
206. तत्रैव, पृ. 25
207. तत्रैव, पृ. 31
208. तत्रैव, पृ. 32
209. वर्ण०चटर्जी, पृ. 13
210. वर्ण० (अकादमी), पृ. 31-46
211. तत्रैव, पृ. 49
212. तत्रैव, पृ. 42-46
213. तत्रैव, पृ. 83-88
214. तत्रैव, पृ. 30-83
215. तत्रैव, पृ. 31-88

●

पंचम अध्याय

मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मध्यकालीन मैथिली साहित्यसँ तात्पर्य अछि विद्यापति युगसँ आरम्भ कऽ हुनक परम्परामे लिखित साहित्य । चन्दाझाक आधुनिक युग-प्रवर्त्तनसँ पूर्वक साहित्यकेँ एहि साहित्य मध्य परिगणित कयल जाइत रहल अछि । एहि साहित्यक प्रमुख धारा भक्ति ओ शृंगारपर आधारित काव्य रचना रहल अछि । एहि साहित्यक रचनाकार मध्य ज्योतिर्मान नक्षत्र जकाँ महाकवि **विद्यापति** विराजमान छथि । हिनक पदावली साहित्य मध्यकालीन मैथिली साहित्यक प्रमुख स्रोत थिक । **विद्यापतिक** अनुसरणमे करीब पाँच सए वर्ष धरि भक्ति ओ शृंगारपरक पदावलीक रचना होइत रहल । गेयधर्मिता, भनिताक प्रयोग आदि एहि पदावलीक मुख्य विशेषता थिक । नायिका सौन्दर्य ओ शृंगारक बहुविध आयामक-गायन एहि पदावलीक मुख्य विषय रहल । शिव, शक्ति ओ अन्य देवी-देवताक प्रति आत्मनिवेदनपरक गीत सेहो एहि कालमे रचल गेल । स्वभावत: एहि समस्त साहित्यमे नायिका सौन्दर्यक उत्कर्षकेँ वर्णित करबाक हेतु नारी वेशभूषा प्रसाधनक प्रचुर उल्लेख भेल अछि । वर्णन क्रममे पुरुष वेशक सेहो उल्लेख एहि साहित्य मध्य भेल अछि ।

एही कालमे मिथिलामे अनेक कीर्तनिञा नाटक तथा नेपालमे सेहो मैथिली नाटकक प्रणयन विभिन्न नाटककारलोकनि कयलनि । एहि नाटक सभमे खासकऽ मैथिली गीतक प्रधानता देखि पड़ैछ । ई गीत सभ सामान्यत: शृंगारेक रोचकतासँ युक्त तथा विद्यापति पदावलीक अनुसरणपरके देखि पड़ैछ । मध्यकालीन मैथिली नाटकक प्रवेश गीत सभमे अभिनेताक प्रवेशक अवसरपर ओकर वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेख कयल जाइत रहल ।

मध्यकालीन मैथिली साहित्यधारामे गीतिविधाक परिपाटीसँ पृथक केवल एक गोट रचनाकारक कृति दृष्टिगोचर होइछ । ई थिकाह महाकवि **मनबोध** । **मनबोधक कृष्णजन्म प्रबन्धमे** वर्णनक अनुरोधेँ वेशभूषा प्रसाधनक कतिपय पारिभाषिक शब्दवलीक प्रयोग भेल अछि । **विद्यापतिक** अवहट्ठकृति **कीर्त्तिलतामे** जे वीररसक काव्यग्रन्थ थिक, अनेक स्थलपर वेशभूषाप्रसाधन सामग्री सभक उल्लेख भेल अछि ।

मैथिली शैव साहित्यमे अर्द्धनारीश्वर वर्णनमे कविलोकनि शिवपार्वतीक वेशभूषा प्रसाधनक सविशेष वर्णन कयलनि अछि ।

षोडस शृंगारक उल्लेख यद्यपि **विद्यापतिक** रचनामे सेहो भेटैत अछि तथापि नेपालीय मैथिली नाटक ओ पदावली साहित्यमे एकर सविशेष वर्णन भेटैत अछि जे वेशभूषाप्रसाधनक अनुगायनमे प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत दृष्टिगोचर होइछ ।

एहि तरहेँ मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णनक दृष्टिऍ यावन्तो आयाम द्रष्टव्य थिक ताहिमे प्रमुख अछि–

(क) षोडश शृंगार वर्णन

(ख) नाटकक प्रवेशक गीत

(ग) अर्द्धनारीश्वर वर्णन

(घ) वेश भूषा प्रसाधन सामग्रीक छिटफुट उल्लेख ।

षोडश शृंगार वर्णन– प्रसाधनमे **षोडस शृंगारक** महत्त्व अत्यधिक रहल अछि । '**सोलह शृंगार बत्तीसो अभरन**' समेकित साज सज्जाक हेतु लोकजगतमे परिव्याप्त रहल अछि । एकर अभावमे शृंगारक पूर्णता नहि मानल जाइछ । मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे महाकवि **विद्यापति** एकर संकेत एक गोट पदमे एहि रूपेँ कयने छथि– लय **अभरन** कय **षोडस** सजनी गे **पहिरि** उत्तम रंग **चीर** ।[1]

एहिसँ ई स्पष्ट होइछ जे **षोडस शृंगार** वेशभूषाप्रसाधनक सम्मिलित रूपक हेतु प्रयुक्त छल ।

नेपालीय मैथिली साहित्यमे नायिकाक **षोडस शृंगारक** विशिष्ट वर्णन भेल अछि । एहि **षोडस शृंगार** मध्य शरीरकेँ निर्मल करब, वस्त्र धारण करब, सिर पर **सिन्दूर** लगायब, आँखिमे **काजर** लगायब, **केश** समारब, फूलक **माला** पहिरब, नाकमे **बेसरि**, छातीपर हार, पैरमे नूपुर, डाँरमे **किंकिनि**, ग्रीवामे **मणिमय हार**, कानमे **कुण्डल**, हाथमे **कंगना** ओ मुखमे **पान** धारण करब तथा **चन्दनक** अनुलेपन परिगणित भेल अछि जे **मुदित** कुवलयाश्व नाटकक एहि गीतमे स्पष्ट अछि–

> निरमल तनु कए **वसन** विराजि । सिर **सिन्दुर** दए लोचन **आँजि** ।।
> सोन सुगंध दुहु मीलल आज । जाहि पिहि दाहिनि ताहि पए छाज ।।
> चिकुर समारि सुरभि फुलमाल । **बेसरि** पहिरि लम्बित उर हार ।।
> नूपुर किंकिनि कर कत लोल । मणि गिम **भूषण कुंडल** डोल ।।
> कर **कंकन** मुख रंजन पान । **चन्दन** लेपि तोहे भाव सुजान ।।[2]

एहुसँ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे **षोडश शृंगार** वेशभूषा प्रसाधनक सम्मिलित स्वरूप रहल अछि ।

जगतप्रकाश मल्लक एही भावक अन्य गीतमे सेहो षोडश शृंगारक वर्णन भेटैत अछि । एहि वर्णनमे दरपनमात्रक आधिक्य देखि पड़ैछ–

> **दरपन** लय धनि देखलहु मूख । अवसे पायि तोहें सुरतक सूख
> एहे लेल नितम्बिनि रुचिर **चीर** । दूर करत हरि मनसिज पीर ।
> **सिन्दुर** लए पुनि **तिलके** भिराव । आवत तुअ लग कर रति भाव ।।
> नयन चकोर पर **अंजन** देह । ताहि सञो दिने दिने करह सनेह ।।
> घसलहु **चन्दन केसरि घनसारे** । लेपन करू निके नासत हारे ।।
> **मोतिक बेसिर** सखि पहिरह आवे । तुव पुने माधव त्वरितहि आवे ।
> बकुल दमन भारति आदि दूर । ई गरे राखह जाय दुख दूर ।।
> उतमे वा घर **कबरी** आजे । दैवे करथु हरि साजनि समाजे ।।
> चरण कमल पर राख **नूपुर** । निकटे आवत जदुकूलक मूल ।।
> अनेक **रतन** अछि **कुण्डल** एहे ।
> रुचिर **मोतिहार** पहिरह साए । होयतहु वडे नीके तोहरहु काए ।।
> साजनि तुअ कटि जानल मृगराजे तथुहु **घुघुरि** देए कर सब साजे
> आनलहु हम एहि **पाकल पाने** से खाए दुर कर मूख मलाने ।
> खन एन देह तोहें किसलय पानि **कंकन** राखब वहु कोमल जानि ।
> न करह साजनि आवे मति संका । अवसहि आएल किए मुख पंका ।।
> जगत प्रकाश भन **षोडस सिंगार** । त्वरितहि कर हरि सुरत विहार ।।[3]

मुदितकुवलयाश्व नाटकमे पुरुषक शृंगारमे **दाढ़ी** बनायब, **स्नान, अलक तिलक, परिधान, कुण्डल, चन्दन, अँगुठी, पट्टी,** कटिमे **कटार,** हाथमे **करवाल, पट्टम्बर, शाल,** पैरमे **उपानह** ओ मुहमे **ताम्बूल** आदिक वर्णन भेल अछि जाहिमे कटिमे कटार रूपमे प्रस्तुत अछि–

> **छोड़** समारिअ कैए सनान । **अलिक तिलक** दए वर **परिधान** ।।
> विधि दाहिन अच्छ ताहि जना । पुहवी अवतरु दोसर मदना ।।
> कान **कुंडल** तनु चन्दन लाए । कर **अँगुठी शिरपाट** बनाए ।।
> कटि **कटार** अच्छ हाथ करवाल । पहिरि **पटम्बर शाल** विशाल ।।
> मुह **तम्बूल** विधा अभिराम । पएर उपानह सब गुणधाम ।।
> नृप जगजोतिमल ई रस भान । विहि सङ्घटाओल दुअओ समान ।।[4]

यद्यपि **विद्यापति** षोडस शृंगारक पृथकसँ वर्णन नहि कयल अछि मुदा अनेकस्थल पर हिनक पदावलीमे नायिकाक विविध शृंगार समेकित चित्र उपलब्ध होइत अछि यथा स्त्रीक रूप धारण करैत श्रीकृष्णक वर्णनमे **बेनी, सीमंत, सिन्दूर, आंजन, करनफूल, जावक, मंजीर, कंचुकी, साड़ी** आदिक उल्लेख भेल अछि–

> वर नागर साजय नागरि बेसा ।
> मुकुट उतारि **सीमंत** सँवारल **बेनी** विरचल केसा ।
> चंदन धोए **सिंदुर** भाल रंजल लोचन अंजन अंका ।
> कुंडल खोलि **करनफूल** पहिरल भरि तनु **केसर** पंका ।
> **बेसर** खचित **सतेसरि** पहिरल कनक **चूड़ि** कर कंजे ।
> चरन कमल पास **जावक** रंजल तापर **मंजिर** गंजे ।
> **कंचुकि** माझ कदम्ब कुसुम भरि आरम्भल कुच आभा ।
> **अरुणाम्बर** वर **साड़ी** पहिरल वस्त्र विलोकन सोभा ।।[5]

विद्यापतिक एकगोट पदमे नायिका द्वारा अपन नायकक प्रति समर्पण भावकेँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु हुनकहिमे समस्त वेशभूषाप्रसाधनक प्रतिबिम्ब देखबाक नायिकाक मनोभावक अभिव्यक्तिमे कतोक आभूषण ओ प्रसाधनक सुललित उल्लेख भेल अछि–

> हातक **दरपन** माथक **फूल** । नयन **अंजन** मुखक **ताम्बूल** ।।
> हदयक **मृगमद** गीमक **हार** । देहक सरबस गेहक सार ।।[6]

एहिना मान प्रसंगक एकगोट गीतमे नायिकाक विविध वस्त्राभूषण प्रसाधनक समेकित उल्लेख भेल अछि–

> नील **वसन** वर **कांचन चुरि** कर **मोतिक माल** उतारि ।
> करि-रद **चुरि** कर **मोति माल** वर पहिरलि अरुणिम **सारि** ।।
> असित चित्र उर ऊपर मेटल **मलयज** देह लगाए ।
> मृगमद **तिलक** धोए दुग **अंजन** कच लेल वसन छपाए ।
> एक तील छल चारु **चिबुक** पर निदित मधुप सम सामा ।
> तृन अग्रे करि **मलयज** रंजल ताहि छपाओल रामा ।।[7]

काञ्चन चुरिक प्रयोगसँ स्पष्ट अछि जे सोनक चूड़ीक उपयोग होइत छल । **एक तिल छल चारु चिबुक** परसँ सूचित होइछ जे गालपर तिल होयब सौन्दर्यपरक मानल जाइत छल ।

विद्यापतिक एकगोट गीतमे विरह-व्यथिता नायिकाक कामदेवक प्रति प्रार्थनाक

वर्णन अछि । एहि गीतमे नायिका कामदेवसँ प्रार्थना करैत छथि जे ओ शंकर नहि छथि जे कामदेव ओकरापर प्रहार कऽ विचलित करबाक चेष्टा कऽ रहल छथि । अपितु ओ युवती छथि तथा विविध शृंगारसँ युक्ता छथि । एहि क्रममे नारीक विविध वस्त्राभूषण प्रसाधन यथा **चन्दनलेप**, **नेतवस्त्र**, **चिकुरक बेनी**, **सिन्दूर**, **चन्दन**, **पुष्प**, **मृगमद**, **मुक्ताहार** आदिक उल्लेख भेल अछि–

विभूति भूषण नहि **चान्दनक** रेनू । बाघछाल नहि मोरा **नेतक** बसन् ।
नहि मोरा जटाआर **चिकुरक बेनी** । सुरसरि नहि मोरा **कुसुमक** सेनी ।
चान्दनक विन्दु मोरा नहि इन्दु गोटा । ललाट पावक नहि **सिन्दुरक** फोटा ।
नहि मोरा कालकूट **मृगमद** चारू । फनिपति नहि मोरा **मुकुता हारू** ।
भनह विद्यापति सुनु देव कामा । एक पए दुषण अछ ओहि नामक वामा ।[8]

एहि तरहेँ एहि पदमे अष्ट शृंगारक संकेत भेटैछ ।

शिव ओ गौरीक भावोल्लाससँ सम्बद्ध एकगोट गीतमे महादेव गौरीक मानापनोदनक हेतु दान उपायक अवलम्बन करैत हुनका विविध प्रकारक आभूषण ओ प्रसाधन देबाक प्रतिज्ञा करैत छथि । शिव कहैत छथि जे हे गौरी हम चान माङ्क्य **चूड़ा** बना देब, सुरसरिसँ **खोपा** समारबाक उद्योग कऽ देब, जपमालाक **बिजोठ**, बाघछालक **घोघट**, त्रिशूलक **गांठी** तथा फणिमय हार पहिराय देब । एहि तरहेँ लोक जीवनमे प्रचलित वस्त्राभूषणसँ गौरीकेँ युक्त करबाक क्रममे विविध वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन भेल अछि–

मन जनु झाँखिअ गौरी । सब विधि औरि सम्हारब तोरी ।
चान मङ्काय देब **चूड़ा** । सुरसरि नीर समारब **जूड़ा** ॥
बिजओठ देब जपमाला । **घोघट** देब बघम्बर छाला ॥
त्रिशूल मङ्काय देब गाथी । फणिमय हार गरा देब गाथी ॥
भनहि विद्यापति गावए । इहो अभरन गौरी मन भावए ॥[9]

एहिना **गोविन्ददासहुक** पदमे नायिकाक साजशृंगारक अत्यन्त रमणीय वर्णन देखि पड़ैछ । कृष्ण राधाक प्रसाधन कऽ रहल छथि आ हुनका सजयबाक हेतु विविध वस्त्राभूषणप्रसाधनक ओरिआन करैत चित्रित भेलाह अछि–

धनि मुख पंकज **कुंकुम माजए** अति विदगध वर कान ।
रचयित **सिन्दुर** गरगर अन्तर अझरै झरै नयान ।
देख सखि राधामाधव केलि ।
दुहु सुख सागर आनन्द भासल दुहु रसे निगमन भेलि ॥
वयन कठोर चौर कुच मंडल जसु पद विदगधि साज ॥

मृगमद चित अंकरू करू पल्लव मुगुधल मनसिज राज ॥
आनन्द नीर नयन भरि आएल **कंचुकि** कय निरमान ।
नीलवसन मणि तसु परि **किंकिनि** हेरइत हरल गेयान ॥
मंजुल **मंजिर** चरण पर **रंजइ मुकुर** धरए निज पास ।
निज तन हेरि हसित तोहि सोपल हेरल गोविन्द दास ॥[10]

एकटा अन्य पदमे सेहो कवि नायिका राधाक प्रसाधनविन्यासक अत्यन्त सूक्ष्म वर्णन कयलनि अछि–

आकुल कुटिल **अलकाकुल** समरी । **सीथि** बनाय बाँध पुन **कबरी** ॥
तहि सम रेहइ सिन्दुर विन्दु । कुंकुम माँजि साजि मुख इन्दु ॥
ए हरि रति रस अवश रसाल । विघटित वेश बनाह पुनि भाल ॥
काजर जोरह लोचन भमरी । श्रुति अव तंस किसलय चमरी ॥
पीन पयोधर थिर करू आपि । **मृगमद अंजन** नख पद छापि ॥
विगलित कम्बु वलयगण मोर । सीथ **पिन्हावह नुपुर** जोर ॥
भेटल **जावक** पद पुन लेख । गोविन्ददास देखहु परतेक ॥[11]

शिवदत्तक सीतास्वर खण्डकाव्यमे सीताक शोभाक वर्णनक क्रममे हुनक विविध आभूषण यथा **कंगना**, **टाड़**, **मोती**, **घुघुरू**, **नेपुर**, **किंकिन**, **माँगटीका**, **बेसरि**, **बाजूबन्द**, **मनिमाल**, **पाति** इत्यादिक वर्णन भेल अछि–

कर **कंगन** भुज **टाड़** विराजित **मोतिनि** मांग विराज ।
घन खे **घुघुरू नेपुर** घन बाजए कटि **किंकिनि** घन बाज ।
परम राजित **माँगटीका मृगमद** शोभे भाल ।
बेसरि बाजूबन्द विराजित सोभित गले **मणिमाल** ।
रचल **पाति** जड़कक **टीका** जानकि के छवि छाज ॥[12]

एहि तरहेँ नायिका ओ नायकक षोडस शृंगारक जेहन स्फुट वर्णन नेपालीय साहित्यमे देखि पड़ैछ, **विद्यापति** ओ हुनक परम्पराक काव्यमे तेहन नहि देखि पड़ैछ तथापि अनेक स्थलपर विविध भूषण प्रसाधनादिक निवेश एहि काव्यमे षोडस शृंगारेक वर्णन सादृश्य रखैत देखि पड़ैछ ।

प्रवेशक गीत– मध्यकालीन मैथिली नाट्यसाहित्यमे पात्रक प्रवेशक अवसर जाहि गीतक माध्यमसँ ओकर परिचय प्रस्तुत कयल जाइत छल ओहि गीतकेँ प्रवेशगीत कहल जाइत अछि । एहि गीतसभमे अभिनयार्थ प्रस्तुत पात्रक वेशभूषा प्रसाधनक वर्णन द्वारा ओकर

परिचय देल जाइत छल । तेँ प्रवेशक गीत सभमे पुरुष ओ नारी पात्रक वेशभूषाप्रसाधनक सविशेष उल्लेख देखि पड़ैछ यथा– महाकवि **विद्यापतिक गोरक्षविजय** नाटकमे गोरखनाथक प्रवेशगीतमे हुनक वेशभूषाक वर्णन एहि प्रकारेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि–

अएला हे रे गोरखनाथ । **राखा मुद्रा अभरण सिङ्गा** हाथ ।।[13]

अर्थात् सन्यासी लोकनि रक्षासूत्र, मुद्रिका ओ आभूषण धारण करैत छलाह ।

एही तरहेँ राजा मत्स्येन्द्रनाथक प्रवेश गीतमे हुनक सिरपर **मुकुट** धारण करबाक तथा हाथमे **मणिरत्नजटित वलया** धारण करबाक उल्लेख भेल अछि–

रतनक चकमकि बलए झंकार । पुरित नयन जनि मयन हकार ।
पाट सिंहासन **मुकुट सुवेश** । राए मछेन्द्र देल परवेश ।।[14]

एही नाटकमे सप्तदेवीलोकनि द्वारा राजा मछेन्द्रनाथक विलासलीलाक वर्णनक क्रममे **चँवर** डोलयबाक तथा चरणक प्रसाधन करबाक उल्लेख एहि पदमे भेटैत अछि–

चामर विजय चौदिस नारि । चरण **पसाहन** कर सए चारि ।।[15]

उमापतिक पारिजातहरण नाटकमे नारदक प्रवेश गीतमे हुनक श्वेत धोती, यज्ञोपवीत तथा तिलकक उल्लेख भेटैत अछि–

धोती धवल **तिलक उपवीत** । ब्रह्मतेज अति अधिक उदीत ।।[16]

एहि नाटकमे सत्यभामाक प्रवेशगीतमे हुनक **स्वामि सोहाग सोहाउनि वेश** ।[17] कहल गेल अछि जाहिसँ ई प्रतीत होइछ जे ओ सधवा नारीक समस्त वस्त्राभूषणसँ आच्छादित छथि । **मणिमय भूषण अङ्ग अमूल** ।[18] सँ ई विदित होइछ जे आभूषण मणिमाणिक्यसँ जटित होइत छल । श्रीकृष्णक वेशभूषाक वर्णन करैत कवि कहलनि अछि–

कनक मुकुट माणिक भल भासा । मेरू शिखर जनि दिनमणि वासा ।।
पीत **बसन** तन भूषण मनी । जानि नवघन उर घन दामिनी ।।
वनमाला उर उवर उदारा । अञ्जन गिरि जनि सुरसरिधारा ।।[19]

अञ्जन माथपर **मणिजटित मुकुट, पीताम्बर** ओ **वनमाला** श्रीकृष्णक विशिष्ट परिधान आभूषण अछि । नारी भूषणमे **कङ्कण** ओ **हारक** उल्लेख कविक एहि पदमे भेटैछ–

असकति कर **कङ्कन** नहि **परिहसि** हृदय **हार** भेल भारे ।[20]

पहिरब क्रियापदक हेतु **परिहबक** प्रयोग एहि पदमे द्रष्टव्य अछि–

एकटा गीतमे नाटककार नायिकाक विभिन्न अङ्गराग ओ आभूषणक वर्णन कयलनि अछि । केसरसँ नायिका पीयर रंगक तिलक कयने छथि । केशमे विभिन्न

प्रकारक गहना लगओने छथि जाहिसँ केश मुक्तासदृश चमकि रहल छनि आ एहन बुझना जाइत अछि जेना मेघमे नक्षत्रक पंक्ति जगमगा रहल हो ।

नायिका **बेणी** (जुट्टी) रचना कयने छथि जाहिमे **पुष्पसज्जा** कयल गेल अछि । हुनक नाकपर **नकबेसरिक** मोती चमकि रहल छनि–

केसरि तिलक कयल निरमान । चांद कुमुद लय पूजल काम ।
अलक झलक **मुकुतावलि** कांति । जनि जलधर तर नखतक पाँति ।
बेनी विरचित सीस **फुल** देल । जनि फणिपति सिर मणि ठगि गेल ।
बेसरि मोति झलक मुख इन्दु । उमगि अमिअ रस गर जनि बिन्दु ।।[21]

कविवर **रामदासक आनन्दविजय** नाटिकामे सेहो अनेक प्रवेशगीतमे वेशभूषा प्रसाधनक बहुशः उल्लेख भेटैत अछि । श्रीकृष्णक स्वरूपक वर्णन करैत कवि हिनक **गोरोचन** निर्मित **तिलक, मलयज चन्दनसँ** बनाओल **अनुलेपसँ सुवासित अंग**, हाथक वलया, कानक **कुण्डल** तथा पीयर रंगक **वस्त्र** धारण करबाक उल्लेख कयलनि अछि–

रोचन **तिलक** विलोचन वङ्क । तनु **अनुलेपन मलयज पङ्क** ।।
कुण्डल वेणु **वलय** अमलान । पीत **वसन** घन सामर वान ।।[22]

आनन्दकन्दक प्रवेश गीतमे अखण्डित चन्द्रमाक स्वरूपक टीका तथा धोतीक उल्लेख भेल अछि–

हमहि विदित आनन्दकन्द । आधि अधार अखण्डित चन्द ।।
एहन **टीका** एहन **धोती** । एहन काहु न बरए जोती ।।
हमहि सरव रतन जाहि । व्यासहु तौंहि कला एक बाढ़ि ।।[23]

व्यासहु तौंहि कला एक बाढ़ि द्वारा कवि ई निर्देश कयलनि अछि जे आनन्दकन्दक स्वरूप व्यास अर्थात् पुराणवाचकक स्वरूपसँ थोड़ेक बढ़ले चढ़ल छनि अर्थात् धोती, चानन, रत्नादिकसँ विभूषित व्यासक अपेक्षा आनन्दकन्दक वेश आर सुनियोजित अछि ।

एही नाटकमे राधा द्वारा पुष्पचयनक हेतु जाइत काल हुनक जाहि स्वरूप उल्लेख भेल अछि ताहिसँ नारी वेश ओ प्रसाधनक किंचित संकेत एहि पदमे भेटैत अछि–

पसरल सोन **बसन चय** मास । अरुन किरन जनि भरल आकास ।
मुख **परिमल** उपगत दुरवार । भमर वास भेल भुवन अन्हार ।।[24]

अर्थात् राधाक **नीलवसनमे सोनाक टाँका** जड़ित छनि जाहिसँ हुनक साड़ी एहन सन बुझना जाइछ जेना सम्पूर्ण आकाशमे प्रातःकालीन आभा पसरल हो । हुनक मुखक

सुगन्धि अत्यन्त उत्कट छनि जाहि सुगन्धिसँ आकृष्ट भ्रमर हुनक कमल रूपी मुँहपर आबि हुनक चन्द्राननकेँ झाँपि लेने हो आ संसार भरिमे अन्हार परिव्याप्त भऽ गेल हो ।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे जड़ीक काज कयल वस्त्र ओ मुखशुद्धिक प्रसाधन नारीवर्गमे प्रचलित छल जकर ई साहित्यिक अभिलेख भेटैत अछि । एही नाटकमे बलरामक प्रवेशगीतमे हुनक नील वसन तथा विभूषणक उल्लेख भेल अछि ।[25]

मालिनिक प्रवेश गीतसँ संकेत भेटैत अछि जे ई लोकनि पुष्पक विभिन्न प्रकारक आभूषण बनयबामे चतुरा होइत छलीह तथा दुकूलादिकेँ सेहो पुष्पसज्जासँ अलंकृत करैत छलीह– कुसुगम **भूषण** भवन **दुकूल** । निज गुने **गाँथि** करओँ बहुमूल ।।[26]

कविवर वस्त्रक हेतु **चीर** शब्दक प्रयोग कयलनि अछि–

चीर चेत नहि दीघ निसास । आधि अधीन आलिंजन पास ।।[27]

केशमे **पुष्पसज्जाक** उल्लेख हिनक एहि पदमे भेटैत अछि–

कुन्तल कुल **मालि** फुल भासा । जनि तारक तति भरल अकाशा ।[28]

एही नाटकमे जोगी लोकनिक वेशक उल्लेख दरवेशक प्रवेशगीतमे भेटैत अछि–

आएल जोगीपति दरवेश । **भसमे** भाङ्गे भयङ्कर वेश ।
साथ ने केओ हाथ **मोर पंख** । तनु अनु परसन दशन शंख ।
सिरी अपार अचारक टेढ़ कटि **अछोटा सोटा** टेढ़ ।[29]

अर्थात् वामार्गी जोगीलोकनि सौंसे देहमे **भस्म** लेपने रहैत छलाह, हाथमे **मोरपंख** रखैत छलाह । दाँत शंख जकाँ उज्जर, रहैत छलनि, डाँड़मे **कछोटा** पहिरने रहैत छलाह तथा हाथमे छोट सन **दंड** (सोटा) रखने रहैत छलाह । कविक एहि वर्णनसँ समाजक एक वर्गीय चरित्रक वेश भूषाक संकेत भेटैत अछि ।

कवि देवानन्दकृत **उषाहरण** नाटकमे कञ्चुकीक प्रवेश गीतमे ओकर वेशभूषामे विपरीत **तिलक** ओ पागक उल्लेख भेल अछि–

विपरीत **तिलक** लेपटलि पाग । बेँत हाथ तन्हि की कहब भाग ।।[30]

एकटा अन्य गीतमे अभिसारिका नायिकाक वर्णनक क्रममे सकल सिंगार मध्य शरीरपर **मृगमदक** अनुलेपन, **नीलवसन** धारण ओ नुपुरक परिहारक उल्लेख अछि–

सकल **सिंगार** कए **मृगमद** तनु दए **वसन** पहिरि निल काँती ।
संकेत देखओलक तुअ गुन गओलक धनि कर एतबा भाँती ।।
हंसक नुपुरक कौसलेँ परिहार तिमिर निहारए नीती ।[31]

नन्दीपतिक **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे सेहो अनेक स्थलपर वेशभूषा प्रसाधनक

उल्लेख भेल अछि । प्रसुता यशोदाक प्रवेश गीतमे हुनक सिरक सिन्दूर तथा वस्त्रक उल्लेख भेल अछि– सिरसिन्दुर तनु पीअरि **साड़ी** । तखनुक जे देखल नन्दक नारी ।।[32]

नारी वस्त्रक आँचर प्रभागक उल्लेख सेहो एहि नाटकक गीतमे भेटैछ–

आँचर धएलन्हि मोरा कान्हुक जनमल तोर किशोरा ।।[33]

एहिसँ इहो भासित होइछ जे **आँचर** नारीक संवेदनशील अङ्गवस्त्र रहल अछि ।[34]

श्रीकृष्णक रूपछटाक वर्णन करैत कवि हुनक पैरमे **पनही**, कटिमे **कछुटी**, हाथमे बलया, कानमे **हीरा जटित कुण्डल** आदि अंगवस्त्र ओ आभूषणक उल्लेख कयलनि अछि–

कर सर धनुसी तूकमा **पनही** पएर विराज ।
कछुटी पाटक हाटक कर **बलया** रूचि राज ।।
श्रुति **कुण्डल** हीरा चमक पिपही वेनु बनाव ।
सगर दिवस यमुना निकट खाएक बेरि घर आव ।।[35]

बलरामक प्रवेशगीतमे मिथिलाक विशिष्ट परिधान **लटपटि पागक** उल्लेख भेल अछि । संगहि हिनक वस्त्रकेँ **असित अम्बर** अर्थात् नील रंगक कहल गेल अछि–

लटपटि पाग लाग बड़ नीक । उड़लि गुड़ी गुन गहि गहि झीक ।
असित अम्बर तनु चलइत धूम । जनि भाउरि सिखि सिखा सधूम ।।[36]

नन्दीपति वस्त्रक हेतु सामान्य शब्दक रूपमे अम्बरक प्रयोग कयलनि अछि यथा–

अम्बर धएल उतारी । से लए कदम तरु चढ़ल मुरारी ।।[37]

एहि हेतु **परिधान** ओ **वसन** शब्दक सेहो प्रयोग भेल अछि । भूषाक हेतु **अभरण** शब्दक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ– **अभरण** एक बरू लेहे । हरि **परिधान-वसन** मोर देहे ।।[38]

'पट' शब्दक व्यवहार सेहो वस्त्रक हेतु भेल अछि–

सबहुँ सखी **पट** पाउ । हमरहि किए एति खन विलमाउ ।।[39]

चोली ओ **चीर** शब्द क्रमशः **कुच-पट** तथा **साड़ीक** हेतु व्यवहृत बुझना जाइछ–

चोली चीर चोराएकहुँ कदम चढ़ल यदुवीर ।।[40]

पाग ओ **फाँड़क** उल्लेख सेहो भेल अछि–

कोनहुँ **पाग** कोनहुँ **फाँड़** कोनहुँ धएल कृष्णक डाँड़ ।।[41]

नारी वस्त्रमे **आञ्चरक** उल्लेख एहि पाँती सभमे सेहो देखल जा सकैछ–

छोड़ु छोड़ु आँचर मोरा । दधि दुध माखन चोरा ।।[42]

छोड़ु छोड़ु आँचर मोरा । माधव ! मोर निहोरा ।।[43]

केश सज्जाक संकेत हिनक एहि पाँतीसँ भेटैछ–

फोएल **चिकुर** फारल हम **चीरे** । निज नख बिकुटल अपन शरीरे ।[44]

आँखिमे **काजर** करबाक तथा मुखसज्जामे **पानक** उल्लेख हेतु ई पाँती द्रष्टव्य अछि– नयन **काजर** नहि मुख नहि **पाने** । निज धनि देखथु ऐसनि पचवाने ।।[45]

नन्दीपति घोघटक सेहो उल्लेख कयने छथि । मानिनी राधाक मान मोचनक क्रममे कृष्ण हुनक **घोघट** ससारि मुँहमे **पान** ठूसि दैत छथिन–

एके करेँ **घोघट** ससारिकहुँ दोसरे करे लए **पान** ।
अति हठे हरिमुख **पान** दए कए सुख करूप निदान ।।[46]

रमापतिउपाध्याय कृत **'रुक्मिणी परिणय'** नाटकक विभिन्न प्रवेश गीतमे अनेक वस्त्राभूषणक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ जेना–

कुण्डल केयुर वलय विशाल । उर शोभ अनुपम **मुक्ता** माल ।।[47]
मणिमय मुकुट विराजित माथ । जनि उदयाचल उगु दिगनाथ ।।[48]
फुजल **चिकुर** अति मलिन **दुकूल** । मणिमय सकल **विभूषण** काढ़ि ।।[49]
कनक रत्नमय मुकुट विराज । **मकराकृत कुण्डल** श्रुति छाज ।
इन्द्रनील मणि सम तनु काँति । **मलयज अनुलेपन** बहु भाँति ।।
रोचन **तिलक** ललाट विशाल । पीत **बसन** युग उर **वनमाल** ।।
अङ्गद वलय रसन **मञ्जीर** । विविध **विभूषण** शोभ शरीर ।।
विमल नखत सम **मोतिम हार** । जनि बह गगन गङ्ग दुइ धार ।।[50]
नव नीरद सम **नील दुकूल** । विमल कनक **भूषण** बहुमूल ।।
वारुणि मदेँ घुम लोचन लाल । एक **स्रवण कुण्डल** सुविशाल ।।[51]

एक गोट गीतमे कवि **वेनीक** सेहो उल्लेख कयल अछि–

पीठ उपर **वेनी** भल छाज । तसु प्रतिबिम्ब रोमावलि साज ।।[52]

एकटा अन्य गीतमे विविध प्रकारक **अनुलेपन, भूषण** ओ **वस्त्रक** उल्लेख भेल अछि–

कुंकुम रोचन **मलयज मृगमदेँ तिलक** कइए हरि भाल ।
कंचन रजत **विभूषण** बहुविध वसन देथि सुविशाल ।।
से देखि भीषमदेव महामति मनि **मुक्ता** बहुमूल ।
हरषि देथि हरिपद अवनत भय अनुपम रुचिर दुकूल ।।[53]

एकटा अन्य गीतमे मुखप्रसाधन **पानक** व्यवस्थाक अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र भेटैत अछि–

एला बीज लवंग सुवासित, खदिर सहित **घनसार** ।
जातीफल दए विविध भाँति कए करिअ **तमोर** संभार ।।[54]

शिवदत्तक गौरीपरिणय नाटकमे गौरीक **पसाहनि** ओ सौन्दर्य वर्णनक क्रममे वेशभूषा प्रसाधनक विविध शब्दावलीक प्रयोग देखि पड़ैछ–

अगर केउरि हाथ सखि दस निकट गौरिक जाय हे ।
मंगल गाबि **पसाहि** गिरिजा कोबर देल पहुँचाय हे ।।
सीस **पट** गोरि **टारि** राखल भेल सगर इजोर हे ।
बिन्दु सिन्दुर भाल राजित उगल सुर जनि भोर हे ।
लेल कय **सिर मांग टीका** परम राजित गोरि हे ।
हर **जटा** मनिआर जागल किदहुँ गेल मनि चोरि हे ।
चिकुर चामर ललित **वेणी मृगमद** शोभए भाल हे ।
नाक **बेसरि** परम राजित सोभय गेल **मनिमाल** हे ।।
परम अनुपम साजि **भूषण बैसलि** शिव संग जाय हे ।।[55]

हिनक **'पारिजातहरण'** नाटकमे सेहो रूक्मिणीक प्रवेश गीतमे किछु पारिभाषिक कोटिक आभूषणक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि–

चलइते पग नेपुर घहराय । **रूनझुनु बिछिया** सबद सुनाय ।
कटि **किंकिनि नेपुर** भल बाज । गाव मधुर धुनि मङ्गल आज ।[56]

भानुनाथदैवज्ञ कृत **'प्रभावतीहरण'** नाटकमे सेहो अनेक स्थलपर विविध वस्त्राभूषण प्रसाधनक उल्लेख भेल अछि यथा–

सुगम सुवासल **परिहन** रे कुसुमित वर **चीरे** ।[57]
सिन्दुर **चीर,** चिकुरबिच रे अनुरूप अकारे ।[58]
धवल **बसन** शिर सोभित रे युत श्यामल भाले ।[59]
नागरि पग **नूपुर** रे जनि पूरथि ताले ।[60]
रचित **चिकुर** विघटित कए देला ।[61]
निवि विश्लेषित बुझु अनुमाने ।[62]
अञ्चल परिहरि कएल निज काजे ।[63]

हर्षनाथक 'उषाहरण' नाटकमे सेहो प्रवेशगीतमे तथा अन्यो विविध गीतमे वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक उल्लेख भेल अछि यथा–

फूजल चिकुर फूजल मोर चीर । अभरण एक रहल नहि थीर ।[64]
नूपुर शब्द सुनि काने करुन होयत परमाने ।[65]
नयन काजर नहि मुख नहि पाने[66] भाल तिलक शोभ धवलित केश[67]

हिनक एक गोट प्रसिद्ध उक्तिमे मिथिलाक प्रसिद्ध **कोकटी धोतीक** उल्लेख भेल अछि–

कोकटी **धोती** पटुआ साग । तिरहुत गीत भरल अनुराग ॥
भाव भरल तन तरुणी रूप एतबे तिरहुते होइछ अनूप ॥

एहि तरहेँ वेशभूषाप्रसाधनक दृष्टिये मध्यकालीन नाट्यसाहित्यक प्रवेशक गीत सेहो प्रमुख भूमिका रखैछ ।

अर्द्धनारीश्वर वर्णन– मैथिली शैव साहित्यमे अनेक कविक अर्द्धनारीश्वर वर्णनसँ सम्बद्ध पदावली भेटैत अछि । एहि प्रकारक पदावलीमे एकहि संग शिव ओ पार्वतीक वेशभूषा प्रसाधनक क्रमिक उल्लेखक क्रममे पुरुष ओ नारी वस्त्राभूषणक उल्लेख भेटैत अछि । कविरतन एकगोट अर्द्धनारीश्वर वर्णनमे गौरीक द्वारा **पटोर** धारण करबाक, **सिन्दूर** लगयबाक तथा गजमुक्ताक **हार** पहिरबाक वर्णन भेल अछि । गौरी द्वारा **नगबासा** (रत्नजटित वस्त्र) धारण करबाक सेहो उल्लेख अछि–

जय जय शंकर जय त्रिपुरारि जय अध पुरुष जयति अध नारि
आध धवल तनु आधा गोरा अछि **पटोर** आध **मुञ्ज डोरा**
आध जोग आध भोग विलासा आध पिनाक आध नगबासा ।
आध **सिन्दुर** विन्दु आध **विभूती** । आध हाड़माल आध **गजमोती** ।
भने कवि रतन विधाता जाने । दुइ कए बांटल एक पराने ।[68]

गोविन्द कविक एक गोट अर्धनारीश्वर गीतमे गौरीक **कजरायल** नयन, **मणिमय** हार तथा **पट्टाम्बर** वस्त्रक वर्णन भेल अछि–

हेम हिमगिरि दुइ तनु छिरि आध नर आध नारी ।
आध उजर आध **काजर** तिनइ लोचन धारी ।...
आध फणिमय आध मणिमय । हृदय उजार **हार**
आध बाघम्बर आध **पट्टाम्बर** पिन्धन दुहु उजियार ।।[69]

रामदासक अर्द्धनारीश्वर वर्णनमे गौरीक प्रसाधनमे सिन्दुरक उल्लेख भेल अछि–

आध-देह **रजताचल** भासे आध **कनकमय** बल्लि विकासे
सिन्दुर कम्बु आध अभिरामे आध-विराज भुजग **हिमधामे** ।[70]

करण **जयानन्दक** एकगोट अर्द्धनारीश्वरक वर्णनमे शिवक **तिलक**, गौरीक **सिन्दुर**, शिवक **भस्मलेपन**, गौरीक अगरक **अंगराग**, शिवक नागराजक **भूषण**, गौरीक मुकुतावलिक हार, शिवक **बाघम्बर** ओ गौरीक ललित **अम्बरक** वर्णन भेल अछि–

आध मौलि **जटाजूट** विकट अति आध **चिकुर** अभिरामे ।
आध भाल **सिन्दुर** विन्दु शोभित आध तिलक हिमधामे ।
आध कलेवर **भसम** धवल वर आध **अगर** अंगरागे ।
आधा हृदय हार **मुकुतावलि** आध विराजित नागे ॥
पटप बघंबर **अंबर** सुललित अमिअ **विषम** विषमाने ।
मंगल सहित मनोरथ पुरथु करण जयानन्द भाने ।।[71]

कवि **देवानन्द** रचित एकटा गीतमे महादेवक होरी खेलयबाक वर्णन अछि । एहिमे वस्तुतः अर्द्धनारीश्वरक फागु-क्रीड़ाक चित्रण अछि । शिव पार्वतीक होरीक वर्णन **विद्यापति** एवं **भंजन** कवि सेहो कयने छथि । मुदा एतय सर्वथा नवीन प्रकारेँ रंग-क्रीड़ाक चित्रण अछि । वाम भाग (गौरी दिस) सुगन्धद्रव्य, **अरगजा**, **केशर** ओ **अबीर** तथा दहिनभाग (शिव दिस) **भस्मक** प्रयोग होइछ । वाम भागमे **सिन्दूर**, **वस्त्र** ओ **मणिमुक्ता** झलकैछ, दहिन भागमे **मुण्डमाल**, **सर्प** तथा **बाघछाल** फहराइत अछि । एहि तरहेँ कवि वस्त्राभूषण प्रसाधनक विविध शब्दावलीकेँ एहि पदमे समेटि लेलनि अछि–

गौरी अरधङ्गी सङ्ग हिलय हर होरीमचाव ।
वामे अँतर **अरगजा केसरि** योगिनि अबीर उड़ाव ॥
दहिने भूत प्रेतगण नाचए मलि मलि भसम चढ़ाब ।
सिन्दुर लाल वसन मनि मुकुता वाम भाग झलकाव ।
मुण्डमाल वर ब्याल दहिन दिस बाघछाल फहराव ।[72]

वंशमणिउपाध्यायक गीत दिगम्बर नाटकक आरम्भमे अर्द्धनारीश्वरक वन्दना कयल गेल अछि । एहिमे **तिलक**, **सिन्दूर**, ओ **फुलमालाक** उल्लेख भेल अछि–

आध मौलि मण्डन **फुलमाले** । आध तरङ्गिय सुरसरि धारे ॥
आध **अलिक तिलक** नव इन्दु । आध सोहाओन **सिन्दुर** विन्दु ।।[73]

जगज्ज्योतिर्मल्लक **मुदित कुवलयाश्व** नाटकमे सेहो एकगोट अर्द्धनारीश्वर वर्णन अछि । एहूमे गौरीक विविध वस्त्राभूषण प्रसाधनक उल्लेख भेल अछि–

रजत कनक रंग ईश गोरि संग एकहि कलेवर वासे पुर आसे
शिर सुरसरि धार कुसुम **मालवर** इन्दु **सिन्दुर** विन्दु सोहे मन मोहे

कान **कुण्डल** डोल फणिमणि निरमल हाड़माल **किंकिन** बाजे भल छाजे
बाघछाल रुण्डमाल **बेत मोतिम हार पहिरन** ई सब रीति जग जीति ।
चण्डि चरण चित शिवक भगति युत नृप जगजोति एहो भाने अवधाने ।।[74]

एहि तरहेँ मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अर्द्धनारीश्वर वर्णनमे वेशभूषाप्रसाधनक प्रचुर शब्दावलीक निवेश भेल अछि ।

वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक छिटफुट उल्लेख :

वेशक शब्दावली : (वेश)– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे अनेक नाट्यगीतमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि । एकर पर्याय **भेष, भेस** भेटैत अछि । ई शब्द वस्त्राभूषण प्रसाधनक समेकित स्वरूपकेँ रूपायित करबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि यथा– **पारिजातहरण** नाटकमे रुक्मिणीक प्रवेशक गीतमे कहल गेल अछि– **सामि सोहाग सोहाउनि वेश** ।[75] एहि तरहेँ रुक्मिणीक सोहनगर वस्त्राभूषण प्रसाधनकेँ जे सधवा नारीक समस्त उपादानसँ युक्त अछि, अभिव्यक्त कयल गेल अछि । कवि लालक **गौरीस्वयंवर**मे शिवक समस्त वस्त्राभूषण प्रसाधनकेँ **भेष** शब्द द्वारा अभिव्यक्त कयल गेल अछि– '**जटिल भेषेँ** देल **परवेश**' ।[76] एही प्रकारक प्रयोग शिवदत्तक **गौरीपरिणय** नाटकमे सेहो देखि पड़ैछ– **अहोनिशि जप तप देखि सदाशिव धैल जटिल तव भेस हे** ।[77] एहि तरहेँ पुरुष ओ नारी दुहूक वस्त्राभूषण प्रसाधनक सम्पूर्णताकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि । **आनन्दविजय** नाटकमे वेश शब्दक प्रयोग दरवेशक वस्त्राभूषण प्रसाधनक हेतु भेल अछि– आएल योगपती दरवेश । **भसमे आङ्गे भयंकर वेश** ।।[78]

वस्त्रक हेतु मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **अम्बर, कापड़, कापल, चीर, वसन, पट** ओ **वास** शब्दक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ–

अम्बर– एहि शब्दक बहुश: उल्लेख मध्यकालीन पदावली साहित्य ओ नाट्यगीत सभमे भेल अछि । **कीर्त्तिलता**मे एकर प्रयोग सामान्य वस्त्रक, हेतु भेल अछि यथा–

हअ **अम्बर** वर लहिअ हिअ दुख वैराग मेट्टिअ ।[79] **अम्बर** भेल पुरान ।[80]

एक स्थलपर अम्बरक हेतु **अंबरा** स्वरूपक उल्लेख भेल अछि ।[81] अम्बरक विशिष्ट प्रभेद दिव्याम्बरक उल्लेख सेहो **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि । एहिमे वेश्यालोकनिक वस्त्रक प्रभेदक हेतु एकर प्रयोग भेल अछि– **दिव्याम्बर पिन्धने** ।[82]

पदावली साहित्यमे **अम्बरक** बहुश: प्रयोग देखि पड़ैछ । एहिमे सामान्यत: नायिकाक साड़ीक हेतु एहि शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा–

ससन परस खसु **अम्बर** रे[83] **अम्बरे** वदन झपावह गोरि[84] पिआक कलेवर **अम्बर** भेल[85] जलधर **अम्बर** रूचि पहिराओलि[86] **अम्बर** कुच नहि सम्बरि भेल ।[87] **अम्बर** चिरलन्हि

तोड़लन्हि हार ।[88] **अम्बरे** झापल विभूषण सुन्दरि ।[89] **अम्बर** सकल विभूषण सुन्दरि घन तर तिमिर झापि ।[90]

नाट्य साहित्यहुमे **अम्बर** शब्दक प्रयोग नारी-वस्त्रेक रूपमे भेल अछि । कविलालक गौरीस्वयंवर नाटकमे गौरीक प्रवेशक गीतमे कहल गेल अछि–

अम्बर ललित वलित सिर केस ।[91]

एही प्रकारक प्रयोग **शिवदत्ताक गौरी परिणय**मे सेहो भेल अछि–

अम्बर ललित चलित सभ भूखन भमह न तातल मूले ।[92]

नन्दीपतिक **श्रीकृष्ण केलिमाला**मे अम्बरक प्रयोग नायिका वस्त्रक हेतु भेल अछि यथा– **अम्बर** धएल उतारी ।[93] हरि करु **अम्बर** दाने ।[94] **अम्बर** अंग भरि लेला ।[95]

पहिरबाक अर्थमे एतय **अंगभरिलेब**क प्रयोग भेल अछि ।

विद्यापतिक कतोक पदमे **सामर अम्बरक** उल्लेख देखि पड़ैछ । सम्भवत: ई नील रंगक साड़ीक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । यथा– **सामर अम्बर** तनुक रंगा ।[96] **अम्बरे** साभर देह झपाइ ।[97]

अम्बरक विशिष्ट प्रभेद **पटम्बरक** उल्लेख पदावली साहित्यमे देखि पड़ैछ । ई संभवत: रेशमी साड़ीक हेतु प्रयुक्त भेल अछि यथा–

पहिरन पीत **पटम्बर** कनकलता सम देह ।[98] पाट **पटम्बर** धर उतारि ।[99]

मनबोध एहि हेतु **पीताम्बर** शब्दक उल्लेख कयल अछि– **पीतपिताम्बर** हरि बिछिलेल ।[100]

विद्यापतिक एकटा पदमे **गराम्बर** शब्दक उल्लेख भेल अछि–

घटइ **गराम्बर** बान्धि पठओलह भानस तेलक माझे ।[101]

मुदा गराम्बरक पारिभाषिक स्वरूप स्पष्ट नहि होइछ । सम्भवत: ई गर्दनिमे धारण करबाक **गलौधीक** हेतु प्रयुक्त हो । कापल/कापड़–वस्त्रक हेतु **कापल** ओ **कापड़** शब्दक उल्लेख **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि यथा–

काहु **कापल** काहु धोल । काहु सम्बल देल थोल ।[102]
सेरे कोनि पानि आनिअ । पीवए पणे कापड़े छानिअ ।।[103]

चीर– **विद्यापति** पदावलीमे **चीर** शब्दक बहुल प्रयोग नायिकाक **साड़ीक** अर्थमे भेल अछि यथा– हर्षा आरति हरल **चीर** ।[104] न बेतए **चीर** न परिहए हारा ।[105] अम्बे हसि हृदय **चीर** लए भोए ।[106] आकुर चिकुर **चीर** न समर ।[107] पवन हरल हृदय **चीर** ।[108] मलिन कुसुम तनु **चीरे** ।[109] काजर पखरि पखरि पर **चीर** ।[110] ससरि खसल **चिर** समरि न

भेल ।[111] ससरि खसल कुच **चीर** हमार ।[112] दुअओ सअन चेत न **चीर** ।[113] सजल **चीर** रह पयोधर सीमा ।[114] आचर **चीर** धरइ हस हेरी ।[115] आरति हठेँ हरल **चीर** ।[116] फूजल चिकुर **चीर** नहि चेतय ।[117] न चेतय **चीर** न परिहए हारा ।[118] **चीर** उछारि आध मुख हेरलन्हि ।[119] छेल इछहि छोड़ह मोर **चीर** ।[120] हरखि हृदय गहय **चीरे** ।[121] **चीर** सम्भारलि जिव भेल अन्त ।[122] **चीर** सम्हारैत भेल जीवक अन्त ।[123] सपनहु रूप वचन एक भाखिअ मुख सओं दुर करू चीरे ।[124]

एहिमे **हृदय चीर** ओ **कुच चीरसँ** नायिकाक **आंचरक** भागक अर्थ स्फुट होइछ ।

उमापतिक स्फुट गीतमे **चीर** शब्दक प्रयोग नायिकाक वस्त्रक हेतु देखि पड़ैछ–

धए उतारिअ **चीर** अभरन धसलि जमुना धाए ओ

कदम डारि मुरारि बैसल **चीर** लेल चोराय ओ ।[125]

विद्यापतिक किछु पदमे **दछिन चीरक** उल्लेख भेल अछि यथा– इ दसिहालल **दछिन चीर** ।[126] पहिरि लेल सखि **दछिनक चीर** । पिआ के देखैत मोरा दगध शरीर ।।[127]

दछिनक चीरक अर्थ **गोविन्दझा मदरासी साड़ी** कयलनि अछि ।[128]

मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे **चीर** शब्दक बहुल प्रयोग नारी वस्त्रक रूपमे भेल अछि यथा– चोली **चीर** चोरायकहु कदम चढ़ल यदुवीर ।[129] पुरुष हृदय नहि थीरे । केदहु पलटि पुनि हरथि न **चीरे** ।[130] लए तरुअर चढु **चीरे** । सेहे हमे श्याम शरीरे ।।[131] सबकाँ **चीर** सबहुकाँ चोली । सबे परिहरि हमरहिँसँ ठोली ।।[132] फोएल चिकुर फारल हम **चीरे** । निज नख बिकुटल अपन शरीरे ।।[133]

गोपी चीरहरणसँ सम्बद्ध **उमापतिक** एक गोट स्फुट गीतमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि–

कहहि सखि सओ कान्ह कपटी **चीर** कँह केओ पाब ओ ।

चीर तोहर अहीर लूटल लए दहो दिस धाव ओ ।।[134]

पट– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **पट** शब्दक प्रयोग सामान्य वस्त्रक हेतु किछु पदमे दृष्टिगोचर होइछ । **लालकविक गौरीस्वयंवर** नाटकमे सामान्य वस्त्रक हेतु **पट** शब्दक प्रयोग एहि पदमे भेल अछि– ललित कटि तट **पट** बघंबर हर दिगम्बर हे ।[135]

श्रीकृष्ण केलिमाला नाटकमे सेहो एकर अर्थ सामान्य वस्त्र देखि पड़ैछ यथा–

सब सखी **पट** पाउँ ।[136] किछु पदमे एकर अर्थ रेशम देखि पड़ैछ–

पट सुत बुनि बुनि मोति सरि कोनि किनि मोजे पिआजे गाथल हार ।।[137]

भाल वदद नयनानल रासी । झरकत मउल डाढ़त **पटवासी** ।।[138]

एतय पटवासी शब्द **पट्टवस्त्र** अर्थात् रेशमी कपड़ाक हेतु आयल अछि ।

वसन– ई शब्द नारी ओ पुरुष दुहूक वस्त्रक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । विद्यापति पदावलीमे नायिका वस्त्रक हेतु एकर प्रयोग सामान्य देखि पड़ैछ यथा–

विल **वसन** तनु लागु । मुनिहुक मानस मनमथ जागु ।।[139] चान्द झपाव **वसन** फत बेरि ।[140] घनहन **वसन** करह काजि ।[141] हरइते **वसन** लाज दुर गेल ।[142] जाएब **वसन** आँग सब गोए ।[143] जतनहि **वसन** झाँपिअ सब अंग ।[144] **वसन** पैन्हाओल कए कत छंद ।[145] **वसन** लोटाएल सुरंग पैंवार ।[146] **वसन** उघारि हेरल भरि दीठि ।[147] **वसन** झपाए वदन धर गोए ।[148] अपन **वसन** देइ कनक **वसन** लेइ आयलि कोन चरीते ।।[149] बदलल **वसन** नुकाओब कतिखन तिल एक कैतव लागे ।[150] वदन **वसन** लुकाओब कतिखन ।[151] सित समापले **वसन** पाइअ ते दहु की उपकार ।[152] कुचयुग **वसन** सम्भरिकहु देल ।[153] **वसने** झपावह की तोर काजे ।[154] हरल **वसन** अवशेषे ।[155] खन पित **वसन** खन बघछाला ।

मनबोधक कृष्णजन्ममे स्यामवसन हलधरकाँ देल द्वारा **वसन** शब्द वस्त्रक हेतु प्रयोग देखि पड़ैछ ।[156] मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे सेहो **वसन** शब्दक सामान्य प्रयोग नायिका वस्त्रेक हेतु देखि पड़ैछ यथा–

तखन **वसन** हुनि देला हम लेला ।[157] हरि परिधान **वसन** मोर देहे ।।[158]

उजर दशन उजर **वसन** अभरण एकओ न अंग ।[159]

किन्तु पुरुष वस्त्रक हेतु सेहो एहि शब्दक प्रयोग होइत रहल अछि यथा–

खालक **वसन** कय लेल काछ ।[160] असन गरल कर **वसन** बघम्बर हे ।[161] पीत **वसन** तनु भूषण मनि ।[162] रूण्ड मुण्ड तनु भसम राजित **वसन** बाघहि छाल रे ।[163] भुजग विभूषित लोहित **वसने** ।[164] पीत **वसन** तनु उपज सनेहे ।[165] देल परवेश हलायुध नील **वसन** तनु गोर हे ।[166] आसन जटिल **वसन** खाल ।[167] पीत **वसन** घन सामर वान ।[168] अभरन एक चक्र लेहे हरि परिधान **वसन** मोर लेहे ।[169] रूण्डमुण्ड तनु भसम राजित **वसन** बाघहि छाल रे ।[170]

वसन शब्दक संग विभिन्न विशेषणक उल्लेख भेल अछि यथा **धवल, सामर, पीत, अरूण नील** इत्यादि । एहि तरहेँ उज्जर, श्यामवर्ण पीयर, लाल, नील आदि रंगमे राङल वस्त्रक उल्लेख भेटैछ यथा–

धवल– धवल **वसने** तनु झंपाओब ।[171]

सामर– मृगमद तिलक अगर अनुलेपह सामर **वसन** समारि ।[172]

चरण नूपुर करे उतारब सामर **वसन** तनु ।[173]

पीत– नील कलेवर **वसन** धर[174] **पीतवसन** हे युवति विधि लेह[175]

अरुण- अरुण **वसन** पेन्हि जटिल वेश धरि कानह द्वार माझा ठारि ।[176]

नील- नील **वसन** हे युवति पिधि लेह ।[177] नील **वसन** तन घेरल सजनी गे ।[178]

रुक्मिणीपरिणय नाटकमे **धौत वसनक** उल्लेख अछि–

धवल तिलक उपवीत विशाल । **धौत वसन** जुग कर जपमाल ।[179]

वास– वस्त्रक एक गोट पर्यायक रूपमे एहि शब्दक प्रयोग मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे दृष्टिगोचर होइछ मुदा **चीर, वसन, अम्बर** जकाँ एकर अत्यन्त बहुल प्रयोग नहि देखि पड़ैछ । नायिकाक वस्त्रक हेतु महाकवि **विद्यापतिक** कतोक पदमे शब्दक उल्लेख भेल अछि यथा– नीबी निबेसलि फोअल **वास** ।[180] सरदक शशधर सम मुखमण्डल कान्ति झपावह **बासे** ।।[181]

आनन्दविजय नाटकमे राधा रूपवर्णनक क्रममे एकर प्रयोग भेल अछि–

सामर देह कनक रूचि **बासे** । जमुना जनि दामिनि परगासे ।।[182]

लालकविक **गौरीस्वयंबर** नाटकमे **बासक** अपर रूप **बासु** देखि पड़ैछ–

काहु **बासु** न जंघहि नगन करय घनघन नाद ।[183]

महाकवि **विद्यापतिक** एकगोट पदमे **पटवासी** शब्दक उल्लेख भेल अछि । ई शब्द रेशमी वस्त्रक हेतु प्रयुक्त भेल अछि–

भला बरइ नयनानल रासी । झरकत मठल डाढ़ति **पटवासी** ।[184]

आँचर– एहि शब्दक बहुल प्रयोग मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे भेल अछि । एकर अनेक रूप यथा **आँचर, आचर, अञ्चल** आदि दृष्टिगोचर होइछ । ई नारीक उपरिवस्त्रक ओ भाग थिक जकरा द्वारा वक्षस्थल भागकेँ झाँपल जाइछ । सामान्यतः साड़ीक उपरका अग्रभागकेँ **आँचर** कहल जाइछ । नारीक उरोजक अंगक परितः विराजित रहबाक कारण पदावली साहित्यमे एकर निरन्तर प्रयोग देखि पड़ैछ ।

कीर्त्तिलतामे वेश्यावर्णनमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि । कहल गेल अछि–

काहु होअ अइसनो आस । कइसे लागत **आचर** बतास ।।[185]

अर्थात् किछु एहनो लोक छलाह जे इच्छा रखैत छलाह जे (वेश्यालोकनिक) आचरक बसात कोना लागत ? तेँ एहठाम **आचर** शब्द साड़ीक ओही भागक सूचक अछि जाहिसँ स्तनप्रदेश झाँपल जाइछ । पदावली साहित्यमे एकर प्रयोगक अनेक उदाहरण भेटैछ यथा–

आँचर सुतल अद्ध पदुमकुमारे ।[186] **आचर** चीर धरसि हसि हेरि ।[187] तखने हरल हरि अंचल मोर ।[188] हठे **आँचर** मोर फेरि न हलब रसेँ रस मए आवत उघार हे ।[189] छाड़ु

कन्हैया मोर **आँचर** रे फाटत नव साड़ी ।[190] जखने हरल हरि **आँचर** मोर ।[191] आध **आँचर** खस आध वदन हंस आधहि नयन तरंग आध उरज हेरि आध **आँचर** तरे तबधरि दगधे अनंग ।।[192] उरहि अंचल झाँपि चंचल आध पयोधर हेरू ।।[193] **आँचर** लेइ वदन उर झाँप ।[194] नखन **आँचर** झापसि हाथ ।।[195] **आँचर** परसि पयोधर हेरू ।। जनम पंगु जनि भेटल सुमेरू ।।[196] सूति रहल मोर **आँचर** झँपाइ ।।[197] मुख अञ्चल पट ओट रे दए बिहुँसलि वामा ।[198] खने **आँचर** दए खने होय मोर ।[199] उरहि **अञ्चल** झाँपि चंचल ।[200] अञ्चल चञ्चल दए कुच झाँपल ।[201] **आञ्चरे** वदन झम्पावह गोरि ।[202] अम्बे अनुखन देअ **आञ्चर** हाथ ।[203] आरति **आँचर** साजि न भेले ।[204] कामे पसाहलि **आञ्चर** फेलि ।[205] **आञ्चरसवो** खसि पड़ल रतने ।[206] जखने हरल हरि **आँचर मोर** ।[207] नव शशि छन्दे अनुरागक आँकुर भएल मञे **आंचर** गोइ ।[208] सखि जने **आञ्चरे** धरलि झपाइ ।[209] **आचर** धरइत करे लाड़लि लाज भरे नमइत महक उपाम ।[210] अधरा सिरिफल ओ रे **आँचर** आँचरा अधरा अधिक बिकाय ।[211] **आचर** लेइ वदन पर झाप ।[212] की कुच अंचले राखह गोय ।[213] हठे आँचर मोर फेरि न हलब रसेँ रस भय जाएत उघार हे ।[214]

मध्यकालक समस्त पदावलीमे **आँचर** शब्दक प्रयोग एही स्वरूपक देखि पड़ैछ ।

मध्यकालीन मैथिली नाट्यसाहित्यमे **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे एकर अनेकशः प्रयोग देखि पड़ैछ यथा– **आँचर** धए बिलमाय मरू देख छकित सब नारि ।[215] **आँचर** धयलन्हि मोरा । कान्हुक वनमल तोर किशोरा ।।[216] कञेन फल **आँचर** फाड़ि ।[217] **आँचर** धएलन्हि घेरी फेरि हेरी ।[218]

ओछाओन– पदावली साहित्यमे **आस्तरणक** हेतु ओछाओन शब्दक उल्लेख भेटैत अछि– **ओछाओन** खण्डतरि पलिआ चाह । आओर कहब कत अहिरिनि नाह ।।[219]

एहिसँ सम्बद्ध **ओछाइअ, ओछाओल** आदि शब्दक सेहो प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ यथा– सजल नलिनिदल सेज **ओछाइअ** परसे जा असिलाए ।[220] सिरिसि कुसुम सेज **ओछाओल** तहु न आवए निन्द ।[221] गाङ्ग भिजाए भांङ्ग भउ भोजन सेज **ओछाओल** बाघछाला ।[222]

ओढ़ब– ई शरीरकेँ आवृत करबाक अर्थमे प्रयुक्त क्रियापद थिक । एहि हेतु प्रयुक्त वस्त्रकेँ **ओढ़ना** कहल जाइछ । मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे एहि क्रियापदक अनेकशः प्रयोग भेल अछि यथा– **ओढ़िए** धरिए कर कपाल ।[223]

ओढ़न शब्दक प्रयोग एहि पदमे द्रष्टव्य अछि– बाघछाल **ओढ़न** किछु ने सोहाबय ।[224]

विद्यापतिक शैव पदावलीमे **साल, दोसाला** ओ विष्णुपुरीक पदमे **तुरैया** (सीरक, तुराइ, तोशक, रजाइ) शब्दक उल्लेख भेटैत अछि–

सबके ओढ़ाबय मोला **साल दोसलवा** आप ओढ़ए मृगछलवा ।[225]

खाट **तुरैआ** सेज हुनि न सोहावए ।[226]

ओर– वस्त्रक अन्तिम भागक हेतु **ओर** शब्दक प्रयोग पदावली साहित्यमे **ओल** स्वरूपमे देखि पड़ैछ– जोलेओ जाति जोलहा जे ओ । **ओले** धरि नहि बूनए सेओ ।।[227]

महाकवि **विद्यापति** एहि पदक प्रयोग लोकोक्तिक रूपमे कयलनि अछि । यद्यपि जोलहा ओछ अर्थात् नीच जातिक होइछ तथापि ओ अन्तधरि बुनबाक काज नहि करैछ । वस्तुतः जोलहा जे अपन करघा पर सूत चढ़ोने रहैछ ओकर अन्तिम भाग बुनला पर काटि कऽ ओकरा करघासँ पृथक कऽ दैछ जकरा आधार बनाए ई लोकोक्ति गढ़ल गेल अछि ।

अंशुक– ई वस्त्रक विशिष्ट प्रभेदक हेतु पारम्परिक शब्द थिक । **विद्यापति** एक स्थलमे एहि शब्दक प्रयोग कयने छथि–

अबला **अंशुक** बालम्भु लेला । पानि पलब धनि आँतर देला ।।[228]

प्राचीन साहित्यमे वस्त्रक अनेक प्रभेद **चीनांशुक**, **पट्टांशुक** आदिक उल्लेख भेटैछ ।

कछनी– ई शब्द आधुनिक भाषामे **कछियाक** रूपमे प्रचलित देखि पड़ैछ । ई कटि प्रदेशक वस्त्र थिक । **उमापतिक** एक गोट गीतमे नारी परिधानक रूपमे एकर उल्लेख भेल अछि– **कछनी** पहिरि माता पाउरि लेल । नेपुर शब्द मेदिनी उड़ि गेल ।[229]

एकर एक गोट पर्याय **कछिनीक** सेहो प्रयोग एही पदमे भेल अछि– बघछला **कछिनी** गाँथल फ्रिमहार ।[230]

पुरुष परिधानक रूपमे प्रयुक्त एहि वस्तुक हेतु **कचोटा** एवं **कछोटा** शब्दक उल्लेख **आनन्दविजयमे** दरवेशक प्रवेशक गीतमे भेटैछ–

सिरी अपार अचारक टेढ़ । कटि **कछोटा**[231]सोआ टेढ़ ।।

संभवतः छोट **कछोटाक** हेतु **कछूटी** शब्दक प्रयोग भेल अछि । **नन्दीपतिक** **श्रीकृष्णकेलिमालामे** कहल गेल अछि– **कछूटी** पाटक हाटक कर वलयारुचि राज ।[232]

कचोटा शब्द **विद्यापतिक** शैव पदावलीमे सेहो भेटैछ ।[233]

काछब– अधोवस्त्रकेँ काछपर समेटि लेबाक क्रिया **काछब** होइछ । **नन्दीपतिक** **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

मनबोधक **कृष्णजन्मसँ** एही अर्थमे '**मड़कछ मारब**' क्रिया पदक प्रयोग भेल अछि– कदमक तरुचढ़ि **मड़कछ** मारि । आँखि मूनि दुहु कुदल मुरारि ।। 14 ।।

मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे **काछब** क्रियापद अवस्थानुकृतिक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । एकर प्रयोग सूत्रधार-नटी संवादमे बहुशः देखल जाइछ ।

कंचुकी– नारीलोकनिक कटिसँ उपरका भागमे पहिरबाक अंगवस्त्र विशेषकेँ **कंचुकी** कहल जाइत अछि । नारीक उत्तमांगक एहि विशिष्ट आवरणक प्रति मध्यकालीन पदावली साहित्यमे विशेष आकर्षण देखि पड़ैछ । संभोग शृंगारमे नायकक औत्सुक्य ओ नायिकाक वैदग्ध्यकेँ स्फुट करबाक क्रममे एहि अङ्गवस्त्रक बहुल प्रयोग भेल अछि । एकर अनेक रूप यथा– **काँचुअ, कञ्चुअ, कञ्चुआ, कंचुक, काँचलि, केचुआ, कांचु, कँचुया** आदि देखि पड़ैछ यथा–

कञ्चुअ– कञ्चुअ धरब जब हठिया ।[234] जखने लेल हरि **कञ्चुअ** अछोरि ।[235]

कञ्चुआ– जे किछु देल तोहे **कञ्चुआ** झापि लेल ।[236]

कञ्चुक– **कंचुक** देल हृदय पर मोर ।[237] **कंचुक** फोअइते पहु भेल भोर ।[238]

कंचुया– **कंचुया** धरब जब हठिया[239]

कांचलि– कांचलि खोलि आलिङ्गन देल ।[240]

केचुआ– झिलमिल **कँचुआ** उनत चन हार ।[241]

काचुअ– चूनि चूनि भए **काँचुअ** फाटलि ।[242]

काँचु– तखने ई हरि लेल **काँचु** चोरि ।[243]

एहिमे **झिलमिल केचुआ** सम्भवतः पारदर्शी प्रकृतिक होइत छल । एकर प्रयोग लोकगीतहुमे बहुशः भेटैत अछि यथा– के मोरा लौता **झिलमिल केचुआ** के मोरा काइम सिन्दूर ।

सम्प्रतियो श्रोत्रियलोकनिमे कन्याक विवाहमे **केचुआ-घघरीक** प्रयोग होइत रहल अछि । **डा.इन्द्रकान्तझाक** मत छनि जे **कचुकीक** दुइ गोट प्रकार छल । एकटा तँ केवल वक्षस्थलकेँ आवृत करैत छलैक आ दोसर कटि प्रदेश धरि आवृत्त करैत छल । बंगालमे एकरा **कंचुली** कहल जाइत छैक । ई ओहिठामक नारीक प्रिय पोशाक थिक जकर प्रचलन एखनहुँ छैक । शुंगकालक माटिक मूर्तिसँ ज्ञात होइत अछि जे **कंचुक** कुर्ताक सदृशे होइत छल ।[244]

तथापि उपरोक्त वर्णनसँ ई तँ स्पष्टे अछि जे ई वस्त्र नारी आकर्षणक विशिष्ट परिधान होइत छल । सामान्यतः ई शरीरमे खूब सटल रहैत छल ।

विद्यापति एक स्थलपर **कठिन कञ्चुक** पदक प्रयोग कयने छथि–

निविल निविबंध **कठिन कंचुक** अधरेँ अधिक निरोध ।[245]

शरीरमे अत्यन्त कसकस प्रकृतिक होयबाक कारण एकरा रोमाञ्चमात्रसँ खण्डश: फाटि जयबाक सेहो वर्णन भेटैत अछि–

तनु पसेब पसाहनि भासलि पुलक तइसन जागु ।
चूनि चूनि भए **काँचुअ** फाटलि बाहुवलया भाँगु ।।[246]

कसीदा– वस्त्रपर तागक सहायतासँ जड़ी-बूटीक काजकेँ **कसीदा** कहल जाइत छैक । एहि शब्दक प्रयोग **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि ।[247] पदावली साहित्यमे एहि शब्दक उल्लेख नहि भेल अछि । एहि शब्दक संग **काढ़ने** क्रियापदक प्रयोग भेल अछि । **कसीदा काढ़ब** मुसलमानी प्रभावसँ संभवत: मिथिलामे प्रचलित भेल । एखनहु ई मुसलमानीए कलाक रूपमे विकसित अछि ।

किनारी– ई शब्द साड़ीक कोरवला भागक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । कोर वला भाग जखन जड़ीदार कऽ देल जाइत छैक तँ किनारी कहल जाइत छैक । **रमापतिक** एकगोट गीतमे एकर उल्लेख भेल अछि– कनक **किनारा** राजित पहिरन नील दुकूल ।[248]

खोंइछा– **विद्यापतिक** एकगोट पदमे एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि । साड़ीक आँचरक अग्रभागकेँ दोहरि कऽ जखन वस्तु रखबाक व्यवहार कयल जाइछ तँ ओ भाग **खोंइछा** कहल जाइछ । **मित्र-मजुमदार** संस्करणमे **विद्यापतिक** ज्ञातिप्रामाणिक पदक संकलनमे एकर प्रयोगसँ इहो कहल जा सकैछ, ई शब्द लोकजगतमेसँ एहि पदमे संक्रमित भऽ गेल हो– केओ अगर चन्दन घसि भर कटोर । ककरहु **खोंइछा** कपूर तमोर ।।[249]

गेडुआ– **नन्दीपतिक** एक गोट नायिका विरह गीतमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि–

हरि बिनु सेज सून भेल सजनीगे **गेडुआ** मोहि न सोहाय ।[250]

घोघट– ई शब्द अवगुँठनक हेतु प्रयुक्त होइत अछि । नायिका अपन साड़ीक जाहि भागकेँ माथपर राखि ओकर अग्रभागसँ मुँह झँपैत छथि से **घोघट** कहल जाइछ । एकर माध्यमसँ नायिका अपन मुखकेँ परदा कयने रहैत छथि । एकर उल्लेख अनेक स्थलपर पदावलीमे भेल अछि, यथा–

खने खस **घोघट** विघट समाज[251] सिर लेल **घोघट** सारि ।[252]
सिरसँ ससरल **घोघट** रे जनि उगल चन्दा ।[253]

नन्दीपतिक **श्रीकृष्णकेलिमाला**मे तथा **कविलालक** **गौरीस्वयंबर**मे सेहो एहि शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ– एक करेँ **घोघट** ससारिकहु[254] **घोघट** बाधक छाल[255]

मनबोधक **कृष्णजन्म**मे एकर उल्लेख एहि पदमे दृष्टिगोचर होइछ–

अक्रूर रमनि से हरख सराहिअ । बड़ **घोघट** किछु तकलो चाहिअ ।।[256]

घोघटक हेतु **अवगुण्ठन** ओ **सीसपट** शब्दक प्रयोग सेहो देखि पड़ैछ–

पवने उड़ अवगुण्ठन वेकत होअ मुख काँति ।[257]
सीसपट गोरि टारि राखल भेल सगर इजोर हे ।[258]

चथइजे कोथइजे– ई शब्द आधुनिक भाषाक **चेथड़ी-केथड़ी**क हेतु प्रयुक्त भेल अछि । जर्जर वस्त्र खंडक समूहक हेतु आधुनिक भाषामे एहि शब्दक प्रयोग होइछ । **कीर्त्तिलता**मे कहल गेल अछि– **चथइजे कोथइजे** बेढ़ल माथ ।।[259]

ई पद सैनिकसँ सम्बद्ध अछि । संभवत: सैनिक लोकनिक माथ सुरक्षाक हेतु **केथरी चेथरी**सँ लपेटल रहैत छल ।

चुनरी– ई साड़ीक विशिष्ट प्रभेदक अर्थमे पदावली साहित्यमे भेटैछ । **हर्षनाथझाक** एकगोट गीतमे कहल गेल अछि– **चुनरि** भिजल सखि पहिररू बनाए ।[260]

मनबोधक **कृष्णजन्म**मे सेहो एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि– अति सुन्दर **चुनरी** गेल फुटि ।[261]

चूनि चूनि– ई शब्द वस्त्रक अतिजीर्णताक सूचक थिक । **विद्यापतिक** एकगोट पदमे एकर प्रयोग भेल अछि– **चूनि चूनि** भए काँचुअ फाटलि बाहु वलया भागु ।[262]

ई शब्द अत्यन्त पारिभाषिक कोटिक थिक तथा आधुनिको भाषामे **चुनी चुनी** रूपमे प्रचलित देखि पड़ैछ । जीर्णताक कारणेँ वस्त्रक सूतक घसाइत घसाइत विलुप्त होयबाक अर्थमे एकर प्रयोग होइछ ।

चोली– ई शब्द **कंचुकी**क पर्यायक रूपमे व्यवहृत देखि पड़ैछ । यथा– अलक तिलक दए **चोलि** निहारि ।[263] सबकाँ चीर सबहुकाँ **चोली** ।[264] **चोली** चीर चोरायकहुँ कदम चढ़ल यदुवीर ।[265]

चोलीक पर्यायक रूपमे **चोलरि** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।

एकटा पदमे पटवाक माध्यमे नायिका द्वारा **चोली** बिनयबाक प्रसंगक उल्लेख अत्यन्त मनोरंजक अछि–

पटेवा भैया हीत मीत सुन बालहिआ । **चोलरि** एक बिनि देहि परम हरि बालहिआ ।
जब हमे **चोलरि** बीनहि सुन बालहिआ । काह बिनउनी देह परम हरि बालहिआ ।
लहुरी देउ रतासना सुन बालहिआ । ननद बिनउनी देउँ परम हरि बालहिआ ।[266]

एहिसँ प्रतीत होइछ जे चोलीपर **कसीदा**क काज अवश्य होइत छल आ बेलबूटाक कारणेँ ई विशेष आकर्षक होइत छल ।

जनउ– ई शब्द **कीर्त्तिलता**मे प्रयुक्त भेल अछि। एकर अर्थ अछि यज्ञोपवीत वा यज्ञसूत्र जे उपनयन संस्कारक बाद द्विज वर्णमे धारण करबाक व्यवहार रहल अछि। **कीर्त्तिलता**मे विद्यापति **'फोट चाट जनउ तोर'**[267] कहि मुसलमान लोकनिक अत्याचारक वर्णन कयलनि अछि।

मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे एहि शब्दक पर्यायक रूपमे **उपवीत** शब्दक अनेकश: उल्लेख देखि पड़ैछ, यथा– कान्ह विराजित **उपवीत** शेष।[268] धोती धवल तिलक **उपवीत**।[269]

नवकविराजक एकगोट पदमे **जनउअ, जनउब** शब्द भेटैत अछि–

सुरसरि जलेँ अभिषेक सविधि कए आध सुधाकर तिलक करे।
तनु अनुरूप विभूति विभूषण **जनउअ** लोनुअ भुजगवरे।[270]

कीर्त्तिलतामे **यज्ञोपवीत** शब्दक उल्लेख एहि पाँतीमे देखल जा सकैछ–

ब्राह्मणक **यज्ञोपवीत** चाण्डालहृदय लूल।[271]

झाँपब– ई शब्द मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वस्त्र द्वारा आवृत करबाक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि। एकर विविध रूप **झपाय, झपाबसि, झपलह, झाँप, झपाइ, झपाबह, झपावसि** आदिक उल्लेख देखि पड़ैछ– उरज अंकुर चिरे **झाँपायसि**।[272] उनत उरोज चिरे **झपाबए**।[273] अम्बरे वदन **झपाबह** गोरि।[274] खने हेरय खन राख **झपाय**।[275] काँइ **झपाबसि** बासे।[276] आँचर लेइ वदन कर **झाँप**। सखि जने आँचरे पएल **झपाइ**।[277] सूति रहल मोर आँचर **झपाइ**।[278] चञ्चल अंचल कए कुच **झपलह**।[279]

झीनि– ई शब्द पारदर्शी ओ अत्यन्त पातर प्रकृतिक वस्त्रक विशेषणक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि– **झीनि** समारि हाथ करि दिन्हो वचन सुनिअ नृप वारि।[280]

अनेक स्थलमे विरल विशेषण द्वारा एकरा प्रकट कयल गेल अछि यथा–

दूरहि सुतल विमुख भए सजनी विरले वसने मुख **झापि**।[281]

झोरी– ई वस्त्रक बनल दोहरि पंथक जकर उपयोग वस्तुजातकेँ उघबाक हेतु होइछ। मध्यकालीन साहियमे ई शब्द खास कऽ शैवपदावलीमे शिवक वेशक विशिष्ट अंशक रूपमे उल्लिखित होइत रहल अछि यथा–

झोरिआहु लैबाके नहि उसास।[282] **झोरि** रे काटि मूस जटा काटि जीवे।[283]
कतने **झोरि** सिन्दुरे भरलि।[284] भर उठि आएल छन्हि भसमक **झोरी**।[285]

ताग– ई शब्द सूतक पर्याय थिक। लालकविक **गौरीस्वयंवर**मे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि– पुरहित वेद भनथि भल। पीयर **तागेँ** लपेटल॥[286]

मनबोधक कृष्णजन्ममे सेहो एहि शब्दक प्रयोग ओ सूइ तथा तागक सहायतासँ

गाँथब सीअब आदि कार्यक अप्रत्यक्ष उल्लेख भेल अछि–

सुइ लय **बेधिअ गाँथिअ ताग**। हाथ छुबिअ त हाथहि लाग।[287]

दोपटा– ई पुरुषक उत्तरीय वस्त्र विशेष थिक जकरा लोक कान्ह पर रखैत छथि। मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे नन्दीपतिक **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि–

राधा अबइत देखि कहु कयल मलिन मुख काँति।
सूति रहल हरि काछिकहु दुहु दिश **दोपटा** जाँति।[288]

दोपटाक हेतु पारम्परिक शब्द **दुकूल आनन्दविजय** ओ **रूक्मिणी** परिणय नाटकमे प्रयुक्त भेल अछि– कुसुमक भूषण भवन **दुकूल**।[289] फुजल चिकुर अति मलिन **दुकूल**।[290] सकल गात **दूकूल** दृढ़ अति कतिहु नहि परकाश।[291]

धोती– एहि शब्दक प्रयोग मध्यकालीन पदावली साहित्यमे तँ नहि भेल दृष्टिगोचर होइछ मुदा नाट्यसाहित्यमे प्रवेशक गीतमे एकर प्रयोग भेल अछि यथा– **धोती**धवल तिलक उपवीत।[292] एहन टीका एहन **धोती**।[293] धवल तिलक उपवीत विशाल। **धौतवसन** युग कर जपमाल॥[294]

एतय **धौतवसन**सँ संभवत: धोतीएक निर्वचन भेल अछि।

धोबि– ई शब्द कपड़ा करबाक व्यवसायसँ सम्बद्ध जातिविशेषक हेतु प्रयुक्त होइछ। **मनबोधक कृष्णजन्म**मे धोबि एकर पर्याय रजक, स्त्रीलिंग **धोबिन** तथा कार्यस्थल **धोबिघटक** उल्लेख भेल अछि–

हरखित भए चलला दुहु भाए। **धोबिघट** देखलन्हि किछु दुरि जाए॥
आरे आरे रजक तोहेँ राजाक इआर। वसन दान किछु करह इआर॥
ई सुनि **धोबिआ** उठल रिहुआए। **धोबिन** कहल ठक दिऔन्हि लगाए॥
ई सुनि कृष्ण बाज जकाँ छूटि। मारल **धोबि धोबिघट** लेल लूटि॥
कनइत **धोबिन** तेजल घाट। सिन्दुर मेटओलन्हि बाटहि बाट॥[295]

नेत– ई छोट सन वस्त्रखंडक हेतु प्रयुक्त छल जकर आकृति संभवत: गमछा वा रूमाल प्रकृतिक होइत छलैक आ ई सामान्य **पहिरन, ओछाओन, ओढ़ना** ओ **मुँहपोछनाक** वस्त्रक रूपमे प्रयुक्त होइत छल। **ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकर**मे एकर सविशेष उल्लेख कयने छथि। **विद्यापति**क एक गोट पदमे एहि शब्दक प्रयोग नायिकाक अधोवस्त्रक रूपमे भेल अछि जे बाघछाल जकाँ डाँड़मे लपेटल रहबाक संकेत दिनक एहि पदसँ भेटैछ–

बाघछाल नहि मोरा **नेतक** वसनू।[296]

निचोल– ई शब्द विद्यापति पदावलीमे प्रयुक्त भेटैछ–

नील **निचोल** पहिरि इमे लेल ।[297] नील **निचोल** झाँपबि निज देह ।[298]

ई शब्द साड़ीक हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

रामवृक्ष बेनीपुरी एकर अर्थ **चोली** कयने छथि, जे समीचीन नहि बुझना जाइछ ।[299]

नीवी– एहि शब्दक बहुश: प्रयोग मध्यकालीन पदावली साहित्यमे भेल अछि । **रामवृक्ष बेनीपुरी** एकर अर्थ कोँचा कयलनि अछि ।[300] **डा.इन्द्रकान्तझा** सेहो एही अर्थकेँ स्वीकार करैत कहलनि अछि जे साड़ी पहिरबाक समयमे नीबी अर्थात् **कोचा** बन्हबाक प्रथा छल जे अद्यपर्यन्त प्रशस्त अछि ।[301] तथापि **कोँचा** अर्थ लेने एकर अर्थ स्फुट नहि होइत छैक किएक तँ सम्प्रति साड़ीक जे भाग कोँचा कहल जाइछ ओहिमे बन्धन देबाक अथवा गीरह मारबाक कोनो प्रयोजन नहि रहैत छैक । दोसर दिस पदावली साहित्यमे **नीबीकेँ** कतहु विघटलि अर्थात् खुलल,[302] कतहु निबेसलि अर्थात् ढील कयल कहल गेल अछि । अवश्ये **नीबी** डोँड़ीसँ कसि कऽ बान्हल रहैत होयत । एकरा बन्हबाक डोरी संभवत: **नीबीबन्ध** कहल जाइत छलैक । **नीबीबन्ध** सायासँ खोलल जा सकैत छल जकर उल्लेख एहि पदसँ भेटैछ– पीन पयोधर हरखि परसलन्हि **निबिबन्ध** फोँएलन्हि पानी ।[303]

नीबीबन्धमे गेंठ (गीरह) मारल रहैत छल जकर उल्लेख एहि पदमे देखि पड़ैछ–

सुनसुन नागर **निबिबन्ध** डोर । **गाँठिते** नाहि सुरत धन मोर ।।[304]

एहीतरहेँ **नीबी** ओ **नीबीबन्ध** वस्तुत: वस्त्रक ओ प्रकार भेद बुझना जाइछ जे अधोवस्त्र अर्थात् साड़ीकेँ कसिकऽ बन्हने रहैत छलैक ।

एहि शब्दक पर्यायवाचीक रूपमे **कसिनीडोर** शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ–

जखने हरल हरि आँचर मोर । रसभरे ससरू **कसिनी** डोर ।।[305]

एहूसँ स्पष्ट अछि जे ई अधोवस्त्रकेँ कसिकऽ बन्हबाक व्यवस्था विशेष छल जकरा हेतु डोरी सदृश कोनो वस्त्रखण्डक बहुश: प्रयोग पदावली साहित्यमे भेल अछि यथा– **निबि** बन्ध कएल उदेसे ।[306] **नीबिक** संगहि लाज विघटलि ।[307] **निबिबध** फोएक नहि अवकास ।[308] बिघटलि **नीबि** करे धर जानि ।[309] **नीवी** मोख करए के पार ।[310] सुदिढ़ओ **नीवी** ससर कत बेरि ।[311] **नीबीससरि** भूमि पड़ि गैल ।[312] कुचकी झाँपब **निबिहुक** अन्त ।[313] नीवी निविल ससर ते बीधि ।[314] **नीवी** विघटए गहए हारे ।[315] फूजल **नीवी** आनि मेराउलि ।[316] एक अधर कए **नीबि** निवेसलि दुइ पुनि तीनिन होइ ।[317] नीबिबन्ध परसे चमकि उठे गोरी ।[318] आलिंगए **नीबिबन्ध** बिनु खोरि ।।[319] **निबिबंध** न हरि किए कर दूर । एहो पए तोहर मनोरथ पूर ।।[320] **निबिबंध** तोड़ल कखन के जान ।।[321] जब **निबिबंध** खसाओल कान । तोहर शपथ हम किछु नहि जान ।।[322] तुरित चोँचओलहुँ **नीबिक** काज ।।[323] **नीबी** ससरि कतए दहु गेल । अपनहुँ आछ अनाइति भेल ।।[324] **निबिबन्धन** हरि किए कर दूर[325] फुजलि **नीबी** आनि मेराउलि ।[326] **नीबिबन्ध** के जान कि भेला ।[327] **नीबी** निरासलि पूजलि आस ।[328] पीन पयोधर हरखि परसि करू **निबिबन्ध** फोएलन्हि पानी ।[329] नीवी विघटए गहए हारे ।[330] कुचकी झापब **निबिहुक** अन्त ।[331] **नीबीबन्ध** बिनु फोएले फूज ।[332] बाँधलिए बाँध **नीबि** कत भाँति ।[333] दिढ़ कए बान्धल **निबिहुक** अन्त ।[334] निविड़ **नीबिबन्ध** कठिन कंचुक अधरे अधिक निरोध ।[335] कखनने फूजल **निवि** केओ नहि जाने ।[336] सुनह नागर **निबिबन्ध** छोड़ गाँठिते नहि सुरतधन मोर ।[337]

पटोर– ई मिथिलामे प्रचलित रेशमी साड़ीक विशिष्ट प्रभेद छल । एकर प्रयोग मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे खास कऽ **विद्यापति पदावलीमे** अनेकश: भेल अछि यथा– नील **पटोर** आनि अतिशय सुदिढ़ जानि ।[338] पहिरल **पटोर** झूल गुम हार ।[339] धेडर बान्हि **पटोरेँ** धयलह ।[340] तोहर माए जे पहिरू **पटोर** ।[341] मुखसुखे धेड़ुर काट **पटोर** ।[342]

पटोरक हेतु एकटा पदमे **पटोवाँ** शब्द भेटैछ–

धेन्दुल बान्धि **पटोवाँ** धएलह अइसनि तुअ परिपाटी ।[343]

पनही– एहि शब्दक प्रयोग **नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे **श्रीकृष्णक** वेशक वर्णनक क्रममे भेल अछि । एहि शब्दक अर्थ अछि जूता । कहल गेल अछि–

कर सर धनमी तूकमा **पनही** पैर विराज ।[344]

पहिरब– एहि शब्दक बहुश: उल्लेख मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वस्त्र ओ आभूषणसँ आवृत होयबाक अर्थमे भेल अछि । एकर विभिन्न स्वरूप यथा **परीहि, पिन्धु, पिन्धओलहुँ, पिन्धने, पिधि, पहिरल, परीहलि,** परिहल, परिहय, पिन्धायल, परीहल **पिन्ध, पहिर,** परीहन आदि भेटैत अछि यथा– दिव्याम्बर **पिन्धने** ।[345] वास **पिन्धु** विपरित तिलक तिरोहित ।[346] मोहि **पिन्धओल्हु** अपनहि हाथे ।[347] पीतवसन हे युवति **पिधि** लेह ।[348] रजत सहित धनि **पहिरल** मोति ।[349] कुसुम बोलि केश **परिहल** हार ।[350] न चेतए चीर न **परिहय** हारा ।[351] अङ्गुरि बलया भेल कामे **पिन्धाएल** ।[352] न **पिन्ध** कुसुम न बान्ध केस ।[353] दिढ़ कए **परिहसि** तन सम चीर ।[354] बाघछाल नित **पहिर** झारि ।[355] जलथल अम्बर रूचि **पहिराउलि** सेत सारंग कर वामा ।।[356] पुर परवेस **पहिर** परिधाने ।[357] सकल सिङ्गार कय मृगमद तनुदए वसन **परिहि** निल काँती ।[358] चान्दे **परीहलि** मोति[359] रात **परीहन** पल्लवदेल ।[360]

परिधान– पहिरबाक सामग्रीक हेतु **परिधान, परिहन** आदि शब्दक उल्लेख मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे भेल अछि यथा– आगे माइ **परिहन** गज केर चाम नाम थिक पशुपति हे ।[361] अभरण एक वस लेहं । हरि **परिधान** वसन मोर देहे ।[362] विषधर भूषण दिग**परिधाना** ।[363] जमाइक **परिहन** बाघछाल ।[364]

पाट– ई शब्द रेशमक पर्यायक रूपमे व्यवहृत भेल अछि । एकर उल्लेख **नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमालामे** देखि पड़ैछ– कछुटी **पाटक** हाटक कर वलयारुचि राज ।[365]

पाग– ई मिथिलाक विशिष्ट **शिरोवस्त्र** थिक । कम चाकर ओ अत्यन्त नाम वस्त्र खंडकेँ माथमे लपेटि एकरा धारण करबाक प्रथा रहल अछि । साठि हाथक वस्त्र खंडक उपयोग करबाक कारणेँ मिथिलाक **साठापाग** नामी अछि । मुदा पागकेँ टीकसँ कसि कऽ आवेष्ठित नहि कयने ई नीक ढंगसँ समंजित नहि रहि पबैछ । तेँ ढीलढाल भऽ एम्हर ओम्हर पलड़ि जा सकैछ जे अवढ़ङगाह पागधारीक द्योतक सिद्ध होइछ । एहन स्थितिमे पागक विशेषणक रूपमे **लटपट** शब्दक प्रयोग होइत रहल अछि जेना–

लटपट पगिया फलकल टीक । तखने बुझू तिरहुतिया थीक ।। आदि कहबी मे ।

मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **लटपटि** **पागक** उल्लेख **नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमालामे** देखि पड़ैछ– **लटपटि पाग** लाग बड नीक । उड़लि गुडी गुन गहि गहि झीक ।[366]

ई शब्द वस्त्रक विदीर्ण होयबाक अर्थमे प्रयुक्त क्रियापद थिक ।

फाटलि– एकर प्रयोग मध्यकालीन पदावली साहित्यमे सामान्य प्रयोगमे भेल अछि, यथा– चूनि चूनि भए काँचुक **फाटलि**[367]

नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमाला नाटकमे **फाड़ब** क्रियापदक प्रयोग भेल अछि–

फोलल चिकुर **फाटल** मोर चीरे । निज नख विकुटल अपन शरीरे ।[368]

विद्यापतिक एकगोट पदमे वस्त्रक फटबाक अर्थमे **दसिहालल** शब्दक उल्लेख भेटैछ– ई **दसिहालल** दखिन चीर ।[369]

फाड़– ई शब्द आधुनिक भाषामे **फाँड़** रूपमे प्रचलित अछि । धोतीक निचला भागकेँ समेटि डाँड़मे कसि लेलापर जे दोहरि बनि जाइत अछि से **फाँड़** कहबैत अछि अछि । एहि शब्दक उल्लेख **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे भेल अछि । गोपिकालोकनि श्रीकृष्णकेँ पिटबाक हेतु हुनक **फाँड़** पकड़ि स्ववश करैत छथि, एही समयक वर्णन अछि– **कोनहु पाग कोनहु फाड़** ।[370]

बघम्बर– मध्यकालीन शैव साहित्यमे खासकऽ शिवक स्वरूपक वर्णनक क्रममे हुनक विशिष्ट वस्त्रक हेतु एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि, यथा–

ललित कटितट पट **बघम्बर** हर दिगम्बर हे ।[371]

से छोड़बइत **बघम्बर** ससरल गिरिकुमरि मेलि हासपरा ।[372]

एकर अतिरिक्त विभिन्न सन्दर्भमे पारम्परिक आदिम वस्त्रमे **बघछाल**, **मृगछाल**,

गजचर्म, **बाकल डोर** आदिक उल्लेख भेल अछि । यथा– रुण्डमाल **बघछाला** व्यालउर उपर हे ।[373] रुण्डमुण्ड तनु भसम राजित वसन **बाघहि छाल** रे ।[374] आसन गौरि **मृगछाल** बनाओल रुण्डमाल कर लाय हे ।[375] सभहुक पहिरन **बाकल डोर** ।[376] **बघछल** काँख तर रहिया । वसन विहुन ओढ़न **बघछाला** ।[377] **गजक चरम बाघक छाल** ।[378] आगे माइ पहिरन **गजकेर चाम** नाम थिक पशुपति हे ।[379] गाञ्ज भिजाय भाङ्ग भउ भोजन सेज ओछाओल **बाघछला** ।[380] खन पित वसन खनहि **बघछाला** ।[381] जमाइक परिहन **बाघछाल** ।[382] **बाघछाल** नित पहिरे झारि ।[383] **बाघछाल** भासल जाइ ।[384]

बटुया– ई शब्द विद्यापतिक प्रसिद्ध नचारीमे भेटैत अछि । वस्तु रखबाक छोट सन झोराक आकृतिक वस्तुकेँ **बटुआ** कहल जाइछ । एकर उल्लेख एहि पदमे भेल अछि–

भांग नहि **बटुआ** रूसि बैसला । जोहि हेरि आनि देल हसि उठला ।[385]

बूनब– ई शब्द वस्त्रकेँ तैयार करबाक क्रियापदक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि । वस्त्र बिनबाक प्रक्रियासँ सम्बद्ध **जोलहा** ओ **पटवा** जातिक उल्लेख सेहो **विद्यापतिक पदावली** साहित्यमे भेल अछि । एहि तरहेँ पदावली साहित्यमे ई संकेतित अछि जे मध्यकालीन साहित्य संरचना कालधरि वस्त्र व्यवसायमे मुसलमानलोकनिक संक्रमणक स्थिति क्रमशः वर्चस्विताकेँ प्राप्त कऽ लेने छल । आधुनिक कालमे तँ क्रमशः पटवाक वस्त्र-व्यवसाय मिथिलामे उठले जा रहल अछि आ एकर बिनाइ, सिलाइ आदि समस्त प्रक्रियामे मुसलमाने कारीगरक वर्चस्विता देखि पड़ैछ । वस्त्र बिनबाक मजदूरीकेँ **बिनउनी** कहल गेल अछि । **बूनब, बिअउनी जोलहा** ओ **पटवा**सँ सम्बद्ध पद थिक–

पटेवा भैया हीत नीत सुन बालहिआ ।

चोलरि एक **बिनि** देह परम हरि बालहिआ ।।

ननद **बिनउनी** देउ परम हरि बालहिआ ।।[386]

आछे जाति जोलहा जेओ । ओले धरि नहि **बूनएसेओ** ।[387]

बोकान– ई वस्त्रसँ बनल विशिष्ट प्रकारक झोरा थिक जे खासकऽ भिखमंगा लोकनि अपना कान्हमे भिक्षान्न रखबाक हेतु व्यवहृत करैत छथि । ई धोतीकेँ दोबर कऽ ओकरा कोना कोनीकेँ बान्हि कऽ बनैत अछि । मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे शिवक वेशविन्यासमे एहि शब्दक उल्लेख विभिन्न नाटककार ओ कविलोकनि कयलनि अछि यथा– भसमे भरू **बोकान** ।[388] तोड़ब मएँ जटाजुट फोड़ब **बोकाने** ।[389] खनहि भसम भरू काँख **बोकान** ।[390]

फोड़ब बोकाने पदक प्रयोगसँ ई स्पष्ट नहि होइछ जे वस्त्रनिर्मित ई सामग्री फोड़ल कोना जाइत । तेँ एतय एकर अर्थ कमण्डलु सदृश वनस्पति पात्र बुझना जाइछ ।

मोजा– एहि शब्दक प्रयोग **कीर्त्तिलता**मे बाजारमे विक्रेय वस्तु रूपमे भेल अछि ।[391] एकर अर्थ अछि **पैतावा** अर्थात् पैरमे पहिरबाक वस्त्रनिर्मित पादत्राण विशेष ।

राखा– ई शब्द रक्षासूत्रक हेतु प्रयुक्त होइछ । एहि शब्दक प्रयोग महाकवि **विद्यापति**क गोरक्षविजय नाटकमे गोरक्षनाथक प्रवेशक गीतमे भेल अछि–

अएला हे रहे गोरखनाथ । **राखा** मुद्रा अभरण सिंगा साथ ।।[392]

बिघटब– एहि क्रियापद प्रयोग **विद्यापतिक पदावली**मे खास कऽ नीवीकेँ उन्मुक्त करबाक अर्थमे भेल अछि, यथा– **बिघटलि** नीवी कर धर जान्ति ।[393] नीवी **बिघटए** गहय हारे ।[394]

बीसा– एहि शब्दक प्रयोग **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि । एकर अर्थ अछि जेबी । **डा.सक्सेना** एकरा हेतु **बटुआ** अर्थ कयलनि अछि जे समीचीन अछि ।[395]

सन्नाह– ई लौहवस्त्र शरीरक सुरक्षाक हेतु सैनिक लोकनि धारण करैत छलाह । **कीर्त्तिलता**मे एकर उल्लेख भेल अछि ।[396]

ससरब– एहि क्रियापदक प्रयोग वस्त्रक अपन स्थानसँ नीचा दिस खसबाक सामान्य अर्थमे **विद्यापतिक पदावली** साहित्यमे अनेकश: भेल अछि आ एहि क्रममे एकर विविध रूप यथा, **ससरू, ससरि, ससरल** आदिक प्रयोग भेल अछि– रस भरे **ससरू** कसनि केर डोरा ।[397] नीवी **ससरि** भूमि पड़ि गेली ।[398] **ससरि** खसल चिर समरि न भेल ।[399]

साड़ी– ई नारीलोकनिक सामान्य परिधानीय वस्त्र थिक । एकर आधा अंश अधोवस्त्रक रूपमे डाँड़क परित: लपेटल रहैछ आ आधा भागसँ पीठ माथ ओ छातीक भाग झाँपल जाइत छैक । एकर प्रयोग मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **विद्यापति** बहुत कम कयने छथि, यथा–

छाड़ु कान्ह मोर **आँचर** रे फाटत नव **सारी** ।[400]
हरि बिनु हृदय दग्ध भेल रे झामर भेल **सारी** ।[401]

मुदा साड़ीक ई प्रयोग हिनक एहने पदावलीमे दृष्टिगोचर होइछ जे जनकंठसँ संकलित अछि । आकर ग्रंथसँ प्राप्त हिनक कोनो पदमे एहि शब्दक उल्लेख नहि भेलासँ एहि शब्दकेँ संक्रमित सेहो कहल जा सकैछ ।

विद्यापतिक एकगोट पदमे श्रीकृष्ण द्वारा नारी परिधान धारण करबाक क्रममे **साड़ी** शब्दक उल्लेख भेल अछि– अरुणाम्बर वर **साड़ी** पहिरल ।[402]

एकटा शैव पदमे सेहो एहि शब्दक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ– मढ़निक **साड़ी** देलनि ओछाय ।[403]

नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमालामे **पीअरि साड़ीक** उल्लेख भेल अछि–

सि सिन्दुर तनु पीअरि **साड़ी** ।[404]

आभूषणक शब्दावली– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे विविध प्रकारक आभूषणक नामावली आभूषण योग्य धातु एवं अन्य **सम्बद्ध** शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि ।

अभरन– अभरन शब्द आभूषण पर्यायक रूपमे अनेकश: प्रयुक्त भेल अछि । महाकवि **विद्यापति** पदावली साहित्यमे एकरा हेतु **भूषण, विभूषण, भूसन** आदि पर्यायक सेहो उल्लेख देखि पड़ैछ, यथा–

अभरन– लै **अभरन** कै षोडस सजनी गे ।[405] **अभरन** भूषण हलु छिरिआए ।[406] सोना रूपा अनका सुत **अभरन** ।[407]

विभूषण– अम्बर, सकल **विभूषण** सुन्दर ।[408] अम्बरे झापल **विभुखन** सुन्दरि ।[409]

भूषण– आनक **भूषण** लगल अंग ।[410] **भूषण** कए गजमोती ।[411] **भूषण** होएत दूषण लागी ।[412] उचितऔ **भूसन** मानए भार ।[413] निन्दअ चन्दन पहिरय **भूसन** ।[414] **भूखन** कएलें दूसन भेल ।[415] **भूषण** वसन मलिन भेल ना ।[416] **भूसन** भेल भारी ।[417] कुस भूज **भूषण** खिसिताले गेल ।[418] मनि नहि धरइ फनी कओन **भूसने** ।[419] **भूसन** भए परिणत भेल लाज ।[420] गगन मंडल दुहूक **भूखन** ।[421]

विद्यापति परम्पराक काव्य ओ मध्यकालीन मैथिली नाट्यसाहित्यमे **अभरन, भूषण, विभूषण** शब्दक बहुल प्रयोग देखि पड़ैछ । **गोविन्ददास**क पदमे **भूषण** ओ **अभरन** शब्दक प्रयोग एहि पद सभमे द्रष्टव्य अछि– मणिमय **भूषण** भूषित अंगी ।[422] छन छन अभरन अंग चढ़ाबइ छन छन तेजइ ताइ ।[423]

उमापतिक स्फुट गीतमे एही दूहू शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ–

जाए जमुना तीर सब सखि ठाढ़ि भेलि व्रजनागरी । नील पटतन साजि **भूषण** रूप जौवन आगरी ।[424] आएल नटनेसरी लेल परवेस । **अभरन** तेजि धए जोगिन भेस ।।[425]

एहिना **रत्नपाणि, नन्दीपति, हर्षनाथझा, चतुरचतुर्भुज, रमापति** आदिक पदमे गहनाक हेतु एहि शब्दसभक प्रयोग सामान्य देखि पड़ैछ, यथा–**रत्नपाणि** कमलाक ध्यानमे हुनक सौन्दर्यक वर्णन करैत कहने छथि– मणिमय जटित लसित सब **भूषण** ।[426]

नन्दीपतिक एकगोट गीतमे मुग्धाक नायिकाक आभूषणक प्रति अनुरागक वर्णनक क्रममे भूषण शब्दक प्रयोग भेल अछि– नव परिचय नव कामिनिरे **भूषण** अनुरागे ।[427]

प्रथम मिलनसँ सम्बद्ध हिनक अन्य मुक्तकमे सेहो **भूषण**क प्रयोग भेल अछि–

हार टूटि अ छिड़िआय गेल ना । **भूषण** वसन लोटाय गेल ना ।।[428]

चतुरचतुर्भुजक एक गोट गीतमे **विभूषण** शब्दक उल्लेख एहि पदमे भेल अछि–

पड़ल कुसुम घन रतन **विभूषण**[429]

रमापतिउपाध्यायक स्फुट गीतमे **भूषण** शब्दक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ–

किंकिनि कंकने केउर नेउर **भूषण** विमल अमूले ।[430]

शम्भुदत्तक गीतमे **भूसन** शब्दक उल्लेख एहि पांतीमे भेटैछ– भूसन अहि फुफकार करैया ।[431]

सुवंशलालक एकगोट शैवगीतमे **अभरन, आभूषण, विभूषण, भूसन**क एकगोट लोकप्रचलित पर्याय **गहना**क अत्यन्त स्वभावज उल्लेख भेल अछि– **गहना** के नहि पाओल और ।[432]

मध्यकालीन नाट्य साहित्यमे **विद्यापतिक गोरक्षविजय, उमापतिक पारिजातहरण, रामदासक आनन्दविजय** आदि अनेक नाटकमे **अभरन, भूखन, विभूषण** शब्द आभूषणक हेतु प्रयुक्त भेल अछि, यथा– अएलाहे रे गोरखनाथ । राखामुद्रा **अभरन** सिङ्गा साथ ।।[433] पीत वसन तनु **भूषण** मनी । जनि नवघन उग दामिनी ।।[434] कतए देह कहाँ कुन्तल कतए **भूषण** जाय हे ।।[435] अम्बर ललित वलित सभ **भूखण** भमह न तातल मूले ।[436] आगे माइ वरदक पीठ असवार छार तन **अभरन** हे ।[437] मणिमय सकल **विभूषण** कोढ़ि भूपति निकट भेलि गए ठाढ़ि ।।[438] **भूषण** मनि कञ्चल गजमोती ।।[439] **अभरन** एक रहल नहि थीर ।[440]

अङ्गद– ई बाहुक गहना छल जकर उल्लेख प्राचीन वाङ्मयमे प्रचुर रूपेँ भेल अछि । पारम्परिक शब्दक रूपमे एकर प्रयोग रमापतिक **रूक्मिणीपरिणय** तृतीय अंक नाटकमे श्रीकृष्णक रूप छटाक वर्णनक क्रममे भेल अछि ।

अङ्गुरि– ई शब्द हाथक आङ्गुरक गहना विशेषक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि । एकर आधुनिक भाषामे प्रचलित शब्द थिक **अंगुठी** ओ **औंठी** । एकर पर्याय **अंगुरी**क प्रयोग **विद्यापति** कयलनि अछि । **औंठी** तथा **अङ्गुठी**क प्रयोग सेहो मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे दृष्टिगोचर होइछ । यथा– **अङ्गुरि-अङ्गुरि** वलया भेल ।[441] **अंगुरी-अंगुरी** वलया पुनि फेरी ।[442] **अङ्गुठी**-कर **अङ्गुठी** शिर पाट बजाय ।[443] **औंठी**-केओ देल **औंठी** मुनरिया है ।[444]

इन्द्रनीलमणि– ई शब्द गहनामे जटित करबाक योग्य **इन्द्रनील** नामक रत्नक हेतु **उमापतिक** विष्णुवन्दनाक गीतमे व्यवहृत देखि पड़ैछ ।

अष्टधातु– आभूषण निर्माणक हेतु आठ गोट धातुक मिश्रण जाहिमे **सोना, चान्दी, ताम्बा,** जस्ता, राङ्ग, पारा आदि रहैछ, केँ **अष्टधातु** कहल जाइछ । एकर उल्लेख **कीर्त्तिलता**क हाटवर्णनमे भेल अछि । एहिसँ वस्तु निर्माणक प्रक्रियाकेँ घटना (संघटना) कहल गेल अछि । तद्जन्य चोटसँ होइत आवाजकेँ टांगारे (टंकार) कहल गेल अछि ।[445]

कनक– ई शब्द आभूषणक विशिष्ट धातु सोनाक पर्याय थिक । **विद्यापतिक** पदावली

साहित्यमे एकर बहुल प्रयोग भेल अछि । खासकऽ नायिकाक पयोधरक उपमानक रूपमे **कनककटोरा, कनकाचल, कनक सुमेरू** आदि स्वरूपमे एहि शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ । नायिकाक रूप सौन्दर्यक द्युतिकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु सेहो एकर विविध पर्याय ओ रूप यथा– **सोना, हेम, कनअ, कञ्चन, कनया, सोबरन, कनह** आदिक प्रयोग भेल अछि ।

कंचन– कंचने कामे गढ़ल कुचकुम्भ ।[446]

कंचन-कीर्त्तिलतामे **सोना**[447], **काञ्चन**[448], **कंचना**[449] ओ **कनअ**[450] शब्द कनकक विभिन्न पर्यायक रूपमे प्रयुक्त देखि पड़ैछ । एहि ग्रन्थमे सोनाक विक्रयस्थलक अर्थमे **कोनहटा** शब्द प्रयुक्त भेल अछि ।[451]

हेम– कोटि कोटि देल तुलना **हेम** ।[452]

सोना– सोनाक तुरना काग कि नाग ।[453]

कनय– निघने पाओल जानि **कनय** कटोरा ।[454]

कनया– तपत **कनया** जनु काजर भेल तनु ।[455]

सोबरन– एक लाख पूत सवा लाखनाती ।

कनह– तेजल **कनह** रेहा ।[456]

काँचन– **काँचन** कमल पवन उलटायल एहन वदन संचारि ।[457]

करनफुल– ई नारीक कानक गहना थिक जकर आकार **पुष्पाकृति** होइछ । **विद्यापतिक** एक गोट पदमे एकर प्रयोग अछि– कुंडल खोलि **करनफुल** पहिरल भरि तनु केसर पंका ।[458]

कसौटी– ई एक गोट पाथर होइछ जकर सहायतासँ सोन-चानी आदि धातुक परीक्षण कयल जाइत अछि । **कीर्त्तिलता**मे एहि हेतु **कसवट्ट** शब्दक प्रयोग भेल अछि–

मिता मिता कंचना विपअ काल **कसवट्ट** ।[459]

पदावलीमे एहि हेतु **कसौटा, कसौटी** ओ **कसटि** शब्द भेटैछ, यथा– कसल **कसौटा** न भेल मलान ।[460] कसिअ **कसौटी** चीन्हिअ हेम ।[461] जनु से सोना कसि **कसटिक** तेजल कनअ रेहा ।[462]

कांस्य– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे एहि शब्दक उल्लेख **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि । ई धात्विक मिश्रण ताम्बा ओ जस्ताकेँ विशिष्ट अनुपातमे मिलौलासँ बनैत छैक । वस्तुतः ई बासन तैयार करबाक विशिष्ट धातु थिक मुदा बहुधा निम्न आर्थिक वर्गक लोक एहूसँ आभूषण तैयार करबैत छथि ।

किरीट– प्राचीन शिरोभूषणक एहि तत्सम नामक प्रयोग **उमापति**[463], **रत्नपाणि**[464] इत्यादि कयने छथि ।

किंकिनि– ई नारी द्वारा कटिमे पहिरबाक गहना छल ।[465] एहि गहनामे बाज लागल रहैत छल, तेँ एहिसँ सुमधुर ध्वनि होइत छल ।[466] एहि तरहेँ ई स्पष्ट अछि जे ई गहना आधुनिक **डड़कसक** प्रकृतिक छल होयत । **उमापतिक** विष्णु वन्दनामे एहि पदक प्रयोगसँ स्पष्ट अछि जे ई गहना पुरुषोक द्वारा धारण कयल जाइत छल– कनक किरीट पुर कंठर नेठर कंकण **किंकिणि** पाँती ।[467]

कुंडल– ई कर्णाभूषण विशेष थिक । एकर उपयोग पुरुष ओ नारी दूहू द्वारा कयल जाइत रहल अछि । नायिकाक कर्णाभूषणक रूपमे एहि शब्दक बहुशः उल्लेख भेल अछि ।[468] कुंडलक आकृति चक्राकार होइत छल ।[469]

केयूर– ई नारी-पुरुष द्वारा बाहुक ऊपरका भागमे धारण कयल जाइत छल । ई बाजूबन्द सदृश होइत छल । एहि गहनाक उल्लेख **रमापति** ओ **उमापतिक** स्फुट गीतमे भेल अछि ।

कङ्कण– ई पारम्परिक हस्ताभूषणक नाम थिक जकर साम्प्रतिक तद्भव स्वरूप **कंगन** अछि । मध्यकालीन कंगनक लघु, गुरु ओ गुरुतमा संज्ञारूप क्रमशः **कंगन**[470], **कंगना**[471], **कंगनमा**[472] तीनूक प्रयोग भेल अछि । **विद्यापतिक** अधिकांश पदमे कंकण व्यवहार देखि पड़ैछ ।[473] कतोक ठाम **कंकनक** हेतु **कांकन** रूप भेँटैत अछि– हाथक **काकन** न आरसी काज ।[474] हाथ **काँकन** बाँधि बूढ़ महेसे ।[475]

मैथिली शैव साहित्ये **कङ्कन** शब्दक वैवाहिक प्रसंगमे **कंगनाक** अन्य स्वरूपक अर्थमे सेहो प्रयुक्त भेल अछि । वैवाहिक आचारमे आमक पातकेँ मोड़ि अक्षतादि दऽ सूतसँ बान्हि पहुँचीपर बान्हि देल जाइछ । एकरो **कंकन** कहल जाइत छैक । ई **कंकन** विवाहसँ चतुर्थी धरि वर कन्या धारण करैत छथि । संभवतः ई **कंकन** धातुक **कंकनसँ** पूर्वक आदिम संस्कृतिक गहनाक प्रतिनिधित्व करैछ ।

वैवाहिक आचारमे **कङ्कण**-वन्धनक सर्वाधिक विन्यस्त वर्णन **जगज्ज्योतिर्मल्लकृत हरगौरीविवाह** नाटकक एहि गीतमे भेल अछि–

साठिक चाउर आवक पात । **कंकण** बाधव शंकर गात ।।[476]

गढ़ायब– ई शब्द गहनाक निर्माण करयबाक क्रियापदक रूपमे **विद्यापतिक** एकगोट पदमे प्रयुक्त भेल अछि– अंगुरी वलया पुन फेरी । माँगि **गढ़ायब** बुझि कत बेरी ।।[477]

गाँठी– संभवतः ई बेलनाकार स्वर्णखंडसँ निर्मित गहनाक प्रकारक भेद छल । एकर उल्लेख **विद्यापतिक** एकगोट शैव पदमे भेँटैत अछि– त्रिशूल मङ्गाए देब गाठी ।[478]

घुघरू– ई चरणक गहना थिक । एकरा हेतु मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **घुघरू, घुघुरू, घुघुरि** आदि पर्याय भेँटैत अछि– घन घन घनन **घुघरू** कत बाजय[479]

जगत्प्रकाशमल्लक एकगोट गीतमे **घुघुरि** शब्दक प्रयोग भेल अछि–

तथुहु **घुघुरि** देब कर सब साजे ।[480]

नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमाला नाटकमे **घुघरू** शब्दक प्रयोग भेल अछि–

रूनझुन रूनझुन **घुघरू** बाज ।[481]

विद्यापतिक एकटा पदमे घुघरूक हेतु **घाघर** शब्द प्रयुक्त भेल अछि–

चरण **घाघर** बाजए मुण्डमाल ।[482]

चकमकि– ई शब्द गहनाक द्युतिक हेतु विशेषणक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि । **गोरक्षविजय** नाटकमे कहल गेल अछि– रतनक **चकमकि** चलए झंकार ।[483]

कुञ्जविहार नाटकमे सेहो एहि पदक प्रयोग भेल अछि–

चातरि **चकमक** थिर नहि रहइ ।[484]

चन्द्रमणि– ई मणिक विशिष्ट प्रकार अछि । **कीर्त्तिलतामे** एकरा **चन्द्रकान्त शिला**[485] पदमे **चन्द्रकान्तमणिक शिलाक** अर्थमे प्रयोग भेल अछि । **विद्यापतिक** प्रसिद्ध भगवती गीतमे एकर प्रयोग भेल अछि– वासर रैनि शवासन सोभित चरण **चन्द्रमणि** चूड़ा ।[486]

एहि पदसँ ई द्योतित होइछ जे ई अत्यन्त चमकयुक्त होइत छल आ शिरोभूषणमे लगाओल जाइत छल ।

चुरि/चूड़ि– ई हाथक आभूषण थिक । सोन ओ चानीक वलयाकार ई गहना पहुँचीपर नारी द्वारा धारण करबाक व्यवहार अछि । **विद्यापतिक** पदावलीमे **काँचन** ओ **कनक** **चूरिक** उल्लेख भेल अछि– नील वसन पर **कांचन चुरि कर**[487] **कनक चूड़ि** कर कंजे ।[488] केशपाश शिर खूटल कर **चुड़ि** फूटल रे ।

मिथिलामे शंखक चूड़ी पहिरबाक विशेष प्रचलन रहल अछि तथा लोकजगतमे एहि चूड़ीकेँ विशिष्ट रूपेँ लोकप्रियता प्राप्त रहलैक अछि । विद्यापतिक एक गोट पदमे संखा पदक प्रयोग **शंखा चूड़ीक** अर्थमे भेल अछि– **संखा कर चूर** वसन कर दूर ।[489]

एहि तरहेँ एहि आभूषणक हेतु **चूर, चुरि, चूड़ि** आदि शब्दरूप देखि पड़ैछ ।

चातर– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे एहि शब्दक प्रयोग जगज्ज्योतिर्मल्लकृत **कुञ्जविहार** नाटकमे भेल अछि । एहिमे कहल गेल अछि–

चातर चकमक चिर नहि रहइ । कुपुरुष प्रेम दिवस दुइ बहइ ।।[490]

अर्थात् कुपुरुषक प्रेम तहिना किछुए दिनमे समाप्त प्राय भऽ जाइछ जहिना चातरक चमक अधिक दिन नहि रहैछ । एहि शब्दक अर्थ कलइ कयल पदार्थ अछि । पानि चढ़ल पदार्थक चमक पॉलिस उड़ि गेलापर समाप्त भऽ जाइत छैक । से ओहन पदार्थकेँ चातर कहल गेल अछि । चातर कयनिहार व्यवसायी वर्गक हेतु महाकवि **विद्यापति चतरिया**[491] शब्दक प्रयोग कयलनि अछि– अइसन हठेँविघटओलह प्रेम । जैसन चतरिया हाथक हेम ।[492]

अर्थात् प्रेमकेँ तेना नष्ट कऽ देल जेना **चतरिआक** हाथक सोन नष्ट भऽ जाइछ । एहिसँ स्पष्ट होइछ जे **विद्यापतियोक** कालमे पानि चढ़यबाक व्यवस्था छल । हिनक एक गोट पदमे प्रयुक्त **कपट हेम**[493] शब्द एहि तथ्यकेँ सम्पुष्ट करैछ जकर अर्थ **मित्र-मजुमदार** संस्करणमे कृत्रिम सोना कयल गेल अछि–

नयन ओत भेले सबे किछु आने ।। **कपट हेम** धर कति खन बाने ।[494]

झमकायब– ई शब्द गहनाक ध्वनिक क्रियापदक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि–

खेदब मोंजे कोकिल अलिकुल बारब कर कङ्कन **झमकाइ** ।[495]

एकटा पदमे गहनाक जोर जोरसँ शब्द करबाक हेतु **झङ्कार** शब्दक उल्लेख भेल अछि– नहु नहु पएर दओँ उठ **झङ्कारे** ।[496]

टाड़– ई पहुँचीक आभूषण छल । एकरा **टाँड़, टयरा** कहल जाइत छैक । सामान्यतः ई सोन, चानी आदि बहुमूल्य धातुसँ बनैत छल मुदा गरीब घरक स्त्री पितरिक टाड़ गढ़ाय कऽ पहिरैत छली । **विद्यापतिक** एक गोट पदमे श्रीकृष्णकेँ पितड़क टाड़क संग तुलना करैत कहल गेल अछि– सखि हे बुझल कान्ह गोआरे । **पितड़क टाड़** काज कओने दहु ऊपर चकमक सारे ।[497]

एहिसँ ई प्रतीत होइछ जे एकर भीतर भाग कुधातु यथा पितड़िसँ बनल रहि सकैत छलैक । उपरसँ कोनो नीक धातुक चातर कयल रहबाक कारणेँ ई खूब चमकैत छल । कोशमे टाड़केँ **कैयूरक** पर्याय रूपमे गृहीत कयल गेल अछि ।[498] **शिवदत्तक सीतासंवर** काव्यमे एकरा जानकीक विशिष्ट आभूषणक रूपमे उल्लेख कयल गेल अछि– कर कंगन भुज **टाड़** विराजित ।[499] **कुञ्जविहार** नाटकमे काचक टारक उल्लेख भेल अछि– **काचक टार** काम नहि फबई ।[500]

निकुती– सोना आदि आभूषणक हेतु महार्घ धातु ओ आभूषणमे जड़ित करबाक रत्नकेँ जोखबाक हेतु तराजूक हेतु एहि शब्दक प्रयोग **विद्यापतिक पदावली साहित्यमे** भेल अछि– **निकुती** तौलि कएल अनुमान ।[501]

नूपुर– नूपुर चरणक आभूषण थिक । एकर उपयोग नारीमात्र करैत छथि । पदावली साहित्य ओ मध्यकालीन मैथिली नाटकमे एहि शब्दक बहुल प्रयोग देखि पड़ैछ ।

विद्यापतिक पदावलीमे एकर विविध रूप तथा **नेपुर, नेपुल** आदि भेटैत अछि यथा–

चरण **नूपुर** उपर सारि ।[502] **नेपुर** ऊपर करसि कसि थीर ।[503]

उमापतिक विष्णुवन्दनामे **नेऊर** शब्दक उल्लेख **नूपुरक** हेतु भेल अछि– कनक किरिटपुर केऊर **नेऊर** ।[504]

यैह शब्द **रमापतिक** शाक्तगीतमे भेटैछ– किंकिनि कंकन केयुर **नेऊर** भूषण विमल अमूले ।[505]

पाति– ई बाँहिपरक गहना थिक । एकर एकर उल्लेख **शिवदत्तक सीतासंबरमे** भेल अछि, रचल **पाति** जइबक टीका ।[506]

पितर– एकरा **पित्तर, पीतल, पित्तरि** कहल जाइत छैक । ई ताम्बा, जस्ता ओ राङ्क धात्विक मिश्रण थिक । महाकवि **विद्यापतिक** एकटा पदमे **पितरक टाड़** नामक गहनाक उल्लेख भेल अछि ।[507] **पितरक** टाड़काज कओने दहु उपर चकमक सार ।

फटिक– ई स्फटिकक मणिक तद्भव रूप थिक जकर प्रयोग **विद्यापतिक पदावलीमे** **फटिक** वलय[508] **फटिकक** माला[509]क उल्लेख कयने छथि ।

बलया– ई पहुँचीक आभूषण थिक । ई अपेक्षाकृत मोट प्रकृति तथा गोल होइछ । एकरा चूड़ीक आगा-पाछाँ पहिरल जाइत छैक । मध्यकालीन पदावली साहित्यमे एकर बहुशः खासकऽ **विद्यापतिक पदावलीमे** भेल अछि ।[510]

एहि तरहेँ एहि आभूषणक विभिन्न विकल्प स्वरूप यथा बलया, वलय आदि देखि पड़ैछ ।

बाजूबन्द– ई बाँहिक गहनाक एकगोट प्रकार थिक । एकर उल्लेख **शिवदत्तक सीतासंबरमे** भेल अछि ।[511]

बिछिआ– ई पैरक आङ्गुरक गहना थिक । एकर आकृति अँगूठी सदृश होइत छैक । संभवतः एकर उपरका भागमे बिच्छाक सदृश आकृति बनल रहबाक कारणेँ एक **बिछिआ / बिछुआ** कहल जाइत हो । **शिवदत्तक सीतासंबरमे** एहि गहनाक उल्लेख भेल अछि ।[512]

बेसर– ई नाकक आभूषण थिक । एकरा **बेसरि** सेहो कहल जाइत छैक । एहि गहनाक मध्यकालीन साहित्यमे अनेक संदर्भमे भेल अछि ।

बिजओठ– ई बाँहिक गहना थिक । एकर निर्माण सामान्यतः चानीसँ होइछ वा ई अत्यन्त चकमक करैछ । एकर उल्लेख **विद्यापतिक** शैव पदमे भेल अछि– **बिजओठ** देव जपमाला ।[513]

मञ्जीर– ई पएरक आभूषण छल । एकर उल्लेख **विद्यापतिक पदावली** साहित्यमे अनेक ठाम भेल अछि ।[514]

मनि– ई शब्द गहनामे जटित करबाक पाथरक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । कतोक प्रसंगमे एकर उल्लेख देखि पड़ैछ– मणिमय सकल विभूषणकादि ।[515] भूषन **मनि** कञ्चन गजमोती ।[516]

माणिक– ई शब्द **माणिक्य** पर्यायक रूपमे उल्लिखित भेल अछि । **विद्यापतिक** कतोक पदमे एकर उल्लेख भेल अछि– रांक न फाबए **मानिक** लोभ ।[517]

ई शब्द **गोरक्षविजय**, **श्रीकृष्णकेलिमाला** आदि नाटकमे भेटैछ ।[518]

माँगटीका– ई आभूषण सीमन्तपर पहिरल जाइछ । एकर एकल उल्लेख **शिवदत्तक सीतासंबरमे** भेल अछि ।[519]

मुकुट– ई शिरोभूषण थिक जकर उपयोग सूदूर प्राचीनकालसँ होइत रहल अछि । मध्यकालीन नाट्यसाहित्य तथा पदावली साहित्यमे एकर कतोक प्रसंगमे उल्लेख भेल अछि ।[520] **शिवदत्तक सीतासंबरमे** एकरा हेतु **मटुक** शब्द आयल अछि– माथे **मटुक** तिलक वनमाला ।[521]

मुदरि– ई हाथक आङुरक गहना थिक । एकरा **मुनरी** कहल जाइत छैक । एकर संस्कृत रूप **मुद्रिका** थिक । नामाँकित अंगूठीक प्रभेदकेँ **मुद्रिका** कहल गेल अछि । मुदरि / **मुदली**[522] एवं **मुदरिआ**[523] रूप भेटैछ– कर सए कंकन **मुदरि** । पथहि तेजल सगरि ।[524]

कान्हारामक गौरीस्वयंवर नाटकमे **मुनरिआ** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[525]

एहि तरहेँ एकर हेतु **मुदरि**, **मुदली**, **मनुरिआ**, **मुदरिआ**, **मुद्रा** आदि पर्याय ओ विकल्पक उल्लेख भेल अछि ।

मेषला– ई कटिक गहना थिक । पदावली साहित्यमे एकर प्रयोग एहि पदमे द्रष्टव्य अछि– मुखर **मेषल** करे निवारी ।[526]

मोती– ई नाकमे पहिरबाक छक, खुटिला, नकमुनीक प्रभेद छल । **विद्यापतिक** एक गोट पदमे नायक द्वारा नायिकाक एहि आभूषणकेँ उतारबाक वर्णन भेल अछि–

नासा **मोतिम** गीमक हार । जतने उतारल कत परकार ।।[527]

मोती वस्तुतः एकटा नग सेहो थिक जकर माला बनैत छैक । एहि नगक हेतु मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **मोतिम**, **मोत्ति**, **मुकुता**, **मुक्ता**, **मोति** आदि शब्द प्रयोग देखि पड़ैछ, यथा– मणि मुनि चरण युगुल मुकुतावलि ।[528] उर **मोतिम** हारा ।[529] बेधहु मानिक **मोती** ।[530]

मोहर– ई सोनाक प्रचलित मुद्रा मुसलमानी शासनकालमे रहल अछि । परवर्ती कालमे एकरा गाँथि कऽ गहना करबाक व्यवहार सुप्रचलित **मोहरमाला** शब्दमे भेटैछ । श्रीकान्तगणकक **श्रीकृष्णजन्मरहस्यमे** यद्यपि एकर प्रयोग **मुद्रेक** रूपमे भेल अछि मुद्रा

एकरो गँथाए गहना बनाओल जाइत होयत से सहज संभाव्य अछि । **श्रीकृष्णजन्मरहस्यमे** मोहरक प्रयोग एहि पदमे भेटैछ– नारक्षिनाउनि दगरिन पाओल **मोहर** रे ।[531]

रजत– ई आभूषणक अपर धातु थिक । सोनाक अभावमे एकर गहना लोक व्यवहारमे अछि । पारम्परिक मान्यताक अनुसार कटि ओ तकर नीचाक गहना सुवर्णक नहि धारण कयल जाइछ । एहि हेतु एही धातुक व्यवहार होइछ । एकर प्रचलित नाम **चानी**, **चान्दी** अछि । **रमापतिक रूक्मिणीपरिणय** नाटकमे एहि धातुक उल्लेख आभूषणीय धातुक रूपमे भेल अछि ।[532]

रतन– ई शब्द मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे रत्नक पर्यायक रूपमे उल्लिखित भेल अछि । आभूषणीय धातुमे जटित करबाक हेतु प्रयुक्त विविध प्रकारक नगक हेतु सामान्य शब्द **रत्न** अछि । एहिमे **हीरा**, **मणि**, **वैदूर्य**, **प्रवाल** आदिकेँ परिगणित कयल जाइछ । **विद्यापतिक** पदावली साहित्यमे एहि शब्दक बहुशः प्रयोग भेल अछि, खासकऽ उपमानक रूपमे ।

रसना– एहि आभूषणक उल्लेख **विद्यापतिक पदावली** ओ **रूक्मिणीपरिणय** नाटकमे भेल अछि । **मित्र मजुमदार** एकर अर्थ **कमरधनी** कयने छथि । संभवतः ई डड़कसक कोनो प्रभेद छल । पदावलीमे कहल गेल अछि– नूपुर **रसना** परिहर देह ।[533]

रमापतिक रूक्मिणीपरिणयमे कहल गेल अछि– अङ्गद वलय **रसन** मञ्जीर ।[534]

रूनुझुनु– ई शब्द गहनाक मृदु मन्दस्वरक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । विशेषतः नुपूरक ध्वनिक हेतु[535], **घुघरू** शब्दक हेतु[536] तथा **बिछिआक** शब्दक हेतु[537] एकर उल्लेख अछि ।

रूपा– ई चानीए जकाँ एकटा धातु थिक जाहिमे चानी ओ तामक मिश्रण विशिष्ट अनुपातमे रहैत छैक । इहो आभूषणमे प्रयुक्त होइछ । **विद्यापतिक** एक गोट शैवपदमे एकर उल्लेख भेल अछि । सोना रूपा अनका सुत अभरन आपन रूद्रक माल ।[538]

वीरा– ई कानक आभूषण थिक । साम्प्रतिक भाषामे एकरा **वीर**, **वीरझुम्मक** कहल जाइत छैक । एहि गहनाक एकल उल्लेख मध्यकालीन मैथिली साहित्यक **श्रीकृष्णकेलिमालामे** भेटैत अछि– श्रुतिकुण्डल **वीरा** चमक पिपही वेणु बजाव ।[539]

साटंक– इहो कानक आभूषण थिक । एकर आधुनिक नाम **तड़की** बुझना जाइछ । एहि शब्दक प्रयोग **रमापति उपाध्यायक** त्रिपुरसुन्दरीकध्यानमे भेटैछ यथा– श्रुति **साटंक** विशाला ।[540]

सोन– इहो कानक गहना थिक । उक्ति प्रसिद्ध अछि **कान भेल त सोन नहि, सोन भेल तँ कान नहि** । ई नेनाक कर्णाभूषणक रूपमे वर्णित भेल अछि–

कातिक गणपति दुइ जन बालक जग भर के नहि जान ।
तनिका **अभरन** किछुओ ने थिकइन रति भरि **सोन** नहि कान ।[541]

हार– एहि शब्दक बहुल प्रयोग मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे भेल अछि । ई गर्दनिक गहनाक रूपमे प्रयुक्तभेल अछि । एकरा हेतु गरहार, गिमहार, हार, गृमहार आदि शब्दक प्रयोग भेल अछि । **विद्यापतिक** वर्णनसँ स्पष्ट होइछ जे एहिमे मणिओ मोतीक प्रयोग लोकप्रचलित रहल अछि । मोतीक हेतु **मुकुता**, **मोतिम**, **गणमुक्ता** आदि शब्दक प्रयोग भेल अछि । पहिरल पटोर गृम झूल **हार** ।[542] कुसुम बोलि केश पहिरल हार ।[543] कर कौशल कर धरइत रे **हरवा** उर टार ।[544]

एहि तरहेँ महाकवि हारक तीनू संज्ञारूप लघु, गुरु ओ गुरुतम अर्थात् **हार**, **हारा** ओ **हरवाक** प्रयोग देखल जाइछ । हारसँ सम्बद्ध अन्य शब्दावलीसभ अछि–

मोतिमहार– टूटि छिड़िआएल मोतिम हार ।[545] टूटल गिम मोतिहारा ।[546] गिमगज मोतिमहारा ।[547] फूटल वयल टूटल **गिमहार** ।[548] गिम सनो लावल **मुकुताहारे** ।[549] गिम **गजमुक्ताहार** ।[550] तोरह **गजमोतिहार** रे ।[551] कान कुण्डल सोभे गले **गजमोती** ।[552] गरहार-करब मोर **गरहार** ।[553]

मणिमयहार– मणिमयहार धार बह सुरसरि ।[554] हारक हेतु **माल** शब्दक प्रयोग सेहो भेटैछ– बानर कंठ कि मोतिम **माल** ।[555] टूटि पड़ खिति मसृण **मुकुतामाल** रे ।[556]

मध्यकालीन मैथिली नाट्यसाहित्यमे सेहो **हार**, **गृमहार**, **मणिमयहार** आदि शब्दक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ ।

हीरा/हीर– ई आभूषणमे जटित करबाक विशिष्ट पाथर होइछ तथा अपन द्युति ओ महार्घता तथा कठोरताक हेतु प्रसिद्ध अछि । मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे एहि शब्दक उल्लेख बहुश: भेल अछि ।[557]

प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । प्रसाधनक हेतु तद्‌भव संज्ञा **पसाहनि**[558], **पसाह**[559], **पसाही**[560] **पसाहनि**[561] आदि शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ । एहि शब्दसभसँ अंग- सौन्दर्यक संवर्द्धन हेतु शृंगार-पटार करबाक अर्थध्वनित होइछ । क्रियापदक रूपमे **पसाहह**[562], **पसाहलि** आदिक क्रियापदक प्रयोग भेटैत अछि–

मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे सेहो अनेक नाटककार एहि शब्दक नाट्यगीतमे प्रयोग कयलनि अछि यथा– चरण **पसाहन** कर सए चारि ।[563] मंगल गाबि **पसाहि** गिरिजा कोबर देल पहुँचाय हे ।[564]

मध्यकालीन पदावली साहित्य ओ नाट्यसाहित्यमे प्रयुक्त प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीकेँ सुविधाक हेतु निम्नवर्गमे बाँटल जा सकैछ– 1. **केशप्रसाधन**, 2. सीमन्त प्रसाधन, 3. ललाट प्रसाधन, 4. कपोल प्रसाधन, 5. नयन प्रसाधन, 6. **मुख प्रसाधन**, 7. **पुष्प प्रसाधन**, 8. अंगराग, 9. चरणप्रसाधन, 10. **शय्या प्रसाधन**, 11. **प्रसाधनसामग्री** ।

केशप्रसाधन : केशक हेतु मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे **केस**, **केसपास**, **कुन्तल** **अलक**, **चिकुर**, **कबरी**, **कच** आदिक तत्सम वा अर्द्धतत्सम पर्यायक प्रयोग सामान्यत: भेल अछि । तद्‌भव ओ देशी शब्द **बार** एवं **झाँटक** प्रयोग सेहो कतिपय स्थल पर देखल जाइछ । केशक समूहक हेतु **केशपास** शब्दक प्रयोग भेल अछि । **कीर्त्तिलतामे** महाकवि **विद्यापति वेश्यावर्णनमे** एहि शब्दक उल्लेख **केशपास बन्धनो**[565] पद द्वारा कयलनि अछि । हिनक पदावलीमे सेहो अनेक स्थल पर **केसपास** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[566]

केशक विशेषणरूपमे **सामर** (श्यामल), **झामर**, **कुटिल** आदिक उल्लेख कतोक पदमे भेटैछ ।[567] केशसँ सम्बद्ध क्रियापदमे **बान्हब**, **फूजब**, **समारब**, **उधसब** आदिक प्रयोग देखि पड़ैछ । मध्यकालीन नाट्यगीतमे सेहो एही तरहक प्रयोग भेटैत अछि । फूजल केसक हेतु **आकुल** विशेषणक तथा अस्तव्यस्त केसक विशेषणक रूपमे **उधसल** शब्दक प्रयोग भेल अछि । **उधसब** क्रियापदसँ सम्बद्ध **उधसि**, **उधसु**, **उधसल** आदि रूप भेटैछ ।[568]

ओझरायल केशक विशेषणक रूपमे **अरूझाएल**, **ओझरायल**, **अरूझायल**, **रूझायल** आदि शब्द भेटैछ यथा– कुचयुग उपर चिकुर फूजि **पसरल** ता **अरूझाएल** हारा (मि०म० 216) अधर सुखायल केस **ओझरायल** (मि०म०, 305) चिकुर सेमार हार **अरुझाएल** (मि०म०, 234) केश **अरुझाएल** अधर सुखायल (मि०म०, 64)

केशप्रसाधनक एकगोट विशिष्ट शब्द जे मध्यकालीन मैथिली शैव पदावलीमे भेटैछ से थिक **मउल** । ई शब्द **मौड़क** हेतु प्रयुक्त भेल अछि । शिरक भागकेँ सौन्दर्यपूर्ण बनयबाक हेतु वैवाहिक प्रकरणमे वरकेँ **मौड़** पहिरबाक प्रथा औखन अछि ।

कुन्तल– एहि शब्दक प्रयोग केसक पर्यायक रूपमे मध्यकालीन पदावली साहित्य ओ नाट्यसाहित्यमे भेल अछि । **विद्यापतिक** अनेक पदमे एहि शब्दक उल्लेख भेल अछि ।[569]

अलक– ई शब्द केशक पर्यायक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि । **विद्यापति** पदावलीमे एहि शब्दक अनेकश: प्रयोग भेल अछि ।[570]

चिकुर– **विद्यापति** पदावलीमे केशक हेतु **चिकुर** शब्दक बहुल प्रयोग भेल अछि ।[571]

नन्दीपतिक[572] स्फुट गीत ओ **सिद्धिनरसिंहमल्लक**[573] गीतमे सेहो शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

कबरी– केशक पर्यायक रूपमे एहि शब्दक उल्लेख **विद्यापतिक पदावलीटामे** देखि पड़ैछ ।[574] एकर तद्‌भव रूप **कँबारि** सेहो **विद्यापतिक** पदमे भेटैत अछि ।[575]

कच– केशक पर्यायक रूपमे **कच** शब्दक उल्लेख **विद्यापति**[576] ओ **सिद्धिनरसिंहमल्लक**[577] गीतमे तथा **लालकविक गौरीस्वयंवर**[578]मे भेल अछि ।

बार– एहि शब्दक उल्लेख पर्यायक रूपमे **विद्यापतिक** एहि पदमे देखि पड़ैछ–

सासु समारल फूजल **बार** । (मि०म० 67)

झोंट– ई शब्द **विद्यापति पदावलीमे** बिनु बान्हल असंयमित केशराशिक हेतु प्रयुक्त बुझना जाइछ– धम्मिल्ल लोल **झोंट** कए बन्ध । (मि०म० 928)

केशप्रसाधनसँ सम्बद्ध शब्दावलीमे मध्यकालीन मैथिली साहित्य मध्य किछु विशिष्ट शब्द सभ अछि **धमिल, लट, बेनी, जूड़ा,** जटा इत्यादि ।

धमिल– धम्मिल्लक तथा एकर तद्भव रूप धमिल **धम्मिल** केशक खोपाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । **विद्यापति** एकर बहुल प्रयोग कयने छथि ।[579]

लट– ई शब्द ऑंशिक समूहक हेतु **शिवदत्तक पारिजातहरणमे** प्रयुक्त भेल अछि–

आए अधर पर छुटल चिकुर लट, मनमथ हरि मन जाग ।[580]

बेनी– ई शब्द केशक गुहल जुट्टीक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । **विद्यापति** एहि शब्दक बहुल प्रयोग कयलनि अछि ।[581]

रमापतिक रूक्मिणीपरिणय नाटक[582]मे रूक्मिणीक सौन्दर्यवर्णनमे तथा **भानुदत्तक प्रभावतीहरण** नाटक[583]मे प्रभावतीक सौन्दर्यवर्णनमे एहि शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

जूड़ा– इहो शब्द जुट्टीएक हेतु प्रयुक्त शब्द थिक । एकर प्रयोग **विद्यापतिक** एक गोट शैव पदमे एहि रूपेँ दृष्टिगोचर होइछ– सुरसरि नीर समारब **जूड़ा** ।[584]

जटा– ओझरायल केशगुच्छक विशिष्ट जटिलताकृतिकेँ जटा कहल जाइछ । मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे जटा, जटाजुटा, जटाचय, जटी आदि शब्दक प्रयोग भेल अछि । **कीर्त्तिलतामे** जटी शब्दक प्रयोग जटा धारण कयनिहार सामान्य जनक हेतु भेल अछि ।[585] अन्यत्र जटा, जटाजूट ओ जटाचय शब्दक प्रयोग शिवक वेशवर्णनक क्रममे शैवसाहित्य मध्य होइत रहल अछि ।[586]

सीमन्त प्रसाधन– सीमन्त प्रसाधनमे सिन्दूरक उल्लेख अनेकशः भेल अछि । एकर विविध रूप **सिन्दूर, सिन्दुर,** सिनूर आदि भेटैत अछि । **विद्यापतिक कीर्त्तिलतामे** वेश्यावर्णनमे **सिन्दूरक** प्रयोग भेल अछि । **विद्यापति, नंदीपति** आदिक पदावली, **मनबोधक कृष्णजन्म** तथा **लालकविक गौरीस्वयंवर** ओ **नन्दीपतिक श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटक आदिमे एहि शब्दक उल्लेख देखि पड़ैछ ।

ललाट-प्रसाधन– ललाट प्रसाधन हेतु प्रयुक्त शब्दावली सभ अछि– **फोटा,** तिलक, टीका ओ त्रिपुण्ड् । फोटाक प्रयोग **विद्यापतिक कीर्त्तिलतामे** फोटाक अन्य रूप **फोट**

भेटैछ ।[587] **फोटा** शब्द ठोपक हेतु नारी ओ पुरुष दुहूक प्रसाधनक हेतु प्रयुक्त भेल अछि । एकर प्रयोग **विद्यापतिएटा** कयलनि अछि ।

तिलक शब्दक बहुशः उल्लेख पदावली साहित्यमे भेल अछि । तिलकमे चन्दन ओ **मृगमदक** उपयोगक उल्लेख अछि ।[588] विद्यापतिक एकगोट पदमे **वक्राकार तिलक** करबाक उल्लेख अछि ।[589] **कीर्त्तिलतामे** तिलकक हेतु **तिलकन** शब्द भेटैछ ।[590] मध्यकालीन नाट्यसाहित्यमे **रुक्मिणीपरिणय, कविलालक गौरीस्वयंवर, पारिजातहरण, शिवदत्तक गौरीस्वयंवर** आदिमे तिलकक प्रयोग भेल अछि । तिलकक हेतु रोचन नामक सुगन्धिद्रव्यक मिश्रणक सेहो उल्लेख भेटैछ ।[591]

टीका शब्द आनन्दविजय नाटकमे आनन्द कन्दक प्रवेश गीतमे उल्लिखित भेल अछि ।[592] **लालकविक गौरीस्वयंवरमे** शिवक प्रसाधनमे त्रिपुण्डक उल्लेख देखि पड़ैछ–

मालललित विशाल लोचन चन्द्र मण्डित त्रिपुण्ड रे ।[593]

कपोल-प्रसाधन– कपोल-प्रसाधनक विशिष्ट शब्द **अलक, अलका** भेटैत अछि । विद्यापति एकर बहुशः प्रयोग कयने छथि । ई **अलक** शब्द केसक हेतु प्रयुक्त अलक शब्दसँ भिन्न अर्थक द्योतक थिक ।

अलक वस्तुतः मृगमद पंकसँ बनबाक उल्लेख भेटैत अछि । नायिकाक मुखारविन्दपर **अलक** कयला उत्तर ओकर शोभा दाग लागल चन्द्रमा सदृश कहल गेल अछि । अलकक आकृति अंकुशक सदृश होइत छल । एहिसँ प्रतीत होइछ जे कपोलपर नारी लोकनि मृगमदसँ विभिन्न प्रकारक रेखाकृति ओ चित्र बना लैत छलीह जे **अलक** कहल जाइत छल । मुख सौन्दर्यक परिष्कृति **अलक** ओ **तिलकपर** आधारित छल । तेँ **अलक-तिलक** ओ **अलका-तिलकाक** प्रसाधनक विशिष्ट युग्म शब्दक रूपमे प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ यथा– सहजहि आनन अछल अमूल । **अलके तिलके** ससधर तूल ॥ (मि०म०, 317) प्रथमहि **अलक तिलक** लेब साजि । (मि०म०, 275) **अलक तिलक** तेँ बहि गेल । (मि०म०, 356) अलक तिलक न कर राधे । (मि०म०, 325) मृगमद पंक **अलका** । मुख जनु करह तिलका ॥ (मि०म०, 97) करहि सुन्दरि **अलक तिलक** बाधे । (मि०म०, 102) **अलक तिलक** हे सेहओ गेल दूर । (मि०म०, 68) विपरित अभिसार अमिय बरिस धार अङ्कुस कयल **अलके** । (मि०म०, 88) **अलक तिलक** कोअ मेटि देल । (मि०म०, 819)

नयन प्रसाधन– नयन प्रसाधनक सामग्रीक रूपमे **काजर** ओ **अंजन** शब्दक पर्याय रूपमे व्यवहार भेल अछि ।

काजर– एहि शब्दक उल्लेख **कीर्त्तिलतामे** सेहो भेल अछि । एहिमे कहल गेल अछि– **काहु काहु अइसने ओ संक, तकरे काजरे चान्द कलंक** ।[594] अनेक स्थलपर एकर तत्सम

रूप **कज्जल** भेटैछ ।[595] **विद्यापति**क पदावली साहित्यमे **काज्जल**[596], **काजर**[597] **काजरक**[598] बहुल प्रयोग देखि पड़ैछ । **नन्दीपति**क एक गोट गीतमे काजरक दीर्घ रूप **कजराक** उल्लेख भेटैछ– रोए रोए **कजरा** दहाए गेल ना ।[599]

हिनक **कृष्णकेलिमाला** नाटकमे सेहो **काजर** शब्दक प्रयोग भेल अछि– नयन **काजर** नहि मुख नहि पाने ।[600]

रूक्मिणीपरिणय नाटकमे **कज्जल** शब्दक प्रयोग भेल अछि– **कज्जले** होअ मलान ।[601]

अंजन– काजरक पर्यायक रूपमे **अंजन, आँजन** शब्दक प्रयोग **विद्यापति** पदावलीमे अनेकश: भेल अछि । यथा– नयनक **अंजन** निरञ्जन भेल । (मि०म०, 691) चंचल लोचन बान्धे निहारय । **अंजन** शोभा पाए । (मि०म०, 23) नयन कपूर **आंजन** समतूल । (मि०म०, 868)

नयनमे **काजर** वा **अंजन** लगयबाक क्रिया पदक हेतु **आँजबक** व्यवहार अछि यथा– अलप काजरें नयन **आँजल** (मि०म०, 4) चंचललोचने काजरे **आँजि** (मि०म०, 275) **अंजने** आँजि हासि गुण जोर । (मि०म०, 344) ताहिलय **आँजब** आँखि जोग पर चारब । (मि०म०, 878)

मुखप्रसाधन– मुखप्रसाधन मध्य पानक अनेकश: उल्लेख मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे भेल अछि । **कीर्त्तिलता**मे **जौनपुरक हाट**क वर्णनक **क्रममे पनहटाक** उल्लेख भेल अछि ।[602] एही ग्रन्थमे पानक महार्घताक उल्लेख करैत कहल गेल अछि– **पानक सए सोनाक हड़का** ।[603] **विद्यापति**क पदावली साहित्यमे **कुट्टनी**कें पानक संवाहिकाक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि– काहु के पान काहु दिअ सान ।[604]

एकगोट पदमे **पानसँ** सम्बद्ध लोकलक्षणाक विलक्षण प्रयोग भेल अछि– पानर मुख की शोभए **पान** ।[605]

हिनक विभिन्न पदमे पानक हेतु **ताम्बूल**, **तमौर** आदि पर्यायक सेहो प्रयोग भेल अछि– मुखज **ताम्बूल** देइ अधर सुरंग लेइ से काहे मेल घुमेला ।[606] मुख कोर पान सेहो रे मलिन भेल ।[607] ककरहु खोइछा करपूर **तमोर** ।[608]

नन्दीपतिक एकगोट गिरिजा पूजन गीतमे सेहो **तमोर** शब्दक प्रयोग भेल अछि–

बाटिहि चानन करपूर **तमोर** ।[609]

पानमे सुपारीक हेतु **गुआ** शब्दक उल्लेख **विद्यापति** पदावलीमे भेल अछि–

कत जतने दुति पठाओल आनए **गुआ पान** ।[610]

नन्दीपतिक **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटकमे नारीक मुख प्रसाधनमे पानक अभावकें

वैधव्यक परिचायकक रूपमे रतिकप्रवेशक गीतमे उल्लेख भेल अछि–

नयन काजर नहि मुख नहि पाने ।[611]

एहि नाटकमे राधाक मान भंगक क्रममे श्रीकृष्ण द्वारा **पान** देबाक वर्णन भेल अछि–

एक करें घोघट ससारि कहु दोसरे करे लए **पान** ।
अति हठे मुख **पान** दए कए सुख करुण निदान ।[612]

पानमे कर्पूर दऽ ओकरा सुवासित करबाक उल्लेख विद्यापतिक एहि पदमे भेटैछ–

चोर कपूर **पान** हमे बासलि ।[613]

पानक सविशेष विन्यासक उल्लेख **रमापति**क **रूक्मिणीपरिणय** नाटकमे एहि पदमे भेटैत अछि । एहिसँ पानमे दातव्य **इलायची, लवंग, कऽथ, कर्पूर, जायफल** आदि मशालाक उल्लेख भेटैछ–

एलाबीज **लवंग** सुकसित खदिर सहित घनसार ।
जातीफल दए विविध भाँति कए करिअ तमोर सँभार ।।[614]

पानकें कर्पूरादिकसँ सुवासित करबाक क्रियापदक रूपमे **बासलि** शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ– चोर कपूर **पान** हमे **बासलि** ।[615]

पुष्पप्रसाधन– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे पुष्प प्रसाधनक निपुल संख्यक शब्दावलीक प्रयोग देखि पड़ैछ । पुष्पक हेतु **पुहुप, पुहुपि,** फूल, कुसुम, प्रसून आदिक प्रयोग भेल अछि । पुष्पक विभिन्न प्रभेदमे **मालती, कुन्द, कमल, चम्पक, जातकि, केतकि, रतोपल, सिरिसि, कुमुद,** लीलोपल बेली, नागेसर आदिक उल्लेख भेल अछि ।

कमलक पर्यायमे अरविन्दक प्रयोग सामान्य अछि । चम्पकक पर्यायमे **चम्प, चम्पा, चाँपा** आदि भेटैछ । मालतीक अपर रूप मालति सेहो देखि पड़ैछ । **सिरिसक** हेतु **सरसि** शब्द सेहो भेटैछ । फूलक कोंढ़ीक हेतु **मुकुल** ओ कलि-कली शब्दक प्रयोग भेल अछि । फुलयबाक अर्थसँ सम्बद्ध **परगास, विगसित** शब्द भेटैछ । परागक हेतु **मकरन्द** तत्समक व्यवहार भेल अछि । फूलक उल्लेख नायिकाक केशप्रसाधन, लीलाकमल ओ शय्या प्रसाधनमे बहुश: देखि पड़ैछ । फूलक मालाक सेहो उल्लेख अछि । मालाक हेतु **हार** शब्दक प्रयोग भेल अछि । हारकें गंथबाक अर्थमे **गाँथु, गाँथल, गान्तल, गाथए, गाँथनि, गथइत, गाँथब, गाँथि, गाँथि,** आदि क्रियापदक प्रयोग भेल अछि । श्रीकृष्णक प्रवेशक गीतमे वनमालाक उल्लेख भेल अछि जकर लम्बाइ नाभि धरि कहल जाइछ ।

अंगराग– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे अंगरागक बहुश: उल्लेख भेल अछि । अंगरागमे **चन्दन, अगर, केसर, तेल, फुलेल, उबटन, कसाय, चतुस्सम, कुंकुम, कर्पूर,**

अरगज आदिक उल्लेख भेल अछि । सामयिक अंगरागमे अबीरक उल्लेख भेटैछ । एकरा हेतु **फाग** शब्द सेहो भेटैछ । शिवक विशिष्ट प्रसाधनमे **भस्म, विभूति** ओ **छाउर** ओ **छार**क उल्लेख भेटैछ । भस्मादिक लेपनक क्रियापद **मेलब** भेटैछ यथा **मौलि मेलए छार** । अंगरागक हेतु **अनुलेपन, अनुलेप, विलेपन, विलेप** शब्द भेटैछ । चन्दनक विलेपन चढ़यबाक अर्थमे **चरचब** क्रियापदक प्रयोग भेल अछि– **चन्दने चरचु पयोधर रे** । चन्दनक हेतु **चानन, चान्दन, मलयज** आदि पर्याय ओ तद्‌भवक प्रयोग भेल अछि । चन्दनक विभिन्नप्रभेदमे रक्त चन्दन ओ श्रीखण्डक उल्लेख भेल अछि । श्रीखंडक हेतु **सिरिखंड** स्वरूप सेहो भेटैछ । अगरक हेतु **अगरू**, केसरक हेतु **केसरि**, उबटनक हेतु उद्धर्तन तथा **कर्पूर**क हेतु **कर्पूर**, कप्पूर ओ घनसार शब्दक उल्लेख भेल अछि । उबटन लगा कऽ आभङगमर्दनक अर्थमे **उँगारब** क्रियापदक प्रयोग भेल अछि । एहि हेतु **उँगारि**, उगारिअ, उगारल, उगाचथि, उङ्गारि आदि स्वरूपक उल्लेख अछि । अंगरागक सौरभक हेतु **परिमल** शब्दक प्रयोग भेल अछि । चतुस्सम नामक सुगन्धिद्रव्यक मिश्रणक उल्लेख **कीर्त्तिलता**मे भेल अछि । **धूप** ओ **गुग्गुल**क उल्लेख सेहो भेल अछि । अङ्गरागादिक सम्पूर्णताक हेतु **सिङ्गार** शब्दक व्यवहार भेल अछि ।

चरण प्रसाधन– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे चरणप्रसाधनक शब्द **आल** एवं **जावक** भेटैत अछि । आल आलक्तकक तद्‌भव रूप थिक जकरा एखन **अलता** कहल जाइत छैक । **विद्यापति**क एकगोट पदमे कहल गेल अछि–

सुजन वचन खोटि न लाग । जनि दिढ़ करू **आल** का दाग ।[616]

जावक लाहसँ निर्मित चरण प्रसाधनक अर्थमे प्रयुक्त अछि । **विद्यापति पदावली**मे एकर अनेकशः उल्लेख भेल अछि– पद**जावक** हृदय मिन अछ ।[617] चरण **जावक** हृदय पावक दहइ सब अंग मोर ।[618] चरण कमल चारू **जावक** रंजल[619]

नन्दीपतिक एकगोट गीतमे **जावक**क हेतु **यवा** तत्सम रूपमे प्रयुक्त भेटैछ–

रक्त चानन **यवा** आला । हृदय हारक फूल माला ।।[620]

रामदासक **आनन्दविजय** नाटकमे एहि शब्दक उपयोग उत्प्रेक्षालंकारक प्रयोगक क्रममे भेल अछि– हाला ऐसो नयन जनि **जावक** डूबल चकोर हे ।[621]

शय्या प्रसाधन– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे शय्याकेँ पुष्पसँ सजयबाक बहुशः उल्लेख भेटैत अछि । **कीर्त्तिलता**मे **कुसुमशय्या**क उल्लेख भेल अछि ।[622] **विद्यापति**क अनेक पदमे शय्याकेँ विभिन्न प्रकारक पुष्पसँ सजयबाक उल्लेख भेल अछि । एहि प्रकारक पुष्पमे किछु उल्लेखनीय अछि तथा **सिरिसि, कुन्द, नलिनि, कमल** आदि । सेजकेँ चन्दनादिक सुगन्धिद्रव्यसँ सुवासित करबाक उल्लेख सेहो भेटैत अछि । शय्या प्रसाधनसँ सम्बद्ध **विद्यापति**क अनेको पद अछि ।[623]

गोविन्दकविक एकगोट पदमे शय्याकेँ **घनसार, शिशिर, उसीर, पङ्कज** आदिसँ सुवासित करबाक उल्लेख भेटैछ । **घनसार शिशिर उसीर पङ्कज** सजल नलिनी सेज ।[624]

नन्दीपतिक **श्रीकृष्णकेलिमाला**, रामदासक **आनन्दविजय**, भानुनाथक **प्रभावतीहरण** तथा **जगज्ज्योतिर्मल्ल**क **कुञ्जविहार** नाटकमे सेहो शय्याकेँ पुष्पसँ सजयबाक उल्लेख भेटैत अछि ।

प्रसाधन सामग्री– मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे प्रसाधन सामग्री मध्य किछु विशिष्ट शब्दक उल्लेख भेल अछि यथा दरपन, **मुकुर, आरसि नेत्रोछन** आदि । **दरपन, मुकुर, आरसि** आदि ऐनाक विविध पर्यायक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि । दर्पणक हेतु **दरपन** जो **दप्पन** शब्द भेटैछ यथा– **दरपन** धरब काजर देइ आँखि ।[625] **दप्पन** मुख प्रतिबिम्ब नाइ ।[626]

विद्यापति पदावलीमे **मुकुर** शब्दक बहुल प्रयोग भेल अछि ।[627]

कनक **मुकुर** ससि कमल जिनिया मुख ।[628] **मुकुर** लइ अब करइ सिंगार ।[629]

गोविन्ददास सेहो एहि शब्दक प्रयोग कयलनि अछि– **मुकुर** धरइ निज पास ।[630]

दरपनक हेतु **अरसी** ओ **आरसि** शब्दक सेहो अनेकठाम प्रयोग देखि पड़ैछ । **विद्यापति**क एकगोट पदमे लोकलक्षणक रूपमे **अरसी** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।

हाथक काकन **अरसी** काज ।[631]

जगज्ज्योतिर्मल्लक[632] गीतमे तथा **नन्दीपति**क **श्रीकृष्णकेलिमाला** नाटक[633] ओ **उमापति**क **पारिजातहरण**[634]मे **आरसि** शब्दक उल्लेख भेल अछि ।

एहि तरहेँ मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक प्रचुर शब्दावलीक उल्लेख होइत रहल अछि । षोडस शृंगार वर्णन, अर्द्धनारीश्वर वर्णन प्रवेशक गीत आदि तँ वेश भूषाप्रसाधनक शब्दावलीक विशिष्ट स्रोत दृष्टिगोचर होइते अछि, संगहि शृंगारसँ सम्बद्ध पद ओ शैव साहित्यमे वस्त्राभूषण प्रसाधनक शब्दावलीक बहुशः प्रयोग भेल अछि । कवि नाटककारलोकनिक ई सामान्य प्रवृत्ति देखल जाइछ जे ई लोकनि ओहने शब्दकेँ अपन वर्णन विन्यासक केन्द्रमे रखलनि अछि जे खास कऽ नारी सौन्दर्यकेँ गुणित करबाक आधार रहल अछि । स्वभावतः नायिकाक उत्तमांगसँ सम्बद्ध वस्त्राभूषण प्रसाधनक शब्दक बहुशः प्रयोग मध्यकालीन साहित्यमे दृष्टिगोचर होइछ । यद्यपि मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त वेशभूषाप्रसाधनक अधिकांश शब्दावली परम्परितेँ संस्कृत सम स्वरूपक दृष्टिगोचर होइछ मुदा कतोक शब्द अत्यन्त पारिभाषिको कोटिक प्रयुक्त भेल अछि जे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि ।

सन्दर्भ सूची :

1. विद्यापति की पदावली, पद सं० 72-73
2. प्राचीन बाङ्ला मैथिली नाटक स. विजितकुमारदत्त, बर्द्धमान विश्वविद्यालय वर्द्धमान, 1960, पृ. 211 ।
3. फूलपात- स. सुन्दरझाशास्त्री, विशेषांक विजयादशमी, 2029 (नानार्थ देवदेवी गीत संग्रह)
4. प्राचीन बाङ्ला मैथिली नाटक, पृ. 212
5. विद्यापति की पदावली-रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तक भंडार, पटना-4, संवत 2040 पद सं० 163
6. विद्यापति- सं. खगेन्द्रनाथमित्र तथा विमान बिहारी मजुमदार, पटना संवत 2010, पद सं० 710
7. विद्यापति की पदावली, पद सं०- 145
8. विद्यापतिक काव्यसाधना- डा. विश्वेश्वरमिश्र, दरभंगा, 1965, पृ. 181
9. मैथिली शैव साहित्य, डा०रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना- 1195, पृ. 69
10. गोविन्द गीताञ्जलि, सं० सुरेन्द्र झा 'सुमन', दरभंगा, 1980 पद सं० 18
11. गोविन्द गीताञ्जलि, पद सं० 19
12. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, स. डा. शशिनाथझा, पृ. 766 (शिवदत्तकृत सीतास्वंवर) ।
13. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 103
14. तत्रैव, गोरक्ष विजय, पृ. 113
15. तत्रैव, पृ. 125
16. तत्रैव, पारिजातहरण, पृ. 245
17. तत्रैव, पृ. 250
18. तत्रैव, पृ. 250
19. तत्रैव, पृ. 251
20. तत्रैव, पृ. 261
21. तत्रैव, पारिजातहरण, पृ. 267-268
22. मिथिला परम्परागत नाटकसंग्रह, आनन्द विजय, पृ. 170
23. तत्रैव, पृ. 171
24. तत्रैव, पृ. 180-181
25. तत्रैव, पृ. 196-197
26. तत्रैव, पृ. 200
27. तत्रैव, पृ. 201
28. तत्रैव, पृ. 204
29. तत्रैव, पृ. 208
30. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, उषाहरण, देवानन्द, पृ. 317
31. तत्रैव, पृ. 335
32. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, केलिमाला नाटक, पृ. 374
33. तत्रैव, पृ. 386
34. तत्रैव, पृ. 386
35. तत्रैव, पृ. 390
36. तत्रैव, पृ. 390
37. तत्रैव, पृ. 400
38. तत्रैव, पृ. 400
39. तत्रैव, पृ. 400
40. तत्रैव, पृ. 400
41. तत्रैव, पृ. 407
42. तत्रैव, पृ. 410
43. तत्रैव, पृ. 411
44. तत्रैव, पृ. 428
45. तत्रैव, पृ. 428
46. तत्रैव, पृ. 446
47. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, रुक्मिणी परिणय, पृ. 509
48. तत्रैव, पृ. 511
49. तत्रैव, पृ. 515
50. तत्रैव, पृ. 537-538
51. तत्रैव, पृ. 539

52. तत्रैव, पृ. 547
53. तत्रैव, पृ. 562
54. तत्रैव, पृ. 612
55. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह-शिवदत्तकृत गौरी प्रणय, पृ. 750-751
56. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, शिवदत्तकृत पारिजातहरण नाटकार, पृ. 704
57. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, भानुनाथ दैज्ञविरचित प्रभावतीहरण, पृ. 971
58. तत्रैव, पृ. 971
59. तत्रैव, पृ. 972
60. तत्रैव, पृ. 972
61. तत्रैव, पृ. 973
62. तत्रैव, पृ. 973
63. तत्रैव, पृ. 973
64. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, हर्षनाथविरचित उषाहरण नाटक, पृ. 1012
65. तत्रैव, पृ. 1027
66. तत्रैव, पृ. 1028
67. तत्रैव, पृ. 1048
68. लोचनकृत रागतरंगिनी, सं. डा.शशिनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 178
69. मैथिली शैव साहित्य- डा. रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना-1, पृ. 103
70. आनन्दविजय-रामदास, स. श्रीसुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1971, पृ. 24
71. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 144
72. तत्रैव, पृ. 162
73. तत्रैव, पृ. 279
74. तत्रैव, पृ. 298
75. पारिजातहरण-उमापति स. सुरेन्द्रझासुमन, 1971, पृ. 8
76. गौरीस्वयंवर-कविलाल स. डा. जयकान्तमिश्र अखिलभारतीय मैथिली साहित्य समिति तीरमुक्ति, 1, एलनगंज रोड, इलाहाबाद- 2, 1961, पृ. 9
77. गौरीपरिणय-शिवदत्त, स डा. जयकान्तमिश्र अखिलभारतीय मैथिली साहित्य समिति तीरमुक्ति, इलाहाबाद- 2, 1960, पृ. 4
78. आनन्द विजय-रामदास-सं. सुरेन्द्रझासुमन, 1971, पृ. 29
79. कीर्तिलता, सा०अ० बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी सं० 2032 पृ. 56
80. तत्रैव, पृ. 70
81. तत्रैव, पृ. 28
82. तत्रैव, पृ. 34
83. मि०म०पद सं० 5
84. विद्यापति की पदावली, पद सं० 101
85. तत्रैव, पृ. 116
86. मि०म०पद सं० 330
87. विद्यापति की पदावली, पद सं० 116
88. विद्यापति गीतावली, पद सं० 702
89. तत्रैव, पद सं० 242
90. मि०म०पद सं० 92
91. गौरी स्वयंवर-कविलाल- पृ. 19
92. गौरीपरिणय- शिवदत्त- पृ. 2
93. श्रीकृष्ण केलिमाला-नन्दीपति सं.डा. जयकान्त मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य, तीरमुक्ति, 1 एलनगंजरोड, इलाहाबाद-2 1969, पृ. 38
94. तत्रैव, पृ. 41
95. तत्रैव, पृ. 41
96. मि०म०पद सं० 263
97. मि०म०पद सं० 325
98. गीतरत्नावली, पद सं० 67
99. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 56
100. कृष्णजन्म-मनबोध, पृ. 22
101. मि०म० पद सं० 83

102. कीर्तिलता, पृ. 24
103. तत्रैव, पृ. 68
104. मि०म० पद सं० 81
105. तत्रैव, पद सं० 153
106. तत्रैव, पद सं० 231
107. तत्रैव, पद सं० 419
108. तत्रैव, पद सं० 355
109. तत्रैव, पद सं० 554
110. तत्रैव, पद सं० 557
111. तत्रैव, पद सं० 489
112. तत्रैव, पद सं० 489
113. तत्रैव, पद सं० 484
114. विद्यापति गीतावली पद सं० 61
115. तत्रैव, पद सं० 106
116. तत्रैव, पद सं० 305
117. तत्रैव, पद सं० 366
118. तत्रैव, पद सं० 424
119. तत्रैव, पद सं० 424
120. मि०प०, पद सं० 277
121. तत्रैव, पद सं० 485
122. तत्रैव, पद सं० 279
123. तत्रैव, पद सं० 290
124. तत्रैव, पद सं० 37
125. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 285
126. मि०म०, पद सं० 67
127. विद्यापति गीतावली पद सं० 80
128. तत्रैव, पद सं० 80
129. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 38
130. तत्रैव, पृ. 41
131. तत्रैव, पृ. 43
132. तत्रैव, पृ. 46
133. तत्रैव, पृ. 53
134. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 285
135. गौरीस्वयंवर-कविलाल, पृ. 16
136. श्रीकृष्णकेलिमाला नन्दीपति, पृ. 38
137. मि०म०, पद सं० 159
138. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 45
139. विद्यापति गीतावली संपं गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी पटना-1, 1981
140. तत्रैव, पद सं० 12
141. तत्रैव, पद सं० 171
142. तत्रैव, पद सं० 248
143. विद्यापति की पदावली, पद सं० 62
144. तत्रैव, पद सं० 41
145. तत्रैव, पद सं० 165
146. तत्रैव, पद सं० 86
147. तत्रैव, मि०म० पद सं० 541
148. मि०प०, पद सं० 59
149. तत्रैव, पद सं० 84
150. तत्रैव, पद सं० 116
151. मि०प०, पद सं० 377
152. तत्रैव, पद सं० 161
153. तत्रैव, पद सं० 352
154. कृष्णजन्म, पृ. 22
155. तत्रैव, पद सं० 292
156. तत्रैव, पद सं० 773
157. श्रीकृष्ण केलिमाला, पृ. 42
158. तत्रैव, पृ. 38
159. तत्रैव, पृ. 56
160. गौरीस्वयंवर-कविलाल, पृ. 9
161. तत्रैव, पृ. 12
162. परिजातहरण-उमापति, पृ. 8
163. गौरीपरिणय शिवदत्त, पृ. 11
164. श्रीकृष्णजन्म रहस्य श्रीकान्तगणक स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिलभारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1 एलनगंज रोड, इलाहाबाद, 1960, पृ. 1
165. तत्रैव, पृ. 16

166. आनन्द विजय-रामदास, पृ. 22
167. गौरीस्वयंवर-कविलाल, पृ. 11
168. आनन्द विजय-रामदास, पृ. 6
169. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 3
170. गौरीपरिणय-शिवदत्त, पृ. 11
171. विद्यापति गीतावली पद सं० 196
172. तत्रैव, पद सं० 229
173. तत्रैव, पद सं० 200
174. विद्यापति गीतावली पद सं० 672
175. मि०म० पद सं० 90
176. विद्यापति की पदावली पद सं० 162
177. विद्यापति गीतावली पद सं० 224
178. तत्रैव, पद सं० 73
179. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 534
180. विद्यापति गीतावली, पद सं० 305
181. तत्रैव, पद सं० 343
182. आनन्द विजय, पृ. 27
183. गौरीस्वयंवर-कविलाल, पृ. 16
184. विद्यापति गीतावली, पद सं० 23
185. कीर्तिलता, पृ. 36
186. मि०म० पद सं० 203
187. तत्रैव, पद सं० 75
188. तत्रैव, पद सं० 186
189. तत्रैव, पद सं० 348
190. तत्रैव, पद सं० 347
191. तत्रैव, पद सं० 572
192. विद्यापति की पदावली, पद सं० 28
193. तत्रैव, पद सं० 32
194. गीतरत्नावली, पद सं० 70
195. मि०म०, पद सं० 616
196. तत्रैव, पद सं० 628
197. विद्यापति गीतावली, पद सं० 313
198. तत्रैव, पद सं० 76
199. तत्रैव, पद सं० 85
200. तत्रैव, पद सं० 125
201. तत्रैव, पद सं० 193
202. तत्रैव, पद सं० 276
203. तत्रैव, पद सं० 278
204. तत्रैव, पद सं० 277
205. तत्रैव, पद सं० 521
206. तत्रैव, पद सं० 76
207. तत्रैव, पद सं० 92
208. तत्रैव, पद सं० 95
209. तत्रैव, पद सं० 169
210. मि०म०, पद सं० 222
211. तत्रैव, पद सं० 224
212. तत्रैव, पद सं० 680
213. तत्रैव, पद सं० 348
214. तत्रैव, पद सं० 71
215. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 26
216. तत्रैव, पद सं० 26
217. तत्रैव, पद सं० 45
218. तत्रैव, पद सं० 42
219. मि०म०, पद सं० 56
220. तत्रैव, पद सं० 417
221. तत्रैव, पद सं० 419
222. पारिजातहरण, पृ. 2
223. हरगौरी विवाह, पृ. 43
224. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 51
225. मि०म०, पद सं० 910
226. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 90
227. मि०म०, पद सं० 120
228. मि०म०, पद सं० 286
229. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 287
230. तत्रैव, पृ. 287
231. तत्रैव, पृ. 208, श्रीसुमनजी द्वारा सम्पादित नाटकमे एहि हेतु काचोहा शब्द आयल अछि।

232. श्रीकृष्ण केलिमाला, पृ. 29
233. मि०म०, पद सं० 794
234. विद्यापति गीतावली, पद सं० 66
235. तत्रैव, पद सं० 245
236. तत्रैव, पद सं० 298
237. विद्यापति की पदावली, पद सं० 165
238. तत्रैव, पद सं० 166
239. मि०म०, पद सं० 759
240. विद्यापति की पदावली, पद सं० 169
241. विद्यापति गीतावली, पद सं० 569
242. मि०म०, पद सं० 31
243. तत्रैव, पद सं० 62
244. विद्यापति कालीन मिथिला- डा.इन्द्रकान्तझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1966, पृ. 295
245. रागतरंगिनी, पृ. 129
246. विद्यापति की पदावली, पद सं० 38
247. कीर्त्तिलता, पृ. 40
248. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 631
249. मि०म०, पद सं० 810
250. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 461
251. मि०म०, पद सं० 6
252. विद्यापति की पदावली, पद सं० 73
253. गीतरत्नावली, पद सं० 56
254. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 74
255. गौरीस्वयंवर कविलाल, पृ. 21
256. कृष्णजन्म-मनबोध, स. सुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा 1988, पृ. 23
257. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 631
258. तत्रैव, पृ. 750
259. कीर्त्तिलता, पृ. 92
260. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 1065
261. कृष्णजन्म-मनबोध, 1988, पृ. 17
262. मि०म०, पद सं० 34
263. विद्यापति की पदावली, पद सं० 165
264. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 46
265. तत्रैव, पृ. 38
266. विद्यापति मित्र मजुमदार, पद सं० 204
267. कीर्त्तिलता, पृ. 44
268. गौरीस्वयंवर-लाल, पृ. 9
269. पारिजातहरण, पृ. 5
270. मैथिली प्राचीन गीतावली, स. डा. रामदेवझाक, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, पृ.71
271. कीर्त्तिलता, पृ. 30
272. मि०म०, पद सं० 23
273. तत्रैव, पृ. 23
274. तत्रैव, पृ. 29
275. तत्रैव, पृ. 302
276. तत्रैव, पृ. 133
277. तत्रैव, पृ. 680
278. तत्रैव, पृ. 521
279. विद्यापति की पदावली पद सं० 169
280. शिवदत्त-गौरीप्रणय (मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह), पृ. 754
281. तत्रैव, पृ. 460
282. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 63
283. तत्रैव, पृ. 62
284. मि०म०, पद सं० 605
285. प्राचीनगीत पद सं० 45
286. गौरीस्वयंवर-लाल, पृ. 19
287. कृष्णजन्म-मनबोध
288. श्रीकृष्ण केलिमाला, पृ. 72
289. आनन्द विजय, पृ. 25
290. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह (रूक्मिणी परिणय), पृ. 515
291. मि०म०, पद सं० 899
292. आनन्द विजय, पृ. 6

293. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह (रूक्मिणी परिणय), पृ. 534
294. कृष्णजन्म-मनबोध, पृ. 22
295. मि०म०, पद सं० 250
296. विद्यापति की पदावली, पद सं० 48
297. तत्रैव, पृ. 30
298. तत्रैव, पृ. 30
299. विद्यापति की पदावली, पृ. 47
300. विद्यापति कालीन मिथिला, पृ. 292
301. विद्यापति की पदावली, पद सं० 79
302. विद्यापति गीतावली, पद सं० 305
303. तत्रैव, पद सं० 249
304. विद्यापति की पदावली, पद सं० 84
305. विद्यापति गीतावली, पद सं० 278, 669
306. तत्रैव, पद सं० 60
307. तत्रैव, पद सं० 96
308. तत्रैव, पद सं० 99
309. विद्यापति गीतावली, पद सं० 102
310. तत्रैव, पद सं० 127
311. तत्रैव, पद सं० 129
312. तत्रैव, पद सं० 133
313. तत्रैव, पद सं० 140
314. तत्रैव, पद सं० 219
315. तत्रैव, पद सं० 247
316. तत्रैव, पद सं० 674
317. मि०म०, पद सं० 292
318. तत्रैव, पद सं० 681
319. तत्रैव, पद सं० 680
320. विद्यापति की पदावली, पद सं० 83
321. तत्रैव, पद सं० 94
322. तत्रैव, पद सं० 95
323. तत्रैव, पद सं० 126
324. विद्यापति गीतशती, स. उमानाथझा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृ. 59
325. मि०म०, पद सं० 61
326. तत्रैव, पद सं० 66
327. तत्रैव, पद सं० 72
328. तत्रैव, पद सं० 81
329. तत्रैव, पद सं० 192
330. तत्रैव, पद सं० 485
331. तत्रैव, पद सं० 489
332. तत्रैव, पद सं० 494
333. तत्रैव, पद सं० 430
334. तत्रैव, पद सं० 275
335. तत्रैव, पद सं० 278
336. तत्रैव, पद सं० 400
337. तत्रैव, पद सं० 688
338. विद्यापति गीतावली, पद सं० 47
339. विद्यापति की पदावली, पद सं० 178
340. विद्यापति गीतावली, पद सं० 622
341. मैथिली शैवसाहित्य, पृ. 200
342. मि०म०, पद सं० 432
343. मि०म०, पद सं० 83
344. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 29
345. कीर्त्तिलता, पृ. 34
346. मि०म०, पद सं० 3
347. तत्रैव, पद सं० 67
348. तत्रैव, पद सं० 90
349. तत्रैव, पद सं० 101
350. तत्रैव, पद सं० 107
351. तत्रैव, पद सं० 153
352. तत्रैव, पद सं० 185
353. तत्रैव, पद सं० 261
354. विद्यापति गीतावली, पद सं० 218
355. मि०म०, पद सं० 795
356. तत्रैव, पद सं० 330
357. श्रीकृष्णकेलिमाला-नन्दीपति, पृ. 41

358. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह (उषाहरण-देवान) पृ. 335
359. मि०म०, पद सं० 4
360. तत्रैव, पद सं० 221
361. गौरीपरिणय-शिवदत्त, पृ. 16
362. श्रीकृष्णकेलिमाला-नन्दीपति, पृ. 38
363. मि०म०, पद सं० 700
364. तत्रैव, पद सं० 789
365. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 29
366. तत्रैव, पृ. 44
367. मि०म०, पद सं० 37
368. श्रीकृष्णकेलिमाला
369. मि०म०, पद सं० 67
370. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 44
371. गौरी स्वयंवर-लाल, पृ. 16
372. आनन्द विजय-रामदास, पृ. 2
373. गौरीपरिणय-शिवदत्त, पृ. 3
374. तत्रैव, पृ. 11
375. तत्रैव, पृ. 3
376. मैथिली शैवसाहित्य, पृ. 65
377. मि०म०, पद सं० 905
378. तत्रैव, पद सं० 906
379. हरगौरी विवाह, पृ. 43
380. पारिजातहरण-उमापति, पृ. 2
381. मि०म०, पद सं० 773
382. तत्रैव, पद सं० 789
383. तत्रैव, पद सं० 795
384. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 120
385. मि०म०, पद सं० 792
386. तत्रैव, पद सं० 204
387. तत्रैव, पद सं० 120
388. तत्रैव, पद सं० 605
389. तत्रैव, पद सं० 82
390. तत्रैव, पद सं० 782
391. कीर्तिलता, पृ. 40
392. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 103
393. मि०म०, पद सं० 280
394. तत्रैव, पद सं० 485
395. कीर्तिलता, पृ. 41
396. तत्रैव, पृ. 104
397. मि०म०, पद सं० 186
398. तत्रैव, पद सं० 245
399. तत्रैव, पद सं० 564
400. विद्यापति की पदावली, पद सं० 59
401. तत्रैव, पद सं० 206
402. मि०म०, पद सं० 546
403. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 59
404. श्रीकृष्णकेलिमाला-नंदीपति, पृ. 16
405. मि०म०, पद सं० 895
406. तत्रैव, पद सं० 541
407. विद्यापति की पदावली, पद सं० 246
408. मि०म०, पद सं० 92
409. विद्यापति गीतावली, पद सं० 242
410. मि०म०, पद सं० 376
411. तत्रैव, पद सं० 95
412. तत्रैव, पद सं० 102
413. तत्रैव, पद सं० 180
414. तत्रैव, पद सं० 184
415. तत्रैव, पद सं० 317
416. तत्रैव, पद सं० 896
417. मैथिली प्राचीन गीत- श्री रमानाथ झा अनन्तप्रकाशन, दरभंगा, पद सं० 143
418. गोविंद गीतावलि, पद सं० 45
419. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 285
420. तत्रैव, पद सं० 207
421. तत्रैव, पद सं० 546
422. तत्रैव, पद सं० 752

423. तत्रैव, पद सं० 758
424. तत्रैव, पद सं० 17
425. तत्रैव, पद सं० 441
426. प्राचीन गीत, पद सं० 181
427. नन्दीपति गीतिमाला- डा० रामदेव झा, मिथिला रिसर्चसोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1965, पद सं० 8
428. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 458
429. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 105
430. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 630
431. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 197
432. तत्रैव, पृ. 200
433. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 103
434. पारिजातहरण, पृ. 8
435. आनन्द विजय, पृ. 23
436. गौरी परिणय, पृ. 2
437. गौरी स्वयंवर-कविलाल पृ. 12
438. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह (रुक्मिणीपरिणय), पृ. 515
439. तत्रैव, पृ. 596
440. तत्रैव (उषाहरण-हर्षनाथ), पृ. 1012
441. मि०म०, पद सं० 185
442. तत्रैव, पद सं० 657
443. मुदित कुवलयाश्व नाटक (प्राचीन बाङ्ला मैथिली नाटक) पृ. 212
444. गौरी स्वयंवर नाटिका (मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह) पृ. 842
445. कीर्तिलता, पृ. 28-29
446. तत्रैव, पद सं० 345
447. तत्रैव, पृ. 68
448. तत्रैव, पृ. 50
449. तत्रैव, पृ. 72
450. तत्रैव, पृ. 26
451. तत्रैव, पृ. 41
452. तत्रैव, पद सं० 414
453. तत्रैव, पद सं० 28
454. मि०म०, पद सं० 76
455. तत्रैव, पद सं० 672
456. तत्रैव, पद सं० 747
457. प्राचीन गीत, पद सं० 150
458. विद्यापति की पदावली, पद सं० 163
459. कीर्तिलता, पद सं० 72
460. मि०म०, पद सं० 306
461. तत्रैव, पद सं० 381
462. तत्रैव, पद सं० 747
463. प्राचीन गीत, पद सं० 122
464. तत्रैव, पद सं० 181
465. मि०म०, पद सं० 502
466. तत्रैव, पद सं० 499 : मालकिंकिनि करमधुर राव ।
467. प्राचीन गीत, पद सं० 170
468. मित्र मजुमदार, पद सं० 356 एवं अन्यत्र
469. मित्र मजुमदार, पद सं० 483, विद्यापतिपदावली, पद सं० 77
470. मुदित कुवलयाश्व (प्राचीन बाङ्ला मैथिली नाटक, पृ. 211
471. मित्र मजुमदार, पद सं० 792
472. चतुर चतुर्भुज एवं गीत सप्तशती- स. डा. शैलेन्द्रमोहनझा, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय 1969, पृ. 38
473. मित्र मजुमदार, पद सं० 498, 642, 743
474. तत्रैव, पद सं० 134
475. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 90
476. हरगौरी विवाह-जगज्ज्योतिर्मल्ल-स. डा. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा 1982, पृ. 48

477. मि०म०, पद सं० 657
478. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 69
479. मित्र मजुमदार, पद सं० 772
480. फूलपात
481. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 19
482. मि०म०, पद सं० 89
483. मिथिला परम्परागत नाटकसंग्रह, पृ. 113
484. मनीषा, वर्ष 2 अंक- 2, पृ. 56
485. कीर्तिलता, पृ. 52
486. मित्र मजुमदार, पद सं० 772
487. विद्यापति की पदावली, पद सं० 105
488. तत्रैव, पद सं० 163
489. मिथिला परम्परागत नाटकसंग्रह, पृ. 460
490. मनीषा वर्ष 2 अंक- 2, का०द०सं० विश्वविद्यालय, दरभंगा, पृ. 56
491. विद्यापति पदावलीमे प्रयुक्त चतुरियाक पाठान्तर चतरिया अछि । दरभंगाक निकटवर्ती चतरिया नामक मूल शब्द एही चतरियासँ सम्बद्ध बुझना जाइछ ।
492. मि०म०, पद सं० 517
493. तत्रैव, पद सं० 385
494. तत्रैव, पद सं० 385
495. तत्रैव, पद सं० 171
496. तत्रैव, पद सं० 203
497. विद्यापति गीतावली, पद सं० 131
498. संस्कृत हिन्दी कोष-आप्टे, पृ. 302
599. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 766
500. मनीषा, वर्ष 2, अंक-2, पृ. 56
501. मि०म०, पद सं० 575
502. प्राचीन गीत, पद सं० 90
503. विद्यापति गीत शती, पृ. 23
504. प्राचीन गीत, पद सं० 170
505. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 630
506. तत्रैव, पृ. 766
507. विद्यापति गीतावली, पद सं० 131
508. मि०म०, पद सं० 396
509. तत्रैव, पद सं० 684
510. मि०म०पद सं० 34, 67, 68 इत्यादि ।
511. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 766
512. तत्रैव, पृ. 784
513. मैथिली शैवसाहित्य, पृ. 69
514. प्राचीन गीत, पद सं० 85 तथा विद्यापति की पदावली पद सं० 163
515. तत्रैव, पृ. 515
516. तत्रैव, पृ. 596
517. मि०म०, पद सं० 224, 503, 869
518. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 73, 129
519. तत्रैव, पृ. 750
520. तत्रैव, पृ. 113, 537
521. तत्रैव, पृ. 762
522. मि०म०, पद सं० 443, 642
523. सिद्धिनारसिंहमल्ल, सं० डा० शैलेन्द्रमोहन झा, पुस्तक केन्द्र, लालबाग, दरभंगा, 1969, पद सं० 12
524. मि.मि. पद सं.- 443, 642
525. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 842
526. प्राचीन गीत, पद सं० 90
527. विद्यापति की पदावली, पद सं० 166
528. प्राचीन गीत, पद सं० 170
529. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 456
530. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 73
531. श्रीकृष्णनाम रहस्य, पृ. 24
532. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 562
533. मि०म० पद सं० 90
534. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 538

535. विद्यापति गीतावली, पद सं० 672
536. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 19
537. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 704
538. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 59
539. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 29
540. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 629
541. प्राचीन गीत, पद सं० 246
542. मि०म० पद सं० 810
543. तत्रैव, पद सं० 107
544. विद्यापति गीतावली, पद सं० 280
545. मि०म० पद सं० 496
546. तत्रैव, पद सं० 341
547. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 77
548. मि०म० पद सं० 68
549. तत्रैव, पद सं० 20
550. तत्रैव, पद सं० 38
551. तत्रैव, पद सं० 737
552. तत्रैव, पद सं० 907
553. तत्रैव, पद सं० 878
554. तत्रैव, पद सं० 25
555. तत्रैव, पद सं० 708
556. तत्रैव, पद सं० 929
557. तत्रैव, पद सं० 67, 469, 503
558. तत्रैव, पद सं० 88 मापथेटलि पसाहनि बेरी ।
559. तत्रैव, पद सं० 19 मदन महाउतें कएल पसाह ।
560. तत्रैव, पद सं० 97 न कर अधिक पसाही ।
561. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 77 एएहिबन्हलि पसाहनिलोहिरे ।
562. मि०म० पद सं० 90, कुंकुम पैक पसाहह देह ।
563. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, गोरक्ष विजय, पृ. 124
564. तत्रैव, गौरी प्रणय-शिवदत्त, पृ. 750
565. कीर्तिलता, पृ. 34
566. मि०म०, पद सं० 3, उधसल केसपास लाजे गुपुत हास ।
567. मि०म०, पद सं० 2, 84, 305
568. तत्रैव, पद सं० 635, सामर-झामर कुटिल केस
569. तत्रैव, पद सं० 79, कुन्तल कुसुम निमाल न भेला ।
570. तत्रैव, पद सं० 6, भौंगल कपोल अलक भरि साजु ।
571. तत्रैव, पद सं० 553, न चेतए चिकुर न चेतए चीर ।
572. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 460
573. सिद्धिनरसिंहमल्ल, गीत सं० 8
574. तत्रैव, पद सं०- 743, फूयल कबरी ना सम्बरो माथ ।
575. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 20 फूजल कँबरिन बाँध समारि ।
576. मि० म०, पद सं० 618
577. मैथिली प्राचीन गीतावली, पद सं० 100
578. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 652
579. मि० म०, पद सं० 27, 72, 101, 494
580. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 795
581. मि० म०, पद सं० 168, 250, 200, 308
582. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 547
583. तत्रैव, पृ. 953
584. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 69
585. कीर्तिलता, पृ. 34
586. मि० म०, पद सं० 12, 780, 787, 782, 903, 799, 907 तथा मैथिली शैव साहित्य, पृ. 43, 44, 47, 53
587. कीर्तिलता, पृ. 44

588. मि० म०, पद सं० 97, मैथिली शैव साहित्य, पृ. 70
589. मैथिली शैव साहित्य, पृ. 70, चानन तिलक बाँकि करू गौरी ।
590. कीर्तिलता, पृ. 86
591. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 537
592. आनन्द विजय, पृ. 6
593. गौरीस्वयंवर, कविलाल, पृ. 17
594. कीर्तिलता, पृ. 34
595. तत्रैव, पृ. 36, 28
596. मि०म० पद सं० कज्जल रूप तुअ काली कहिअए ।
597. तत्रैव, पद सं० 3, नवन कजर जले अधर गरू ।
598. तत्रैव, पद सं० 16, भउँह धनु गुन काजर रेख ।
599. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 459
600. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 60
601. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 623
602. कीर्तिलता, पृ. 30
603. तत्रैव, पृ. 68
604. मि०म० पद सं० 6
605. तत्रैव, पद सं० 78
606. तत्रैव, पद सं० 84
607. तत्रैव, पद सं० 488
608. मि०म० पद सं० 810
609. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ. 454
610. मि०म० पद सं० 4
611. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ० 60
612. तत्रैव, पृ. 74
613. मि०म० पद सं० 855
614. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, पृ० 614
615. मि०म० पद सं० 855
616. तत्रैव, पद सं० 400
617. तत्रैव, पद सं० 116
618. तत्रैव, पद सं० 628
619. तत्रैव, पद सं० 163
620. नन्दीपति गीतमाला, पृ. 34
621. आनन्द विजय, पृ. 22
622. कीर्तिलता, पृ. 52
623. मि०म०, पद सं० 358, 362, 419, 508, 523, 530
624. मैथिली प्राचीन गीतावली, पृ. 76
625. मि०म०, पद सं० 760
626. तत्रैव, पद सं० 41
627. तत्रैव, पद सं० 89, 720
628. तत्रैव, पद सं० 89, 720
629. तत्रैव, पद सं० 89, 720
630. गोविन्दगीताञ्जलि, पद सं० 18
631. मि० म०, पद सं० 134
632. दशावतार नृत्यम् ओ षोडसगीतम्, पृ. 27
633. श्रीकृष्णकेलिमाला, पृ. 70
634. पारिजातहरण

●

षष्ठ अध्याय

आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

आधुनिक मैथिली साहित्यसँ तात्पर्य चन्दाझाक युगप्रवर्तनसँ आरम्भ कऽ आधुनिक गद्य-युगसँ अछि । एहि कालमे मैथिली साहित्यक बहुमुखी विकासधारा प्रवहमान रहल अछि आ ओहि विभिन्न धाराकेँ वेश-भूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीसँ संबल भेटैत रहलैक अछि । एहि शब्दावलीक स्वरूपक अवलोकन कयलासँ ई स्पष्ट प्रतीत होइछ जे पारम्परिक विधामे एक दिस जँ संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीक सामान्यतः वर्चस्विता अछि तँ क्रमशः विकासमान विधा सभक नव्यताक संगहि जनसामान्यक शब्दावलीक अन्तर्भुक्ति व्यापक होइत गेल अछि ।

अध्ययन सौविध्य दृष्टिजे आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक आयामक निदर्शनक हेतु एक विधातः चारि गोट कोटि-विभाजन कहल जा सकैछ–

(क) काव्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास

(ख) कथा ओ उपन्यासमे वर्णित वेशभूषाप्रसाधन विन्यास

(ग) नाटक ओ एकांकीमे वर्णित वेशभूषाप्रसाधन विन्यास

(घ) निबन्ध ओ छिटफुट रचनामे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास ।

काव्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास– महाकाव्यक विशद् वर्ण्य-परिधिमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक पुष्कल निवेश होइत रहल अछि । तथापि मैथिली महाकाव्यक स्वरूप पारम्परिक होयबाक कारणेँ एहिमे निविष्ट शब्दावलीमे अधिकांश संस्कृतसम स्वरूपक देखि पड़ैछ । स्वयं चन्दाझाक रामायणहुमे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक स्वरूप पारम्परिके स्वरूपक अछि यथा बालकाण्डक द्वितीय अध्यायमे नारायणक प्राकट्यमे हुनक वेशभूषा प्रसाधनमे इन्द्रनीलमणि, हार,

किरीट, केयूर, कटक, कौस्तुभ, कनक-जनौ, कनकाम्बर आदिक वर्णन पारम्परिके स्वरूपक देखि पड़ैछ–

> **इन्द्र नील मणि** छविमय अंग । सितमुख लोचन पङ्कज रंग ।।
> हार **किरीट** तथा **केयूर** । **कटकादिक** शोभा भरिपूर ।।
> श्रीवत्सान्वित कौस्तुभ राज । सनकादिक स्तुति करथि समाज ।।
> शंख रथाङ्गद गदा जलजात । कनक **जनौ कनकाम्बर** गात ।।[1]

एहिना रामक जन्मक अवसर पर जे हुनक शोभाक वर्णन भेल अछि ताहूमे पारम्परिके वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ–

> नीलोत्पल दल श्यामल राज । चारि सुभुज **कनकाम्बर** भ्राज ।।
> अरुण जलज वर सुन्दर नयन । **कुण्डल** मण्डित शोभा अयन ।।
> सहस सूर सन सुछवि प्रकाश । **कुटिल अलक सुमुकुट** भल भास ।।
> संखरथाङ्ग गदा जलजात । **बनमाली** स्मितमुख अवदात ।।
> श्री श्रीवत्स हार रमणीय । **केयुर** नूपुरगण कमनीय ।।[2]

सीताक स्वरूपक वर्णनमे कवि हुनक केशक तीन गोट गुण कुटिलता, सुचिक्कनता तथा विशालताक रेखांकन कयलनि अछि–

> **कुटिल सुचिक्कन केश विशाल** । अंग अलङ्कृत शोभित **भाल** ।।[3]

संगहि हिनक अंगरागक सूचना सेहो **अंग अलंकृतसँ** घोतित होइछ ।

एक स्थलमे अलङ्करणक हेतु **आभरण** ओ **गहना** शब्दक प्रयोग भेल अछि–

> कि करब **हार आभरण** आब ।[4] अरुन्धती **कौं गहना** देब ।।[5]

वस्त्रक हेतु **चीर** ओ **बसन** शब्द एहि पाँतीमे देखल जा सकैछ–

> देलनि तिनुबन कौं ओ **चीर** ।[6] अपन **बसन** कएलनि परित्याग ।।[7]

एहिना प्रसंगत वस्त्राभूषण प्रसाधन विन्यासक किछु एक शब्दकें छोड़ि सर्वत्र **मिथिलाभाषारामायण**मे पारम्परिके शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा–

> चरण **खरओं** देब देल जाय ।[6] **वेणी** एक मलिन अति चीर ।[9]
> **किंकिणि-नूपुर** गिञ्जित सूनि ।[10] **चूड़ामणि** देल सहित विचार ।[11]
> प्रत्ययमूल **मुद्रिका** देल ।[12] कर **औंठी कङ्कण** प्रभु हाथ ।[13]
> रावण घन मुकुटाली चपला मन्दोदरी-श्रवण-ताटङ्क ।[14]
> **आँचर** सौं मुह धूरा पोछ । भ्रमराली निभ दाढ़ी मोछ ।।[15]

> भरतक **जटा केश** फुटकाब । **चित्रमाल्य अनुलेप** लगाब ।।[16]
> रत्न **किरीटाङ्कृत** अङ्ग ।[17] **पीताम्बर** वर **मुकुताहार** ।।[18]

एही तरहक स्थिति कविशेखर बदरीनाथझाक **एकावली परिणय** एवं **तन्त्रनाथझाक कीचकवध** ओ **कृष्ण** महाकाव्यमे सेहो देखि पड़ैछ यथा–

> तत जाए लए **सुगन्ध अभ्यङ्ग** कयल पुनि स्नान
> रूचिर पीत **चीनांशुक** कए **परिधान**, **कस्तूरी** कश्मीर **तिलक** अभिराम
> धारण कए **कुण्डल अङ्गद केयूर**, **वलय** कनकमय रत्नजटित सब दिव्य
> **कण्ठहार विद्रुम हीरक गोमेद, इन्द्रनील मुक्ता मानिक वैदूर्य**
> **पुष्पराग** गारूत्मत **खचित** विचित्र, **पहिरल** पुनि **नवमल्लिकाक वरमाल**
> **नागवल्लि** दल **मृगमद केसरि** सङ्ग, लए पुनि खाए विलोकल **दर्पण** बीच ।[19]

मिथिलामोदमे प्रकाशित **हेमवती विलाप** शृंखलाक जयभद्रझाक काव्यमे अनेक प्रसाधन सामग्रीक उल्लेख भेल अछि–

> **सोप बुरूस** ओ **पेस्ट लेवेण्डर**, ने राखै जौं इ मछिमार ।
> भीतर सड़ल मुंह भभकावै, के एकरा लग बैसे यार ।।
> सोड़ह वर्षक होइत जहाँ बुझलक, ऐनामे मुह ताकय मोछ ।
> देखि देखि चुटकी मोचना भेल, गामक गल्ली घूमै घोंछ ।।
> गदहपचीसी थिक ई देखू, **चुड़की** बुल बुल राखै माथ ।
> लड़इ छान एको नहि मानै, लटकि पटकि कै दीऔ नाथ ।।[20]

कविवर सीतारामझाक **अम्बचरित** महाकाव्यमे अवश्य वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक विशिष्ट ओ जनप्रचलित शब्दालीक निवेश भेल अछि । एहि महाकाव्यक तेसर सर्गमे सीताक जन्मक उपरान्त हुनक परिचर्याक क्रममे हुनक प्रसाधन ओ केश विन्यासक स्वरूप एहि रूपें वर्णित भेल अछि–

> मायहु सँ बढ़ि भै सतमाय सनेह सुता ममता उर धारथि ।
> दै तनु तेल फुलेल सदा **ककवा** कर लै सिरकेश समहारथि ।[21]

प्रथम सर्गमे माता द्वारा शिशुक परिपालनक क्रममे **आँचर** ओ **कोंचा** शब्दक व्यवहार भेल अछि–

> पड़ल हमर मलमूत्र सौ **आँचर कोंचा** दाग ।
> देखि होथि मुदमे मगन मानि अपन धनि भाग ।।[22]

दोसर सर्गमे मिथिला वर्णनक क्रममे मिथिलाक विविध वेशभूषाक वर्णन भेल

अछि– क्यौ वल्कलकटि जटी कतहु क्यौ चित्रपटी अछि । सद्विचारमे एक अपर सौं क्यौ न बटी अछि ।।[23]

चारिम सर्गमे सीताक हेतु सुनयना द्वारा विविध शृंगार सामग्री किनबाक वर्णन भेल अछि–

सीताकेँ[*] बुझि धर्मक बेटी । हुनक हेतु सिङ्घारक पेटी ।।
देलनि नव बनवाय मनोहर । खर्च करथि लय धवल धरोहर ।।
हरषित हृदय विदेहक जाया । नव नव आङ्गी सारी साया ।।
झरनी ककबा टिकुली अयना । नित नव कीनथि मुदित सुनयना ।।
टकुरी अलता गद्दी डोरा । साबुन सपरी सिन्दुरघोरा ।।
पनबट्टी पुनि रङ्ग विरंगक । रतन घटित भूषण प्रति अंगक ।।
नित पहिराय निहारथि सूरति । मानू विरचि सुवर्णक मूरति ।।[24]

एही सर्गमे सीताक गृहकला विन्यास शिक्षाक वर्णनमे केश विन्यासक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि–

टकुरी चरखा सिबिया बुनिया । ऐपन पुरहर कुटिया पिसिया ।।[25]
खोपा खोपी जूड़ा बान्हल । दालि भात तरकारी रान्हब ।।[26]

सीता द्वारा नगर भ्रमणक वर्णनक क्रममे वेशभूषा विन्यासक विविध दोकानमे बिक्रेय वस्तु सभक वर्णन एहि प्रकारक अछि– सूती ऊनी रेसम पाटक । नव नव वसन बनल सब काटक ।। रंग विरंगक धोती सारी । अंगा आंगी सब तैय्यारी ।। नूपुर कङ्ना करधनि हारी । विविध विभूषण जनमन हारी ।। कतहु बिकाइत ककबा अयना । आदि करोड़हु विध लटकयना ।। विविध रतनमनि धाम कतहु छल । कँसकुट छड़ी खराम कतहु छल ।। ने पनही नहि चाम कतहु छल ।।[27]

पँचम सर्गमे सीता द्वारा गौरी पूजनक वृतान्तक वर्णनमे गौरी पूजनक सामग्रीक रूपमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक अनेक शब्दक प्रयोग भेल अछि–

प्रथम सुजलसँ स्नान करौलनि । अभिनव पीतवसन पहिरौलनि ।।
लागल जहिमे मनिक मनोरी । पुनि चानन ओ सिन्दुर रोरी ।।[28]

आठम सर्गमे राम ओ लक्ष्मणक जनकपुर भ्रमण विवरण अछि । एहि क्रममे कवि एहिठामक पुरुषवर्गक वेश भूषाक सविशेष वर्णन कयलनि अछि–

द्विजक माँथ पर स्वच्छ पाग पेंचक छवि छाजय
जनु शिवमस्तक श्वेत जटा पर चन्द्र विराजय
पहिरन मिरजइ स्वच्छ सरल साँची छवि धोतीक

टपकि रहल अछि सकल सभ्यता लक्षण सोतिक ।
ककरो धोती लाल भालमे सबहिक चानन ।
अति प्रसन्न मन मनुज सकल अछि सस्मित आनन ।[29]

चौदहम सर्गमे सीताक द्विरागमनमे सँठबाक योग्य वस्तुक वर्णनमे अनेक वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक वर्णन भेल अछि–

अगनित सन्दुक पौती पेटी भरल रतन मनिहार ।
साया साड़ी आङ्गी लहठी चूड़ी विविध प्रकार
सोनक पावा पासि पलङ्गक रेसम मृदुल निवार,
छहरि मृदु मखमलक मनोहर सिरहन फाह्मादार
सोनक खरखरिया ओ महफा लागल जरिक ओहार
एक एक वर वधू हेतु पुनि बतिस बतिस कहार ।[30]

एकर अतिरिक्तो कवि अनेकठाम वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक शब्दक यथावसर प्रयोग कयलनि अछि–

किछु काल टकुरी हाथ लै यज्ञोपवीत गढ़ै छली ।
कौखन कसीदा काढ़ि पुनि मौनी नवीन बुनै छली ।।[31]
रङ्ग विरंगक नूआ लहठी नवभूषण पहिराय ।
नीक निकुत हमरा लय राखत के नितदिन जुगताय ।।[32]
घोघट दए दशरथ सोहागमे विविध रतनमणि देलनि ।
निरखि अनूपम पुत्रवधू मुख भूपक हृदय जुड़ैलनि ।।[33]
छलि दुहु दिस माथ मड़ौत काढ़ि ।
लय कलस सुवासिनि नारि ठाढ़ि ।।[34]
उडुगन बुट्टा विविध रतनमय खचित सुहाइछ ।
रात्रिनायिका पहिरि मानु प्रियतम घर जाइछ ।।[35]

मुंशीरघुनन्दनदास कृत सुभद्राहरण महाकाव्यक वसन्त वर्णनमे वेशभूषा प्रसाधनक अनेक शब्दावलीक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ–

तजल दल पुरानो जीर्ण वस्त्र स्वरूपे, नवदल परिधाने देखु रूपो अनूपे
मुकुलित कलिकासँ भूषणो दिव्य राजै, अनुमति ऋतुराजे गाछ ई साज साजै
मुकुलित पुनि छत्रो कुंकुमे पुष्प मानू, सहर सुभग पाते चामरो दिव्य जानू
मुकुल सुमन बेलो शोभ मोतीक माले, तिलक तिलक फूले देखु की दिव्य माले[36]

काशीकान्त मिश्र मधुपक राधाविरह महाकाव्यमे वेशभूषा प्रसाधनक पर्याप्त वर्णन अछि मुदा हिनक वर्णनमे रस शास्त्रीय नायिकाक अनुरोधेँ पारम्परिकता आग्रह सविशेष बुझना जाइछ। स्वभावत: हिनक शब्दावलीमे तत्सम स्वरूपक विन्यास सर्वाधिक बुझना जाइछ। केवल प्रथम सर्गमे प्रात:कालक वर्णनक क्रममे मिथिलाक अनमेल विवाहक उत्पीड़न प्रथाक संकेत करैत **कविचूड़ामणि** मधुप एकटा वृद्धक वेश वर्णनमे **मुरेठा** शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। एहीठाम नायिकाक आभूषण **कङ्नाक** सेहो उल्लेख भेल अछि–

आधे पहर रातिसँ प्राती गाबि छलाह पहर जे दैत ।
निन्दक थेने कमी, ताहि निन्दक युव जन केर व्यंग्य सुनैत ।
बाल कुरङ्गी-नयनि जकर, भुज जाल छोड़ा भागलि बुझि भोर ।
चौंकि चिहुँकि ग्रीवा मे, साटीफिकेट दैत **कङ्नाक** नछोर ।
सेहो बूढ़ बुढ़ानुस मानुस, दु:खक पात्र जलपात्रक हाथ ।
धनुषीगात्र अपात्र जरासँ चलला बान्हि **मुरेठा** माथ ।[37]

प्रात:वर्णनमे कवि स्वकीया ओ परकीया दुहू प्रकारक नायिकाक छविछटाक अत्यन्त मनोहर चित्रांकन कयलनि अछि। स्वकीयाक **घोघट**, परकीयाक नुपुरक उल्लेखसँ सम्बद्ध ई वर्णन वेशभूषा प्रसाधनक अनेक पक्षक सुन्दर उद्घाटन करैछ–

हाफी पर हाफी करैत आ छन छन दैत अङ्गैठी मोड़ ।
अञ्चलसँ नखछत झँपैत, ओ **घोघट पटसँ** विक्षत ठोर
एना देखि क्यो बूझि जैत, तेँ ऐना बिनु चूरू भरि वारि ।
धार झुका **शृंगार** ठीक क्यो करइछ निज प्रतिबिम्ब निहारि ।
रति मर्दित आङन थिर तैओ, आङ्न घर क्यो रहलि बहारि ।
ननदिक दिक करबासँ पहिनहिँ, वसन **विभूषण** सकल सम्हारि ।।
आनि कुञ्जसँ **नूपुर** ककरो, दूती शीघ्र पुरस्कृत भेलि ।
क्यो कहि रहलि सखीसँ घुलि मिलि, रातुक सबटा बीतल खेलि ।।[38]

एकटा पदमे नेनाकेँ उढ़ारबाक चित्रमे '**उझरि**' पदक प्रयोग भेल अछि–

क्यो कोरक सन कोमल कोरक, कनइत शिशुक ठोर चट चूमि ।
झारि **उझारि** दुलारि मारि, चुचकारि दूध पिअबै अछि झूमि ।।[39]

नायिका विरहक एक गोट पदमे **मणिकर्णिका, शिरवेणी, कुन्तल,** हार, चीर, शृंगारहार आदि पारम्परिक शब्दक उल्लेख देखि पड़ैछ–

स्वयं भानुतनया जनिका, वाणीमे मधुमय वाणीवास ।
मणिकर्णिका युगल समलंकृत, श्रुति युग श्रुति सन जे अवभास ।
शिरवेणी, माधव निकटहिँ, त्रिवलीक दृश्य तीनू जत धार ।
बड़लि तीर्थराजहुँसँ राधा, कतऽ गेली प्राणक आधार ।
घन कुन्तला, रसाई भूतला, हलधर-बन्धुक प्राणसमान ।
चपला-द्युति-संकुला मुदित गोकुला, गमनचित हंसक मान ।।
इन्द्रचाप भृकुटी, कन्दर्प-कलाक कुटी, धक-उज्ज्वल **हार** ।
बरसासँ बढ़ि बरसाना सुन्दरी कहाँ प्राणक आधार ।।
चारू चन्द्रिका **चीरेँ** चर्चित चराचरक चितकेँ चोरबैत ।
हुलसित हंस-गमनसँ हिय हरि खञ्जन नयनहुँ केँ उड़बैत ।
समलंकृत **शृंगार-हारसँ** हस्त सचित्र कला देखबैत ।
शरदहुसँ सुन्दरि अकलंक, मयङ्क मुखिक छवि छीन देखैत ।।[40]

एकटा पदमे भगवती भुवनेश्वरीक स्वरूपक वर्णनमे **दुकूल, माला, चन्दन-चर्चा, वेष-भूषण, कङ्कण, किरीट, केयूर** आदि वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक उल्लेख भेल अछि–

लालेलाल विशाल नयनयुत, अरुणाकृति करुणा धन-लम्ब ।
रक्त **दुकूल** फूल **माला, चन्दन** चर्चित त्रिभुवन अवलम्ब ।
सब **शृंगारें** शोभित सस्मित, मुखकमला विपलाकृति **वेष** ।
कनक-कान्त-**कङ्कण-किरीट, केयूर** कलित ह्रींकार जपैत ।
विहग-वृन्द-वन्दित अनङ्ग, कुसुमादिक सेवा ग्रहण करैत ।।[41]

भगवती भुवनेश्वरीक **सोनारिनि** रूपमे वर्णनक क्रममे कवि **बाजू,** सूति, बलया, हार आदि आभूषणक उल्लेख कयल अछि–

नाक विभूषित श्रुति समलंकृत अहिंक कृपेँ जगदम्ब ।
बाजू कतउ सूति रहबो वा पाबि अहिंक अवलम्ब ।।
बलया धरि तुअ अनुकम्पा आ हार अहीँ छी दैत ।
देखि सुनारी-वृत्ति सोनारिनि छी, हम देवि बुझैत ।।[42]

एहिना **नौआइनिक** रूपमे भगवतीक वर्णनमे **नहरनी** ओ **आरत** शब्दक प्रयोग भेल अछि –

गगनाङ्गना केर अङ्ना मे उषा-नहरनी आनि ।
काटि चान नख तों किरणवलि मे दऽ शीतल पानि ।।
घोरि सिनूरी आरत, प्राची पदमे छह लगबैत ।
अद्भुत नौआइनि समान सबतरि सम्मान पबैत ।।[43]

छठम सर्गमे श्रीकृष्णक स्वरूप-वर्णनक क्रममे **कौस्तुभ मणि, चन्दन, वनमाल, किरीट, कटक, केयूर, कुण्डल पीताम्बर** आदिक उल्लेख देखि पड़ैछ–

पीताम्बर वर मुरलिपाणि आजानुबाहु अपरूप हे ।
कौस्तुभ कलित, त्रिभङ्ग, **चन्दनेलिप्त** अङ्ग **वनमालसँ** ।
शोभित मोर पुच्छयुत **रत्नकिरीट** दैत द्युति भालसँ ।
रतन कटक केयूर कुण्डलें भूषित शान्त स्वरूप हे ।।[44]

सातम सर्गमे श्रीकृष्ण द्वारा राधाक संग केलिक्रीड़ाक वर्णनमे **बेसरि** ओ **सिन्दूरक** सविशेष उल्लेख एहि पदावलीमे द्रष्टव्य अछि–

करइत कोमल करसँ नहुँ नहुँ छुबइत हुनक कपोल ।
नहि नहि कहितहुँ किन्नहुँ नहि छोड़थि धृत **कुण्डल** लोल ।
पुनि पङ्कजलोचन **चन्दन-कस्तुरी** पङ्कक निशङ्क ।
अङ्ग अङ्गमे **मलल** किशोरिक निर्मल आ नख वङ्क
रूप मयङ्क उगौल उरज पर, सरि भऽ **केसरि** देल
बेसरि मण्डित मुख सम्मुख कऽ रति-पण्डित चुमि लेल ।।
शिथिलित ललित **बसन** कऽ वश नहि रतिरण जोर मचौल ।
मदन दुन्दुभी नुपुर अविरल बाजि बाजि किछु गोल ।।
किंकिणि-कंकन-मञ्जरीक धुनिकैल तुमुल जय घोष ।।
दुहुक दशन दुहूक दशनच्छद क्षत कैलक भरि पोष ।।
स्वेदसिक्त रोमाञ्चित विगलित **केशपाश** लेपल **सिन्दूर** ।
अचले पल छनि जनिक पाबि निधुवन क्रीड़ाश्रम निन्न प्रचूर ।।[45]

आठम सर्गमे कृष्णक मुरलीक ध्वनि सुनि कऽ गोप वधूलोकनिक परस्थताक वर्णनक क्रममे **माला, चन्दन, कुंकुम, कस्तूरी, ताम्बूल, वसन, विभूषण, कण्ठा, खोंपी, काजर** आदिक उल्लेख भेल अछि–

क्यो बाला **माला** ललाम कर, क्यो शुचि चामर हाथ ।
चन्दन कुङ्कुम कस्तूरी सँ ककरो हाथ सनाथ ।।

क्यो लगौल **ताम्बूल-पात्र** लऽ हँसइत मोद-विमोद ।
रङ्ग विरंगक **वसन-विभूषण**-लसित स्वर्ण सन गोर ।।
उत्कण्ठा वश विवश क्यो **कण्ठा खोंपिक** उपर राखि ।
काजर कलित एकें लोचन क्यो चल चल जल्दी भाखि ।।[46]

एही तरहें एहि महाकाव्यमे वेशभूषा प्रसाधनक विशेष कऽ पारम्परिके शब्दावलीक प्रयोग सर्वत्र देखि पड़ैछ । **बबुआजीझाअज्ञातक रुक्मिणी परिणय** महाकाव्यमे शिशुपालक वेश सज्जाक विवरण निम्न प्रकारें अछि–

कयलनि पीत दुकूलक धारण । **डराडोरि उपवीत** सोहाओन ।।
भूषण सँ सभ अंग अलंकृत । भेल प्रफुल्ल वकुल तरु लज्जित ।।
आँखि पड़ल पुनि **काजर** कारी । जयाकुसुम जनु भृंगक धारी ।।
हेम मुकुट शिर उपर चमकल । तैपर **हार** प्रसूनक गमकल ।
रानी आबि प्रफुल्लित आनन । अक्षत मिलित लगौलनि **चानन** ।।[47]

एही महाकाव्यमे ब्राह्मणक स्वरूपक वर्णनमे **धोती, गमछा, जनौ, चानन** आदि पारिभाषिक शब्दक प्रयोग भेल अछि–

स्वच्छ **धोती** कान्ह **गमछा**, छल **जनौ** झलकैत गरमे ।
दहिन करमे छल कमंडल दंड वामा काँख तर मे ।।
ओज तेजक स्रोत आनन, भाल चर्चित चारु चन्दन ।
उच्चरित छथि भक्तिभावक संग मुखसँ नन्द-नन्दन ।।[48]

मधुश्रावणीक वर्णनमे कवि **गहना** ओ **साड़ी** शब्दक प्रयोग कयल अछि–

आयल पावनि मधुश्रावणी वर आबथि लए भार ।
सुन्दर **साड़ी** रंग विरंगक **गहना** सक अनुसार ।।[49]

महाकाव्ये जकाँ विभिन्न खण्डकाव्यहुमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक परम्परिके शब्दावलीक बहुलता देखि पड़ैछ । **उपेन्द्रनाथझाव्यासक संन्यासी** खण्डकाव्यमे वसन्त ऋतुमे वनदेवीक मानवीकरणपूर्वक हुनक शृंगारक साङ्ग रूपकत्व प्रस्तुत कयल गेल अछि, जाहिमे वेशभूषाप्रसाधनक विन्यासक वर्णन एहि रूपक अछि–

वनदेवी सजइत छथि निज शृंगार, मुख मण्डल **मण्डन** कए पुष्प पराग
किंसुक लए सीमन्त करथि **सिन्दूर**, हरित पत्रचय **पट अम्बर** सभ अङ्ग
कुसुम सुकोमल **भूषण** दिव्य अनूप, शुष्क-पत्र-मर्मर-नूपुर-ध्वनि, मत्त
अलिदल-गुञ्जन मधुर वीण झंकार ।[50]

हिनक पतन खण्डकाव्यमे अप्सरा मेनकाक स्वरूप वर्णनमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक परम्परित स्वरूप देखि पड़ैछ–

तन्वी हेमलता जनु, ग्रथित सुभाल घन-कुन्तल-वेणी, सित-वदन-सरोज
दीर्घकाल नर्तन-विलास-वश स्वेद सीकर-सिक्त, सुमण्डित भाल, कपोल
सूक्ष्म लेख अंकित भ्रू-धनु, वामलाक्षि दीर्घायत अंजन-रंजित, नासाग्र
वाम भाग मणि-पुष्प लसित, रक्ताभ विद्रुम-कान्ति समाकर्षक अधरोष्ठ
श्याम विन्दु युत चिबुक, शुभ्र सुग्रीव अति विचित्र चन्दन पत्रांकित वक्ष
मुक्तपाय श्रमोद्वेलित वक्षोज सूक्ष्मतांशक-आवद्ध उदर उन्मुक्त
त्रिवली, नाभि-विवर सुलेख-अहिलोम सिंजित कटि-किंकिणि सज्जित पटवस्त्र
नूपुर मुखरित रंजित द्योतित पाद परम प्रफुल्लित त्रिभुवन मोहिनि रूप ।[51]

एहि तरहेँ एहि खण्डकाव्यमे नायिका सौन्दर्य विन्यासक प्राचीन स्वरूप देखि पड़ैछ जाहिमे केशमे जुट्टी बान्हब, जुट्टीमे फूलमाला लगायब, भौंहकेँ सूक्ष्म रेखांकित करब, आँखिमे आँजन करब, चिबुक पर कारी दाग लगायब, वक्ष पर चन्दन लगायब, कटिमे किंकिण, पैरमे नुपुर ओ शरीरमे पटवस्त्र धारण करबाक विन्यस्त वर्णन अछि। पुरुषक गर्दनिमे माला धारण करबाक संकेत एहि पदमे भेटैछ–

गदगद चित अमरेश अपन बहुमूल्य हार उतारि, हुनक ग्रीवा पहिराय[52]

पुरुष परिधानक उल्लेख कवि नहुषक वर्णनमे सेहो कयलनि अछि । नहुष वनमाला धारण कयने छलाह, विभिन्न प्रकारक गहना ओ लालरंगक वस्त्र धारण कयने छलाह– नन्दन प्रसून वनमाल सुभग, केयूर वलय कुण्डल किरीट अनुपम मणिमय शुचि लघु रक्तांशुक, दिव्य गंध सर्वत्र व्याप्त, मृदु गन्धवाह बह मन्द मन्द ।[53]

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क उत्तरा खण्डकाव्यमे सेहो पारम्परिक शब्दावली विन्यास देखि पड़ैछ, यथा–

कहुँ नृत्योचित परिधान-विधाने स्यूत सजल ।
कंचुकी शटिका अन्तर-अध-परिधान रचल ।।
आंगिक आभूषण-कनक रजत मणि-रत्न रमणि ।
श्यामल सह वेणी-शीर्ष चन्द्रिका चूड़ामणि ।।
नव रत्न खचित शुचि कर्णफूल कुण्डल कपोल ।
नासा मणि-भूषण नखत प्रभा हीरक क गोल ।।
ग्रिमहार बाहु केयूर, पाणि कंकण अमोल ।
कांची किंकिनि धुनि कटि लट, पद नूपुरक बोल ।।

नयनक अंजन, अधरक रंजन, शुचि अंगराग ।
अनुलेपन चन्दन-अगरू तगरू कुंकुम पराग ।।
अभिनयक वेश, परिवेश रूपकहु रमणीय ।
सन साधन सज्जित रसावेश अभिनन्दनीय ।।[54]

मथुरानन्द चौधरी माथुरक मूस महिमा खण्डकाव्यमे मूसक द्वारा काटल जयबायोग्य वस्त्रक विभिन्न प्रभेदक उल्लेख भेल अछि यथा, मलमल, रेशमी, मटका, ऊनी, अद्धी, ननगिलाट, धोती आदि–

केहनो कपड़ा मूल्यवान हो तैं की एकरा ? दर्शन
जकर भेल काटिकें छोड़ल तकरा ।।
तै की ! मलमल होथु रेशमी ऊनी मटका ।।
अद्धी, सपटा, ननगिलाट वा धोती मोटका ।।[55]

केदारनाथ लाभक लखिमारानी खण्डकाव्यमे अनेक स्थलपर वेशभूषा प्रसाधनक किछु पारिभाषिक शब्दक निवेश देखि पड़ैछ यथा–

मेघक पटमासी फारि माँग मे सोन सनक सिन्नूरक रेखा छल अंकित
ग्रीवा मे तारावलि-मोतिक जनु चन्द्रहार अरुझाएल छल
दशमीचानक चानी सन चिक्कन मङ्टीका छल दिव्य भाल पर लटकि गेल[56]
वसुधाक खोँछिमे धान दूभि सुषमा कोर सौरभयुत भरैत ।[57]
जूड़ा मे गूहल जुट्टीमाल पुष्पक बिन्दी संयुक्त भाल
शतदल-रजरंजित फुल्ल गाल केसर चर्चित अधरोष्ट लाल
ग्रीवा मे मणिमय हार जाल[58] को वामे चान नुका रखतो[59]
छीलैत घास खुरपी लय कय परबतिया कोर लहठी मुखर स्वर सुनलहुँ अछि ?
तेसेँ फूटल लहठीक हेतु हिचकैत झाँपने देह सहस्सर पेडनी लागल नूआसँ ।[60]
काजरक रेख सँ भरल गाल टूटल छल गऽरक मणिक माल
नोरेँ भीजल आँचर अराल[61] चानन आनन पर अंगराग लेपल
महमह महमह करैत हिनकर ललाट पर दिनकर सन
सिन्नुरक बिन्दु चकमक करैत ।[62]

एहि तरहेँ मैथिली महाकाव्य ओ खण्डकाव्यमे वेषभूषाप्रसाधन विन्यासक पारम्परिक शब्दावलीक प्रयोग होइत रहल अछि मुदा कविवरसीतारामझा ओ केदारनाथक महाकाव्य ओ खण्डकाव्यमे आधुनिक जनप्रचलित शब्दावलीक बाहुल्य ओ उन्मुखता देखि पड़ैछ ।

मैथिली कथाकाव्य ओ मुक्तक काव्यमे वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक पुष्कल शब्दावलीक निवेश विविध प्रसंगमे होइत रहल अछि । आधुनिक मैथिली मुक्तकमे वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक शब्दावलीकेँ परिगृहीत करबामे सिद्धहस्तताक दृष्टिऐं जाहि विशिष्ट लोकनिकेँ आधुनिक मैथिली मुक्तक क्षेत्रमे तोरणद्वारपर स्थापित कहल जा सकैछ से थिकाह **फतूर कवि** । हिनक अकाली कवितामे फसली वर्ष 1281 अर्थात् इसवी सन् 1873-74क महाअकालक वर्णन भेल अछि । हिनक अकाली कविताकेँ वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीकेँ काव्यक माध्यमसँ प्रस्फुटित करबाक आधुनिक युगक प्राथमिक प्रयास कहल जा सकैछ । एहि कवितामे लोकप्रचलित विभिन्न प्रकारक गहनाक नामावली प्रस्तुत भेल अछि जे अकालक कारणेँ लोककेँ बेचय पड़ल छलैक–

सूखल गात बात भा लटपट कतेक बात अब सहना ।
नरनारी सभ सान ते आगल बिकरी भेल अब **गहना** ।।
मङ्टीका खूटी और **तड़की नकमुनी** नहि नाक ।
कटसरि बिछिआ ओ **झिमझिमिआ बाजूबंद** ओ **बाँक** ।।
चन्द्रहार टैंकल ओ **सिकड़ी** और **घमौड़िक दाना** ।
सूति नवग्रह ओ **पचखंडी लशुनी** भेल निदाना ।।[63]

एकटा अनामक कविक **गहना चरित** गीत लोकप्रसिद्ध अछि जाहिमे विस्तारसँ विभिन्न प्रकारक गहना सभक अंगशः विवरण देल गेल अछि–

रस रासनसौं गिरिधारी । संग सोरहो चलल व्रजनारी ।।
लील भूषण बसन बनाए । तन **चोआ चन्दन** लगाए ।।
ललित झाड़ मत कोनहु । झावा झालरि पूरहु ।।
ताहि **कञ्चन** दुइ लागल **किनारी** । दुइ तावक ताव **मनोरी** ।।
दुइ दामन लागल जोड़ी । **कच** कान **कचैहिया** नागिन कारी ।।
लाल शोभनि लाल कपारी । **टिकुली** भेल पाँतक पाँती ।।
रुद्रह लागल छाती । माँग शोभनि **मङ्टीका** ।।
बेसरि जे पहिरानी । **कर्णफूल** के झलकानी ।
सूति सिकड़ी पहिरानी । **बाजू बाँक नवग्रह बाँही** ।।
तीन खंड चान बिराजै । टार पाति नहि जानै ।
भाँति भाँति के **लहठी** । **बन्न लरौना लसुनी कंगना** ।।
फेरमा, चकुनी, अँउठी । **धुकधुकी** गाँथे हीरा ।।
बद्धी गाँथ गम्भीरा । पैर शोभनि जे **चूड़ा** ।।

नेपुर बजनि अपूरा । **बीर घुघुर** पहिरानी ।।
कोचवन रे लटकानी ।। निकुत निकुलपर बीच पड़ुय जे
तरबामे जे **आरत** ।। भनहि विद्यापति भान रे ।
गहना चरित्रक नहि प्रमाण रे ।।

कवीश्वरचन्दाझाक मैथिली साहित्य जगतमे आविर्भावक संग मैथिल सभ्यता ओ संस्कृतिमे संक्रमणक संगहि क्रमशः अंग्रेजी पद्धति एहिठाम वेशभूषा प्रसाधनकेँ सेहो ग्रस्त कयने जा रहल छल । स्वभावतः कवीश्वरक पद सभमे नागर जीवनमे संक्रमणजन्य वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक प्रयोग देखि पड़ैछ । यथा एकटा पदमे कवि पारम्परिक **टीक** ओ **ठोपक** विलोपन तथा **कोट, पतलून, टोपक** प्रचलनकेँ उद्भासित करैत कहलनि अछि– नै तू **माला कण्ठीवाल टीका** नहि **ठोप** । **कोट पतलून बोट** सोट माथ **टोप** ।।[64]

लोक जगतमे यूरोपीय सभ्यताक आकर्षणजन्य होइत परिवर्तन ओ तकर शब्दावलीक परिज्ञानक संगहि ओकरा साहित्यमे परिगृहीत करबाक दिस उन्मुख होइतो **कवीश्वरचन्दा झा** मर्यादित स्थलपर पारम्परिके वस्त्राभूषण प्रसाधन विन्यासक प्रति आसक्त देखि पड़ैत छथि तथा एकटा शैव पदावलीमे **कवीश्वर** शिवकेँ दोपटा धारण करबाक अनुदेश दैत पारम्परिक मैथिल परिधानक अनुकीर्त्तन कयलनि अछि–

चलु शिव कोबराक चालि हे **दोपटा** ओढ़ू भोला ।[65]

एहि पदमे **उबर** ओ **अङ्गराग** दुइगोट प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक निवेश सेहो भेल अछि– बहु विध **अतर** सुगन्ध हे लागत अङरागे ।।[66]

एकटा अन्य पदमे **उबटन, धोती, दोपटा, घूनसि** ओ **पाग** आदि मैथिल प्रसाधनक तथा परिधानक उल्लेख भेल अछि–

कोबरा जमाइक रीति सनातन **उबटन** अङ्गमे लाग ।
अङ्ग **विभूति** कृपा कै त्यागू लागत अङ्ग **अंगराग** ।।
धोती रँग कुसुम्मक धारण **दोपटा घूनसि पाग** ।।[67]

कविवरसीतारामझाक विभिन्न मुक्तककाव्यमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक विशिष्ट शब्दावलीक पुष्कल निवेश भेल अछि । कविवर अल्हड़क लक्षण निम्न पाँतीमे दरसओलन्हि अछि । एहि क्रममे वेशभूषासँ सम्बद्ध अनेक शब्द यथा **मिरजै, पाग, दुपट्टा, ढेंका, टीक** आदिक प्रयोग भेल अछि ।

उनटल **मिरजै** लटपट **पाग** । कान्ह **दुपट्टा** दहिना भाग ।
फलकल **ढेंका** फूजल **टीक** लक्षण अल्हड़ लोकक थीक ।।[68]

एहिना **लष्ठक** लक्षणक वर्णनक क्रममे **कविवर** ओकर ललाट परक सिन्दुर बिन्दु तथा सुगन्धिद्रव्यक स्थितिकेँ प्रमुख रखलनि अछि जाहिसँ पुरुष प्रसाधनक दुइगोट शब्दक परिचय भेटैछ– **ठोप** ओ **फुलेल**–

सिन्दुर **ठोप फुलेल** लगाए । मौगिक मेलामे घुसिआए ।।
हाथ **छड़ी** ओ अधचन कण्ठ । हँसि हँसि बाजय से थिक लण्ठ ।।[69]

ककबा ओ **कुच्ची** केश प्रसाधनक दुइगोट विशिष्ट सामग्री अछि । **खरलुच्चीक** वर्णनमे **कविवर** एहि दुहू प्रसाधन सामग्रीक उल्लेख कयल अछि–

खन आङन खन बाहर डोलै । खन कोठी खन पौती खोलै ।।
खन **ककबा** खन लै अछि **कुच्ची** । परफर कूदै से खुरलुच्ची ।।[70]

नूतन पण्डितक वर्णनमे कवि **बूट**, **कमीज**, **छड़ी**, **पगड़ी** आदि शब्दक प्रयोग कयलनि अछि– सीटथि **बूट कमीज छड़ी पगड़ी** पुनि जेबघड़ी लटकाबथि[71]

उनटा बसात शीर्षक कवितामे कविवर आधुनिक नेतृवर्गक विशिष्ट परिधान खद्दर तर नुकायल हुनक चरित्रकेँ प्रकाशित कएल अछि । तीक्ष्ण व्यंजनाक माध्यमे कविवर अंग-प्रसाधनक सामग्री **कस्तूरी** ओ **केसरक** महगीक संग सामान्य खाद्यवस्तुक मूल्यक तुलना कऽ ओकर महार्घता तथा जनजीवनक अस्तव्यस्तताक चित्रण कयलनि अछि–

खद्धरधारिक खुजि गेल पोल कर मे कैंची मुह मीठ बोल
अपनहु मे कैलनि तीन गोल अन्नक महगी सँ उठल घोल
तरकारिक की पुनि लिखू मोल **कस्तूरी** सौं अछि महग ओल
केसिरिकेँ जितलक साग-पात बहि रहल आइ उनटा बसात ।।[72]

गृष्म ऋतुक वर्णनक क्रममे कवि नारी परिधानक अत्यन्त उत्कृष्ट ओ सहज उल्लेख कयलनि अछि–

युवतीजन घामक देखि बाढ़ि तनु सँ **आड़ी** सब अपन काढ़ि ।
मलमल जलफांफी बिना **पाढ़ि** छथि पहिरि पवन रथ आबि ठाढ़ि ।।
खोलथि झारथि खिड़कीक **खोल** क्यो बीअनि पंखा लेथि मोल ।
जहिठाम पिकक छल सरल बोल अछि तत्ऽ कारकौआक घोल ।।[73]

हिनक एकगोट पदमे मिथिलाक महत्वपूर्ण ओ पारम्परिक परिधान **पाग** ओ **अंगाक** अत्यन्त रोचक उल्लेख देखि पड़ैछ–

गंगा पथ रुद्ध सुनि क्रुद्ध मिथिलेश उठि कैल प्रण जँ न दुष्ट गौरव ढहाबी हम ।
बुद्धिजैन आदिक अशुद्ध मत खण्डन कऽ शुद्ध धर्म मार्ग जँ न देश मे गहाबी हम ।।

वीर बनि चंगा ठानि कालहु सँ दंगा जँ न निर्मल तरंगा नीर देश मे बहाबी हम ।
धारि-**पाग अंगा** तोँ न आबी दरभंगा जोँ न लाबी पुनि गंगा तोँ न भूपति कहाबी हम ।।[74]

श्रीत्रिलोकनाथमिश्रक एक गोट गीतमे आधुनिक फैसनक स्वरूप उद्‌घाटित करैत विभिन्न प्रकार आधुनिक वेश भूषा विन्यासक वर्णन भेल अछि–

आजुक फैसन कहल न जाय ।
थकरथि केस छनहि छन फेरथि **पाटी** लेथि खसाय ।
फारल **सीथ** देखि के बिसरत, जकसन मुगलसराय ।।
कर पर **चूड़ी घड़ी** बिराजय **गुथनालेथि** पराय ।
सिनुरक ठोप ससरि नहि जाइछ एतबए कसरि बुझाय ।।
काजर काज करह अछि **सुरमा** कटि **कोँचा** फहराय ।
दस वर्षक सन अवस लगइ छथ जड़ि सँ **मोँछ** मुड़ाय ।।
किनकहु सिर पर औन्हल छांछी **कालरगर** लिपटाय ।
हाफ पैण्ट पेटेन्ट ने भेटत जेन्टल मेन सिवाय ।।
धरनी केँ **जूता** ओ **चसमा** डाँटि धोपि पहिराय ।।
छाता तानि संग टहलाबथि मेमक रूप धराय ।।
नेनहिसँ सन्तानहु सबकेँ एहने हिसख धराय ।
भन त्रिलोक निज कुलजनु बोरी ऋषि-मुनि-पुत्र कहाय ।।[75]

कविचूड़ामणि मधुपक मुक्तक काव्यमे सेहो वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन अछि । खास कऽ नारी सौन्दर्यक चित्रणमे ई आभूषणक शब्दावलीक सेहो प्रचुर प्रयोग कयल अछि । वेशभूषा प्रसाधनक वस्तुविशेषपर आधारित हिनक सम्पूर्ण कविता थिक **बुलाकी** जाहिमे **बुलाकीक** समष्टिमे चित्रांकन भेल अछि । कवि बुलाकीकेँ गहनामे सर्वाधिक श्रेष्ठ कहलनि अछि जे नारी सौन्दर्यकेँ कत गुन बढ़ाय पुरुषक आकर्षणक केन्द्रविन्दु बनि जाइछ–

ककरो ने भाग तोर सनक छैक **बुलाकी** ।
ककरा न होइछ हमहु घूरि फिरि केँ ताकी । वाह खूब ई झाँकी ।[76]

समस्यापूर्तिमे सिद्धहस्त **मधुपक** **'मेला'** ओ **'बाली'** शब्दक समस्यापूर्तिसँ सम्बद्ध पदावलीमे ग्रामजीवनक नारीक वेशभूषा विन्यासक अत्यन्त मनोरम चित्रांकन भेल अछि। तथापि एहि क्रममे **पटोरक लाली**, **गहनाक झमकब**, **साड़ीक कोँचिआएब** आदि विशिष्ट पारिभाषिक शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

पाटल पाटल तुल्य **पटोर** पहीरि, रखैत न लाज अधेला
चालि **छमाछम भूषण** होइत **झमाझम** सोच न ठेलम-ठेला
आङ् उघार न **घार** कने नत हाय । सिहाय कते अलबेला
के कुलबोरनि जाथि एना फुसिए कए भक्ति कुशेश्वर 'मेला' ।
तथा, उनटल लोटा माथ हाथमे ध' फुलडाली
कान्ह सीटि **कोँचिआएल सारी** चालि मराली
गीत गबैत चलैत बिना देखिनहि रवि लाली
अलगट्टे चौन्हि कहब, कुशेश्वर दर्शन **'बाली'** ।[77]

मुखपजीक सिनेमाक तर्जपरक शृंगारगीत सभमे सेहो अनेक स्थल पर वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख भेल अछि । हिनक एकगोट अत्यन्त प्रशस्त गीत अछि जाहिमे एकटा ग्राम्या बाला अपन कुशेश्वर धाम जयबाक हेतु **सिंगार-पटारक** तैयारी करैत अछि । क्रममे **ठोर राङ्क** प्रसाधन तथा **कारा** ओ **छाड़ा** आभूषणक उल्लेख भेल अछि--

हम जेबै कुशेश्वर भोर, **राङि** कै ठोर पहिरि कै **काड़ा** । **झमकाय** झनाझन **छाड़ा** ।[78]

एकटा अन्य गीतमे नायिकाक फैसनपरस्तीक वर्णन **चट्टी**, शिगार, **चश्मा**, **घड़ी** आदिक उल्लेख भेल अछि--

पैर मे बाटा बाला **चट्टी**, मुँहमे स्वदेशी शिगार
फैसनसँ बंगालिन केँ छकेबै घुमबै कुशेश्वर बजार रहबैक आधार ।
चश्मा घड़ी मङ्बा दिअ मौजी, दुनू लगा क हैते अपमौजी ।[79]

एकटा गीतमे आधुनिक नेताक वेशक वर्णन अछि जाहिमे टोपी ओ कुर्त्ताक उल्लेख अछि--

लिडरी टा रहौ चाहे क्यो किछु कहौ ने हटी हम
बलसँ सभटा सभामे सटी हम ।
टेढ़ **टोपी कुर्ता खादी** धवल सँ उँटी हम ।। बल सं० ।।[80]

मधुपजीक परिचय शतकमे एक सय षट्सय षट्पदीमे युगसत्य, समाज ओ परिस्थितिक चित्रांकन कयल गेल अछि । कवि एहिमे समाजमे पसरल विभिन्न असंगति विसंगतिक यथार्थपरक ओ व्यंग्यात्मक वर्णन कयलनि अछि । एहिमे दुइ स्थलपर वेशभूषा विन्यासक शुभग चित्र उपस्थित भेल अछि । एकटा पदमे मिथिलाक नारी समाजक गहनाक प्रति व्यामोह ओ ताहि हेतु करैत अपव्ययक रूढ़िक प्रति कवि चेतना प्रस्फुटित भेल अछि । एहि वर्णनमे कवि अनेक गहनाक सेहो उल्लेख कयल अछि--

टूटितहिँ टल्हाक जे सम, दाम जकर हरेक दिन कम
पहिरि बाँहि उघारि छमछम, चलथि जकरा नारि हरदम
चन्द्रवदनिक सैह चानिक **पाति बाजू** टार छी हम ।
एक टूटल तार छी हम ।।[81]

एकटा दोसर पदमे भारतीय युवक वृन्दपर अंग्रेजी सभ्यताक पड़ैत छापसँ भेल विसंगति ओ नूतन फैसन परस्तीक झलक भेटैत अछि ।

पारकर फोनटेन हो पेन, लचकदार करस्थ हो केन
ओ छड़ी मे **गोलडेन चेन**, हो प्रतीति ने मेन ओमेन ।[82]

एकटा पदमे मिथिलाक प्राचीन परिधान **पाग** ओ **अंगाक** उल्लेख भेल अछि जे **सीतारामझाक** स्वरूपक अछि--

रुद्ध पथ भेलीह गंगा, सुनि पहिरि झट **पाग अंगा**
बान्ह जे कटबौल भूपति, आर्य संस्कृतिसँ विमलमति
ताहि मिथिलेश्वरक कृती, रामेश्वरक उद्‌गार छी हम ।।[83]

हिनक कथाकाव्य सबमे सेहो अनेकठाम वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल स्वरूपक विविध शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि । खास कऽ **पापक परिणाम, होरी कोनो घर कानन कोनो गीत ओ लाइ पर बद्ध** कथाकाव्यमे वस्त्राभूषण विन्यासक वर्णन अछि । **मधुपजीक द्वादशी** संग्रहमे ग्रथित एहि समस्त कथाकाव्यमे सामाजिक विसंगतिजन्य त्रासदीक वर्णन भेल अछि । एहि त्रासदीकेँ उत्कर्ष देबामे कविक ई वर्णन सभ सर्वथा सार्थक सिद्ध भेल अछि ।

पापक परिणाममे मकर संक्रान्तिक पावनिक वर्णन अछि । एहि पावनिक अवसर पर ग्राम्यजीवनमे होइत दानक सामग्री नवपरिणीताक शृंगार पटार तथा जराउरक भारमे सासुरसँ आयल सामग्रीक विवेचनक क्रममे वस्त्राभूषण विन्यासक शब्दावलीक निवेश भेल अछि--

लागल कन्ट्रेलक तेहन आगि के **सीरक धोती** करत दान ।
....
नूतन परिणीत जमाएलोकनि कर ओसुलक हित ऐला घर घर
ऐहब **शृंगार पटार** करथि नूतन परिणीता वधूवृन्द
पुल समालोचना केर बान्हथि ककरा एलैक अछि कते भार
नूआ आङी ओढ़नी समीज साया चूड़ी ककवा सिनूर
ककरा लै केहेन अनलैक वर[84]

नारी शृंगारक एहि सामग्रीक संगहि कवि पुरुष परिधानक वर्णन करैत कहलनि अछि– नूनूक सठल सबटा दुलार पढ़बाक खर्च **कुर्ता कमीज धोती तौनी** न समय पर हो[85]

'होरी' कथाकाव्यमे उपनयनादिक अवसरपर भेल अपव्ययक कारणे सामाजिक जीवनमे परिव्याप्त निर्धनताक चित्रांकन भेल अछि। एहिमे उद्योगक दिन प्रथाक अनुसार सोहागिनि लोकनिकेँ प्रसाधन सामग्री बाँटल जयबाक वर्णन अछि तथा प्रसाधनमे व्यवहृत तेल ओ **सिन्दूरक** चर्च भेल अछि–

सितुआमे शीघ्र **सिनूर** घोरि सारिकेँ लाउ, मिलि सकल सोहागिनि सज्जित भऽ
शुभे शुभे सुख गीत गाउ **धात्रीक तेल**, नवका फुलेल राब केँ लगाउ[86]

पश्चात बच्चाक माइक भरना पड़ल गहनासभक सूची देल गेल अछि जाहिमे भूषण–विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि–

बन्धके हमर **गहना गुरिया** सोनाक **सूति ढँढ़कस बाजू**
इयरिंग लपेट ओ **चन्द्रहार** आ **असर्फीक छड़** केर संहार[87]

एहि कथाकाव्यमे वसन्त ऋतुक अवसरपर प्रकृतिक मानवीकरणक माध्यमे वस्त्राभूषण विन्याससँ सम्बद्ध **अञ्चल, गोटा, पट साड़ी** आदि शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि–

तीसी कुमारि सुकुमारि ठाढ़ि श्यामाञ्चलकेँ सदिखन पसारि
नै जानि कोन वर माङि् रहलि अरुणभ धवल कुसुमित केराव
गोटा लागल जनु **पट पहीरि** अगराय कहै नहि करब कहल
मधुपर्व एहेन पा सकल मुदित रङि **कुसुम** रङ्गमे सब **साड़ी**
होरी गाबै दिन राति सुखित।[88]

भिरहा गामक पृष्ठभूमिमे लिखित **कोनो घर कानन कोनो घर गीत** कथाकाव्यमे एकटा पैप लोकक पुत्रीक विवाहक वर्णन अछि। एकरा हेतु तैयारीमे लागल सोनारक द्वारा निर्माण करबा योग्य अनेक आभूषणक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

भिरहा भरि मे अछि चहल पहल **मकरी, लपेट, काड़ा, छाड़ा**
ढँढ़कस, बिजौठ ओ **चन्द्रहार नूपुर औंठी, नथ नकबेसर**
अगुआ पछुआ, सोनाक **सूति** गढ़ि रहल राति दिन जागि जागि[89]

तहिना **कुटनी** वर्णनमे ओकर शृंगारसामग्रीमे **चूड़ीक** वर्णन भेटैछ–

कुटनी कर कलित उछलि मूसर, स्वेदाम्बु सिक्त नहि लिऐ शान्ति
चूड़िक झनझानसँ मिला मिला, धम धम्म बोल अछि बजा रहल[90]

विवाहक अवसरपर सारि सरहोजिक नवागत पाहुनक प्रति चिन्ताक क्रममे कवि हुनका ओतयसँ आबयवला वस्तु सभक विवरण कयल अछि आ आधुनिक वस्त्रविन्यासक **वडी** शब्दक प्रयोग कयल अछि। वस्त्र विन्यासमे अंग्रेजी शब्दक क्रमिक प्रवेशक ई नीक उदाहरण अछि– लौंगक वरसँ छथि नीक न था गहना साड़ी ओ वडी कते।[91]

लाइ पर बज्र शीर्षकमे एकटा नोनिआइनक वस्त्र भूषणक वर्णनक स्वरूप एहन अछि–

सोनबेहट वाली घाटक दिशि **साड़ी** सजौल
दमगर चानी केर **सूति पाति** बान्हल **जूड़ा**
सौभाग्यक सूचक **सिन्दूरेँ** समलंकृत माङ विलोकि एकर
नोनिआइन थिक झट क्यो न कहत[92]

काञ्चीनाथझाकिरणक खूसर बाबू कवितामे श्राद्धक अवसर दानीय वस्तु सभक विवरणक क्रममे कतोक परिधानीय वस्त्रादिक उल्लेख भेल अछि–

पनही लोटा धोती छाता कम्बल उलाँच अङपोछा
सभ किछु कोनैक पड़त दनही पद उठि जायत।[93]
लोटा छाता तमघैलक सङ आब भेटै छनि **सेफ्टीराजर**
चमड़ौ **पनही** केर जगह मे **फ्लेक्से बूट** पबै छथि।[94]

तन्त्रनाथ झाक मुसरी झा शीर्षक कथाकाव्यमे पुरातनपन्थी मुसरीझाक पारम्परिक वेशभूषामे **कम्बल, फराठी, धोती** ओ **झोराक** वर्णन भेल अछि–

लय **कम्बल** जलपात्र **फराठी दोहरि धोती झोरा** एक।
कुकुर सरापि चलल मुसरी झा राखल अपन धर्म केर टेक।[95]

हरिमोहनझाक कथाकाव्य **ढाला झामे** बिकौआ प्रथाक विरुद्ध व्यंग्य कयल गेल अछि। एहिमे भलमानुष ढाला वेशभूषाक वर्णन एहि स्वरूपक अछि–

मैल किट्ट **फाटल** पुरान पाग माथ पर कान्ह पर देने गोबनौर सन **अङपोछा**
कैने खल्वाटमे **त्रिपुण्ड्** पर ठोप तीन दाना **रुद्राक्षक** पैथ बान्हल एक **टीकमे**[96]

टीपार्टीमे ई आधुनिक पार्टीमे आधुनिक वेशभूषासँ सज्जित तथा प्राचीन परिपाटीक वस्त्र धारण कयनिहारक एकहि संग वर्णन कऽ सामाजिक लोकनिक अंग्रेजी वेशभूषाक प्रति आकर्षण जन्य संक्रमणक बानगी प्रस्तुत कऽ देने छथि–

हैट बूट पैंट कोट टाइ सँ सुसज्जित व्यक्ति,
आबि आबि कुर्सीक शोभा छथि बढ़ा रहल

दुइ चारि हमरो सन **धोती** और **कुर्तावला**,
एक कात दबकल जकाँ बैसल छथि '**बको यथा**' ।[97]

होटलक खानसामाक परिधानकेँ अभिव्यक्त करैत कवि कहलनि अछि–

नील **शेरवानी** पर लाल **कलर** **बंद** देने, उज्वर **मुरेठा** सीटि बन्हने **भड़कदार**

मुदा संगहि कवि मैथिल परिधान **डँड़ाडोरि** पर्यन्तकेँ नहि छोड़ल अछि–

चुचाप **धोतीके**ँ ससारल कनेक और नीचा **डराडोरि** ढील कएल सुमरि महावीरजी[98]

सुनमजी '**स्वदेश**' शीर्षक कवितामे मैथिल वेशभूषाक वर्णन कयलनि अछि । हिनक एहि वर्णनसँ मिथिलाक सामान्य ओ विशिष्ट दुहू प्रकारक वस्त्रविन्यासक स्पष्ट चित्र अंकित भेटैत अछि । मिथिला पुरुष वस्त्रक सर्वांगपूर्ण एहि वर्णनमे एकर विभिन्न भेदोपभेदक नामावली भेटैत अछि–

कुरता **टोपी** **साफा** बान्हि **अचकन** **चपकन** **चादरि** तानि
ई बहरैबा काल **पोशाक** हमर अपन अछि **वस्त्र** फराक
खुटिआ **मिर्जै** माथा **पाग** धरक **अङरखा** सुन्दर लाग
साँची **धोती** **डोपटा** कान्ह अपन वेश मे खर्च न आन
सभसँ सुन्दर सभसँ सस्त भूषादेशी अपन प्रशस्त[99]

हिनक **ऋतुक झगड़ा** शीर्षकमे जाड़मे पहिरबाक विविध गर्म अंगवस्त्रक उल्लेख भेल अछि–

गरम **अङरखा** **मफलर** **मौजा** **ऊनी** **साल** **दोसाला**
पहिरि ओढ़ि पहुँचलाह जाड़[100] बबुआन बनल सङ् पाला

गर्मीमे **पंखा** ओ **छाता** परिधानक विशिष्ट अंग बनि जाइछ । कवि रौद ओ उमस सँ जन-जनकेँ आर्त्त बनयवला गर्मीक दोषक बखान करैत एहि दूहू सामग्रीक वर्णन कयलनि अछि–

छथि फटकैत बजैत हमर सन के दोसर सुखदाता
घाम न उमस पाँक न दुर्दिन हाथ न **पंखा** **छाता**[101]

प्रकृतिक मानवीकरणमे सिद्धहस्त कवि वर्षाक माध्यमे मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित **साठा** **पाग** ओ **डोपटा** धारण करबाक परिपाटीक उल्लेख करैत कहलनि अछि–

मेघक **साठा** **पाग** माथ बिजुली **दोपटा** लय धीर
झटकि आबि दुहु जन केँ बरजल वर्षा घन गंभीर

एही तरहेँ शरद ऋतुक तरुणीक रूपमे वर्णन कवि युवतीक वस्त्राभूषण मध्य आभरण, हार, टिकुली, नूपुर, सिन्दूर आदिक उल्लेख कयल अछि–

पहिरि **चित्राऽऽभरण** सद्यः नैश शीत स्नात ।
इन्दु वदना शरद युवती ठाढ़ि सरिता कात ।।
सिङ्रहारक हार उर तीराक **टिकुली** साटि ।
हंस **नपुर** नृत्य निपुणा सुरभि जग भरि बाँटि ।।
अरुण किरणेँ भेल **सिन्दूरित** जकर **सीमन्त** ।
शरद ऋतु-सुन्दरी अङ्गक सुछवि नखत अनन्त ।।[102]

अन्योक्तिका कविक मुक्तक एकगोट विशिष्ट शैली थिक । एहिमे विविध वस्तुक पारिभाषिक ओ आलंकारिक वर्णन भेल अछि । कवि शृंगारक सामग्री **चानन**, पान ओ अंग रक्षण सामग्री **छाता**, **जूता**, **पलंग** आदिक वर्णन कऽ वेशभूषा विन्यासक चित्र उपस्थित कयलनि अछि । एहि समस्त वस्तुक मानवजीवनमे उपयोगिता, रंग, गंध आदिक सहज वर्णन हिनक एहि मुक्तक सभमे भेटैछ–

चानन– लेपिअ घसिअ भिजाए **चानन** महमह घर भरए ।
अथवा आगि जराय धूपित करइछ सुरभि दए ।[103]

पान– मह मह फूल वितान ने गमगम फल अछि लदल ।
केवल पातै **पान** रसिक अधर रङि् अछि सफल ।[104]

छाता– रौद ताप वर्षा-झरी **छाता** पीठ सहैछ ।
पुनि विपरीत बसात पड़ि अपनहु उनटि पड़ैछ ।[105]

जूता– काँट डाँट सहि, पाँक पड़ि फाँकि धूलि, मल अंग ।
मलि मलि, पद आघात सहि **जूता** चरन प्रसंग ।[106]

नागरी-ग्रामीणा शीर्षकमे कवि विविध प्रकारक आभूषणक विन्यासक वर्णन कयलनि अछि–

हीरक **हार** उतारि उर हारी भीलक गाम ।
पहिरल, माला **करजनिक**, झाँपल लाल ललाम ।।[107]
मन **टीका** टेकल पदेँ **नूपुर** माथ चढ़ौल ।
हार डाँड़मे कसि जनी **डरकस** गराँ बन्हौल ।।[108]

ललना लहरीमे कवि विभिन्न प्रदेश ओ परिवेशक महिलाक चित्र अनुरेखाकित

कयलनि अछि। एहिमे मैथिल ललनाक चित्रमे वस्त्र ओ प्रसाधनक किंचित रूपरेखा भेटैत अछि–

सीथ सोझा **कोँचा** कुटिल पैध आँखि मुह पानि।
लुरिगरि गितगाइनि सहज, लिअ तिरहुति तिय जानि ॥
दृग चंचल अंचल भरल, **कुंचित कच** मुख पान।
तिरहुति पद गबइत चललि धनि जनि गंगा स्नान ॥[109]

एहि तरहेँ आनो आन प्रान्तक ललनाक वस्त्राभूषणक उल्लेख भेल अछि, यथा–

मधु भाषा दृग चंचला **चूल** चारू घन श्याम।
बंग अंगना ककर मन हरय न रूप ललाम ॥[110]
तरल नयन लहु लहु वयन चित्रित चारू **पटोर**।
काम रूप कामिनि असम श्याम रहओ वा गोर।[111]
कुंडल मंडित गंड थल **कच** रूचि घन कुच कंद।
आंध्र पुरंध्री रूप छवि सभकेँ बनबय अंध ॥[112]
कनक गौर मुख रुचि ललित **कुंकुम** रंजित अंग।
अंगूरी छवि कश्मिरी, बाला बलित अनंग।[113]

नागरी, छात्रा ओ सधवाक स्वरूपकेँ कवि क्रमशः एहि पदेँ अभिव्यक्त कयल अछि–

वंक **अलक** रंजित अधर, पट पटोर चटकारि।
वेश वचन रसना चतुरि रसपति नागरि नारि।[115]
लुलित अलक मुख झलक, चल पलक, चुस्त परिधान।
कर पुस्तक, गति सुस्त, दृग तडित अधर मुस्कान ॥[116]
बिंदी, टिकुली कर वलय, मान-मनाउनि राग।
मन रति पतिक सिनेह गुन, धनि धनि जुड़ओ सोहाग ॥[117]

एहि तरहेँ वेशभूषा प्रसाधक **चूल, पटोर, कुंडल, कच, कुंकुम, अलक, अधर रंजन, चुस्त, बिंदी, टिकुली** आदि शब्दक प्रयोग भेल अछि।

गंगा **तरङ्गिणी**मे कवि गंगाक सान्निध्यक प्राप्तिक हेतु जाहि त्याग भावनाक परिचय देलनि अछि ताहिसँ कतोक पुरुष प्रसाधनक संकेत भेटैत अछि यथा– भाल पर **कस्तूरी**क तिलक करब अथवा **गङ्गौट**सँ तिलक करब, चन्दनक अनुलेपन करब, अरगजा लेपन करब आदि–

नहि **कस्तूरी** तिलक भाल **गंगौट** लभ्य जत।[118]
पंक अंग यदि संग न **चन्दन** लेपब उपकारि।[119]
छोड़ि **अरगजा** लेपन, गंगा पाँक अङेगजब।[120]

एही क्रममे ललना द्वारा कपोल पर **कुङ्कुम** लगयबाक सेहो संकेत भेटैत अछि–

नहि **कुङ्कुम** कश्मीरजा युवति कपोल **पराग** रुचि।[121]

मैथिली वन्दनामे मिथिलाक नारीक **साड़ी**क विशिष्ट अंग **खोँछि**क उल्लेखक भेल अछि–

अपना **खोँछिक** अन्न-कण, पोछि नयनसँ अश्रु कण।
खसा देलहुँ नैहरक दिस, सजल शस्य श्यामल कत न ॥[122]

एहिना **वर्णमयी** कवितामे टवर्गक परिकल्पनाकेँ वर्णमयीक कुटिल अलक कहल गेल अछि– **कुटिल अलकक** वक्ररेखासँ टवर्गक कल्पना।[123]

वैद्यनाथमिश्रयात्री आधुनिक मैथिली साहित्यमे प्रगतिवादक प्रखर गायक यात्रीक कतोक कवितामे तीक्ष्ण व्यंग्यक हेतु वेशभूषा जन्य विकृतिक चित्रांकन भेल अछि आ एहि क्रममे मिथिला वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख देखि पड़ैत अछि। हिनक **बूढ़ वर** कथा काव्यमे अनमेल विवाहपर तीक्ष्ण व्यंग्य कयल गेल अछि आ वैधव्य संतापक जड़ि मिथिला समाज पर कटु प्रहार कयल गेल अछि। बूढ़ वरक आकृतिक वर्णन करबा काल कवि ओकर अङ्विन्यासक विशद वर्णन कयलनि अछि। पान गलोठब, **नोसि** लेब जँ बूढ़क प्रसाधनक रूपमे वर्णन भेल अछि तँ **छाता**, **पनही** ओ साठा पाग हिनक वेशभूषा विन्यासक विशिष्ट सामग्री। एहि सामग्री सभक वर्णनमे कविक तीक्ष्ण व्यंग्य निहित अछि। परिहासपूर्ण उपमानक संयोजन द्वारा बूढ़वरक वेशभूषाक प्रति सामाजिकक घृणा भावक उद्दीपन भेल अछि–

पान गलोठि कें उठौलन्हि बात, पूछै लगलथिन्ह परिचय पात
हाथमे हुनक **नोसिदानी** रहनि, **छाता** रहनि टूटल कमानी रहनि
ढसरगल रहनि की दनही रहनि, कुकुरक चिबौल **पनही** रहनि
साठा **पाग**क चूनक छौंछी जकाँ, कनपट्टी मसुविर्ष माछी जकाँ[123]

दाढ़ी ओ **मोंछ**केँ सौन्दर्यपूर्ण बनयबाक प्रक्रियाक सेहो उल्लेख एहि कथाकाव्यमे भेल अछि– दाढ़ी बनाओल **कपचल** मोंछ रहन्हि नाक जेना टिटहीक चोँच रहन्हि।[124]

सौभाग्यवती नारीक दुइगोट प्रमुख प्रसाधन होइत अछि **लहठी** आ सिन्दुर मुदा विधवा तकरा धारण नहि कऽ सकैत छथि। मिथिलाक एहि परम्पराक उल्लेख कविक

खिलाप शीर्षक कथाकाव्यमे एहि स्वरूपक अछि–

पोखरि पर **लहठी** फूटल हमर, सीथसँ **सिन्नुर** छूटल हमर[125]

एही कथाकाव्यमे पुरुषक सिरक प्रसाधन, **चानन** ओ **ठोप**क सेहो उल्लेख भेल अछि– तैओ करै छथि हमरा नचार, केहेन केहेन **ठोप चानन** कैनिहार[126]

गोठबिछनी कविक सामाजिक यथार्थवादी कविता थिक । एहिमे गोठबिछनीक जीवन पद्धतिक उल्लेखक क्रममे मिथिलाक निम्नवर्गक कन्याक वेशभूषाक वर्णन भेल अछि । प्रसाधन सामग्रीक अभावमे ओकर केशक रूच्छता, विवशताक कारणेँ कोनहुना देह झपबाक हेतु ओकरा द्वारा पचहथ्थी नूआ धारण करबाक स्थिति तथा आभूषणक प्रति व्यामोहक कारणे ह्यारी धारण कऽ सौख पुरयबाक विन्यासक वर्णन कवि एहि शब्देँ कयलनि अछि–

मैल पुरान **पचहत्थी** नूआ, सेहो फाटल **चेफड़ी** लागल
देहक रङ जमुनिआ तइपर मुह माइक गोटीसँ दागल
बगड़ा जेना लगाबए खोंता, तेहने **रुच्छ केश** छउ तोहर
दू छर **ह्यारी** मात्र गरामे, केहन विचित्र वेस छउ तोहर[127]

कविक **परमिटक साड़ी** कथाकाव्यमे परमिटक सरकारी व्यवस्थाक प्रति कटु व्यंग्य कयल गेल अछि । एहि क्रममे साड़ीक एकगोट प्रभेद बरहत्थी, ओकर दोष खोंचाह, ओकर अंग पाड़ि, सूत आदिक विवरण आयल अछि–

की कहितिऐक, **बरहत्थी** साड़ी अति अभद्र
ने **पाड़ि** नीक ने **सूत** नीक खर खर करैत सेहो खोंचाह[128]

राधिका शीर्षक कवितामे कवि आधुनिकताक प्रसाधनक विन्यासक सुन्दर चित्र ठरेहलनि अछि आ **ठोर राङब, केश कपचब, भौंह पिजाएब, कटगर काजर करब, नह राङब** आदिकेँ अभिव्यक्त करैत एकटा आधुनिकताक वर्णन कयलनि अछि ।

मूह कटगर ठोर लालेलाल **बाब्दहेयर**-केश कपचल कृष्ण **कुंतलजाल**
भउँह केश पिजौल मर्मबेधी टाकु सन **कजरैल** आँखिक कोर
अनावृत मुक्तोदरी आवर्त्त दारुण नाभि रङल बीसो नखक उज्जर पीठ
हरितवसना आइ कालुक राधिका[129]

आधुनिक भारतीय नव पीढ़ी अपन सब किछु बिसरि पाश्चात्य सभ्यता दिशि लक्ष्यहीन भऽ दौड़ि रहल अछि आ एकटा कृत्रिम सभ्यताक प्रसार भऽ रहल अछि जकर प्रतीक थिकीह ई आधुनिक राधिका । स्वभावतः हिनक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासमे कृत्रिमताक लक्षण देखि पड़ैछ जे क्रमशः मिथिलाक परम्परित विन्यासकेँ संक्रमित कयने जा रहल अछि ।

दोसर दिस कवि प्राचीनतासँ विरक्त नायिकाक लाज संकोचक सीमाकेँ तोड़यवला तपोवनी स्टाइलमे बान्हल **खोंपा**पर सेहो व्यंग्य करैत कहलनि अछि–

माथपर उत्तुंग **खोंपा तपोवनी स्टाइल**मे बान्हल
आ ताहिमे लपेटल **चम्पाफूलक माला**
गए नूनू ककर ककर प्राण लेबही तों आइ ?[130]

वस्तुतः कवि कृत्रिम आधुनिक वेशभूषा विन्यास ओ प्राचीन वेशभूषा विन्यासक मध्य सामञ्जस्यक स्थापना चाहैत छथि । प्राचीनताक विकृति ओ कृत्रिमताक अतिरेक हुनका सह्य नहि छनि । **जुनि अबउ भरि राति मेल ट्रेन** शीर्षक कवितामे यात्रीजी एकटा दुरगमनिआ कनिआ ओ ओकर खबासनीक माध्यमसँ मिथिलाक जनजीवनक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक अत्यन्त मनोहर चित्रांकन कयल अछि–

सूतल अछि की जागल **घोघक** अ'ड तर ।
वर मुदा कटइ छइ फों फ करिआ कंबल पर ठामहि
सामान रखने अछि सैंति सिरमा दिश कए रहलइए अइहबक ओगरबाहि
सूति पाति वाली अधवयसू खबासिन लाल **पाड़िक** पीयर **साड़ी** पहिरने
माङुर सन एनमेन ओकरा देहक कांति लगइए केहन दिब ।
आब किए बहरैत आँखिक सूत जुनि अबउ मेल ट्रेन भरि राति ।[131]

यद्यपि कवि एहिठाम सर्वहारा ओ सामन्तक मनोदशा ओ परिस्थितिक विवेचन कयलनि अछि मुदा एहि माध्यमे **सूति पाति** आदि **गहना, पाड़ि, साड़ी, कंबल घोघ** आदि वस्त्र विन्यासक सेहो चित्रण स्वभावतः भेल अछि ।

दामोदरलालदासक **प्रेम पत्रावली**मे पद्यमय पत्रशैलीमे मैथिल महिला जगतक भावानुभाव ओ अन्तःसंघर्षक वर्णन भेल अछि । हास्यरसक उत्कृष्ट अभिव्यंजनाक संग नारी जगतक यथार्थपरक चित्रण कऽ कवि विविध नारी समस्या दिस सामाजिकक ध्यानकेँ आकृष्ट कयल अछि तथा ओहि क्रममे वेश भूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक निवेश कयल अछि–

झट क्यो टनकि उठती ओम्हर, हुनका सनक बेधक्क के ।
के देखि नहि लेलक हुनक, नाकक **बुलाकी छक्क** के ।।
सिटितहि रहै छथि देह सभखन, हाथ लए लए **आरसी** ।
भैंसुर ससुर सुनि लेल कखनो, तनिकर अंग्रेजी फारसी ।।[132]

आलोचना ओ कुचेष्टाक एहि परिकल्पनामे सामाजिक जीवनक यथार्थक चित्रण भेल अछि आ ओकर अभिव्यक्तिक हेतु कवि **बुलकी, छक्क**, आदि गहना, प्रसाधनमे

सहायक सामग्री **आरसी** तथा वेशभुषा प्रसाधनक विशिष्ट शब्दावली **सीटब**, क्रियापदक प्रयोग कयल अछि ।

एकटा पत्रमे कवि आधुनिक प्रगतियोक युगमे नारीक परवशता ओ परतंत्रताक अत्यन्त मार्मिक चित्रण एवं सासुरमे कुलवधूक गञ्जनपरक मानसिकताक सामाजिक रूढ़िक वर्णन कयलनि अछि–

> **कपड़ा** पहिरली साफ तँ नट्टिन हमर शुभ नाम हो ।
> **मैलो** पहिरने नाम अपरोजकि महा अभिराम हो ।
> दुइ तीन लोटा सँ अधिक यदि यारि ढारि नहायली ।
> मेयाँक पदवी लै ननदि सँ गोड़ धरि लगवायली
> हम आइकाल्हुक **फैशनक** अनुसार यदि **वेणी** रची ।
> तँ कूट होइछ 'देखु क्यो रम्भा, रती, रानी शची ।
> दसनावलीमे, पैर मे **मीसी महावर** देखि कें ।
> तीसी जकाँ घर चनचनाए उठैछ ज्वाला फेंकि कें ।
> गर्मीक कारण कौखनो यदि **घोघ** किच्छु उघार हो ।
> हमरा उपर चारू दिशा सँ वचन वज्र प्रहार हो ।[133]

एहि तरहें कवि नारीक वेशभूषा प्रसाधनमे **स्नान, वेणीरचना**, दाँतमे **मीसी** आ पैरमे **महावर** रचना तथा **घोघ** तनबाक पारम्परिक स्वरूप तथा तज्जन्य सामाजिक रूचि अरुचिक आकलन कऽ नारी-वर्गक दुर्दशाक वर्णन कयलनि अछि ।

एकटा पदमे कवि प्रसाधन सामग्रीक माध्यमे अलंकारक उत्कृष्ट निवेश कयलनि अछि–

> जेहन उदास लगै अछि सोहर जौं 'ललना' पद छूटै ।
> जेहन उदास लगैछ चन्द्रमुख जौं टिकुली खसि फूटै ।
> सिन्दूर-रेख बिना जहिना हो फीका, **सीटल पट्टी** ।
> सखी चमेली बिना लगै अछि तहिना ई सखि-गट्टी ।[134]

तीसी फूल नामक सखीक वर्णनमे कवि नारी वेशभूषाप्रसाधनकें सर्वाधिक सफल ओ सम्पूर्णतामे अभिव्यञ्जना देल अछि–

> मेंहदी हाथ **महावर** पदमे से नित रहय लगौने
> सभ खन रहय **गुलाबी खिल्ली पानक गाल** दबौने
> **अलक तिलक** सिन्दुर पहिरै अछि **बिन्दी** लै अछि **साटी**
> **अतर तेल** सँ **वसित** केशक रचि रचि **सीटय पाटी**

> थकरल श्यामल केश रहै अछि आगू मुह लटकौने
> कौखन बाम बाहु लतिका पर लीलहि रहय उठौने
> **साड़ी** बदलि बदलि **पहिरै** अछि दिन भरि बीसहु रंगक
> पैर कोना धरती पर रोपति तोसक तेजि पलंगक
> चमकि कौखन से झमझम **झब्बा-झुमक झमकौती**
> लोकि लोकि फूजल **अलकावलि अतर तेल गमकौती**
> आध हँसी हँसि कौखन से निज **सोन-सुति चमकौती**
> कौखन ठुमुकि ठुमुकि चलि **नूपुर नेउर** के **झनकौती**
> लिहुरि लिहुरि के चलत खनहुँ तँ एँड़ी युगल निहारति
> कनियों कतहु माटि लागत तँ झट रूमाल लै झाड़ति ।[135]

एहि तरहें कवि आधुनिकाक वस्त्राभूषण विन्यासपर कटु व्यंग्य कऽ नारीक प्रदर्शन भावकें सामाजिक ओ वैयक्तिक दोष जनाय एहु परिस्थितिसँ नारी समाजक मानसिकतामे परिवर्त्तनक आह्वान कयल अछि । नारी वेशभूषा विन्यासक एहि पदावलीमे अत्यन्त मनोहर ओ प्राय: सम्पूर्ण चित्र भेटि जाइत अछि ।

कुचेष्टा ओ कौचर्य एखनहु मिथिलाक नारी समाजक एक विशिष्ट मनोरंजन थिक । ई मनोरंजन खास कऽ कोनो वर वधूक ओहिठाम सासुर पक्षसँ आयल भारक टीका-टिप्पणीमे विशिष्ट अवसर पाबि जाइछ । कवि एहि अवसरक चित्रण कऽ पुरुष परिधान ओ अन्य वस्तुक वीभत्सताक वर्णन कऽ कतिपय वेशभूषा प्रसाधनक सामग्रीक उल्लेख कयल अछि–

> बड़हासन सन सन **बाँटल सूतक सपटा** सन सन साड़ी ।
> साटे फाड़ि धोआय पठौलक **चद्दरि** नौ मोन भारी ।
> **धोतिहु** दून जोर जमाइक तकरे भाय लगै अछि ।
> लिखितहुँ भारक हाल चमेलीजी ओकिआए लगै अछि ।
> **खधर मधरकें** देखल अङ्गा खधर मधरहिक **तौनी** ।
> कते कहू हम सखी चमेली सभ व्यवहार घिनौनी ।
> कहाँ गाछ अछि लौंग सुपारिक ! कहाँ **धागनक झोरी** ।
> **बटुआ** धरि छल नीक कनी तँ तकरो सँड़ले **डोरी** ।
> दकचल फकचल लिखलपचीसी कौड़िहु पैंच ने भुट्टी ।
> अखराहे खराम छल तकरो टुटले फटले **खुट्टी** ।
> **पनहीएक** जोड़ जे आयल सभक चित्र गिनकौलक ।
> बुझि पड़ैछ जे घोंछा अपनहिं हाथें सीबि पठौलक ।[136]

एकटा पदमे कवि आधुनिकाक परम्परित वस्त्राभूषणक प्रति विरक्ति तथा आधुनिक वस्त्राभूषणक प्रति आसक्तिक वर्णनमे नारी वस्त्राभूषणमे होइत परिवर्तन दिस लक्ष्य कयल अछि–

की आब सैह विचार जे सभ लाज-धाख हटायदी ?
नव **सूट-बूट** चढ़ा सनातन **भेष भूषण** जाय दी ?
सौभाग्य सूचक चिन्ह ई **साड़ी** तथा **चूड़ी** हटा
घूमी हमहुँ सभ आब **कालर कोट पैजामा** डटा ?
ऍं । आब ताही कार्य सौं वंशक बढ़त सौभाग्य की ?
एहि रीति सकती राखि गृहणी-वृन्द पुरुषक **पाग** की ?[137]

प्रेम पत्रावलीक एक गोट विशिष्ट पदकें **दामोदरलालदास घोघ-बिरुदावली** शीर्षक प्रदान कयने छथि । एहिपर सम्पादकीय टिप्पणी दैत **भोलालालदास** कहने छथि जे– एहिमे '**भदेशक**' जमायक चर्चा भेल अछि । जमाय अंग्रेजी पढ़ल रहनहुँ अभद्र छथि । पहिने बिलकुल **घोघसँ** घृणा छलनि जाहिपर सासुक शासन होइ छनि ।[138]

घोघ बिरुदावलीक अंशमे जे विवरण देल गेल अछि ताहिमे सासुरमे जमाइक शालीनतासूचक वेशविन्यासक विशिष्ट विवरण देल गेल अछि । मिथिलाक कायस्थ समाजमे जमाय द्वारा घोघ काढ़बाक विशेष विध तथा मौगियाह प्रकृतिक पुरुषक लक्षण, पर व्यंग्य-विनोद उपस्थित करैत लेखक एहि विरुदावलीमे अनेक वेश ओ प्रसाधनक विशिष्ट ओ पारिभाषिक शब्दकें समेटि लेलनि अछि–

आबहु सम्हारथु, **घोघ** काढ़थु, हँसथु बाजथु मन्द सौं ।
सभ खन रहथु अति नम्र मस्तक तथा आनन्द सौं ॥
जे बात बाजथि जाहि खन, बाजथु विचारि-विचारि कें ।
नहु नहु चलथु, आङ्गनहु भरि चाङ्गुर ससारि ससारिकें ॥
इत्यादि सासुक सुनि सकल कोमल-पुरुष वचनावली ।
मुरझल कि विकशल के कहय तनिकर मनक पङ्कज कली ॥
बस, ताहि खन सँ घोघ तानब' लेल मनमे ठानि से ।
'बाजब-हंसब', नहु नहु चलब, सब बात लेलन्हि मानि से ।
बस ताहि दिन **सँबाबाड़िक** छल केश जे **झोंपा** जकाँ
सभटा समेटि बनाय लेलन्हि नव वधुक **खोपा** जकाँ
अति भेल नतमस्तक बना मुँह लेल से चोंचा जकाँ
लुंगी पहिरि लटकाए लेलनि **साँचियो** कोंचा जकाँ

निज **चद्दरिक आँचर** बना कौंखिआय लेलनि नेमसौं
घोघो दुपट्टा तानि नव कनेआ जकाँ अति प्रेमसौं
अयलाह भोजन हेतु आङ्न बस जनानी भेसमे
लिहुरैत मन्द चलैत मधु मुसकैत मोदावेशमे ।[139]

वर्षासँ अङ्क संरक्षणक हेतु छाताक स्थानपर सूप अथवा डालाक उपभोग ललना समाजमे होइछ, तकर संकेत कवि एहि रूपें देल अछि–

छाताक नहि किछु काज अछि के चलत छाता तानिकें ।
नहि मानबे तौं 'सूप वा डाला', ओढ़ा दिअ आनि कें ।[140]

ग्राम्यक गहनाक प्रति व्यामोहक वर्णन कऽ कवि मिथिलाक नारी समाजमे एकर प्रचार एवं रूढ़िक वर्णन कयल अछि । एहि रूढ़ मानसिकतासँ ग्रस्त नारीक मेमक संग तुलना कऽ कवि नारी समाजक व्यामोहमे परिष्कारक संदेश देलनि अछि । एहि क्रममे आभूषणक विविध प्रभेदक उल्लेख भेल अछि–

दोसर जनि छथि बात बातमे **गहने** काण्ड चलौती ।
सैह प्रसङ्गक गप्प करब मे निज बलबुद्धि लगौती ।
झुमकक बोर झरल जाइत अछि दोसर आब **गढ़ायब** ।
छुच्छुम बाँहि लगैछ **बाँक** बिनु कोना कतहु बहरायब ।
ऐ ! ऐ ! प्राण ! काज बड़का अछि हमरा एक अहाँसौं ।
कै भरि **सोन सूतिमे** लागल कहु गढ़बौल कहाँसौं ।
तड़की देखि उठै अछि **झड़की** खढ़ भरि मोहि न भावै ।
लोथ चोथ से पहिरि अपन के बचलो कान तोड़ावै ।
बाजुबन्द भैयाक देल अछि **चन्द्रहार** एहि ठामक ।
कर्णफूल मे बहुत सोन खा गेल सोनरबा गामक ।
जकरा गढ़निक ह्वैछ प्रशंसा से थिक सैह **बुलाकी** ।
गहना चढ़क कालमे देलनि कनितहि रुनझुन काकी ।
गंगातीर रही पकर्का फदर फदर बतिआइत ।
ने गहना गुरिया छल एकहु ने सिन्दुर ने साड़ी
मटका मटकी धरिक थान नहि एहन कतहु हो नारी ।
बिनु **गहना गुरिया** के साँचे तन मनसे सन लागै ।
घरमे भला जेना जे निबहै बाहर क्यो ई त्यागै ।
नहि अपना हो तौं अनको सौं ई सभ माङल जाइछ ।
किन्तु बिना **गहना-गुरिया** के घर सौं क्यो बहराइछ ।

की कहु पिरतम ! जखन जखन छवि मेमक मोन पड़ै अछि ।
हँसिक लेल रहियो नहि होइछ हँसितहुँ पेट फुलै अछि ।
भरिसक मास करै आयलि छलि से लोकक रैलामे ।
छुच्छी कोना बिना गहनाके आबि सकलि मेला मे ।
ओकरा जकाँ बिना गहना कें हम सभ जौं बहरैतहुँ ।
एको डेग चलियो नहि होइत लाजहि तों मरि जैतहुँ ।
बस ! एहने एहने हिनकर गप छुच्छे सोना चानी ।
सखी अनारकली ! ई के छथि ? चिन्हले ! गहनारानी ।[141]

हिनक **वसंत विजय** कवितामे **शाल-दोशाल, वस्त्र, जूड़ा, सिन्दूर, रत्नाभरण, अतर गुलाल** आदि विविध वस्त्राभूषण प्रसाधनक शब्दक उल्लेख भेल अछि–

जा रहल छथि शिशिर शीर्णो, संग **शाल दोशाल** नेने ।
धम्हत कतबा काल निठुर-वृत्ति निष्ठुरताक धैने ।।
हरित **वस्त्रा** वल्लरी बाला सबहुँ, **जूड़ा** समारलि ।
मञ्जरी **सिन्दूर** रेख समान सिर आमोद धारलि ।।
विविध **रत्नाभरण** कुसुमक पहिरि ताकथि पंथ कंतक ।
ह्वैछ शंखध्वनि मनोहर, रसिकवर राजा वसन्तक ।।
लै विविध सौरभ सरस, सञ्चरथि पवनहुँ मन्द शीतल ।
अतर और गुलाल जनु अछि जा रहल सब ठाम छीटल ।।[142]

उपेन्द्रठाकुर'मोहन'क एक गोट कवितामे वसन्तक आगमन भेलासँ परिवर्तित परिवेशमे मलयानिलक उन्मादकता ओ वनदेवीक सौन्दर्यक वर्णनक क्रमे वेशभूषा प्रसाधनक विभिन्न शब्द यथा, **अञ्चल, हेमहार, कुंकुम, परिधान** आदिक उल्लेख अत्यन्त मनोरम अछि–

उन्मादक दोला पर झुलैत मधु राशिक पिचकारी भरैत
वल्लिक **अञ्चल** चंचल करैत मलयानिल नचइत अछि दिगन्त
आएल वसन्त ! आएल वसन्त !!
नूतन किसलय **परिधान** भार । मृदु मञ्जु माञ्जरिक हेम **हार** ।
रचि कुसुम थार **कुंकुम**-विहार । सजलन्हि वन-देवी, छवि अनन्त ।
आएल वसन्त । आएल वसन्त ।।[143]

आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य व्यंग्यक प्रख्यात कवि **चन्द्रनाथमिश्र अमर**क अनेक कवितामे वेशजन्य विकृतिक चित्रणक क्रममे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख

भेल अछि । हिनक प्रसिद्ध कथाकाव्य **बुढ़वा कका**मे मिथिलामे प्रचलित अनमेल विवाह, बहु विवाह प्रथापर तीक्ष्ण व्यंग्य कयल गेल अछि । एही क्रममे बरियातीक परिधान **धोती-कुर्त्ता** तथा वृद्ध वरक **वस्त्रक** वर्णन भेल अछि–

सब चलल **धोआ धोती कुर्ता** पृद्धक कर फूजल पनबट्टिक...
ललका **धोती** पर मैल पाग दए चलला वृद्ध बनल लदफद[144]

कविक एहि चित्रणसँ बरियाती द्वारा धौतवस्त्र कुर्ता धारण करबाक तथा वर द्वारा लाल रंगमे राङल धोती ओ शिरोवस्त्रक रूपमे पाग धारण करबाक उल्लेख भेल अछि । उपरि वस्त्रक रूपमे दोपटा धारण करबाक परिपाटी सेहो मिथिलामे प्रतिष्ठासूचक मानल जाइत रहल अछि । बुढ़बाक कका दोपटा सेहो धारण कएने छलाह जे किछु बदमास नेना द्वारा फाड़ि देल गेल– रस्तेसँ हुनका कचकचाय अन्तिममे फाड़ि देलक **दोपटा**[145]

वर द्वारा आधुनिकताक प्रदर्शनक हेतु हथपोछनाक रूपमे रूमाल धारण करबाक सेहो परिपाटी बनल अछि । देहमे **मिर्जई** धारण करबाक प्राचीन परम्परा अछि । इत्रादिसँ वस्त्रकें सुवासित करब वरक हेतु प्रतिष्ठाक विषय होइछ । प्राचीनता ओ नवीनताक युगसन्धिपर ठाढ़ बूढ़बाक ककाक मनोविकृतिक चित्रण द्वारा हास्य उत्पन्न करबाक हेतु कवि हुनक वेशविन्यासक अत्यन्त विलक्षण चित्र उपस्थापित कयलनि अछि–

नवका **दोपटा** किनबाक हेतु फोलल मोटरी बान्हल हजार कीनल **रूमाल रेशम**क लाल
दए जेबीमे ओटोक कार्ड **मिर्जई** गमगम बूढ़ा कमाल
पुनि कएल ध्यान **पागो** पुरान
लए **कोकटी**क सीटल नवीन कए कल्ला तर खिल्ली चलान[146]

एहिठाम **रेशमी** ओ **कोकटी** वस्त्र-प्रभेदक उल्लेख पारिभाषिक अछि ।

मन्त्री शीर्षक कवितामे कवि तीक्ष्ण व्यंग्यक माध्यमे मन्त्रीक अर्थचरित्रकें उद्घाटित करबाक हेतु **जेबी** शब्दक प्रयोग कयल अछि–

फल टटका दी बड़का बड़काकें अटका दी ।
चन्दा सँ **जेबी** भरि, संस्थाकें फाँसीपर हम लटका दी ।।[147]

तथापि कवि जाहि प्रसाधनीय अंगक प्रसंग सम्पूर्ण कविते रचना कऽ ओकर इतिहास ओ भविष्यक सम्पूर्ण गाथाकें उरेहि प्राचीनताक प्रति ममत्वओ आधुनिकताक प्रति कटु व्यंग्य कयलनि अछि से थिक **मोंछ** । मोंछक विन्यास प्राचीनेकालसँ होइत रहल अछि । एकरा पुरुषक पौरुषक प्रतीक मानल जाइत रहल अछि । **मोंछ ऐंठब** मोहावरे बनि गेल अछि । वीर लोकनिक वीरत्वक परिचायक ई मोंछ अपन कठोरता ओ कुटिलताक हेतु प्रसिद्ध रहल अछि । कवि एकरा अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि–

फाटू हे पृथ्वी ! विकल हृदयक आधार बनू उद्धार करू ।
पददलित आइ अछि वीर पुरुष किछुओ तँ आब विचार करू ॥
हमहीं छी पुरुषक पौरुष आ खत्ता मे चित खसल छी हम
नवयुवाक सभ्यलोकनिक पालाँ पड़ि, पङ्कक बीच फँसल छी हम ।[148]

मुदा आधुनिक युगमे **मोंछ** राखब शानक वस्तु नहि बूझल जाइत अछि । अङ्ग विन्यासक क्रममे मोंछकेँ उपेक्षणीय बूझल जाय लागल अछि । आधुनिक कालमे सभ्य कहाबय वला लोक **सेफ्टी रेजर** नामक यंत्र द्वारा मोंछकेँ कतरब-छीलब शुरू कऽ देलनि अछि । नवका फैसनमे मोंछक अर्द्धभागकेँ काटि देब आवश्यके बूझल जाइछ । एहन स्थितिमे मोँछ अपन अधोगतिक हेतु जे आत्मालाप करैत अछि से कविक प्रौढ़ कल्पना ओ सूक्ष्म दृष्टिक संबल पाबि अत्यन्त मनोरम भऽ गेल अछि–

हम तँ छी वैह मुदा हमही दुर्गति द्वारेँ छी तड़पि रहल
नव युगक सभ्य लोकनिक नामे छी कानि रहल छी कलपि रहल
बहुतो उपर सँ **कपचि कपचि** अधिकार हमर अछि छीनि रहल
बहुतो हमरे संहार करक हित **सेफ्टी रेजर** कीनि रहल
बहुतो आधा धड़ काटि हमर अपने **फैसन** मे चूर बनल
हमरा विपत्ति बड़ भारी अछि हम मसोम्मात मे जाइ गनल ।[149]

बालककेँ सामान्यतः सोड़ह वर्षक बाद मोंछ जनमैत छैक । मुदा मोंछकेँ आवक युगमे प्रतिष्ठाक वस्तु नहि बूझल जाइत छैक । ई आब केवल बाबाजी– सन्यासीक वस्तु रहि गेल अछि । मोंछक एहि आत्मालापक माध्यमे कवि बाबाजीक वेशक विशिष्ट परिधान **खड़ुकीक** सेहो प्रयोग कयल अछि–

हम सोड़ह वर्षक बाद आबि, अधिकार अपन जों जमबै छी
तँ आजुक युगमे अपनहिँसँ, हम अपन प्रतिष्ठा गमबइ छी
नहि रहल प्रयोजन आब हमर, योजन भरि दूर रहइ अछि जग
पहिने सँ बुझि आगमन हमर छी छी दूर दुर कहइ अछि जग
लाजेँ ककरो लग नहि बाजी बाबाजी लग बैसी जा कँ ।
हम तुम्मा चुट्टा **खड़ुकी** वल, निर्वाह करी नहि जग ताकेँ ।[150]

अमरजीक हास्य-व्यंग्य युगसत्यकेँ कोना सहजेँ अभिव्यंजित करैछ, तकर उत्कृष्ट उदाहरण थिक हिनक **कंसार मे बी.ए.** कविता । एहि कवितामे आधुनिक शिक्षामे परवश भेल ग्रेजुएटक बेकारीक समस्याक यथार्थपरक चित्रण भेल अछि । एही क्रममे आधुनिक वस्त्रविन्यासक सेहो चित्रण भेल अछि–

श्वेत '**सर्ट**' करिआ '**अधकट्टी**, जहिना चन्द्रक बीच कलङ्क
लाड़नि हाथ देखि कए हमरा, अतिशय भए उठलाह सशङ्क[151]

जगदीपनारायणदीपकजीक विभिन्न कवितामे वेषभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन भेल अछि । हिनक **कालक स्वप्न** कथाकाव्यमे यद्यपि गाँधीजीक महत्ता ओ राष्ट्रप्रेमक वर्णन भेल अछि मुदा मानवमात्रक मूलभूत आवश्यकता वस्त्रक अनिवार्यता ओ तकर यंत्र चर्खाक उत्कर्षक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

चर्खा देखितहि ई की थिकैक ? अकचका पार्थ झट बाजि देल
भगवान तखन उठलाह बाजि, ई अस्त्र बनल अछि वस्त्र लेल[152]

नारी जीवनक विभिन्न परिवेशक वर्णन करैत कवि नारी प्रसाधनक अनेक तथ्यक उल्लेख कयलनि अछि । कुमारि कन्याक वर्णन करैत कवि ओकर कानमे **कनैलक** फूल लगयबाक, केशकेँ **औंठिया** रूपमे सजयबाक, आङुरक नहकेँ **मेहदीक** रंगसँ रङबाक वेषभूषा विन्यासक मैथिल परम्पराक उल्लेख करैत कहलनि अछि–

छै ककर कानमे फूल **कनैलक** खोँसल ? छै ठोर **अड़हुलक कोँढ़ी** सन बिनु पानक
इन्दीवर विजयी नयन अनिन्ध ककर छै ? गरदनि मर्दक छै पड़वा-ग्रीव-गुमानक
अछि रंग गहुम सन दाँत स्वच्छ **ऐना** सन भदवारिक नभ सन **औंठिया** केश **झमटगर**
आङुर नख **मेहदी** रंगसँ रंगल ककर छै रे । ककरा मुँहकेँ चान ने करतइ परतर[153]

जाड़कालामे ऊनी परिधान मध्य **स्वेटरक** महत्त्व विशिष्ट अछि । मिथिलाक कुमारि कन्या ओकरा बुनैत छथि । कवि एहि स्थितिक वर्णनक क्रममे स्वेटर बुनबाक हस्तशिल्पमे सहायक यंत्र **कुरूश** तथा ओकर उत्पादन प्रक्रियाक प्रारंभिक अंश **छानबकेँ** अत्यन्त सहज रूपेँ अभिव्यक्त कयल अछि–

परतर की करत मशीनक स्वीटर कहियो जे एकरा हाथेँ गेल **कुरूश** पर छानल[153]

कुमारि जीवनक परिणति छैक परिणीता । परिणीताकेँ जोगाकऽ रखबाक परम्पराकेँ कवि तहिआओल पेटीक साड़ीसँ तुलना कयलनि अछि । वेषभूषा प्रसाधन विन्यासक विशिष्ट परिभाषिक शब्द **तहिआएब** एहि माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि–

जाइत मझधार, निठुर क्यौ रखैत एकरा **तहिआओल** पेटिक **साड़ी** जकाँ नुकौने ।[154]

वेशभूषा प्रसाधन कतोक विशिष्ट शब्दक प्रयोग भेल अछि आ आँखिमे **काजर** लगायब, मुखारविन्द पर **केशक लटकेँ** झुलाकऽ शृंगार करब तथा साड़ीक **आँचरकेँ** उन्मुक्त रखबाक प्रसाधनक वर्णन भेल अछि–

मानल **काजर** सौं पौंछि आँखि कें बान्हल रोकी जौं कनखी तीर तखन ने जानी झपने की शशिमुख कें बदरी लट सौं हो छिटकए बिजली रद जौं न निराशा-तम मे भुजबन्धन मे उन्मुक्ति सुखक अनुभव हो आँचरक बसातहि प्रेमक दीप जरैए ।।[155]

दुरागमनक कनियाँक वर्णनमे कवि ओकर सौभाग्य ओ सन्ततिकामनाक सिद्धिक वर्णन करैत नारी-वेशक विशिष्ट परिधान साड़ीक **आँचर-खोंछि** तथा सीमन्त प्रसाधन **सिन्दूरक** उल्लेख कयलनि अछि–

मधुमास रहै सदिखन एहि वन मे भीजल **आँचर** रहए दूध सौं
सिर-सिन्दूर सोभै जीवन मे अइहब भरलनि **खोंछि** चाउर[156]

एही कवितामे कन्याक केश प्रसाधन **खोपा** तथा खोपाकें फूल द्वारा सजयबाक सेहो वर्णन भेल अछि । नैहरसँ विरह ओ सासुरसँ मिलनक अवसरकें कवि वस्त्रक तानी ओ भरनीसँ तथा जीवनकें पटसँ तुलना करैत वस्त्र विन्यासक किछु विशिष्ट शब्दावलीकें समेटने दृष्टिगोचर होइत छथि–

विरह मिलन **तानी** भरनी सौं **बुनल** जैत दम्पति-जीवन-**पट**[157]

मधुश्रावणी उपन्यासमे **शैलेन्द्रमोहनझा** एक छोट गीतक समावेश कयने छथि जाहिमे **पौती** ओ **कीया** शब्दक उल्लेख भेल अछि–

दुर दूर छीया छीया छीया
एको लूड़ि ने दाइ के भेलनि देखि जरै अछि जीया ।
पढ़ै गुनै के नाम ने लेती संठती **पौती कीया** ।
सोचि सोचि हम मरल जाइत छी किछु नहि बूझथि धीया ।।[158]

गामक जमाय शीर्षक कवितामे **गोपालजीझागोपेश** बाल, युवक ओ वृद्ध अवस्थाक तीनू प्रकारक जमायक वर्णन कऽ बालविवाह ओ अनमेल विवाह पर व्यंग्य कयलनि अछि । एहिमे तीनू वयसक मैथिलक वेश रूपरेखा अंकित भेल अछि–

मोंटगर सोंटगर बचकानी गोर दसेक छला
सबहिक **धोती** छल लाल लाल ओ पीयर **डोरिया** केर कमीज
कनिको **कारा** कनिको **मट्ठा** कनिको केवल **कुण्डल** लटकल

नवयुवक वर केर सुनू हाल सबहिक **साँची सीटल** छलैन्हि
सभ **गोलगला** गंजी ऊपर **जोलही तउनी** ओढ़ने छलाह
जुल्फी छलनि चपचप करैत **सरिसो विलास** गमकैत छल

सभ छलाधन्य सरिपहुँ प्रणम्य सबहिक कपार **सिन्दूर** बिन्दु
ओहिठामक हम की कहू हाल **कानी** कटने **काजर** कयने
डोपटा ओढ़ने सरिपहुँ देखल कत झामलाल[159]

मैथिली प्राचीन साहित्यमे अनुसंधान-अनुशीलनक क्षेत्रमे विशिष्ट हस्ताक्षर सशक्त कथाकार ओ निष्णात नाटककार **डा.रामदेवझाक** कविता सभमे युग जीवनक यथार्थक प्रयोगवादी ओ प्रगतिवादी चित्र भेटैत अछि । हिनक **सांझुक कथा** कवितामे सामाजिक जीवनमे विरहिणी नारीक सहज ओ सौम्य चित्रांकन भेल अछि जाहिमे **सिन्दूर** ओ **लहठीकें** सधवाक प्रतीक रूपमे तथा **काजर** ओ **टिकुलीकें** उपमानक रूपमे वर्णन भेल अछि–

साँझुक कथा कहब की सजनी, सुन्न छली कराती ।
दिपली दोअठि पर औन्हल छल, ने छल तेल न बाती ।।
सीमन्तक **सिन्दूरक** रेखा सँ छी हम धनमंती ।
हाथ द्दू **लहठीसँ** होइछ, सधवामे नित गनती ।।
काजर सनक अबै छथि संध्या, **टिकुली** सनक परात ।
हमरे मनक **कपूर** उड़ाबय, नहुँ नहुँ सिहकि बसात ।।
भेटल समदिआ हमरा ने ओ लिखलनि दुइओ पाँती ।।
हमरे मनक विषाद पसरि कय भेल नभक घन कारी ।
घर आङन सबतरि बरिसल जल भीजल सौंसे सारी ।
झाँझर चारक चुइल भीत सन सहलै हमरो छाती ।।[160]

हिनक **नवयुग केर चुमान** कवितामे ठोप, आँचर, चीर ओ खोंइछाक उल्लेख भेल अछि–

नव धरती पर नव दुर्वादल, उपजै नव नव धान रे ।
सरित बान्हि दी अरिपन रेखा नव सर्जन केर ठोप,
दीन हीन धरतिक **आँचर** ई बनल न रहै अछोप ।।
दूभि धान लै इहो करै पुनि, नवयुग केर चुमान रे ।।
धिया पुता धरतिक जा कुचरत गंगा कमला तीर
रित्ती रित्ती रहत बनल नहि अनपुरना केर **चीर**
खोंइछामे धन मंडल पूरित मुह पर मंजुल गान रे ।।[161]

धीरेन्द्रक **हैंगर मे टाङल कोट** शीर्षक कवितामे वेशभूषाक आधुनिक परिधान **कोट**, **वस्त्रक चिरीं चिरीं** भऽ फाटब, **सियनि**, **रफ्फू** आदि विशिष्ट शब्दावलीक बिम्बक रूपमे प्रयोग भेल अछि–

चेतनाक **हैंगरमे** टाङ्ल अछि बहुत रास स्मृतिक **कोट**
पहिल कोट देखैत छी तँ हमरा एकगोट झँखुरल वृद्धक चेहरा देखाइछ
मने एक गोट **चिरीं, चिरीं** भऽ गेल **ऊनी कोट** हो छैको किछु ओहन सन
आकांक्षाक कपड़ा फाटि गेल कहिया ने धैर्यक **सीयनि** उघरि गेल कहिया ने
जीवन जे **रफ्फू** पर चलि रहल ओ आर थीक की[162]

प्रवासीसाहित्यालंकारक एकटा कवितामे वर्तमान मिथिलाक अधः पतन ओ प्राचीन मिथिलाक गौरवक गायन भेल अछि। आधुनिक वेशविन्यास पर व्यंग्य करैत कवि कहलनि अछि–

पैरक **पनही** झुला फर्स पर खाथि बजाबथि
कौपिनधारी ऋषिक वंशधर रिसिआयल छथि
वैभव ककरा हमर पितासँ फाजिल हेतइ
सूट हजार टकाक **फैन्सी टेलर** लागमे
ललवबुआ लय देखल आइ **सिआइ** छलइए[163]

एहि तरहेँ वेशभूषाक आधुनिक स्वरूपमे **पनही**, ओ **सूटक** संक्रमण तथा प्राचीन वस्त्रविन्यासक **कौपीन** शब्दक प्रयोग भेल अछि।

राजवल्लभराठौरक पत्नी भक्ति शीर्षक कवितामे नारी वस्त्राभूषण प्रसाधनक प्रचुर उल्लेख भेल अछि–

एकरा कतहु जूनि पसारब घरक बात हम गाबि रहल छी।
हुनका हड़बड़ देखि कहलियनि चलू अहाँ हम आबि रहल छी॥
एखन अछि किनबा के हमरा **टिकुली चोटी ऐना ककही**।
एखन अछि किनबा के हमरा **टेलरिन अरू ट्रिंकल** केर **साड़ी**
बिनु किनने हम जाएब कोना कें छुटै छथि त छुटथु गाड़ी॥
हाथक **कंगना** पएरक **पायल** नाकक **नथ नकबेसर** किनलहुँ।
कर्णफूल केर युग अब बीतल राय बरेलीक **झुमका** किनलहुँ॥
हैकल कण्ठा मोहरक माला छोड़ि छाड़ि हम **नकलेस** किनलहुँ।
बाला लहठी पाछाँ भागल **टाइटस रिस्टवाच** हम किनलहुँ॥
मुनरी-मुंडी आब कतऽ गेल डबल सेल केर **औंठी** किनलहुँ।
बड़ दुलारि छथि तेँ हुनकालेल **हीरा कट लाकेट** हम किनलहुँ॥
बिनु **बाँहिक आंगी** ओ **कँचुकी स्नो पौडर** आ **अलता** किनलहुँ।
चश्मा फौन्टेन पर्स रेडिओ फोटो दुर्गाजी के किनलहुँ॥

भूख लागल अछि बड़ी कालसँ ओकरा कहुना दाबि रहल छी।
हुनका हड़बड़ देखि कहलियनि चलू अहाँ हम आबि रहल छी॥[164]

लोकगीतकार **रवीन्द्रनाथठाकुरक** एकगोट गीतमे आधुनिक **इसखी** पुरुषक वेश विन्यासक अत्यन्त मनोरंजक चित्रांकन भेल अछि–

कोंचा लेटाइ छनि **केस** फहराइ छनि, **मोछो** गेलनि कलकत्ते
नहो रङैत छनि **काजर** करैत छथि, ओहो पुरुष अलबत्ते।
चानि बिना तेल केर **सेंट** गमागम **धोती** छनि **मैल** मुदा **अंगा चमाचम**।
फैशन करैत छथि **हत्था** मोंरैत छथि, अंगा के **बटम** निपत्ते।
जतबेटा **कुर्ता** ततबहिटा **जेबी**, भीतरसँ ऐंठल जहिना जिलेबी
नेता बनैत छथि भाषण करैत छथि, झूठो के कहि देता सत्ते।
साँची पर साहेब केर माछी ने बैसनि, बात कोनो सीधा दिमागमे ने पैसनि
खेत बढ़बैत छथि सड़के भढ़ैत छथि, कहियनु त कोड़ि देता खत्ते।[165]

हिनक एकगोट अन्य गीतमे **फलकौआ** केसविन्यास ओ **नुआ** पहिरबाक एकगोट विशिष्ट परिपाटीक उल्लेख भेल अछि–

बन्हले छलियै **केस फलकौआ कोंचा** वला **नुआ** छलै **आँचर** घुमौआ[166]

हिनक **मेला** शीर्षक गीतमे पुरुष ओ नारी परिधानक अत्यन्त मनोहर चित्र भेटैत अछि–

लाले लाल **साड़ी** सेहो **तिनपड़िया** लाले रङ् **आड़ी** लाले **सिनूर**
लाले रङ् **लहठी** खन खन बाजय पैरक **बिछुआ छुनुर छुनुर**
सालक सूखल उजड़ **खोपा** आइ बनल छै पानिक डोका
केहेन लागय माए एखन तँ बचबा तकैछै टुकुर टुकुर।
आगू आगू सजनी, साजन पाछाँ नवका **धोती गंजी** पहिरि कय
कान्ह पर धयलक **कुरता गमछा** चलइछ पाछाँ झाँझी कुकूर।
कतेक जतन सँ **अलबर** सीटल हाथक लाठी तेल लगाओल
आयल मेला त ठेला सुरू भेल **बुढ़बा** जे बाजल दुरदुर दुर।
मेलाक चकमकरंग बिरंगे घूमय दुनू संगहि संगे
कीनलक **चूड़ी टिकुली कङ्ना** कचरी घुघनी तेलही मधुर।[167]

एकटा गीतमे मिथिलाक ग्राम जीवनक सामान्य परिवारक वस्त्र विन्यासक उल्लेख एहि प्रकारक अछि–

सौंची धोती ठेंठी **कुर्ता** पैर मे **पनही** हाथमे **छत्ता**
औता बौआ बाबू तोहर फैसन मे भय चूर ।[168]

एकठाम मैथिल ललनाक **गोदना** विन्यासक सौन्दर्यक वर्णन एहि प्रकारक अछि–

गोरे इजोरिया पर तारा के तिलवा कमाल **गोदना**
लागे गोरे वदन पर कमाल **गोदना**
जेना चूड़ी के आगू कमाल **कङ्गना** ।[169]

गीतकार **जगदीशचन्द्रठाकुर**क एक गोट गीतमे गरीबक फगुआक विवरणक क्रममे गुदरी भेल **नूआ, फाटल धोती, चिप्पी** लागल **अंगा** आदि वेश वर्णन भेल अछि–

नूआ छै **गुदरी** आ धोती छै **फाटल**, बौआक **अंगा** पर **चिप्पी** छै साटल
बाँचल छै जकरा घरे घराड़ी, से कीनत कोना कऽ **धोती** आ **साड़ी**[170]

अक्कूक एक गोट गीतमे आधुनिकाक वेश ओ प्रसाधनक वर्णन भेल अछि–

कुर्ती सलवार वाली नयना कटार वाली चलबै छी किए तलवार
सेन्टेड रूमाल वाली **पाउडर गुलाल** वाली पतझर मे आएल बहार[171]
चानी के रूपैआ देबौ, जुट्टी लटकौआ देबौ देबौ तोरा गरा मे **चन्द्रहार**[172]

एहि तरहेँ आधुनिक मैथिली मुक्तक साहित्यमे वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक निवेश देखि पड़ैछ । खास कऽ वेष विकृति जन्य हास्यक चित्रणक हेतु, फैशनपरस्तीक प्रति व्यंग्ययोजनाक हेतु तथा मिथिलाक प्राचीन ओ अर्वाचीन वेषभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णनक क्रममे कविलोकनि सम्बद्ध शब्दावलीक सुन्दर नियोजन कयलनि अछि ।

कथासाहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास–

आधुनिक मैथिली साहित्यक कथाविधाकेँ संख्या ओ गुणवत्ता दूहू दृष्टिमे मैथिलीक सर्वाधिक सशक्त साहित्यिक विधा मानल जा सकैछ । एहि विधामे कथावस्तु केँ आकर्षक बनयबाक हेतु, पात्रक चरित्र, सांस्कृतिक ओ आर्थिक परिवेश ओ परिस्थिति, सौन्दर्यप्रियता ओ रुचि, सामाजिक ओ मानसिक परिस्थितिक चित्रणक हेतु वेशभूषा प्रसाधनक वर्णनक होइत रहल अछि । मैथिलीक प्रारंभिक कथा सभमे खास कऽ कथातत्त्वकेँ सम्बर्द्धित करबाक हेतु वेशभूषा प्रसाधनक वर्णनक विशिष्टता देखि पड़ैछ । मुदा क्रमशः मनोविश्लेषणवादी यथार्थवाद दिस उन्मुख कथा विधामे वेशभूषा प्रसाधनक वर्णन गौण भेल जा रहल अछि ।

मैथिली कथा साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावली एक दिस जँ वेशभूषाप्रसाधनक पारम्परिक स्वरूपकेँ उपस्थापित करैत अछि तँ क्रमशः एहि दिशामे

होइत संक्रमण ओ तज्जन्य परिवर्तनकेँ सेहो निरूपित करैत अछि । मैथिली कथाविधाक एकटा विशिष्ट अंश वेश भूषा प्रसाधन विन्यासकेँ केन्द्रविन्दु बना कऽ लिखल गेल अछि । एहन कथा सभमे खास कऽ दाम्पत्य जीवनक आरोह-अवरोहकेँ वेशभूषा प्रसाधनक माध्यमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि ।

आधुनिक मैथिली कथासाहित्यकेँ सर्वाधिक लोकप्रिय बनयबामे **प्रो.हरिमोहनझा**क स्थान अन्यतम छनि । हिनक विभिन्न कथामे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक माध्यमे सामाजिक जगतक विभिन्न पहलूकेँ निरूपित कऽ ओहिमे वाँछित संस्कारक निदेश देल गेल बुझना जाइछ ।

वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीमे होइत विपुल संक्रमणक निदर्शन हिनक **प्रणम्य देवता** गल्प संग्रहमे भेटैत अछि । एहिमे संगृहीत **आदर्शकुटुम्ब** ओ **अङ्रेजिया बाबू** गल्पक केन्द्रविन्दु वेश भूषा प्रसाधने अछि ।

आदर्श कुटुम्ब गल्पमे एकटा एहन जमायक वर्णन अछि जे अपन मोट चालिक सोम ससूरसँ नीक-नीक वस्त्र किनयबाक हेतु कपड़ाक दोकानपर अबैत अछि । हुनका संगे ससुरक एकटा भातिज सेहो आयल छथिन्ह । हिनका तीनू गोटेक परिधानक वर्णन कऽ गल्पकार तीनूक आर्थिक स्थिति, सामाजिक परिवेश ओ परिस्थितिक आकलन प्रस्तुत कऽ देलनि अछि तथा एहि माध्यमे मिथिलाक पारम्परिक वस्त्रविन्यासक एकगोट स्पष्ट रूपरेखा भेटि जाइत अछि–

एक व्यक्ति जोलहड धोतीपर **मोटिया वालावर्ज** पहिरने, पैरमे **चमरउ पनही**, हाथमे **बटुआ** नेने । अवस्था पचासक लगभग । दोसर गोटे तारकगाछ सन लम्बा, नङ्ग-धरङ्ग, कान्हपर एक मैल **अङ्गपोछा** लगा सन लाठी लेने, तमाकू चुनबैत । तेसर व्यक्ति **कुंडाबोर गुलाबी धोती** सीटि कय **पहिरने** माथ पर ओड़हुलक फूल सन लाल **पाग फलदार रेशमी चादरि** ओढ़ने । अवस्था करीब बीस ।[174]

वस्त्रक हेतु **पोशाक** शब्दक प्रयोग मैथिलीओमे होमय लागल अछि । मुदा ई परिगृहीत शब्द मैथिलीकृत भऽ गेल अछि । **हरिमोहन बाबू** एहि हेतु **फोशाक** शब्दक प्रयोग कयलनि अछि ।[175] अपन एहि गल्पमे ई कपड़ाक विभिन्न प्रभेद यथा जालीदार, **रेशमी, फैंसी, न्यूडिजाइन, सिल्क, मरसिराइज्ड, क्रेप, ट्वीड, पोपलिन, चेक, सोलूला, मोटिया, सर्ज, फलालेन, पशमीना, कशमीरा** आदि, अङ्गवस्त्रक विभिन्न प्रभेद यथा **कमीज, वालावर्ज, कोट, गंजी, पैतावा** तथा पहिरबाक विभिन्न ढंग यथा– **अंग्रेजी स्टाइल, पारसी स्टाइल** आदिक उल्लेख अछि ।

अङ्गरेजिया बाबू शीर्षक गल्पमे गल्पकार आधुनिकताक व्याधिसँ जकड़ल युवक मनोमस्तिष्कक विश्लेषण प्रस्तुत कयलनि अछि । एही क्रममे वस्त्राभूषण प्रसाधनक

विशिष्ट सामग्री सभक उल्लेख भेल अछि । यथा–

फगुआसँ चारि दिन पहिने जखन लालरंगक फूलदार लिफाफ डाकपिउन हाथमे देलकैन्ह तैखन ओ बुझलनि जे आब सूट पर इस्त्री चढ़ाबक अवसर आबि गेल ।[176]

सूटपर इस्त्री चढ़ाबक अवसर द्वारा गल्पकार नायकक सासुर-यात्राकेँ उद्घाटित कयलनि अछि । अंगवस्त्रक एहि विशिष्ट प्रभेदक उल्लेखसँ नायकक मानसिक अवस्थाक वर्णन भऽ गेल अछि संगहि लोकजगतमे सासुर जयबाकाल वस्त्रक साज-शृंगारक मनोवृत्ति सेहो उद्घाटित भेल अछि ।

नायक फगुआक अवसरपर सासुरक हेतु प्रस्थान करबाक लेल उद्यत होइत छथि । एहन अवसरपर पत्नीक हेतु विभिन्न प्रकारक प्रसाधन सामग्री ओ वस्त्र कीनैत छथि । सासुरक दृश्य सभक परिकल्पना करैत छथि । एहि क्रममे गल्पकार विभिन्न प्रकारक आधुनिक वस्त्र ओ प्रसाधनक उल्लेख कयलनि अछि जाहिसँ एकर विन्यासमे होइत नित्य नूतन संक्रमण ओ तज्जन्य नव शब्दक आगमक परिदृश्य उपस्थित होइछ यथा–

रुपया लए मधुकान्त बाबू सोझे न्यू मार्केट गेलाह । ओतए **स्नो, क्रीम, पोमेड** आदि अतेक जे उपकरण आवश्यक बूझि पड़लैन्ह से लऽ ऐलाह । फगुआक हेतु **अबीर, गुलाबजल, कुमुकुम** ओ **पिचकारीओ** नहि बिसरलाह ।[177]

दौड़ल फैंसी स्टोर गेलाह । ओतए **साड़ी** और **ब्रेसरी (लघुकंचुकी)** पसंद कैलन्हि ।[178]

रातिमे कोठरी बंद कए सभ वस्तु पसारलन्हि । रंग बिरंगक शीशी और डिब्बासँ घर चमकि उठलैन्ह । मनोहर खुशबूसँ मन मस्त भऽ गेलैन्ह । ओ भिन्न-भिन्न प्रकारक **कंचुकी** सभ हाथमे लए उनटा पनटा कए देखय लगलाह– गुलाबी, अंगुरी, नारंगी, बैंगनी । कोनो सापक केंचुआ जकाँ **झलझल** करैत । कोनो केराक वीर जकाँ कोमल **छलछल** करैत । प्रत्येक सपरीक खप्पा जकाँ दू दू ठाम **अलगल** । जेना रेशमक दोना उनटा कऽ राखि देल गेल हो ।[179]

–केओ चूड़ी खनखनबैत चाभी घुमौतीह । केओ अपना आँचरसँ रेकर्ड पोछि पोछि कऽ हमरा हाथमे देने जैतीह ।[180]

–तखन मधुकान्त बाबू मुँह हाथ धो **'शेव'** कैलन्हि (दाढ़ी बनौलन्हि) और **सूट** पहिरक हेतु ऐनाक सामने ठाढ़ भेलाह । **हैट** लगा कय देखलनि ।[181]

–नढ़ुआरवला **पाग** पहीरि कऽ जैताह । ओहि बेचारे केँ के पुछतैन्ह ।[182]

–**अबीर** और **गुलाबजल** मिलि कए सभ कपड़ापर होरी खेला देने छलैन्ह । रेशमी साड़ी पर **लाइमजूसक** श्वेत धारा टघरि कऽ **आलताक** रंगसँ एकाकार भऽ रहल

छलैन्ह । **वोआएल धोती** पर **शैम्पू** और **सोहागविंदीक** रस परस्पर संयोग कऽ रहल छल । **सेंटक शीशी** फूटि कऽ **ब्रेसरीकेँ** तर कऽ देने छल ।[183]

–मधुकान्त बाबू **साड़ी-लहठीक** देहाती फिहरिस्तकेँ फाड़ि रद्दीक टोकड़ीमे फेकलन्हि और अपना मनसँ लिस्ट तैयार करए लगलाह– **लेडीज वाच, हाइहीलशु, ब्यूटी बाक्स (जनानी हाथक घड़ी, ऊंच ऐंड़ीक जनानी जूता, शृंगार मन्जूषा)** इत्यादि ।[184]

एहिना विभिन्न अवसरपर **सेंट**, **माङटीका**, **पहुँची**, **झालर गोटावला ब्लाउज आँचर**, **पीयर साड़ी**, **अंडरवीयर**, **झिलमिल पारदर्शी साया**, **बङ्गला स्टाइल**, **भत्ता फैशन**, **धुमिआएब**, **छड़**, **चट्टी**, **मेकअप**, **स्नोक्रीम**, **पफ**, **पाउडर**, **लिपिस्टक**, **नेलपालिस**, **तौलिया**, आदिक उल्लेख भेल अछि ।[185] गल्पकारक निम्न विवरण द्रष्टव्य अछि जाहिमे आधुनिक प्रसाधनक उपयोगक वर्णन भेल अछि– देखू, मुँह पोछि कऽ **पाउडर** लगा लेब । ई गाल रंगबाक पेन्ट अछि । ई **लिपस्टिक** अछि ठोर रंगएवला । ई **नेल पालिस** अछि नख रंगएवला ।[186]

गल्पक अन्तमे नूतन प्रचलित प्रसाधन सामग्रीसँ अनभिज्ञ नायिका द्वारा ओहि सामग्री सभक अनुपयुक्त प्रयोग द्वारा हास्यक सृष्टि कराओल गेल अछि–

–नाक पर **स्नो** लागल । कनपट्टी पर **पाउडर** पोतल । गाल पर **लिपस्टिक** ढेउरल । ठोर पर **नेलपालिस चभरल** । हाय ! हाय ! बहुरुपियाक वेश बना लेलन्हि ।[187]

हास्यक संगहि गल्पकार नायकक मनोविकृतिपर व्यंग्य सेहो कयलनि अछि । आधुनिकताक पाशमे जकड़ल नायक आधुनिक प्रसाधनसँ अनभिज्ञा नायिकाकेँ हास्यक कारण बना दैत छथि । संगहि एहिसँ इहो स्पष्ट भऽ जाइछ जे संक्रमणक युगमे नव प्रसाधनक परिचय नहि रहने नायिकाकेँ कतेक पराभव भोगबाक हेतु विवश होमय पड़ैत छल । एतय वेशभूषा प्रसाधनमे संक्रमणक स्थिति स्पष्ट भेल अछि ।

हरिमोहन बाबूक भोलबाबाक गप्प शीर्षक गल्प सभमे यद्यपि मिथिलाक रूढ़िग्रस्तता पर कटु व्यंग्य कयल गेल अछि मुदा एहि माध्यमे मिथिलाक वस्त्राभूषण प्रसाधनक विविध सामग्रीक उल्लेख भेल अछि । खास कऽ मर्यादाक रक्षाक नामपर संकीर्णता ओ तथाकथित सौजन्यक वर्णनक क्रममे पुरुषक अङगवस्त्र धोतीक गल्पकार सविशेष वर्णन कएलनि अछि–

भोलबाबा पुनः थोड़ेक कतरा मुँहमे दैत बजलाह फेटकटाइझा समधिआरे गेल रहथि । चलबाकाल लालधोती विदाइमे देलकैन्ह । फेटकटाइझा खबासकेँ कहलथिन्ह– रौ, मोटरीमे बान्हि ले । परन्तु फेटकटाइझाक समधि रहथिन्ह बोचबाबू । ओ अड़ि गेलथिन्ह जे धोती पहिरए लेल जाओ । फेटकआइझा बजलाह– बर्नी । भऽ गेलैक । हम लऽ लेल । बोच बाबू कहलथिन्ह– भला ई कोना भऽ सकैत अछि ? एहिठामसँ अपना

ग्राम घरि लोक उज्जर धोती देखत से की कहत ? ई कहैत बोचबाबू हुनका डाँड़मे धोती लपेटै लगलथिन्ह । फेटकटाइझा अपनाकेँ छोड़ाबए लगलाह । परन्तु वाह रे बोचबाबू ! अपना वंशक टेक नहिए छोड़लन्हि । समधिकेँ धोती पहिराइए कऽ विदा कैलन्हि । ताहि दिन मर्यादाक एतबा विचार रहैक ।

पं.जी अनुमोदन करैत कहलथिन्ह– ताहिमे कोन सन्देह । भोलबाबा प्रोत्साहन पाबि बजलाह– आब जे क्यो बुद्धिनाथ पाठक जकां करत से निमहतैक ? पाठकजी पुरी गेल रहथि । ओहिठाम जगन्नाथजीक अटकाक प्रसाद भेटलैन्ह । परन्तु ओ अड़ि गेलाह जे जगन्नाथ भगवान छथि तँ की ? बिनु सौजने भात नहि खा सकैत छिऐन्ह । जौं दू जोड़ धोती देताह तऽ प्रसाद खैबैन्ह, नहि तऽ अपना घर रहथु । अन्तमे हुनके जिद्द रहलैन्हि । जगन्नाथजीक दिससँ **दू जोड़ धोती** बिवाहमे भेटलैन्ह तखन प्रसाद मुँहमे देलन्हि । आबक लोकमे की एतबा विचार भऽ सकैत छैक ।[188]

एहि तरहेँ गल्पकार मिथिलाक प्रधान अधोवस्त्रक माध्यमे एहिठामक सामाजिक जीवनमे परिव्याप्त विसंगतिक संकेत कयलनि अछि तथा लोकव्यवहारकेँ साहित्यिक मर्यादा देलनि अछि । अन्यत्र-गल्पकार स्त्रीगणक दयानूसीकेँ उजागर करबाक हेतु **खरामक** सहायता लेलनि अछि–

भोलबाबा कहलथिन्ह– हमर पीसाक नाम रहैन्ह रामगुलामखाँ । तेँ पीसी **खरामकेँ** कहियो पैर नहि लगाबथि जे हिनका अन्तमे पतिक नाम पड़ै अछि ।[189]

एकठाम एही प्रकारक वर्णनमे गल्पकार **चोलीक** उल्लेख कयलनि अछि–

भोलाबाबा कहलथिन्ह– विचार त तेहन रहैन्ह जे हमर समधिन अपन **नूआ** कहिओ धोबीकेँ नहि देलन्हि जे चोली आन पुरुषक मुट्ठीमे पड़ि जायत ।[190]

अन्यत्र **नूआलहठी, अंगा-टोपी** ओ **आँगी-घघरीक** उल्लेख भेल अछि–

भोलबाबा कहलथिन्ह– विचार त तेहन रहैन्ह जे अन्हराठाढ़ी वाली अपन बेटाक सासुर भार पठबैत रहथि । समधिनक हेतु **नूआ लहठी** सैंठैत रहथि । केओ कहलकैन्ह जे समधिनक पेटमे बच्चो छैन्ह । तखन ओहि गर्भस्थ शिशुक हेतु **अंगाटोपी** और **आँगी घघरी** दूहू वस्तु **सीबि** कऽ पठा देलथिन्ह । समधिनो तेहने मर्यादावाली रहथिन्ह । भरियाक संगमे एकटा कुकुर रहैक । तकरो नाड़रिमे एक जोड़ **लाल धोती** बान्हि देलथिन्ह ।[191]

हिनक **रङ्गशाला** गल्प संग्रहक कतोक गल्पमे वस्त्राभूषण प्रसाधनक सविशेष उल्लेख भेल अछि यथा–

–एतबहिमे **अंगूरी रंगक साड़ी** पर **किशमिशी** रंगक **बेसरी** (कंचुकी) कसने, गाल रङ्गने और ठोरकेँ **पाकल** तिलकोरक फल सन लाल बनौने एक नवयौवना आकाशक परी जकाँ आविर्भूत भेलीह ।[192]

–असगनी परसँ सभक **धोती कुर्ता** उतारि कय लय गेलैक । ज्योतिषीजीक **बटुआ** आ अङ्पोछा सीरममे रहैन्ह सेहो लऽ गेलैन्ह ।[193]

–दोलाइक तरसँ हुनक अनारक फूल सन **लालरेशमी साड़ी** झलकि उठल । हुनक विशाल केशपाश हमरा जांघपर छितरा गेलैन्ह । चुपचाप एक लटकेँ हाथमे लए नापल तऽ पुरे डेढ़ हाथ । युवती **सुकेशी** छथि ताहिमे संदेह नहि ।[194]

–वैह पं.जी छथि जे सदिखन **लाल धोती** पर **रेशमी चादर** सिटने, कल्लामे पानक **गिलौरी** गिलोठने चलैत छलाह । से आइ **फाटल धोती** पर **मैल अङ्पोछा** पैने छथि । ठोरमे फुफड़ी पड़ल छैन्ह । जे केश **चमेलीक तेलसँ** चपचप करैत छलैन्ह ताहिसँ एखन **रूस्सी** उड़िया रहल छैन्ह ।

–चंचलादेवी चुपचाप उठि कऽ गेलीह और **शेविंगसेट** (हजामत बनैबाक सामान) लऽ ऐलीह । तखन साबुनसँ **कुच्ची** भिजा हुनका मोंछकेँ खूब नीक जकाँ रगड़ि ओहि पर नहूँ नहूँ **सेफटी रेजर** (छूरा) चलाबय लागि गेलीह । देखैत देखैत दरोगाजीक मोंछ साफ भऽ गेलैन्ह ।[195]

खट्टरककाक तरंगमे संकलित हिनक **ब्राह्मणभोजन** गल्पमे **नवग्रही, कुण्डल** एवं **सोरह शृंगारक** निवेश भेल अछि– धन्य नवग्रह जे ज्योतिषिआइनक बाँहिमे **नवग्रही** पड़ैत छैन्ह । धन्य कुंडली जे नेनाक कानमे **कुंडल** पड़ैत छैन्ह । यदि यजमानक सोरहो संस्कार नहि होइन्ह त पुरोहितक पत्नीक **सोरहो शृंगार** कथीपर चलतैन्ह ?[196]

एहि तरहेँ सामाजिक जीवनमे ज्योतिष विद्याजन्य रूढ़ि ओ सामाजिक शोषणक विकृतिकेँ स्पष्ट करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक आभूषण **नवग्रही, कुंडल** आदिक उल्लेख देखि पड़ैछ ।

पुरातन सभ्यता शीर्षक गल्पमे रचनाकार प्राचीन ओ अर्वाचीन वस्त्राभूषण विन्यासक तुलना प्रस्तुत कयलनि अछि–

ख०– ई बात हम नहि मानबौक । हुनकोलोकनिकेँ सौख कम्म नहि छलैन्हि । फूले जोहने, भेल फिरैत छलाह । स्नोक अभावमे **चन्दन** और **पाउडरक** अभावमे **भस्म** लगबैत छलाह । **बेल्टक** स्थानमे **मूजक डरोडोरि** पहिरैत छलाह । आभूषणक स्थानमे **तुलसी** वा **रूद्राक्षक माला** । **मखमलक** स्थानमे **मृगचर्म** । हौ युग बदलै छैक, फैशन बदलै छैक, परन्तु मनुष्यक वासना नहि बदलै छैक ।

हम– खट्टरकाका, ओहि युगक संस्कृतिए दोसर छलैक ।

ख०– हौ, ताहि दिन चारूकात अरण्ये अरण्य रहैक । तखन जंगली सभ्यतामे जे सभ वस्तु होइ छैक से सभ ताहि दिन छलैक । **मृगछाला, व्याघ्रचर्म, कुशासन, धूप,**

चंदन, यव, तिल, मधु, चमर, भोजपत्र, औखन द्वापरक दृश्य देखबाक हो त झारखंडमे जा कऽ देखह । वैह धनुषवाण, वैह मोरपंख, वैह बाँसुरी, वैह **एकवस्त्रानारी** । यदि आइ सभटा **मिल, सैलून, लौंड्री** ओ **दर्जीक दोकान** बंद भ' जाय त पुनः त्रेता सत्ययुगक दृश्य उपस्थित भऽ जाय । विलासिताक स्रोत सभ मुनि दहौक, सभतरि, मुनिए मुनि देखाइ पड़थुन्ह ।[197]

मिथिलाक संस्कृतिमे गल्पकार पुरातन संस्कृतिमे मिथिलाक वेशभूषा प्रसाधन ओ आधुनिक कालक वेशभूषा प्रसाधनमे होइत नित्य नूतनताक अत्यन्त हास्यपरक व्याख्या कयलनि अछि–

हमर मुँह तकैत देखि खट्टरकाका बजलाह– आब ओ युग नहि छैक जे हमर तोहर तिरहुत तिलकोर ओ पटुआक झोरमे, करमीक साग ओ **कोढ़िलाक पागमे, कोकटीक तौनी** ओ सीकीक मौनीमे, डालाक भार ओ **महफाक ओहार**मे सीमित रहि जाय । देखै छहौक नहि, आब **साड़ी-सलवार**, दोसा-**दलिपूड़ी**, बैले-विद्यापति, मुर्गी-महादेव-सभ संगहि चलैत छैक । आब पंडौलमे पावरोटी, सोराठमे सैंडविच, टटुआरमे टोस्ट और कपलेश्वरमे कटलेट भेटताह । नेहरामे **नायलोन**, जनकपुरमे **जार्जेट** लोहनामे **लिपस्टिक** और हावीभौआड़मे **हाइहील** देखबह । आइ फुलपरासक कन्या **फ्राक** पहीरि कऽ फूल तोड़ै छथि । काल्हि गंधवारिक पुतहु **गाउन** पहिरि कऽ गोसाउन पुजतीह । सेहो गोसाउन कतबा दिन रहै छथि से के जानय ?

खट्टरकका बिहुँसैत बजलाह– हँ, **आँचरतर** नुकौने रहतीह । परन्तु **आँचर** रहैन्ह तखन ने । आब त संस्कृतोवला कें सौख होइ छैन्ह जे बहु **शलवारे** पहिरथि । सासु **मरीन** काढ़ै छथिन्ह, पुतौहु माथ उघारिक चलै छथिन्ह । हुनको पुतहु औथिन्ह त **चड्डी** पहिरि कऽ चिनवार पर अंडा फोड़थिन्ह । तखन कुलदेवताक रक्षा के करतीन्ह ?

हम– तखन अहाँक की विचार जे पुरनका रीति-नीति उठि जाय ।

ख०– हौ जकरा उठबाक हेतैक से कि हमर विचार पूछि कऽ उठत । **टीक** ओ **मोछ** कहिया पूछय आएल जे **धोध** ओ **आँचर** पूछय आओत ? जकरा जैबाक होइ छैक से स्वतः चलि जाइत अछि । जेना **गोदना, मिस्सी, खुदिया, चमकी** । जकरा ऐबाक होइ छैक से स्वतः आबि जाइत अछि । जेना **स्नो, पाउडर, नेलपालिस, ब्रेसरी** । जखन स्वयं पंडित लोकनि **सालमशाही पनही** छोड़ि कऽ अंगरेजी **जूता** पहिरय लगलाह अछि तखन पंडिताइन **लहठी** फोड़िकऽ **प्लेस्टिकक चूड़ी** किऐक ने पहिरथिन्ह ? हुनक बेटा **ठोप** मेटा कऽ **टोप** किऐक ने लगौतेन्ह । आब बूढ़ बुढ़ानुस माथ पटकि कऽ मरि जैताह तथापि ने हुनक बेटा **ठढ़ीका** **आगम** करतेन्ह, ने पुतहु **पटमासी सिंदूर** करथीन्ह । छोटका पोताकें **रिट्ठा-रिटेठी** पहिरा क देखथु त जे पहिरै छैन्ह ? पोतीसँ तुसारी पुजबाक देखथुन जे पुजै छैन्ह ? हौ ई पछबा बिरड़ौ सभटा पोथी पतरा कें उधिया कऽ फेंकि देतौह । यैह युगधर्म थिकैक ।[198]

–हौ, हम **धोती-अङ्गपोछा** वला आदमी । कहियो **टाइ-टोप** लगौने देखलह अछि ।[199]

–भगवतीकें **आँचरक** बदला **गाउन** ओढ़ा दिऐन्ह ? कुलदेवताकें **लिपिस्टिक** लगा दिऐन्ह ?[200]

एहि तरहेँ हिनक गल्प सभमे मिथिलाक पारम्परिक ओ संक्रमित वस्त्राभूषण प्रसाधनक पर्याप्त उल्लेख भेल अछि तथा मैथिल वेश भूषाप्रसाधन विन्यासमे होइत क्रमिक परिवर्तनक संकेत भेटैत अछि ।

उपेन्द्रनाथझाव्यासक रूसल जमाय कथामे सामान्य मैथिल परिवारक एक गोट युवकक वेशभूषा प्रसाधनक सुन्दर चित्र भेटैत अछि– गाड़ी अयबामे दू घंटा देरी छलैक । मोन जखन स्थिर भेल तँ देखल एक नवयुवककें लोहाक छोट राटन पर **तौनी ओछाय** ठेहुन मोड़ने पड़ल, आराम करैत । बसातमे उष्णता छलैक । आश्चर्यलागल, ई बेचारे एहि लोह पर एहन अवस्थामे आराम कोना करैत छथि ? ओना आकर्षित नहियोँ होइतहुँ, मुदा हुनक गौरवर्ण वेश झमटगर **टीक, श्रीखण्डक अर्द्धपुण्ड, सिन्दूरक ठोप** आ सभसँ बेसी स्वजातिक मुखाकृति देखि कऽ अनेरे हुनका विषयमे जिज्ञासु होबऽ पड़ल ।'

वास्तवमे ओ अपने जाति भाइ छलाह । व्याकरणक शास्त्रीक प्रथम खण्डमे परीक्षा देना दस दिन भेल छलनि– नाम जटाधर पाठक । हुनका सङ्मे **पहिरनाक एक खण्ड धोती, बिना गंजीक कमीज** आ एक **मलिछौन्हे तौनी** छोड़ि आर किछु नहि देखलियनि ।[201]

उमानाथझाक आधा घंटा कथामे विभिन्न वेशभूषाक किशोरीक वेषभूषा प्रसाधनक वर्णन भेल अछि–

झिलमिलीसँ हुलकी दैत बालिका सबहिक विभिन्न प्रकारक मुखाकृति । उत्सुक, चकित, प्रसन्न वा भावहीन आँखि, लक्ष्यहीन दृष्टि । **लाल, पीयर, बैगनी, आसमानी, धानी, चम्पई, नूआ, लाल, कारी ठोप, सोनुहला बिन्दी** । गौरी, रोहिणी आदिक समूह ।

स्कर्ट, जम्पर, रिष्टवाच, चश्मा, जार्जेटक चाकलेट साड़ी, फुलल बहुआँवला कारी **रेशमी कुर्ता, वेनिटी बैग, खद्दरक उज्जर साड़ी**, दीप्त मुख, निश्छल नेत्र । पार्क, सिनेमा, ट्रेन, ट्राम । चामक फीतामे बान्हल **गोल्ड गोल्ड चौपहल कौपसेक** । कारी **डायल** पर रेडिअमक अंक ।[202]

सन्ध्याक वेषभूषा विन्यासक वर्णन कथाकार एहि शब्देँ कयलनि अछि– '**कारी पाढ़िक उज्जर साड़ी, कारी आङी, हाथमे सोनसन टूटा चूरी, कानमे मकड़ाक जाल सन इअरिंग, कान सँ फाड़ल केश, कपार पर खसल एकटा लट, खोपा मे फूलक माला** ।[203]

योगानन्दझाक विसरल नहि छलैक कथामे एकटा नवयुवकक वेशक वर्णन एहि स्वरूपक देल गेल अछि– नवयुवकक अवस्था करीब 24 वर्षक छल । छओ फीट लम्बा, नाक छाद्, सुगठित शरीर, पैघ पैघ झोंट जकरा पकड़ि कय सिपाही सभ नोचैत रहैक । हरियर रंगक एकटा **बुशशर्ट** आ **चुस्त पैंट** पहिरने रहय । गर्दनिमे कारी रंगक मोटगर **बद्धी** पहिरने रहय जकरा बीचमे एकटा पितरिया **धुक-धुकी** बान्हल रहैक । दाँतक उपरका भागमे टूटा दाँत पित्तरि सँ मढ़ल रहैक । **मोंछ** कें तेना सीटने रहय जे दूनू कात ठोरक उपरका भागमे छितरायल रहैक आ अन्तिम छोड़कें उनटा कय मोड़ने रहय । ठुड्डीपर **छोट छोट कपचल दाढ़ी** रहैक ।[204]

एकटा गृहस्वामिनीक वेशक वर्णन करैत कथाकार कहलनि अछि– गृहस्वामिनीक अवस्था करीब 50 वर्षक छल । **मैलोंछ** एकटा **दूपड़िया** सारी पहिरने रहथि– आँचरक छोर पर पाँच सात टा कुञ्जीक झाबा बान्हल रहनि ।[205]

हिनक लिखलाहा कथामे पात्रक चरित्र एहि स्वरूप अछि– 'स्त्रीक अवस्था करीब सत्रह अठारह छलैक । गौरवर्ण, आँखिमे काजर भावविभोर मुखाकृति । **जड़ीक पाढ़ि** लागल **पटोर** पहिरने रहए । बीच कपार धरि मड़ौत छलैक । दू तीन **बड़** कएल **शालचद्दरि** ओढ़ने रहय जे कि पीतरि केर **क्लिपसँ** छातीक सोझें टेकल रहैक । मुँह कानसँ बुझि पड़ल जे ई कोनो पैघ खन्दानक हो । देह परक **गहनासँ** एहिमे कोनो सन्देह नहि रहल । गर मे दू लड़ीक **चेन**, नाकमे बड़का **नथुनी**, बामा हाथक कनगुरिया आँगुरमे पाथरक **औंठी**, बाँहि पर वेश भरिगर **बाला** आ सब सोनेक । तरबासँ कनेक ऊपर पएरक दुनू भागमे पाछूमे एँड़ी पर तथा आंगुरमे **आलता** । अंगक पातर पातर रेखा जेना कहि रहल हो जे एखन एकर अंग-अंग प्रसन्नता सँ हँसि रहल होइक । मुदा संगमे जे पुरुष रहैक तकर बगयबानिक क्रम एहन जेना कमलक कातमे पसरल सेमार हो । ओकर सुन्दरता ओहि युवतीक लावण्य तथा सौन्दर्य कें विशेष आकर्षक बनऐबेमे रहैक । पएरमे **जूता** नहि रहैक आ जँ रहबो करैक तँ **चिप्पी** लागल, बिना फीताक मुँह बओने, धूरासँ तर । केशमे जेना तेलसँ कहियो ने भेंट भेल होइक । मैलझोल **मटियाक** एकटा **तौनीसँ** कहुनाक अपन देह झपने रहय आ रहय जाड़ें ठिठुरैत । निचका ठोर जेना तमाकूक जूमसँ गाभिन होइक, दाँत पीयर डाबुस, **धोती कमीज** इत्यादि चाम सन कारी ।[206]

बनकी शीर्षक कथामे **श्रीधीरेन्द्र** एक गोट बुढ़ियाक वस्त्राभूषणक विवरण एहि रूपें उपस्थित कयलनि अछि– बुढ़िया सुनने छलि जे बड़ फिरीसानीसँ दू खण्ड **नूआ**, धरि हाथ **लहठी** आ आंग पर लेल एक गोट **अँगीक** इन्तजाम कएने रहै, मुदा सबसँ पैघ तँ एक गोट गप्प छलै । सुकनीक सासुरसँ आयल सूति आ बरहरीकें खगता पर झंझारपुरमे मरबड़ियाक ओतए बनकी लगा देने छल ठिठरा आ तकरा पाँच बरख भऽ गेल छलै ।[207]

रामदेवझाक कथामे मिथिलाक माटि पानिसँ सम्बद्ध वस्तु ओ चरित्रक रूपांकनक

प्रमुखता रहल अछि । सामाजिक याथार्थवाद ओ मनोविश्लेषणवादी पद्धतिसँ कथातत्त्वकें चरम उत्कर्ष देअयबामे ई सिद्धहस्त छथि । हिनक विभिन्न कथामे अन्त:संघर्षकें रूपायित करबामे पात्रक वेषभूषा प्रसाधनक सेहो प्रमुख स्थान रहल अछि ।

एक खीरा तीन फाँक कथामे कथाकार सामन्तवर्गक हरदेवसिंह द्वारा मजदूरवर्गक फेकूक शोषणक कथा कहलनि अछि । फेकूक पत्नीक प्रति हरदेवसिंहक अमर्यादित स्नेह सम्बन्ध तँ फेकूकें विचलित कऽ दैत छैक मुदा हरदेवसिंहक सहानुभूतिसँ ओ अशक्य अनुभव करैत अछि । फेकूक हेतु वस्त्रादिक इन्तिजाम कऽ हरदेवसिंह ओकर मनपर विजय कयने रहैत छैक– साल मे दू बेर जतरामे आ फगुआमे सीसे घरकें कपड़ा दैत छलैक । तीनू बेटाकें **पैंट कमीज**, सुरजीकें **साड़ी, साया, ब्लाउज** आ ओकरा **धोती, गमछा** आ **गोलगलाबला गंजी** ।[208]

सामन्त ओ मजदूरक वस्त्रविन्यासक पृथकताकें कथाकार एहि स्थलपर अत्यन्त स्पष्ट कऽ देलनि अछि– डेराक आगाँमे ओहि परतीमे दूटा खुट्टा गाड़िकऽ ओहिमे बान्हल तारपर **धोती, साड़ी, साया, कुर्ता, आड़ी, कच्छा, तौलिया** सभ सुखाइत छलैक । पहिने मालिकक **धोती-कच्छा**, तकरा बाद सुरजीक **साया साड़ी**-उज्जर, चाकर चाकर **कोर, आड़ी**, हरदेवसिंहक **खद्दरक कुर्ता** । एक किनारपर फेकूक **मैल चिकाइट धोती** लटकल छलैक । दिनमे प्राय: काँचे सोढ़र दऽ कऽ खिचने छल से मारि **चितिर बितिर** भऽ गेल छलैक ।[209]

एहिना एकठाम कथाकार एकटा डोकाबिछनीक चित्र एहि तरहें उरेहलनि अछि– एकटा पन्द्रहसँ बेसीक नहि–कांख तर छिट्टा लेने देहमे आड़ी नहि, खाली **मसकल आँचरसँ** झँपने ।[210]

एकटा नव वरक चित्र कथाकारक शब्दमे गहुमा रंग, नाम, जुलफी, हाथमे कौलेजिया किताब । **पीयरधोती, रेसमी चद्दरि, लालपाग, कत्थी रंगक कोट, मचमचौआ जुत्ता** कपार पर **चानन, कजरायल आँखि, ठोरपर मुस्की** । चित्रमे मुस्कीक रंग भरैत देरी ओ चित्र अमलेशक भऽ गेलैक ।[211]

हिनक **चोर** शीर्षक कथामे अंग संरक्षणक विशिष्ट प्रसाधन जूताकें केन्द्र बनाकऽ कथा गढ़ल गेल अछि । नायक जुत्ताक अभाव तथा ओकर अभिलाषाक क्रममे चोरि करबाक हेतु बाध्य होइत अछि तथा एहि चोरिजन्य मानसिक उहापोहमे लेखक ओकर मनोविश्लेषण कऽ सामाजिक वैषम्यकें अत्यन्त सुरुचिपूर्ण ढंगे व्याख्यात कऽ देलनि अछि ।[212]

एकटा दूराचारक कथा शीर्षक कथामे **प्रभासकुमारचौधरी** ग्राम्य जीवनक एक गोट युवकक चित्र एहि स्वरूपक उरेहलनि अछि जे सामान्य मैथिल कृषकवर्गक वेशक रूपरेखा प्रस्तुत करैत अछि– पिण्डश्याम रंग । डाँड़ पर **धोती**, ठेहुनसँ कनियें निच्चा धरि । कान्ह पर **गमछा** ।[213]

एहि तरहेँ आधुनिक मैथिली कथामे परिवेश निर्माणक हेतु, चरित्र-पक्षकेँ उजागर करबाक हेतु वेशभूषा प्रसाधनक बहुश: शब्दावलीकेँ समाहित होइत देखल जाइछ ।

मैथिली कथासाहित्य पर वेशभूशा प्रसाधन विन्यासक विशिष्ट प्रभाव एहू तथ्यसँ उजागर होइत अछि जे एहि विधाक बहुतोक रचनाक शीर्षक वेशभूषा प्रसाधनेक शब्दावलीसँ निर्मित अछि तथा एहन कथा सभक केन्द्रबिन्दुमे वेशभूषा प्रसाधने देखि पड़ैछ ।

मनमोहनझा दु:खान्त ओ कारुणिक कथा लिखबामे अत्यन्त सिद्धहस्त कलाकार मानल जाइत छथि । कथाकेँ मार्मिकताक बिन्दु धरि उत्थापित करबाक हेतु हिनक अधिकांश कथामे वेशभूषा प्रसाधनक वस्तु ओ शब्दावलीकेँ केन्द्रीभूत राखल गेल अछि । **रुना** हिनक एहो प्रकारक एकगोट कथा अछि जकर नायिका रुनाक अप्रतिम दाम्पत्य प्रेमक चरमोत्कर्षकेँ प्रदर्शित कयल गेल अछि । नायिकाक सहज चरित्रक उद्घाटनक हेतु कथाकार ओकर पतिक रूसबाक वृत्तान्त एहि रूपेँ कहबौलनि अछि–

रूना बाजलि– ओना तँ लड़ाइमे जयबाक इच्छा हुनका बहुत दिनसँ छलैन्हि किन्तु माए-बाप एहि काजसँ रोकथिन्ह । दुरागमनक छओ मास बाद कहलैन्हि जे हम अहाँके एकटा जाँच करब । हम कहलियैन्ह जे करू । ओ कहलैन्हि–हम अन्यत्र किछु रुपैआ पैसा कमाए जाए चाहैत छी किन्तु बाबू- एहिमे बाधा करैत छथि । अपना संगमे किछु ने अछि जे गाड़ीक किरायो चलत । सुनैत छियैक जे मेरठमे बड़लोक लड़ाइमे भर्ती होइत छैक, अहाँ यदि अपन **बेसरि** दितहुँ त बन्हकी राखि हम ओतए कोनहुना चल जइतहुँ । फेर जखन रुपैआ पाइ अनितहुँ तँ बन्हक तँ छुटिये जइतैक–

ओ– यद्यपि हम तावत नेना रही- तेरहम चौदहम मात्र बएस छल किन्तु हमरा गहनाक मोह नहि छल । भेल एतबे जे ई लड़ाइमे जएताह । ओतए सँ, सुनैत छिऐक, लोक नहि बाँचिके अबैत अछि । तेँ हम कहलिऐन्ह जे ई तँ हमर नैहरक देल थिक, हम ककरहु किऐक देबैक– एतबा कहैत कहैत ओ मुँहकेँ आँचरसँ नुका लेलक ।[214]

एहि तरहेँ एहि कथामे नायिका विरहक संयोजनामे गहनेकेँ माध्यम बनाओल गेल अछि । संगहि कथामे मार्मिकता संकलन ओहि स्थितिमे देखाओल जाइत अछि, जखन रुनाक पति लड़ाइमे मारल जाइत छैक मुदा ई गप्प ओकरा नहि बूझल रहैत छैक । पतिकेँ अपना घर बजयबाक हेतु ओ अनभिज्ञा अपन **बेसरि** बन्हकी राखि पतिक लग पठबय चाहैत अछि । कथाकार एहि प्रसंगकेँ एहि रूपेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि– रूनाक लाल लाल आँखिमे नोर भरल छलैक । ओ हकमैत शिथिल स्वरेँ मूड़ी गड़ौनहि बाजलि– काल्हि नहि आबि भेल । एकसरिए झंझारपुर चल गेलिऐक । ई रुपैआ हुनका चुपचाप दए देबैन्हि, हमर शपथ थिक आन ने केओ बुझए । हुनका कहबैन्हि जे गाम एला पर कहथिन्ह जे कमाकेँ अनलहुँ अछि । ओ रहताह त बन्हकी छूटि जेतैक ।[215]

एहि तरहेँ कथाकेँ हृदयग्राही बनयबामे **बेसरिक** महत्त्व अप्रतिम भऽ जाइछ ।

हिनक **चन्द्रहार**[216] कथामे परकीया प्रेमक अत्यन्त उदात्त चित्रांकन भेल अछि । कथाक नायक एकटा मोगल अछि जे सोनाक पानि चढ़ाओल चानीक गहना बेचिकऽ गुजर करैत अछि । एकटा सुन्दरी कन्यासँ ओकरा प्रेम भऽ जाइत छैक आ ओकरा ओ चोराकऽ अपहरण करय चाहैछ मुदा अपन मित्रक कहलापर से नहि करैछ । संयोगसँ ओहि कन्याक विवाह ओकर मित्रे संग भऽ जाइत छैक आ प्रथम भेटमे मोगल ओकरा एकटा चानीक गहना दैत छैक जकरा ओकर प्रेमिका अपन दासीकेँ उपहृत कऽ ओकर उपहारक अवहेलना कऽ दैत छैक । मोगल अपन प्रेमिकाकेँ **सोनक चन्द्रहार** गढ़ने रहैत छैक आ तेँ अपन उपहारक अवहेलना देखि ओ घर घुरैत अछि तथा जीवन भरि कमाकऽ एकटा **चन्द्रहार** अनैत अछि । मुदा तावत ओकर प्रेमिकाक अवसान भऽ गेल रहैत छैक तत: पर ओहि **चन्द्रहारकेँ** मोगल अपन प्रेमिकाक कन्याकेँ प्रदान कऽ परितृप्तिक अनुभव करैछ । एहि तरहेँ **चन्द्रहार** द्वारा प्रणयक प्रगाढ़ता ओ निश्छलताक सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि । कथाक केन्द्र विन्दुमे ई गहना विशेषे अछि जे सम्पूर्ण कथाक संवहन करैत अछि तथा सामाजिक जगतमे एकर महत्त्वक प्रतिपादन करैछ ।

आभूषणपर आधारित कथासभक सूची अत्यन्त वृहत् अछि । प्रेम ओ परिणय एहि प्रकारक कथा सभक मूल ध्येय बुझना जाइछ। खास कऽ दाम्पत्य प्रेमक विभिन्न स्थितिक उद्घाटन एहि प्रकारक कथामे देखि पड़ैछ ।

मनमोहन झाक **औंठी**[217] कथामे नायक द्वारा क्रीड़ाक्षेत्रमे पाओल गेल एक गोट **औंठी**, तद्जन्य मानसिक उहापोह ओ अन्तत: ओहि औंठीक ओकर ओहि प्रेमिकाक होयबाक कथा कहल गेल अछि जकरा प्रति ओकर हार्दिक प्रेम छलैक मुदा ई प्रीति सामाजिक दासताक जंगलमे भोतिआय गेल छलैक । एहि तरहेँ **औंठीकेँ** सामाजिक जगत प्रीति-परिणयक कथाक सूत्रधारक रूपमे रेखांकित कयल गेल अछि ।

अशोकक **हेयर पिन**[218] कथामे दाम्पत्य रतिक अभावमे नायक द्वारा परकीया गमन, परपुरुषक संग पत्राचार देखि पत्नीक आशंका एवं घरमे परकीयाक **हेयरपीन** देखि पत्नीक शंकाकुलता ओ नायिकाक क्षोभक चित्रांकन भेल अछि ।

एहि तरहेँ गहनाक शब्दावलीसँ बनल कथाशीर्ष सभक मूलमे प्रेमक विभिन्न दिशाक आलेख सैह कथाकार लोकनिक दृष्टि देखि पड़ैछ । एहन कथासभक सूचीमे किछु विशेष उल्लेखनीय अछि, यथा–

कंढा[219] -प्रो०धीरेन्द्र; सोनाक कड़ना[220] - डा.बी.झा; सोनहुला कन्तोड़[221] –व्रजकिशोरवर्मा'मणिपद्म'; चौंपकली[222] –मनमोहनझा; इयरिंग[223] –रवीन्द्रनाथठाकुर; मनटिक्का[224] –रमानन्दझा 'रमण'; पायलक घुघरू[225] –श्यामानन्दठाकुर; इयरिंगक दाम[226]

– सुभद्रासुहासिनी; मणिमेखला[227] –राजकमलचौधरी; नेक्लेश (अनुवाद कथा)[228] – ईशनाथठाकुर; मोहनमाला[229] – हरिनन्दन ठाकुर सरोज

वस्त्रक शब्दावलीपर आधारित विशिष्ट कथा अछि– सोमदेवक **अंगा** । एहि कथामे निम्नवर्गीय बाल मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रांकन द्वारा सामाजिक जगतमे निरन्तर चलैत आर्थिक शोषण-वृत्तिकेँ रेखांकित कयल गेल अछि । एहि कथाक नायक अछि बोहरा नामक नेना जे गरीबीक जाँत तर बन्धुआ मजदूर बनल पिसा रहल अछि । ओकरे वयसक ओकर मालिकोक बेटा छैक, कुसो जकरा लग अनेक अंगा छैक मुदा बोहरा अंगाक अभावमे ठंढामे सिटसिटाइत रहबाक हेतु बाध्य अछि । अंगाक प्रति ओकर अतृप्त लिलसा-पिपासा एक दिन ओकरा मालिकक बेटाक अंगाकेँ देहसँ सटयबाक लेल विवश कऽ दैत छैक जकर परिणामस्वरूप मलकीनी ओकरा छोलनी धिपा कऽ दागि दैत छथिन आ अंतत: ओकरा मालिकक खबासी छोड़ि कऽ आन देश भगबाक विवशता आबि जाइत छैक । जाइत काल मालिकक खेतमे संठीपर टाङल अंगा लऽकऽ ओ ट्रेन पकड़ि लैत अछि जे ओकर देह झँपबाक एकमात्र साधन होइत छैक ।

एहि तरहेँ एहि कथाक केन्द्र विन्दु अंगवस्त्रक विशेष प्रभेद **अंगाकेँ** बनाकऽ सोमदेव सामाजिक आर्थिक शोषणक मनोविश्लेषणवादी ओ यथार्थपरक विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि । वस्त्र विन्यासक शब्दावलीकेँ शीर्षक रूपेँ राखि अनकानेक कथाक निर्माण भेल अछि जाहिमे किछु उल्लेखनीय अछि यथा– ड्रेनपाइप फूलपेन्ट[230] –गंधराज, फटैत आँचर[231]–, लाल साड़ी[232] –जयवल्लभप्र.सिन्हा, सूट[233] –दिनेशकुमारझा, मैल आँचर : उज्जर दाग[234] –धूमकेतु, रंगीन चादरि[235] –भारतीश्रीवास्तव, सीड़क –जीवकान्त, खाली जेबी भरल मोन[236] –मायानन्दमिश्र, नूआक समस्या[237] –वीरेश्वरझा, फूलपेंट[238] –श्यामानन्दठाकुर, चेफड़ी[239] –सुशील, रेशमक राखी[240] –सोमदेव, छूटल पैतावा : हेरायल पनही[241] –हीरामिश्र, साड़ी[242] –हंसराज, सीड़की आ एक जोड़ा लोक[243] –महाप्रकाश, भिखमंगाक गोरुआ[244] –योगनाथझा, मनीबेग[245] –हरिनन्दनठाकुरसरोज, ललका पाग[246] –राजकमल, बुर्कावाली[247] –उग्रानन्दसिंहझा, कफन (अनुवादकथा)[248] –गुणनाथझा

वस्त्रविन्यासक शब्दावलीपर आधारित एहि कथासभक केन्द्र विन्दुमे सामान्यत: वस्त्रे देखि पड़ैछ जे वस्त्रक सामाजिक मूल्यकेँ रूपायित करैछ, एकर संवर्द्धित महत्वकेँ इंगित करैछ । किछु कथामे एहन शब्दावलीक प्रयोग प्रतीकात्मको भेल अछि यथा– **गुदरीक लाल**[249] कथामे गुदरीकेँ प्रतीकस्वरूपमे लेल गेल अछि । ई अनुदित कथा अछि जे श्रीशंकर द्वारा अनुवाद कयल गेल अछि ।

प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीपर आधारित कथा सभकेँ देखलासँ स्पष्ट होइछ जे खास कऽ **सिन्दूर, टिकुली, पान, चूड़ी** आदिकेँ केन्द्र विन्दु बनाकऽ एहन कथा सभक रचना भेल अछि । **सिन्दूर** पर आधारित पाँच गोट कथा निदर्शनार्थ प्रस्तुत अछि ।

सिनूरक कीया[250] –अनिलचन्द्रठाकुर । सिन्दूरक दाम[251] –गंगेशगुञ्जन । सिन्दूर[252] –गौरीकान्तचौधरी'कान्त' । कुमारिक सिन्दूर[253] –सुभद्राकुमारी'पाथ्या' । सिन्दुर-टिकुली[254] –प्रियाचौधरी ।

एहिना पानपर आधारित किछु नाम सभ अछि–

पानक पात[255] –गौरीकान्तचौधरी'कान्त' । घुलैत पान[256] –मदनमिश्र

चूड़ी पर आधारित किछु कथा सभ अछि–

टूटल चूड़ी[257] –मोतीलालझा । ताराथानक चूड़ी[258] –रमेशचन्द्र'किशोर' । चूड़ीक लाज[259] –वासन्तीदेवी ।

अन्य प्रसाधन सामग्रीपर आधारित कथा सभक बानगी अछि–

कड़ूतेल[260] –अमरनाथझा । कजरायल आँखि[261] –डा०अमरनाथझा । टोप[262] –शंकरमिश्र । विगलित चिकुर[263] –सियारामझा 'सरस' । सुकेशी, ऐना[264] –मनमोहन झा । पौडर[265] –केदारकानन

केदारकाननक **पौडर**[266] कथामे बेकारीसँ संघर्ष करैत एकटा युवकक मानसिक स्थितिक विश्लेषण कयल गेल अछि । ई युवक अपन बेकारीक कारणेँ अपन विवाहिताकेँ प्रसाधन सामग्री देबामे अक्षम अछि । दोसर दिस स्टेशन प्लेटफार्मपर ओ भिखमंगा दम्पतीकेँ एकटा **पौडरक डिब्बाक** संग देखैत छैक । दूहू अत्यन्त अकिंचन होइतो भीख मङबाक क्रममे एकटा पौडरक डिब्बा पओने अछि जकरा माध्यमे अपन सुप्त प्रणयकेँ जाग्रत अनुभव करैछ । दाम्पत्य जीवनक रंग रभसकेँ **पौडर** कतेक रंगीन कऽ दैत छैक से बिचारि नायक भिखमंगासँ ओ पौडरक डिब्बा कीनि लेबाक वा ठगि लेबाक उपक्रम करैत अछि । एहि तरहेँ भिखमंगा दम्पतीक स्नेह ओ युवकक अशक्यता तथा अभावग्रस्तताक निर्वचन कथाकार एहि प्रसाधन सामग्रीक माध्यमे कयलनि अछि ।

तथापि प्रसाधन जगतमे आधुनिकताक प्रवेशक संग ओकर शब्दावलीमे जे संक्रमण भऽ रहल अछि तकर निरूपणक दृष्टिऍ **डा.नीता झाक बाड़ीक पड़ुआ**[267] शीर्षक कथा अत्यन्त विशिष्ट कहल जा सकैछ । एहि कथाक परिवेश एकटा ब्यूटी पार्लर अछि । स्वभावत: लेखिका एहि माध्यमे ब्यूटी पार्लरमे व्यवहृत किछु विशिष्ट शब्द सभकेँ साहित्यिक स्वीकृति देलनि अछि यथा– **फेशियल, स्कार्फ, ब्राइडल** । प्रसाधनमे क्रमश: नव तकनीकक व्यवहारसँ एकर शब्दावलीमे नव्यताक तँ ई नीक दृष्टान्त अछिए संगहि लेखिका प्रसाधनकेँ आधुनिक युगक फैशन ओ सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकताक रूपमे सेहो रूपायित कयलनि अछि ।

मैथिली कथा साहित्यमे प्रसाधनक विशिष्ट सामग्री चूड़ीपर नामांकित **विद्यानाथझाविदितक** एक गोट कथा संग्रह **फूटल चूड़ी**[268] प्रकाशित अछि । मुदा एहि

कथा संग्रहमे एहि नामक कोनो कथा नहि अछि तेँ ई स्पष्ट नहि होइछ जे कथाकार एकर नामकरणक हेतु ई अभिधान किएक चुनलनि ।

एहि तरहेँ वेश भूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावली आधुनिक मैथिली कथासाहित्यकेँ सम्बलित करैत रहल अछि । कथामे पात्रक सामाजिक आर्थिक परिस्थितिकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु, ओकर मानसिक परिवेशकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु, वेशभूषा प्रसाधनमे क्रमिक परिवर्तन-परिवर्द्धनकेँ जनयबाक हेतु एहन शब्दावलीक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । कथासाहित्यमे बहुतोक शीर्षक एही शब्दावलीपर आधारित अछि तथा कथातत्वक केन्द्रविन्दुमे एकरे शब्द देखि पड़ैछ । मनोविश्लेषणवादी यथार्थवादपरक कथामे सेहो पात्रक मानसिकताकेँ वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक माध्यमे अभिव्यक्ति भेल अछि ।

मैथिलीकथा साहित्यमे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोगक आधार पर कहल जा सकैछ जे एहि प्रकारक शब्दावली क्षीयमाण शब्दावलीक स्मृति, आलेख तथा नवागत शब्दावलीक स्वीकृतिक परिचायक अछि ।

उपन्यास– महाकाव्ये जकाँ उपन्यासक वर्ण्य विषयक फल अत्यन्त विस्तृत होइत अछि । उपन्यासकारकेँ मानव जीवनक बहुरंगी चित्रावलीकेँ अत्यन्त विस्तीर्ण परिवेश देबाक छूट रहैत छैक । तेँ मानवजीवनक हेतु मूलभूत आवश्यकता वस्त्र ओ व्यक्तित्व तथा चरित्रकेँ प्रभावित करयवला कारक आभूषण-प्रसाधनक चित्रण कऽ उपन्यासकार अपन पात्रक व्यक्तित्वक समेकित स्वरूप पाठकक लग समुपस्थित करैछ ।

मैथिली उपन्यास साहित्यक प्रारंभिक युग कन्यादानक युग थिक । एहि युगमे मैथिली उपन्यास साहित्य विविध नारी समस्याक ओझरौटक यथार्थपरक ओ सन्देशात्मक विवृत्ति प्रस्तुत करैत अछि । नारी समस्या प्राय: अधिकांश उपन्यासक अन्तर्वाही पयस्विनीक प्रधान धारा रहलैक अछि तेँ नारीक वस्त्राभूषण प्रसाधनतँ सामान्यत:एहि उपन्यास सभमे स्थान पबिते रहल अछि, वर्णन चातुर्यक प्रदर्शन तथा परिवेश-निवेशमे पुरुषक वस्त्राभूषण प्रसाधनक सेहो उल्लेख होइत रहल अछि । **पुण्यानन्दझा** रचित मैथिलीक प्रारंभिक उपन्यास **मिथिला दर्पण**[269]मे वस्त्रसँ सम्बद्ध कतोक छिटफुट शब्दावलीक उल्लेख विभिन्न संदर्भमे भेल अछि यथा– **लालधोती, पीयर वस्त्र, आँचर, ओहार, उजरनूआ, चादरि, तेठनी, अंगपोछा, कपड़ा-लत्ता, अन्न-वस्त्र, खड़ाँउ, तुराइ** इत्यादि ।

मुख प्रसाधनक हेतु एहि उपन्यासमे **पान सिनूर, सुपारी ओ मुखशुद्धि** शब्द भेटैछ । स्थानीय द्रव्यमे **तेलक** उल्लेख भेल अछि । **चन्दन** ओ एकरा ललाटपर अनुलेपनक विशिष्टरीति **ढाढ़िया चानन** एवं तीर्थस्थलसँ प्राप्त विभिन्न प्रसाधन **रोड़ी, बद्धी** तथा विभिन्न अनुच्छेदमे खास कऽ पात्रक व्यक्तित्वकेँ उभारबाक हेतु ओकर विशिष्ट वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेख एहि उपन्यासमे भेल अछि आ सम्बद्ध **बहुश:** शब्दावलीक उपयोग

देखल जाइछ, यथा ओहिमे एक गोटे जनिक द्वार थिकन्हि मंगनीबाबू थिकाह– हिनक अवस्था प्राय: तीसवर्ष मुसरिक नाड़्रि जकाँ **टीक**, पुरपुटी पचकल, फुरफुर **केश**, माथमे **सिन्दूरक ठोप**-छाती पर **जनौमे** फँसाएल एकटा **चान्दीक पवित्री**, हाथक अनामिका आंगुरमे एकटा लोहाक **अंगुठी**, लाल तथा **मैलसँ चिक्कट धोती** कान्ह पर एकटा **मैल मोटिया अंगपोछा** जे सतत भीजल रहबाक कारण आगन्तुक लोकनिक सत्कारक हेतु वेश विलायती **अत्तर** । सभ गोटे डांड़सँ ठेहुनमे **अंगपोछा** बान्हि दुनूकात केहुनि गड़ा आराम कुरसीक आनन्दकेँ मातु कय रहल छथि ।[270]

हुनक शरीर हृष्टपुष्ट मुँह गोल, माथमे केश सघन तथा खूब कारी, भोंम सघन केशयुक्त धनुषाकार आँखि पैघ-पैघ तथा खूब कारी, रंग अतिशय गोर, अधर लाल, नासिका मझौला, हाथक आङुर गोहुमाकार, गोर गोर पैरमे **रूपाक कुचनीवला फोक कड़ा, लाल किनारीदार वसन्ती** रंगमे **रंगायल साड़ी** पहिरने, माथमे एकटा **टिकुली** लगौने मानू साक्षात रती विराजमान छथि ।[271]

बीसम शताब्दीक आरम्भिक काल धरिक मैथिल नर-नारी सामान्य वेश-भूषाक जीवन्त चित्र एहि उपन्यासमे अछि । जेना–

सन्तलाल बाबूक भागिन बंगट पाठकसँ किछु विशेष बुद्धिमान छलाह । अवस्था हुनक वर्ष पच्चीसेक थिकन्हि । वर्ण पिण्डश्याम, मुँहगोल, कानक उपरी भागमे एकटा **सोनाक कनौसी, लाल धोती**, डाँड़मे एकटा **मोटरी** लपेटल, हाथमे एकटा छाता एकटा **लाठी**, बंगट पाठक श्यामवर्ण, शरीर हृष्टपुष्ट मुँह चापैट, हुनको डाँड़मे मोटरी । स्त्रीलोकनि साधारण वस्त्रक ऊपर एकटामे **दोबड़ धोतीक ओढ़नी ओढ़ने** माथ पर अरवा चावर, सैन्धव नोन, घी आदि सामग्रिक मोटरी धेने गामसँ विदा भेलीह ।[272]

एहि अनुच्छेदमे प्रथम ओ दोसर मोटरीक अर्थ **बटुआ** बुझना जाइछ आ अन्तिम **मोटरी** शब्दक अर्थ **छोट मोटा** अछि ।

एहि प्रकारक एकगोट वर्णनमे वरक विभिन्न प्रकारक मनोरंजक वर्णन भेल अछि तथा अनेक पारिभाषिक वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक उल्लेख भेल अछि– शुद्धक समय नित्य **साबुनसँ** देह मलै छथि । **धोतीक साँचीक** तँ कोनो ठेकाने नहि । सभाक प्रसरमे **केश कटाय** लय छथि जे पाकल केश किन्हु बुझि नहि पड़ैन्हि, कतेको तँ **खिजाब** लगबै छथि । सभसँ बड़का आश्चर्यक बात तँ जे जनिक घरमे मुसरी दंड पेलै छैन्ह जनिका सागभातहुक ओरिऔन नहि ओहो शुद्ध समय मड़नी-चड़नी पैंच उधार तथा कर्ज कय वेश पाग दोपटा अङ्गा जूतासँ मठोमाट कै कहतैन्ह जे गरीब छथि । आइ काल्हि तँ आओर । **चमरी डिल्लीबाज जूता** तँ छूटल । आर कहियो पैरमे जूता पड़ल हो वा नहि परन्तु ई प्रसरमे होमक चाही **अङ्गरेजी जूता** ।[273]

एहिना जूताक विशिष्ट प्रभेद **काबा जूताक** उल्लेख भेटैछ ।[274]

मैथिली उपन्यास साहित्यमे जाहि कलाकारकेँ मैथिल ओ संक्रमित वेशभूषा प्रसाधनक विस्तीर्ण, सुस्पष्ट एवं समेकित रूपरेखा प्रदान करबाक सिद्धहस्ततासँ सम्पन्न देखैत छियनि से थिकाह **प्रो.हरिमोहनझा** । **द्विरागमन** उपन्यासकेँ वस्तुतः मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक कोश कहल जाय तँ कोनो अत्युक्ति नहि । विभिन्न प्रसंगमे आभिजात्य वर्ग द्वारा गृहीत वेशभूषाप्रसाधनक स्पष्ट चित्र हिनक एहि उपन्यासक वर्णन सभमे भेटि जाइत अछि ।

द्विरागमनसँ पूर्वक हिनक उपन्यास **कन्यादान**मे सेहो यत्र तत्र वेशभूषासँ सम्बद्ध विवरण भेटैत अछि मुदा से पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ । तथापि एहि **कन्यादान** उपन्यासमे वेशभूषाक शब्दावलीक प्रयोग अधिक काल कथोपकथन क्रममे भेल अछि जे कथातत्त्वकेँ आगाँ बढ़यबामे तथा वर्ण्यकेँ चमत्कारिक बनयबाक साधन भेल अछि– यथा–

–ओतए मानि लिअ **एक खण्ड धोतिए** पहिरा कऽ विदा कऽ देथैन्ह ।[275]

–डेरापर पहुंचला उत्तर घुटर झा **चपकनक मुंड़ी** फोइत बजलाह ।

–भोला नाथ झा **टीक सोहरबैत** बजलाह ।[276]

–झारखंडीनाथ सूति उठि कय दातमनि कैलन्हि और पोखरिमे एक डूब दऽ भीजल **अङ्पोछा** डाँड़मे लपेटनहि भोलानाथझाक आङन पहुँचलाह ।[277]

–जे क्यौ असौजनिजा अबैत छथि तनिकालोकनिकेँ नीक जकाँ चानन **काजर** कए, **पाग डोपटा** विदाइ दए सौजन्य कराओल जाइत छैक ।[278]

–**धौतवस्त्र** अत्यन्त ढील भए डाँड़सँ अहिंसात्मक आन्दोलन कय रहल छलन्हि । जहिना एक हाथसँ **फूजल साँची** सम्हारय लगलाह कि वामा हाथसँ लोटा खसि पड़लैन्ह ।[279]

–तखन अवगुणमे अवगुण यैह जे कनेक **मोटिया** पहिरैत छथि ।[280]

–**खद्दर** पहिरैत छथि से तँ कोनो तेहन अनर्गल नहि ।[281]

–भोलानाथ मोटरीसँ धोती और अङ्पोछा बहार कय एक **चुड्डू तेल** माथमे **पचबैत** पोखरि दिश विदा भेलाह ।[282]

डाँड़मे **अङ्पोछा** लपेटैत भीजल **धोती** गाड़ैत बजलाह ।[283]

चौधरीजीक चुपचाप **धोती**, गंजी **बालाबर्न** पहिरि ऊपरसँ **दोहड़ि** ओढ़ि लेलन्हि । ...लालककाक मस्तिष्क मे **पाग-धूनस** घरक इन्तिजाम... उठय लगलैन्हि ।[284]

एहि उपन्यासमे निम्नमध्यवर्गीय परिवारक अंगरक्षक सामग्री **छाता** ओ **जूताक** अत्यन्त मनोरम चित्र भेटैत अछि ।[285]

द्विरागमन उपन्यासमे अवश्य वेशभूषा प्रसाधनक पुष्कल वर्णन अछि । लेखक अपन वर्णन विन्यासमे एकरो सतर्कीसँ संयोजन कयलनि अछि, से सर्वथा स्पष्ट बुझना जाइत अछि । ताहूमे सर्वाधिक विशिष्ट अछि **अकाण्डताण्डव**, शीर्ष मध्य आधुनिक फैसन ओ प्राचीन परिपाटीक बीच नारीलोकनिक द्वारा कयल गेल समालोचना[286]।

फैसनक विशद् विवेचन तथा पारम्परिक मैथिल वेशभूषाविन्यासमे होइत क्रमिक परिवर्तनक संकेतक अतिरिक्तो अनेकठाम वस्तुक अनुरोधेँ वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि जेना बुच्चीदाइक शिक्षाक प्रोग्राममे हुनका जे शिल्पकला सिखायब आवश्यक बुझल गेल ताहिमे **रूमाल, पर्दा, टेबुल क्लाथ, ब्लाउज, शैमीज, फ्रॉक, अंडरवियर मोजा, गुलबन्द, स्वेटर** वस्त्रविन्यासमे सम्बद्ध अछि ।[287]

बुच्चीदाइक द्विरागमनक ओरिआओनमे **बाजू-बिजौठ, बड़हरी, चकमुन्नी, मङ्टीका, हैंकल, पहुँची, पाजेब** आदि गहना गुरियाक सूची राखल जाइछ ।[288]

तदतिरिक्त अनेकठाम छिटफुट वर्णन सेहो भेल अछि यथा–

–**श्री कट ब्लाउजक** मध्यभागमे खोँसल फाउन्टेनपेन बाहर कय आगाँमे कापी **खोलि मिस बीणा तैयार** भऽ गेली ।[289]

विवाहिता स्त्रीक मुँहसँ सासुरक विषयमे एहन शब्द सुनि प्रेमगर्विता तारादाइ कनेक छवि कऽकऽ सिहरि उठलीह । ताहिसँ हुनक **इयररिंग** चमकि गेलैन्ह ।

तारादाइक **इयररिंग** देखि घखराइनवाली बजलीह– बड़ बढ़ियाँ **गहनि** छैक । कतक बनल थिक ऐंदाइ ?

ताराइदाइ कनेक अगराइत उत्तर देलथिन्ह– ई त ओतुक्के (सासुरक) गढ़ल छैक । मुदा बड़ भारी छैक । आब तोड़ा कऽ दोसर बनेबैक । आब कि भारी पहिरक फैसन छैक ?

परिहारपुरवालीक गरमे बेसमोट **सूति** रहैन्ह, प्रायः बीस **भरिसँ** कम नहि । हुनका अपनेपर आक्षेप बुझि पड़लैन्ह । ओहो कटाक्ष करैत बजलीह– हँ, आब त सभ वस्तु हल्लुके नीक लगै छैक । भारी कि केओ चाहैत अछि ।[290]

–एवं प्रकारेँ खोज पुछारी होइत होइत अन्ततोगत्वा पता लगलैन्ह जे और सभ वस्तु त सकरीमे चढ़ि गेल मुदा मोटरी ओतहि छूटि गेल जाहिमे सभ गोटाक भीजल नूआ लपेटि-सपेटि कऽ बान्हल रहैन्ह, फुचुकरानीक **पटोरो** ओहीमे रहैन्ह । ओ ठोर पटपटबैत बजलीह– ततेक ने पटोर **पटोर** भेल जे पटोर जाइते रहल । नीक भेलैक ।[291]

एहि ठाम मिथिलाक विशिष्ट परिधान **पटोरक** उल्लेख भेल अछि । प्रयुक्त वस्त्रक पहिरबाक योग्य नहि रहलापर **फाटल-पुरान** कहल जाइत छैक । एहि युग्मक शब्दक प्रयोग एहिठाम भेटैत अछि–

ज्योतिषिआइनक फेरल साड़ी फाटल-पुरान जकाँ रहैन्ह ।[291]

एतय फेरल विशेषण सेहो पारिभाषिक अछि । पहिरल वस्त्रकेँ उतारि कऽ रखला पर फेरल कहल जाइत छैक ।

कन्यादानक परवर्ती उपन्यासहुमे अधिकांश नारीसमस्येमूलक उपन्यास सभ रहल यथा **योगानन्दझाक भलमानुष, वैद्यनाथमिश्रयात्रीक पारो, नवतुरिया, चन्द्रनाथमिश्रअमरक बीरकन्या ओ बिदागरी, मायानन्दमिश्रक बिहाड़ि पात आ पाथर** इत्यादि । एहू उपन्यास सभमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णनकेँ वर्ण्य वस्तुक अंगवत् व्यवहार भेल अछि । पात्रक चरित्र ओ व्यक्तित्वकेँ प्रदर्शित करबाक हेतु वेशभूषाप्रसाधनक साहाय्येँ चमत्कार ओ अभिव्यक्ति कौशलक परिचय देल गेल अछि ।

भलमानुसमे समाजमे प्रचलित हरिसिंहदेवी प्रथाक अवधारणाजन्य अधोगतिक वर्णन भेल अछि । भलमानुसक घृणित व्यवहार ओ सामाजिक मान्यता पर क्रूर प्रहार उपन्यासकारक उद्देश्य छनि । कथाक घटना ओ चरित्रक विकासमे ई उपन्यास अपनामे एकल कहल जा सकैछ ।

एहि उपन्यासक नायिका छथि निर्मला । हुनक माताक मानसिकतामे अपन बेटीक विवाह भलमानुस परिवारमे करबाक आकांक्षा दृढ़मूल भऽ जाइन्ह ताहि हेतु उपन्यासकार जाहि परिवेशक निर्माण कयलनि अछि तकर जड़िमे लालकाकीक वाग्वाण छनि आ एहि वाग्वाण द्वारा ओ निर्मलाक सौभाग्यचिन्ह **सिन्दूरक** प्रसाधन तथा **आभूषणपर** सेहो आक्रमण करैत छथि । उपन्यासकार अत्यन्त सहज रूपेँ एहि दूहू सामग्रीक उपयोग कऽ औपन्यासिक परिवेशकेँ चमत्कारपूर्ण अभिव्यंजनासँ युक्त कऽ देलनि अछि ।[292]

सभागाछीक डेराक वर्णनमे मध्यवर्गीय ओ उच्चवर्गीय पुरुषक वेशभूषा प्रसाधनक समेकित विवरण भेटि जाइत अछि–

प्रत्यावर्तनक हेतु मुँह उठओलनि तँ एक परम पवित्र बासा दृष्टिगोचर भेलनि । एहिसँ पहिलुका डेरा सभ पर शय्यामे एक **फाटल चिटल कम्बलक** अतिरिक्त आर किछु नहि छलैक । ताहि पर बैसनिहारोक वस्त्र तदनुकूले । कम्बलक सहवासी **मिरजइ, फराठी** आ **चमरउ ठिकड़ी जूता** सएह होइछ । सामने तँ वस्तुमात्र राजसी । जेहने सिंहासन तेहने देवता । **बड़का शतरञ्जी** पर बर्फसन उज्जर **चद्दरि** बिछाओल छल । ताहि पर दू चारि गोट **मसनद** कात कात राखल छल । अतिवृद्ध, मुखिया तथा उमेदवारलोकनि ओहि पर ओङठल छलाह । ओतबा दूरक वायुमंडल बाबूलोकनिक देह एवं वस्त्रमे लगाओल **अत्तर** तथा **सुवासित तेलक** सुगन्धिसँ **महमह** करैत छल । ककरो देह पर प्राकृतिक पाउडरक लेपे रहैक । शरीरकेँ **साबुनतेलसँ** भेंट रहने जेहन चमकी रहक चाहियैक सएह रहैक । सभहक केश **फेरल** वा **ककवासँ** साफ कयल । बिछाओनसँ नीचामे **जूताक पाँती** लागल

रहैक । एकजोड़ **फ्लेक्सक फुल**, दोसर जोड़ **बाटाक हाफ**, तेसर जोड़ **दयालबागक सेण्डल**, तँ चारिम जोड़ **रबड़क** । एवं क्रमे रंग-बिरंगक जूता बाबूलोकनिक धनिकत्व प्रदर्शित कऽ रहल छल ।[294]

उपन्यासकार नायक जगदीशक वेशभूषा प्रसाधनक चर्चा सविशेष रूपेँ दुइठाम कयने छथि । एकठाम जगदीशकेँ विपन्न छात्रक रूपमे चित्रित कयल गेल छनि–

पएरमे दसठाम **चिप्पीलागल जूता**, देहपर फाटल-चिटल **खद्दर केर कुर्ता** आ **जोलही धोती**, इएह तँ हुनक पहिरब-ओढ़ब रहय । के **केश फेरैत** अछि, **चश्मा** लगबैत अछि, घड़ी लगबैत अछि, सिनेमा देखैत अछि आ पिन्हुमे रसगुल्ला उड़बैत अछि ।[295] दोसरठाम सम्पन्न परिवारक छात्रक रूपमे जगदीशक वेशभूषाक चित्रण भेल अछि–

चानन कतय दहा गेल तकर पता नहि । टीकक बोझ कत्तऽ खसि पड़ल से के कहत ? **मैल धोती, फटलाहा कमीज** तथा **चिप्पी लागल जूता** कतऽ बिलायल से नहि कहि । एकरा बदलामे ओ एकदमसँ मेंही तथा दूधसन उज्जर धोती, **दुइलक** ओहने उज्जर **कमीज**, मक्खन सन चिक्कन गंजी तथा खूबसुन्दर **चट्टी** पहिरय लागलाह । केश जहिया **छँटाबथि** तहिया **सैलूनमे** । हफ्तामे दू बेरि **साबुन** लगाबथि, लत्ता कपड़ा पर **सेन्ट** छीटथि, केशमे सुगन्धित तेल लगाबथि आ जूतामे **पालिश** । आब मच्छरकेँ ई सौभाग्य कहाँ जे गरीब विद्यार्थीक शोणित पीबए । **मुशहरीक** छिद्रो पैघ नहि जे ओहू दने प्रवेश करत ।[296]

निर्मलाक कोबर घरक वर्णनक क्रममे शय्यासँ सम्बद्ध वस्त्रमे मखमली गद्दा, **कम्बल, शतरञ्जी, गलीचा, तकेया, चद्दरि**, आदिक संग चट्टी, खराम, छुपबती, **पनबट्टी** तथा विभिन्न सुगन्धिद्रव्य ओ पुष्पक उल्लेख भेल अछि ।[297] जगदीशक सासुरसँ विदाइक वर्णनमे सेहो उपन्यासकार जाहि वस्तुजात सभक वर्णन कयलनि अछि ताहिमे अधिकांश पुरुष वेशभूषा प्रसाधनसँ सम्बद्ध अछि ।[298]

वैद्यनाथमिश्रक नवतुरिया उपन्यासमे सेहो विभिन्न प्रसंगमे वेशभूषा प्रसाधन सामग्री सभक प्रचुर उल्लेख भेल अछि । यात्रीजी अपन अभिव्यक्ति सौष्ठवक हेतु सर्वाधिक प्रसिद्ध छथि आ हिनक एहि सौष्ठवक मूलमे अछि पात्रक चित्रांकनमे हिनक दक्षता जाहिसँ ओ चित्र पाठकक सम्मुख उपस्थित भऽ भाव ओ रसक अवगाहनमे, पाठकक साधारणीकरणमे सर्वथा समर्थ सिद्ध होइछ ।

अपन एहि वर्णन-चातुर्यमे उपन्यासकार पात्रक सजीव चित्र प्रस्तुत करबाक हेतु वेशभूषा विन्यासक अत्यन्त स्पष्ट वर्णन कयलनि अछि, जेना नायिका बिसेसरीक ई स्वरूप– बिसेसरीक केश बान्हल भऽ गेल रहइक, **जुट्टी** सेहो **गूहल** भऽ गेल रहइ । आँखिमे काजर लागि गेल रहइ ।

गहना रामेसरीकें अपना कम्मे सम । सुति अपन आइसँ दू वर्ष पूर्वहि ओ बेटीक गरौंमे पहिरा देने रहइक । सांइक गढ़ाओल **नकमुनी, कङना, डरकस** ओ साट छलइक तकरा आइ सनुकचीसँ बहार कऽकऽ **आमिलमे** फुलओलाक बाद माजि-मुजि सुखा पोछि कऽ धयने छलि । मझिली जनीसँ **चन्द्रहार** अनने रहय छोटिजनीसँ **झुम्मक बाँक** आ **चकली** जेठी जनी सहजहिँ नहि द गेल छलथिन ।[299]

एहिना चतुरा चउधरिक वेशभूषा ओ प्रसाधनक माध्यमे वृद्धवरक ई चित्र द्रष्टव्य–

वय ? क्रम साठिसँ थोड़ तँ नहिए हेतइन्ह, दू एक वर्ष वेशी होइन त होइन । घाड़मूड़ वेश कलशगर । कान छोट छोट आँखि बदामी । नाक मध्यम काटक । केश पाकल कपचल **मेंहीमोछ** आ **दाढ़ी कमाएल** । गाल गहींड़ छलइन । **सिल्कक कुर्त्ता तसगरक पाग, अन्डीक चद्दरि** । सिकिआ कोरक फस्ट क्लास **धोती**, गुलाबी । **हीना** आ **केओड़ाक** सुगंधिसँ लोकक नाक भरि भरि उठइक । गहुमारंगक चाकर कपार पर **घोरलहा सिनुरक लड़ुब्बीठोप** पेट्रोमेक्सक तेज प्रकाशमे वेश जगमगाइन्ह ।[300]

जोतखीजीक स्वरूपकें उद्घाटित करबामे उपन्यासकारक विन्यस्त पाँती एहि प्रकारक अछि– गहुमा चामसँ छाड़ल मुट्ठी भरि हाड़ । फाँक सन आँखि नोकगर नाक । पइघ पइघ कान । पातर मोछ । चिक्कन चोकटल गाल । **धोती** मामुलिए, कान्ह पर चरखाना **अङपोछा** ।[301] एक स्थल पर मुन्सिफक कोर्टक सजीव चित्र उपस्थित कएल गेल अछि । एहि क्रममे ओहिठामक ओकील मुख्तारक वेश विन्यासक एहि प्रकारक वर्णन अछि–

बीच बीचमे ओकील मोख्तार लोकनि सेहो ओम्हरे द जाथि, आबथि– अनेक रूपरूपाय–ककरो दाढ़ी बनाओल, मोछक स्थानमे मने बड़का बड़का दूटा डांस बइसल आ पाछाँ कनमा भरि गेंठिआओल टीक लटकल, ककरो छाँटल केशक सतमहला पट्टी, दाढ़ी मोछ साफ नाकपरसँ सोझे उपर दिस गोपीचानन सुरड़ल, गरौंमे सरिसवक दानाक कंठी ककरो दाढ़ी साफ, मशीनसँ मिड़ाकें **छोपल मोछ** ओ कपार पर **सिनूरकठोप** ककरो नेपाली बकरी सनक दाढ़ी, **छाँटल मोंछ** आ दोपलिया टोपी, ककरो शिखाहीन छोट छोट **केश, दाढ़ी आ मोछ कमाएल**, मुखमंडल मने कोनो प्रकारक छल होइन्ह, **पैन्ट** मुदा सभकें रहइन्ह, केओ **चपकनधारी** तँ केओ **कोटधर** अपाटक दर्जी द्वारा सिआओल सूटक क्रमपात एहने जे कोनो शहरमे गुदड़ी बजारक दोकानदार ओकरा फेंकि देने होइक आ ई लोकनि तकरा उठा अनने होथि– किछु गोटेक **सूट** अति आधुनिक ढङ्क सेहो ।[302]

सगुनक भारमे साँठक रूपमे पठयबा योग्य वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक सूची उपन्यासकार एहि रूपें देलनि अछि– कनिञा लए अठन्नी भरि सोनाक **कनपासा, चानीक सूति-पाति-बड़हरी, डँड़कस, बनारसी साड़ी, रेशमी बाँडिस-साबुन तेल सिन्नुर-हँठी-कुब्बी, ऐना, ककबा**[303]

चन्द्रनाथमिश्रअमरक उपन्यास **बिदागरी** उपन्यासमे वरक विदाइ कालमे प्रदत्त वेशभूषा, वरक विवाहक हेतु कनेजा माइक ओरिआओन, बरियाती लोकनिक प्रसाधनपूर्ण विन्यास आदिमे पारम्परिक वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक संग मिथिलाक संस्कार ओ पद्धतिक विशिष्ट रूपरेखा भेटि जाइत अछि यथा– वरक विदाइक अवसर पर सासुरमे प्रदत्त वस्त्रक चर्चा करैत कहल गेल अछि–

विदाइमे ज्योतिषीजीकें रेशमी **धोती** रेशमी **तौनी, किमखापक बालावर चपकन** पाँच गोट **असर्फी**, अबिती रेलक मासूल आ उग्रीकें **पाँचो टूक कपड़ा** आ पन्द्रहटाका मासिक पढ़बाक खर्च देलथिन ।[304]

वरक माइक ओरिआओनक प्रसंगमे कहल गेल अछि– एम्हर ओरिआन आरम्भ भेल, **घोघटक साड़ी**, परिछनिहारिक **साड़ी**, लोटा, थारीमे भरिकऽ चिन्नी, बाटी, **कम्मल, सतरंजी, उलेंच, गुड्डआ**, काँसाक पनबट्टीमे **सिनुरक गद्दी**, सिन्दुरदानक तामा...[305]

बरियाती लोकनिक तैयारीक वर्णनक क्रममे हुनकालोकनिक केश-विन्यास ओ **तौनी, पाग, जुत्ताक** ओरिआनक विवरण अछि– बरियातीमे गेनिहार लोक सब अपन-अपन साज-शृंगारमे भिन्न अस्तव्यस्त छलाह । नवतुरिआ सब **कानी** कटाबथि तँ बूढ़ पुरैनिञा लोक सब अपन **खिच्चड़ि मोछकें कपचा** रहल छलाह । क्यो तौनीक जोगाड़मे तँ क्यो पागक जोगारमे फिफिआइत । नवका तूर अपना अपना **जुत्तापर पालिस** पोतथि आ पुरान लोक बेर कुबेरक हेतु राखल अपन **चमरउ जुत्तामे** अंडीक तेल दऽ रहल छलाह ।[306]

कनेजाक सखीक वर्णन करैत रचनाकारक कविहृदय नायिका सौन्दर्यक यथार्थपरक चित्र एहि प्रकारें प्रस्तुत कयलक अछि–

कोबरक घर रहैक दोरुक्खा । पछुआति दिसक केबाड़ी पर थपथपाहटि सूनि पड़लनि– अकानलनि तँ चूड़ी ओ मंजीरक क्षीण ध्वनि कानसँ टकरा गेलनि । सतर्क भऽ उठलाह आ केबार फोलि देलथिन । केबाड़ फोलैत जे घरमे प्रवेश कैलक से एक नारीमूर्त्ति सोड़ह सत्तरह वयस, धनुषाकार घनगर भहुँ, ठाढ़ छुरिया नाक, पीठपर बेस पैघ दूटा केशक **जुट्टी** लटकैत, आँखिमे **काजर**, कानमे सोनक एक चमकैत गहना, कारी **ब्लाउज** ओ पीअर **छपुआ साड़ी** पहिरने, **पानसँ** रङ्ल ठोर, कपार पर छोट सन **टिकुली** साटल, पूर्णस्वस्थ शरीर, मुनचुनसँ देह दशममे बीसे, न्यून नहि, आँखिमे करुणाक अद्भुत भाव हिलकोर मारैत ।[307]

ललितक पृथ्वीपुत्रमे निम्नमध्यवर्गक वेशभूषा विन्यासक रेखांकन दृष्टिगोचर होइछ, यथा– बाँहि हाथ केश आड़ौ एकदम भीजि गेल रहइक । पटुआ पर लटकल ओसकण झहरि जाइ । माथपर, मुँह पर, केशपर **आँचर** डाँड़मे कसि नेने रहय, नूआ जाँघ धरि उठोने ।[308]

–मुदा से आइ एकरा की भेलइए । **रेशमी पटोर, छीटबला साया** नीकसन आड़ी, **छक** । **स्नो-पाउडर आलता बिन्दी** ।[309]

—मुस्कीक लहरि ठोर पर आनि बाजलि बिजली-कालिह साँझ धरि आनि दिहऽ सम्हटा चीज । **पटोर** नीक लिहऽ ललका । **आङ्गियो** रेशमी । **साया** बनले बिकाइ छइ । मेलामे देखने रहिअइ । **छीटवला**, नीचामे **पाढ़ि** लागल । **छक** लिहऽ पाथरवला । जेहन हमरा आनि देने रह । नीक चीज लिहऽ । मरकटपनी ने करिहऽ । **पटोर** बुझलहक ने । बनियाँ के **पटोर** कहबहक तऽ देतऽ ।[210]

प्रभासकुमारचौधरीक उपन्यास **हमरा लग रहब**मे वस्त्र विन्यासकेँ संक्रमित करैत आधुनिकताक चित्र एहि शब्देँ अंकित अछि– ठेहुन तक उँच **धोती** नमरि कऽ माटि पर ओंघराय लगलैक । **जोलहा जेबीवला गंजीक** बदला **मलमलक कुर्ता**, कुर्तामे **सोनाक बटन** । हाथमे **छड़ी**, पैरमे चमकैत **चप्पल** आ हाथमे दामी **घड़ी** । **चाननठोप** कनेक बेसी ध्यानसँ कयल ।[211]

हिनक **नवारम्भ** उपन्यासमे एकठाम विधवा नारीक वेशभूषा प्रसाधन निषेधक क्षिप्त वर्णन भेटैत अछि । मैथिल लोकसंस्कृतिक एहि विशिष्ट पक्षक चित्रांकनसँ वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्पराक एकगोट विशिष्ट पक्ष समुद्घाटित भेल अछि । आभूषण प्रसाधन तँ विधवाकेँ मनाही छैके, एतय धरि जे केशोकेँ छोपबा लेबाक प्रावधान कऽ देल गेल छैक, सभ्यता ओकरा नग्न रहबासँ वञ्चित करैत छैक मुदा ओकरा अंगवस्त्रोकेँ सीमांकित कऽ देल गेल छैक–

—विधवाक एहन लच्छन । एतेक **शृंगार-पटार** ! केश नहि कटौतीह । नमरि कऽ डाँड़सँ नीचा चलि गेलैक आ सौंसे पीठ पर कोना छिड़िआ लैत अछि । जकरो ने देखबाक सेहो देखैत छैक । एहन कपड़ा-लत्ता । सादे **साड़ी-आढ़ी** मुदा आढ़ी तरमे पहिरबाक कोन काज ? सेहो विधवाकेँ ? लोकक आँखिमे गड़ैत हेतैक । माँगी भऽकऽ हमरा अखरैत अछि तँ पुरुषक कोन कथा ?[212]

श्रीमतीलिलीरेक मरीचिका उपन्यासमे अभिजात्य परिवारक वेशभूषा प्रसाधनक समृद्ध शब्दावली देखल जाइछ । एहिमे एकठाम रानीजीक स्नानक वर्णन भेल अछि जाहिसँ वेश विन्यासक वर्णन भेटैत अछि– रानीजी उठिकऽ स्नानघर गेलीह । आँखि फुलल रहनि । सामचीनक कठौतमे ठंढ़ा पानि राखल छलैक । रानीजी नाक मुनि बेर बेर ओहिमे मुँह डुबओलनि, तकरा बाद गुदगर तौलियासँ मुँह झाँपि लेलनि । ओहि तौलियासँ मुँह पोछय नहि पड़ैक । मुँह पर रखैत देरी पानि सोखि लइ ओ तौलिया । **अयना**मे मुँह देखलनि । बहुत सुधरि गेल रहनि । सुगन्धित तेलसँ मुँह मलि कऽ ठंढ़ा पानिसँ मुँह धोलनि, फेर तौलियासँ सुखओलनि, महु महु **पाउडर**सँ भरल **पफ** मुह पर फेरय लगलीह । पाउडर रानीजीक मुह पर एकदम मीलि गेलनि । आँखिमे नव कऽ **काजर** कयलनि, नव ठोप सेहो कयलनि । अलमारीसँ नव **नूआ** बाहर कऽ पहिरलनि । **कुसमी** रंगमे राङल ढाकाक साड़ी । रानीजीक गौर वर्ण पर गुलाबी कान्ति आबि गेलनि । **सीकीसँ**

आँखिक कोरपर सँ **काजरक डाँड़ि** घीचि देलथिन । आँखि आओरो नमओन लागय लगलनि । रानीजी भोजन पर दिस चललीह, प्रत्येक चाप पर **पाँजेब** बाजि उठलनि– झुन-झुन ।

तदतिरिक्तो किछु विशिष्ट वर्णन द्रष्टव्य अछि– गालपर **तिलबा** बनयबाक प्रसाधनक उल्लेख एहि उपन्यास मध्य एहि स्वरूपक अछि– रानीजीक भाउजि रानीजीक गालक कोन पर काजरक डीठ लगा देलथिन । रानीजीक गोर मुँह पर कारी **तिलबा** चकचक करय लगलनि ।[213]

अन्यत्र **घघरी**, **अचकन**, **शेरवानी**, **मुरेठा**, **कलगा**, **घड़ी** आदि विविध वस्त्राभूषणक उल्लेख भेल अछि ।[214] एहिना एकठाम **आढ़ी**, **नूआ**, **कङ्ना**, **बाला**, **पाति**, **हार**, **काँट**, **छक** आदिक सविशेष उल्लेख अछि ।[215] एहि उपन्यासमे **झपटा** शब्द यद्यपि प्रयोग बहिष्कृत अछि मुदा सामन्त परिवारमे एकर उपयोग होयबाक वर्णन अछि ।[216] ई माथपर पहिरबाक कोनो नारी वस्त्र छल । एही तरहेँ **हीरा**, **मानिक**, **सोनाक काँट**, **लॉकेट**, **पटोर**, **पीताम्बर**, **गाढ़ि**, **झूना मलमल** आदिक संगहि विभिन्न प्रकारक रंग **कुसुमी**, **आसमानी**, **सुगापंखी**, **गुलाबी**, **अंगूरी**, **भाटाफूल**, **बसंती**, **चम्पइ**, **कोकटी**, **ककरेजा** आदिक वर्णन सेहो भेल अछि ।[217]

एही तरहेँ विभिन्न उपन्यासकारलोकनि वस्त्राभूषण प्रसाधनक प्रसंगात् उल्लेख अपन अपन औपन्यासिक कृतिमे करैत रहलाह अछि जकर किछु विशिष्ट दृष्टान्त मात्र एतय प्रस्तुत भेल अछि ।

नाटक ओ एकांकी साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास– नाटक ओ एकांकी साहित्य दृश्य विधा होयबाक कारणेँ आहार्य अभिनय एकर अभिन्न अंग थिक । आहार्य अभिनय वस्तुत: वेशभूषा प्रसाधनेपर अवलम्बित अछि । तथापि नाटककारक ओ एकांकीकार लोकनिक रचनामे आहार्य अभिनयक अवक्षेपणमे शिथिलता बुझना जाइछ । जेना कथा, उपन्यास आदि विधामे वेशभूषा विन्यासक विवरणक हेतु लेखक स्वतंत्र रहैत छथि आ हुनका एकर वर्णनक अवकाश भेटैत छनि, तेहन अवसर नाटककारकेँ उपलब्ध नहि रहैत छनि । नाटकमे आहार्य अभिनय वेशभूषा प्रसाधन परआधारित रहितो नाटककारकेँ एहि अभिनयक संकेत केवल पात्र परिचय,नाट्यनिर्देश ओ किंचित कथोपकथनेटामे देबाक अवसर भेटैत छनि । नाटककार द्वारा अनुक्त आहार्य अभिनयकेँ अभिनेता ओ निर्देशक पूर्ण करबाक चेष्टा करैत छथि । पात्र-परिचय, नाट्यनिर्देश ओ कथोपकथनोमे नाटककार द्वारा आहार्यक संकेत देबाक स्वतंत्रता सीमित रहैछ ।

स्वभावत: वेशभूषा प्रसाधन विन्यासकेँ बीच-विन्दु बनाय जेना कथाक रचना होइत रहल अछि तकर अत्यल्प अवसर नाटक ओ एकांकीमे देखि पड़ैछ । आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकी साहित्य वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीपर आधृत किछु नाम अवश्य भेटैत अछि यथा– **शंकरपियाक** 'कङ्ना' नाटक, रोहिणीरमणझाक 'अन्तिम

गहना' नाटक, प्रभुनारायणझाप्रदीपक 'सोहाग' नाटक, सुधांशुशेखरचौधरीक 'लेटाइत आँचर' नाटक तथा गोवन्दिझाक 'मोछसंहार' ओ लीलानन्दसिंहझाक प्रेमक सिन्दूर[218] एकांकी ।

तथापि आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकी साहित्यमे वेशभूषाप्रसाधनकेँ केन्द्रीभूत कऽ अत्यल्प रचना भेल अछि । नाटककारलोकनि आहार्य अभिनयक संकेतमे अवश्य वेशभूषा प्रसाधनक प्रति संपृक्त देखल जाइत छथि ।

आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकीमे आहार्य अभिनयक संकेतक तीन गोट आयाम देखि पड़ैछ–

(क) लेखक द्वारा निर्दिष्ट पात्र सूची

(ख) नाट्यवस्तुमे पात्रक प्रवेशक क्रममे प्रदत्त नाट्य निर्देश

(ग) कथोपकथनमे आहार्य सम्बन्धी संकेत ।

आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकीमे कतोक नाटककार नाटकक समस्त पात्रक नामावलीक संग ओकर परिचय, पारम्परिक सम्बन्ध तथा वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेख कयने रहैत छथि । एहि प्रकारक उल्लेख नाट्यारंभहिमे देखि पड़ैछ । निदर्शनक हेतु आयाची नाटकक किछु पात्रक परिचय द्रष्टव्य थिक–

1. अयाची– (प्रारम्भ मे) सांची धोती, गमछा (यात्रामे), मिरजइ, तौनी, सट्टापाग, चानन, सिन्दुर, ठोप ।
2. शंकर– (पूर्व मे) धगवा (बादमे) बचकानी धोती ।
3. महाराज– रेशमी धोती, जड़ीदार कोट, कलंगी मुरेठा ।
4. महामंत्री– धोती, चपकन, मुरेठा, चानन, ठोप ।
5. गोनू झा– धोती, गमछा, तौनी, मिरजइ, बटुआ, चानन, ठोप ।
6. लूटन झा– धोती, गोलगला गंजी, गमछा, चानन, ठोप ।[219]

शम्भुनाथझाक विभाजन नाटकमे आहार्यक संकेतक पात्र-परिचयक स्वरुप सेहो विभिन्न वयस, वर्ग ओ व्यक्तित्वक वेशभूषाप्रसाधनकेँ सुस्पष्ट कऽ रैत अछि यथा–

1. मौजेलाल– अस्सी वर्षक परम वृद्ध । मैल धोती, गोल गंजी, अङोछा परिधान । मोछ पाकल । ललाट पर एक सिन्दूरक विन्दु ।

2. प्रमदनारायण– चालिस वर्षक । अधपक्कू केश । धोती तथा गंजी मलिमूह फाटल परिधान । एक अङोछा देह पर मैल खट-खट । मोछ साफ ।[220]

चन्द्रनाथमिश्रअमरक ब्रह्मस्थान एकांकीक पात्र परिचयमे प्रत्येक पात्रक वेशभूषाक संकेत दऽ देल गेल अछि– यथा–

1. सुगिया– पचकौड़ीक स्त्री, वयस 35-36, मैल नूआ पहिरने ।
2. पचकौड़ी– वयस 40-42 गरीब बोनिहार, डोरिया गंजी आ अंगपोछा ।
3. हरिवंश बाबू– वयस 45-50, गामक मुखिया, खद्धरकधोती कुर्त्ता, टोपी, घड़ी, चश्मा

हिनका धरैया लूरि एकांकीमे पात्र परिचयमे मिथिलाक परम्परित वस्त्र ओ वेशभूषा विन्यासक स्पष्ट रूपरेखा भेटैत अछि, यथा–

विष्णुदेव– अधवयसू युवक, ठेहुन धरि धोती, गंजी, देहाती ।

विसेस्सर– अधवयसू युवक, बाबरी परसँ तेल चुबैत, हाफसर्ट, जूता ।

सुकनी– (विष्णुदेवक स्त्री) हाथमे लहठी, नाकपरसँ सिउँथ धरि सिन्दूर ।

मचनच– 65 वर्षक बूढ़, बट्ठा धोती, कान्हपर अंगपोछा, हाथमे पैना ।

नाट्यवस्तुमे प्रवेश ओ निष्क्रमणक क्रममे प्रदत्त नाट्यनिर्देश सभमे सामान्यत: प्रवेश कैनिहार पात्रक वेशभूषा प्रसाधनक संकेत निर्दिष्ट रहैछ । आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकीमे अधिकांशत: प्रारंभहिमे पात्रसूचीमे वेशभूषाप्रसाधनक परिचय देबाक परम्परा शनै: शनै: असामयिक जकाँ भेल जा रहल अछि आ अधिकांशक नाटककार ओ एकांकीकार नाट्यनिर्देशहिमे एकर नियोजन करैत देखल जाइत छथि । यथा–

प्रभुनारायणझाप्रदीपक सोहाग नाटकमे नाट्यनिर्देशक ई पाँती सभ द्रष्टव्य थिक– फरजी साड़ी, ब्लाउज, जूरा मे फूल, टिकुली, गरदनिमे चौअन्नीक छड़, चूड़ीयुक्त हाथमे किताब नेने गीत गबैत टुन्नीक प्रवेश ।[221]

घटकराजक प्रवेशपर नाटककारक निर्देश अछि– नाक धरि चानन, पाग तथा एक भाग डंटी ओ दोसर भाग डोरी बान्हल चश्मा । फराठी घुठिये तक धोती चपकन, चादरि आ हाथमे नोसिदानी आदि ।[222] एहिसँ मिथिला घटकक सामान्य वेशभूषाक आलेख भेटि जाइत अछि ।

पंडितईशनाथझाक 'चीनीक लड्डू' नाटकमे यद्यपि नाट्यनिर्देशमे वेशभूषाप्रसाधनक अत्यल्प निर्देश देखि पड़ैछ तथापि कोनो ठाम एहि प्रकारक निर्देश देखि पड़ैछ यथा– बटुआदास मिरजइ, पाग पहिरने हाथमे एक पैघ बटुआ लटकओने प्रवेश करैत छथि ।[223]

रोहिणीरमणझाक 'अन्तिम गहना' नाटकमे सेहो विभिन्न दृश्यक आरम्भमे एही प्रकारेँ नाट्य निर्देश देल गेल अछि, जाहिसँ विभिन्न पात्रक वेशभूषा प्रसाधनक संकेत भेटैत अछि ।[224]

एहि स्वरूपक नाट्यनिर्देश आधुनिक एकांकी नाटक सभमे सेहो भेटैत अछि यथा– **योगानन्दझाक 'मुनिक मतिभ्रम'** ऐतिहासिक पौराणिक एकांकीमे राजकुमारी सुकन्याक वस्त्राभूषणसँ सुसज्जित होयबाक तथा केशसज्जामे पुष्पक प्रयोग करबाक उल्लेख भेल अछि– राजमहलक एक कोठली । कतहु जयबाक हेतु राजकुमारी सुकन्या वस्त्र एवं अलंकारादिसँ सुसज्जित भए रहलि छथि । एक खूब पैघ **अएनाक** सामने ठाढ़ि भए अपन **खोपामे** एकटा फूल खोसि रहल छथि ।[325]

गोविन्दझाक मिथिलाक प्रतिनिधि एकांकीमे मैथिल नारीक पारम्परिक परिधान तथा आधुनिक अंग्रेजी सभ्यतासँ संक्रमित पुरुषक परिधान क्रमश: तारिणीदेवी ओ पी.एन. ठाकुरक प्रवेशसँ सम्बद्ध नाट्यनिर्देशमे भेटैत अछि । एहि क्रममे **नुआ कोंचा पतलून** ओ **प्रिन्सकोट** शब्दक प्रयोग भेल अछि ।[326]

सुधांशुशेखरचौधरीक 'बेलक मारल' एकांकीमे एकटा दरिद्रक वेशभूषाक संकेत एहि नाट्यनिर्देशमे भेटैछ– नरायण तीस वर्षक युवक अछि जे गोर होइतो गरीबीसँ करिया गेल अछि । ओ **मैल फाटल** मोट **हाफ** कमीज पहिरने अछि । डाँड़मे **मैल फाटल** ठेहुन धरिक धोती । माथमे गमछा बान्हल छैक । ओकर **खुटिआएल दाढ़ी, अगर बगर मोंछ** आ आँखिक कोरमे चिर दरिद्रताक कथा लिखल रहैत छैक ।[327]

एहि एकांकीमे माया नामक आधुनिकक वेशभूषाक संकेतक नाट्यनिर्देशनमे **ब्लाउज, फैंसी, टॉप्स** आदि विदेशज शब्दक सहज प्रयोग भेल अछि–युवतीक नाम माया छैक आ जे मध्यमवर्गक कन्या अछि । ओकर **वेशभूषा** मध्यम कोटिक छैक । हल्लुक **हरियर** रंगक साड़ी आ ओहीसँ मैल खाइत **ब्लाउज** । केश दू भागमे **गूथल,** पीठ पर लटकि रहल छैक आ जकर अन्तिम छोर खुजल छैक । हाथमे फैंसी **काचक चूड़ी** आ कानमे आधुनिक **टॉप्स** ।[328]

कुमारगंगानन्दसिंहक जीवनसंघर्ष एकांकीमे निम्नवर्गीय पुरुष वेशक निर्देश एहि नाट्य निर्देशमे भेटैत अछि– ओम्हर प्रसाद भरल थार लैने हरिजन स्त्रीसमुदाय आओर पाछाँ पाछाँ नचैत गाबैत हरिजन पुरुष सभक मनचनमाक नेतृत्वमे प्रवेश । मनचनमा हृष्ट पुष्ट नवयुवक, **ठेहुनधरि धोती** पहिरने अछि । माथ पर अंगपोछा बन्हने अछि, डाँड़पर बान्हल ढोलकेँ तड़ातड़ पीटि रहल अछि ।[329]

नाटक ओ एकांकीमे पात्रक प्रवेश ओ निष्क्रमणमे प्रदत्त नाट्यनिर्देशक अतिरिक्त कथोपकथनक बीचहुमे किछु नाट्यनिर्देश आहार्य अभिनयसँ सम्बद्ध भेटैत अछि । एहि प्रकारक निर्देशमे वेशभूषा प्रसाधनक सामग्री कथोपकथनक एकटा अभिन्न अंगवत नाटकमे व्यवहृत देखल जाइत अछि जकर निदर्शन एहि विभिन्न उदाहरणसँ स्पष्ट होइछ यथा– कुन्ती (सूर्यक **धोती** पकड़ि)[330]

लक्ष्मी– (**आँचरक** चाउरकेँ एक हाथ पर राखि दोसर हाथेँ आँकड़ बिछैत)[331]

चुनचुन– (झोरासँ साड़ी निकालैत) कनियाँ, हम त अहाँके लेबए लेल ऐल रही, मुदा अहाँ बहुत दूर भागल जाइ छी । हँ, ई **नुआ** अहीं लए अनने रही ई तँ नेने जाउ (कहैत साड़ी ओढ़ा दैत छथि)[332]

मैथिली नाट्य साहित्यमे आधुनिक युगक सूत्रपात कविवर **जीवनझाक** रचनावली सँ होइछ । हिनक नाट्य रचना मध्य **सामवती पुनर्जन्म, सुन्दर संयोग, नर्मदा सागर सट्टक** ओ **मैथिली सट्टक** खण्डित अंश उपलब्ध अछि । एहि नाट्य रचना सभमे कथोपकथनक माध्यमे यत्रकुत्र परिधानक वर्णन कयल गेल अछि जाहिसँ मैथिल वेशभूषा विन्यासक संक्षिप्त संकेतित दृश्य देखि पड़ैछ । खास कऽ नाटककार विदूषक, घटक ओ नायिका सौन्दर्यक वर्णनमे वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक सविशेष उल्लेख कयलनि अछि ।[333]

वसन्तक द्वारा एकगोट पदमे **गोदना** ओ **गहनाक** उल्लेख अछि–

> डाँड़ **केश ग्रीवा** कर **हार** । लोचन आनन कान कपाट ।।
> **मटका मटकी** गहना खोधा । गुरु यजमानक पूत पुरोधा ।।[334]

मिथिलाक सामान्य जनमे कतहु बाहर जाइत काल **पाग** ओ **फराठी** धारण करबाक विवृत्ति वेदमित्रक एहि उक्तिमे भेटैछ– वेदमित्र-वेश तँ ककरहु एखन कहबैको कथी लए । **पाग फराठी** अनबा लियऽ बिदा होउ ।[335]

नर्मदासागर सट्टकमे घटकक **फराठीक** माध्यमे हास्य सृष्टि कयल गेल अछि–

> ओ नैना छल परम उकाठी । उचकि पड़ायल हमर फराठी ।।[336]

बन्धुजीव ओ चपला क्रमश: **सामवती पुनर्जन्मक** नायिका सुमेधा ओ नायिका सामवतीक क्रमश: मित्र ओ सखी छथि । हिनका दूनूक उक्ति-प्रयुक्ति फकड़ामे विभिन्न प्रकारक गहना, प्रसाधन सामग्री **इत्र** (अतर) **आँचर** तथा **गोदनाक मटका मटकी** प्रभेदक उल्लेख भेल अछि–

बन्धुजीव– अलंकार कत विमुख करै छी । **बाजू सूति नवग्रह** दै छी ।।

चपला – हम नहि जानिय पञ्जा छक्का । तोड़ि पड़ायल **हार** उचक्का ।।

बन्धुजीव– भामिनि भऽ परिजनसँ फटकी । कतय खोधाओल **मटका मटकी** ।।

चपला– नयन नोर **आँचर** जँ पोछी । संशय करय पड़ोसिनि थोंछी ।।

बन्धुजीव– थाकल छलहुँ लगबितहुँ **अतर** । पीड़ा होइ अछि गतर गतर ।।[337]

एकटा तिरहुति गीतमे कानक गहना **तड़कीक** उल्लेख भेल अछि–

> श्रवण युगल झलकय पुन **तड़की** । देखि देखि उठइछ हियधड़की ।।[338]

महाकवि लालदासक 'सावित्रीसत्यवान' नाटकमे दुइ स्थलपर नारी वस्त्राभूषणक सविशेष वर्णन भेल अछि । सत्यबान द्वारा सावित्रीक प्रथमदर्शन जन्य पूर्वरागक स्थितिमे कविवर एकगोट सौन्दर्यवर्णन गीतक नियोजन कयने छथि । एहि गीतमे मध्यकालीन रचना परम्पराक पुट अछि तथा नायिकाक **केश, सिन्दुर, भृकुटि, तिलक** आदिक आलंकारिक उत्कर्ष वर्णित अछि ।[339]

पतिव्रतालोकनिक द्वारा सावित्रीकेँ बिदा करबाकाल हुनका जे धर्मोपदेश देल गेल अछि ताहमे नारी जीवनमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक धार्मिक महत्त्वक विवेचन भेल अछि– **केश बकरि, वेणी बनाय, जूड़ा बान्हि,** ललाटमे **सिन्दुर** कय, **भूषण** पहिरि गरदनि सौं स्नान कऽ स्वामीक स्मरण करैत वा दर्शन कऽ तखन अपन गृहकार्य्य सम्पन्न करथि, एहि रीति सौं सधवा स्त्री अपन नित्य कृत्य कऽ जीवन निर्वाह करथि ।

अपरा...सौभाग्यवतीस्त्री जौं स्वामीक जीवन चाहै तौं देह सौं **हरिद्रा, कुंकुम,** ललाट सौं **सिन्दुर**, नेत्रसँ **कज्जल,** बाँहिसौं **चुरिला**, हाथ सौं **लहठी, कर्णभूषण, ताम्बुल, केश बान्हब** ई सभ सौभाग्यसूचक वस्तु त्याग नहि करय ।[340]

भाग्यनारायणझाक 'पहिली तारीख' एकांकीमे अनेक प्रसंगमे आधुनिक वेशभूषा प्रसाधन जन्य संत्रासक स्थितिकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि– शरद–पत्नी छथिन **फैशनेबुल**। हुनका सभसँ कम दामक **साड़ी** पसिन्न नहि पड़ैत छनि । कहियो **गोल्डेन चेन** के माङ्ग तँ कहियो फल्लाँ वस्तुक । जखने अभाव भेलैक कि बजरल झगड़ा ।[341]

जीवन– पहिने अहाँक लेल **चेन** कीनल जयतैक, तखन जे होयतैक से देखल जयतैक ।

रूपा– नहि, अहाँक **पैंट मसकि** गेल अछि, तेँ पहिने अहाँक **पैंटक कपड़ा** ।

जीवन– नहि, पहिने अहाँक लेल चे... ?[342]

एहि तरहेँ आधुनिक मैथिली नाटक ओ एकांकी साहित्यमे वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक संकेतित उल्लेखक विभिन्न चरणमे नाट्यनिर्देश, पात्र सूची कथोपकथन, नाम ओ विषय दृष्टिगोचर होइछ ।

निबन्ध ओ छिटफुट रचनामे वेशभूषाप्रसाधन विन्यास– मैथिली निबन्ध साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासकेँ केन्द्रीकृत कऽ यद्यपि परिमाणमे थोड़े रचना भेल अछि मुदा यावन्तो रचना भेल अछि तकरा देखलासँ स्पष्ट होइछ जे एहि क्षेत्रकेँ सर्वथा अस्पृष्ट नहि छोड़ल गेल अछि । निबन्धकारलोकनि वेशभूषाप्रसाधनकेँ विषय बनाय विवरणात्मक, गवेषणात्मक, परिचायत्मक निबन्धक संगहि व्यंग्यात्मक ओ ललित निबन्धक रचना करैत रहलाह अछि । एहि निबन्ध सभमे मैथिल वेशभूषाप्रसाधनक सामाजिक परिप्रेक्ष्य युगसन्दर्भमे ओहिमे होइत परिवर्तन, पारम्परिकता ओ उपयोगिता आदिक परिचय भेटैत

अछि । व्यंग्यात्मक ओ ललित निबन्धमे वेशभूषाप्रसाधनक शब्दावलीक माध्यमे सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक जगतक विकृतिक उद्घाटन कयल गेल अछि ।

मिथिला सुमति समागम शीर्षक ललित निबन्धमे **पं.चन्द्रशेखरझा** मिथिलाक अनेकानेक कुरीति जेना पुत्री विक्रय प्रथा, हरिसिंहदेवी प्रथा, बेकारी, अशिक्षा, अनमेल विवाह आदिपर व्यंग्य-वक्रोक्तिपूर्ण प्रहार कयने छथि । एहिमे मिथिलाक सनतानसँ चल अबैत गौरवमय इतिहास ओ आधुनिक जीवनमे परिव्याप्त पतनोन्मुख स्थितिक विवेचन भेल अछि । निबन्धकार एहिठामक **इसखी** पुरुष वर्गक वेशविन्यासपर तीक्ष्ण व्यंग्य कयलनि अछि आ अंग्रेजी सभ्यताक अन्धानुकरणक प्रति सेहो अपन असहमति प्रकट कयलनि अछि । सुमति ओ मिथिलाक वार्त्तालापक माध्यमे अभिव्यक्त निबन्धकारक मत मिथिलाक द्वारा ओकर अधोगतिक वर्णन सभसँ स्फुट भेल अछि । आधुनिक युवकलोकनिक परिधानक सम्बन्धमे विवरण दैत मिथिला द्वारा कहाओल गेल अछि–

मिथिला– एतबहिसँ अगुतैलीह ? कनेक एहि महात्मालोकनिक ध्यान तँ सुनह ।
बट्टा लगौने **चिकने** चुऔने **सिन्दूर** कैने सिरपान खैने
जूता विलैंती **कोरदार धोती** तौनी **गुलाबी चूड़ि** बेहिसाबी ।।
वैसथ **पाटी** सिर केश नीकेँ **अनन्तडोरा गहना** बनाकेँ ।
वाराङ्गनाकेँ लजबैत बाबूकेँ देखि चिन्ता न रहैछ काबू ।।
मुसर सन देखै छी हाथमे **डेबहत्थी**, कुकुर निकल लै क्यौ संग लाठी पचहत्थी ।
मनु हरिसिंहदेवी किर्त्तिरूपी मृगी कें, सभमिलि खयताहे मारिकें खूब नीकें ।।
कोटबूट पतलून पहिरने घड़ी **छड़ी** चमकौने, **नक्टाइ** लै नाक कटौने चुरुट फूकि मुँह बौने ।[343]

एहि तरहेँ एहि निबन्धमे मिथिलाक आधुनिक पुरुष परिधानक ओ फैसनक विशद् वर्णन भेटैत अछि ।

डा.गङ्गानाथझाक निबन्ध **अधोगतिमे** मिथिलाक अधोगति ओ उर्द्धवगतिक समय सापेक्ष विवेचन भेल अछि । एहि निबन्धमे वेशभूषामे होइत परिवर्त्तनक आधारकेँ मिथिलाक उर्द्धगतित्वक प्रमाणस्वरूप उपस्थापित कयल गेल अछि । निबन्धकार कहलनि अछि जे– 'धनक प्रसंग दुगोट दृष्टान्त पर्याप्त होएत । पचास वर्ष पूर्व देशक जमींदार लोकनिक प्रसंग ई उपहास–प्रसिद्ध छलनि जे जमींदारक लक्षण दु गोट-एक तँ ई जे जतय जाथि **दोशाला** बिना नहि जाथि आ दोसर ऋणग्रस्त होथि । आइकाल्हि बहुत कम मैथिल जमींदार होएताह जनिकामे ई लक्षण पूर्णरूपेँ घटत । सामान्य जनतामे जे उत्तम श्रेणीक सज्जन रहथि से प्राय: अपनहि हाथक बान्हल **पाग** ओ एकटा **दोपटा** एतबे पहिरब पर्याप्त बूझथि । सर्वत्र इएह वेष (ड्रेस) रहन्हि । आइ एहिसँ अतिरिक्त एक **फतुही** वा **बनिआनि** ताहिपर एक **कमीज** ओ तहुपरि एकटा **कोट** वा **अचकन** । पूर्व पागक दाम एक टाका,

दौपटाक प्राय: आठ आना । जँ बड़े आडम्बर अपेक्षित होइन्ह तँ एकटा **मिरजइ खुटिआ** प्राय: आठ आना वा बारह आनामे तैयार होइक । सब मिला कऽ तीन टाकासँ अधिक नहि । आब तँ तीन टाका कमीज ओ कोटक प्राय: सिआइयेमे लगैत छन्हि ।

छोट वा गरीब लोक अधिकांश **विष्ठी** पहिरय । जँ किछु निकेँ भेल तँ चारि हाथक एकटा तौनी पहिरब पर्याप्त बुझए । आब देहातमे धोतीपरसँ एकटा **बनिआनि** वा **गञ्जी** प्राय: देखबै करबैक ।[344]

मैथिल वेश भूषाक पारम्परिक सामग्री संकलन ओ विवेचन-विश्लेषणक सुसंगठित क्रमबद्ध ओ वैज्ञानिक स्वरुप **डा.उमेशमिश्रक** प्रसिद्ध ग्रंथ **मैथिल संस्कृति ओ सभ्यतामे** भेटैत अछि । एहि ग्रन्थमे मिथिलाक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक ओ सांस्कृतिक पक्षक विशिष्ट तत्व सभक अत्यन्त गंभीरतापूर्वक विवेचन कयल गेल अछि । एहि विवेचनक एकगोट महत्त्वपूर्ण परिच्छेद अछि **वेश-भूषा** जाहिमे मैथिल वेश-भूषा विन्यासक अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण भेल अछि । एहि विश्लेषणमे मैथिल वेशभूषाक प्राचीन परिपाटीक अत्यन्त प्रामाणिक ओ स्वानुभूत विवरण भेटैत अछि । बहुत रास एहनो विवरण भेटैत अछि जे आधुनिक युगक सामाजिक सन्दर्भक परिप्रेक्ष्यमे सर्वथा अमान्य भऽ गेल अछि । तथापि मैथिल वेश भूषाक पारम्परिक स्वरूप, संक्रमणक संवर्द्धमानता तथा तद्जन्य शब्दावलीक अर्थ निर्वचनमे हिनक ई ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय अछि ।

निबन्धकार **धोती** ओ **साड़ी** पहिरबाक मिथिलाक विशिष्ट परिपाटीक सेहो सविशेष विवरण देलनि अछि । एहि क्रममे **साँची, खूँट, बट्ठा, कोँचा, आँचर** आदि शब्दक व्याख्या भऽ गेल अछि ।[345]

मिथिलाक आभूषण परम्पराक उल्लेख करैत निबन्धकार किछु विशिष्ट लोकप्रिय आभूषण ओ तकर प्रयोगक विश्लेषण कयलनि अछि । निबन्धकाकरक विवरण अछि जे– 'चेतने पुरुषक हेतु एकमात्र आभूषण थिक सोन, चानी वा तामक **औंठी** ओ पवित्रताक चिन्ह थिक । कहलो गेल अछि– अशून्यं तु करं कुर्यात् सुवर्ण रजतैः कुशैः । कर्णवेधक अनन्तर उपनयनक पश्चातो किछु दिनधरि कानमे **कुण्डल** ओ क्वचित हाथमे **मट्ठा**, ब्राह्मण, क्षत्रिय ओ वैश्य केर बालक पहिरैत छथि । उपनयनक समयमे **काड़ा, यन्त्र, चक्कुठा, मेखला, हार** आदि अनेक सोन ओ चानीक आभूषण बालको सभ विभवानुसार पहिरैत छथि । सधवा स्त्रीलोकनक हेतु तऽ आभूषण वास्तवमे स्वाभाविके थिक । जकरा जेहन विभव रहलैक से तेहन ओ ततेक आभूषण पहिरैत छथि । पएरमे सोनाक आभूषण पहिरब अनुचित मानल जाइत अछि । पूर्वमे लाहक **लहठी शंखक चूड़ीक** संग-संग-स्त्रीलोकनि पहिरैत छलीह । एखनहुँ शुभकार्यमे सएह नियम अछि । परन्तु क्रमशः **काँचक** ओ **सोनक चूड़ी** किछु दिन पहिरैत छथि । सोलकन्हिकेँ जे भेटलैक सएह पहिरि लेलक । सन्तानोत्पत्तिक अनन्तर ब्राह्मणीलोकनि प्राय: पएरक आभूषण नहि पहिरैत छथि ।[346]

एहि तरहेँ हिनक एहि निबन्ध ग्रंथमे मिथिलाक वेशभूषाक प्रामाणिक अभिलेख भेटैत अछि तथा ई कतोक विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावलीक अर्थ निर्वचनमे सहायक सिद्ध होइछ । मिथिलाक पारम्परिक वेशभूषा प्रसाधनक सम्बन्धमे हिनक ई विवरण एकटा प्रामाणिक अभिलेखक रूपमे स्मरण कयल जा सकैछ ।

मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यास पर गवेषणात्मक निबन्धक विशिष्ट शृंखला **राजेश्वरझाक** छनि । ई अपन निबन्ध सभमे वेशभूषा प्रसाधनक क्षेत्रमे प्रचलित विशिष्ट आभरण सभक पारम्परिक विन्यासक ऐतिहासिक रूपरेखा प्रस्तुत कयलनि अछि । **मिथिलामे व्यवहृत आभरण**[347] शीर्षक निबन्धमे लोकप्रचलित गहना सभक क्रमबद्ध विश्लेषण भेल अछि । **डाँड़क आभरणक परम्परा**[348]मे कटिक विविध आभूषण ओ ओकर उपयोग प्रयोगक विवेचन तथा अनुसन्धानमूलक विश्लेषण भेल अछि । **औंठीक परम्परा**[349] निबन्धमे आङुरमे धारण करबाक मुद्राक स्वरूप ओ इतिहासपर प्रकाश देल गेल अछि । **कानक गहना**[350] शीर्षक निबन्धमे कर्णाभूषणक विविध प्रभेदक विवेचन भेल अछि ।

वेशभूषापर आधारित हिनक विशिष्ट निबन्ध अछि **मिथिलाक वेशभूषामे धार्मिक तथ्यक समावेश** ।[351] एहि निबन्धमे मिथिलाक विशिष्ट परिधान यथा पाग डोपटा आदि धारण करबाक परिपाटीक धार्मिक दृष्टिकोणपर विवेचन कयल गेल अछि । विद्वान निबन्धकार मिथिलामे तन्त्रक आधारपर एहि सभक वेशभूषापर प्रभाव-परिसरक विवेचन एहि निबन्धमे मूलतः कयलनि अछि आ मिथिलाक सांस्कृतिक ओ धार्मिक जीवन तथा वेशभूषापर तकर प्रभावक परिचय देलनि अछि ।

मिथिलामे केशविन्यासक अपन विशिष्टता रहल अछि । एहि विशिष्टता सभक मैथिल सन्दर्भकेँ **राजेश्वरझा** अपन **शृंगारिक प्रसाधनमे केश-विन्यास**[352] शीर्षक निबन्धमे रूपायित कयलनि अछि । **मिथिलामे अलताक व्यवहार**[353] तथा **मिथिलामे मेहदीक परम्परा**[354] हिनक प्रसाधन विन्यासक गवेषणासँ सम्बद्ध अन्य उत्तम कोटिक निबन्ध सभ थिक ।

एहि तरहेँ **स्व.झाक** निबन्ध सभ वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक मैथिल परम्पराकेँ उद्घाटित करबाक क्षेत्रमे विशिष्ट अनुसन्धान मूलक निबन्ध सभ थिक । एहि क्षेत्रमे हिनक एहि विशिष्ट प्रयासक कारणेँ हिनका एहि क्षेत्रमे मार्गदर्शक कार्य करबाक श्रेय देल जा सकैछ छनि । यद्यपि हिनक मार्ग पर चलिकऽ आनो अनेकानेक निबन्ध सभ प्रणीत भेल जाहिमे किछु उल्लेखनीय अछि यथा– **श्रीरामेश्वरचौधरीशास्त्रीक मिथिलामे काजरक प्रचलन**[355] तथा **कमलआनन्दक आधुनिक शृंगार प्रसाधन**[356] आदि ।

एकर अतिरिक्त मैथिली वेशभूषा प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध अनेक छिटफुट निबन्ध सभ दृष्टिगोचर होइत अछि । एहिमे **डा.वीरेन्द्रमल्लिक** तथा **श्रीसतीशचन्द्रझाक** निबन्धमे साहित्यिक आधारपर मैथिल वेशभूषा प्रसाधनक विवेचन भेल अछि । **डा.वीरेन्द्र**

मल्लिकक निबन्धक शीर्षक अछि– **विद्यापतिक नायिकाक वस्त्र एवं आभूषण** ।[357] एहिमे विद्यापति पदावलीमे वर्णित वेषभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक शब्दश:प्रयोगपर विचार कयल गेल अछि । **श्रीसतीशचन्द्रझाक** निबन्ध **मिथिलाक परम्परागत वस्त्राभूषण**[358]मे वस्त्राभूषणक विवेचनक आधार **वर्णरत्नाकर** अछि ।

उमानाथझाक निबन्ध **मैथिलक बदलैत परिधान**[359]मे मिथिलाक पारम्परिक वस्त्र विन्यास ओ ओहिमे होइत संक्रमणक चर्चा करैत **अंगा, अंगरखा, तौनी, डेढ़पट्टी, भूण्डी** (**भूड़ी**), **बग, मिरजइ, चपकन** (अचकन), **खुटिया** (खुटिया मिर्जइ), **धोकरी** (जेबी), **गौंती, फल्गु, साठा पाग, कोदिलाक पाग, फूलपएण्ट, फाँड़, सूट, अँचरा, घघरी, चोली, पटोर, ब्लाउज, शमीज, मिनी, मिडी, मैक्सी, मुरेठा** आदि शब्दावलीकें समेटल गेल अछि ।

दयाशंकरमिश्रक 'मिथिलाक कसीदा परम्परा'[360] निबन्धमे एहिठाम वस्त्रपर चित्रांकन तथा **सुजनी बनयबाक** परम्पराक उपयोगी सामग्री संकलित अछि । वस्त्रविन्यासक मैथिल परम्परामे कलाकारिताक समावेश एहि निबन्धसँ स्फुट होइत अछि । मैथिलवस्त्र चित्रांकनक दिशामे **डा.उपेन्द्रठाकुरक** स्वतंत्र पोथी **मिथिला चित्रकला**[361] कलापक्षक परिचयात्मक ग्रन्थ कहल जा सकैछ ।

वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक हेतु विशिष्ट ओ लोकप्रचलित शब्द थिक **फैसन** । विभिन्न कालमे वेशभूषाप्रसाधनमे जाहि वस्तुक अधिकाधिक लोकग्राह्यता देखि पड़ैछ से तत्कालीन फैसन मध्य परिगणित होइछ । फैसनकें परिलक्षित कऽ प्रणीत अनेकानेक निबन्ध दृष्टिपथपर अबैत अछि जाहिमे **कृष्णदेव मैथिलीपुत्रक आधुनिक फैसन**[362], **धनचक्रक फैसन**[363] आदि उल्लेखनीय अछि । केशप्रसाधनपर आधारित **गंगानन्दक केश**[364] तथा नारी हस्तप्रसाधनक विशिष्ट सामग्री लहठीक आधार सामग्री लाहक उत्पादन ओ प्रकार भेदक परिचयात्मक निबन्ध **अरविन्दप्रसादसिंहक लाह जकर लहठी बनैछ**[365] सेहो सविशेष उल्लेखनीय अछि ।

मुखप्रसाधन मध्य पानक विशिष्ट महत्त्व मिथिला मध्य रहल अछि । स्वभावत: पानकें केन्द्रविन्दु बनाय विभिन्न प्रकारक निबन्ध रचना होइत रहल अछि । पानक विभिन्न प्रकार भेद लोकाचार ओ संस्कारमे लोककथा ओ लोकगीतमे पानक उल्लेख, मिथिलामे पानक महत्त्व आदिकें एहि निबन्ध सभमे ललित शैलीमे व्याख्यात कयल गेल अछि । एहि प्रकारक निबन्धमे **रामदेवझाक प्रकृतिक दुलरैतिन बेटी : नागवल्ली**[366] **रामेश्वरचौधरी शास्त्रीक पानक उपयोगिता**[367] तथा **लक्ष्मीकान्तझाक** निबन्ध **ताम्बूल**[368] विशिष्ट कोटिक कहल जा सकैछ ।

वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक शब्दावली तथा एहिपर आधारित उक्ति लोकोक्तिकें विषय बनाय व्यंग्यात्मक ओ ललित निबन्धक रचना सेहो होइत रहल अछि । एहि प्रकारक

निबन्धकें सामाजिक जगतक कतोक विद्रुपक परिहार करबाक लेखकीय प्रयास कहल जा सकैछ । **अमरनाथझाक इड़बड़ी बियाह कनपट्टी सिनूर** ।[369] **आब चप्पल नहि राखब**[370] आदि निबन्धकें एहि कोटि मध्य राखल जा सकैछ । एहि प्रकारक निबन्धमे वेशभूषाप्रसाधन सामग्रीक शब्दावलीक केवल प्रतीकार्थ प्रयोग कयल गेल अछि ।

वेशभूषा प्रसाधन विन्यासपर **इशदत्तझाक** विशिष्ट निबन्ध **वेशभूषा**[371] यद्यपि हिन्दी भाषामे रचित अछि तथापि मिथिलाक परिवेशक विशिष्ट सन्दर्भमे प्रणीत होयबाक कारणें तथा मिथिलांकमे प्रकाशित होयबाक कारणें ई प्रसिद्ध अछि । **गणपतिमिश्र वस्त्रधारणक सिद्धान्त**[372] शीर्षक निबन्धक रचना कयने छथि ।

एतावता कहल जा सकैछ जे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक सामग्रीकें आधार बनाय विभिन्न प्रकारक निबन्धक रचना होइत रहल अछि । एहि निबन्ध रचना ओ अन्य रचनाक माध्यमे पारम्परिक वस्त्राभूषणक परिचयात्मक आलेख भेटैत अछि, ऐतिहासिक रूपरेखा ओ सामाजिक जीवनमे स्थानक आकलन भेटैत अछि तथा एकर शब्दावलीमे होइत अगत ओ लोपमान शब्दक संक्रमणीयताक विवरण भेटैत अछि ।

लोकसाहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यास– लोकसाहित्यमे लोक जीवनक भावानुभाव, आचार व्यवहारक सहज ओ अकृत्रिम अभिव्यंजना रहैछ । लोकजीवन ओ लोकसंस्कृति अपन समस्त आरोह अवरोहक संग एहिमे अभिव्यक्त होइछ । स्वभावत: मैथिली लोक साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक अविकल वर्णन भेटैत अछि ।

लोकसाहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णनसँ लोकजीवनमे सर्वप्रिय ओ अधिक लोकप्रिय वेशभूषा, प्रसाधनक अभिज्ञान तँ होइतहि अछि संगहि अवसर विशेष पर प्रचलित, वर्ग विशेषमे प्रचलित वेशभूषा विन्यासक सेहो परिचय भेटैत अछि ।

ओना तँ लोकसाहित्यमे वस्त्र, आभूषण ओ प्रसाधन तीनूसँ सम्बद्ध शब्दावलीक उपयोग यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होइछ मुदा ताहूमे आभूषणक शब्दावलीक अधिक प्रयोग भेल अछि । मैथिली लोक साहित्यक अत्यन्त समृद्ध विधा थिक लोकगीत । लोकगीतमे वस्त्राभूषण प्रसाधनक पर्याप्त उल्लेख देखि पड़ैछ । सोहर, खेलौना, डहकन, बटगवनी, महेशवाणी, चैतावर, फागु, ग्वालरी, झुम्मरि आदि विविध संस्कर गीत ओ लोकगीतमे वर्ण्यक अनुरोधें वस्त्राभूषण प्रसाधनक उल्लेख यत्र तत्र भेटैत अछि ।

सोहर मैथिली लोकगीतक एहन विधा थिक जे शिशुक जन्मक अवसरपर गाओल जाइत अछि । एहिमे प्रथिनीक कष्ट ओ पुत्रजन्मक द्वारा ताहिसँ उबरबाक उल्लासक वर्णन रहैछ । लोकजगतमे नारीकें मातृत्व प्राप्तिसँ पूर्व धरि पारिवारिक प्रतिष्ठा नहि भेटि पबैत छैक । मुदा पुत्र फल पबैत देरी ओकर मान सम्मानमे वृद्धि भऽ जाइछ, ओकर आशा-आकांक्षाक पूर्ति आवश्यक बूझल जाइत छैक । एकटा सोहर लोकगीतमे तेमनिआ नामक गहना

विशेषक हेतु आकांक्षा राखयवाली नारीक ओहि आकांक्षाक पूर्ति पुत्रजन्मक पश्चाते संभव देखाओल गेल अछि । **तेमनिआ**कें प्रतीक बनाय एहिमे नारीक आभूषणक प्रति व्यामोह एवं पुत्रफल प्राप्ति जन्य सम्मानवृद्धिक लोकसत्यकें अभिव्यक्त कयल गेल अछि–

पलंगा सुतल मोर पिया कि पिया सँ अरज करू रे ।
ललनारे, हमरा के साथ तेमनिआ **तेमनिआ** हम पहिरब रे ।।[373]

एकटा अन्य सोहरमे पुत्रजन्मोत्सवक अवसरपर कृष्णजन्मकें प्रतीक बनाय दगरिनकें बधैया देबाक वर्णन भेल अछि आ एहिमे अनेक वस्त्राभूषण सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि, यथा **हँसुली**, **पीताम्बर**, **गलेहार**, **नकबेसरि** इत्यादि–

नन्द हमर यशोदा रानी अति गुन आगरि रे ।
ललनारे, छिलि दे कन्हैया केर नार गरा देब **हँसुली** रे ।
लेब मे पीयर **पीताम्बर** यशोदा **गलेहार** लेब रे ।
ललनारे, लेब मे चढ़बाक घोड़ा नाक केर **बेसरि** रे ।[374]

सोहर गीतक एकटा उपभेद होइत अछि खेलओना । खेलओना सेहो सोहरेक शैलीमे रहैत अछि मुदा एहि गीतक विशिष्टता ई रहैत छैक जे एहिमे भाइक ओहिठाम पुत्रजन्मक अवसरपर बहिनिक आगमन आ अनेक प्रकारक दान प्राप्त करबाक प्रयत्न, भाइक बहिनक प्रति अनुराग तथा भौजाइक-ननदिक बीच हास-परिहासमय सुमधुर सम्बन्धक झलक रहैत अछि । ननदि द्वारा विभिन्न प्रकारक वस्त्राभूषण प्राप्त करबाक मनोभिलाषा तथा भौजाइ द्वारा अपन सम्पत्तिक संरक्षणक प्रति सतर्कता पूर्वक दान देबासँ अवडेरब एहि गीतक उपजीव्य रहैछ । स्वभावत: एहि प्रकारक गीतमे वस्त्राभूषणसँ सम्बद्ध विविध शब्दक बहुश: प्रयोग भेटैत अछि ।

एकटा खेलौना गीतमे भाउजि द्वारा पुत्र जन्मोत्सवक अवसर उपस्थित भेलापर ननदिक द्वारा **बेसरि** इनाम करबाक आकांक्षा तथा पछाति भाउजि एहि इनाम देबासँ बचबाक प्रयत्नक रूपमे **बेसरि** नुका लेबाक वर्णन एहि प्रकार अछि–

ननदि भौजी मिलि गप्प करू आरो मिनति कर रे ।
भौजो हे, जब जनमत नन्दलाल **बेसरिया** हम इनाम लेब रे ।
एक पहर बीतल दोसर पहर आओर तेसर पहर रे
ललनारे तब जनमल नन्दलाल कि ननदो बधैया मांगू हे ।
नाकसँ **बेसरिया** निकालि आँचर तर झाँपिलेलनि हे ।
ननदोहे, करह लकड़ियाके इजोत **बेसरिया** मोर हेराय गेलै हे ।।[375]

एकटा खेलौनामे भाउजिकें सोहर सुनाय ननदि द्वारा दान प्राप्त करबाक आकांक्षाक

वर्णन भेल अछि । मुदा भाउजि ई कहि कऽ अपन विविध गहना देबाक हेतु तैयार नहि होइत छथि किएक तँ ओ सभटा हुनका अपन पैतृकसँ प्राप्त भेल रहैत छनि । एहि तरहें ननदि भाउजिक पारस्परिक परिहास ओ लोकजीवनक सत्य उद्घाटित भेल अछि आ एहि क्रममे **पटोर** नामक वस्त्र ओ **बेसर** नामक आभूषणक उल्लेख भेल अछि–

सुनु वचन अहाँ पिया हे मन गुंजे के हार
बहिन त मांगे इनाम हे मन गुंजे के हार
तेरे सन्दुक मे **पटोर** रे मन गुंजे के हार
द' दिअनु बहिन के दान रे मन गुंजे के हार
पटोर त देल मोर बाबाके मन गुंजे के हार
कोखिया त' भेल मोर धिया है मन गुंजे क हार
तेरे सन्दुक मे **बेसरि** रे, मन गुंजे के हार ।[376]

भाइक ओतय पुत्र जन्मोत्सवपर बहिन जखन जाइत छथि तँ परम्परानुसार अपन भातिजक हेतु वस्त्राभूषण लऽ जाइत छथि । तथापि एहि बधैयाक अवसरपर सामान्यत: हुनका ई आश्वस्ति रहिते छनि जे विदाइ भेलापर लागत मूल्यसँ कतोक गुण बेशी विदाइ भेटबे करतनि । मुदा अनेक अवसरपर एहन नहिओ भऽ पबैत छैक आ ननदिकें घाटा सेहो उठबय पड़ैत छैक । मैथिल परम्पराक अनुरूप एहि तथ्यकें ध्यानमे राखि ननदि ओ भाउजक परिहासक माध्यमे नेनाकें जन्मक अवसरपर दातव्य वस्त्राभूषण सामग्रीक तथा ननदिकें दातव्य दानक वस्त्रादिक उल्लेख भेल अछि–

भैया घरमे बेटा भेलनि बधैया मांगऽ ऐली हो लाल
सोना **खड़ाम** चढ़ि भैया ऐला की की बहिन हमर लैली हो लाल
सोना केर हम **मट्ठा** अनलौं रूपा केर हम **काढ़ा** हो लाल
रेशमी केर हम **अंगा** अनलौं **फुलवर जड़ी टोपी** हो लाल
पचासक बदला सए ल'क' जैती **रेशमी साड़ी** पहिरैबनि हो लाल
भानसक'क' भौजी ऐली खादी **साड़ी** पहिरैबनि हो लाल
सयक बदला पचास ल'क' जयती मूड़ोमे डाँड़ लगतनि हो लाल[377]

एकटा खेलौना गीतमे ननदिक दान प्राप्त करबाक आकांक्षाक अपरिमितताक वर्णन करैत वेश भूषाक विविध शब्दावलीकें समेटि लेल गेल अछि । एहि क्रममे साड़ीक विभिन्न प्रभेद **सुती**, **ऊली**, **गजी सिल्क** तथा आभूषणक विभिन्न प्रभेद **बाली**, **झुमका** लाकेटक उल्लेख भेल अछि ।

दूर ई कैलों की जंजाल ननदि के आनि बैसलौं, विपति बड़ भारी ननदो छथि सवारी

ओ सूती साड़ी नहि उलीयो के नहि पुछली, इच्छा छनि गजी चिक्क लितौं खरिदाइ
ओ बाली नहि पहिरती आ झुमका के नहि पुछती, इच्छा छनि लाकेट लितौं गढ़ाइ[378]

एकगोट अन्य गीतमे **तरकी**, **नकबेसरि** ओ पैरक **छाराक** उल्लेख भेल अछि–

हम लेब कानक **तरकी** किनार **नकबेसरि** रे ।
ललना भइयाजीसँ लेब चरणक **छारा** हँसइते घर जाएब रे ।[379]

एकटा अन्य खेलौना गीतमे **चुनरी**, **शंखा चूड़ि** ओ **कङ्न** एहि तीन वेशभूषाक सामग्रीक उल्लेख संगहि ननदि-भाउजिक उत्कृष्ट नोंक झोंकक वर्णन भेल अछि–

अपने तउ जाइछी प्रभु देशवा आओर विदेशवा जाइछी रे ।
ललनारे, हम धनि अउरि पसारि कि हमरा लय किए आनब रे ।
माए लए लायब **चुनरिया** कि बहिन लय **शंखा चूड़ि** रे
ललनारे धनि लय लायब **कङ्नमा** कङ्नमा बड़ सुन्दर रे ।
फाटि जयतै **लालीचुनरिया** कि फुटि जयतै **शंखा चूड़ि** रे ।
ललनारे, जुगे-जुगे रहतइ **कङनमा** कङनमा बड़ सुन्दर रे ।
पहिरि ओढ़िए भौजो ठाढ़ भेली ननदी सिहाबथि रे ।
ललनारे होइतैमे भैया के होरिलवा **कङ्न** हम इनाम लेब रे ।
एक पहर बीतल दोसर पहर आओरो तेसर पहर रे
ललनारे तेसरे मे जनमल नन्दलाल **कङ्नमा** हम इनाम लेब रे ।
पलङा सुतल तोहें पुतहू कि तोहें दुलरइतिनि रे ।
ललनारे दय दिअ हाथ के **कङ्नमा** कङ्नमा बड़ सुन्दर रे ।
नकलेस त बरू हम द' देबनि **लाकेट** लगाय देबनि हे ।
ललनारे नहिजे देबनि हाथक **कङ्नमा** कङ्नमा बड़ सुन्दर रे ।
जुअबा खेलैते तोहे भैय्या कि भैया सँ मिनति करू हे ।
ललनारे तोरे धनि कबुलल **कङनमा** कङनमा हम इनाम लेबरे ।
कहाँ गेली किए भेली धनी की अहूँ दुलरइतिनि रे ।
ललनारे दय दिअ' हाथमे **कङ्नमा** बहिन मोर पाहुन रे ।
पाजेब त बरू हम द देबनि **बाज** लगा देबनि रे ।
ललनारे, नहिजे देबनि हाथके **कङनमा** कङनमा बड़ सुन्दर रे ।
जुनि कानू जुनि खीजू बहिनो की अहाँ मोर पाहुन रे ।
ललनारे, कयलेब दोसर विवाह **कङ्न** हम इनाम देब रे ।
जखन सुनल मोर भाउज सुनिओ ने पाओल रे ।
ललनारे, हाथसँ फेकल **कङ्नमा** सउतिन जर लागल रे ।[380]

एकटा खेलौनामे सासु ननदि ओ गोतनीक लेल आपकताक अनुरूप वस्त्र प्रदान करबाक क्रममे तीनू गोटेक हेतु प्रदातव्य साड़ीक तीन प्रभेदक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि । साड़ीक विभिन्न प्रभेद **फरजी**, **खादी** ओ **जरजेट** एहि लोकगीतमे वर्णित अछि–

सासु लए **फरजी** ननदि लए **खादी**, गोतनी लए **जरजेट** मँगाउ, हमारे घर लाला भयो ।[381]

बच्चाक जन्मक छठम दिन छठिहार नामक लोककृत्य होइछ– एहि दिन नवजात शिशुकेँ उढ़ारल जाइत छैक आ एहू अवसर पर ननदिकेँ भाउजसँ बधैयाक रूपमे कपड़ा **गहना** भेटैत छैक । एहू पद्धतिक कतोक गीतमे वेश भूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग देखि पड़ैछ । नेनाकेँ **आँजबाक** प्रसाधन तथा बधैयाक रूपमे गहनाक वर्णन एहि गीतमे भेल अछि–

आबथु ननदो गाबथु गोसाउनीक गीत सोहाओन रे ।
ललना बैसथु सोइरी घर भतिजबा खेलाबथु रे ।
ओगरि पोगरि ननदो बैसलि आँखि नहि **आँजथि** रे
ललना लेब मे हाथक **कङ्नमा** तखन हम आँजब रे ।
घर पछुअरबामे सोनरा तोँही मोरा हित बसु रे ।
ललना गढ़ि दे हाथक **कंगनमा** बहिन पहिरायब रे ।[382]

मूड़नक एक गोट गीतमे भातिजक मूड़नक अवसर पर गहना कपड़ा आदि अनबाक संकेत देखि पड़ैछ । एहि क्रममे नेनाक वेशभूषा प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध अनेक शब्द यथा **काड़ा**, **मट्ठा**, **करपैड़ी**, **फुदना**, **अंगा**, **टोपी** आदिक प्रयोग भेल अछि–

लाल बच्चा के मूड़न छलनि, तैँ हम नैहर अयलौं हो लाल ।
सोना के जे **काड़ा मट्ठा**, रूपा के **करपैड़ी** हो लाल ।
खासा मलमल के **अंगा टोपी**, चौसठलागल **फुदनिञा** हो लाल ॥
सोना खराम चढ़ि भैया भौजो सँ पुछथिन, की की बहिनो लयली हो लाल ॥
कासा पितरके काड़ा मट्ठा, लोहा के करपैरी हो लाल ॥
कारी **कम्मल** के अंगा ओ **टोपी**, दुइ चारि लागल **फुदनिञा** हो लाल ॥[383]

मूड़नमे नेनाकेँ तथा बिआहमे कन्याकेँ उढ़ारल जयबाक प्रथा छैक । एहिसँ सम्बद्ध गीत सभमे प्रसाधन विन्यासक मैथिल परम्पराक एक गोट विशिष्ट तत्व दृष्टिगोचर

होइछ । **तेल**, **फुलेल**, **कषाय**, **उबटन** आदि शब्दावली एहि प्रकारक गीतमे प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध भेटैछ यथा–

कोने बाबा कटोरा बेसाहल, ओ जे भरल **फुलेल तेल** हे ।
कोनो बाबी **कसाय** पिसाओल, बासन केशरि दए हे ।[384]
गोरी गोरी बहिना सिया के, पीले पीले **चुड़िया** हे, सुकुमारि सिया के ।
धीरे धीरे उबटन लगाउ हे, सुकुमारि सिया के ।[385]
सुन्दर सियाजी के होइ छैन **पसाहनि**, देखि देखि नयना जुड़ाइ हे ।
किनका के हाथ मे तेल नरायन, किनका के हाथ **कसाइ** हे ।
किनका के हाथमे सब रङ पटिया, के **उड़ारथि** आङ हे ।
अम्मा के हाथ मे **तेल** नारायन, चाची के हाथ **कसाइ** हे ।
पीसी के हाथ मे सब रङ पटिया, बहिन **उड़ारथि** आङ हे ।[386]
सुन्दर सियाजी के सुन्दर बदनमा, सुने सहेलिया हे सुन्दर केस बन्हायब
उपटन तेल लय अंग **उड़ारब**, सुनु सहेलिया हे नैन विच **काजर** लगायब
सुन्दर **गहना** लय सिया के सजाएब, सुनु सहेलिया हे मंगल गान गबायब[387]

उपनयनक एक गोट गीतमे बरुआक हेतु आवश्यक सामग्री सभ यथा **मृगछाल**, **पलासदंड**, **भुजक डोरा** आदिक वर्णन भेटैत अछि । आदिम संस्कृतिक वस्त्र विन्यासक एकटा अत्यन्त सुन्दर चित्र एहि गीतमे दृष्टिगोचर होइछ–

जाहि वन सिकियो ने डोलय बाघिन दहारथु रे ।
ललना ताहि वन पइसलनि कोनो बाबू आँगुर धयने कोन बरुआ रे ।
पहिले जे मारलनि मिरिगवा **मृगछाला** चाहिय रे ।
ललना तब जाय तोरलनि पलसवा **पलासदंड** चाहिय रे
ललना तब जाय चिरलनि **मुजेलिया** मुजेलि डाँरा चाहिये रे
कहाँ शोभइन बाबू के मिरिगवा **मिरिगछाला** चाहिय रे
ललना कहां शोभइन बाबू के भुजेलिया **भुजेलडाँरा** चाहिय रे
ललना कान्हे शोभइन बाबू के मिरिगवा **मृगछाला** चाहिय रे
ललना डाँड़ शोभइन बाबू के मिरिगवा **मृगछाला** चाहिय रे
ललना डाँड़ शोभइन बाबूके भुजेलिया **भुजेलडाँरा** चाहिय रे
ललना हाथ शोभइन बाबू के पलसवा **पलाशदंड** चाहिय रे ।[388]

उपनयनेक एकटा अन्य गीतमे पंडितकें* परिहासपूर्वक विविध वस्त्र देबाक उल्लेख भेल अछि । एहि क्रममे पुरुष वस्त्रविन्यासक **धोती**, **तौनी** ओ **गमछा** शब्दक

प्रयोग भेल अछि–

धोती देलियनि **तौनी** देलियनि गेला अङ्ना ।
एकटा **गमछा** लय करै छथि खेखना ।।[389]

पुत्री लग्नक गीतमे क्षिप्त प्रसंगें* तिलक दहेज प्रथाक संकेत देल गेल अछि आ एहिमे कतोक ठाम वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावली उल्लेख भेल अछि जेना–

लक्ष्मी बेटी कुमारियो बाबा नओलाख माङ्य दहेजयो ।
नओ लाख एसरि नओलाख **बेसरि** बओलाख माङ्य धेनु गाययो ।
कमल हँसय पुरैनि बिहुँसय सरोवर मारए हिलकोर यो ।
ताहि पैसी नहायब बाबा सुखायब नामी नामी **केस** यो ।[390]
कथिए खेलौं बाबा कथिए पहिरलौं कथीलए भेलौं जीबकालयो ।
खीर जे खेलों बाबा **चीर** पहिरलौं **सिन्दुर** लय गेलौं जीवकालयो ।
पहिल दान बेटी तिल कुश **चन्दन** दोसर कान दुनू **सोन** यो ।
तेसर दान बेटी **साल दोसाला** चारिम गाय महींस यो ।[391]

एहि प्रभेदक कतोक गीतमे वर, द्वारा विभिन्न प्रकारक वस्त्राभूषण प्रसाधन सामग्री मङबाक तथा वरकें* ओ सभ वस्तु प्रदान करबाक वर्णन सेहो भेटैत अछि जेना–

वर की माँगे, **सोने** के अउँठी **रुमाल** माँगे ।
वर **चन्दनमे रोली** लगाय माँगे । वर की माँगे
वर **सिकड़ी** माँगे, वर **सिकड़ीमे कड़ी** लगाय माँगे ।[392]
जरीक टोपीमे रूपा लगे, पहिरू त रामजी देखब भरि नजरी
सोने के **कुण्डलमे मोती** जरे, पहिरू त रामजी देखब भरि नजरी
इतरक पानिमे **चन्दन** घिसे, करू त रामजी देखब भरि नजरी[393]

विवाहमे सिन्दूरदान एकगोट विशिष्ट व्यवहार मानल जाइत अछि । वर कन्याकें* प्रथम बेर सिन्दूर प्रदान करैत अछि जे जीवन भरि ओकर संबल बनल रहि जाइत छैक । सिन्दूरदानक गीतमे सामान्यतः ओहि परिवेशक वर्णन रहैछ जाहिमे ई विध कयल जाइछ । स्वभावतः कन्याक वस्त्राभूषणसँ सज्जित रहबाक कारण ओहिसँ सम्बद्ध शब्दावलीक सविशेष प्रयोग एहि प्रकारक गीतमे दृष्टिगोचर होइछ–

एखन समय अति सुन्दर बितैये हे मृगनैनी सीता ।
आबि गेल सिन्दुर केर बेर हे मृगनैनी सीता ।
सोलहो श्रृंगार नव वस्त्र पहिरौलनि हे मृगनैनी सीता ।
केस देलनि **जुटिया गुहाह** हे मृगनैनी सीता ।[394]

सिन्दूरदानकाल सखीलोकनि द्वारा वरसँ हास परिहासक क्रममे कन्याक परिधान आभूषण आदिक सविशेष चर्चासँ सम्बद्ध एकटा गीतक स्वरूप एना भेटैत अछि–

सुन्दर वर यौ **सिन्दुर** धीरेसँ करियौ । शुभक बेर यौ **सिन्दुर** धीरेसँ करियौ ।
हमरो सीता दाइके कानोमे **बाली** । सुन्दर वर यौ **बाली** चोरी ने करियौ ।
हमरो सीता दाइके माँगोपर **टीका** । सुन्दर वर यौ **टीका** चोरी ने करियौ ।
हमरो सीतादाइके हाथे **अँगूठी** सुन्दर वर यौ **औंठी** चोरी ने करियौ ।[395]

विआहक बाद स्वकीया नायिका ओ परिणीत नायकक प्रथम मिलनक आवासकेँ कोबरघर कहल जाइछ । कोबरक साज सज्जासँ सम्बद्ध गीत सभमे सेहो कनिञाक विभिन्न वस्त्राभूषणक वर्णन भेटैछ । नायक नायिका प्रसाधनमे सेज पर पुष्प देबाक सविशेष वर्णन एहि गीतमे भेटैत अछि यथा–

घर पछुअरबा लंग केर गछिया लंग चुबए आधी राति हे ।
लंग के चुनि सेजिया ओछाओल **सबरंग फूल छिरिआइ** हे ।
लाल रंग कोबर पीयर रंग हे मोरा गुलाब रंग कोबर ।
ताहीमे ओछेलनि सासु सब रंग पटिया
बेली फूल देल छिरिआइहे मोरा गुलाब रंगकोबर ।[396]
देबौमे देबौ धनी हाथके **मुनरिया**
आओरो देबौ **गिरमलहार** हे मोरा गुलाबरंग कोबर ।[397]

चतुर्थीक एकगोट गीतमे गौरीक माध्यमे परिणीताक उत्साहक वर्णनक क्रममे ओकर वेशभूषा विन्यासक अनेक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि– **गहना, फुदना, बजना, छारा** आदि–

आज चतुर्थी शुभ अवसर थिक । गौरीदाइ चमकै छथि कोना ।
चमकि चमकि जे काज करै छथि **बाजै** छनि **गहना** ।
गौरीदाइ चमकै छथि कोना ।
लाल नूआ जे **पहिरन** छनि ताहि लागल **फुदना**
गौरीदाइ चमकै छथि कोना ।
छारा पहिरथि **छारा** पहिरथि ताहि लागल **बजना**
गौरीदाइ चमकै छथि कोना ।
प्राणनाथ पलंगे पर बैसल मोहर मुँहबजना ।
गौरीदाइ चमकै छथि कोना ।[398]

मैथिली लोकगीतक डहकन प्रभेदमे विवाहक अवसरपर वर, वरियाती, समधि इत्यादिकेँ गारि पढ़बाक विवृति भेटैत छैक । वस्तुतः ई गीत वैवाहिक प्रसंगकेँ सरस बनयबामे तथा नव सम्बन्धकेँ सुदृढ़ बनयबामे सहायक होइत अछि । ई गीत यद्यपि शब्दावली प्रयोगमे अधिकांशठाम ग्राम्यत्व दोषसँ पूर्ण रहबाक कारण वीभत्स लगैछ तथापि प्रकरणक मानसिकतामे ई परिवेशक निर्माणक हेतु सहज होइछ । एहि प्रकारहुक गीतमे अनेकठाम वस्त्राभूषण विन्यासक वर्णन देखि पड़ैछ । आधुनिक प्रसाधन सामग्री **स्नो, पाउडर**, तथा आधुनिक वस्त्र **ब्लाउज चेस्टर, साया** आदिक प्रयोग एहि गीतमे द्रष्टव्य अछि–

किनका के पान सन पातर दूनू ठोर गे नया जवानीक जोर गे ना ।
हम त **स्नो** देलियौ कीन तू त **पौडर** लेलय कीन
कनी छूब' दहीन पाडर वला गाल गे नया जवानीक जोर गे ना ।
हम त **ब्लाउज** देलियौ कीन तू त **चेस्टर** लेलए कीन
कनी छूब दहिन चेस्टर वला सुगना गे नया जवानीक जोर गे ना ।
हम त' **साड़ी** देलियौ कीन तू त **साया** लेलय कीन
कनी देख दहिन साया तरके चान गे नया जवानीक जोर गे ना ।[399]

जुट्टी, अतर, लटझारी, लहठी, चौपेतलसाड़ी, पटंबर आदि एहिना **टिकुली** शब्दक प्रयोग एहि गीतसभमे द्रष्टव्य थिक ।

पांच रुपैया समधी करजा काढ़लनि **टिकुली** लयलनि गढ़ाय हो लाल
टिकुली जे सटलनि समधिन **पटबर** फारलनि चलि भेली गंगा स्नान हो लाल ।[400]
पीयरे रंग **साड़िया** पहिरलनि से फल्ला समधिन बाट चलल झटकारि हो लाल ।
रंग बिरंग के छिनरो **जुटिया** गुहओलनि **अतर** लेल गमकाय हो लाल ।[401]
साड़ी छै रसदारी हे **चौपेतल साड़ी** साड़ी हे मजेदारी हे चौपेतल साड़ी
सेहो साड़ी पहिरयु समधिन छिनरो पहिर चलल **लटझारी** हे चौपेतल साड़ी ।[402]
चलही सोनपुरके मेलागे छिनरो चलही सोनपुर के मेला
चूरी पहिरेलकौ **लहठी** पहिरेलकौ घर बहियाँ झिकझोरी गे छिनरो
चलही सोनपुरके मेला ।[403]

डहकनक एकटा गीतमे युवावस्थाजन्य नारी शृंगार प्रसाधनक प्रति कनक औत्सुक्यक वर्णन भेल अछि आ विविध प्रकारक गहना ओ अत्याधुनिक वस्त्र ग्रहण करबाक ओकर आशा आकांक्षाकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु अनेक प्रकारक आधुनिक वस्त्राभूषणक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि यथा **बाली**, पासा, झुमका, सूती, ऊनी, **सिल्क** आदि–

फल्लां छिनरियागे तोहर जवानी भागलपुर मे शोर ।
जब छिनरो भेली आठ बरिसके बाली पासाने सोहाय ।
ऊपरसँ माँगए झुमका टीका ई घर रहय की जाय ।
जब छिनरो भेली चौदह बरसको सूती उली ने सोहाय
उपरसँ मांगए सिल्कक साड़ी ई घर रहय की जाय ।[404]

एकटा डहकनमे आधुनिक प्रसाधन साबुनसँ देह साफ करबाक तथा तौलियासँ देह पोछबाक वर्णन भेल अछि–

पासा सात साबुन लऽ कऽ दौड़ल अबथिन फल्लां भैया
आए भालरि मुनि कऽ सफैया हेतनि हे भालरि मुनि कऽ
सातटा तौलिया नेने दौड़ल अबथिन फल्ला भैया
आइ भालरि भूनि कऽ रगड़ि कऽ पोछबनि हे भालरि मूनिक[405]

एकटा डहकनमे वस्त्राभूषणक हेतु परिहासक योग्या नारीकेँ देह व्यापारमे संलग्न कहल गेल अछि तथा साया-साड़ी ओ बाली-झुमका शब्दक प्रयोग भेल अछि–

उगय उगय इजोरिया राति छिनरो कतय गेली ।
गेलीमे गेली छिनरो दर्जीया दोकानमा बगलमे जा कऽ सूति रहली ।
साया साड़ीसँ देह देलकनि भरि, भोरे उठिक चलि अयली ।
गेलीमे गेली सोनरा दोकान, बगलमे जा कऽ सूति रहली ।
बाली झुमकासँ कान देलकनि भरि भोरे उठि कऽ चलि अयली ।[406]

समदाउनि ओ उदासी मैथिली लोकगीतक करुणापूर्ण भावविन्यस्त गीत अछि । जमाय ओ बेटीक विदाइक अवसरपर गेय एहि गीत सभमे कन्या जीवनक परकीयता जन्य वियोग दुःखक वर्णन रहैछ । एहू गीत प्रभेदमे कन्या वस्त्राभूषणसँ सम्बद्ध शब्दावलीक यत्र-तत्र प्रयोग वर्णन भेल अछि । एहि प्रभेदक एकटा गीतमे सासुर जाइत बेटीक अत्यन्त मर्मभेदी करुणाक वर्णन भेल अछि । नैहरमे बेटी माता-पिताक दुलरैतिन रहैत अछि । ओकरा स्नेहक अतिशयता भेटैत छैक । कुलक मर्यादा होयबाक कारण पितामह ओकरा बहुत जोगाकऽ रखैत छथि । लोकगीतकार कन्याकेँ पितामहक पगड़ीक फेंच कहि ओकर पितृगृहक प्रतिष्ठाक द्योतक स्मारक बनाय देलनि अछि–

जब डाँड़ी चलल उतर राज देश बाबा मन पड़ि गेल हे माइ
बाबा मोरा रखितथि पगड़ीक फेंच जकाँ अब डाँड़ी जायत ससुर देश राज ।[407]

संगहि पितृकुलक एहि प्रतिष्ठाकेँ पिताक धोतीक फेंच कहल गेल अछि जे

ओकरा जोगाकऽ रखबाक तथा सभ्यताक संरक्षिकाक स्वरूपमे उपस्थापित करैछ–

जब डाँड़ी चलल पूब राज, बाबू मन पड़िए गेल
बाबू मोरा रखितथि धोतीक फेंच जकाँ, अब डाँड़ी जायत ससुर देश राज ।[408]

एकटा समदाउनि गीतमे धियाकेँ सिन्दूरक कारणेँ विरान कहल गेल अछि । सिन्दूरक कारणेँ कन्याकेँ माता पिताक राजसँ दूर जाय पड़ैत छैक आ माता पिताक विरह सहय पड़ैत छैक । एहि लोकजीवनक सत्यकेँ उद्घाटित करैत लोकगीतकार सिन्दूरक ई महत्ता देखौलनि अछि जे दूटा नव युगलकेँ एक दिस जँ सन्धि करैत अछि तँ दोसर दिस कन्याकेँ नैहरक परिवारसँ पृथक करबाक सेहो कारण बनैछ–

किए जे खयलहुँ बेटी किए पहिरलहुँ, कथी लए भेलहुँ वीरान ।
खीर जे खयलहुँ बाबा चीर पहिरलहुँ, सिन्दुर लय भेलहुँ विरान ।।[409]

भाइक द्विरागमन भेलाक बाद जखन हुनक कनिञा अबैत छथि आ भाइ कोबर घर जाय चाहैत छथि तँ बहिन द्वारा कोबर घरक दुआरि छेंकाइक विधि होइत अछि । एहि अवसरपर बहिन द्वारा भाइसँ वस्त्राभूषण मँगबाक प्रथा अछि । एहि गीतमे सेहो आभूषण विन्याससँ सम्बद्ध कङना, पाँजेब ओ हँसुली शब्दावलीक प्रयोग भेटैत अछि–

भैया भौजीसँ करियौ विचार रुपेया हम नहिने लेबै, कागजक रूपैया उठि पुठि जेतै
कङना त' रहतै निशान रुपैया हम नहियें लेबै, कागजक रुपैया उठि पुठि जेतै
पाँजेब त' रहैत निशान रुपैया हम नहिञे लेबै, कागजक रुपैया त उठि पुठि जेतै
हँसुली त' रहतै निशान रुपैया हम नहिञे लेबै ।[410]

एही तरहेँ बियाहसँ द्विरागमन पर्यन्त विभिन्न अवसरपर जे लोकगीत सभ मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित अछि ताहि सबमे प्रसंगानुसार वस्त्राभूषण विन्याससँ सम्बद्ध शब्दावली प्रचुर संख्यामे प्रयुक्त भेटैत अछि । मधुश्रावणी ओ गौरीपूजाक अनेक गीतमे सेहो परिणीताक वस्त्र, आभूषणक शब्दावलीक बाहुल्य दृष्टिगोचर होइछ आ वेशभूषा विन्यासक परिचय भेटैछ जेना–

लालहि वन हम जायब फूल लोढ़ब हे ।
माइहे सिन्दुर भरल सोहाग, बलमु संग गौरी पूजब हे ।
कारी वन हम जायब फूल लोढ़ब हे ।
माइ हे काजर भरल सोहाग, बलमु संग गौरी पूजब हे ।
उज्जर वन हम जायब फूल लोढ़ब हे
माइ हे शांखहि भरल सोहाग, बलमु संग गौरी पूजब हे ।[411]

गौरी पूजाक एकगोट गीतमे **सिन्दूर** ओ **वस्त्रक** तीन गोट प्रभेद क्रमशः **मोटिया**, **पीपा**, **अचीन** तथा लाल, पीअर, पटोरक वर्णन भेल अछि–

तीन सिन्दुर लय गौरी पूजल **मोटिया पीपा अचीनयो** ।
तीन वस्त्र लय गौरी पूजल लाल पीयर **पटोर** यो ।[412]

एकगोट पावनिक गीतमे एहन नायिकाक मधुश्रावणी, वटसावित्री आदि पूजनक चित्रांकन भेल अछि जकरा सासुरसँ एहि अवसरपर परिधान, आभूषण आदि नहि आबि सकलैक अछि। परिणामतः कन्याक नैहरक लोक समधिनकेँ परिहासपूर्वक गारि पढ़ैत छथि । एहि लोकगीतमे कन्याक सासुरक लोकक जिम्मेवारी, मिथिलाक व्यवहार पक्ष तथा वस्त्राभूषणक अत्यन्त उत्कृष्ट समंजन द्वारा लोकगीतकार वेशभूषा प्रसाधन प्रणालीक विवरण प्रस्तुत भेल अछि–

हमरा धियाके पावनि बिति गेल, ओझा माए किछु ने पठेलनि हे ।
घर पछुआरबामे बसनि कपड़िया, ओकरे सँ नेह जोड़ितथि हे ।
ओतहि दितनि **साया साड़ी**, हमरा धियालय पठबितथि हे ।
घर पछुअरबामे वसनि लहेरिया, ओकरेसँ नेह जोड़ितथि हे ।
ओहे दितनि **जोड़ो लहठी**, अपना पुतहु लय पठबितथि हे ।
घर पछुअरबामे सिन्दुरिया रइया, ओकरेसँ प्रीत बढ़बितथि हे ।
डिब्बे डिब्बे दितनि **सेनूर**, धियो लय किछु त पठावितथि हे ।[413]

एकर अतिरिक्त मैथिली लोकगीतक विभिन्न प्रभेद फागु, चैतावर, चौमास, छमासा, बारहमासा, तिरहुत, वटगवनी, ग्वालीरी, झूमर, ब्राह्मणक गीत, महेशवानी आदिमे सेहो वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक प्रयोग भेटैत अछि ।

फागु मैथिली लोकगीतक विशिष्ट प्रकार थिक जे श्रीपंचमीसँ फाल्गुनी पूर्णिमा धरि गाओल जाइत अछि । एहिमे लोकजीवनक आनन्दक वर्णन रहैत अछि । एहि वर्णनमे नारी वस्त्राभूषणक ओहन प्रभेदक खासक' आश्रय लेल गेल अछि जे पुरुषक आकर्षणक विशिष्ट केन्द्र रहल अछि जेना **नकबेसर**, **गोदना**, **बाजू**, **बिजओठा**, **चुचकसना** इत्यादि–

नकबेसर कागा ले भागा सइयाँ अभागा ना जागा
गोरी कहमा गोदउली **गोदना** पिया के पलंग पर रोदना ।[414]
बँहियां गोदउली छाती गोदउली बाकी रहल दूनू यौवना
ननदो अयलन्हि पाहुन अङना एहि ननदो के किछु पहिरन चाहियनि
बाजू बिजओठा चुचकसना[415]
फूललोढ़य गेली सुन्नरि रंग होरी ओ ब्रज होरी **बेसरि** लटकल डारि
कानय लगली खीजय लगली सुन्नरि रंगहोरी ओ के देत **बेसरि** उतारि ।[416]

चैतावर चैत मासमे गेय लोकगीतक प्रभेद अछि । एकरो अपन विशिष्ट शैली छैक जाहिमे 'हो रामा' ध्रुवपद जकाँ लागल रहैत छैक । लोकजीवनक संयोग ओ विरह शृंगारक वर्णनमे सम्बद्ध एहि गीत सभमे सेहो वेश भूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख भेल अछि । एकटा चैतावरमे **चुनरीमे छपाइ** करयबाक **चोलीमे मोती** लगयबाक तथा ओछाओन पर फूल छिटबाक वर्णन एहि स्वरूपक अछि–

चैत मास **चुनरी छपा** देह हो रामा चुनरी छपा देह ।
चुनरी छपा देह **चोलिया सिया** देह
बन्दे बन्दे मोतिया लगा देह हो रामा चुनरी छपा देह
चुनरी छपा देह पलङा ओछा देह
फूल **छिड़िआ** देह **कलिया** हो रामा चुनरी छपा देह ।[417]

चौमासा, छमासा ओ बारहमासामे जाहि जाहि मासक वर्णन रहैछ तकर किछु विशिष्टताक सेहो वर्णन रहैछ । संयोग ओ विरह शृंगारक ई लोकगीत प्रभेद सेहो लोकजीवनक दर्शन करबैछ आ नायिकाक विविध चेष्टाक अनुकीर्त्तनसँ सम्बन्ध देखि पड़ैछ । नायिकाक परिधान ओ आभूषणक परिवेश विशेषक परिणतिक चित्रण सेहो एहि लोकगीत सभमे उपनिबद्ध देखि पड़ैछ जाहिमे लोकजीवनमे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधनक संकेत भेटैत अछि, यथा–

चानन रगड़ि सुवासल सखि हे **गाँथल चम्पाकलीहार** समलिया ।
चोलीबन्द चीर उरेहल सखि हे सुखक मास अषाढ़ समलिया ।
अगहन हे सखि ठाढ़ भेल अङना पहिरल **दक्षिणक चीर** समलिया ।
इहो **चीर** देल बालमु हमरो जीवथुलाख बरीस समलिया ।[418]
कातिक शंकर भस्म त्यागल कैल गंगा स्नान यो ।
रगड़ि चन्दन अगरलेपल भेल सुन्दर रूप यो ।।[419]
जेठ हे सखि तेल चंदन पंक लेप शरीरयो ।
बिन नाथ चंदन शीतलादिक धधकि जारत देह यो ।[420]
पूस सीरक भरायब माघमे पियाके ओढ़ायब
फागुन छोड़बै अतर गुलाल गे, करबै हम बिहार गे ।[421]

मैथिली लोगीतक विशिष्ट प्रभेद झुम्मरिमे प्रेम ओ प्रणयक अति गंभीर चित्रांकन भेल अछि । सहज भाव विन्यास एहि गीतक विशिष्ट गुण होइछ । दाम्पत्य जीवनक नोंक झोंक, राग अनुराग ओ विरहापन्न प्रवत्स्यत्पतिका छटपटाहटि एहि गीतमे मुखर देखि पड़ैछ । 'एकटा झुम्मरिमे नायिका अपन वस्त्रविन्यास ओ प्रसाधन द्वारा प्रवासी पतिकेँ

लोकसंस्कृतिक अनुरूप पत्राचार करैत चित्रित भेलीह अछि–

कथिए फारिए कोरा कागज गे सजनी, कथिए **काजर** मसिहान गे सजनी
अँचरा फारिए कोरा कागज गे सजनी, नयना **काजर** मसिहान गे सजनी ।[422]

एकटा झुम्मरिमे लोकगीतकार बालविवाहक सामाजिक प्रथाक विरुद्ध क्रूर प्रहार कयलनि अछि । **सिकरी** किनबाक हेतु प्रस्तुत एकटा नायिका ओ सोनारक मध्य उत्तर प्रत्युत्तर शैलीमे ग्रथित एहि झूमरमे लोकजीवनक आचारक विसंगतिकेँ स्फुट कयल गेल अछि आ एहि क्रममे नायिकाक प्रिय आभूषण **सिकरीक** उल्लेख भेल अछि–

एक ओरि बिके रामा दही चूड़ा चिनिया
त एक ओरि हे राम बिके सोनेक **सिकरिया**
त एक ओरि हे राम अपना महल सौं निकलल सुन्दरिया
त करू सोनरा राम करू **सिकरीके** मोलवा
त करू सोनरा राम
तोरा से न होयतौ सुन्दरि **सिकरीके** मोलवा
त भेज दिअउन हे सुन्दरि अपन ससुरजीके
हमरो ससुरजी ते राजाके नोकरिया त हुनि कि जनता हे सोनरा,
सिकरीके मोलवा[423]

एकटा झुम्मरिमे नवपरिणीता द्वारा पतिसँ प्राप्तव्य गहना सभक परिकल्पना ओ आकांक्षाक वर्णन भेल अछि आ एहि माध्यमे अनेकानेक वस्त्र, आभूषण ओ प्रसाधनक शब्दावली यथा **बाजूबन्द, चूड़ी, टिकुली, फुदना** आदिक अनुगुम्फन भेल अछि यथा–

केहि लयता **बाजूबन्द** केहि लयता **चूरिया** से केहि लयता हे
रंग बेंदुल **टिकुलिया** से केहि लयता हे ।
नव जाली **फुदेनमा** से केहि लयता हे ।
बाबा लयता **बाजूबन्द** भैया लयता **चूरिया** से सैंया लयता हे
रंग बेदुल **टिकुलिया** से सैंया लयता हे
नव जाली **फुदेनमा** से भैया लयता हे ।[424]

एकटा झुम्मरिमे आगतपतिका नायिकाक मानसोल्लासक वर्णनक क्रममे पुरुष परिधान **चद्दरि** तथा खड़ामक उल्लेख एहि प्रकारेँ अछि–

जब पिया एलै गामक सड़क बिच, फटकी सँ झलकै **चदरिया** हे सुनु हे सखिया ।
जब पिया एलै अपना महल बिच, बाज' लगलै झुनकी **खड़मुआँ** हे, सुनु हे सखिया ।[425]

एकटा अन्य झुम्मरिमे ग्राहिका नायिका ओ सोनारक नोंक-झोंकक वर्णन अछि आ सोनार द्वारा गढ़बायोग्य अनेक गहनाक शब्दावलीक व्यवहार भेल अछि यथा **जड़सन, काड़ा, बुलकी, नथिया, छाड़ा कंगना** इत्यादि–

सोनरा नहि गढ़ि देलकइ **गहना** हमर गे करइ छइ रगड़ गे ना ।
एकर कनि देखहीन चतुराइ पहिने लय लेलक गढ़ाइ
ओ त पड़ा क$ गेलइ, दरभंगा शहर गे, करइ छइ रगड़ गे ना ।
कहलिअइ गढ़ि दे **जड़सन कारा** आरो **बुलकी नथिया छाड़ा**
हड़बड़ मे क देलकइ **कंगना** नम्हर गे करइ छइ रगड़ गे ना ।[426]

मिथिलाक लोकजीवनमे स्त्रीगणक शृंगार मध्य **गोदनाक** नीक प्रचलन रहल अछि । गोदना गोदैत काल अंगमे दर्दक निवारणार्थ खोधपाड़नी द्वारा गीत गुनगुनाइत रहबाक परम्परा छल । खोधा / गोदनासँ सम्बद्ध झुम्मरि सभमे लोकजीवनक अनेक प्रेम प्रसंगक चित्रण होइत रहल अछि । एकटा झुम्मरिमे तँ नायिका गोदना प्रसाधनक हेतु खोधपाड़नीक संग भागि कऽ ओकर सिरकीपर चल जाइत छथि आ पति जखन घर घुमैत छथि आ अपन नायिकाकेँ नहि देखैत छथि तँ माइक कहलापर पत्नीक उदेसेँ खोधपाड़नीक ओतय जाय, दान बक्सीस दऽ पत्नीकेँ गोदना गोदवा लबैत छथि । गोदनागीत ई स्पष्ट करैत अछि जे एहि प्रसाधन विशेषण प्रति जनसामान्यमे अतिशय अनुराग रहलैक अछि–

उत्तर दक्खिन सँ अयलइ नटिनिआ रे जान ।
जान बइसि गेलइ चनना बिरिछिया रे जान ।।
झिहिरि झिहिरि बसय शीतल बतसिया रे जान ।
जान घरसँ बहार भेली सुंदरी पुतोहुआ रे जान ।।
निहुरि निहुरि झारय नामी नामी **केशिया** रे जान ।
जान पड़ि गेल नटिन मुख दिठिया रे जान ।।
मचिया बैसल सासु बरइतिन रे जान ।
जान दिअ सासु कोसल कउरिया रे जान ।
हर फार जोति अयला प्रभु पइसल अंगनमा रे जान ।
जान बइसि गेल देहरि झमाय रे जान ।।
सबके तिरिअवा अमा देखियै अंगनमा रे जान ।
जान हमर तिरिया कतय चलि गेली रे जान ।।
तोहर तिरिया **गोदना** विरोगल रे जान ।
जान चलि गेल नटवा सिरिकिया रे जान ।।

पोस् अम्मा झिलमिल सतुआ रे जान ।
जान हम जाएब धनिक उदेसबा रे जान ।।
एक कोस गेला प्रभु दोसर कोस गेला रे जान ।
जान तेसर कोस नटवा सिरिकिया रे जान ।।
कतय गेली किए भेली नटिनी रे जान ।
जान सुन्दरी जोगे गोदना गोदह रे जान ।।
गोदना गोदाइ भइया किये देब दनमा रे जान ।
जान गोदना गोदाद छोट सरहोजिये रे जान ।।[427]

ग्वालरी मैथिली लोकगीतक एकगोट विशिष्ट शैली थिक । एहिमे श्रीकृष्ण लीलाक व्रजक परिवेशमे चित्रांकन भेल अछि– केवल एकर संगीत शैली ओ भाषा तथा रचनापद्धति मिथिला मैथिलीक थिकैक । एहि लोकगीतमे अनेकठाम श्रीकृष्णक वेशभूषाक चित्र भेटैत अछि, यथा–

दउड़ल आबथि ढीठ कान्हा हाथ शोभए बाँसुरी
बाँह शोभइन्हि **बाजूबन्द** चरण **मेंहदी** लाल री ।
गरा शोभइन्हि **यंत्रिमाला** होठ शोभइन्हि बाँसुरी
हाथ शोभइन्हि लाल **छड़िया** तनिको ने कान्ह डेराथु री ।

तिरहुति लोकगीतमे स्वाभाविकता, सरलता, प्रेमपरकता ओ उच्च भावक विन्यास द्वारा मानवजीवनक कामोपासनाक नैसर्गिक मनोभावक चित्र भेटैत अछि । एहू प्रकृतिक लोकगीतमे अनेकठाम वेशभूषा प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध वर्णन सभ भेटैत अछि जेना–

पटना जाए बेसाहब **परिधन** पहिराएब धनि हाथे ।
भूषण गुहल धिआ धरि **आँचर** पहिरायल धरि माथे ।।
काशी सौं **कंगना** धिया आनल दछिनचीर मदरासे ।
हार मँगायब **नूपुर** मणिमय कुमरि पुरत तुअ आसे ।।[428]

साड़ीक विभिन्न प्रभाग **खोइछा**, **फाँफर** तथा विभिन्न प्रसाधन सामग्री जेना **दर्पण**, **ककबा**, **मिसिया**, **कामी सिन्दूर**, **काजर** आदिक बटगवनी गीतमे प्रयोग भेल अछि–

लौंगक गाछ रोपत भेल सजनी गे, फल फुल लुबुधल डारि
खोइछा भरि तोड़ल **फाँफर** भरि सजनी गे, सेज भरि देल छिरिआय
फुलक गमक पहु जागल सजनी गे, उठि पहु घूरत सजनी गे
की सब लाओत सन्देश, **दर्पण ककबा मिसिया** सजनीगे **सिनुरा कामि** विशेष

ओहि **ककबा** केश बकरब सजनी गे रचि रचि करब श्रृंगार ।
लय **दर्पण** मुख हेरब सजनी गे मिसिया सिनुराधारे ।[429]
फूजल केश नीर बहु सजनी गे **काजर** गेल दहाय सजनी गे
कंगन बसन भार भेल सजनी गे यौवन भेल उतफाल सजनी गे[430]

मिथिलाक व्यवहारपक्षक गीत ब्राह्मणक गीतमे ब्राह्मणक माध्यमे पुरुष परिधानक उल्लेख अनेकठाम दृष्टिगोचर होइछ । ब्राह्मणक स्वरूपक परिकल्पनामे सेहो लोकगीतकार मिथिलाक विशिष्ट परिधान **पाग** ओ **कोकटी वस्त्रकें** अवडेरि नहि सकलाह अछि । अधोवस्त्रमे **धोती** ओ उपरिवस्त्र मे **तानीकें** धारण कयने मैथिल ब्राह्मणक रूप परिकल्पित अछि–

–**पगिया** तोर **घुमेलिया** हो ब्राह्मण **धोतिया कोकटी** पुरान ।
घोड़बा तोहर बछेड़बा हो ब्राह्मण चलि भेला गंगा असलान ।।[431]
–कीर्त्तन बजय अनघोल यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू
लाले ओ **धोतिया** ब्राह्मण **लाले तौलिया** यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू
सेहो लय अहाँ के **पहिरायब** यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।[432]

महेशवाणी ओ नचारी गीतमे सेहो शिव ओ शिवपरिवारक वर्णन तथा परिवेश विशेषमे मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि । एहि दृष्टिए एकटा नचारी अत्यन्त प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय भेल अछि जाहिमे शिवकें विभिन्न सापक धारण करबाक कारणें हुनक विभिन्न आभूषणकें विभिन्न सापहिमे परिगणित कराओल गेल अछि । एहि क्रममे आभूषणक **कारा**, **छारा**, **पहुँची**, **जइसन**, **मुनरी**, **मनटीका** आदिक उल्लेख अछि–

शिवछथि लागल दुआरी हे बहिना शिव छथि लागल दुआरी ।
हरहाराके **काड़ा छाड़ा** पहुँची पनियादरारी हे बहिना ।
ढोढ़क **जइसन** सुगाके **मुनरी मनटीका** मनियारी हे बहिना
घोड़ करैतके **कड़ना** अजगर अधसरके **पटसारी** हे बहिना
धामन **करधन** गेहूली गहुमन नागक **नथिया** कारी हे बहिना[433]

एकटा अन्य नचारीमे लौकिक प्रसाधनसँ विरक्त शिवक प्रसाधन ओ अंगसंरक्षण सम्बन्धी रूचिक विवरणक संग सामान्य प्रसाधन ओ अंगरक्षण सम्बन्धी वस्त्रादिक वर्णन एहि स्वरूपक अछि यथा **तेल**, **फुलेल**, **तोसक**, **गलैचा** इत्यादि–

तेल फुलेल शिवके कोबर राखि देल लगाव के बेर शिव **भसम** लेपि लेल
तोसक गलइचा शिव के कोबर राखि देल सूतइ के बेर शिव **मृगछाला** राखि लेल[434]

एकटा महेशवाणीमे शिव परिवारक गरीबी ओ विसंगति कारणें गौरीक दुर्गतिक वर्णन करैत अनेक वेशभूषा प्रसाधन यथा **पीताम्बर**, **गुदरी पुरान**, **तेलफुलेल** आदिक

उल्लेख भेल अछि–

नहिरामे पहिरथि **पीयर पितम्मर** हे कोने वन जैती
ससुरामे **गुदरी पुरान** हे ताही वन जैती
नहिरामे लगबथि गौरी **तेल फुलेल** हे कोने वन जैती
ससुरामे **भसम** लोटाइ हे ताही वन जैती
नहिरामे सूतथि गौरी लाली पलँगिया हे कोने वन जैती
ससुरामे **बाघकछाल** हे ताही वन जैती ।[435]

लोरिक शैलीक एकटा लोकगीतमे मजदूरीक हेतु प्रवास गेल पिता द्वारा पुत्रीक हेतु **बिछुआ** नाम गहना अनबाक तथा ओ गहना पहीरि कन्याक झमकैत सासुर जायब तथा सासुक आदरक पात्र बनबाक कामनाक वर्णन भेल अछि–

अलिया गे झलिया गे, गोला बड़द खेत खाइ छौ गे, कत्तऽ गे
डीहपर गे, डीहक रखबारकेँ गे, बाबा गे
बाबा गेलौ पुरैनिआ गे लाल लाल **बिछुआ** अनतौ गे
कोठीपर कऽ धरिहेँ गे झमकैत झमकैत जैहेँ गे
सासुकेँ गोर लगिहेँ गे ननदिकेँ ठुनकैहेँ गे ।[436]

मैथिली लोकगीतक अतिरिक्त मैथिली लोकसाहित्यक जाहि अन्य विभिन्न अंग सभमे वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन देखि पड़ैत अछि से सब थिक लोकनृत्य, लोककथा, लोकगाथा, लोकमंत्र, लोकोक्ति ओ मोहाबरा आदि ।

लोकनृत्य– मैथिली लोकनृत्यमे जट-जटिन, सामा-चकेबा, झरनी आदि अत्यन्त जीवन्त अछि । लोकनृत्यक एहि समस्त प्रभेदमे उत्तर-प्रत्युत्तर शैलीमे लोकगीतक गायन होइछ । लोकजीवनक कतोक कटुमधु प्रसंग सभकेँ ई लोकगीत सभ समेटने रहैछ । ई समस्त प्रसंग एकीकृत भऽ मानव जीवनक सुमधुर व्याख्या प्रस्तुत करैछ । वेशभूषा प्रसाधनक विविध सामग्री लोकजीवनक व्याख्याक क्रममे एहि लोकनृत्य ओ गीत सभमे अन्तर्भुक्त रहैछ ।

मैथिली लोकनृत्यक विशिष्ट प्रभेद जट-जटिनमे निम्न आयवर्गक दाम्पत्य जीवनक समुधुर नोंकझोंकक वर्णन भेल अछि । नारीक अलंकरणप्रियता जन्य पारिवारिक जीवनमे उत्पन्न समस्या तथा सरस दाम्पत्यक आत्मत्यागी प्रवृतिक उद्‌घाटन एहि लोकनृत्यमे पद पदपर दृष्टिगोचर होइछ । एहि क्रममे वेशभूषा प्रसाधनक विविध सामग्रीक उल्लेख एहि अभिनयमे भेटैछ ।

एकगोट प्रसंगमे जट ओ जटिनक ओहि पारिवारिक समस्याक वर्णन भेल अछि जाहिमे परिधान ओ अभरणसँ विहीना जटिन अपन पतिसँ विविध प्रकारक वस्तुक मांग

रखैत अछि आ जट ओकर ओहि मांग सभकेँ सरस परिहासक माध्यमे अवडेरबाक कोशिश करैछ । जटिन जाहि वेशभूषाक वस्तुक मांग रखैत अछि, से सभ थिक **मँगटीका, साड़ी** ओ **चूड़ी**–

जटा रे जटिनके मँगवा भेल खाली, **मंगटीकबा** तुहुँ कब लयबे रे ।
जटिन हे सोनरा छउ तोहर इआर, **मंगटीकबा** त पेन्हाय देतउ हे ।
जटारे, जटिनिक डँड़बा भेल खाली, **सड़िआ** तुहुँ कब लयबे रे ।
जटिन हे बजजबा छउ तोहर इआर, सड़िआ त पेन्हाय देतउ हे ।
जटा रे जटिनक हथवा भेल खाली, **चुड़िआ** कब तुहुँ लयबे रे ।
जटिन हे मनिअरबा छउ तोहर इआर, चुड़िआ त पेन्हाय देतउ हे ।[437]

दोसर प्रसंगमे विपन्न जटक आजीविका ग्रहणार्थ विदेश जयबाक क्रममे जटिनपर फजूलखर्चीक आरोप लगयबाक वर्णन आयल अछि । जट कहैत छैक जे जटिनक अव्यवस्थाक कारणेँ ओकर सिरपरक **पगड़ी**, हाथक **रुमाल** पर्यन्त बिकि गेल छैक, तेँ आब ओकरा विदेश गेनहि कुशल छैक । मुदा जटिन ओकरा विदेश जाय देबाक हेतु कथमपि तैयार नहि छैक आ ओ बिकि गेल परिधानकेँ पुनः प्राप्त कऽ लेबाक अपन सामर्थ्यक परिचय दैत जटाकेँ विदेश जयबासँ मना कऽ दैत छैक । एहि तरहेँ दाम्पत्य जीवनक सुमधुर सम्बन्धकेँ अभिव्यत करैत पुरुष वेशभूषा विन्यासक दुइ गोट प्रमुख सामग्री **रूमाल** ओ **पगड़ीक** एहि लोकनृत्यमे समावेश भेल अछि–

हाथक **रूमलवा** बेचबओले हे जटिन आब जटा जाइ छइ विदेश
ओहूसँ उत्तम हम **सी** देब हे जटा आब जटा नइ जाउ विदेश
सिरके **पगरिया** बेचबंओलह हे जटिन आब जटा जाइ छइ विदेश
ओहूसँ उत्तम खरीदब हे जटा अब जटा नइ जाउ विदेश ।[438]

एकटा अन्य गीतमे सेहो एही प्रकारक भाव विन्यस्त अछि । एहिमे विदेश गेला उत्तर विभिन्न प्रकारक वस्त्राभूषण अनबाक प्रलोभनमे नहि पड़ि जटिन जटाकेँ सदिखन अपना आँखिक समक्ष देखय चाहैछ । ई ओकर दाम्पत्य प्रेमक चरम पराकाष्ठा छैक । एही क्रमने जटा जटिनकेँ विदेश गेलापर गरदनिक गहना **हँसुली, सिकड़ी** ओ शरीरक परिधान **साड़ी** अनबाक वचन देलकैक अछि जे मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विशिष्ट अंग सभ थिक–

जाय देहि हे जटिन देश रे विदेश तोरा लागि लयबौ जटिन **हँसुली** सनेस
हँसुली तऽ रे जटा तरबाक-धूर ठाढ़ रह रेकुलबोरना नयनक हजूर
जाहि देहि हे जटिन देश रे विदेश तोरा लागि लयबौ जटिन **सिकरी** सनेस

सिकरी तऽ रे जटा तरबाक धूर ठाढ़ रह रे कुलबोरना नयना हजूर
जाय देहि हे जटिन देश रे विदेश तोरा लागी लयबौ जटिन **सड़िया** सनेस
साड़िया त रे जटा तरबाक धूर ठाढ़ रह रे कुलबोरना नयनक हजूर ।[439]

एकटा अन्य गीतमे जटा द्वारा विदेश जाय जटनीक हेतु **टीका** अनबाक प्रसंगक वर्णन भेल अछि । मुदा जटिन ओहि टीकाकेँ स्वीकार करबाक पक्षमे नहि अछि । अपन हठवादी प्रवृत्तिक कारणेँ ओ जटा द्वारा आनल टीकाकेँ तोड़ि कऽ नष्ट करबाक वचन कहैत अछि । मुदा एहिसँ जटाक अजस्र प्रेमपर कोनो आघात नहि होइत छैक । ओ पुनश्च ओहि टूटल गहनाकेँ गढ़यबाक हेतु तैयार भऽ जाइत अछि–

तोँ कहाँ कहाँ जइछे बिरवा बान्हिकऽ हम मोरंग जाइ छी बिरवा बाँन्हि कऽ
तू की की लयबे बिरवा बाँन्हि कऽ हम **टिकवा** लायब बिरवा बाँन्हि कऽ
केकरा पेन्हयबे बिरवा बाँन्हि कऽ हम जटिनके पेन्हायब बिरवा बाँन्हि कऽ
हम तोड़ि कऽ नेरायब बिरवा बान्हिकऽ हम फेर सँ गढ़ायब बिरवा बान्हि कऽ[440]

एकटा अन्य गीतमे अनेक विशिष्ट स्थानपरक गहनाविशेषक प्रति जटिनक आकांक्षा तथा जटाकेँ ओकरा पूर कऽ जटिनक प्रेमोपभोग करबाक उत्साहक वर्णन भेल अछि । एहि क्रममे **टीका, कंगन, मोती** अदि आभूषण ओ आभूषण सामग्रीक वर्णन भेल अछि–

बाँकीपुर के **टिकवा** रे जटा, केउ केउ निरेखय रे जटा, केउ केउ परेखय रे जटा
बाँकीपुर के **टिकवा** हे जटिन हमहीँ निरेखब हे जटिन, हमहीँ परेखब हे जटिन
हमहीँ पिनहायब हे जटिन, कटक केउर के **कंगन** रे जटा केऊ केऊ निरेखय रे जटा
केऊ केऊ परेखय रे जटा, कटकक ऊ जे **कंगन** हे जटिन, हमहिँ निरेखब हे जटिन
हमहिँ परेखब हे जटिन, हमहीँ पिनहायब हे जटिन सूरतक ऊ जे **मोती** रे जटा
केऊ केऊ निरेखय रे जटा, केऊ केऊ परेखय रे जटा, सूरतक ऊ जे **मोती**हे जटिन
हमहिँ निरेखब हे जटिन, हमहीँ परेखब हे जटिन, हमहीँ पहिरायब हे जटिन[441]

दोसर गीतमे **कंठा** ओ **टीका**क लहरदार प्रभेद तथा नग एवं घुंडी लगयबाक परम्पराक वर्णन आएल अछि– जाहिसँ आभूषणक प्रभेद वैविध्यक सूचना भेटैछ–

चल चल हे जटिन यमुनेके किनार **टिकबा** बिकाइ छइ लहरदार हे जटिन
तऽ पेन्हे के पड़तउ, टिकबाके भगवा भेल भारी रे जटा
तऽ फेरे के पड़तउ, चल चल हे जटिन यमुनेके किनार
कंठा बिकाइ छइ लहरदार हे जटिन, तऽ पेन्हे के पड़तउ
कंठाके घुण्डी बड़ भारी रे जटा, तऽ फेरे के पड़तउ ।।[442]

जटा जटिनक प्रेम गीत मैथिल लोकनृत्य परम्पराक विशिष्ट गीत अछि । एकर एक गोट गीतमे जटिन अपन बदसूरतीक कारणेँ खिन्न अछि । ओ अपनाकेँ जटाक अनुरूप नहि बुझैछ । स्वभावत: **नथिया, तरकी, कर्णफूल** आदि गहना सेहो ओकरा अपन नाक-कानक सूरतिक अनुकूल नहि बुझना जाइत छैक । जटिनक एहि चिन्तनक्रममे आभूषणसँ सम्बद्ध कतोक पारिभाषिक शब्दक उल्लेख दृष्टिगोचर होइछ–

नथिया गढ़यलहुँ अनमोल नाक, मोर नीके ने ।
कोना जयबइ जटाक पलंगपर सूरति मोरा नीके ने ।
तरकी गढ़यलहुँ अनमोल कान मोरा नीके ने ।
कोना जयबइ जटाक पलंग पर सूरति मोरा नीके ने ।
कोना जयबइ जटाक पलंग पर सूरति मोरा नीके ने ।
फुलबा गढ़बलउँ अनमोल मांग मोरा नीके ने ।
कोना जयबइ जटाक पलंगपर सूरति मोरा नीके ने ।[443]

जटा जटिनक एक गोट दोसर गीतमे कखनो जटिन अपन मांगक **टिकुली** द्वारा जटाकेँ वश करबाक प्रयत्न करैछ तँ कखनो जटा अपन कानक **कुंडल** द्वारा जटिनकेँ विवश करबाक प्रयत्न करैछ, जटिन जँ कानमे **तरकी** पहिरि जटाकेँ प्रलोभित करऽ चाहैछ तँ जटा अपना हाथमे **घड़ी** पहिरि जटिनकेँ वशमे आनऽ चाहैछ । नारी ओ पुरुष द्वारा एक दोसरकेँ अपना वशीभूत करबाक आदिम प्रवृतिक एहि रेखांकनमे वेशभूषा विन्यासक अत्यन्त सौम्य स्वरूप दृष्टिगोचर होइछ–

हमरा जटिनके मांग शोभे **टिकुली**, अरक चढ़ि बइसे सरक चढ़ि बइसे
आज गुलाम जटा बस करथिन्ह, हमरा जटिन सँ मत बोलू जी ।
हमरा जटाकेँ कान शोभे **कुण्डल**, घोड़ा चढ़ि बइसे, गाड़ी चढ़ि बइसे
आज गुलाम जटिन बस करताह, हमरा जटा स मत बोलू जी ।
हमरा जटिनके कान शोभे **तरकी** । अरक चढ़ि बइसे सरक चढ़ि बइसे
आज गुलाम जटा बस करथिन्ह, हमरा जटिन स मत बोलू जी ।
हमरा जटाके हाथ शोभे **घड़ी**, घोड़ा चढ़ि बइसे, गाड़ी चढ़ि बइसे
आज गुलाम जटा बस करथिन्हि, हमरा जटा स मत बोलू जी ।[444]

जटा जटिनक एक गोट अन्य गीतमे विभिन्न वेशभूषा प्रसाधन सामग्रीक प्रति जटिनक आकांक्षा, जटा द्वारा ओकरा पूर्ण प्रसाधन सामग्रीक प्रति जटिनक आकांक्षा, जटा द्वारा ओकरा पूर्ण करबाक तथा जटिन द्वारा बिरहा देबाक तथ्यक वर्णन भेल अछि एहि क्रममे **सिन्दुर, टिकुली, साड़ी, आँगी, नथिया** आदि सामग्रीक उल्लेख भेल अछि–

सिनुरा जखन कहलियौ रे जटा सिनुरा किए ने लयलें रे ।
हरि हरि बाली समैया अभगला सिनुरा किए ने लयलें रे ॥
सिनुरा जखन अनलियौ ने जटनी कोठी पर कऽ धयले गे ।
हरि हरि बाली समैया अभगली सिनुरा किए ने लगौले गे ॥
टिकुली जखन कहलियौ रे जटा टिकुली किए ने लयले रे ।
हरि हरि बाली समैया अभगला टिकुली किए ने लयले रे ॥
टिकुली जखन अनलियौ गे जटनी चक्का पर कऽ धेलें गे ।
हरि हरि बाली समइया अभगली टिकुली किए ने सटलें गे ॥
साड़ी जखन मंगलियौ रे जटा साड़ी किए ने लयलें रे ।
हरि हरि बाली समइया अभगला साड़ी किए ने लयलें रे ॥
साड़ी जखन अनिलऔ गे जटनी पेटी मे कऽ धेलें गे ।
हरि हरि बाली समइया अभगली साड़ी किए ने पेन्हलें गे ॥
आँगी जखन मंगलियौ रे जटा आँगी किए ने लयलें रे ।
हरि हरि बाली समइया अभगला आँगी किए ने सियौले रे ॥
आँगी जखन अनलिऔ गे जटनी **मुँहपोछनी** मे कऽ धेलें गे ।
हरि हरि बाली समइया अभगली आँगी किए ने पेन्हलें गे ॥
नथिया जखन कहलियौ रे जटा नथिया किए ने गढ़ौलें रे ।
हरि हरि बाली समइया अभगला नथिया किए ने गढ़ौलें रे ॥
नथिया जखन गढ़ेलियौ गे जटनी नाकक भूर मुनौलें गे ।
हरि हरि बाली समैया अभगली नथिया कोना पहिरतें गे ॥[445]

एहि तरहें जटा-जटिनक गीतमे वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीक उल्लेखक अनवरतता देखि पड़ैछ । क्रमश: परिवर्तित वेशभूषा प्रसाधन शब्दावली एकर पुरातन शब्दकें स्थानापन्न कयने जा रहल अछि तथा नव शब्द ओकर स्थान परिग्रहण कयने जा रहल अछि । एकर मूल कारण ई थिक जे शब्द मात्र बदलि देने जटा जटिनक नृत्य कृत्य मे कोनो परिवर्तन होयबाक संभावना नहि । तें लोकजीवनमे परिव्याप्त एहि गीतिमे शब्द परिवर्तन सहज स्वाभाविक ओ युग-प्रवृतिक अनुकूल अछि ।

कातिक मासमे मिथिलामे सामाचकेबाक उत्सव होइत अछि । एहि उत्सवक स्वरूप लोकनृत्यपरक अछि एवं एहि लोकोत्सवमे जे गीतिविधा अछि से भाइ-बहिनिक अजस्र स्नेहक स्रोतस्विनी थिक । भाइ-भौजाइक प्रति बहिनिक शुभकामना एवं बहिनिक प्रति भाइक स्नेहक प्रतीकात्मक एहि गीतिमे पान, सिन्दुर **टिकुली** आदि प्रसाधन सामग्रीक उल्लेख भेटैत अछि–

दुभिया भोजन करू हे सामा हे चकेबा लागि गेल पान केर दोकान ।
गे माइ सेहो पान खयलनि भइया से फल्लां भैया रँगि लेल बतीसो मुख दाँत ।
गे माइ दुभिया भोजन करू हे सामा हे चकेबा लागि गेल **सिन्दुर** केर दोकान ।
गे माइ सेहो सिन्दुर पहिरथु भौजो से फल्लां भौजो जुगे जुगे बढ़नु अहिबात ।
गे माइ दुभिया भोजन करू हे सामा हे चकेबा लागि गेल **टिकुली** के दोकान
गे माइ सेहो टिकुली पहिरथु बहिनो से फल्लों बहिनो झलकैत जाथु ससुरारि ।[446]

सामा चकेबा लोकोत्सवक एक गोट अन्य गीतमे **झालरि, पटोर, झिलमिल केचुआ** ओ **सिन्दुर** वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन आयल अछि–

फलां भैया लौता **आलरि झालरि** फलां भैया लौता **पटोर** ।
गे माइ फल्लां भैया लौता **झिलमिल केचुआ** फल्लां भैया **कामी सिन्दूर** ।
गे माइ फलां बहिनो पहिरथु **आलरि झालरि** फल्लां बहिनो पहिरथु **पटोर** ।
गे माइ फलां भैया पहिरथु **झिलमिल केचुआ** फलां बहिनो **कामी सिनूर** ॥[447]

बहिन द्वारा अपन भाइयो भौजाइक मंगलकामनासँ सम्बद्ध एहि फकड़ामे पुरुष ओ नारी प्रसाधनक नीक चित्र भेटैत अछि । बहिन अपन भाइक प्रवृत्तिक आकलन करैत कहैत छथि जे हमर भाय पानसँ दाँत रङगैत, रूमालसँ मुँह पोछैत तथा कंधीसँ केश थकरइत अबैत छथि आ भौजी **सिन्दूरसँ** मांग भरने **अयनासँ** मुँह देखैत अबैत छथि–

हमर भैया कइसे आबे हाथीपर बैसि हँसइत आबे
पानसँ मुँह रङइत आबे **रूमालसँ** मुँह पोछैत आबे
कंधीसँ केश झाड़इत आबे
हमर भौजी कइसे आबे पालकीमे बैसि हँसइत आबे
सेनुरसँ मांग भरइत आबे **अयनासँ** मुँह देखइत आबे ।[448]

एकटा अन्य गीतमे सामाक द्विरागमनक अवसरपर देय विविध वस्तुमे गहना, **सिन्दूरकें** आवश्यक कहल गेल अछि आ एकर उपलब्धिक प्रति तत्परता देखाओल गेल अछि–

आ गे डिहुली आ गे डिहुली सामा जाइ छै ससुरा किछु **गहना** चाही गे डिहुली
आगे डिहुली आ गे डिहुली धऽ ला **सोनरवा** के गढ़बाइये देबौ गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली सामा जाइछै ससुरा किछु **सेनुर** चाही गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली धऽला पटबिनिजा के किनिके देबौ गे डिहुली ।[449]

एकटा गीतमे भौजीक केशराशिमे चमेलीक फूलक शृंगार करबाक उल्लेख भेल अछि–

कनिआ भौजीके केसिया चँवर सन हे । कि एहि **केश गूँथब चमेली फूल** हे ।[450]

एकटा अन्य गीतमे बहिन कोनो भाइक आङनमे सामा खेलय जाइत छथि । गोखुलक काँटसँ हुनक साड़ी फाटि जाइत छनि । ओ दरजी लग जा जुमैत छथि आ दरजीसँ साड़ी सियाइ मङलापर दरजीकेँ दुनू कानमे **सोन** देबाक प्रस्ताव करैत छथि । एहि तरहेँ **फाटल साड़ीकेँ सीबि** कऽ पहिरबाक तथा पुरुष द्वारा सेहो कानमे सोनाक गहना पहिरबाक परिपाटीके लोकशैलीक उल्लेख भेटैत अछि । **'नान्हे टोपे सिबिह दरजी मोर चित्र सरिया'**सँ इहो स्पष्ट अछि जे साड़ी अनेक रंगक तथा चितकाबर रंगक सेहो होइत छल आ सीबाक प्रक्रिया विशेष **'टोप देब'** नान्हे टोप अर्थात् छोट छोट टोप दऽ कऽ सीबाक कला सेहो लोकजीवनमे परिव्याप्त रहलैक अछि । **दरजिया, नान्हे टोप, चित्रसाड़ी, सिअउनि** आदि परिधान सम्बन्धी शब्दावलीक लोक प्रचलित रूपक अनुगुम्फन एहि गीतमे देखि पड़ैछ–

सामा खेलै गेलौं माइ हे फलां भैयाके टोल
गोखुलक कँटबा लुबुधि धयलक **सड़िया**
छाड़ू छाड़ू कँटबा लगएलहुँ बड़ देरिया
घर पछुअरबा दरजिया भैया हितबा
नान्हे टोपे **सिहह** दरजिया मोर **चित्र साड़िया**
साड़ियाके सिआइ बहिनो की देब दनमा
चढ़इके घोड़ा देब काने दुनू सोनमा
अंगिया लगएबो बहिनो काने दुनू सोनमा ।[451]

एकटा अन्य गीतमे भाइ बहिनिक स्नेहक संग भाउजक प्रति ननदिक अपार एवं स्निग्ध प्रेमक दिग्दर्शनक संगहि पुरुषक माथकेँ पागसँ ओ नारीक जूड़ाकेँ फूल लगाय सजयबाक उल्लेख भेल अछि–

कओने फूल फूलल अछि अधि रतिया
　　　　कओने फूल फूलल भिनसरबा हे ।
बेली फूल फूलल अछि अधि रतिया
　　　　चमेली फूल फूलल भिनसरबा हे ।
बेली फूल बान्ह बन्हि हम फलां भैयाके **पगिया**
　　　　की गमकैत जयताह दरबार हे ।
चमेली फूल बान्हबन्हि हम ऐहब भौजोके **जूड़ा**
　　　　की गमकति जैतीह भैयाके पास हे ।[452]

मैथिली लोकनृत्यक झिझिया प्रभेदमे एकठाम **हँसुली** नामक गहनाक उल्लेख एहि प्रकारेँ अछि–

हँसुली गढ़ा दय हो बङाली बाबू **हँसुली** गढ़ा दैहो ।
हँसुली पहिरि हम झिझिया खेलबै डनित्रा देखतै हो ।
डनित्रा देखतै हो बङाली बाबू डनित्रा देखतै हो ।
चान सुरतिमे नजरि लगतै आब नै जीबै हो ।[453]

मैथिली लोक गीतक झरनी प्रभेद मुसलमान जातिमे प्रचलित अछि आ मुहर्रमक अवसरपर लोकनृत्य शैलीमे गाओल जाइत अछि । एहिमे कर्बला युद्धक हसन हुसैनसँ सम्बद्ध लोककथाक अनुगम्फन अछि आ एहि क्रममे लोकजीवनक आरोह अवरोहक सहज रेखांकन भेल अछि । एहि प्रभेदक विभिन्न गीतिमे मुसलमानी ओढ़ावा पहिराबा आदिक शब्द यथा **सेहरा, जोड़ा** आदिक प्रयोग भेटैत अछि–

हाय गलीये गलीये घूमऽ हइ मलीनित्रा **सेहरा** पेन्हिहऽ हो बचे ।
हाथ सेहरा पेन्हिहऽ माति जइहऽ कोना सम्हरिहव हो बचे ।
हाय मइया मदोदरि बहिनी सहोदरि ओढ़ी सम्हरिहऽ हो बचे ।
हाय गलीये गलीये घूमऽ हइ दरजीयबा **जोड़ा** पेन्हिहऽ हो बचे ।
हाय जोड़ा पेन्हिहऽ माति जइहऽ कोना सम्हरिहऽ हो बचे ।
हाय मइया मदोदरि बहिनी सहोदरि ओढ़ी सम्हारिहऽ हो बचे ।[454]

एहिना एकगोट झरनीमे **जलसिहली टोपीक** उल्लेख भेल अछि मुदा ई शब्द आब प्रचलित नहि देखि पड़ैछ–

किनका सिर **जलसिहली टोपी**
　　　　किनका सिर हइ धनुषवे हाय ।
हाय हजरत सिर जलसिहली टोपी
　　　　फातमा सिर हइ धनुषवे हाय ।[455]

लोककथा ओ लोकगाथा– मैथिली लोककथा सभमे लोकजीवन आस्था-विश्वास, सौन्दर्यचेतना ओ भावुकताकेँ व्यापक परिवेश भेटलैक अछि । लोकजीवनक व्यापक परिवेशमे प्रयुक्त वेशभूषा विन्यासक उल्लेख कऽ एहि कथा सभमे अनेक ठाम रोचकता उत्पन्न कयल गेल अछि । उदाहरणक हेतु 'फुहरी' नामक महिलाक कथा देखल जा सकैछ । एहिमे ग्राम्य जीवनक एक गोट अल्हड़ माउगिक चित्रांकन भेल अछि जे अपन समस्त सम्पत्तिकेँ विनष्ट कऽ वेश विन्यासक पाछू बताहि भेल छलीह । पति परदेश जाइकाल बारहो मासक बुतातक हेतु बारह मन धान द' गेलथिन मुदा फुहरी प्रथमे मासमे

घर आङ्न निपयबामे तीन मन धान खर्च क' देलथिन्ह, तीन मन धान दऽ नौआइनसँ नह कटाय आरत लगबाय लेलनि, तीन मन धान दऽ खोपा-चोटी बन्हबा लेल आ तीन मन धान दऽ सिक्का तैयार कराय ओहिपर झूलब आरम्भ कऽ देल । समस्त बुतात प्रथमे मासमे समाप्त कऽ 'फुहरी' कष्टमे पड़ि पतिकेँ पत्र लिखल । साश्चर्य पतिक जुमला पर आ बुतात देलो पर भूखेँ मरबाक कारण पुछला पर कहैत भेलीह–

आँगन देखू घर देखू, तीन मन तौँहि देखू
पैर देखू आरत देखू, तीन मन तौँहि देखू
खोपा देखू चोटी देखू, तीन मन तौँहि देखू
आठैल छी माठैल छी, सिक्का झूलै छी, तीन मन तौँहि देखू[456]

एहि तरहेँ फुहरीक लोककथाक माध्यमे स्त्रीगणक शृंगार प्रियता एवं फूहर स्त्रीक चरित्रक रेखांकन भेल अछि आ एहि क्रममे पैर रङ्बाक, खोपा-चोटी केश विन्यास करबाक लोकजीवनक व्यावहारिक वेशभूषा प्रसाधनक उल्लेख भेल अछि ।

मधुश्रावणी व्रत कथाक गोसाउँनि कथाखण्डमे बैरसीक घुमबाक क्रममे एहन अनेक पद्यक प्रयोग भेल अछि जाहिमे वेश भूषा प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध लोकजीवनक अनेक शब्दावलीक व्यवहार भेल अछि, यथा–

लाल पलंगक दरी बिछौना ओ तकिया के ठट्ठ ।
हम सोवें तों सोवें बटोहिया । तब मचिहें गटगट्ट ।।
खत्ता उपछल खुत्ती उपछल मारल रोहु बोआर ।
यौवन दुनू कादो लोटाइ छी टिकुलीक कोन सिंगार ।।
पगिया तोहर लटपटिया भरिया । धोती तोर छितनार ।
कन्हापर जे केराक भार छौ दोपटाक कोन सिंगार ।।
लाल झिंगुर लाल सिन्दुर लाल अड़हुल फूल रे ।
ताहूसँ जे लाल देखल गोरिक माथ सिन्दूर रे ।।
कारी आँजन कारी काँजन कारी भादव मास रे ।
ताहूसँ जे कारी देखल गोरि माथक केश रे ।
पीयर बेंग पीयर ढाबुस पीयर हरदिक रंग रे ।
ताहूसँ जे पीयर देखल गोरि नाक बेसरि रे ।
उज्जर पोथी उज्जर मारा उज्जर चन्ना माछ रे ।
ताहूसँ जे उज्जर देखल गोरि हाथक साँख रे ।।[457]

श्रीकर राजाक कथामे चुनरी साड़ीक प्रभेद पर चित्रांकन कयल जयबाक उल्लेख अछि । एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लोकजीवनमे साड़ीपर बेलबूटा कढ़ाकऽ पहिरबाक

प्रचार रहल अछि । वस्त्रकेँ चौपेतबाक उल्लेख सेहो एहि कथामे अछि जे जेठकी रानी द्वारा जोलहाकेँ देल गेल आदेशसँ पता लगैत अछि तोँ हमर सौतिन लय चुनरी बुनैत छेँ से बेस मुदा तोँ हमरो कहल मान । ओहि चुनरीमे लिखि दिहैक 'छाती लात झोँटा हाथ' । ई बात केओ बुझौक नहि । राजाकेँ चौपेति कऽ चुनरी दिहनु जे ओहो नहि बुझथिन । एहि लेल हम तोरा डाला भरि सोन दैत छियौक ।[458]

मैथिली लोकगाथा ओ गाथा गीत सभमे सेहो अनेकठाम वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक वर्णन दृष्टिगोचर होइछ । खास कऽ पत्रलेखनक क्रममे नायिका द्वारा काजरकेँ मोसिक रूपमे व्यवहार करबाक वर्णन अनेक लोकगाथामे भेल अछि । लोरिकाइनमे ई प्रसंग एहि स्वरूपक भेटैछ–

माँजरि सिन्दूरसँ अपन सोहाग लिखलनि
काजरसँ अपन वियोग लिखलनि
आ अपन कनगुरिया आङ्गुर चीरिकय
ओहि शोणितसँ सावरक वीरगति
आ मैनावतीक सत्त लिखलनि ।[459]

सलहेसक लोकगाथामे एही प्रकारक वर्णनक स्वरूप देखल जा सकैछ–

कानि कानि अँचरा फारि कागज बनौलनि
नैनाक काजर पोछि के मोसि बनौलनि
बाम कनगुरियाकेँ चीरि कलम बनौलनि[460]

आँचर फाड़िकेँ कागज बनयबाक, आँखिक काजरकेँ मोसि बनयबाक तथा कनगुरिया आंगुरक सोनितसँ पत्र लिखबाक परम्परा भारतीय संस्कृतिमे बड़ प्राचीन अछि । एहि तरहक पत्र प्रधानतः प्रोषितपतिका नायिका द्वारा पतिकेँ लिखल जाइत रहल अछि किंवा कवि प्रौढ़ोक्तिक रूपमे व्यवहृत होइत रहल अछि । एहि प्रकारक वर्णनसँ नायिकाक साड़ी पहिरब, आँचर राखब तथा काजर द्वारा नयनकेँ सजयबाक वेश-प्रसाधनक परिज्ञान होइछ ।

लोरिकाइनक नायिका चनैनक रूप छटाक वर्णनक क्रममे ओकर केशराशिक विपुलता, रत्नयुक्त आँगी, टिकुली, खोपा आदि वसन भूषण धारण करबाक वर्ण्य वस्तु सभसँ लोकजीवनमे व्यवहृत अनेकानेक वेश भूषा प्रसाधन सामग्रीक शब्दावली ओ स्वरूप पर प्रकाश पड़ैत अछि । लोकगाथाकार लोकनिक सौन्दर्य दृष्टिकेँ एहि प्रकारक वर्णन अत्यन्त उत्कृष्ट स्वरूपमे उपस्थापित करैत अछि । लोकगाथाकार जेना वर्णन चातुर्य ओ उपमाक पथार लगा देलनि अछि–

चम्पक वर्ण कड़ड़ीक थम्ह सन जाँघ
चढ़ल नाक खंजनि नयन, आ सात हाथक **केश** ।
आङ्गीमे **झालरि** लागल, आ ताहि मे झमकारि कऽ **हीरा टाँकल** ।
ओ जखने हँसय हँ दामिनि दमकय, हँसिनी जकाँ ठुकुकि ठुमुकि कें चलए
आ परवा जकाँ घुटुकि घुटुकिकें बाजए
ओ जकरा दिस ताकि दैक करेजकें सालि दैक ।
जा तकरा कोढ़मे वासनाक हुरुक पैसि जाइक
ओकर **टिकुली** अंगोर जकाँ छिटकैक
आ **खोपा** चानक पाछूक कारी पर्वतक शिखर जकाँ लगैक
ओ सात सात हाथक **लट** धारामे बहइत बूझि पड़ैक
जेना हिलोरपर नागिनि खेलि रहल हो ।[461]

एहि तरहें **सलहेस** लोकगाथाक नायिका दौना मालिन शृंगार छटाक वर्णनमे हुनक शृंगारविन्यासक विविध अंग यथा **सोड़हो सिंगार करब, दक्षिण चीर पहिरब, पाटी समारब, काजर लगायब, मिसी बैसायब, बाँक, काड़ा, टिकुली** आदि गहना पहिरब आदिक वर्णन भेल अछि जे मैथिल वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत करैछ–

सोलहो सिंगार कैलन्हि जादूक फुलडाली लेलन्हि
रंग विरंगक फूल तोरलैन्ह चललीह स्वामीक उदेश

तथा पुनः

दौना मलिन **दछिनक चीर** पहिर लेलनि **पाटी समारि** लेलनि
नैना काजर केलनि सीके सीके **मिसी** बैसा लेलनि
हाथमे **बाँक** पहिर लेलनि, पैरमे **काड़ा** पहिर लेलनि
मांगमे **तारा** चन्द **टिकुली** साटि लेलनि, असले कसवीन बनि गेलीह ।[462]

रन्नू सरदारक लोकगाथामे कोसीक माध्यमे लोकजीवनमे स्नान द्वारा शरीरक मार्जन करबाक, पैरमे नूपुर पहिरबाक तथा **केशराशिकें समारब, जूड़ा बान्हब** तथा **सोड़ह** शृंगार कऽ **बत्तीसो अभरण** धारण करबाक तथ्यक उल्लेख भेल अछि–

–जाहि घाटपर कोसी स्नान करैत छलीह, ओहि घाटपर अहिरा पड़रू नमाबऽ चल आयल । कोसीकें बड़ उकटाओन बुझयलनि ।

–हुनक पयरक **बिछिया** बहुत वेर धरि अनोर करिते रहल ।

–भूस्पर्श करैत केशराशिकें सम्हारि ओ **जूड़ा** बन्हलनि आ जुड़बा कुहकै मजूर ।

–बराहक्षेत्रसँ अबैत काल सौराघाटमे नहा कऽ गहबरमे आबि **सिंगार-पटार** कयलनि । **सोलहो सिंगार** । **बत्तीसो आभरण** ।[463]

एकर अतिरिक्त विभिन्न लोकगाथा ओ गाथागीत सभमे प्रसंगानुसार अनेकठाम वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक उल्लेख भेल अछि । यथा–

–कहमा नहेलें गांगो कहमा **लट झारलें** कहमा केलें **सोलहो सिंगार**
गंगा हम नहेलहुँ सेवक तिरहुत लटझारलौं भरे कैलों सोलहो सिंगार[464]
–मिरिगाके मारि राजाजी खलरी घेचलनि गांगो छौड़ी के **चोलिया** देलनि सिलाय[465]
–कथिए पहिरि हे गांगो तोहरो जनम भेल कथिए पहिरि छठिहार
फटले पुरान पहिरि रे सेवक तोहरो जनम भेल **पटम्बर** पहिरि छठिहार[466]
–छोटी रे अङनमा गाङोदाइ बहुते पसार झुमरी खेलाइते गाङो हे टुटलो **गिरमलहार**
कौआ लऽ गेल **मुनरी** गोरैया **गिरमलहार** ताही रे करणमा गाङो दाइ रोदना पसार ।[467]
–होयतै परितिया गाङो गे लगतै बजार कीनि देबो **मुनरी** बेसाह **गिरमलहार**[468]
–कहाँ गेल किए भेल सोनरबा रे भैय्या गढ़िये दिऔ ना ।
गाङो गोर **बिछिया** गेलै हेराय रे भैय्या गढ़िये दियौ ना ।[469]
–कहाँ गेल किए भेल छौड़ा झिनमा मलहबारे खोजि दिअउ **टिकुली** लिलाट ।[470]
–गोर के **नेपुलबा** के सासु **रूनझुन** करैयऽ हाथक **कङना** करे अनुराग हो राम ।[471]
–कान के **कनौसी** गरीब हो, कहमा हेरौलऽ हो कहमा धरौलऽ तीर धनुष हो ।
तीरबा धनुषबा गरीब हो काँखि जाति लेलऽ हो चलि भेलऽ त्रिभुवन शिकार हो ।[472]
–नवे दिन गौना के वंशी के भैलए । डाँड़के **धोती** को मलीनो ने भेलै–ए ।
माँगक की **चनन** सेहो सेहो मलिनो ने भेलैए । डाँड़ के **हरहरा** सेहो डाँड़े के शोभैए ।
हाथ के **कङन** को हाथे के शोभैए ।[473]

लोकमंत्र– मैथिली लोकमंत्रमे नैना जोगिनक कतोक फकड़ा सभमे वेशभूषा विन्यासक शब्दावली भेटैत अछि, यथा–

–काँच कड़ची काटि कऽ बंगला छाड़ि कऽ
इहो **लट** झाड़ि कऽ इहो **पट** झाड़ि कऽ
एति एति राति पिया कतऽसँ आयल छी राहरिक खेत खुटरौना सँ आयल छी
हाथमे टुनटुन पैरमे **काड़ा** नैना जोगिनिआ कर दलमनिआ
बाम छी कनिआ दहिना छी सारि ।[474]

–चानन चकमक चानन गाछ चानन ढौरल चारू कात
अगल बगुल गुगुलके धूप चल हे सखि सब कोबर जाइ
कोबर गेने बड़ अनुराग बैसक देलनि **मृगक छाल**
एकहि **पटोर** तर दुइ कुमारि बाम छौ कनिआ दहिना छौ सारि ।[475]
–कागजक हम पुरिया बनाए ताहि ऊपर **काजर** पारि
ओहि काजरके लड्डू बेसाहि पैजा पड़ति दिन जाय ।[476]

एकर अतिरिक्त लोकसाहित्यक लोकोक्ति, मोहावरा, फकड़ा, वचन बुझौअलि नेनागीत आदि प्रभेदमे सेहो वस्त्राभूषण प्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक उल्लेख देखि पड़ैत अछि यथा–

लोकोक्ति–

1. पहिरैए सब **झमकाबैए** क्यो क्यो
2. जब धोबीपर धोबी बसय तब **खेन्हरा**पर साबुन पड़य
3. घर बैसल जे बनबथि बात, देहपर **वस्त्र** ने पेटमे भात
4. केरा रोपि काटी नहि पात केरे देतहु **धोती** भात
5. „राजाकें" सेवने कान दुनू **सोन** बनियाकें" सेवने छटाक भरि नोन
6. बुढ़िबक कनिआके नौ आना **खोइँछा**
7. हरबड़ी विआह कनपट्टी **सिनूर**
8. कतबो राड़ **पाग** सम्हारथि तैओ राड़क राड़े
9. ठाँव गुन **काजर** कुठाँव गुन **कारिख**
10. राजाक **ओढ़ना** धोबीक **ओछौना**
11. देखले कनिआ देखले वर कोठी तर **बिछौना** कर
12. धोबिक घर विआह गदहाक माथा **मौर**
13. **नूआ** तँ धोबी धो देत, मुदा मुँह के धो देत
14. **चन्नन** पड़ल चमार घर नित उठि कतरय चाम
    चन्नन नित दिन रोवय पड़ल राड़सँ काम
15. पान बिना जर्दा की ? माङगि बिना पर्दा की ?
16. सब रसमे नून सहोदरमे भाय **कपड़ा**मे **पितामरी** धोबीघाट ने जाय
17. जकरे **नेपुर** तकरे साज आन पहिर तँ **ढबढब** बाज
18. पेटमे खद्द नहि मुँहमे **पान**
19. **भेखे** भीख
20. कान छल तँ **सोन** नहि सोन अछि तँ कान नहि
21. **सिनूर टिकुली** जरल तँ पेटो भामी पड़ल
22. जते के बहु ने तते के **लहठी**
23. आइ माइकें" **ठोप-ठाप** बिलाड़िकें" भरि माँङ
24. **सिफलीक** मौअति माघ मास
25. **पहिरी** धनिकाइन जकाँ राखी गरीब जकाँ
26. **पुरान** कपड़ा आ बइमान आदमीक ठेकान नहि
27. केओ नाके टेढ़ केओ **नकमुन्नियें**" टेढ़
28. गोआरक **गोनड़ि** दूनू दिस चिक्कन
29. थान भरि हारी **गज** भरि नहि फाड़ी
30. धनि दड़िभंगा दोहरी **अंगा**
31. **चौआ** ललितगर, **जूता** पुरान
32. पेट करय कुलबुल **जूड़ा** करय महमह
33. कथीदन नाङट माथा **घोघट**
34. एकटा बहु लय **नूआ** ने भात, दोसर बहु लय छाती फाट
35. नीक लग बैसी खाइ **गुआ** पान, अधलाह लग बैसी कटावी दूनू कान
36. बाप जनम ने खायल **पान**, दाँत निपोड़ने गेल परान
37. कानल कनिआ रहिये गेल, **जुलफी** कटायल वर घुरिये गेल
38. फटलो तँ **पटम्मर** टुटलो तँ हथिसार
39. जकरा बारह बीघा बांड़ तकरा डाँड़मे **डराडोरि** नहि
40. पड़इत चोर के **लंगोटियो** भली
41. ठाम गुन **काजर**, ठाम गुन **ठोप**
42. पेटमे खद्द नहि **सिथमे तेल**
43. **सोना** जरल जाय **रूपा**पर छप्पा
44. किदनमे **मखमलके** भगवा
45. उपरसँ **फीटफाट** बीचमे मोकामाघाट
46. **यैह** गुड़ खयने **कान छेदौने**

47. किदन कइलकैक हम पटोर पहिरलहुँ
    आँखि कइलकै हम संगहि रही

48. बभिनिआ मौगी सिफली छुच्छा मुँहमे **टिकुली**

49. दइबा रे सतरंगा
    जकरा (किदन)मे **गुदरी चेथरी**
    तकरा (किदन)मे **एकरंगा**

50. **असर्फीक** लूटि आ कोइलापर छाप

51. छुछुन्नरिक माथमे **चमेलीक तेल**

52. पित्तरिके बुलकीपर एतेक गुमान
    सोनाक रहितौ तँ चलितएँ उतान

53. हाथमे **कड़ना** तँ **अयनाक** कोन काज

54. एक जुनि रूसथि धीआक बाप
    जिनकासँ हैत **नूआ** भात

55. राजाक **पगड़ी धोबिआक ओछान**

56. **सिन्नुर इन्नुर** लऽ की करबै
    गुड़ रहितय तँ चटितहुँ

57. साँझे **मुइला** कानब कते
    माथे **फाटल सीअब** कते

58. **तेल गमकौआ केश फलकौआ**

59. नहि **गढ़ायब** तँ देखहु दीअऽ

60. तीन फूके **चानी**

61. **नथिया** बिना मुह पथिया सन
    तड़की बिना मुँह फड़की सन

62. अलकल **धोती** फलकल **टीक**
    तखने बूझू तिरहुतिया थीक ।

63. रामधनीकें* कोन कमी
    भगवा फाटे **तनातनी**

64. अलपो मौगीकें* सवा सेरक **बुलकी**

65. आलीमे माली कटोरामे तेल
    आबि गेल महगी पीबि गेल तेल

66. जतेकके बहु ने ततेकके **लहठी**

67. ठेहुना **धोती मुठिया टीक**
    तखने बूझी तिरहुतिया थीक

68. नङटे नहाय गारती की ?

69. अप्पन पिया हेता तँ गुदरीए लोभेता
    परचट्ट पिया हेता तँ **चुनरी** देखि लोभेता ।

70. जखन छलहुँ बारी झारी
    तखन पहिरल **सोड़ह साड़ी**
    जखन अयलहुँ कोबरा घर
    खोंछि उघारि कऽ देखलक बर (पिहानी-मकइ)

71. **अंजैत अंजैत** धीया हेती कनाहि

72. लटकी लचक्का मारय तीन मासपर **नूआ** फाड़य

73. **खोपा** बन्हायल पीया नीक लगैए ?
    हमरा त नीक लगैए
    गामक लोक मुदा थूक फेकैए

74. बनल सनल बहु काकी सन
    पटकि देलनि बहु ढाकी सन

75. गुदरी त उजरी भला
    बेटी त सुनरी भला

76. सतमाय रांझल सतधीकें*, छुच्छा मुँहमे काजर

77. बानर मुँह की शोभए **पान**

78. नव भजनिआ टीकमे झालि

79. नव रिनिआ बहुके **झिमझिमिआ**

80. पिया बजला हँसि डाँड़क **नूआ** गेल खसि

81. मोर पिया रिनियाँ पचास **गुआ** खाय
    आगू पाछू रिनियाँ सौदागर जकाँ जाय

82. चिपड़ी पाथनि चटाचटी लट छिलकाबय केश
हम पूछी धनीसँ तोर पिया कोन बयेस

83. काजर बिनु मुह गाजर सन ।
टिकुली बिनु मुँह... सन ।

84. घरमे टाट नहि देहरिमे सिरकी
गरामे टीप नहि कानमे तड़की

85. नैहरक आलहनि सासुरक ढीठ ।
बाट चलय नहि झाँपय पीठ ।

86. दरभंगा, कुलीकेँ कहय अंगा ।
नहाय पोखरि बाजय गंगा ॥

मोहावरा–

1. चेफड़ी साटब
2. सोनमे सुगन्धि होयब
3. डराडोरि ढील करब
4. खेन्हरा ओढ़ि कऽ घी पीब
5. आँचर बान्हब
6. डराडोरि ढील होयब
7. पाग खसब
8. पाग खसायब
9. आँचर पसारब
10. आँचर भरब
11. आँचर पर आगि ढारब
12. सिनूर पर आगि ढारब

फकड़ा–

1. कूटि पीसि खो धनि बहु हमर हो, नूआ फाटौ त नैहर जो
2. बाहर सुखाइ छनि जोड़ा धोती, घर पकै अछि कुर्थीक रोटी
3. ढेका जरल फेर बहुए ने
4. भरि हाथ लहठी धान के कूटत, साँय पनखौका चूल्हि के फूकत
5. ललकल पगिया फलकल टीक, तखने बूझू तिरहुतिया थीक
6. सम्मन चुड़िया यौं गढ़े ज्यो हस्तीके दन्त । हाथ पकड़ि रस लेतु हैं बैठे देखे कन्त ॥
7. पैरमे आरत साँए किए मारत, भात तर कऽ छाल्ही देलिऐ सेहो गुन ने राखत
8. तर कान तरकी उपर कान खुट्टी, कोंचा सिट्टी दाँत मिस्सी
खोंपा उन्ची तखने बुझलहुँ बड़हाक बेटी ।
9. सब दतरकनुआ चूल्हि के फूकत, सब हाथ लहठी धान के कूटत
10. नढ़टी किदनमे पड़ल कापड़ कथीदन करय उपर झापड़

11. किदन कहलक हम पटोर पहिरलहुँ, आँखि कहलक हम संगे छी
12. कासपितर किछु गहना छी देहतोड़ना छी गजीफजी किछु नूआ छी देहझपना छी
छोट सैंया किछु सैंया छी गोड़जतना छी
13. जेहन नैहर छल तेहन सासुर नहि
जेहन सकलसुख तेहन गहना नहि
जेहन अपने छी तेहन पहुना नहि
14. घरमे कुर्थीक रोटी
बाहर कोरवला धोती / बाहर नयनसुख धोती
15. एहन हैत कथी लय एहन करब कथी लय
धोतीमे साड़ी मिलैब कथी लय
16. एकहि पटोरबे नौ रे नौ
कहबह मनुसा बड़तह खीस तोरा लगा कऽ पूरे बीस
17. उखरीमे धान तऽ ककबा आन
18. अनका कमाइपर तीन टिकुली
एगो कच्ची एगो पक्की एगो लाल बिन्दुली
19. अर्रबर्र गबै छी सिन्नुर टिकुली पबैछी
20. अरबा बाभनि तरबा तेल
21. अनकर पहिरब साज बड़ छीन लेलक त लाज बड़
22. अंगा ने टोपी सिपहिया नाम
23. मुसा के नढ़ढ़ी पिपर के पात । हमरा नूआमे झलझल बसात ॥
24. कोना कोना मगही सासुर जाय । बहिआ डोलबिते जाय ।
माछी गितगबनी जाय । कनही बिलाड़ि दुधऔंटनी जाय ।
छुछुन्नरि धनखीया जाय । आगू पाछू भरिआ जाय ।
बीचमे खड़खड़िया जाय । सात मोटा नूआ जाय । तैओ मगही नढटे जाय ॥
25. माय ! माय ! माय ! अब दिन बिहुरल माय ॥
पियाक पछड़िया हमरो सड़िया, धोबिया घरमे एके संग सुखाय ॥
26. जौं सैंयाँ सिङारे रीझत । तँ की भेल पिरीत ॥
27. सिङारसँ दुलार पायब । तँ सैंयाक पियारि कहायब ।
अन्हार घरमे लागै नीक । तँ जानू जे भेल पिरीत ॥

28. घल सैंया हेता । मुदरिए लोभेता ॥

29. भीतर घिनाइ छनि चिनवार । तनिकर चानन बड़ जगजियार ॥

30. ललैलीके पितरक कनैली

31. मेघा सन लट कारी मुह जेना चान, ढोका सन सन आँखियो विधिक विधान
कोइली सनक बोल के मानू अनमोल

32. भरल रहय कोखि माङ, बनल रहय अपन समाङ

33. बैसल खाय चिबावय पान, से की राखत देशक मान

34. बासि भातमे तिमन अचार, बूढ़ वयसमे खाज सिङार

35. निर्गुनिआ लग की गून, जेहन चानन तेहने चून

36. उचड़िङके* की बैसक चाही ? बटसिनुरीके* की कोबर ?

37. विधवा घरमे सब दिन भादव, निर्धन घरमे कातिक
राजा घरमे सब दिन अगहन, फागुन घर अहिवातिक

वचन

1. रविके* पान सोमके* दरपन, मंगल किछु किछु धनिया चरबन
बुधके* दही बृहस्पति राइ शुक्र कहय मोहे दही सोहाय शनि कहय मोहे अदरख भाव

2. नङटे पहिरी भुखले खाइ, जहाँ मन हो तहाँ जाइ

3. शनि साड़ै रवि जारय, सोम करय सुड्डाह
मंगल बेचारी जानसँ मारै, बुद्ध करै उच्छाह
कपड़ा पहिरी तीन दिन, बुध बृहस्पति शुक्र दिन

4. एको पानि जँ बरिसए स्वाती, कुरमिन पहिरए सोना पाती

5. फूल कापड़ चौपेतले नीक

बुझौअलि–

1. कनी टाटा छौड़ीके* लाल घघरी –मिरचाइ
2. कनी टा टा छौड़ीके* भरि बाँहि लहठी –मकइ
3. रंग बिरंगक टिकुली साटथि, हरियर रंग ओढ़नी
चाभीके झब्बा लटकाकऽ, खेतमे ठाढ़ छथि मोहिनी –मकइ
4. चारि छौड़ी चारि रंग, चारू बेदरंग ।
चारूके* बिआह भेल, चारू एक्के रंग । –पान, चून, कथ, सुपारी
5. खेत उज्जर कारी घास, जे बूझय ई तकरे पास –केश

नेनाक क्रीड़ागीत–

1. हे मझिली ! की छोटकी ? बड़की कहाँ गेल ? बाँस काटै गेल ।
बाँस मे की ? ककही । ककहीमे की ? केश ।
केशमे की ? ढील । ढीलमे की ? लीख ।
लीख पटापट मारै छी । करिआ झुम्मरि खेलै छी ।

2. मामा अबै छै मामा, कथीपर ? हाथीपर ।
उतरू मामा खरामपर । बैसू मामा पिढ़ीपर ।

3. कका हो बाबा हो, सुग्गा खाइ छइ खेत हो,
रोमह बेटी लछमी, पैरमे देबह पैंजनी,
लछमी जेतै सासुरमे, सोना देबै कानमे ।

4. घुघुआ मन्ना, उपजेधन्ना । बौआके गढ़ा देब कान दूनू सोन
बौआक मातृक की सभ बिकाय ? अंगा टोपी रीठी बिकाय ।
कीन दे मामी रीठी के रीठी पुत्ता कथी के । अगर चनन कस्तूरी के ।

5. निनिआ एलै बिरैनिआसँ, बौआ एलै पुरैनिआसँ
एक सूप आनल देसरिया धान, कीनलहुँ बौआ लए गुआ पान
गुऐतिन कहय हमरा गुए नहि, पनैतिन कहय मोरा पाने नहि
बौआ कहय मोरा दाँते नहि

6. आरे निनिआ आ रे आ, हमर नेना के कोरा खेला
नेना देतौ खोइंछा भरि धान, सूपे भरि भरि दसरिया धान
धान बेचि कीनिहे* गुआपान, हिरिया बिरिया बड़ रंगरसिया
हाथमे देबौ शंखा चूड़ी, कानमे देबौ सोना पात

7. आ रे कौआ कटबौ कान, बौआ लय लबिहें* पकले लताम
बौआके मातृक की की बिकाय, रिठ्ठा-रिट्ठि चटनी बिकाय
चटनी टूटि गेल, बौआ हम्मर रूसि गेल

8. खजनचिड़ैयाँ अबिहँ रे अण्डा पारि पारि जैहें रे
अण्डा तोहर फोड़बौरे बौआके निनिआ दीहें* रे
निनिआ एलै बिरैनिआसँ बौआ एलै पुरैनिआसँ
बौआक मातृक की की बिकाय अंगा टोपी जामा बिकाय ।
ले गे मामी जामा । कथीके ?
अगर चनन कस्तूरी के । मामाके कमाइके ।

9. अलिया गे झलिया गे गोला बड़द खेत खाइ छौ गे
कतऽ गे, डीहपर गे, डीहक रखबार के गे, बाबा गे
बाबा गेलौ पुरैनिआ गे, लाल लाल **बिछुआ** अनतौ गे
कोल्हूपर झुककौतौ गे, कोठीपर कऽ धरिहें गे
सासुके गोड़ लगिहें गे, ननदिके ठुनकबिहें गे
ननदिक बेटा कानै गे, कानय दे बपटूराके
नाचऽ दे पमरियाके, देखऽ दे सिपहियाके
लव घर उठे, पुरान घर खसे

10. आ रे चन्ना आ रे आबऽ बारे आबऽ नदिया किनारे आबऽ
रस कुसियार लाबऽ केराके भाग लाबऽ
सोनाके कटोरी मे दूध भात नेने आबऽ, बौआके मुहमामे घुटुक ।
बौआके ऐंठ कुट के खाय, बच्चा खाय ।
बाबाके ऐंठ कुठ के खाय, माय खाय ।
मायके ऐंठ कुठ के खाय, भैया खाय ।
भैयाके ऐंठ कुठ के खाय, क्यो ने खाय ।
पतवा उधिआयल जाय, कुतवा नेङरौने जाय
ठाढ़ हो रे कुतबा । मारबौ दू जुतबा ।।

11. बाबू रे बाबू तोहर नानी अबै छौ खोड़ी डाबामे दूध आनै छौ
फरसा पतामे लड्डू आनै छौ झांमी कुतामे **चूड़ी** आबै छौ
गुदरा नेङरा होरी आबै छौ

12. अरर बरर बौआ बेंग बजैए, बौआ के पीसी सगाइ करैए
सूत सूत बौआ रजैया ओढ़ि के
पीसी तोहर औतौ बिलैया बनिके

13. कासक बोनके दोगे दोगे कमला बहल जाय
धारक काते मालिन बेटिक **केश फहराय** ।
बगुला बगुली पारजो । हम्हर नुआ सुखौने जो ।

14. मैना गे मैनी गे, तोहर गौना हेतौ गे, हैत नहि त की
सोलह सय सुपारी अयतौ ऐत नहि त की
घोड़ा चढ़ि कऽ दुलहा एतौ ऐत नहि त की
कानमे **कनफूल** देतौ, देत ने त की

15. काँचे गहुमके लचलच पूरिया, बाबा बगैचा के आम
सेहो पुरिया खेता भैय्या, जेता ससुरारि
सार देतनि **जोड़ा धोती**, ससुर देतनि गाय
सासु देतनि कंचन बेटी, अङ्गुरी धराय
अइहब भौजी अबै छथि, कान सोभय सोन
माङमे **मङटीका** शोभय, **सिनुरक ठोप**
पैरमे बाजय **रूनझुन कारा काजर** सोभय नैना
उड़ि गेल मैना ।

16. रामजोड़ी फूलहे कदम जोड़ी फूल मारले त मारले **चूड़ी** किए फोड़ले

17. आ रे कुत्ता आ । नङरी डोला ।
नङरीमे आगि लगलौ बापके बोला
बाप देलको **अंगा टोपी** गुदराके । नाकके **बुलाकी** देलकौ, तबलाके ।

18. नूनूके दाइ । साग तोड़ जाइ ।
सागो ने भेटइ बजार बूल जाइ ।
एक **खिल्ली पान** खेलक दाँत रङि जाइ ।
बादलक पानि पीबय पेट भरि जाय ।

19. काका हो बाबा हो, ककरो खेत नहि जायब हो
बाग छै, बगैया छै सीकियो ने डोले छै
भैया माथा कमलक फूल भौजी माथा पर **पाटी सिनूर**
उठू गे भौजी पहिरू **पटोर**, आनि देबौ **टिकुली** रँगि देबौ ठोर ।

20. आको माइ चाको, प्रह्लाद बाबा राखो
सोनाक दीप कड़ूके तेल, पाटकवाती लेसल गेल
सुख सुखराती दिया बाती, दुख दरिहर पाछू जाउ सख शृंगार सब आगू आउ

21. लाल काकी हे, की काकी हे । माथ पर बैसलह पंडुकिया हे
खोंपा खोल खोल खोल । ओम्हरसँ अयलह मनसा हे, खोपा बान्ह बान्ह बान्ह
चूड़ा देबइ कूटिकऽ खेबइ सबादिकऽ ।

22. छोटकी रानी बड़की रानी गेली नहाय
कान महक **तड़की** गेलनि हेराय । आब की पहिरती ?
कौआक ठोर, कौआक ठोर त कारी, आब की पहिरती ? साड़ी
साड़ीमे त पिलुआ । आब की पहिरती ? **खिलुआ**

23. आको चाको दिया बराको सब देवता मिलि के बौआके राखो
जे बाबूके हेरती दीठि तिनक देबनि भेला -रीठि, काल भैरव रक्षा करे
सोनाक दीप पाटक बाती बौआ सूतय सुख सुखराती
हँसनी खेलनी आगू आठ कननी खिजनी पाछू जाउ ।

24. चल गे बगड़ा-बगड़ी नौता खाउँ । नूआ न बस्तर कोना कऽ जाउँ ।
घघरी सिया दे फलकैत जाउँ । दुइयाँक पानि दे घुटकैत जाउँ ।

एहि तरहेँ आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन विन्यासक आयाम साहित्यक समस्त विधा महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तकाव्य, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध ओ लोकसाहित्य आदि अछि । खण्डकाव्य ओ महाकाव्यमे पौराणिकताक आग्रहेँ संस्कृत वाङमयेक अधिकांश वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि । मुक्तक काव्यमे क्रमशः नवीन काव्यधारामे वेशभूषा प्रसाधनक आधुनिको शब्दावलीकेँ प्रश्रय भेटल दृष्टिगोचर होइछ । कथा ओ उपन्यासमे वर्ण्यक हेतु लेखकक स्वतंत्रताक कारणेँ पुष्कल शब्दावलीक निवेश भेल अछि मुदा नाटक ओ एकांकी साहित्यमे नाटककारक स्वतंत्रता सीमित रहबाक कारणेँ आ आहार्य अभिनयक कहि अभिनेता ओ दिग्दर्शक पर विशेषतः अवलम्बित रहबाक कारणेँ एकर पात्र-सूची, नाट्यनिर्देश ओ कथोपकथनमे वेशभूषाप्रसाधनक संकेत टा देल दृष्टिगोचर होइछ । मैथिली निबन्ध साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधनपर अधिक संपृक्ति लेखकलोकनिक नहि रहलनि अछि तथापि किछु प्रमुख निबन्ध एहि क्षेत्रमे लिखल गेल अछि । मैथिली कथासाहित्यमे वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीकेँ कथाक केन्द्रमे राखि वस्तु रचनाक विशिष्टता दृष्टिगोचर होइछ ।

जतय धरि लोकसाहित्यक स्थिति अछि, ई साहित्य प्राचीन शब्दावलीकेँ सुरक्षित रखने अछि । आन शिष्ट साहित्यक विधा सभमेँ एहिमे अधुनातन शब्दावलीक संक्रमणक प्रक्रिया अति मन्द देखि पड़ैछ । शिष्ट साहित्य यथार्थपरक होयबाक कारणेँ खास कऽ आधुनिक परिवर्तित शब्दकेँ ग्रहण कैने जा रहल अछि आ पुरातन शब्दकेँ छोड़ने जा रहल अछि ।

सन्दर्भ–

1. मिथिलाभाषा रामायण-कवीश्वर चन्दा झा, मैथिली अकादमी, 1987, पृ. 11
2. तत्रैव, पृ. 16
3. तत्रैव, पृ. 33
4. तत्रैव, पृ. 78
5. तत्रैव, पृ. 78
6. तत्रैव, पृ. 82
7. तत्रैव, पृ. 82
8. तत्रैव, पृ. 111
9. तत्रैव, पृ. 192
10. तत्रैव, पृ. 163
11. तत्रैव, पृ. 202
12. तत्रैव, पृ. 220
13. तत्रैव, पृ. 221
14. तत्रैव, पृ. 224
15. तत्रैव, पृ. 292
16. तत्रैव, पृ. 326
17. तत्रैव, पृ. 328
18. तत्रैव, पृ. 328
19. कीचक वध-तन्त्रनाथझा, तृतीय सर्ग ।
20. मिथिलामोद-हेमवती विलाप मुंशलाक काव्य लेखप्रेषक श्रीजयगुदझा ।
21. अम्बचरित-सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स संस्कृत बुक डिपो, कचौड़ीगली, बनारस-1, सं० 2013, पृ.44
22. तत्रैव, पृ. 3
23. तत्रैव, पृ. 11
24. तत्रैव, पृ. 49
25. तत्रैव, पृ. 51
26. तत्रैव, पृ. 52
27. तत्रैव, पृ. 54
28. तत्रैव, पृ. 70
29. तत्रैव, पृ. 101
30. तत्रैव, पृ. 166
31. तत्रैव, पृ. 181
32. तत्रैव, पृ. 168
33. तत्रैव, पृ. 163
34. तत्रैव, पृ. 150
35. तत्रैव, पृ. 116
36. भारती (मैथिली मासिक) दरभंगा, फरवरी, 1937, पृ. 38
37. राधाविरह- कविचूड़ामणिकाशीकान्तमिश्र मधुप, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर पुबारि ड्योढ़ी, दरभंगा, 1969, पृ. 11
38. तत्रैव, पृ. 12
39. तत्रैव, पृ. 13
40. तत्रैव, पृ. 71
41. तत्रैव, पृ. 75
42. तत्रैव, पृ. 86
43. तत्रैव, पृ. 85
44. तत्रैव, पृ. 108
45. तत्रैव, पृ. 121-122
46. तत्रैव, पृ. 127
47. रुक्मिणी परिणय- श्रीबबुआजीझा अज्ञात, (मैथिली अकादमी), पटना, 1980, पृ. 32-33
48. तत्रैव, पृ. 41
49. तत्रैव, पृ. 116
50. संन्यासी-उपेन्द्रनाथझाव्यास, श्रीभवन, बोरिंगरोड, पटना- 800001, 1978, पृ.32
51. पतन-उपेन्द्रनाथझाव्यास, श्रीभवन, बोरिंग रोड, पटना-1, 76, पृ. 24 ।
52. तत्रैव, पृ. 34-35
53. तत्रैव, पृ. 56
54. उगना- सुरेन्द्रझासुमन, दरभंगा, 1982, पृ. 24-25

55. मूस महिमा- मथुरानन्दचौधरीमाधुर, वटुक कार्यालय, 1 एलनगंज रोड, प्रयाग-2, 1961, पृ. 12
56. लक्ष्मिरानी-केदारनाथ लाभ, भारतीभवन, पटना-4, 1960, पृ. 3
57. तत्रैव, पृ. 4
58. तत्रैव, पृ. 5
59. तत्रैव, पृ. 7
60. तत्रैव, पृ. 13
61. तत्रैव, पृ. 22
62. तत्रैव, पृ. 22
63. मैथिली क्रेस्टोमैथी- जी.ए. ग्रियर्सन, पृ. 24-29 ।
64. चन्द्ररचनावली- डा.विश्वेश्वरमिश्र, (मैथिली अकादमी), पटना, 1981, पृ. 313
65. तत्रैव, पृ. 82
66. तत्रैव, पृ. 63
67. तत्रैव, पृ. 83
68. मैथिली काव्यषट्रत्न कविवरसीतारामझा, मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवन, सी.के. 15/52 सुड़िया वाराणसी, 1968, पृ. 24
69. तत्रैव, पृ. 22
70. तत्रैव, पृ. 21
71. तत्रैव, पृ. 17
72. तत्रैव, पृ. 13
73. सीताराम झा-भीमनाथ झा, (साहित्य अकादमी), रवीन्द्र भवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-1, 1983, पृ. 78
74. परिचायिका- डा.भीमनाथझा, प.नी.प्रकाशन, मुसल्लहपुर पटना-6, 1985, पृ. 24
75. सरस्वती-श्रीत्रिलोकनाथमिश्र, राजप्रेस, दरभंगा, 1937, पृ. 20-21 ।
76. प्रेरणा-पुन्ज-काशीकान्तमिश्रमधुप, (मैथिली अकादमी), पटना- 1, 1980, पृ. 87-88 ।
77. प्रेरणापुन्ज, पृ. 39-40
78. पचमेर-अलि (काशीकान्त मिश्र मधुप) -पो.मो. कोर्थु (दरभंगा), 1949 पद सं. 1
79. तत्रैव, पृ.-पदसं.- 21
80. तत्रैव, पृ. 28
81. परिचय शतक-काशीकान्तमिश्र'मधुप', चिनगी प्रकाशन, बेलवागंज लहेरियासराय, दरभंगा, 1988, पृ. 29
82. तत्रैव, पृ. 18
83. मधुप: अमर कीर्ति कवि तोर- स.डा. असफीझा अमरेश मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, मदुलाल मल्लिक रोड, कलकत्ता-6, पृ. 381
84. द्वादशी-काशीकान्तमिश्रमधुप, शतदल संघ, कोर्थु, दरभंगा, 1984, पृ. 17-18
85. द्वादशी, पृ. 20
86. तत्रैव, पृ. 23
87. तत्रैव, पृ. 24
88. तत्रैव, पृ. 29
89. तत्रैव, पृ. 36
90. तत्रैव, पृ. 36-37
91. तत्रैव, पृ. 41
92. तत्रैव, पृ. 84
93. कविताकलाप-स.प्रो.डा.शंकरकुमारझा, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा 1970, पृ. 76
94. तत्रैव, पृ. 77
95. नवीन मैथिली साहित्य सुमन- स.प. श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमर, मैथिली ग्रंथमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1981, पृ. 75
96. स्वदेश (मैथिली मासिक), दरभंगा, अंक 3 वर्ष 1, पृ. 152
97. तत्रैव, वर्ष 1 अंक 4, पृ. 219
98. तत्रैव, वर्ष 1 अंक 4, पृ. 220
99. सनेस- सुरेन्द्रझासुमन, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1969, पृ. 10-11
100. तत्रैव, पृ. 14
101. तत्रैव, पृ. 14
102. प्रतिपदा- सुरेन्द्रझासुमन, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1984, पृ. 51
103. अन्योक्तिका- सुरेन्द्रझासुमन, दरभंगा, 1969, पृ. 13
104. तत्रैव, पृ. 14
105. तत्रैव, पृ. 32
106. तत्रैव, पृ. 33
107. तत्रैव, पृ. 35
108. तत्रैव, पृ. 36
109. ललनालहरी- सुरेन्द्रझासुमन, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1969, पृ. 9
110. तत्रैव, पद सं० 3
111. तत्रैव, पद सं० 4
112. तत्रैव, पद सं० 6
113. तत्रैव, पद सं० 13
114. तत्रैव, पद सं० 27
115. तत्रैव, पद सं० 29
116. तत्रैव, पद सं० 43
117. अर्चना- सुरेन्द्रझासुमन, दरभंगा, 1981, पृ. 16
118. तत्रैव, पृ. 16
119. तत्रैव, पृ. 27
120. तत्रैव, पृ. 17
121. तत्रैव, पृ. 29
122. तत्रैव, पृ. 31
123. चित्रा- यात्री, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1 बी सर पी.सी. बनर्जी रोड, प्रयाग 1390 साल पृ. 12
124. तत्रैव, पृ. 93
125. तत्रैव, पृ. 18
126. तत्रैव, पृ. 19
127. तत्रैव, पृ. 87
128. तत्रैव, पृ. 47-48
129. पत्रहीन नग्न गाछ- यात्री, मैथिली एकेडमी, पो०बा०नं० 67, इलाहाबाद, 1967, पृ. 51
130. तत्रैव, पृ. 57
131. तत्रैव, पृ. 54
132. प्रेमपत्रावली- दामोदरलालदास, बरहेता, लहेरियासराय, दरभंगा, 1948, पृ. 3
133. तत्रैव, पृ. 5-6
134. तत्रैव, पृ. 9
135. तत्रैव, पृ. 10-11
136. तत्रैव, पृ. 12-13
137. तत्रैव, पृ. 15
138. भारती (मैथिली मासिक), अगस्त 1937, पृ. 234
139. तत्रैव, पृ. 234, प्रेमपत्रावली, पृ. 28
140. प्रेमपत्रावली, पृ. 29
141. तत्रैव, पृ. 31-33
142. भारती (मैथिली मासिक), दरभंगा, दिस. -जनवरी 1937-38
143. तत्रैव
144. गुदगुदी- चन्द्रनाथमिश्रअमर, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 1353 साल पृ. 12-13
145. तत्रैव, पृ. 13
146. तत्रैव, पृ. 14
147. तत्रैव, पृ. 25
148. तत्रैव, पृ. 37
149. तत्रैव, पृ. 38-39
150. तत्रैव, पृ. 39
151. तत्रैव, पृ. 45

152. आरती-जगदीपनारायण दीपक, जगदम्बा प्रकाशन, स्नेह सदन, मदहर, बिठैल, दरभंगा सं० 2015, पृ. 45
153. तत्रैव, पृ. 22
154. तत्रैव, पृ. 23
155. तत्रैव, पृ. 24
156. तत्रैव, पृ. 25
157. तत्रैव, पृ. 27
158. तत्रैव, पृ. 29
159. मधुश्रावणी डा. शैलेन्द्रमोहनझा, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, 1959, पृ. 6
160. कविता संग्रह- सं. प्रो. आनन्दमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना-1, 1987, पृ. 122-153
161. मिथिला मिहिर, 22 अक्टूबर, 61
162. मिथिला मिहिर, 17 फरवरी 1963
163. कविता कलाप- सं. शंकरकुमारझा, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1970, पृ. 34
164. तत्रैव, पृ. 32
165. वैदेही (मैथिली मासिक), दरभंगा, 1971
166. गीतक फुलवारी- सं. परमानन्द । महारुद्र, भवानी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना-6, पृ. 41
167. तत्रैव, पृ. 39
168. जहिना छी तहिना- रवीन्द्रनाथठाकुर, विद्यापति पाकेट बुक्स, दरभंगा, 1965, पृ. 23-24
169. तत्रैव, पृ. 3
170. तत्रैव, पृ. 52
171. गीतक फुलवारी, पृ. 99
172. तत्रैव, पृ. 138
173. तत्रैव, पृ. 139
174. प्रणम्य देवता- हरिमोहनझा, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, 1949, पृ. 21
175. तत्रैव, पृ. 22
176. तत्रैव, पृ. 246
177. तत्रैव, पृ. 246
178. तत्रैव, पृ. 247
179. तत्रैव, पृ. 250-251
180. तत्रैव, पृ. 252-53
181. तत्रैव, पृ. 255
182. तत्रैव, पृ. 255
183. तत्रैव, पृ. 258
184. तत्रैव, पृ. 266
185. तत्रैव, पृ. 267-272
186. तत्रैव, पृ. 272
187. तत्रैव, पृ. 273
188. चर्चरी- हरिमोहनझा, मैथिली प्रकाशन, 6/1 वामन पाड़ालेन, कलकत्ता- 19, 1960, पृ. 210-11
189. तत्रैव, पृ. 213
190. तत्रैव, पृ. 213
191. चर्चरी, पृ. 228
192. रङ्गशाला- हरिमोहनझा, पुस्तक भंडार, पटना-4, पृ. 4
193. तत्रैव, पृ. 10
194. तत्रैव, पृ. 67
195. तत्रैव, पृ.
196. खट्टरककाक तरंग- प्रो. हरिमोहनझा, भारतीभवन, एक्जिबीशन रोड, पटना- 1, 1967, पृ. 39
197. तत्रैव, पृ. 149-150
198. तत्रैव, पृ. 160-161
199. तत्रैव, पृ. 215
200. तत्रैव, पृ. 215
201. कथासंग्रह- सं. डा. अरमेशपाठक, मैथिली अकादमी, पटना, 1984, पृ. 28

202. मैथिली प्रसिद्ध कथा- भाग 1, सं० डा० वासुकीनाथझा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1984, पृ. 107
203. तत्रैव, पृ. 108
204. मैथिली कथा सरिता- सं० मदनेश्वरमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1983, पृ. 44
205. तत्रैव, पृ. 44
206. तत्रैव, पृ. 19
207. टटकागप्प- सं० प्रबोधनारायणसिंह, मिथिलादर्शन प्रा०लि०, 14 बी ब्रजनाथ मित्र लेन, कलकत्ता-9, सम्वत् 2021, पृ. 55
208. एक खोपा तीन फाँक- रामदेवझा, सुधा प्रकाशन, दरभंगा, 1965, पृ. 8
209. तत्रैव, पृ. 8-9
210. मनुकसनातन- रामदेवझा, भारतीय प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, 1968, पृ. 2
211. तत्रैव, पृ. 51
212. मनुक सन्तान- रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, 1987
213. मैथिली कथा सरिता, पृ. 77
214. अश्रुकण- मनमोहनझा, ससिवपाही, 1978, पृ. 3-4
215. तत्रैव, पृ. 11
216. अश्रुकण- मनमोहनझा, गीताप्रेस, मुजफ्फरपुर, 1978, पृ. 33
217. मि०मि०, सितम्बर 1987
218. त्रिकोण- अशोक, उर्वशी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना-6, पृ. 10
219. मि०मि०, दिसम्बर 61
220. मि०मि०, 11 अगस्त 69
221. मि०मि०, अगस्त 76
222. मि०मि०, 6 सित. 64
223. मि०मि०, 18 फरवरी 62
224. मि०मि०, 14 सित० 77
225. मि०मि०, 17 दिस० 78
226. मि०मि०, 5 जुलाइ 81
227. मि०मि०, 8 नव० 70
228. मि०मि०, 7 जुलाइ 36
229. मैथिली प्रसिद्ध कथा- स० वासुकीनाथ झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना, पृ. 95
230. मि०मि०, 14 अक्टूबर 73
231. मि०मि०, 30 जुलाइ 67
232. मि०मि०, 15 दिसम्बर 63
233. मि०मि०, 11 जुलाइ 71
234. मि०मि०, 7 जून 64
235. मि०मि०, 16 दिसम्बर 71
236. मि०मि०, 2 अप्रैल 61
237. मि०मि०, 28 मार्च 65
238. मि०मि०, 28 अक्टूबर 76
239. मि०मि०, 25 अप्रैल 82
240. मि०मि०, 17 सितम्बर 61
241. मि०मि०, 6 जून 82
242. मि०मि०, 28 अप्रैल 74
243. मि०मि०, 1 जून 75
244. मि०मि०, 27 मइ 38
245. मि०मि०, 9 दिसम्बर 44
246. वैदेही,
247. वैदेही
248. मि०मि०, 3 अगस्त 80
249. मि०मि०, 21 अक्टूबर 38
250. मि०मि०, 31 अक्टूबर 82
251. मि०मि०, 6 मइ 71
252. मि०मि०, 19 दिसम्बर 71
253. मि०मि०, 18 फरवरी 68
254. मि०मि०, 26 दिसम्बर 82
255. मि०मि०, 25 जुलाइ 76

256. मि०मि०, 6 नवम्बर 77
257. मि०मि०, 19 जुलाइ 81
258. मि०मि०, 13 अगस्त 67
259. मि०मि०, 5 दिसम्बर 65
260. मि०मि०, 30 अक्टूबर 75
261. मि०मि०, 24 अगस्त 78
262. मि०मि०, 24 सितम्बर 78
263. मि०मि०, 18 मार्च 73
264. मैथिली साहित्यक इतिहास दुर्गानाथझाश्रीश, पृ. 172 उद्धृत
265. वैदेही, मार्च 90
266. वैदेही, मार्च 90
267. वैदेही, दिसम्बर 88
268. फूटल चूड़ी- विद्यानाथझा, विदित, एस. पी. कॉलेज, दुमका।
269. मिथिला दर्पण उपन्यास- पुण्यानन्दझा, जहानपुर, पलासी, पूर्णिया, 1925
270. तत्रैव, पृ. 1
271. तत्रैव, पृ. 11
272. तत्रैव, पृ. 30
273. तत्रैव, पृ. 145-146
274. तत्रैव, पृ. 185
275. कन्यादान- प्रो.हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमरजाजितपुर वैशाली, 1982, पृ. 11
276. तत्रैव, पृ. 23
277. तत्रैव, पृ. 18
278. तत्रैव, पृ. 22
279. तत्रैव, पृ. 23
280. तत्रैव, पृ. 25
281. तत्रैव, पृ. 26
282. तत्रैव, पृ. 31
283. तत्रैव, पृ. 33
284. तत्रैव, पृ. 33
285. तत्रैव, पृ. 9
286. द्विरागमन- हरिमोहनझा, पुस्तकभंडार, पटना-4, पृ. 18-21
287. तत्रैव, पृ. 61
288. तत्रैव, पृ. 107
289. तत्रैव, पृ. 31
290. तत्रैव, पृ. 42
291. तत्रैव, पृ. 75
292. तत्रैव, पृ. 75
293. भलमानुस- योगानन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना-1, 1987, पृ. 14
294. तत्रैव, पृ. 37
295. तत्रैव, पृ. 40
296. तत्रैव, पृ. 82
297. तत्रैव, पृ. 48
298. तत्रैव, पृ. 59-60
299. नवतुरिया-यात्री (नागार्जुन), 1965, पृ.42
300. तत्रैव, पृ. 47
301. तत्रैव, पृ. 60
302. तत्रैव, पृ. 116-117
303. तत्रैव, पृ. 153
304. विदागरी- चन्द्रनाथमिश्रअमर, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1971, पृ. 4
305. तत्रैव, पृ. 57
306. तत्रैव, पृ. 63-64
307. तत्रैव, पृ. 76-77
308. पृथ्वीपुत्र- ललित, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965, पृ. 70
309. तत्रैव, पृ. 137
310. तत्रैव, पृ. 138
310. हमरा लग रहब -प्रभासकुमारचौधरी, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ. 52
311. नवारम्भ- प्रभासकुमारचौधरी, 217, पाटलिपुत्र कालनी, पटना, 1979, पृ. 8

312. मरीचिका- लिली रे, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 4
313. तत्रैव, पृ. 23
314. तत्रैव, पृ. 98
315. तत्रैव, पृ. 101
316. तत्रैव, पृ. 101
317. तत्रैव, पृ. 119
318. मि०मि०, 20 जुलाइ 70
319. अयाची- काशीनाथमिश्र, ग्रन्थालय, प्रकाशन, दरभंगा, 1966, प्राक्कथन परिधान।
320. विभाजन- श्रीशम्भुनाथझा, दीनबन्धु निकेतन, इस्छपुरागनगर, सनकोर्थु, मधुबनी 1985।
321. सोहाग- प्रभुनारायणझा प्रदीप-ग्रन्थालय, प्रकाशन, दरभंगा 1971, पृ. 2
322. तत्रैव, पृ. 6
323. चौनीक लड्डू-ईशनाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1964, पृ. 5
324. अन्तिम गहना- रोहिणीरमणझा, चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापतिमार्ग, पटना 1989, पृ. 3
325. पुनिक मतिभ्रम- योगानन्दझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1969, पृ. 1
326. प्रतिनिधि एकांकी, पृ. 47
327. एकांकी संग्रह- मैथिली अकादमी, पृ. 59
328. तत्रैव, पृ. 67
329. नव एकांकी- सं. महेश्वरीसिंहमहेश, मैथिली प्रकाशन, भागलपुर, पृ. 87
330. एकांकी संग्रह- मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 28
331. तत्रैव, पृ. 60
332. अन्तिम गहना, पृ. 46
333. कविवर जीवनझा रचनावली- सं चन्द्रनाथमिश्रअमर, डा.रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ. 11
334. तत्रैव, पृ. 13
335. तत्रैव, पृ. 95
336. तत्रैव, पृ. 26
337. तत्रैव, पृ. 29
338. तत्रैव, पृ. 41
339. सावित्री सत्यवान, महाकवि लालदास, मैथिली अकादमी, पटना, 1985, पृ. 35-36
340. तत्रैव, पृ. 56
341. एकांकी संग्रह- अकादमी, पृ. 254
342. एकांकी संग्रह- अकादमी, पृ. 256
343. मैथिली गद्य कुसुम माला, सं. डा. श्रीउमेशमिश्र, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1939, पृ. 37
344. मैथिली गद्य पद्य संग्रह-बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कमिटि लिमिटेड, पृ. 21
345. तत्रैव, पृ. 41
346. तत्रैव, पृ. 41
347. मि०मि०, 6 जून 71
348. मि०मि०, 26 जून 71
349. मि०मि०, 28 जुलाइ 71
350. मि०मि०, 27 अगस्त 72
351. मि०मि०, 15 जनवरी 61
352. मि०मि०, 4 जनवरी 62
353. मि०मि०, 28 फरवरी 71
354. मि०मि०, 4 अप्रैल 71
355. मि०मि०, 25 अक्टूबर 70
356. मि०मि०, 11 फरवरी 68
357. मि०मि०, 29 अक्टूबर 78, 5 नवम्बर 78
358. मि०मि०, 17 मइ 81
359. संकल्प स्मारिका, संकल्पलोक, लहेरियासराय, 1984
360. मिथिला भारती, मैथिली त्रैमासिक, अंक 3, भाग-4, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना जनवरी, दिसम्बर 1971

361. मिथिला चित्रकला- उपेन्द्रमहारथी, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1
362. मि.मि., 3 अप्रैल 82
363. मि.मि., 21 अप्रैल 68
364. मि.मि., 9 फरवरी 75
365. मि.मि., 25 जुलाइ 70
366. मि.मि., 15 जनवरी 61
367. मि.मि., 30 सितम्बर 62
368. मि.मि., 21 मार्च 82
369. मि.मि., 28 अगस्त 77
370. मि.मि., 6 जून 76
371. मि.मि., मिथिलांक
372. मि.मि., 10 दिसम्बर 61
373. मिथिला संस्कार गीत- सं.- कामेश्वरीदेवी, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
374. मिथिला संस्कार गीत- सं०- 53
375. मैथिली व्यवहारगीत संग्रह-सं. डा. इन्द्रकान्तझा कमल प्रकाशन, नयाटोला, पटना-4, 1987, गीत सं. 39
376. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं.- 81
377. तत्रैव- गीत सं.- 82
378. गीतनाद, गीत सं. 346
379. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.- 23
380. तत्रैव- गीत सं.- 38
381. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं.- 79
382. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.- 37
383. गीतनाद, गीत सं. 355
384. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं.- 89
385. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-147
386. तत्रैव- गीत सं.- 149
387. तत्रैव- गीत सं.- 150
388. मैथिली लोकगीत- रामइकबालसिंहराकेश, पृ. 92
389. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं.- 143
390. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.- 93
391. तत्रैव- गीत सं.- 107
392. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 136
393. तत्रैव- गीत सं.- 137
394. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-190
395. तत्रैव- गीत सं.- 194
396. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-222
397. तत्रैव- गीत सं.- 253
398. गीतनाद, गीत सं.- 614
399. तत्रैव- गीत सं.- 271
400. तत्रैव- गीत सं.- 273
401. तत्रैव- गीत सं.- 273
402. तत्रैव- गीत सं.- 278
403. तत्रैव- गीत सं.- 284
404. तत्रैव- गीत सं.- 281
405. तत्रैव- गीत सं.- 283
406. तत्रैव- गीत सं.- 288
407. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 185
408. तत्रैव, पृ. 185
409. गीतनाद, गीत सं.- 585
410. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-290
411. गीतनाद, गीत सं.- 530
412. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं.- 271
413. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-352
414. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 295-298
415. तत्रैव, पृ. 295-298
416. गीतनाद, गीत सं.- 235
417. तत्रैव, गीत सं०- 255
418. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-504
419. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं०- 389
420. तत्रैव, गीत सं०- 392
421. गीतनाद, गीत सं०- 172
422. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 208

423. तत्रैव, पृ. 215-217
424. तत्रैव, पृ. 229-230
425. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं०- 374
426. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-517
427. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 230-231
428. तत्रैव, पृ. 246
429. तत्रैव, पृ. 263-264
430. गीतनाद, गीत सं०- 144
431. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं०- 120
432. गीतनाद, गीत सं०- 44
433. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह, गीत सं.-600
434. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 163-164
435. मिथिला संस्कार गीत- गीत सं०- 294
436. लोककंठ सँ
437. मैथिली लोकगीत- राम इकबाल सिंह सं० 2012, पृ. 389-90
438. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 391
439. तत्रैव, पृ. 393
440. तत्रैव, पृ. 392
441. तत्रैव, पृ. 395
442. तत्रैव, पृ. 399
443. तत्रैव, पृ. 402-403
444. तत्रैव, पृ. 401-402
445. गीतनाद सं. विभूतिआनन्द, भवानी प्रकाशन, पटना, 1986 गीत सं. 292
446. गीतनाद, गीत सं०- 199
447. तत्रैव, गीत सं०- 207
448. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 381
449. गीतनाद, गीत सं०- 210
450. मैथिली लोकगीत- राकेश, पृ. 385
451. तत्रैव, पृ. 378
452. सामाचकेबा- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1972, पृ. 3
453. लोककंठ सँ
454. गीतनाद, गीत सं०- 268
455. तत्रैव, गीत सं०- 267
456. मैथिली साहित्यक रूपरेखा (द्वितीय खण्ड) - स.डा.वासुकीनाथझा, चेतना समिति, पटना, 1974, पृ. 17
457. मधुश्रावणी पूजा कथा- तेजनाथझा, कन्हैयालाल कृष्णदास, कचहरी चौक, लहेरियासराय, दरभंगा, सन 1983, पृ. 73-79
458. तत्रैव, पृ. 83-84
459. लोकगाथा विवेचन- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1974, पृ. 16
460. तत्रैव, पृ. 40
461. तत्रैव, पृ. 29
462. तत्रैव, पृ. 40-41
463. ब्रह्मग्राम- प्रफुल्लकुमारसिंहमौन, बुक सेन्टर, टावर चौक, दरभंगा, 1972, पृ. 11
464. लोकजीवन ओ लोक साहित्य- डा. योगानन्दझा, कीर्तिलता को-आपरेटिव सोसाइटी, दरभंगा, 1986, पृ. 33
465. तत्रैव, पृ. 34
466. तत्रैव, पृ. 69
467. तत्रैव, पृ. 69-70
468. तत्रैव, पृ. 70
469. तत्रैव, पृ. 70
470. तत्रैव, पृ. 70
471. तत्रैव, पृ. 71
472. तत्रैव, पृ. 45
473. तत्रैव, पृ. 41
474. नैना योगिन-राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1973, पृ. 28
475. तत्रैव, पृ. 30-31
476. तत्रैव, पृ. 30

●

सप्तम अध्याय

वेशक शब्दावली

आधुनिक मैथिली भाषामे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक आयाम प्राचीन परम्परागत शब्दावली, सांस्कृतिक संक्रमणजन्य आगत शब्दावली ओ देशज शब्दावलीक संगहि नित्य नव वैज्ञानिक आविष्कार, पारस्परिक सम्पर्क ओ रमणीय फैशनजन्य शब्दसमूह धरि विस्तृत अछि ।

वेश– वेशसँ सम्बद्ध शब्दावलीमे प्रमुख अछि वस्त्रक शब्दावली । वस्त्र लज्जा निवारण, सौन्दर्य संवर्द्धन, अंगरक्षण ओ व्यक्तित्वमे निखार अनबाक संगहि सभ्यता ओ सांस्कृतिक कोटि निदर्शनक हेतु प्रयुक्त होइत रहल अछि । एतदतिरिक्त वस्त्र विन्याससँ सम्बद्ध ओहनो शब्द अनुपेक्षणीय अछि जे परिधानक अतिरिक्त उपयोगमे अत्यावश्यक थिक आ जीवनधारणसँ सम्पृक्त रहल अछि । छाता, जूता, लाठी एवं वस्त्रगृहक कतिपय प्रभेदसँ सम्बद्ध शब्दावली सेहो वेशक शब्दावली मध्य अन्तर्मुक्त कऽ लेल गेल अछि ।

वेशक सामान्य शब्द– वेशक हेतु सामान्य शब्द वस्त्र । **बस्तर** । **परिधान** । **कपड़ा** अछि । परिधान शब्द आधुनिक मैथिली भाषामे **पहिरन** शब्द रूपमे जीवित अछि **परिधान / परिहान / परिहन / पहिरन** । पहिरनक हेतु प्राचीन मैथिलीमे **परिहन** शब्दक व्यापक प्रयोग भेल अछि । ई शब्द शरीरकेँ आवृत करबाक वस्त्रक हेतु प्रयुक्त अछि । एकर साम्प्रतिक रूप **पहिरन / पहिरना** अछि । प्राचीन मैथिलीमे एकर क्रियापद **परिहब** छल । साम्प्रतिक मैथिलीमे पहिरब क्रियापद प्रचलित अछि । दैनन्दिन जीवनमे पहिरबाक वस्त्रकेँ **पहिराउ** कहल जाइछ । जे वस्त्र विशिष्ट अवसरपर पहिरबाक हेतु राखल रहैछ– ओकरा **धराउ** कहल जाइछ । ओढ़बाक हेतु व्यवहृत वस्त्रकेँ **ओढ़न / ओढ़ना** कहल जाइछ । **ओढ़न-पहिरन** तथा **ओढ़ना-पहिरना** युग्म शब्दक रूपमे व्यवहृत होइछ । कपड़ाक छोट टुकड़ीक हेतु **लत्ता** (सं०लक्तक) शब्दक व्यवहार अछि । **कपड़ा-लत्ता** युग्म शब्दक रूपमे वस्त्र मात्रक हेतु व्यवहृत होइछ । वेशक हेतु **नूआ** शब्दक सेहो सामान्य प्रयोग होइछ । एही अर्थमे **नूआ-बस्तर** युग्मक प्रयोग सेहो देखल जाइछ ।

वस्त्रक खण्डित होयबाक क्रिया **फाटब** होइछ । फाटल पुरान वस्त्रखण्डकेँ **गुदरी** कहल जाइछ । अत्यन्त जर्जर गुदरीकेँ **चेथड़ी** कहल जाइछ । वस्त्रक जर्जर ओ अनेकशः खण्डित होयबाक क्रिया **गुदरी-गुदरी होयब** कहल जाइछ । **गुदरी-पुरान** शब्द फाटल-पुरान वस्त्र खंडक हेतु प्रयुक्त होइछ । **अमरकोष**मे फाटल पुरान वस्त्रक हेतु **पटच्चर** शब्द भेटैत अछि (216 I 115) । **फटीचर** शब्द एकरे विकसित रूप बुझना जाइछ । सम्प्रति ई शब्द ओहन व्यक्तिक विशेषणक रूपमे प्रयुक्त अछि जे अल्प आयवर्गक तथा **फाटलपुरान** वस्त्र धारण कैनिहार होथि ।

आइ कालि कपड़ाक विभिन्न प्रभेद सभक व्यवहार होइछ । **ऊनी, सूती** ओ **रेशमी** वस्त्रक अतिरिक्त रासायनिक सूतसँ बनल वस्त्रक अनेक प्रभेद जनप्रचलित अछि । एहि वस्त्र प्रभेद सभक नाम, निर्माण स्थल, निर्माता, रंग, आधार सामग्री, गुण आदिक आधारपर राखल बुझना जाइछ । चरखा द्वारा काटल सूतसँ हस्तचालित करघा पर बूनल सूती वस्त्रक प्रभेदकेँ **खादी/खाधी/खद्दर** कहल जाइछ । जोलहा द्वारा मशीन निर्मित सूतसँ करघापर बूनल वस्त्रकेँ **जोलही/जोलहउ /जोलहंडी** कहल जाइछ । जे वस्त्र मोटामे बान्हि गामे गाम घूमि कऽ बेचल जाइछ से **मटिआ / मोटिया** कहल जाइछ । अत्यन्त मोट सूतसँ निर्मित कपड़ाक प्रभेद **ननगिलाट** कहल जाइछ । एक रंगमे राङल कपड़ाकेँ **एकरंगा** कहल जाइछ । सम्प्रति ई शब्द लाल रंगक वस्त्रविशेषक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । तीसीक छालसँ निर्मित वस्त्रकेँ **तिसिऔटा** कहल जाइछ । वर्गाकार आकृतिसँ युक्त वस्त्रकेँ **चारखाना / चेक** कहल जाइछ । फूल-पत्तीक आकृतिसँ युक्त वस्त्रकेँ **छींट** कहल जाइछ । निर्माणक पश्चात् नीक जकाँ धो कय वस्त्रकेँ विरंजित कयलाक बाद प्राप्त वस्त्रकेँ **धोआ** तथा अविरंजित वस्त्रकेँ **कोरा** कहल जाइछ । सफेद रंगक सामान्य वस्त्रक एकटा प्रभेद **लट्ठा** कहल जाइछ । डोरीक आकृतिसँ युक्त वस्त्रकेँ **डोरिया** कहल जाइछ । एही तरहेँ वस्त्रक विभिन्न प्रभेद **नयनसुख, मलमल, छालती, साटन, मखमल, खासा, अद्धी, मखमल, सालू, फरजी, फरदी, गजी, गन्जी, फरगन्जी** आदि होइछ । रासायनिक वस्त्रक प्रभेद **टेरीन, टेरीलीन** कहल जाइछ । सूत फैटल रासायनिक सूतक वस्त्रकेँ **टेरीकॉट / टेरीकॉटन** कहल जाइछ । रेशमीवस्त्रक विभिन्न प्रभेद सभ अछि– **अद्धी, तसर, बनात, बाफदा** आदि । एकहरा सूतसँ बनल वस्त्रकेँ **एकसूती** तथा दोहरा सूतसँ बनल वस्त्रकेँ **दुसुत्ती** कहल जाइछ ।

कपड़ामे नामा नामी सूतकेँ **तानी** ओ चौड़ा चौड़ी सूत के **भरनी** कहल जाइछ । तानीक सम्पूर्ण लम्बाइसँ सम्बद्ध वस्त्रकेँ **थान** कहल जाइछ । थानक चौड़ाइकेँ **पाट / डरिया / अरज / अर्ज** कहल जाइत छैक ।

बिरल तानी ओ भरनीसँ बिनल वस्त्रकेँ **फसरल / खिसरल** कहल जाइत छैक । तानी ओ भरनी कसल रहलापर वस्त्रक बिनाइकेँ **गस्सल / गफ / गफस** कहल जाइत

छैक । अल्प तनावसँ वस्त्रक तानी वा भरनीक टूटि जयबाक क्रिया **मसकब / फसकब** होइछ । अत्यधिक खिसरल वस्त्रकेँ **जलफाँफी / झलफाँफी** कहल जाइत छैक । पर्दा करबामे असमर्थ कपड़ाकेँ **झलझल / झलझली** कहल जाइत छैक । झलमल ओ झलफाँफी कपड़ाक हेतु **दँतखिसोट / गिदरनोँच / कुकुरमुक्की** आदि शब्द प्रचलित अछि । कपड़ाक सूतमे अवगुण्ठित विजातीय पदार्थकेँ **फुटका** कहल जाइछ । छोट फुटकाक हेतु **फुटकी** शब्द भेँटैत अछि । वस्त्रकेँ बिनबाकाल उचित संख्यामे तानी वा भरनी नहि देलासँ जे रिक्त स्थान बनैछ ओकरा **उचिला** कहल जाइत छैक । साम्प्रतिक भाषामे ई शब्द **उचिला-चाल** रूपमे चंचल ओ अन्यमनस्क प्रकृतिक हेतु प्रयुक्त अछि । कपड़ाक अत्यन्त जर्जर भऽ फटबाक हेतु **रित्तीरित्ती / चुनी चुनी** होयब शब्दक प्रयोग होइछ । अत्यन्त दुर्बल कपड़ाक मसकबाक क्रिया **कपड़ा बहब** होइछ ।

कपड़ाक टुकड़ीक हेतु **पाट / पाटी / पट्टी** शब्दक व्यवहार अछि । कपड़ाकेँ कतरबाक हेतु **कैंची** नामक औजारक प्रयोग होइछ । कतहु कतहु एकरा **कतरनी** सेहो कहल जाइछ । काटल कपड़ाकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **सीब / सीयब** होइछ । सीबाक हेतु **सुइ** नामक औजारक उपयोग होइछ । सीबाक क्रिया तथा मजदूरी के **सियाइ /सिलाइ** कहल जाइत छैक । तनावक प्रयोग द्वारा कपड़ाकेँ खंडित करबाक क्रिया **फारब /चीरब** होइछ । कपड़ाकेँ सीलाक उत्तर जे आकृति सन्धिस्थलपर बनैत छैक ओ **सीयन/सीयनि** कहल जाइत छैक । सन्धिस्थलक हेतु **जोड़** शब्दक प्रयोग होइछ । व्यक्तिक अंग ओ कपड़ाक टुकड़ीकेँ नापि कऽ वस्त्र बनयबाक प्रक्रियामे वस्त्र ओ कपड़ाक अनुकूलन क्रिया **भेँआरब / भजारब / ब्योँतब** कहल जाइछ ।

भेँआरबाक क्रममे शरीरक विभिन्न अंगक **लम्बाइ, चौड़ाइ, मोटाइ** आदि ज्ञात कहल जाइछ । एहि आयामकेँ ज्ञात करबाक क्रिया **नापब** होइछ । नपला उत्तर ज्ञात आयामकेँ **नाप / नापी** कहल जाइछ ।

नापीक क्रममे वस्त्रक अनुरूप शरीरक लम्बाइकेँ **लम्बाइ / नमाइ / नमती**, डाँड़क नीचाक घेराकेँ **कमर**, छातीक चौड़ाइकेँ **सीना**, गर्दनिक गोलाइकेँ **गला**, नितम्बक चौड़ाइकेँ **हीप / सीट**, कान्हसँ पाञ्जर धरिक दूरीकेँ **सेल्त**, दुनू कनहाक बीचक दूरीकेँ **पुट**, बाँहिक लम्बाइकेँ **आस्तीन / बाहु / बाहू / बहुँआ** । काँखलग बाँहिक गोलाइकेँ **हाला** ओ पैरक निचला भागक घेराकेँ **मोहरा । मोहरी** कहल जाइछ ।

कपड़ा सीबाक हेतु तानीक अनुरूप काटि कऽ ब्योँत कयल जाइछ । एहि कटाइकेँ **आरा कटाइ** कहल जाइछ । भरनीक अनुरूप काटल कपड़ाक काटकेँ **खड़ा/ तीरा** कहल जाइछ । सीबाक हेतु कतरल कपड़ाक टूकड़ी सभकेँ **खर्चा / जोगाड़** कहल जाइछ । आरा काटक अनुरूप वस्त्रक सिलाइकेँ **सुरेब / सुरेबी / सुरेबगर** कहल जाइछ । खड़ा काटक अनुरूप वस्त्रक सिलाइकेँ **उरेब / उरेबी / उरेबगर** कहल जाइछ । वस्त्र

सीबा काल कपड़ाक अतिरिक्त टुकड़ीकेँ काटि कऽ फेंकि देल जाइछ । एहि टुकड़ी सभकेँ **छांट / कतरन** कहल जाइछ । काट-छाँट शब्द उपयोगी ओ अनुपयोगी कपड़ाक पृथक्करणक हेतु प्रयुक्त शब्द थिक ।

कपड़ाक सियाइमे अनेक विधिक उपयोग देखल जाइछ । दूर दूर पर सूचि क्रिया द्वारा कयल गेल क्रमिक सियाइ करबाक क्रिया **टाँकब / खीलब / गूलब** होइछ । टँकला उत्तर उत्पन्न सियाइकेँ **लड़र / कच्ची सिलाइ / टाँक / टाँका** कहल जाइछ । टाँकामे दू पैसानक बीचक दूरी **टोप** कहल जाइछ । जखन एक टोप छोड़ि कऽ सूचिक्रिया द्वारा टाँका देल जाइछ तँ सिलाइक ई विशेष प्रकार **बखिया** कहल जाइछ । बखिया करबाक क्रिया **बखिआयब** होइछ । कपड़ाक किनारकेँ मोड़िकऽ उपरका ओ निचला परतकेँ लैत कयल गेल सियाइकेँ **तुरपन / तुरपइ / तुरपाइ । हेम** (अं०) कहल जाइछ । तुरपनक हेतु कपड़ाक कोरवला भागकेँ किञ्चित मोड़ि कऽ बामा हाथक अठेँठा ओ अनामिकासँ पकड़बाक क्रिया **अठेँठिआएब** होइछ । वृत्तक परिधिक अनुरूप क्रमिक रूपेँ सीबाक क्रिया **मेढ़ब** होइछ । कपड़ाक कोरकेँ मोड़ि कऽ टँकला उत्तर उत्पन्न सियाइकेँ **दरज** कहल जाइछ । अत्यन्त कम मोड़ दऽ कयल गेल सियाइकेँ **गोलदरज** कहल जाइछ । अपेक्षाकृत अधिक मोड़ दऽ कयल गेल सिलाइक एक गोट प्रभेदकेँ **इमलपत्ती** कहल जाइछ । खूब चाकर मोड़ दऽ कयल गेल सियाइकेँ **चौरा** कहल जाइछ । बखिऔलासँ उत्पन्न सियाइकेँ **बखिया / बखेया / पक्की सिलाइ** कहल जाइछ । कोरपर चाकर मोड़ दऽ कयल गेल बखियाकेँ **चौंपा बखिया** कहल जाइछ । मेढ़बाक विधिसँ कयल गेल सियाइकेँ **काजटाँका** कहल जाइछ । लहरिक आकृतिक सियाइकेँ **काँटा फोड़ी बखिया** कहल जाइछ । सलवार, साया आदि निचलका भागपर बनाओल आकृतिक सियाइकेँ **सिंघारा** कहल जाइछ । सिंघारामे जखन सियाइ क्षैतिज वा उर्द्धाधारमे एकल कयल जाइछ तँ एहि सियाइकेँ **लक्खी / बाकुच** कहल जाइछ ।

जरल अथवा काटल कपड़ाक खाली भागमे सुइ द्वारा तानी-भरनीक बुनाइकेँ **रफू/ रफ्फू** कहल जाइछ । रफू कयनिहार कारीगरकेँ **रफूगर** कहल जाइछ । कपड़ामे कोनो वस्तु फँसि गेलापर तनाव उत्पन्न भेने कपड़ाक फटलासँ उत्पन्न आकृति **खोँच** कहल जाइछ । खोँचक फटलाहा भागमे रफू द्वारा जालक आकृति बिनलापर ओहि बिनाइक प्रभेद **जाली** कहल जाइछ । कपड़ापर सूची क्रिया द्वारा फूल पत्ती आदिकेँ उखाड़बाक क्रिया **काढ़ब** होइछ । काढ़ला उत्तर उत्पन्न आकृति **कसीदा / कसिदा / काम काज** कहल जाइछ । कसीदाक हेतु धातुक तारक सेहो व्यवहार होइछ । एकरा **जड़ी** कहल जाइत छैक । कपड़ामे जड़ी सम्बद्ध करबाक क्रिया **जड़ब** होइछ । काढ़ल फूलपत्तीकेँ **बेल / बेलबूटा / बूटा / बुट्टा** कहल जाइछ । छोट बेलकेँ **बूटी / बुट्टी** कहल जाइछ ।

सम्प्रति स्थूल वस्त्रक दू भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु सीप, काबकड़ा अथवा

धातुक एकटा वस्तुक उपयोग होइछ । एकरा **बटम** / **बटाम** / **बट्टम** / **बुट्टम** / **बुटाम** / **बुताम** कहल जाइत छैक ।

कपड़ाक जाहि भागपर बट्टम लगाओल जाइत छैक ओ भाग दोहराओल रहैत छैक । एहि भागकेँ **बटनपट्टी** कहल जाइत छैक । बटनकेँ कपड़ाक दोसर भागमे कयल छेदमे सम्बद्ध कयल जाइछ । एहि छेदकेँ **काज** कहल जाइछ । काजवला भागकेँ **काजपट्टी** कहल जाइछ । सियइक हेतु सूतकेँ **ताग** / **धाग** / **धागा** सेहो कहल जाइछ ।

पूर्वमे बटनक बदला कपड़ाक गोल कऽ सीयल पिंडक उपयोग होइत छल । एकरा **घुण्डी** / **मुंडी** / **घुण्डी** कहल जाइत छलैक । घुण्डीमे कपड़ाक दोसर भागकेँ सम्बद्ध करबाक कपड़ाक डोरी सदृश आकृतिक अग्रभागमे बनाओल वलयाकृतिकेँ **मुन्ही**/ **फनकी** / **फनुकी** कहल जाइत छल । कपड़ाक दू भागकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु रस्सी सदृश आकृतिकेँ **बन** / **बन्न** / **बन्द** कहल जाइत छलैक ।

फाटल कपड़ामे जोड़ल कपड़ाक टुकड़ीकेँ **चेफड़ी** / **चिप्पी** / **पेओन** / **पेबन्द** / **पैबन्द** / **पाटी** / **पट्टी** कहल जाइछ । पेओनक हेतु प्रयुक्त वस्त्रखंडकेँ **चेफड़ी** कहल जाइछ । वस्त्रपर उत्पन्न सायास सौन्दर्यपूर्ण संकोचकेँ **चून** / **चुन्नट** / **चुन्नन** कहल जाइछ । स्वत: संकोच उत्पन्न होयबाक क्रियाकेँ **घोकचब** कहल जाइछ । चुन्नट उत्पन्न करबाक क्रिया **चुनिआयब** होइछ । कोनो वस्त्रक छोरपर चुन्नन दऽ सीयल दोसर वस्त्र-प्रान्तकेँ **झालर** / **झालरि** कहल जाइछ । झालरसँ युक्त वस्त्रकेँ **झालरदार** कहल जाइछ । झालरक स्थानमे प्रयुक्त चुन्नन रहित कम चाकर वस्त्रखंडकेँ **मगजी** कहल जाइछ । मगजी अथवा झालरमे सीयल दोसर झालरकेँ **सञ्जाप** / **सञ्जाफ** कहल जाइछ । स्यूत वस्त्रमे कपड़ाक दोहराओल वस्त्रखंडकेँ **पट्टी** कहल जाइछ । कपड़ाक संकुचित भागकेँ **सल** कहल जाइछ । कपड़ाक तनावक कारणेँ फाटल भागपर बनल आकृतिकेँ **चीरक** / **चिरक्का** कहल जाइछ ।

जे कपड़ा शरीरमे अत्यन्त कसल बुझना जाइछ ओकरा **कसकस** कहल जाइछ । शरीरक नापसँ नम्हर कपड़ाकेँ **फल्लर**/**ढकढोल** कहल जाइछ । उपयुक्त नापसँ छोट वस्त्रकेँ **ओछ** कहल जाइछ । वस्त्रक जाहि भागमे विभिन्न खण्डकेँ जोड़बाक स्थिति स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ, से भाग **उनटा**/**उल्टा** तथा तकर विपरीत भाग **सुल्टा**/**सुनटा** कहल जाइछ ।

विशिष्ट परिधानक हेतु **लिबास** / **लेबास** / **पोशाक** शब्द प्रचलित अछि । सरकारी कर्मचारीक विशिष्ट लेबासकेँ **उर्दी** कहल जाइछ । पहिरनक हेतु **पहिरावा** ओ ओढ़नक हेतु **ओढ़ावा** शब्द सेहो प्रचलित अछि । **पहिरावा, ओढ़ावा** युग्म शब्दक रूपमे व्यवहृत होइछ ।

कपड़ाकेँ साफ करबाक क्रिया **धोब** / **धोअब** / **साफ करब** होइछ । एहि कार्य व्यापारसँ आजीविका ग्रहण करयवला जाति विशेष **धोबि** / **साफी** कहल जाइछ । वस्त्रमे

बान्हल कपड़ाक समूहकेँ **मोटा** / **मेठा** कहल जाइछ । पैघ ओ चौखूट मेठाकेँ **गाँठ** / **गेँठ** कहल जाइछ । मोटाक हेतु आधार-वस्त्रकेँ **बैठन** / **बैठ** / **मोटबन्हना** कहल जाइछ । छोट मोटाकेँ **मोटरी** ओ अत्यन्त छोट मोटरीकेँ **गेठरी** / **गठरी** कहल जाइछ । मोटा बान्हि कऽ वस्त्र बेचनिहार व्यापारी **कपड़िया** कहल जाइछ । कान्हमे लटकाओल वस्त्रबद्ध मोटाकेँ **बकुच्चा** कहल जाइछ । छोट बकुच्चाकेँ **बकुच्ची** कहल जाइछ ।

कपड़ाक किंचित भागकेँ हाथपर उठाय उठाय जमीनपर पटकबाक क्रिया **खींचब** / **फींचब** होइछ । मुङरा द्वारा वस्त्रपर चोट कऽ साफ करबाक सेहो व्यवहार अछि । मुङरासँ वस्त्र पर आघात करबाक क्रिया **पीटब** होइछ । साफ करबाक क्रममे कपड़ाकेँ पानिक सतह पर छितरयबाक क्रिया **फलहारब** / **फलकारब** / **फलहोरबा** होइछ । फलहारबाक बाद कपड़ाकेँ दूनू हाथेँ मलिकऽ साफ करबाक क्रिया **पखारब** / **खँघारब** होइछ । कपड़ाकेँ बेर-बेर पानिमे डुबायब ओ उपर करबाक क्रिया **कचारब** होइछ । जलक आघात द्वारा मैलीकेँ हटयबाक क्रिया **धोखारब** होइछ ।

धोबि कपड़ा साफ करबाक हेतु **सज्जी** माटिक व्यवहार करैत अछि । सामान्य जनजीवनमे **सोडा** नामक रसायनक संग कपड़ाकेँ उसीनिकऽ साफ कयल जाइछ । आइकालि कपड़ा साफ करबाक विभिन्न प्रकारक **साबुन** ओ विरंजक **चूर्णक** व्यवहार होइछ जकर सभक नाम कम्पनीक वैविध्यपर आधारित होयबाक कारणेँ परिभाषिक स्वरूप नहि पकड़ि सकल अछि । दग्गी लागल कपड़ामे दग्गीक स्थानपर गोबर लगाय पानिक सतहपर पसारि रौदमे विरंजन कराओल जाइछ । एहन कपड़ाकेँ **गोबरझार** कहल जाइछ ।

कपड़ाकेँ मोड़िकऽ रखबाक क्रिया **चौपतब** / **चौपतब** / **तहिआएब** / **सैंतब** होइछ । चौपेतला उतर बनल परतकेँ **तह** कहल जाइछ । तह लागल कपड़ाकेँ **तहौआ** कहल जाइछ । तहौआ कपड़ाक बाहरी सतहपर लोहा देबाक क्रिया **सजायब** होइछ । सजाओल कपड़ाकेँ **तहदर्ज** कहल जाइछ । लोहा देबाक क्रिया **बनायब** होइछ । कपड़ाकेँ कड़ा करबाक हेतु कपड़ाकेँ माँड़युक्त जलमे डुबाओल जाइछ । एहि प्रक्रियाकेँ कड़ा करबाक हेतु कपड़ाकेँ माँड़युक्त जलमे डुबाओल जाइछ । एहि प्रक्रियाकेँ **माँड़िआयब** कहल जाइछ । माँड़क स्थानपर साबूदाना आदि लसलस पदार्थक घोलक सेहो उपयोग होइछ । लोहा देबासँ पूर्व कपड़ापर देल पानिक फुहारकेँ **छींटा** / **छिब्बा** / **नम** कहल जाइछ ।

उज्जर कपड़ाकेँ किञ्चित नीलवर्ण ओ चमकसँ युक्त करबाक हेतु नील रंगक चूर्णक व्यवहार होइछ । एकरा **लील** कहल जाइत छैक । कपड़ाकेँ विरंजित करबाक चूर्ण विशेषकेँ **टिनोपाल** कहल जाइछ ।

कपड़ाकेँ तहदर्ज ओ समतल बनेबाक हेतु ओहिपर गर्म लोहाक आघारक दबाव देल जाइछ । एकरा **आयरन** / **प्रेस** / **लोहा** कहल जाइछ । अधिक गर्म रहला लोहा

कपड़ाकें किञ्चित जरा दैछ । एहि तरहें कपड़ाक किंचित जरि जयबाक क्रिया **लहकब** होइछ । फेनयुक्त कपड़ापर लोहा उतर बनल चेह्न कें **दाग** / **दागी** / **धब्बा** / **धप्पा** कहल जाइछ । भीजल कपड़ाक पानिकें दूर करबाक क्रिया **गाड़ब** होइछ । कपड़ामे कड़ापन अनबाक हेतु जाहि लसलस पदार्थक घोरक व्यवहार होइछ ओकरा **कलप** / **कलफ** कहल जाइछ । कलपसँ युक्त कपड़ाकें **कलपौआ** कहल जाइछ । कपड़ा धोबाक मजदूरी ओ क्रिया **धोआइ** होइछ ।

मलिन वस्त्रकें **मैल** कहल जाइछ । किंचित मलिन वस्त्रकें **मैलाह** / **मलिछन** / **मलिछाह** कहल जाइछ । अत्यन्त मलिन वस्त्रकें **मैलचिक्कट** / **चिक्कट** / **चिकाइट** कहल जाइछ ।

कपड़ाकें राङिग कऽ ओहिमे सौन्दर्य सृष्टि कयल जाइछ । एहि प्रक्रियाकें **राड़्गब** कहल जाइछ । रङ्गबाक व्यवसायमे लागल व्यवसायीकें **रंगरेज** / **रंगसाज** कहल जाइछ ।

नीक जकाँ चढ़ल रंगकें **गाढ़** कहल जाइछ । हल्का रंगकें **फीका** / **फिक्का** कहल जाइछ । जे रंग पानिक सम्पर्कसँ धोखड़ि जाइछ, ओकरा **कचिया** कहल जाइछ । पानिक सम्पर्कक बादो जे रंग यथावत बनल रहैछ ओकरा **पकिया** कहल जाइछ ।

आइकालि विभिन्न रंगक आयातित चूर्णक प्रयोग होइछ जेना **लाल/पीयर/पीरा/हरियर/कारी/नील/नारंगी** आदि । एक रंगक चूर्णकें अनुपातिक मात्रामे दोसर रंगक चूर्णमे मिलाय विभिन्न प्रकारक रंग बनाओल जाइत अछि । पीयर ओ लाल रंगक संयोगसँ **केसरिया**, लाल आ नील रंगक संयोगसँ **आसमानी**, नील ओ लाल रंगक संयोगसँ आसमानी, नील ओ लाल रंगक संयोगसँ **भटबर** । बैगनी, हल्का लाल ओ कारी रंगक संयोगसँ **जमुनी** / **जमुनिया** रंग बनैत अछि । एही तरहें विभिन्न रंगक परस्पर संयोगसँ विभिन्न प्रकारक रंग बनैछ । चम्पाक फूलक सदृश हल्का पीताभ रंगकें **चम्पइ**, गुलाबक फूल सदृश हलका लाल रंगकें **गुलाबी**, कुसुमक फूलसँ तैयार गाढ़ लाल रंगकें **कुसुमी**, कमलक दलक सदृश हल्लुक लालीसँ युक्त रंगकें **कमलपत्ती**, बदामक खोइचा सदृश गाढ़लाल रंगकें **बदामी** कऽथक रंगकें **कत्थी** / **कत्थइ**, खूब गाढ़ रंगकें **आल**, गन्धक सदृश पीताभ रंगकें **गन्हकी** / **गन्धकी**, धानक पातक सदृश हरियर रंगकें **धानी**, सूगा पाँखिक सदृश हरियर रंगकें **सुगापंखी**, हल्लुक कारीरंगकें **सिलेटी** / **सिलेटिया**, हल्लुक पीयर रंगकें **बसन्ती**, सिन्दूर सदृश लाल रंगकें **सिन्दूरी** / **सिनुरिया**, गेरूक रंगकें **गेरूआ**, हरियर ओ नील वर्णक संयुक्त रंगकें **फिरोजी**, कटहरक को सदृश पीताभ वर्णकें **कटहरी** / **कटहरिया**, सोन सदृश दीप्त पीताभ वर्णकें **सोनौला** / **सोनौली** / **सोनहुला** / **सोनहुली**, गहूमक वर्णक सदृश रंगकें **गहुमा** / **गहुमी**, अंगूरक सदृश हल्लुक रंगकें **अंगूरी**, प्याजक लालीक सदृश वर्णकें **पियाजी**, हल्लुक नारंगी रंगकें **सरबती**, हल्लुक हरियर रंगके **सबुज** / **सबुजी** कहल जाइछ ।

वस्त्र जाहि रंगसँ रङ्गल रहैछ तकर आधारपर वस्त्रकें **ललका** / **ललकी** / **पीरा** **पियरकी** / **पियरका**, **हरियरका** / **हरियरकी** / **करिक्का** / **करिक्की**, **गुलबिआ** / **कुसुमी** आदि विशेषणसँ जानल जाइछ । हल्लुक रंगक द्योतक हेतु पीयर रंगक हेतु **पियरौन** / **पीरौछ**, कारी रंगक हेतु **करिछाह** / **करिछौंह** / **करियौंह**, शब्दक प्रयोग होइछ । अत्यन्त लाल वर्णक वस्त्रकें **लालरक्त** / **रक्ताबून्द** / **लाबुन्द** / **लालटेस** / **रक्तलाल टुहटुह** / **लालटुहटुह** विशेषणक प्रयोग होइछ । एहिना अत्यन्त हरियर रंगक वस्त्रकें **हरियर कचोर**, अत्यन्त कारी रंगक वस्त्रकें **कारीभुजुङ्ग** / **कारीलेहर** / **कारीखटोर**, अत्यन्त पीयर रंगक वस्त्रकें पीयर **दहदह** / **पीयर कहकह** / **पीयरकपीस**, अत्यन्त उज्जर रंगकें **उज्जर दपदप** / **उज्जर धपधप** कहल जाइछ । जखन वस्त्रपर रंग कतहु चढ़ल रहैछ आ कतहु नहि तँ ओहन वस्त्रक रंगकें **भटरंग** / **भठरंग** कहल जाइछ । आंशिक रूपें रंग चढ़ल वस्त्रकें **चित्तिरबित्तिर** कहल जाइछ । विविध रंगसँ युक्त वस्त्रकें **चितकाबर** / **चितकबरा** कहल जाइछ । रंगमे नीक जकाँ डुबाकऽ राङगल वस्त्रकें **कुण्डाबोर** कहल जाइछ ।

वस्त्रपर आकृति उखारबाक हेतु **साँचा** नामक यंत्रक व्यवहार रंगरेज करैत अछि । आकृति उखारबाक क्रिया छापब ओ ताहिसँ उखरल आकृतिकें **छाप** कहल जाइछ । छापल वस्त्रकें **छपुआ** कहल जाइछ । कपड़ाक मध्य भागमे देल छापकें **जाल** कहल जाइछ ।

जाल अनेक प्रकारक होइछ । पानिक बून जकाँ छापकें **बुनका**, मटरदानाक आकृतिक छापकें **मटरदाना**, दंतपंक्तिक सदृश छापकें **दाँत**, पानक आकृतिक छापकें **पनमा**, ठकुआक आकृतिक छापकें **ठकुआ** / **ठेकुआ**, तीनटा दलसँ युक्त छापकें **चिरतन**, विषमकोण समचतुर्भुज आकृतिक छापकें **ठिकरी**, लहठीक आकृतिक छापकें **लहेरिया**, जंगल झारक आकृतिक छापकें **जंगलाती** कहल जाइछ ।

हिन्दू लोकनि बाम कान्हसँ पेट ओ पीठकें झँपैत छोटा सूतसँ निर्मित एकटा वस्तु धारण करैत छथि । एकरा **यज्ञसूत्र** / **यज्ञोपवीत** / **उपवीत** / **जनउ** कहल जाइछ । एकर प्रत्येक सूत्रकें **तानी** कहल जाइछ । एहिमे मारल गीरहकें **परवल** कहल जाइछ ।

मृतकक हेतु कपड़ाकें **दाग** / **दागक कपड़ा** कहल जाइछ । मृतकक पत्नीक हेतु ओकर पतिक श्राद्धपर देल साड़ीकें **रड़सार** कहल जाइछ । एहिना अवसर विशेषपर देल साड़ी सभक विभिन्न विशेषण सभ अछि । विवाहक अवसरक साड़ीकें **लगनौती** / **वियहुती**, द्विरागमनक अवसरक साड़ीकें **दुरगमनिआ**, कहाउतक भारक साड़ीकें **कहौतिया** / **कहाउति**, नवजात शिशुक प्रसविनीकें देल गेल साड़ीकें **पीरी** कहल जाइछ । नारीलोकनि द्वारा नेतवस्त्रक रूपमे प्रयुक्त कपड़ाक टुकड़ीकें **मुँहपोछनी** कहल जाइछ । विवाहमे कन्याकें देल अधोवस्त्रकें **पुतली** / **लगनपुतली** कहल जाइछ । पुतलीक संग धारण करबाक उपरिवस्त्रकें **केचुआ** कहल जाइछ । कन्याक विवाहमे घोघटक विधिमे प्रयुक्त साड़ीकें **घोघटाही** कहल जाइछ ।

वस्त्र व्यवसायमे **पटवा** नामक जाति सेहो लागल अछि । ई आवरणक वस्त्र तँ नहि बनबैछ मुदा सूतसँ निर्मित किछु विशेष वस्तुक ई निर्माण करैछ । गर्दनिमे पहिरबाक सूतनिर्मित एकगोट हारक प्रभेद **बद्धी** कहल जाइछ । गूहल बद्धीक एकटा विशिष्ट प्रभेदकेँ **गंडा** कहल जाइछ । डाँड़मे पहिरबाक सूतक एकटा वस्तु **डराडोरि** कहल जाइछ । ई मर्द मात्रेमे व्यवहृत होइछ । धियापुताक हाथ पैरमे सूतक **कंगन** पहिराओल जाइछ । एकरा **फुदना** कहल जाइत छैक ।

वस्त्रकेँ रखबाक हेतु काठ, बाँस ओ धातुक पात्रक व्यवहार होइछ । काठक पैघ ओ गँहीर पात्रकेँ **सन्दूक / सनूक / सम्मुख / सनूख** कहल जाइछ । छोट सन्दुककेँ **सनुकची** कहल जाइछ । छोट आकृतिक सनुककेँ **बाकस / बक्सा** (अं० बॉक्स) कहल जाइछ । लोहाक चदरासँ बनल सन्दुककेँ **ट्रंक** कहल जाइछ । एकर छोट आकृति **पेटी** कहल जाइछ । खानादार काठ वा धातुक पात्र जाहिमे वस्त्र रखबाक प्रचलन अछि **आलमारी** कहल जाइछ । बाँसक चौकोर आकृतिक पात्र जाहिमे वस्त्रादि रखबाक प्रचलन रहल अछि । **पेटार / पेटारा** कहल जाइछ । छोट पेटारकेँ **पेटाड़ी** कहल जाइछ । गोल आकृतिक तथा पृथकसँ ढक्कन रखबाक व्यवस्थासँ युक्त पेटारक हेतु **पौती** शब्द प्रचलित अछि । एकर अन्य प्रभेद **सखारी, झाँप / झापा, झप्पा** आदि होइछ ।

भेड़ आदि पशुक गर्म केशकेँ ऊन (सं० ऊर्ण / उण्ण / उन्न / ऊन्न) कहल जाइत छैक । आयातित ऊनक सबसँ नीक प्रभेद **पसमीना** कहल जाइछ । पसमीनासँ अपेक्षाकृत कमजोर ऊन **मैरीनी** कहबैछ । पसमीना आ मैरीनोक मिश्रणवला ऊन **नीम पसमीना** कहबैछ । रूक्ष प्रभेदवला ऊनकेँ **पट्टू** कहल जाइछ ।

करीब चारि हाथ नाम ओ तीन हाथ चाकर ऊनी वस्त्र जे ओढ़बाक काजमे अबैछ, **कम्बल** (सं० कम्बल०) **कम्मल / कम्मर / कमरा / कमरिया** कहल जाइछ । छोट कम्बलकेँ **कमरी** कहल जाइछ । पूजाकरबाक हेतु ओछाओनक रूपमे प्रयुक्त करीब करीब दुहाथक वर्गाकार ऊनी वस्त्रकेँ **आसन / आसनी** कहल जाइछ । चद्दरि जकाँ ओढ़बाक हेतु ऊनक वस्त्र विशेष **धूस / धुस्सा** (सं० दुर्श) **दुस्स/धुस्स/धूस/धुस्सा**) कहल जाइछ । कम्बलेक आकृतिक कम चाकर ऊनी ओढ़नाकेँ **साल** कहल जाइछ । दोहरा सालकेँ **दुसाला / दोसाला** कहल जाइछ । एहिमे दूइ गोट परत होइछ छैक । वर्षासँ बचबाक हेतु देहात क्षेत्रमे ऊनक एकटा आवरण बनाकऽ ओढ़ल जाइछ । एहि आवरणकेँ **घोघी / घोंघी / बोकड़ी** कहल जाइछ । **ग्रियर्सन** एकरा **बुक्की** कहने छथि । कानकेँ झँपबाक हेतु ऊनक बनल पट्टासदृश वस्त्रकेँ **गुलेबन्द / गुलबन्द / मफलर** कहल जाइत छैक ।

उपरसँ ओढ़बाक तूर भरल वस्त्रमे **सीड़क / सीड़ग** प्रमुख अछि । एहिमे कपड़ाक दूटा पातर परतक बीच तूर भरल रहैछ । एकरा **दोलाइ / तुराइ / तुरमरा / तुरेड़ा** सेहो कहल जाइछ । तुराइसँ तँ तूर भरल अर्थ प्रतिपादित भऽ जाइछ मुदा दोलाइमे लाइ शब्दक

अर्थ आब लुप्त भऽ गेने एहि यौगिक शब्दक स्वरूप स्पष्ट नहि होइछ । मोटकऽ तूर भरल सीड़ककेँ **रजाह** (फा०) । **नेहाली / लेहाली** कहल जाइछ । खूब मोट कऽ तूर भरल रजाइकेँ **लेहाफ / लिहाफ** (अ०) कहल जाइछ ।

सीरक, तोशक आदिमे धुनल तूर ओछयबाक क्रिया **भरल** होइछ । भरबासँ पूर्व सीरक ओ तोशकक जे ढाँचा कपड़ा द्वारा बनल रहैछ से **खोल / खाली / खोलिया** कहल जाइछ । तूर भरल खोलमे दूर दूरपर सीबाक क्रिया **तगाइ / गँथाइ / टँकाइ** कहल जाइत अछि । एहि व्यापारमे लागल जाति **धुनिया** कहबैछ ।

तगाइ अनेक प्रकारक होइत अछि– (क) **पोखरिया** (ख) **लहेरिया** (ग) **बदामी** (घ) **चानपंखा** (ङ) **बर्फी** अथवा **सकरपाला** । **पोखरिया** तगाइमे मध्य भागमे छोटसन वर्ग ओ तकर परितः थोड़े थोड़ेक दूरीपर क्रमशः पैघ वर्गाकार तगाइ कयल जाइछ ।

खोलक सम्मुख कोनकेँ तागिकऽ चारिटा त्रिभुजाकार घर बनाय चारू त्रिभुजमे उपरका दूनू भुजाक समान्तर तगाइ भेलापर एकरा **लहेरिया** कहल जाइछ ।

खोलक चारू भुजाक मध्यवर्त्ती विन्दुकेँ मिलबैत तागि कऽ बनल चतुर्भुजक भुजा सभक समानान्तर क्रमशः केन्द्राभिमुखी तगाईकेँ **बदामी** तगाई कहल जाइछ ।

सकरपाला तगाइमे खोलक नामा-नामी एवं चौड़ा-चौड़ी तागक समानान्तर रेखासँ युक्त तगाइकेँ **बर्फी / सकरपाला** कहल जाइछ ।

एकर अतिरिक्त खोलक सम्पूर्ण भागकेँ अनेक त्रिभुजाकार अथवा चतुर्भुजाकार खण्डमे बाँटि प्रत्येक खण्डक भुजाक समानान्तर तगाई सेहो कयल जाइछ । एहि तगाइ सभक नाम त्रिभुज वा चतुर्भुजक संख्याक आधार पर **तिनघरबा, चरिघरबा, पचघरबा, सतघरबा** आदि होइछ ।

गामघरमे ओछयबाक हेतु फाटल पुरान लत्ताकेँ साटि एकटा ओछाओन बनाओल जाइछ जकरा **केथ्था** (सं० कन्था) **गुदरा / लेदरा** कहल जाइछ । नीक कपड़ाक केथ्था जाहिपर फूल-पत्ती आदिक कलापूर्ण काज कयल रहैछ **सुजना / सुजनी** (फा० सोजनी) कहल जाइछ ।

बिछाओनमे अनेक प्रकारक कपड़ाक उपयोग होइत अछि । खाट-पलंग आदिपर तरमे कम्बल पहिल परत देल जाइछ । कम्बलक स्थानपर मोट सूतक एकगोट वस्त्र व्यवहार कयल जाइछ जकरा **दरी** कहल जाइत छैक । फर्शपर ओछयबाक हेतु मोट रंगीन आ रोआँदार कपड़ाकेँ **कालीन** (तुर्की-कालीन) कहल जाइछ । कालीनक उपर बिछयबाक पैघ चद्दरि **जाजिम** कहल जाइछ । छोट जाजिमक हेतु चद्दरि बिछाओनक **चद्दरि / उलेँच-उलोँच** शब्द व्यवहृत होइछ ।

रूइसँ भरल बिछाओनक मोट कपड़ा **गद्दी** कहल जाइछ । पैघ ओ मोट गद्दीकेँ **गद्दा** कहल जाइत छैक । रूइ भरल गद्दाक आकृतिक ओछाओन जकर लम्बाइ चौड़ाइ चौकी पलंग आदिक बराबर रहैछ **तोशक** कहल जाइछ । सुतबाकाल जाहि दिश माथ राखल जाइछ से **सिरहन्ना / सिरहान्ना / सिरमा / सीरम** कहल जाइत छैक । सिरमा लग गदरनिक भरसाहाक रूपमे व्यवहृत गद्दीदार वस्त्रविशेषकेँ **तकेया / गुड्डुआ/तकिया / गेरूआ / बलिस्ता / बालिश्त** कहल जाइछ । बेलनाकार पैघ तकियाकेँ **मसनद / मसलङ / मसलन / मसलन्द** कहल जाइछ । गेडुआ आदिक उपरका भागकेँ पल्ला, निचला के **अस्तर** कहल जाइछ । दूनू भागकेँ मध्यक चौवगली लागल दू आङुर चाकर वस्त्रकेँ **मगजी** कहल जाइछ ।

गेडुआक पल्ला आ अस्तरसँ बनल धोकड़ी सदृश वस्त्रकेँ **रुइभरा** कहल जाइछ । रुइभरामे रूइ भरलाक बाद ओहिपर वस्त्रक दोसर आवरण चढ़ाओल जाइछ से **खोल** कहल जाइछ । एहि खोलकेँ **गिलाफ / गिलेफ / गिलेफी** कहल जाइछ ।

खिड़की दरबज्जा, रंगमंच आदिपर आवरणक हेतु व्यवहृत वस्त्रकेँ **परदा** कहल जाइछ । हाथीक शरीरपर देल शोभाक हेतु झुलैत वस्त्रकेँ **झूल / झुल्ला** कहल जाइछ । पानिसँ बचबाक हेतु जाहि अंगवस्त्रक उपयोग कयल जाइछ तकरा **बरसाती / बरिसाती** कहल जाइछ । विरल तानी ओ भरनीसँ युक्त जालदार वस्त्रकेँ सीबिकऽ बनाओल मच्छरसँ प्राणदायक वस्त्रकेँ **मच्छरदानी / मसहरी / मुसहरी** कहल जाइछ ।

भगवानक नाम भजबाक हेतु भक्तलोकनि एकटा कपड़ामे माला राखि जप करैत छथि । एहि वस्त्रक निचला भागमे माला रखबाक **धोकड़ी** रहैत छैक आ उपरका भागमे हाथ घुसिया लेल जाइत छैक । गाइक मुखाकृतिक ई वस्त्र **गोमुखी / गउमुखी** (सं०गोमुखी) कहल जाइत अछि । रामनाम छापल चद्दरिकेँ **रमनामी** चद्दरि कहल जाइछ ।

तमाकुल इत्यादि रखबाक हेतु छोटसन धोकड़ीनुमा वस्त्रकेँ **बटुआ** कहल जाइछ । ई स्यूत वस्त्र थिक । एकर उपरका भागमे मुँह खुलल रहैत छैक । बटुआक मुँह डोरी खिचलापर बन होइत छैक वा खुलैत छैक । पाइ रखबाक बटुआकेँ **बगली / बगुली** कहल जाइछ । वस्तु अनबाक हेतु छोट पैघ धोकड़ीनुमा वस्त्रकेँ **झोरा / थैला** कहल जाइछ । कपड़ाक चारू कोन के उपर कऽ देला सन्ता बीचमे जे गहीर स्थल बनैत छैक से **धोकड़ी** कहल जाइत छैक ।

पुरुष वस्त्र– पुरुष वस्त्रमे सामान्य वस्त्र अछि **धोती** (सं० धोत्रिका/धोत्तिआ/धोती) । ई वस्त्र डाँड़सँ नीचा पहिरल जाइत अछि । ई पातर सूतक होइत अछि आ एकर नमाइ दस हाथ ओ चौड़ाइ करीब तीन हाथ होइत अछि । एकर लम्बाइवला भागमे रंगीन रेखांकन रहैछ जकरा **कोर** कहल जाइत छैक । धोतीक चारू कोनवला भागकेँ **खूट** लम्बाइक

आधार पर दस हाथक धोतीकेँ **दसहत्थी** ओ आठ हाथक धोतीकेँ **अठहत्थी** कहल जाइछ । कम चाकर धोती जे पैरक भागकेँ पूर्णतः झँपबामे असमर्थ होइछ, **ढेँठ / ढेँठिया** कहल जाइछ । लम्बाइ ओ चौड़ाइमे अपेक्षाकृत छोट धोतीकेँ **छनकट** कहल जाइछ । बाबाजी लोकनिक धोतीकेँ **ब्रह्मगाँतीक** कहल जाइछ । एकरा डाँड़मे लपेटैत गर्दनिमे चारू खूटकेँ सम्बद्ध कऽ पहिरल जाइछ ।

धोतीक जे अंश डाँड़क परितः लपेटल जाइछ ओकरा **डट्ठा** कहल जाइछ । पाछू दिस खोँसल जायवला भागकेँ **ढेका** कहल जाइछ । ढेकामे सामान्यतः वाम भागवला अंशकेँ खोसल जाइछ । जखन वाम ओ दहिन भाग वला दूनू अंशकेँ पाछू दिस खोँसि लेल जाइछ तँ धोतीकेँ पहिरबाक प्रकारकेँ **दुढेकिया** कहल जाइछ ।

धोतीक कोर ओ डट्ठाक मध्यवला भागकेँ मोड़लापर जे धोकड़ी सदृश आकृति बनैछ ओकरा **फाँड़ / फाँड़ा** कहल जाइछ । धोतीक नीचा लटकैत भागकेँ डाँड़मे खोँसि समेटि लेबाक प्रक्रिया **फाँड़ बान्हब** कहल जाइछ । मनबोध एहि हेतु **भड़कछ मारब** क्रियापदक प्रयोग कयने छथि । नेनाक हेतु अपेक्षाकृत छोट धोतीकेँ **बबकानी** ओ नम्हर लोकक पूर्ण धोतीकेँ **सयानी / सेहानी** कहल जाइछ ।

जखन धोती दूनू पैरक अठँग्रा पर्यन्तकेँ झँपबामे समर्थ रहैछ तँ **पदनधोत** (पादान्तधौत) कहल जाइछ । धोतीक निचला भाग जखन जमीनपर लेटाइत चलैछ तँ एहन धोतीकेँ **घुट्ठीसोहार** कहल जाइछ । लेटायबाक हेतु **सोहरायब** क्रियापदक प्रयोग होइछ ।

धोतीक अग्रभागमे संचित कयल भागकेँ **कोँचा** कहल जाइछ । कोँचावला धोतीमे एकभाग खोँसल आ दोसर भाग लटकैत रहैछ । जखन दोसरो भागकेँ उपर दिस डाँड़पर विन्यासपूर्वक खोँसि लेल जाइछ तँ एकरा **साँची** कहल जाइछ ।

डाँड़मे धोतीक लपेटल भागकेँ **हरिड़ा** सेहो कहल जाइछ । हरिड़ामे वस्तुकेँ लपेटिकऽ रखबाक स्थलकेँ **टेँट** कहल जाइछ ।

पुरुष परिधानमे पाँचगोट वस्त्रक प्रधानता देखल जाइछ । एकरा पाँचो टूक कपड़ा कहल जाइछ छैक । **ग्रियर्सन धोती, पाग, डोपटा,चपकन ओ अंगपोछाकेँ** पाँचो टूक कपड़ा मध्य परिगणित कयलनि अछि ।[1]

पाग / **पगिया** माथपर धारण करबाक मिथिलाक विशिष्ट परिधान थिक । पहिने ई साठि हाथक वस्त्रखंडकेँ माथमे लपेटि बनाओल जाइत छल । एकरा **साठा पाग** कहल जाइत छलैक । आइकाल्हि कोड़िलासँ निर्मित पागक प्रचलन अछि । एकरा **सादापाग** कहल जाइत छैक । साठापागकेँ **खूलपाग** सेहो कहल जाइत छल । साठापाग माथपर नीक जकाँ गस्सल नहि रहने **लटपटपाग / लटपटिया** पाग कहल जाइत छल । **छोट**

वस्त्रखंडकेँ माथपर लपेटि लेला उत्तर ओकरा **मुरेठा** कहल जाइत छैक । पागक चारू कात सूतक झालर लगाओल जाइछ । एहि झालरकेँ **घुनस / घुनेस** कहल जाइछ । पागक अग्रभागकेँ **पेँच / फेँच** कहल जाइछ । छोट पागकेँ **पगड़ी** ओ अत्यन्त पैघ पागकेँ **पग्गड़ / फेटा** कहल जाइछ । विशेष प्रकारक पागक प्रभेदकेँ **मौर** कहल जाइछ ।

पुरुषक माथपर धारण करबाक उनटल ढकनाक आकृतिक स्यूत वस्त्रविशेषकेँ **टोपी** कहल जाइछ । एकरा **ताखी / ताज** सेहो कहल जाइछ । कानधरि झँपयवला टोपीक एकटा प्रभेदकेँ **मुण्डाटोपी** कहल जाइछ । नाम आकृतिक खादीक टोपीकेँ **गाँधी टोपी** कहल जाइछ । व्यंग्यार्थमे एकरा **खजबाटोपी** सेहो कहल जाइछ । कटोरी जकाँ गोल आकृतिक टोपीकेँ **किस्तीनामा** कहल जाइछ । एकटा वस्त्रखंडसँ निर्मित टोपीकेँ **एकपलिया** आ दूटा वस्त्रखण्डकेँ जोड़िकऽ निर्मित टोपीकेँ **दुपलिया** कहल जाइछ । टोपीक हेतु **सरबन्द / सरबन** शब्दक सेहो प्रचलन अछि । कपड़ाक चारिटा टुकड़ीकेँ जोड़ि कऽ टोपी बनेलापर ओहि टोपीकेँ **चरिपलिया** कहल जाइछ । दाढ़ीक नीचावला भागमे बटन-व्यवस्थासँ युक्त टोपीकेँ **कनटोप / कनफप्पा / झपला / कनफोपा / कनफप्पी / कनटोपी** कहल जाइछ । चारूकात झालरि लागल टोपीक प्रभेदकेँ **फलगू** कहल जाइछ । अंग्रेजी परिधानमे मोट छत्र सदृश टोपीक व्यवहार होइछ जकरा **हैट / टोप** कहल जाइछ ।

पुरुषक उत्तरीय वस्त्रकेँ **चद्दरि / चादर / चद्दर / चादरि / उपरना** कहल जाइत छैक । सामान्यत: ई दूइगोट वस्त्रखंडकेँ जोड़िकऽ बनल रहैछ । एहि आधारपर एकर अपर नाम **दोपटा / डोपटा / दुपट्टा** सेहो अछि । डेढ़ पाटसँ बनल उत्तरीय वस्त्रकेँ **डेढ़पट्टा / डेढ़पट्टी** कहल जाइछ । चद्दरिकेँ ओढ़बाक उपयोगमे सेहो आनल जाइछ । चारूकातसँ सीयल दोबर वस्त्रक ओढ़नाकेँ **दोहर / दोहरि** कहल जाइछ । एक पाटसँ बनल सल्लग वस्त्रक ओढ़नाकेँ **सलगा** कहल जाइछ ।

डाँड़सँ उपर तथा गर्दनिसँ निचला अङ्गवस्त्रक अनेक प्रभेद पुरुषवर्गमे प्रचलित अछि । एहि अङ्वस्त्र सभक हेतु सामान्य शब्द **अंगा** अछि । अल्प तूर देल दोहर वस्त्रक अंगाकेँ **तुरभरा/ तुरौड़ा** कहल जाइछ । केहुनीसँ कने उपर धरि बाहूवला तथा देहसँ सटल अंगवस्त्रक प्रभेद विशेष **गंजी / बनियान** कहल जाइछ । बाँहूरहित गंजीकेँ **फतुही / फतूही / अधकट्टी / सैंडो** कहल जाइछ । गर्दनिपर गोलाकार रूपमे निर्मित गंजीक प्रभेदकेँ **गोलगला** कहल जाइछ । पाइ इत्यादि रखबाक हेतु अङ्गवस्त्र पार्श्व वा छातीवला भागपर वामदहिन बनल थोकड़ी सदृश व्यवस्थाकेँ **जेबी / खलती** कहल जाइछ । अन्तर्भागमे बनाओल अदृश्य जेबीकेँ **चोरजेबी** कहल जाइछ ।

गंजीक उपरसँ पहिरबाक स्यूत परिधान विशेषकेँ जाहिमे बाहूक लम्बाइ केहुनी धरि रहैछ **अधबाँही / अधबहियाँ / अधबहुँआ** कहल जाइछ । मुसलमान एकरा **नीमा** कहैत छथि । सम्पूर्ण बाहुकेँ झँपयवला स्यूत परिधानक विशेष प्रकारकेँ **कमीज** कहल

जाइछ । कमीजक बाहुक निचला भागमे कपड़ाक मोट पट्टीकेँ **कफ** कहल जाइछ । एहिमे गर्दनिक परित: बनाओल कपड़ाक पट्टीकेँ **कालर** कहल जाइछ । कालर ओ धड़वला प्रदेशक जोड़वला भागकेँ **तीडर** कहल जाइछ ।

बेलनाकार बाहूवला अपेक्षाकृत ढील अङ्गवस्त्रकेँ **कुर्त्ता / पंजाबी** कहल जाइछ । एकर बाँहिक खुलल अग्रभागकेँ **खलता / खालता** कहल जाइछ । उपर दिस चाकर ओ नीचा दिस क्रमश: कम चाकर कपड़ाक टुकड़ीकेँ **कली** कहल जाइछ । कलीक समूहकेँ जोड़िकऽ बनाओल कुर्ताकेँ **कलीदार** कहल जाइछ । कुर्ताक एकटा प्रभेद जे अत्यन्त फल्लर होइछ आ जकर निचला भाग जमीन धरि सोहराइत रहैत छैक **झुल्ल / झुल / झोलँगा** कहल जाइत छैक ।

बन्न तथा भुँड़ीसँ युक्त अधबहुँआ वस्त्रक एकटा प्रभेद **अचकन** कहल जाइछ । कतहु कतहु एकरा **चपकन** सेहो कहल जाइछ छैक । चपकनमे पूर्ण बाहू सेहो रहैत छैक । छातीक अग्रभागमे बटन-व्यवस्थावला अंगवस्त्रकेँ **अङरखा** कहल जाइछ । छोट अङरखाकेँ **अङरखी** कहल जाइछ । डाँड़सँ थोड़ेक नीचा धरि ढील ओ अपेक्षाकृत अधिक नाम अङगरखाक प्रभेद **मिरजइ / मिरजै** कहल जाइछ । एकर ठेठ प्रभेदकेँ **खुटिया** कहल जाइछ । बन्न द्वारा चारिठाम बान्हल जयबाक व्यवस्थासँ युक्त अङगरखाक प्रभेदकेँ **चौबंदी / चौबंडी** कहल जाइछ । शोभादायक बटन-व्यवस्थासँ युक्त अङ्गरखाक प्रभेदकेँ **बालावर / बालावर्ज** कहल जाइछ । ठेहुन धरि लटकैत बालावर्जक प्रभेदकेँ **सिखानी / शेरवानी** कहल जाइछ । शेरवानीक एक गोट विशिष्ट प्रभेद **झुल्ला** कहल जाइछ । नेनाकेँ पहिरयबाक शेरबानीक एकगोट प्रभेदकेँ **मुसलमान जामा** कहैत छथि । मोलवी लोकनिक शेरवानीकेँ **मेहरान / मयराहन** कहल जाइछ । मृतक मुसलमानक पहिरावाकेँ **कफनी** कहल जाइछ । मृतक हिन्दूक पहिरनाकेँ **कफन** कहल जाइछ । बाहुरहित एवं अग्रभागमे बटन-व्यवस्थासँ युक्त मुसलमान लोकनिक पहिरावाक एकगोट प्रभेद विशेषकेँ **अबा / आबा / एबा / चोंडा** कहल जाइछ । जमीनपर सोहराइत चलयवला आबाक प्रभेदकेँ **काबा** कहल जाइछ । **आबाकाबा** अनेक वस्त्रक अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।

जाड़मे पहिरबाक हेतु मोट ऊनी कपड़ाक वस्त्र विशेषकेँ **कोट** कहल जाइछ । अपेक्षाकृत फल्लर ओ पैरधरि लटकैत कोटक प्रभेदकेँ **लबादा** कहल जाइछ । बाहुविहीन तथा डाँड़ धरि लम्बाइवला कोटक सदृश वस्त्रविशेषकेँ **बण्डी / आसकोट / सदरी** कहल जाइछ । कोट आदिमे मोट कपड़ाक तरमे देल पातर कपड़ाक परतकेँ **अस्तर** कहल जाइछ । जाड़मे पहिरबाक हेतु ऊनी सूतसँ विभिन्न प्रकारक अंगवस्त्र बनाओल जाइछ । एकरा **स्वेटर** कहल जाइत छैक ।

दैनन्दिन जीवनमे स्नानकाल देह हाथ पोछबाक हेतु पुरुषलोकनि करीब दू हाथ चाकर ओ तीन हाथ नाम वस्त्रखंडक व्यवहार करैत छथि । एकरा **अंगपोछा** (सं०अंगप्रोञ्छ)

कहल जाइत छैक । एकर छोट प्रभेद गमछा / **अंगोछा** / **अंगोछी** कहल जाइछ । सफाइसँ सम्बद्ध रहबाक कारणेँ एकरा **साफी** सेहो कहल जाइछ । आइ कालिह नेतवस्त्रक स्थानपर छोटसन वर्गाकार वस्त्रखंडक व्यवहार देखल जाइछ । एकरा **रुमाल** / **हथपोछना** कहल जाइछ । रोआँदार गमछाक प्रभेद **तौलिया** (अं० टॉवेल) कहल जाइछ । गमछाक अत्यन्त छोट प्रभेदकेँ **अंगोछी** / **गमछी** कहल जाइछ ।

डाँड़सँ लऽ दूनू पैरक सम्पूर्ण भागकेँ क्रमशः आवृत्त करयवला पातर वस्त्रसँ निर्मित परिधान विशेषकेँ **पएजामा** / **पठजामा** / **खिसकट** कहल जाइछ । देहमे सटल एकर प्रभेद **चुस्त** कहल जाइछ । जाँघ दिस फल्लर ओ पैरमे कसकस प्रभेदकेँ **चूड़ीदार** कहल जाइछ । ठेहुन लग किंचित फल्लर एकर भाग **खलता** / **खालता** कहल जाइछ । पैर दिसुक खुलल भाग **मोहरी** कहबैछ । मोहरीसँ युक्त पएजामाकेँ **मोहरीदार** कहल जाइछ । खालतासँ युक्त पएजामाकेँ **खलतेदार** कहल जाइछ । कम मोहरीसँ युक्त पएजामाकेँ **सुखाल** कहल जाइछ । मुसलमान एकरा **आमा** सेहो कहैत छथि ।

मोट वस्त्रसँ बनल पएजामाक आकृतिक वस्त्रकेँ **पैंट** कहल जाइछ । पैंटमे डाँड़क चारूकात देल दोहरा वस्त्रक पट्टीकेँ चामक डोरी सदृश वस्तुकेँ **कमरबन्द** / **डँड़कस** / **बेल्ट** कहल जाइछ ।

आधुनिक अंग्रेजी फैसनक अनुरूप गर्दनिमे लटकयबाक वस्त्रखंडक एकटा प्रभेद **टाइ** कहल जाइछ । पैरक सुरक्षाक हेतु वस्त्रक थोकरी सदृश वस्तुकेँ **पएतावा** / **मोजा** / **मौजा** कहल जाइछ । बाबाजी लोकनिक झोलँगाकेँ **चोला** सेहो कहल जाइछ । मृतककेँ अग्निदान करयवला व्यक्ति वस्त्रक दू आङुर चाकर खंडकेँ बीचसँ फाड़ि बाम कान्हसँ पेट ओ पीठ पर लटकैत धारण करैत छथि । एकरा **उत्तरी** कहल जाइत छैक ।

जे वस्त्र शरीरमे अत्यन्त ढिलढिल होइछ ओकरा **फल्लर** / **ढकढोल** कहल जाइत छैक । अत्यन्त चुस्त ओ शरीरक नापसँ छोटवस्त्रकेँ **कसकस** कहल जाइछ ।

धियापुताकेँ जाड़क मासमे साड़ी, धोती आदि वस्त्र द्वारा माथसँ पैर धरि आवृत्त कऽ देल जाइछ । एहि वस्त्रकेँ **गाँती** कहल जाइछ । आइकालिह एकटा वस्त्र खंडसँ डाँड़क चारूकातक भागकेँ केवल लपेटि लेल जाइछ । ई वस्त्र **लुंगी** कहल जाइछ । नेनाक लज्जानिवारक एकगोट वस्त्र खंडकेँ डराडोरिमे आगूपाछू खोँसि देल जाइछ । एहि वस्त्रखंडकेँ **भगवा** कहल जाइछ । कतहु कतहु **धरिया** कहल जाइत छैक । नितम्बकेँ सेहो आवृत्त करयवला धरियाक प्रभेद **लंगोटा** / **लंगौटा** / **नंगोट** / **नंगौटा** / **नंगोटा** कहल जाइछ । छोट लंगोटाकेँ **लंगोटी** / **लंगौटी** कहल जाइछ । लज्जानिवारणक हेतु प्रयुक्त छोट सन कपड़ाक टुकड़ीकेँ **विष्टी** / **विष्ठी** / **कौपीन** कहल जाइछ । छोट चाकर वस्त्रक विष्टीक एकटा प्रभेद **खरुकी** / **खेरुकी** कहल जाइछ । जाँघमे पहिरबाक

पैरक प्रभेदकेँ **जँघिया** / **जाँघिया** / **इजार** कहल जाइछ । एकर चुस्त ओ चलानी प्रभेद **अन्डरवीयर** कहल जाइछ । काछेघरि नमाइवला जाँघियाक प्रभेदकेँ **कच्छा** / **काछा** कहल जाइछ । छोट नेनाक कच्छाकेँ **कछिया** / **कच्छी** / **कछनी** / **कछोटा** कहल जाइछ । विविध व्यवहारमे आवयवला कपड़ाक छोटसन टुकड़ीकेँ **कप्पा** कहल जाइछ । जाँघियाक दूनू जाँघवला भागकेँ जोड़यवला त्रिकोण वस्त्रखंडकेँ **मियानी** कहल जाइछ । मियानीक पर्याप्त चाकर नहि रहने दूनू पैरक संचालनमे जे गतिरोध होइछ तकरा **छन्ना** **लागब** कहल जाइछ ।

नारी वेश— नारी वेशमे सर्वाधिक प्रधान वस्त्र अछि **साड़ी** एकरा **नूआ** / **लुङ्गा** सेहो कहल जाइछ । **नूआ, वस्तर, नूआ-फट्टा** शब्द परिधेय वस्त्र मानक अर्थमे प्रयुक्त होइछ । साड़ी आ धोती दैनन्दिन प्रयोगमे रहबाक कारण तथा नित्य बदलबाक कारण एकर कम सँ कम दू गोट संख्याक आवश्यकता सामान्यत: होइछ तथा एहि दूनूकेँ **जोड़** / **जोड़ा** कहल जाइत छैक । जोड़ामे प्रत्येककेँ **पल्ला** / **खंड** कहल जाइछ छैक । लम्बाइक आधार पर साड़ीक अनेक प्रभेद क्रमशः **अठहत्थी**, **दसहत्थी**, **बारहहत्थी**, **बिसहत्थी** आदि होइछ ।

साड़ीक दूनू क्षैतिज पार्श्ववला भागमे धोतीक अपेक्षा चाकर ओ रंगीन बनावट रहैछ । एकरा **कोर** / **पाड़ि** / **किनार** / **किनारा** / **किनारी** कहल जाइछ । किछु साड़ीमे कोरक सामानान्तर एकाधिक कलाकृतिपूर्ण बिनाइ रहैछ । इहो सभ **पाड़िये** कहल जाइछ । पाड़िक संख्याक आधारपर साड़ी **तिनपड़िया**[2] **पँचपड़िया** आदि प्रभेदक कहल जाइछ । पाड़िवला साड़ीकेँ **पड़िया** कहल जाइछ ।

साड़ी पहिरबाक क्रममे ओकर चौड़ावला भागक एकटा छोर डाँड़क परित: लपेटल जाइछ । एहिमे पैरक परित: अंशकेँ **गोझनौट** कहल जाइछ । किछु भाग नाभिक अग्रभागमे सञ्चित कऽ खोँसि लेल जाइछ । एकरा **कोँचा** कहल जाइत छैक । साड़ीक शेष भाग पीठ माथ ओ वक्षस्थलकेँ झपबाक काज करैछ । माथ ओ मुँहकेँ झपबाक अंशकेँ **घोघ** कहल जाइत छैक । जखन साड़ी द्वारा आधा मुँह झाँपि लेल जाइछ आ आधा उघारे राखल जाइछ तँ घोघक ई अवस्था **मरोत** / **मरओत** कहल जाइत अछि । **मरोत** **काढ़ब** क्रियापदक प्रयोग साड़ीक घोघवला भागसँ मुँहकेँ अर्द्धआवृत्त करबाक अर्थमे होइछ । साड़ीक जे भाग वक्षस्थलकेँ झपबाक उपयोगमे अबैछ से **आँचर** / **अँचरा** / **अँचरबा** (सं०अञ्चल) कहल जाइछ । आँचरक दूनू छोरकेँ **डेढ़ी** कहल जाइछ । साड़ीक निचला भागकेँ मोड़ि कऽ बनाओल थोकड़ीकेँ **फाँफड़** कहल जाइछ । नाभिक अग्रभागक साड़ीकेँ मोड़ि कऽ बनाओल थोकड़ीकेँ **खोँइछ** / **खोँइछा** कहल जाइछ । पाड़िक लम्बाइवला भागक अन्तिम छोर **आँठ** कहल जाइछ । साड़ीक पाछूवला भागकेँ **पछोर** कहल जाइछ । साड़ीक अनेक भेदोपभेद भेटैछ जेना **पटोर**, **गलिहारा**, **गुलबदना**, **नीलाम्बरी** आदि । रेशमी किनारीदार साड़ीक प्रभेद **पटोर** कहल जाइछ । चाकर

किनारीवला साड़ीक प्रभेदकेँ **गुलबदना** कहल जाइछ । आसमानी रंगक साड़ीकेँ **नीलाम्बरी** कहल जाइछ । चारूकात लाल रंगसँ राङ्गल तथा बीचमे अन्य रंगसँ युक्त साड़ीक प्रभेद **सुगाठोर** कहल जाइछ । लालरंगक छपुआ साड़ीकेँ **मनराजी** कहल जाइछ। अनेक रंगवला साड़ीकेँ **धूपछाँह** कहल जाइछ । पीयर रंगक साड़ीक प्रभेद **पटम्बर** / **पितमरी** कहल जाइछ । ई रेशमी होइत अछि । अत्यन्त पातर सूतसँ बनल साड़ीक एकटा प्रभेद **चूनरी** / **चुनरी** / **चुनरिया** कहल जाइछ । एकै रंगमे राङ्गल चुनरीकेँ **एकबंडी**, चारि रंगसँ युक्त चुनरीकेँ **चौबंडी**, सात रंगसँ राङ्गल चुनरीकेँ **सतबंडी** कहल जाइछ । कन्यालोकनिक ओढ़बाक पातर उत्तरीय वस्त्रकेँ जाहिसँ छातीक अग्रभाग झाँपल जाइछ, **दुपट्टा** / **ओढ़नी** कहल जाइछ । छपाइसँ युक्त ओढ़नीकेँ सेहो **चुनरी** कहल जाइछ ।

साड़ीक तऽरमे पहिरबाक नारीक स्यूत परिधानक एकटा प्रभेदकेँ **साया** कहल जाइछ । एकेटा वस्त्रखंडसँ निर्मित सायाकेँ **सल्लग** / **एकपट्टा** कहल जाइछ । वस्त्रखंडक संख्याक आधारपर सायाक **पचपट्टा**, **छौपट्टा** आदि प्रभेद होइछ । सायाक ऊपरका भागकेँ डाँड़मे कसबाक हेतु जे घर बनल रहैक ओकरा **नेफा** / **नफ्फा** कहल जाइछ । नेफामे पैसाओल डोरीकेँ **नारा** कहल जाइछ । प्राचीन साहित्यमे वर्णित **नीवी** ओ **नीवी बन्ध** संभवतः नारेक प्रभेद होइत छल । नीवीबन्धक हेतु **इजारबन्द** / **इजारबन्न** शब्दक सेहो प्रयोग होइछ । सायाक निचला भागमे मजगूत सियाइवला भागकेँ **मोहरी** कहल जाइछ ।

सायाक स्थान पर कन्यालोकनि एकटा स्यूत वस्त्रखंड डाँड़मे लपेटि लैत छथि जकरा **पुतली** कहल जाइत छैक । विवाहक अवसरक पुतलीकेँ **लगनपुतली** कहल जाइत छैक । साधारण वस्त्रखंडमे सायाक स्थानपर डाँड़क परितः लपेटि लेल जाइछ, **तहमद** / **तहबन** / **तहबन्द** कहल जाइछ ।

नेफावला भागमे अत्यधिक चुन्ननसँ युक्त अधोवस्त्रक एकटा प्रभेद **नैंहगा** / **लैंहगा** कहल जाइछ । आधुनिक लहँगाक प्रभेदकेँ **गरारा** कहल जाइछ । नेनाक हेतु अधिक चुन्ननयुक्त नैंहगाक एकटा प्रभेद **घघरी** / **घँघरी** कहल जाइछ । नटुआ आदिक पैघ नैंहगाक प्रभेद **घाघर** / **घघरा** / **घग्घर** कहल जाइछ । साड़ीक सम्पूर्ण भागकेँ काटि कऽ बनाओल घघराकेँ **पेशवाज** कहल जाइछ । चुस्त मोहरीसँ युक्त कन्याक पएजामा सदृश वस्त्रकेँ **सलवार** / **सुरवाल** कहल जाइछ । जाँघपर अत्यधिक चुन्नन युक्त सलवार सदृश घेरदार नारी-वस्त्रकेँ **सरारा** कहल जाइछ ।

गर्दनिसँ डाँड़ धरि झाँपबाक हेतु स्यूत परिधानक एकटा प्रभेद **फ्राक** कहल जाइछ । अपेक्षाकृत चुस्त ओ ठेहुन धरि झाँपबाक आधुनिक परिधानक एकटा प्रभेद **मीडी** कहल जाइछ । पैरक सम्पूर्ण भागकेँ झाँपयवला एहि परिधानक प्रभेदकेँ **मैक्सी** कहल जाइछ । गर्दनिसँ डाँड़ धरि झाँपबाक वस्त्रक एकटा प्रभेद **ब्लाउज** कहल जाइछ । एकरा संग अधोवस्त्रक रूपमे प्रयुक्त घघरी सदृश वस्त्रकेँ **स्कर्ट** कहल जाइछ । मीडी मैक्सी आदिक

संग अन्तर्वस्त्रक रूपमे पहिरबाक वस्त्रक एकटा प्रभेद **समीज** कहल जाइछ । एही प्रकृतिक अन्य वस्त्र **जम्पर** / **जम्फर** कहल जाइछ ।

नारीलोकनिक डाँड़सँ उपर गर्दनि भागकेँ झपबाक हेतु साड़ीक संग धारण करबाक वस्त्रक एकगोट प्रभेद **आंगी** / **अङ्गा** / **अंगा** / **अङ्गिया** कहल जाइछ । केवल छातीमात्रकेँ आवृत करयवला अङ्गियाक प्रभेद **चेस्टर** / **टाइटर** / **कसनी** / **चुचकसना** / **ब्रेसरी** कहल जाइछ । एकरे **चोली** / **चोलीबंद** सेहो कहल जाइछ । एकरा हेतु प्राचीन शब्द **कंचुक** भेटैछ । निम्न जातिक महिला पूर्ण बाहु ओ जेबीसँ युक्त आङ्गीक व्यवहार करैत छथि । एकरा **कुर्त्ती** कहल जाइत छैक । आधाबाहुक कुर्त्तीकेँ **नीमा** / **निमस्तीन** / **निमास्तीन** / **खरबहिआँ** कहल जाइत छैक । ब्लाउज, कुर्ती आदिक बाँहि पर संकुचनयुक्त फलकल भागकेँ **फलको** / **घेर** / **सुरहिया** / **सुराही** कहल जाइछ ।

मुसलमान स्त्रीलोकनिक गर्दनिसँ डाँड़ धरिक चोङा सदृश वस्त्रकेँ **बुरका** कहल जाइछ । बुरकामे मुँह झपबाक हेतु पर्दावला भागकेँ **नकाब** कहल जाइछ । मुसलमान स्त्रीक विवाहमे प्रयुक्त कुर्त्ती ओ सलवारकेँ **जामा जोड़ा** कहल जाइछ ।

छत्ता– रौद ओ पानिसँ बचबाक हेतु गोल आकारक एकटा वस्त्रक प्रयोग होइछ जकरा **छतरी** / **छाता** / **छता** (सं० छत्र) कहल जाइछ । ई शरीरक सुरक्षाक साधन थिक जे मिथिलामे व्यक्तित्वक निदर्शनक हेतु विशिष्ट वेशक रूपमे सेहो प्रयुक्त अछि । मिथिलाक वेशमे छाता-जूता छड़ी सेहो अबैछ । छता के खोलबाक हेतु तानब क्रियाक प्रयोग होइछ । छत्ताक बाह्य भाग जे शरीरकेँ अर्द्धगोलक आवरण बनल रहैछ कपड़ाक होइछ । कपड़ा तनल रहबाक हेतु नीचा दिससँ लोहक तारक बनावट होइत छैक, जकरा **तानी** / **कमानी** कहल जाइछ छैक । तानी मध्यवर्ती एकगोट दंडसँ सम्बद्ध रहैछ । एहि दंडकेँ **बेंट** कहल जाइछ । बेंटक ओ छोर जकरा उनटा रूपमे कहल जाइछ **मूँठ** कहबैछ । मूँठ दिस आँकुस सदृश आकृतिकेँ **मकुआ** कहल जाइछ । छत्ताक कपड़ाक उपरसँ एकटा छोटसन वृत्ताकार कपड़ा देल रहैत छैक । एकरा **चनवा** / **चनमा** कहल जाइत छैक । जाहि व्यवस्था द्वारा छाताकेँ तानल समेटल जाइछ ओकरा **घोड़ा** कहल जाइछ ।

पैरक सुरक्षा– पैरक सुरक्षाक हेतु सेहो विभिन्न परिधान पहिरल जाइछ । ई परिधान काठ ओ चामक होइछ । काठक पैर रक्षण सामग्रीकेँ **खड़ाम** / **खणाम** / **खराओं** / **पदुक्का** कहल जाइछ । **ग्रियर्सन** एकरा लेल **खड़ाओनि** शब्द देलनि अछि ।

खड़ामकेँ पैरक आँठासँ पकड़ने रहबाक हेतु ओकर अग्रभागमे एकटा छोटसन खरादल दंड लागल रहैछ । जकरा **खुट्टी** / **खूंटी** / **खूँटी** कहल जाइछ । छोट खूटीकेँ **खुटरी** कहल जाइछ । खुट्टीक उपरका चाकरवला भागकेँ **फुलिया** / **छत्ता** कहल जाइछ । खुट्टीक निचला भागक छेदमे पैसाओल काठक टुकड़ीकेँ **मेखी** कहल जाइछ ।

ई खड़ामक पिढ़िया ओ खुट्टीकेँ सम्बद्ध कयने रहैछ । खड़ामक जाहि समतल भागपर तरबा रहैछ ओकरा **पिढ़िया** कहल जाइत छैक । पिढ़ियाकेँ उपर उठौने रखबाक हेतु ऐँड़ी ओ चाङुरक भागक नीचा गोरा (ड़ा) / **गोरिया** बनाओल रहैत छैक । जाहि खड़ामक गोड़ा उपयोग करैत-करैत खिया गेल रहैत छैक ओकरा **खियौटी** / **खिनौरी** कहल जाइछ ।

बिन खुट्टीक खड़ामकेँ **बदहा** / **बधा** / **बधहा** / **बाधा** कहल जाइत अछि । एहिमे पैरकेँ रस्सीक फानी घेरने रहैत छैक । गोड़ाविहीन खड़ामक एकटा प्रभेदकेँ **खरमा** कहल जाइत छैक । एहिमे रबरक फीता लागल रहैत छैक । छोट खड़पाकेँ **खड़पी** कहल जाइछ । दुनू पैरक खड़ामकेँ **जोड़ा** ओ प्रत्येककेँ **पल्ला** / **पवाइ** कहल जाइछ । चामक बनल पैरक सुरक्षा सामग्रीकेँ **पनही** (सं० उपानह । **जूता** / **जुता** कहल जाइछ । देशी जुताकेँ **चमरउ** कहल जाइछ ।

जूताक नीचावला भागकेँ **तल्ला** / **तल्ली** / **तड़री** कहल जाइछं । तल्लीक अग्रभागकेँ **ठोकर** कहल जाइछ । जूताक उपरवाला भागमे जे अंश पंजाकेँ झँपने रहैछ, से **अपर** कहल जाइछ । अपरमे फीताक नीचावला जीह सदृश आकृतिकेँ **जिभ्भी** / **जिभिया** कहल जाइछ । जूताक तल्लीक सम्पूर्ण भागपर ओछाओल पातर चामकेँ **शूतल्ला** / **सुपतल्ला** / **सुखतल्ला** कहल जाइछ ।

जूताक तलीमे ऐँड़ी दिसुक भागमे चामक मोट तह देल रहैछ । एकरा **सोल** / **ऐँड़ा** / **ऐँड़ी** कहल जाइछ । तल्ली ओ सुखतल्लाक बीचवला भागकेँ **अनबर** कहल जाइछ । बेसी ऊँच सोलकेँ **हील** / **हाइहील** कहल जाइछ । उपरक जे भाग ऐँड़ी दिस रहैत छैक ओकरा **अड्डी** / **पूरा** कहल जाइत छैक । अड्डीक मध्य भागक जोड़केँ झँपैत चामक टुकड़ीकेँ **मगजी** कहल जाइछ ।

अत्यन्त ऊँच अड्डीसँ युक्त जुताक पैघ ओ विशिष्ट प्रभेदकेँ **बूट** कहल जाइछ । स्त्रीगणक जुताकेँ **जुत्ती** कहल जाइछ । अड्डी विहीन एवं अग्रभागमे खुलल अपरसँ युक्त जुत्ताक प्रभेदकेँ **चट्टी** / **चप्पल** कहल जाइछ । रबरक चट्टीमे **हवाइ चप्पल** आइकालि विशेष रूपेँ प्रचलित अछि ।

चमरउ जुत्ताके एकटा पारम्परिक प्रभेदमे अग्रभागमे नोँखी बनल रहैत छैक । एकरा **सलमशाही** / **सलीमशाही** / **सलेमशाही** कहल जाइछ । एही आकारक नोँखी रहित जुत्ताक आधुनिक प्रभेद **नागरा** कहल जाइछ । नागरा जूताक अपरवला भागकेँ **टपिया** कहल जाइछ । नागराक विशिष्ट प्रभेद **ठिकरी** होइत अछि । जाहि जुत्तामे नोँखी आगू दिस जाकऽ पुनः पाछू दिस मुड़ल रहैछ, ओकरा **पिलकौआँ** कहल जाइछ । एकर अतिरिक्त **डैरबी**, **हाल्टीन**, **बुलन्दशहर**, **ग्रीसन**, **जलसा**, **खेलौना**, **अल्बट**, **चाइनीज**, **गोगो** आदि प्रभेदक जुत्ता एतय प्राचीने कालसँ चलैत रहल अछि । एहि दुनूमे **डैरबी** दरभंगा

राजक मैनेजर **डैनबीक** नामपर बुझना जाइछ ओ **ग्रीसन** प्रसिद्ध भाषाविद् ग्रियर्सनक नाम पर । ई दुनू प्रकार हिनका लोकनिक जूताक अनुकृति छल होयत । बुलन्दशहर, चाइनीज आदि स्थान विशेषसँ उत्पादित जूताक प्रभेदक अनुकृति बुझना जाइछ ।

जुत्ता पहीरि कऽ चललासँ उत्पन्न ध्वनि **मचमच** कहल जाइत छैक । आवाज करयवला जुत्ताकेँ **मचमचौआ** कहल जाइछ । जूताकेँ चमचम ओ मोलायम बनयबाक हेतु एहिसँ ब्रशक साहाय्य **पालिस** दऽ देल जाइत अछि । पहिने अंडीतेलक उपयोग होइछ छल ।

आत्मरक्षाक साधन– आत्मरक्षाक साधनक रूपमे वेशमे करीब तीन हाथ नाम दंडक प्रयोग होइछ । एकरा **लाठी** कहल जाइछ । पैघ ओ मोट लाठीकेँ **लट्ठ** कहल जाइछ । एकर उपरका भागकेँ **मूठ** / **हत्था** ओ निचला भागकेँ **हूर** / **हूरा** कहल जाइत छैक । लाठीक सहारापर चलबाक क्रिया **टेकब** होइछ । छोट लाठीकेँ **सटका** कहल जाइछ । डाँड़ धरिक लम्बाइक पातर लाठीकेँ **छड़ी** कहल जाइछ । छोट ओ मोट प्रकृतिक दंडकेँ **सोँटा** कहल जाइछ । अत्यधिक मोट सोँटाकेँ **मुङरा** कहल जाइछ । छोट मुङराकेँ **मुङरी** कहल जाइछ । सटकाक हेतु **डण्टा** शब्दक सेहो प्रयोग होइछ । छोट डण्टाकेँ **डटौका** कहल जाइछ । लाठीक हेतु **ठेँगा** शब्द सेहो प्रचलित अछि । एकर छोट ओ पातर प्रभेदकेँ **ठेँगी** / **ठेँगुनी** कहल जाइत छैक । आँकुस सदृश मूठवला भागकेँ **मकुआ** कहल जाइछ । अत्यन्त पातर सटकाकेँ **छौँकी** कहल जाइछ । **बाँसकेँ** फाड़िकऽ बनाओल सटकाकेँ **फट्ठा** कहल जाइछ । कलाकृतिपूर्ण छड़ीक एकटा प्रभेद **फुलहत्था** कहल जाइछ । पुरुषक हाथमे बाँसक फटठीक छड़ी होइछ जकरा **फराठी** कहल जाइछ ।

सन्दर्भ सूची–

1. बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ. 143
2. सढ़िया देलियऽ हे धनी तिनपढ़िया देलियऽ हे ।

अष्टम अध्याय

आभूषणक शब्दावली

सोन, चानी आदि महार्घ धातुसँ सामान्यतः निर्मित, विभिन्न अंगकेँ आभृत कऽ ओकर शोभाधायक, प्रसाधन सामग्रीक अपेक्षा टिकाउ एवं पुनः पुनः धारण करबा योग्य सामग्री सभकेँ आभूषणक अन्तर्गत परिगणित कयल जाइत अछि। एकरा **भूषण** / **अभरन** / **आभरन** / **गहना** / **जेवर** सेहो कहल जाइछ। गहनाक समूहक हेतु **गहना-गुरिया** / **जेवरात** शब्दक प्रयोग होइछ। छोट छीन गहनाकेँ **टुमटाम** कहल जाइछ। गहनाकेँ आजीविकाक रूपमे ग्रहण कयहिनहार जाति **सोनार** कहल जाइछ। सोनारक व्यवसायकेँ **सोनारी** कहल जाइछ। सोन चानीक थोक बाजारकेँ **सर्राफा** ओ थोक व्यापारीकेँ **सर्राफ** कहल जाइछ।

गहना मुख्यतः **सोन** आ चानी नामक धातुसँ बनाओल जाइछ। सोनक हेतु **सोना** तथा चानीक हेतु **चान्दी** शब्दक प्रयोग होइछ। डाँड़क निचला अंगमे सोनाक गहना नहि धारण करबाक परिपाटी अछि। सोना ओ चानीक अतिरिक्त **ताम** / **तामा** / **ताम्बा**/ **काँसा** / **कसकुट** / **सिल्भर** / **गिलट** / **पित्तर** आदि धातु ओ धात्विक मिश्रणक उपयोग गहना बनयबामे होइछ।

सोनाक विशुद्ध भेलापर ओकरा **खालिस सोना** / **बिठुर सोना** कहल जाइछ। एहिमे मिलल अशुद्धिकेँ **बट्टा** / **खाद** कहल जाइछ। सोनाक चौखूट ओ मोट टूकड़ीकेँ **सील** / **पासा** / **बिसकुट** / **छलकी** / **छिलकी** / **थोक** / **थौक** कहल जाइछ। अत्यधिक बट्टावला सोनाकेँ **गोबरिया** / **नेपाली सोना** कहल जाइछ। कम बट्टावला सोनाक एकटा प्रभेद गिन्नी सोना होइछ। बट्टावला सोनाकेँ **बट्टेदार** कहल जाइछ। बट्टेदार सोनामे शुद्ध सोनाक अनुपातकेँ **छारी** कहल जाइछ। सोनाक शुद्धताक नाप **कैरेट** / **कारेटमे** होइछ। बट्टाक आधारपर सोना चौदह, बाइस, चौबीस कैरेटक होइछ।

चानीक मोट ओ चौखूट सोलकेँ **चौरसा** कहल जाइछ। एकतिहाइ बट्टासँ युक्त चानीकेँ **रूप** / **रूपा** कहल जाइछ। अत्यन्त बट्टावला चानीकेँ **टलहा** कहल जाइछ। गहनामे आठटा धातुक मिश्रणक सेहो उपयोग होइछ। एकरा **अष्टधातु** कहल जाइछ। एहिमे **सोना**, **चान्दी**, **लोहा**, **ताम्बा**, **पास्ता**, **पारा**, **राङ्गा** ओ **सीसा** परिगणित अछि।

सोनाक देशी रुपैयाकेँ **मोहर** कहल जाइछ। एक भरिक मोहरकेँ **असरफी** कहल जाइछ। असरफीक एकटा प्रभेद **छत्रपुरी** होइछ। असरफीसँ छोट आकृतिक मुगलकालीन सोनक सिक्काकेँ **खजुरिया** कहल जाइछ। ब्रिटिशकालक चाँक सिक्काकेँ **कम्पनी** / **नोट** / **रुपया** / **रुपैया** / **रुप** / **टका** / **टाका** कहल जाइछ। बट्टेदार सिक्काकेँ **कलदार** / **कालदार** । **सन्देश** कहल जाइछ। आधा मोहरक मूल्यवला सिक्काकेँ **अठन्नी** ओ तकर आधा मूल्यवलाकेँ **चौअन्नी** / **सुक्का** / **सुक्की** कहल जाइछ। ब्रिटिशकालीन सिक्काक एकटा मिश्रधातुसँ निर्मित प्रभेद **गिन्नी** कहल जाइछ। एकर अतिरिक्त **छदाम**, **पाइ**, **डेबुआ**, **एकन्नी**, **दुअन्नी**, **डेढ़अन्नी** आदि सिक्का सेहो सोन, चानी ओ अन्य धातुसँ युक्त होइछ आ गहना निर्माणमे सहायक तथा गहनाक रूपमे धारण कयल जाइछ।

गहनामे सौन्दर्यक हेतु धातुपर बैसाओल मूल्यवान पाथरकेँ **नग** / **नगीना** / **रत्न** / **रतन** कहल जाइछ। रत्नक संख्या नौ मानल गेल अछि। एकरा सभकेँ **नौरतन** / **नवरत्न** / **नौरतन** कहल जाइछ। ई सभ अछि **हीरा**, **पन्ना**, **नीलमणि**, **लहसुनिआँ**, **मानिक**, **गोमेद**, **पोखराज**, **मोती** ओ **मूङ्गा**। नीलमणिकेँ **इन्द्रनील** / **नीलम** सेहो कहल जाइछ। मानिककेँ **लाल** सेहो कहल जाइछ। मूङ्गाकेँ **प्रवालमणि** कहल जाइत छैक।

नवरत्नक अतिरिक्तो अनेक पाथर गहनामे लगाओल जाइछ। एकरा सभकेँ **उपरत्न** कहल जाइत छैक। एहिमे **ओपल**, **तामा**, **फिरोजा**, **हकीक** (अ०अकीक) आदि प्रमुख अछि। सोन ओ चानीक गहनापर रंगीन काज करबाक हेतु जाहि रंगक व्यवहार होइछ ओकरा **मीना** कहल जाइत छैक। गहना एवं सम्बद्ध धातुकेँ जोखबाक हेतु जाहि तराजूक व्यवहार कयल जाइछ ओकरा **निकती** / **निकुती** कहल जाइछ। जोखबाक हेतु व्यवहृत मानककेँ **बाट** / **बटखरा** कहल जाइछ। गहनाकेँ जोखबाक प्राचीन मानक **तोला** / **भर** / **भरी** अछि। एक भरीक सोलह आना होइछ। एक आनामे चारि **पैसा** / **पाइ** होइछ जकर वजन छओ रत्ती होइत छैक। पाइक आधा **अद्धी** / **लाल** कहल जाइछ। लालक हेतु मानक करजनीक फड़क व्यवहार होइछ। एकलाल तीन मानक जौक दानाक बराबरि तथा एक जौ छओ मानक तिलक दानाक बराबर होइछ। मानक वजनकेँ स्थिर करबाक क्रिया **धेयारब** / **भयारब** होइछ। भेयारल मानक वस्तुकेँ **भेआर** कहल जाइछ। तौलक सारणी एहि प्रकारक अछि–

3 जौ	–	1 लाल	4 जौ	–	1 रत्ती
2 लाल	–	1½ रत्ती	4 रत्ती	–	1 चौरती
5¼ रत्ती	–	1 अन्नी	8 रत्ती	–	1 मासा
10½ रत्ती	–	1 दुअन्नी	8 दुअन्नी	–	1 ढक
12 मासा	–	1 तोला			

गहनामे सोन-चानी आदि धातुक शुद्धताक जाँच करबाक हेतु ओकरा एकटा पाथर पर रगड़ि कऽ देल जाइछ । एहि पाथरकेँ **कसौटी** कहल जाइछ । कसौटीपर गहनाक रगड़सँ उत्पन्न चेन्हकेँ **कस** कहल जाइछ । गहनाकेँ बनयबाक क्रिया **गढ़ब** होइछ । गहना गढ़बाक प्रक्रिया ओ मजदूरी गढ़ाइ कहल जाइत छैक । गढ़ला उत्तर बनल आकृतिकेँ **गढ़नि** कहल जाइछ । गहनापर खोदल फूलपातक आकृतिकेँ **नक्कासी** कहल जाइछ । नक्कासी करबाक क्रिया **खोधब / काढ़ब** होइछ । नग बैसयबाक क्रिया **जड़ब** होइछ । गहनाक आकृति विशेषकेँ **काट** कहल जाइछ । दूटा शुद्ध धातुक टुकड़ीकेँ जोड़बाक हेतु व्यवहृत मिश्रणकेँ **टाँक** कहल जाइछ । टाँक द्वारा जोड़बाक क्रिया **टाँकब** होइछ ।

गहनाकेँ शुद्ध करबाक क्रिया सलोनी करब होइछ । शुद्ध कयला उत्तर प्राप्त सोनकेँ **तेजापी / तेजाबी / बम्बइया ससोन** कहल जाइछ । आगिमे तपाओल सोनकेँ **कुन्दन** कहल जाइछ । दोसर धातुक गहनापर चढ़ल सोन, चानी आदिक परतकेँ **मोलामा / मोलम्मा** कहल जाइछ । प्राचीन मैथिलीमे एकरा **चातर** कहल गेल अछि । चातर कयनिहार कारीगरकेँ **चतरिया** कहल जाइछ । एकर आगाँके **चमक, चकमक** कहल जाइछ । गहनाक उपरका मैलीकेँ साफ करबाक क्रिया **सफइया** कहल जाइछ ।

गहनामे फूल खोधल रहलापर ओकरा **नक्कासीदार** कहल जाइछ । जालक आकृतिमे युक्त गहना जालदार तथा उतलोतल सतहसँ युक्त गहनाकेँ **पहलदार** कहल जाइछ । धातुकेँ केवल पीटिकऽ बनाओल गहनाकेँ **पिटुआ** कहल जाइछ । रत्नजटित गहनाकेँ **जड़ाउ / जड़ाओ** कहल जाइछ । धातुकेँ छीलिकऽ तैयार कयल गहनाकेँ **छिलुआ** कहल जाइछ । गहनाक अददकेँ **थान** कहल जाइछ । गहनाक युग्मकेँ **जोड़ / जोड़ा** ओ जोड़मे प्रत्येककेँ **बेजोड़ / बेजोड़ा** कहल जाइछ । गहनाक ध्वनिकेँ **रुनुझुनु** कहल जाइछ । फोंक गहनामे पैसल बालु आदिकेँ **पच्छी** कहल जाइछ ।

अनेक गहनामे जाफर सदृश लटकन लटकैत रहैछ । एकरा **धुंडी / घूड़ी / घुण्डी जाफरी** कहल जाइछ । ठिकरीक आकृतिक बनावटिकेँ **तक / तौक / चमेल / बचबा** कहल जाइछ । अधगोलाक आकृतिक बनावटिकेँ **रबा / राबा** कहल जाइछ । छोट रबाकेँ **रबारी** कहल जाइछ । दालिक आकृतिक रबाकेँ **चन्नक / चन्दक** कहल जाइछ । छोट चन्नककेँ **चनकी / चन्दकी** कहल जाइछ । अनेक गहनामे गथबाक हेतु वलयाकृति लगाओल रहैछ । एकरा **कोढ़ा/कोढ़हा / टोप** कहल जाइछ । सिकड़ीक लटकैत भागकेँ **लर / लरी** कहल जाइछ । दूटा रबाकेँ जोड़ि कय बनाओल गेल आकृतिकेँ **गोनी / बोर / घुवरू/ झुनकी** कहल जाइछ । गहनामे लटकल भागकेँ **लटकन / लुटकुन** कहल जाइछ ।

सामान्यतः गहनाकेँ माथ, नाक, कान, गर्दनि, बाँहि, पहुँची ओ हाथक आङुर आदिक उत्तमांगमे धारण कयल जाइछ । एहि सभमे सामान्यतः सोनक गहना धारण कयल जाइछ । अभावमे चानी आदि अन्य धातुक गहना सेहो एहि अंग सभमे धारण कयल

जाइछ । डाँड़ ओ पैर आदि अधभांगमे सोनाक गहना नहि धारण कयल जाइछ । एहि अंग सभमे चानीएक गहना प्रशस्त मानल जाइछ ।

माथक गहना– माथमे सिउँथकेँ झपबाक गहनाक प्रभेद **टीका/सीथी/मानिकलट / माङ्गी** कहल जाइछ । एहि गहनाक विभिन्न आकृतिक अनुरूप प्रभेद सभ अछि **मङ्टीका, टयरा** आदि । ललाटपर सटबाक सोनक पातर ओ गोल गहनाकेँ **टिकुली** कहल जाइछ । नक्कासीदार टिकुलीकेँ **सिसफूल** कहल जाइछ । अर्द्धचन्द्रकार टिकुलीकेँ **चान / चान्द** कहल जाइछ । नाम आकृतिक टिकुलीकेँ **बिन्दी** कहल जाइछ । केसमे खोंसबाक गहनाक प्रभेदकेँ **सटिया / नागिन / चुट्टा / क्लिप / पिन** कहल जाइछ । खोपाक परितः जालदार गहनाक प्रभेद **जूड़ा / जुड़बा** कहल जाइछ ।

नाकक गहना– नाकक पूरामे धारण करबाक गहनाकेँ **छक** कहल जाइछ । छोट छककेँ **खुटिया / खोटला / खुटिला** कहल जाइछ । नगवला छककेँ **गुल्फी** कहल जाइछ । गोलाकार छककेँ **बुट्टा** कहल जाइछ । छिलुआ बुट्टाकेँ **मरीच** कहल जाइछ । पानक आकृतिक छककेँ **पनमा** कहल जाइछ । चिड़इक आकृतिक छककेँ **चिरतन / चिड़िया** कहल जाइछ । चन्द्राकार छककेँ **नकचन्दा** कहल जाइछ । फूलक आकृतिक छककेँ **नकफूल** कहल जाइछ । लौंगक आकृतिक छककेँ **लौंग** ओ मोतीक आकृतिक छककेँ **मोती** कहल जाइछ । चौरपूट छककेँ **ठोप** कहल जाइछ । नाकक छेदमे पैसल छकक फोंक बेलनाकार भागकेँ **चोंगी** कहल जाइछ । चोंगीमे पैसयबाक तामक दंडाकृतिकेँ **तल्ली** कहल जाइछ ।

नाकमे पहिरयबाक वलयाकृति गहनाकेँ **नथनी / नथुनी** कहल जाइछ । पैघ नथुनीकेँ **नथिया** कहल जाइछ । पैघ नथियाकेँ **नथ** कहल जाइछ । कानसँ सम्बद्ध नथियाक प्रभेदकेँ **नकमुन्नी** कहल जाइछ । नगयुक्त एवं नक्कासीदार नथियाक एकटा प्रभेद **बेसर / बेसरि / नकबेसर / नकबेसरि** कहल जाइछ । लरयुक्त बेसरकेँ **झुलनी** कहल जाइछ ।

नाकक दूनू उपास्थिक अध्यवर्ती उपस्थितमे धारण करबाक नथियाके **नकेल / नकेली** कहल जाइछ । झुलबाक पृथक अवयवसँ युक्त नकेलकेँ **बुलकी / बुलाकी** कहल जाइछ । पैघ बुलकीकेँ **बुलाक** कहल जाइछ । चाकर बुलकीक एकटा प्रभेद **लैलक** होइत अछि ।

कानक गहना– कानक उपरका छेदमे धारण करबाक वलयाकार गहनाक प्रभेद **कनेली/ कनैली / कनौसी** कहल जाइछ । फूलहार कनौसीकेँ **उतरना** कहल जाइछ । माछक आकृतिक कनौसीकेँ **खुट्टी / मछरिया** कहल जाइछ । फूलक आकृतिसँ युक्त कानक निचला छेदमे धारण करबाक गहनाकेँ **कनफूल / करनफूल / कनरफूल** कहल जाइछ । उत्तल नक्कासीवला कर्णफूलकेँ **टॉप्स** कहल जाइछ । मीनाकारीसँ युक्त टॉप्सक प्रभेद

कनपासा होइछ । पैघ आकृतिक कर्णफूलकेँ तड़का कहल जाइछ । छोट तड़काकेँ **तड़की** कहल जाइछ । पैघ रवादार ओ नक्कासीदार कर्णफूलक एकटा प्रभेद **खुटला / खुटिला / खोटिला** कहल जाइछ । छोट खुटलाकेँ **खुटिया / खुटली / खुटी / खुट्टी** कहल जाइछ । ठोस ओ गोल पिंडवला कर्णफूलक प्रभेद **ढेला / चटका** कहल जाइछ । छिलुआ ढेलाकेँ **हीराकाट** कहल जाइछ।

फोंक वलयाकार कानक गहनाकेँ **बाली / डोल / कनबाली** कहल जाइछ । पैघ बालीकेँ **बाला / कनबाला** कहल जाइछ । दोहरा तारवला बालीकेँ **फिरकी** कहल जाइछ । पुरुषक मोट बालीकेँ **कुण्डल** कहल जाइछ । फूलदार आकृतिसँ युक्त बालीक एकटा प्रभेद **मकरी / माकरी** होइछ । माकरीक निचला भागमे लर लटकैत रहलापर ओकरा **कड़ी** कहल जाइछ । मुसलमानिक चानीक बालीकेँ **बारि / दूर** कहल जाइछ।

मोट ओ पिटुआ सोनक कानक गहनाक प्रभेद **लोर / लोरि / लोइर** होइछ । लोरिमे फूलपत्ती खोधल रहलापर ओकरा **अमती / अन्ती** कहल जाइछ ।

नक्कुशी द्वारा कानमे लटकैत गहनाक प्रभेद विशेष **झुमका / लटका** कहल जाइछ । पैघ आकृतिक झुमकाकेँ **झुम्मक** कहल जाइछ । झुम्मकमे लागल छोट झुमकाकेँ उम्मक कहल जाइछ । लघु आकृतिक झुमकाकेँ **झुमकी** कहल जाइछ । झुमकामे टोपक स्थान पर विशिष्ट आकृति सभक लुटकुन लागल रहलापर ओकरा **बिजली / बिजुली / बिजुलिया** कहल जाइछ । कानक सम्पूर्ण भागकेँ झाँपयवला गहनाक प्रभेदकेँ **बीर** कहल जाइछ । झुम्मक लागल बीरकेँ **बीरझुम्मक** कहल जाइछ । बीर लागल कर्णफूलक एकटा प्रभेद **झिमझिमवा** होइछ । चन्द्राकार नक्कासीवला कर्णफूलक एकटा प्रभेदकेँ **ऐरिंग** कहल जाइछ ।

गरदनिक गहना– गर्दनिमे पहिरबाक ठोस चन्द्रकार गहनाकेँ **सूति / हँसली / हँसुली** कहल जाइत छैक । एकर दूनू छोरपर हंसक मुखाकृति बनल रहैत छैक । सोनक तारमे गाँथल सोनेक गोल-गोल छिद्रमय पिंडसँ बनल गहनाकेँ **माला / हार / हरबा / नकलेश** कहल जाइछ । पहलदार सोनक पिंडसँ बनल हारकेँ **ग्रीवाहार / गिरिमहार / गिरमलहार** कहल जाइछ । मटरक आकृतिक पिंडसँ बनल हारकेँ **मटरदाना**, मरीचक आकृतिक पिंडसँ बनल हारकेँ **मरीचदाना**, नाम आकृतिक पिंडसँ बनल हारकेँ **पुरहरि**, काँटदार नक्कासीसँ युक्त पिंडसँ बनल हारकेँ **काँट / कटसर / कटसरि / कटसरी / कटेसर**, पानक पातक आकृतिक सोनक पिंडसँ बनल हारकेँ **जोगिनी**, बेलनादार दानासँ बनल हारकेँ **चाँपकली**, चम्पाक फूल सन पिण्डसँ बनल हारकेँ **मोहरमाला / मोहनमाला**, मोतीक हारकेँ **मोतीमाला** कहल जाइछ । सोन वा चानीक बेलनाकार टुकड़ीकेँ **टोन / हारी** कहल जाइछ । हारीसँ युक्त ग्रीवाहारके **मंगलसूत्र** कहल जाइछ । चन्द्राकार हारकेँ **चन्द्रहार** कहल जाइछ । नगसँ युक्त हारकेँ **झिलमिलीहार** कहल जाइछ । लरयुक्त हारक एकटा प्रभेद **सीताहार** होइछ ।

सोन चानीक तारसँ निर्मित शृंखलायुक्त हारकेँ **सिकड़ी / चेन** कहल जाइछ । चेनक निचला भागमे लटकैत मीनायुक्त वस्तुकेँ **राकेट / लाकेट** कहल जाइछ । सिकड़ीमे लरक संख्याक आधारपर सिकड़ीक **दुलरी, तेलरी, पंचलरी, सतलरी** आदि प्रभेद होइछ । पेट ओ पीठपर लटकैत सिकड़ीक एकटा प्रभेद **पेटबद्धी** होइछ । एकेटा लरवला सिकड़ीकेँ **एकावली** कहल जाइछ । अत्यन्त पातर तारक एकावलीकेँ **बद्ध** कहल जाइछ । चाकर तारक एकावलीकेँ **गोट सिकड़ी** कहल जाइछ । चौंपिकऽ किंचित चाकर तारक वलयसँ निर्मित सिकड़ीकेँ **चिपुआ सिकड़ी** कहल जाइछ । सिकड़ीक हेतु धातुक तारक टुकड़ीकेँ **फरसी**, दूटा फरसीक सम्बन्धसँ बनल शृंखलाके **गुड़ा** ओ गूड़ाक शृंखलाकेँ **लर** कहल जाइछ । सिकड़ीक अन्तिम दूनू छोरकेँ जोड़बाक नकुसी व्यवस्थाकेँ **कुलाबा / कुलेबा / बगुलदानी** कहल जाइछ । ऐंठल वलयक एकहरा सिकड़ीकेँ **गोप / गोफ / घुनसी** कहल जाइछ । सिकड़ीक प्रत्येक वलयकेँ **गुटका** कहल जाइछ । गुटकाकेँ विभिन्न तरहेँ सम्बद्ध कय **कदमसिकड़ी, चौकड़िया** आदि प्रभेद निर्माण होइछ ।

डोरामे गाँथिकऽ गरदनिमे धारण करबाक अनेक प्रकारक गहना सभ अछि । **असर्फी, अठन्नी, चौअन्नी, सुक्की** आदिकेँ डोरामे गँथाय पहिरल जाइछ । एकरा सभकेँ **छड़** कहल जाइछ । आधुनिक सिक्काकेँ डोरामे गथला उत्तर **हैकल / हयकल** नामक गहना कहल जाइत अछि ।

कोढ़ा लागल चौखूट गहनाक प्रभेदकेँ **चकुठा / चौकठा** । ओ एकर छोट प्रभेद **चकुठी / चौकठी / चकती** कहल जाइछ । ठोस बेलनकार कोढ़ायुक्त गहनाक एकटा प्रभेद **तुमरी** कहल जाइछ । कुसियारक गेंड़ीक आकृतिक तुमरीक प्रभेदकेँ **ढोलना** कहल जाइछ । मीनाकारीसँ युक्त लाकेट सदृश गहनाकेँ **जुगनू / जुगलू** कहल जाइछ । हनुमानजीक आकृतिसँ युक्त जुगारकेँ **हलुमानी / हनुमानी** कहल जाइछ । अत्यन्त लघु हनुमानीकेँ **धुकधुकी** कहल जाइछ । चन्द्रमाक आकृतिक जुगनूकेँ **जितिया** कहल जाइछ । नेनाक आकृतिसँ युक्त जुगनूक प्रभेदकेँ **सहोदरा** ओ नारी आकृतिसँ युक्त रहने **सौतिनिआ** कहल जाइछ । बाघक नहक आकृतिक चानीक जुगनूकेँ **बघनहा / बघनाहा** । सूगरकदाँतक आकृतिक जुगनूकेँ **सुगरक दाँत** कहल जाइछ । नेनाकेँ पहिरयबाक मोतीमालाक एकटा प्रभेद **नजरिया-गुजरिया** होइछ । लहसुनक पोरक आकृतिक जुगनूक प्रभेदकेँ **लसुनिआ / लहसुनिआ** कहल जाइछ । घम्हौरीक फाड़क आकृतिक जुगनूकेँ **घम्हौरीदाना** कहल जाइछ । तांत्रिक वस्तुसँ युक्त बेलनाकार आभूषण विशेषकेँ **जन्त्र / जन्तर** कहल जाइछ । मुसलमानक चौखूट अन्तरकेँ **ताबीज / तबीज** कहल जाइछ । त्रिकोणक आकृतिक गहनाक एकटा प्रभेद **सिंघाड़ी** कहल जाइछ ।

विवाहक अवसरपर कन्याक हेतु लाहक एकटा मालाक उपयोग होइछ, एकरा **गुआमाला** कहल जाइछ ।

बाँहिक गहना– बाँहिमे सेहो **चकुठा**, जब आदि डोरामे गँथाकऽ पहिरल जाइछ। सोन-चानीक चाकर पत्तरसँ बनल गहनाक एकटा प्रभेद **पाति / पाइत** कहल जाइछ। कम चाकर पातिकेँ **टाड़ / टड़िया** कहल जाइछ। मोट वलयाकार छड़क गहनाकेँ **लपेट** कहल जाइछ। तामक लपेटकेँ **टन्टा** कहल जाइछ। सप्ता डोराक संग सोनक कमानीदार तारक लपेट धारण कयल जाइछ। एकरा **गूना** कहल जाइछ। चानीक नओ गोट बेलनाकार दानासँ बनल गँथायल गहनाक प्रभेद **नवग्रह / नवग्रही** कहल जाइछ। नगयुक्त नवग्रहकेँ **नौ नगा** कहल जाइछ। छक सदृश चानीक तीनटा टुकड़ीकेँ डोरामे गाँथि बाँहि पर धारण कयल जाइछ जकरा **तेमनिआ** कहल जाइछ। पाँचटा टुकड़ी रहला पर ई गहना **पचबनिआ** कहल जाइछ। चौदह गोट पहलदार सोनक गोलदानाकेँ सूतमे गथाय बाँहिपर धारण कयल जाइछ। पाँचटा टुकड़ी रहलापर ई गहना **पचबनिआ** कहल जाइछ। चौदह गोट पहलदार सोनक गोलदानाकेँ सूतमे गथाय बाँहिपर धारण कयल जाइछ। एकरा **अनन्त / अनन्ता / अनन्द** कहल जाइछ। अत्यन्त छोट दानाक अनन्तकेँ **किरमिछ** कहल जाइछ।

चानीक चाकर ओ अर्द्धचन्द्राकार पत्तरसँ निर्मित गहनाक प्रभेदकेँ **बाजू / बाजूबन्द / बाजूबन / बाजूबन्न / बजुल्ला / भुजबन्द / भुजबन** कहल जाइछ। लहरि आकृतिसँ युक्त बाजूकेँ **लहेरियाबाजू / कटुबी / कटबी बाजू** कहल जाइछ। कुम्हरक फूलक आकृतिक बाँहिक चानीक गहना **ककोड़वा / ककोड़हा / कोपराहा** कहल जाइछ। मृदङ्गक आकृतिक चानीक पाँच गोट टुकड़ीसँ निर्मित बाँहिक गहनाकेँ **बिजोठा/ बिजौठा / मुठला** कहल जाइछ। गोलदानावला बिजौठक प्रभेदकेँ **बिरखी** कहल जाइछ। केहुनी लग धारण करबाक कुसियारक गेंड़ीक आकृतिक चानीक गहनाकेँ **जइसन / जउसन** कहल जाइछ। तीनगोट यंत्राकृति वस्तुकेँ जोड़ि कऽ बनाओल जइसनक प्रभेदकेँ **तिनखंडी** ओ पाँचगोट यंत्राकृति वस्तुसँ निर्मित जइसनक प्रभेदकेँ **पचखंडी** कहल जाइछ। चानीक पत्तरक फूलदार गहनाकेँ **बाँक** कहल जाइछ। करहरक को सदृश बाँहिक गहनाकेँ **गोफ** कहल जाइछ। मयूरक पाँखिक आकृतिक बाँकक प्रभेदकेँ **कृष्णचूर / कृष्णचूरा** कहल जाइछ।

बाजू बिजौठ आदिमे लटकैत चानीक पहलदार टुकड़ीकेँ **भुंडी / भूंडी / घूरी/ सुराही** कहल जाइछ।

पहुँचीक गहना– नेनाक पहुँचीपर धारण करबाक चानीक ठोस वलयकेँ **मट्ठा / माठा / मठवा / मठिया / बलिया / हथना** कहल जाइछ। एकर दूनू छोरपर बनल बाघक मुँहक आकृतिकेँ **बघमुहा** कहल जाइछ। पहुँचीपर धारण करबाक चानीक चाकर नक्कासीदार वलयकेँ **पहुँची** कहल जाइछ। पहुँचीपर स्त्रीगण सोन ओ चानीक वलय धारण करैत छथि। एकरा **चुलि / चुड़ि /चूड़ि / चूड़ी** कहल जाइछ। चूड़ीक भीतरी व्यासकेँ **फान** कहल जाइछ। चूड़ीक नापक मानक **आना** होइछ। नेनाक चूड़ी चारि आना, छओ आना, आठआना, दस आना, बारह आना ओ चौदह आनाक होइछ। नेनाक चूड़ीकेँ **बचकानी** कहल जाइछ। चौदह आनासँ पैघ चूड़ीकेँ **सयानी** कहल जाइछ। सोलह आनाक चूड़ीक व्यास दू ईंच होइछ। तद्नुसार दूआना, दू, सवा, दू इंच, अढ़ाइ इंच आदि नापक चूड़ी होइछ। दूनू हाथमे पहिरबा योग्य चूड़ीक समूहकेँ **जोड़ / जोड़ा** कहल जाइछ। जोड़ लागल चूड़ीक समूहकेँ **जोड़ / जोड़ा** कहल जाइछ। जोड़ लागल चूड़ीक समूह खल आ ताहिसँ कम **बेखल** कहल जाइछ। डोरी जकाँ ऐंठल तारक चूड़ीकेँ **अगुआ / अगोली** कहल जाइछ। ई आगू दिस पहिरल जाइछ। चाकर पत्तरसँ निर्मित चूड़ीकेँ **बिचला / विचेली / छन / छन्द** कहल जाइछ। पहुँचीक पृष्ठ भागमे धारण करबाक गोल सतहवला चूड़ीकेँ **पछुआ / पिछुआ / पिछेली** कहल जाइछ। अग्रभागमे धारण करबाक चाकर ओ मोट नक्कासीदार चूड़ीक प्रभेदकेँ **बलया / बाला** कहल जाइछ। बालाक अवतलोत्तल सतहवला चूड़ीकेँ **बड़हरा / बड़हरी** कहल जाइछ। पातर तारक बड़हरीकेँ **अमिरती / इमिरती / तारकसी** कहल जाइछ। सरिसोक दाना सदृश नक्कासीदार बड़हरीक प्रभेदकेँ **दरोबी** कहल जाइछ। पैलक कनखाक उपरका भागक आकृतिक चूड़ीकेँ **टोड़ा / तोंड़ा / तोड़िआ** कहल जाइछ। पैघ आकृतिक चूड़ीक प्रभेद **चुड़िला** कहल जाइछ।

काँसक चूड़ीकेँ **बाँहू / बाँही / बहुँआ / बहिआँ** कहल जाइछ। चाकर बाहूकेँ **बन्न / बन्द** कहल जाइछ। काचक चूड़ीकेँ **कचरा** सेहो कहल जाइछ।

चप्पत चूड़ीक एकटा प्रभेद **कतरी / कटबी / कटुबी** होइछ। काँटदार बनावटसँ युक्त चूड़ीक प्रभेद **खसिया** कहल जाइछ। तीसीक फूलक आकृतिसँ युक्त चूड़ीकेँ **तिसिऔटा** कहल जाइछ। सोनक चाकर ओ नगयुक्त चूड़ीकेँ **बाव्टी / बाओटी** कहल जाइछ। ऐंठल चानीक तारसँ निर्मित चूड़ीक एकटा प्रभेद **रूल्ली** कहल जाइछ। अत्यन्त चाकर चूड़ीक एकटा प्रभेद **पटरी** कहल जाइछ। फूलदार ओ जालदार बनावटसँ युक्त चूड़ीकेँ **बस्ताना** कहल जाइछ। चारि पाँचटा परस्पर सम्बद्ध चूड़ीक समूहकेँ **रुपौठी** कहल जाइछ। मुसलमानमे व्यवहृत चूड़ीक चाकर प्रभेद विशेषकेँ **समसेरबन्द** कहल जाइछ। केहुनघरि पहिरल चूड़ीकेँ **केहुनिआ** कहल जाइछ।

धातुक अतिरिक्त चूड़ी लाह, शीशा, काच आदिसँ सेहो निर्मित होइछ। लाहक चूड़ीकेँ **लहठी** कहल जाइछ। लाहक चूड़ी बनयबाक व्यवसायी जाति लहेरी अछि। एकर कार्यकेँ **लहकम** कहल जाइछ। लाहक खोंधमासँ युक्त चूड़ीकेँ **गोगुआ** कहल जाइछ। कामदार चूड़ीकेँ **साज** कहल जाइछ। चूड़ी पहिरयबाक क्रिया **चूड़ी चढ़ायब** होइछ। लहेरी द्वारा बिनुमूल्यक दातव्य चूड़ीकेँ **जुग / सोहाग / सोहागभाग** कहल जाइछ। फूटल लहठीकेँ **कटैल** कहल जाइछ। कटैल द्वारा रेसबाक क्रिया **लाहब / लहाठब** होइछ। अनेक जोड़ चूड़ीक समूहकेँ **तोरा** कहल जाइछ। लहठी ओ काच तथा

शीशाक चूड़ीक अन्य नाम धातुएक चूड़ीक सदृश होइछ। अत्यधिक फानवला चूड़ीकें **हल्लर / हलना** कहल जाइछ।

तामक छड़ पर सोनक पत्तर दऽ बनाओल फूलदार चूड़ीक प्रभेद **टड्डा** कहल जाइछ। फोंक बालाक प्रभेदकें **कॉंकन / कंकन / कंगन / कग्गन / कगना / कगनमा** कहल जाइछ। एकर छोट प्रभेद **ककनी / कगनी** कहल जाइछ।

केराक कोसा सदृश सोनक टुकड़ीक नऽओगोट समूहकें गाँथि कऽ पहुँचीपर धारण कयल जाइछ। एकरा **नघुरी / नौघरी / लघुरी** कहल जाइछ।

हाथक आङ्गुरक गहना– हाथक आङ्गुरमे पहिरबाक वलयकें **अंगुठी / अउँठी** कहल जाइछ। आँखिक आकृतिक नगवला अउँठीकें **अँखुआ** कहल जाइछ। नगवला अउँठीकें **पखरौटी** कहल जाइछ। ऐंठल तारक अउँठीकें **ऐंठुआ** कहल जाइछ। तीनटा तारक ऐंठुआकें **तिनछलिया** कहल जाइछ। तामक ऐंठुआकें **पवित्री** कहल जाइछ। पारदर्शक नगसँ युक्त औंठीक प्रभेद **अरसी / आरसी** कहल जाइछ। खोधामासँ युक्त औंठीक प्रभेद **मुनरका** कहल जाइछ। छोट मुनरकाकें **मुन्द्री / मुनदरी / मुनरी / मुनरकी** कहल जाइछ। हाथक पाँचो आङुरमे औंठी ओ पृष्ठभागमे लरसँ युक्त गहना विशेषकें **हथसंकर / हाथसंकर** कहल जाइछ। मुसलमानलोकनि लर युक्त औंठीक एकटा विशेष प्रभेद धारण करैत छथि जकरा **गोरखधन्हारी / ओझरौआ** कहल जाइछ।

डाँड़क गहना– नेनाक डराडोरिमे पहिरयबाक फोंक गदासदृश चानीक गहनाकें **छुछरी** कहल जाइछ। नेनाक डाँड़कें आवृत्त करयवला पत्तर ओ सिकड़ीकें **कमरधनी / करधनी** कहल जाइछ। एहिमे अनेक घुघरू लागल रहैछ। कतहु कतहु एकरा **हरहरा** सेहो कहल जाइछ। स्त्रीगणक हेतु कलाकृतिपूर्ण कमरधनीकें **मेखल / मेखला / डड़कस / कमरकस / कमरजेब** कहल जाइछ। चाभीक समूह राखयवला चानीक गहनाकें **खोसना / झब्बा / झाबा / झबिया / डँड़पेंच** कहल जाइछ। साड़ीक कोंचामे लगयबाक झुमकाक आकृतिक गहनाकें **कोचबन / कोचबन्द / कोचबन्न** कहल जाइछ। जाफरक आकृतिक कोचबनकें **जाफरी** कहल जाइछ।

पैरक गहना– धियापुताक पैरक घुट्ठीपर पहिरबाक चानीक ठोस वलयकार गहनाकें **गोरा / गोरहा / गोरहन / गोराँय** कहल जाइछ। सयान स्त्रीक गोड़ाँयकें **काड़ा / कड़ा** कहल जाइछ। फोंक कारामे लोहक गोली देल रहैछ जाहिसँ ई चलैत काल आवाज करैछ। एकरा **बाजवला कड़ा** कहल जाइछ। पैरमे पहिरबाक चानीक चूड़ी सदृश गहनाकें **छड़ा / छाड़ा** कहल जाइछ। घुट्ठीपर धारण करबाक लहरदार पत्तरक गहनाकें **पैरी / पैरम** कहल जाइछ। बोरयुक्त पैरीकें **जेहरि** कहल जाइछ। बोरवला जेहरिकें **पजेबा / पाजेब / पौजेब** कहल जाइछ। ध्वनिकारक बोरकें **बाज** कहल जाइछ। पैरक

सम्पूर्णभाग आ एँड़ीकें झापयवला पौजेबक प्रभेद **साट** कहल जाइछ। बाजवला साटकें **पायल / पाइल** कहल जाइछ। भारी पायलकें **तोड़ा** कहल जाइछ। छोट-छोट बोरवला पायलकें **नुपुर / नेपुर / नेपुल / नेउर** कहल जाइछ। बाजवला भारी पायलक एकटा प्रभेद **पावट / पावटी** कहल जाइछ। पैरक प्रत्येक आङगुरक औंठीक सदृश गहनाकें **बिछिआ / बिछुआ** कहल जाइछ। पैरक अउँठाक बिछिआकें **औंन्ही / पोर** कहल जाइछ। पैरक पाँचो आङुरक बिछिया ओ घुट्टीकें लऽर द्वारा सम्बद्ध करयवला गहनाक प्रभेद **पैरसंकर** कहल जाइछ।

अन्य– सोन ओ चानीक अर्द्धवलयाकार टुकड़ी जे साड़ीक आँचरमे लगाओल जाइछ, **मनोरी** कहल जाइछ। कोरपर लागल मनोरीकें **कटोरी** कहल जाइछ। खोइंछा लग लागल मनोरी-कटोरीकें **अँचरी** कहल जाइछ।

गहना रखबाक छोट बक्साकें **कनतोरी** कहल जाइछ। गहनाक अधिक प्रयोगकें **चलनि / चलनिसारि** कहल जाइछ।

●

नवम अध्याय

प्रसाधनक शब्दावली

शरीरक विभिन्न अंगकेँ स्वच्छ, सुन्दर ओ आकर्षक बनयबाक प्रक्रिया सभहिक समेकित रूप **प्रसाधन** कहल जाइछ । एकर आधुनिक शब्द अछि **पसाहनि / पसाहन / प्रसाधन** । अपन व्यापक अर्थमे ई शब्द वेशभूषा विन्यास ओ अंग-परिष्कार द्वारा सौन्दर्यीकरणकेँ समाहित कयने अछि । प्रसाधन करबाक क्रिया **पसाहब** होइछ ।

पसाहनिमे शरीरक किछु विशिष्ट अंग यथा केश, ललाट, भौंह, नयन, कपोल, दाँत, मुँह, हाथ, पैर आदिक परिष्कार सम्मिलित अछि । प्रसाधन विन्यासक समेकित रूपकेँ **सिङ्गार-पटार** कहल जाइछ । **सिङ्गार** करब प्रसाधन विन्यासक हेतु **आपटार** शब्द वस्त्र विन्याससँ सम्बद्ध अछि ।

केश-प्रसाधन– केश-प्रसाधन नारी ओ पुरुष प्रसाधनक विशिष्ट अंग रहल अछि । सामान्यत: केशक रंग कारी होइछ । पीताभ ओ चमकसँ युक्त केशकेँ **सोनहुल / सोनहुला / सोनौला** कहल जाइछ । मैलछाह पीताभ वर्णक केशकेँ **भुल्ल / भुल्ला** कहल जाइछ । वार्द्धक्य भेलापर केशक उज्जर होयब **पाकब** होइछ । पकला उत्तर केशकेँ **पाकल** कहल जाइछ । किंचित पकबाक स्थितिकेँ **तिलकब** कहल जाइछ । केशक स्वत: खसबाक क्रिया **झरब** होइछ ।

केशकेँ स्वच्छ नहि रखलापर ओ सभ आपसमे सटि कऽ जटिल आकृति बना लैछ । एहि आकृतिवला केशकेँ **जटा / जट्टा** कहल जाइछ । केशक जड़िमे बैसल चप्पत मैलीकेँ **रूसी** कहल जाइछ । केशमे फड़ल जन्तुविशेषकेँ **ढील** कहल जाइछ । ढीलसँ युक्त केशवालीकेँ **ढिलाहि** कहल जाइछ । ढीलक शिशु ओ अंडाकेँ **लीख** कहल जाइछ । लीखवला केशकेँ **लिखाह** कहल जाइछ आ एहन केशवालीकेँ **लिखाहि** कहल जाइछ छैक ।

पैघ केशवाली नारीकेँ **अलकेसरि** कहल जाइछ । जाहि नारीक केश डाँड़ धरि

नमरल रहैछ, ओकरा **डँड़केसी** कहल जाइछ । जाहि पुरुषक केश टकुआतान ठाढ़ रहैछ ओकरा **सुगरकेशा** कहल जाइछ । अत्यन्त कारी केशकेँ **कारीभोंर** कहल जाइछ । अवगुंठित प्रकृतिक केशकेँ **मुरलिया / ककुरिया / लटुरिया** केश कहल जाइछ । औंठी जकाँ मुड़ल केशकेँ **औंठिया** कहल जाइछ । जकर केश कटल रहैछ ओकरा **मुरली बटेर** कहल जाइछ । जकर केश उड़ल रहैछ से केश **उरड़ा** कहल जाइछ । जकर चानि परक केश उड़ल रहैछ से **चनैल** कहल जाइछ । काँखक केशकेँ **काँखी** कहल जाइछ । शरीरक अन्य भागक छोट-छोट केशकेँ **रोइंया** कहल जाइछ । कपारपरक रोइयाँकेँ **भतरोइयाँ** कहल जाइछ ।

नारी-नटुआ आदि पैघ-पैघ केश रखैत छथि । अवस्थित केशक समूहकेँ **झोंट / झोंटा / झोंटकी** कहल जाइछ । घनगर झोंटावला व्यक्तिकेँ **झोंटैला** कहल जाइछ । एकर स्त्रीलिंग **झोंटैली** होइछ । अनेक नारीक समूहकेँ **झोंटहा पंच / झोंटैला पंच** कहल जाइछ ।

चुटकी भरि केशक समूहकेँ **लट** कहल जाइछ । गोटेक लटकेँ पृथक रखबाक क्रिया **लटछिलकायब** होइछ । कपालक अग्रभागक लटकेँ छिलकाकऽ रखनिहारि नारीक हेतु व्यंग्यार्थ प्रयोग **लटछिलकी** अछि । वामभागमे कपारपर लटकल किंचित मोड़ल लटकेँ **अलखर** कहल जाइछ ।

पुरुषलोकनि अशुभ स्थितिमे केशकेँ छिलबाय लैत छथि । एहि हेतु **अस्तूरा** नामक औजारक उपयोग होइछ अछि । केशादिकेँ छिलबाक ओ सजयबाक व्यवसायमे लागल जाति **हजाम / नौआ / नाउ** कहल जाइछ । केशक अतिरिक्त अंशकेँ काटि हटयबाक हेतु ई जाहि औजारक उपयोग करैछ ओकरा **कैंची** कहल जाइछ । अतिरिक्त अंशकेँ काटि कऽ हटयबाक क्रिया **पट्टीछाँटब / छाँटब / बनायब / कानी कटायब** होइछ । केशक अग्रभागक पैघ केशराशिकेँ **जुलफी / झुलफी** कहल जाइछ । पुरुषक अग्रभाग पैघ-पैघ जुलफीकेँ **चुरकी / चुड़की** कहल जाइछ । कानक पार्श्ववला भागक केशकेँ **कानी** कहल जाइछ । सीटल ओ पैघ जुल्फीकेँ **बाबरी** कहल जाइछ । कनपट्टी लगक केशकेँ **पट्टी** कहल जाइछ । बाम ओ दहिन काँखक केशकेँ क्रमश: **अगल-बगल** ओ **काँखी** कहल जाइछ । पुरुषक उपरका ठोरक उपरका भागक केशकेँ **मोँछ** ओ ठुड्डी परक केशकेँ **दाढ़ी** कहल जाइछ । दाढ़ी बनयबाक औजारकेँ **सेफटी रेजर / रेजर** कहल जाइछ । किशोरावस्थाक अन्त ओ युवावस्थाक आरम्भमे मोंछक प्रारंभिक रूपकेँ **पम्ह** कहल जाइछ । पैघ मोछवालाकेँ **मोछैल** कहल जाइछ । गाल धरि पसरल मोंछकेँ **गलमोछा** कहल जाइछ । मोंछकेँ नोँखगर बनएबाक क्रिया **मोछ फेरब** होइछ । मोंछ विहीन पुरुषकेँ **निमोछिया** कहल जाइछ । पैघ दाढ़ीवलाकेँ **दढ़ियल** कहल जाइछ ।

नारीलोकनि केशकेँ साफ करबाक हेतु जाहि माटिक व्यवहार करैत छथि से **चिकनी माटि / गोरकी माटि** कहल जाइछ । आइकाल्हि केशकेँ साफ करबाक हेतु

साबुन नामक वस्तुक व्यवहार होइछ । केशक लटकेँ स्वच्छ ओ पृथक्कृत करबाक हेतु शैम्पू नामक रसायनक व्यवहार होइछ । रीठी नामक वस्तुसँ सेहो केश साफ कयल जाइछ ।

कठोर प्रकृतिक केशकेँ **कड़ा / रुच्छ**, नर्म प्रकृतिक केशकेँ **मोलायम** कहल जाइछ । सघन केशकेँ **घन / घनगर** कहल जाइछ । आबद्ध केशराशिकेँ **ओझरायल** कहल जाइछ ।

केशकेँ स्निग्ध करबाक हेतु ओहिमे विभिन्न प्रकारक **तेल** देल जाइत अछि यथा **तिल, सरिसो, नारियर** ओ **आँवलाक** तेल । सरिसो तेलकेँ **कड़ू** तेल सेहो कहल जाइछ । नारियर तेलकेँ **गरीक** तेल सेहो कहल जाइछ । सुगन्धियुक्त तेलकेँ **गमकौआ** कहल जाइछ । तेल रखबाक पात्रकेँ **माली / मलिया / मलसी** कहल जाइछ ।

केशकेँ सजयबाक क्रिया **सीटब** होइछ । निरन्तर सिटबाक क्रिया **सीटसाट** होइछ । ओझरायल केशराशिक तन्तुकेँ पृथक्-पृथक करबाक क्रिया **थकरब** होइछ । थकरबाक हेतु कतराक जड़िसँ निर्मित उपकरणकेँ **थकरी / थकरनी / कुच्ची / झड़नी** कहल जाइछ । एकर प्रयोग महिलेटामे होइछ । आइकाल्हि प्लास्टिकक दाँतदार कुच्ची सेहो उपयोगमे आनल जाइछ । केश थकरबाक हेतु एकरेखीय समानान्तर दाँतक समूहसँ बनल उपकरणकेँ **ककहा / कंघी / कङ्ही** कहल जाइछ । छोट **ककहाकेँ ककही / ककहिया** कहल जाइछ । दू दिस पातर दन्तावलीसँ युक्त कंघीक प्रभेद **ककवा** कहल जाइछ । छोट ककवाकेँ **ककही** कहल जाइछ । अत्यन्त सूक्ष्म तन्तु ओ ढील आदिकेँ पृथक करबाक विशिष्ट प्रभेदकेँ **ढिलही ककवा** कहल जाइछ ।

थकरि कऽ केशक मैल निकालबाक क्रिया **झारब** होइछ । माथपरक केशकेँ दू भागमे बीचो बीच बँटला उत्तर चानिपर बनल रेखाकेँ **सिउँथ / पाटी / माँग** कहल जाइछ । आइकाल्हि बाम दिस माँग बनाओल जाइछ । एकरा **टेढ़ीमाँग** कहल जाइछ । माँग बनयबाक क्रिया **पाटी फाड़ब / माँग काढ़ब** होइछ । विवाहिता लोकनि माँगकेँ लाल रंगक एकटा वस्तुसँ अलंकृत करैत छथि । एकरा **सेनुर / सिनूर / सिन्दूर** कहल जाइत छैक । सिन्दूरक तीन गोट प्रभेद मुख्यत: प्रचलित अछि– **पीपा, अचीन** ओ **भुसना** सिन्दूरक प्रयोग विवाहसँ चतुर्थी धरि होइछ । ई उज्जर-लालरंगक सिन्दूर होइछ । **पीपा** गाढ़ लाल ओ **अचीन** सामान्य लालीसँ युक्त सिन्दूरक प्रभेद थिक । सधवेटा सिन्दूर करैत छथि । सिन्दूर विवाहमे पहिल बेर वर द्वारा कनिआँकेँ देल जाइछ । एकरा **सिनुरदान** कहल जाइछ । सिन्दूरदानक वैदिक परम्परा नहि अछि । सिन्दूर आयताकार पुड़ियाकेँ **गद्दी** कहल जाइछ ।

सिन्दूर करबाक तीन गोट विधि सामान्यत: देखल जाइछ । ललाटपर तथा नाकसँ सीँथ धरि कयल सिन्दूरकेँ **धासा** कहल जाइछ । नाकसँ सीँथ धरि कयल सिन्दूरकेँ **नकटा** कहल जाइछ । नकटा सिन्दूरसँ युक्त महिलाकेँ **नकसिनुरी** कहल जाइछ । सीँथमात्रमे कयल सिनूरकेँ **पटमासी** कहल जाइछ ।

सिन्दूरकेँ घोरबाक उपकरण **सिनुरघोरा** होइछ । सिन्दूर रखबाक पैघ पात्र **सिंगरौली / सिङ्हारी / सोहगैली** कहल जाइछ । छोट पात्रक एकटा प्रभेद **कीया** होइछ । छोट कियाकेँ **कियौरी** कहल जाइछ । सिन्दूर-पात्रक एकटा प्रभेद **सपरी** होइछ । सोहगैलीक झाँपनवला भागकेँ **खप्पा / झप्पा / झाँप / झपना / उपरौटा** आ निचला भागकेँ **तरौटा** कहल जाइछ ।

केशकेँ पूर्वमे दिन तकाय बान्हल जाइत छल । केशकेँ बन्हबाक विविध विधिक प्रचलन रहल अछि । पाछू दिसुक केशकेँ तीन भागमे बाँटि क्रमश: उपर नीचा कऽ आबद्ध करबाक क्रिया **गूहब** होइछ । गुहला उत्तर बनल आकृतिकेँ **जुट्टी** कहल जाइछ । माथक उपर बान्हल जुट्टीकेँ **जूड़ा** कहल जाइछ । स्त्रीगणक माथक बीच केशकेँ बन्हलापर बनल जूड़ाकेँ **छत्तबाजूड़ा** कहल जाइछ । जुट्टीक प्राचीन नाम **वेणी** अछि । वेणीक संख्याक आधारपर केश **एकजुटिया, दुजुटिया, तीनजुटिया, पँचजुटिया** आदि प्रभेदक होइछ । कपारपरसँ गूहल केशकेँ **बिढ़निआ** कहल जाइछ ।

जुट्टीक अन्तमे जाहि उपकरणकेँ जोड़ि ओकरा आर अधिक नाम कऽ देल जाइछ, ओहि उपकरणकेँ **चोटी** कहल जाइछ । चोटीमे सूतक तीनटा **लर** रहैत छैक । तीनू लरकेँ केशक तीनू फेरमे लगाय गूहिकऽ गीरह मारि देल जाइछ । एहि तरहेँ गीरह मारि देबाक क्रिया **केश बान्हब** होइछ । चोटीक अग्रभागमे पुष्पाकृति सूतक गुच्छकेँ **फुदना** कहल जाइछ । दूनूकात फुदनावला डोरीकेँ **ऐंठा** कहल जाइछ । नेनाक केशकेँ बन्हबाक हेतु प्रयुक्त करीब दू आङ्गुर चाकर कपड़ाक नाम टुकड़ीकेँ **फीता** कहल जाइछ । केशगुच्छकेँ समेटबाक हेतु रबरक टुकड़ीकेँ **रबरबैंड** कहल जाइछ ।

केशकेँ पाछाँ भागमे समेटि गोलकऽ बन्हलापर बनल आकृतिकेँ **खोंपा** कहल जाइछ । केशक उपर उनटाओल खोंपाकेँ **खोपी** कहल जाइछ । खोंपाकेँ उपरसँ एकटा सूतक डोरीसँ बान्हि देल जाइछ । एकरा **भारा** कहल जाइछ छैक । खोंपाकेँ पैघ करबाक हेतु केशक बीच देल बिरवा सदृश उपकरणकेँ **गेरुली / गोरुली** कहल जाइछ । खोंपामे लगाओल फूलक मालाक प्रभेदकेँ **गजरा** कहल जाइछ ।

केशकेँ सैतबाक हेतु तीसीकेँ फुलाय एकटा लसलस बनाओल जाइछ । एकरा **नबाब** कहल जाइछ । आइकाल्हि कन्यालोकनि **बाब्डहेयर, ब्वाय कट** आदि प्रभेदक केश कटबैत छथि ।

ललाट प्रसाधन– ललाटकेँ प्रसाधित करबाक हेतु नारीलोकनि प्लास्टिकक गोल आकृतिक रंग बिरंगक एकटा चमकैत वस्तु सटैत छथि । एकरा **टिकुली** कहल जाइछ । टिकुली आदि प्रसाधनकेँ बेचयवला व्यवसायीकेँ **टिकुलहारा** कहल जाइछ । एकर स्त्रीलिंग **टिकुलहारिन** होइछ । नाम आकृतिक टिकुलीक प्रभेदकेँ **बिन्दी / बिन्दिया** कहल जाइछ । टिकुलीकेँ सटबाक हेतु **मोमक** प्रयोग होइछ ।

पूर्वमे ललाटकेँ प्रसाधित करबाक हेतु **खुदिया** नामक एकगोट वस्तुकेँ साटल जाइत छल । एकर आकार खुद्दीक सदृश होइत छलैक । एकरा संग ललाट केश आदिकेँ आकर्षक बनयबाक हेतु गोल आकृतिक एकटा चमकदार वस्तुकेँ सेहो साटि लेल जाइत छल । एकरा **चमकी** कहल जाइत छलैक । सटबाक हेतु जाहि गोंदक व्यवहार होइत छल से तीसीकेँ फुलाय बनाओल जाइत छल । एकरा तीसीक **नबाब** कहल जाइत छलैक ।

ललाटकेँ सजयबाक हेतु नारी ओ पुरुष गोल आकृतिमे **सिन्दूर** लगबैत छथि । एकरा **ठोप** कहल जाइत छैक । धार्मिक आस्थासँ युक्त पुरुष ललाटपर **चन्दनक ठोप** सेहो करैत छथि । तीन गोट क्षैतिज रेखासँ युक्त चाननक ललाटपरक लेपकेँ **त्रिपुण्ड** कहल जाइछ । दुइ गोट दण्डाकृतिक चाननक लेपकेँ **तिलक / ठढ़का** कहल जाइछ । स्त्रीगणोमे चाननक ललाटपर प्रयोग प्रसाधनक रूपमे नहि देखल जाइछ ।

आइकाल्हि ललाट, मुख, कपोल आदिकेँ प्रसाधित करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक अवलेहक उपयोग होइछ । एकरा **स्नो / एसनो** कहल जाइछ । मुखादिकेँ घामसँ रहित ओ सौरभयुक्त करबाक हेतु **पौडर** नामक चूर्णक प्रयोग होइछ ।

नयन ओ भ्रू प्रसाधन– आँखिकेँ प्रसाधित करबाक हेतु अंडीक तेलक बातीसँ निकलल धूम्रराशिकेँ जमाकऽ एकटा पदार्थ बनाओल जाइछ । एकरा **काजर / कजरा / कजरवा** कहल जाइछ । औषधियुक्त काजरकेँ **अंजन / आँजन** कहल जाइछ । आँजन बनयबाक हेतु मेथीकेँ कड़ूतेलमे फुलाय पितरिया थारीक पीठ दिस माँजि ओहिपर घसि कऽ सत्त तैयार कयल जाइछ । एहि अवलेहकेँ **डोका**मे राखल जाइछ । काजर करबाक क्रिया **कजरायब** आ अंजन करबाक क्रिया **आँजब** अछि । काजर रखबाक पैघ पात्र **कजरौटा** ओ छोट पात्र **कजरौटी** कहल जाइछ ।

भौंहकेँ तीक्ष्ण करबाक हेतु ओकर अतिरिक्त भागकेँ एकटा छोट सन चुट्टासँ उखारि लेल जाइछ । एहि चुट्टाकेँ **सोहना / मोचना** कहल जाइछ । छोट मोचनाकेँ **सोहनी / मोचनी** कहल जाइछ । भौंहकेँ घनगर ओ तीक्ष्ण प्रदर्शित करबाक हेतु एकटा पैंसिलसँ रांगल जाइछ । एकरा **आइब्रो पेन्सिल** कहल जाइछ छैक ।

कपोलप्रसाधन– कपोलकेँ आकर्षक बनयबाक हेतु पूर्वमे गाल पर कारी रंगक बुनका ओ फूलपात काढ़ल जाइत छल । प्राचीन साहित्यमे एहि हेतु **अलक, अलकतिलक** ओ **अलकातिलका** शब्द भेटैछ । मुदा एकर उठाव भऽ गेल बुझना जाइछ ।

दन्तप्रसाधन– दाँतके चमकदार प्रदर्शित करबाक हेतु एकटा रसायनक प्रयोग पूर्वमे होइत छल । एकरा **मिस्सी / मिसिया** कहल जाइत छलैक । एकर प्रयोगसँ हल्का कारी रंग दाँतक गहमे बैसि जाइत छलैक । स्वभावत: दाँतक शेष भाग चमचम देखि पड़ैत छलैक । सम्प्रति दन्तप्रसाधनक रूपमे एकर प्रयोग समाप्तप्राय अछि । मुदा प्रसाधनक रूपमे व्यवहृत पाने दन्त प्रसाधन सामग्रीक सेहो काज करैछ ।

ओष्ठ प्रसाधन– ठोरकेँ रङबाक हेतु आइकाल्हि **लिपस्टिक** नामक रसायनक प्रयोग होइछ । ई अनेक रंगमे उपलब्ध होइछ । एकरा **ठोर रंगा** सेहो कहल जाइत छैक ।

मुख प्रसाधन– मुखप्रसाधने पानक उपयोग मिथिलामे विशिष्ट रहल अछि । पानकेँ **नागबेल / नागबल्ली** सेहो कहल जाइछ । ई एकटा लत्तीक पात होइत अछि । एकरा उपजाबयवला जाति **बरइ** ओ **तमोली** कहल जाइछ । पानकेँ काटि मोरिकऽ खाद्य रूपमे प्रस्तुत करयवला जाति **पनेरी** होइछ ।

स्थानीय पानकेँ **देशी** कहल जाइछ । आयातित बेलक कलमसँ प्राप्त पानकेँ **दोगिला** कहल जाइछ । आयातक प्रदेशक आधारपर पानक **कलकतिया, मद्रासी, बनारसी** आदि प्रभेद अछि । मिथिलाक देशी पानक प्रभेद **साँची** कहल जाइछ । कपूरक सुगंधिसँ युक्त पानक प्रभेद **कपुरी / कपुरिया / कर्पूरिया** कहल जाइछ । पातक बीचमे अवतल सतहवला पानक प्रभेद **कलजोरिया** कहल जाइछ । कटु स्वादवला पानक एकटा प्रभेद **बंगला** होइछ । पानक पातक अग्रभाग **मुहरा / टुस्सी / सूड़ / सूर** कहल जाइछ । पिछला भाग जे लत्तीसँ सम्बन्द्ध रहैछ से **डंटी** कहल जाइछ । पानक पातक कठोरताकेँ **तन्जी** कहल जाइछ । दूसए पानक पातक समूहकेँ **ढोली** कहल जाइछ । कोनो पातमे बान्हल पानक पातकेँ **पतौरा** ओ छोट पतौराकेँ **पतौरी** कहल जाइछ । डंटी रहित पानकेँ **छुट्टा** कहल जाइछ ।

पानक पातमे कऽथ चून दऽ मोड़बाक क्रिया पान लगायब होइछ । पानक पातकेँ कटबाक औजारकेँ **कैंची / कतरनी** कहल जाइछ । पातकेँ त्रिभुजाकार मोड़ि लगौला पर खिल्ली बनैत छैक । अनेक खिल्लीकेँ परस्पर सम्बद्ध करबाक बाँसक कमचीकेँ **सीकी** कहल जाइछ । साँस पानक खिल्लीकेँ **बीड़ा / बिड़िया / बिड़वा** कहल जाइछ । लोककथामे **पाकल बीड़ा** पानक उल्लेख भेटैछ । छोट बीड़ाकेँ **बीड़ी** आ गोल कऽ मोड़ल बीड़ाकेँ **गिलौरी** कहल जाइछ ।

पानक संग खाद्य विभिन्न पदार्थमे **सुपारी** नामक फल प्रमुख अछि । एकरा **सोपारी / कसैली / गुआ / पुग / मुखशुद्धि** कहल जाइछ छैक । एकरा भङबाक हेतु **सरौता** नामक औजारक प्रयोग होइछ । अत्यन्त छोट आकृतिक सुपारीक प्रभेद **मानचन** कहल जाइछ । एकर अन्य प्रभेद सभ अछि **छलिया, कालापानी, चित्ती, निरमलिया** आदि । काटल सुपारीकेँ **कटुआ**, कटुआक प्रत्येककेँ **फाँक**, फाँकक छोट टुकड़ीकेँ **टूक** कहल जाइछ । सुपारीक पातर पातर कच्चीकेँ **कतरा** कहल जाइछ ।

पानक संग **लौंग, इलायची, कपूर, पिपरमिन्ट, हरीड़, पक्कुहा** आदिक प्रयोग प्रशस्त अछि । तमाकुलसँ निर्मित पानक एकटा मशाला **जर्दा** होइछ । सम्प्रति अनेक प्रकारक पानमशालाक प्रयोग होइछ । पानपर देल पातर पन्नी सदृश सुगन्धिक वस्तुकेँ **तबक** कहल जाइछ ।

पान रखबाक पात्रकेँ **पनबसना, पनबट्टा** कहल जाइछ । छोट पनबट्टाकेँ

पनबट्टी कहल जाइछ। पानक खिल्ली रखबाक पात्रकेँ **खिलबट्टा / खिलबट्टी** कहल जाइछ। पानक पात रखबाक बाँसक पात्र **बिरहरा / बिरहारा** कहल जाइछ। पान प्रस्तुत करबाक पात्र **सराय / छीप** होइछ। पानकेँ चिबौला उत्तर बनल रसकेँ **पिरकी / पीत/ पीक** कहल जाइछ। अधिक पान खैनिहारकेँ **पनखौक / पनखौका** कहल जाइछ।

हस्तप्रसाधन– हाथकेँ प्रसाधित करबाक हेतु एकटा जंगली झारक पातकेँ थकुचि लेप लगाओल जाइछ। लेप हटौला उत्तर लेपक सतह लालीमे बदलि जाइछ। एहि झारकेँ **मेहदी** कहल जाइछ छैक।

नख-प्रसाधन– नहकेँ प्रसाधित करबाक हेतु एकर अग्रभागकेँ काटल ओ उपरका सतहकेँ रगड़ि कऽ साफ कयल जाइछ। नहकेँ कटबाक औजारकेँ **नेल कटर** कहल जाइत छैक। एकर देशी नाम **नहकट्टा** अछि। हजाम नह कटबाक हेतु **नहरनी / लहेरनी / लहरनी** नामक औजारक प्रयोग करैछ। नहकेँ कटला उत्तर ओकर उपरका भागकेँ रङबाक परिपाटी अछि। एहि हेतु व्यवहृत रंगकेँ **महरङ्गा / नेलपालिस** कहल जाइछ।

चरणप्रसाधन– पैरकेँ प्रसाधित करबाक हेतु एकर पंजा ओ एड़ीवला भागकेँ रङबाक प्रचलन अछि। एहि हेतु लालरंगक प्रयोग होइछ, जकरा **अलता / आलता / आरत** कहल जाइछ। पैरकेँ रङ्गबाक क्रिया **आरत करब** होइछ। आरतक हेतु **महावर** शब्दक सेहो प्रयोग होइछ।

चर्मप्रसाधन– शरीरक चामकेँ प्रसाधित करबाक हेतु स्नान, मार्जन द्वारा शरीरक मैल छोड़ाओल जाइछ। मैल छोड़ायबाक हेतु चीराक फड़क सुक्खल भीतरी अंशक प्रयोग होइत अछि। एकरा **मजना / चोँचा** कहल जाइछ छैक। छोट मजनाकेँ **मजगी** कहल जाइछ। आइकाल्हि मैल छोड़यबाक हेतु **साबुन** नामक रसायनिक वस्तुक प्रयोग होइछ। सुगन्धियुक्त साबुनकेँ **गमकौआ साबुन** कहल जाइछ। चामकेँ स्निग्ध करबाक हेतु **उकटन / उबटन** नामक पदार्थक प्रयोग होइछ। ई खैर, हरदि, चाउर आदिसँ निर्मित होइछ। एकर प्रयोग अवसर विशेषमे नेनाक मूड़न, उपनयन ओ विवाहमे कनिञा-वरक हेतु होइछ।

चामकेँ चिक्कन रखबाक प्रवृत्तिवाली नारीकेँ व्यंग्यार्थ ओ अपकृष्ट अर्थमे **चमचिकनी** कहल जाइछ। शरीरमे विभिन्न प्रकारक तेल सेहो लगाओल जाइछ। सुवासक हेतु देहपर पुष्पसँ निर्मित सुगन्धिद्रव्यक छीटा देल जाइछ। एकरा **सेंट / इत्र / अतर / फुलेल** कहल जाइछ। स्नानमे गुलाबक पुष्पसँ निर्मित सुगन्धिद्रव्यक प्रयोग सेहो कयल जाइछ। एकरा **गुलाबजल** कहल जाइछ छैक। गुलाबजल देहपर छिटबाक हेतु प्रयुक्त बासनकेँ **गुलाबपाश** कहल जाइछ। पूर्वमे सेंटक स्थानपर चोआ-चाननक व्यवहार छल। उकटन लगयबाक क्रिया **उकारब** होइछ।

गोदना– एकरा **लीला** सेहो कहल जाइत छैक। कतहु एकरा **खोधा** कहल जाइछ। शरीरक

चामकेँ सूइसँ गोंथि विशिष्ट रसायनक प्रयोग द्वारा धब्बा उभारबाक एकर प्रक्रिया **गोदब / खोधब** कहल जाइछ। एहिसँ सम्बद्ध नट जातिक स्त्रीकेँ **खोधपाड़नी / गोदनपाड़नी / नटिनिञा** कहल जाइछ। गोदना पड़ायब अत्यन्त कष्टदायक होइछ। एकर परम्परा वैज्ञानिक युगक संग समाप्त भेल जा रहल अछि। गोदना गोदैतकाल नटिन जे गीत गबैछ, से **गोदना-गीत** कहल जाइछ।

पुष्पप्रसाधन– पुष्पसँ शरीर, सेज, केश आदिकेँ सजयबाक सहज मानवीय प्रवृत्ति रहल अछि। गर्दनिमे पहिरबाक फूलक हारकेँ **माला** कहल जाइछ। **गुलाब, गेना, चम्पा, चमेली, कनैल, जूही, भुलसरी, सिङ्हारा** आदि फूलक मालाक प्रयोग सामान्य देखल जाइछ। एही फूल सभक द्वारा सेज, केश आदिकेँ सेहो सजाओल जाइछ। फूलक अर्द्धविकसित प्रभेद **कली / कोँढ़ी** कहल जाइछ। फूल तोड़बाक क्रिया **लोढ़ब** ओ खसल फूलकेँ उठयबाक क्रिया **बीछब** होइछ। फूलक उत्कृष्ट सुगंधकेँ **सुगंध / गमक** कहल जाइछ। गंध करबाक क्रिया **गमगमायब / महमहायब** होइछ।

एकर अतिरिक्त वेशभूषाप्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध किछु विशिष्ट शब्द एकर अतिशयता ओ व्यंग्यार्थ प्रयोगमे अबैछ। वेशभूषा प्रसाधनक अतिशयताकेँ **तड़क-भड़क** कहल जाइछ। अनसोहांत तड़क-भड़ककेँ **झिट / झिटजाट / फीटफाट / चटकमटक** कहल जाइछ। **झिट** करबाक क्रिया **झिटदेब / झिटझारब** होइछ। झिट कयनिहारकेँ **झिटियल** कहल जाइछ। नारी द्वारा निरन्तर सिङार करबकेँ **चोटी-पाटी** कहल जाइछ। अत्यन्त महीन प्रकृतिक वस्त्राभूषण प्रसाधनकेँ **फैन्सी** कहल जाइछ। वेशभूषाप्रसाधनक नव चलनिकेँ **फैसन** कहल जाइछ। फैसन कयनिहारकेँ **फैसनेबुल / फैसनदार** कहल जाइछ। जे फैसन समाप्त भऽ जाइछ तकर समाप्त होयबकेँ **उठाब** कहल जाइछ।

एहि तरहेँ वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे निरन्तर परिवर्तन प्रक्रिया वर्तमान देखि पड़ैछ। वेशक शब्दावलीपर ऐतिहासिक क्रममे अरबी-फारसी ओ अंग्रेजीक शब्दावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ। आभूषणक शब्दावलीमे सेहो पारम्परिक शब्दपर विदेशज शब्दक प्रचुर प्रभाव देखि पड़ैछ। प्रसाधनक पारम्परिक शब्दावली आधुनिक वैज्ञानिक वस्तुक आविर्भावसँ क्रमशः विलोपनक स्थितिमे अछि संगहि एहि क्षेत्रमे नवागत फैसन, वैज्ञानिक आविष्कार ओ सम्पर्कक कारणेँ संक्रमणजन्य शब्द परिगृहीत होइत जा रहल अछि। उदाहरणार्थ- **फुलेल** शब्द पारम्परिक अछि। एकरा अरबी शब्द **इत्र** विस्थापित कऽ देलक अछि। एकरा हेतु मैथिली शब्द **अतर** आयल जे आब अंग्रेजी शब्द **सेंट** द्वारा विस्थापित कऽ देल गेल अछि। एहिना हैट, पैंट, कोट, टाइ आदि पारम्परिक वस्त्र विन्यास ओ तकर शब्दावलीकेँ विलोपक स्थितिमे अनने जा रहल अछि। एतावता वेश भूषाप्रसाधनक शब्दावली अतीव संक्रमणशीलतासँ ग्रस्त कहल जा सकैछ।

●

दशम अध्याय

ध्वनि विचार

मैथिली ध्वनि समूह पर जी०ए० ग्रियर्सन[1], दीनबन्धुझा[2], सुभद्रझा[3], रमानाथझा[4], ओ गोविन्दझा[5] विचार कयने छथि। वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनिसमूहमे स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनिक स्थिति यथावते देखल गेल अछि।

स्वरध्वनि– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीहमे अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ए, ऐ (अइ), ओ, औ (अउ), अए-आए एवं अओ-आओ[6] स्वर ध्वनि श्रुतगोचर होइछ जाहिमे प्रत्येक सानुनासिक ओ निरनुनासिक होइछ। समस्त स्वर ध्वनि शब्दक आदिमे स्वतंत्र रूपेँ, शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्वरक अनुवर्ती अथवा व्यञ्जनक संगे श्रुतगोचर होइछ। मुदा अ, ई तथा ऊ ध्वनि तकर अपवादेस्वरूप देखि पड़ैछ। अ ध्वनि शब्दक अन्तमे व्यञ्जनेक संग श्रुतगोचर होइछ। ई ध्वनि शब्दमे कतहु स्वतंत्र रूपेँ नहि देखि पड़ैछ मुदा मध्य ओ अन्तमे व्यञ्जनक संगे श्रुतगोचर होइछ। ऊ ध्वनि शब्दक आदिमे तँ स्वतंत्र रूपेँ श्रुतगोचर होइछ मुदा मध्य ओ अन्तमे व्यञ्जन ध्वनिक संगहि श्रुतगोचर होइछ।

ह्रस्वतर स्वर– उच्चारणक दृष्टिऐ मैथिलीक समस्त एकल स्वर अ, ई, उ, ए, ऐ (अए), ओ, औ (अओ) ह्रस्व तथा ह्रस्वतर स्वरूपमे श्रुतिगोचर होइछ। तथा आ, दीर्घस्वर एवं ऐ, औ संयुक्त स्वर सेहो ह्रस्व तथा दीर्घस्वरूपक श्रुतिगोचर होइछ यथा– पैघ-पैघका, पितम्बर-पितमरी, घोघट-घोघटाही, लीख-लिखाहि

व्यञ्जन ध्वनि– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे निम्नलिखित व्यञ्जन ध्वनि दृष्टिगोचर भेल अछि– क् ख् ग् घ् ङ् ङ्ह्। च् छ् ज् झ् ञ्। ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण्। त् थ् द् ध् न् न्ह्। प् फ् ब् भ् म् म्ह्। य् र् ल् ल्ह् व् स् ह् तथा अनुस्वार / ङ्ह, न्ह्, म्ह् ल्ह् ध्वनि क्रमशः ङ्, न्, म, ल ध्वनिक महाप्राण ध्वनि अछि।

(क) ङ्, ङ्ह्, य्, न्ह्, म्ह्, तथा ल्ह् ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ मुदा मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइछ।

(ख) ढ़् ध्वनिक उच्चारण ड़् ध्वनिक महाप्राण स्वरूपक होइछ। ई ध्वनि शब्दक आदिमे नहि अबैछ।

(ग) ड़् तथा ढ़् ध्वनि शब्दक अन्त ओ मध्यमे प्रयुक्त होइछ।

(घ) ण् ध्वनिक अस्तित्व विवादास्पद अछि यथा– भूंड़ी-भूणी,

(ङ) य् तथा व् ध्वनि शब्दमे अपश्रुतिक रूपमे श्रुतिगोचर होइछ। ई ए ध्वनिक परवर्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति व तथा ऊ, ओ ध्वनिक परवर्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति व श्रुतिगोचर होइछ जेना– कटुआ-कटुवा। बखिआ-बखिया। तिसिऔटा-तिसियौटा। सिआइ-सियाइ। पगिआ-पगिया। कछिआ-कछिया। चतरिआ-चतरिया। मिआनी-मियानी। गूआ-गूवा। धरिआ-धरिया। नूआ-नूवा। मलिआ-मलिया। गेरुआ-गेरुवा। कीआ-कीया। जँघिआ-जँघिया। सटिआ-सटिया। खुटिआ-खुटिया। गोबरिआ-गोबरिया। मछरिआ-मछरिया। नथिआ-नथिया। बाओटी-बावटी। ककुरिआ-ककुरिया। लहेरिआ-लहेरिया। केचुआ-केचुवा। पछुआ-पछुवा। बिछुआ-बिछुवा। छलिआ-छलिया। ओझरौआ-ओझरौवा। ऐंतुआ-ऐंतुवा। कपुरिआ-कपुरिया।

(च) सानुनासिक वर्णक अनुवर्ती अ सानुनासिक य, ञ क रूपमे उच्चरित होइत बुझि पड़ैछ– बहिआँ-बहियाँ-बहिञा / सौतिनिआँ-सौतिनियाँ-सौतिनिञा। लहसुनिआँ-लहसुनियाँ-लहसुनिञा / तेमनिआँ-तेमनियाँ-तेमनिञा केहुनिआँ-केहुनियाँ-केहुनिञा।

(छ) सानुनासिक वर्णक अनुवर्ती ग, ङ भऽ जाइछ, यथा– रंग-रङ / लौंग-लौङ

स्वर गुच्छ– मैथिली स्वर गुच्छ पर विस्तृत विवेचन गोविन्दझा कयने छथि।[7] ऐ (अइ), ओ। अउ, अए-आए तथा अओ-आओ ध्वनि मैथिलीमे मौलिक अथवा संयुक्त स्वर थिक। तेँ एकरा सभकेँ स्वर-गुच्छ मध्य परिगणित नहि कयल गेल अछि। ताहिसँ इतर निम्नलिखित स्वरगुच्छक स्थिति वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे दृष्टिगोचर होइछ– आइ-दोलाइ, तुराइ, तगाइ। आउ-कहाउत, पहिराउ, जड़ाउ। इआ- कहौतिया, छलिआ, बखिआ। इआए- मड़िआएब, करिआएब। इउ-तिउर। इऔ-तिसिऔटा। उआ-कटुआ, बहुँआ, ठकुआ, केचुआ, बिछुआ। ऊआ-गूआ। ऊइ-सूइ। औआ-गमकौआ, मचमचौआ

व्यञ्जनगुच्छ– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे व्यञ्जनगुच्छक दुइगोट कोटि अछि।

(क) समवर्ण व्यञ्जनगुच्छ यथा– क्क्- सुक्की, कुकुरभुक्की, पक्की, चिरक्का, दरक्का, फिक्का, चिक्कट। ग्ग- दग्गी, कग्गन। च्च- कच्ची, बकुच्ची, छिच्चा, पच्ची। ज्ज- गज्जी, उज्जर। ट्ट- बट्टम, काजपट्टी, पट्टू, नूआ-फट्टा, सुट्टा, चुट्टा, बुट्टा। ड्ड- अड्डी। त्त- लत्ता, दुसुत्ती, रित्ती-रित्ती, इमलपत्ती, चित्तिरबित्तिर,

जुत्ता । द्द- कसिद्दा, गद्दा, चद्दरि । न्न- चुन्नन, सन्मुख, छन्ना, सिरहन्ना । प्प- झप्पा, खप्पा, कप्पा, चप्पल । ब्ब- धब्बा । म्म- मोलम्मा । ल्ल- झुल्ला, फल्लर, पल्ला, सल्लग, सुखतल्ला, तल्ली, बजुल्ला । स्स- गस्सल, धुस्सा ।

एहि तरहेँ समवर्ण व्यञ्जन गुच्छ सामान्यतः वर्णक अल्पप्राण ओ अनुनासिक वर्णहियमे देखि पड़ैछ ।

(ख) विषमवर्ण व्यञ्जन गुच्छ– विषमवर्ण व्यञ्जनगुच्छक दूइ गोट कोटि वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दानलीमे देखि पड़ैछ । प्रथम कोटिमे एहन व्यञ्जनगुच्छकेँ राखल जा सकैछ जाहिमे अल्पप्राण ओ महाप्राणक संयोग देखल जा सकैछ यथा– क्ख-लक्खी, च् छ- कच्छी, ट्ठ-लट्ठा, डट्ठा, घुट्ठीसोहार, त् थ- अठहत्थी, कत्था

दोसर कोटिमे सघोष अल्पप्राण ओ महाप्राण व्यञ्जनवर्णक संयुक्ति देखि पड़ैछ यथा– द्ध-खद्धर-अद्धी, बद्धी । सानुनासिक सघोष ओ अघोषक व्यञ्जनगुच्छ सेहो देखि पड़ैछ । मुदा एकरो प्रकृति सवर्गीय देखि पड़ैछ, यथा– ङ्ग- अङ्गा, मुजुङ्ग, रङ्ग, ञ्ज-सञ्जाफ, म्फ- जम्फर, ण्ड-खण्ड, कुण्डाबोर, घुण्डी, कुण्डल, न्द- पैबन्द, लालबुन्द, गुलूबन्द, तहबन्द, नकबन्दा, न्ध- नीबीबन्ध

एहि तरहेँ वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे व्यञ्जन गुच्छक प्रकृति सवर्गीय देखि पड़ैछ । मुदा किछु शब्दमे एकर अपवादो देखल जाइछ जेना- वस्तर, व्यौंतव, बक्सा, आस्कोट, चुस्त, अस्तर, निमस्तीन, बलिस्ता, ब्लाउज, स्कर्ट, मैक्सी, गुल्फी, क्लिप आदि । एहि तरहक अधिकांश शब्द आयातित अछि ।

ध्वनि परिवर्तन– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तनक विभिन्न आयाम यथा आगम, लोप, विपर्यय तथा विभिन्न प्रकारक विकार दृष्टिगोचर होइछ । खास कऽ अरबी-फारसीसँ गृहीत शब्दमे ध्वनि-परिवर्तन विविध स्वरूपक देखि पड़ैछ ।

आगम– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तन आगम प्रक्रिया अनेक शब्दमे देखि पड़ैछ । आगमक ई प्रक्रिया परम्परागत ओ गृहीत दूहू प्रकारक शब्दमे देखि पड़ैछ । स्वर ओ व्यंजन क्रमशः शब्दक आदि मध्य ओ अन्तमे आबि परम्परागत ओ गृहीत शब्दक रूप परिवर्तनक कारण देखि पड़ैछ यथा– स्नो-एसनो / अकीक-हकीक / बॉक्स-बाकस / इत्र-अतर / यन्त्र-जन्त्र-जन्तर/ रजा-रजाइ / वस्त्र-बस्तर / जेब-जेबी / पादुका-पदुक्का / बुलाक-बुलाकी, बुलकी/ तुक्मः -तुकमा / मीरजा-मिरजइ / बालावर-बालावर्ज / आईन-आइना / गृमहार-गिरिमहार / गिरमलहार / जुल्फ-जुल्फी ।

ध्वनि परिवर्तन वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीमे अत्यधिक देखि पड़ैछ ।

लोप– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी मैथिली शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तनक लोप प्रक्रिया

सेहो अनेक शब्दमे दृष्टिगोचर होइछ । एहू प्रक्रियामे स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनिक शब्दक आदि मध्य ओ अन्तमे लोप भेल अछि यथा– कोरक-कोरअ-कोर, पारद-पारअ-पारा, बालिका-बालिआ-बाली, नूपुर-नेउर, गात्रिका गातिआ-गाँती, सञ्चिका-सञ्चिआ-साँची, उत्तरीय-उतरी, सूची-सुइ, इब्रेसम-रेशम, ऐनक-ऐनअ-ऐना, कञ्चुक-अञ्चुअ-अचकन, सिनुरखोरा-सिंधोरा ।

विपर्यय– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तनक ई प्रक्रिया अत्यल्प शब्दमे देखि पड़ैछ– परिधान-परिहान-परिहन-पहिरन, सुरवाल-सलवार, अंगप्रोञ्छ-अंगओछ-अंगोछा-गमछा ।

विकार– ध्वनि परिवर्तनमे विकारक अनेक स्वरूप अछि । वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे विकारक प्रक्रियाक अनेक रूप दृष्टिगोचर होइछ यथा– क्षतिपूरक दीर्घीकरण, समीकरण, घोषीकरण, अकारण, नासिक्यीकरण, महाप्राणीकरण, मूर्धन्यीकरण आदि ।

क्षतिपूरक दीर्घीकरण– विकारक एहि प्रक्रियामे शब्दमे कोनो ध्वनिक लोप भेलापर पूर्व ध्वनिक दीर्घीकरण भऽ जाइछ । वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तनक ई प्रक्रिया अनेक शब्दमे देखि पड़ैछ यथा– पर्ण-पण्ण-पान, अञ्चल-अचल- आँचल-आँचर, सञ्चिका-सञ्चिआ-साँची, छत्र-छत-छाता, कज्जल-काजल-काजर, चन्दन-चन्नन-चानन ।

समीकरण– ध्वनि परिवर्तनक एहि विकारक उत्पन्न भेने शब्दमे दूटा असमान ध्वनिक स्थानपर समान वर्णेटा बचि जाइछ । वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीमे ध्वनिपरिवर्तनक ई प्रक्रिया बहुतो शब्दमे देखि पड़ैछ यथा– दुर्श-दुस्स-धुस-एतय र्श् ध्वनि स्स भऽ गेल अछि । कम्बल-कम्मल-एतय म्ब ध्वनि म्म भऽ गेल अछि । कर्पट-कप्पड-कपड़ा-एतय र्प ध्वनि प् प भऽ गेल अछि । कन्था-कथ्था-कथथा-एतय न्थ ध्वनि थ्थ भऽ गेल अछि । वन्य-वन्न-एतय न्य् ध्वनि न्न् भऽ गेल अछि । धोत्रिका-धोतिआ-धोती-एतय त् र् ध्वनि त्त् भऽ गेल अछि । पीताम्बरी-पीतम्मरी-पीतमरी-एतय म्ब ध्वनि म्म् भऽ गेल अछि । घर्घर-घघ्घर-घाघर-एतय र्घ् ध्वनि घ्घ् ध्वनि भऽ गेल अछि । सिन्दूर-सिन्नूर-सिनूर-एतय न्द् ध्वनि न्न भऽ गेल अछि । मौक्तिक-मोत्तिअ-मोती-एतय क्त् ध्वनि त्त् भऽ गेल अछि कूर्चिका-कुच्चिआ-कुच्ची-एतय र्च् ध्वनि च्च् भऽ गेल अछि । सूक्तिका-सुत्तिआ-सूति-एतय क्त् ध्वनि त्त् भऽ गेल अछि । आलक्तक-आरत्तअ-आरत-एतय क्त् ध्वनि त्त् भऽ गेल अछि ।

घोषीकरण– ध्वनिपरिवर्तनक एहि विकारमे अघोषवर्ण सघोष वर्णमे परिवर्तित भऽ जाइछ । वेशभूषा प्रसाधन शब्दावलीमे किछु शब्दमे घोषीकरण भेल अछि यथा–

ट-ड -शाटिका-साडिआ-साड़ी / -जूटक-जूडअ-जूड़ा / -कर्पट-कप्पड-कपड़ा / मुकुट-मउड-मउड़-मौर / ताटङ्क-ताडङ्क-ताड़क-तड़का । कटक-कडअ-कड़ा-

कारा / ङ्-ङ्ह-कङ्कति-कङ्क-कक-ककवा, ककबी / कक-ककहा, ककही / कङ्-फङ्ह-कङ्हा, कङ्ही ।

नासिक्यीकरण– ध्वनिपरिवर्तनक एहि विकारमे नासिक्य वर्णक आगम देखल जाइछ । वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक अल्प शब्दमे ध्वनिपरिवर्तन प्रक्रिया देखि पड़ैछ यथा– गात्रिका-गात्तिआ-गान्ती-गांती । वक्र-वक्क-बङ्क-बाङ्क । मुद्रिका-मुन्दरिआ-मुनरिआ-मुनरी ।

महाप्राणीकरण– ध्वनि परिवर्तनक एहि विकारमे अल्पप्राण वर्ण महाप्राण वर्णमे बदलि जाइछ । एकरो किछुए उदाहरण भेटैछ यथा– दुर्श-दुस्स-घूस-एतय द वर्ण ध मे बदलि गेल अछि । पटच्चर-फटीचर-एतय प वर्ण फ मे बदलि गेल अछि ।

मूर्धन्यीकरण– वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीमे ई प्रक्रिया अत्यल्प देखि पड़ैछ यथा–

बुटाम-बुताम-एतय ट वर्ण त वर्णमे परिणत भऽ गेल अछि ।

महाप्राण– परिधान > परिहान > परिहन > पहिरन, पन्द्धि > पन्हि > पनही, प्रसाधन > पसाहन > पसाहनि > पसाह ।

अन्य विकार– एकर अतिरिक्तो ध्वनि परिवर्तनक अनेक विकार देखि पड़ैछ यथा–
ल > र – कम्बल-कम्मर, पीतल-पित्तर, शृंखलिका- सिंकलीआ-सिंकली-सिंकड़ी-सिकड़ी, कज्जल-काजर, चुलि-चुरि ।

ल > न – लंगोट-नंगोट, लुङ्गा-नुङ्गा, हलुमानी-हनुमानी, लघुरी-नघुरी, लहरनी-नहरनी ।

न्द > न्न – बाजूबन्द-बाजूबन्न-बाजूबन, सन्मुख-सनूख, कमरबन्द-कमरबन्न, कोचबन्द-कोचबन्न-कोचबन ।

श > स – शाल-साल

वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे बहुसंख्यक शब्द अरबी ओ फारसीसँ गृहीत अछि । अरबी, फारसीक शब्दावलीक मैथिलीमे परिग्रहणक क्रममे ध्वनिमे किछु विशिष्ट परिवर्तन देखल जाइछ यथा–

(क) अरबी-फारसीमे एकेटा ध्वनिक उच्चारणक हेतु अनेक वर्णक प्रयोग होइछ जेना स ध्वनिक तीन, ज ध्वनिक छओ, तथा अ, क, ग, त, ह ध्वनिक हेतु दू दूटा वर्णक प्रयोग अछि[8] मुदा मैथिलीमे प्रत्येक ध्वनिसमूहक हेतु एकेटा सामान्य वर्णक प्रयोग होइछ ।

(ख) अरबी-फारसीमे शब्दक अन्तमे जतय हे अथवा ह होइत छैक ओकर उच्चारण विसर्ग जकाँ अथवा ह होइछ । मैथिलीमे एहि हेतु आ ध्वनि भऽ जाइछ यथा–

कुर्तः – कुरता । तुक्मः – तुकमा । कसीदः – कसीदा । शमलः – समला ।

साफः – साफा । लबादः – लबादा । कतरः –कतरा । पर्दः –पर्दा ।

नगीनः –नगीना । जर्दः –जर्दा । जामः –जामा । सिक्कः –सिक्का ।

खासः – खासा । आइनः –आइना । दोशालः-दोशाला ।

(ग) अरबी फारसीक किछु शब्दक मैथिली रूपमे परिवर्तनक क्रममे आरम्भिक स्वर उ, ओ ध्वनिमे तथा आ ध्वनि ऐ, औ ध्वनिमे बदलि जाइछ यथा–

चुगा-चोङ्गा । पाजामः –पैजामा / पौजामा । पाताबः – पैतावा ।

सोजनी मे ओ ध्वनि उ मे बदलि गेल अछि- सोजनी ऽ सुजनी ।

(घ) किछु शब्दमे दीर्घ स्वर ध्वनि ह्रस्वमे बदलि जाइछ यथा–

रूमाल-रुमाल । सन्दूक-सन्दुक । साबून-साबुन ।

(ङ) किछु शब्दमे व्यंजन द्वित्व भऽ जाइछ यथा– किसी-मिस्सी, रफू-पफ्फू,

(च) किछु शब्दमे स्वरागम भऽ गेल अछि यथा–

आस्मानी-आसमानी । खर्च-खरचा । जाजम-जाजिम । मियान-मियानी ।

सन्दर्भ सूची–

1. मैथिली ग्रामर- जी.ए. ग्रियर्सन, पृ. 2-17
2. मिथिला भाषा विद्योतन- दीनबन्धुझा, वर्ण प्रकरण
3. फार्मेशन आफ मैथिली लैंग्वेज, अध्याय-2-3 तथापि मैथिली व्याकरण मीमांसा, पृ. 7-1
4. मिथिला भाषा प्रकाश- रमानाथझा, पृ. 1-13
5. मैथिली भाषा का विकास-गोविन्दझा, अध्याय-4
6. अए-आएकँ ऐ तथा अओ-आओकँ औ रूपमे सेहो लिखल जाइछ ।
7. मैथिली भाषा का विकास, पृ. 86-88
8. उर्दू हिन्दी शब्द कोष- स० मुहम्मद मुस्तफा खाँ मद्दाह, हिन्दी समिति, हिन्दी भवन महात्मागांधी मार्ग, लखनऊ, प्राक्कथन, पृ. 2

एकादश अध्याय

शब्द-विचार

व्युत्पतिक दृष्टिजे शब्द-विचार– व्युत्पतिक दृष्टिजे वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़ तीनू प्रकृतिक शब्द भेटैत अछि ।

रूढ़-रूढ़ शब्द ओ थिक जकर समुदायक अर्थ हो मुदा अवयवक नहि ।[1]

मात्रात्मक अभिरचनाक दृष्टिजे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे एकाक्षर शब्दक प्रयोग नहि देखल गेल अछि ।

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे द्वयक्षर शब्दक संख्या बहुत वेशी अछि । ई शब्द सभ वेशभूषा प्रसाधनक विशिष्ट अर्थक द्योतनक हेतु प्रयुक्त देखि पड़ैछ यथा– अंगा, ऐंठा, कारा, कोर, कोरा, कंघी, खाधी, खोल, चोधी, चानी, चूड़ी, चोंगा, चोटी, चोली, छारा, छींट, जुग, जोड़, झूल, टाँक, टेंट, ठेठ, ढट्ठा, तानी, तेल, तौक, थान घूस, नग, नथ, नारा, नेफा, पाढ़ि, पान, फान, बन, बाला, बूट, झुड़ी, माला, मेखी, मोती, मौजा, लर, बीर, सोना, हूर, इत्यादि । समस्त द्वयक्षर शब्द रूढ़ कोटिक अछि ।

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे त्र्यक्षर शब्दक संख्या सेहो बहुल अछि । एहू शब्दमे अधिकांश रूढ़ प्रकृतिक अछि यथा– आँचर, ओढ़ना, अरसी, अलता, ककवा, ककही, कटोरी, कछिया, कसीदा, कमीज, कुसुम, कंचुआ, केथरी, कौपीन, कंगन, खुटिया, खेलौना, गरारा, गेरुआ, गिलौरी, चदरि, चातर, चलनि, चेफरी, छलकी, जुल्फी, झपला, टिकुली, तबीज, तसर, धराठ, निकुती, नबाब, नेपुर, पगड़ी, पंजाबी, पटोर, पनमा, परेस, फतुही, फुदना, फूलेल, फलको, फैसन, फराठी, बिजली, बदामी, बैंगनी, बचवा, मियानी, बुलकी, मोहरी, मनोरी, मटिआ, लंगोटी, लपेट, लटका, सुजनी, सैंतब, साटन, साबुन इत्यादि ।

त्र्यक्षर शब्दमे किछु यौगिक स्वरूपक सेहो देखि पड़ैछ यथा– दोपटा, नौनगा इत्यादि ।

चतुरक्षर, पञ्चाक्षर ओ षडक्षर रूढ़ शब्द सेहो भेटैछ । एहिमे चतुरक्षर रूढ़ शब्दक संख्या सर्वाधिक अछि । षडक्षर रूढ़ शब्द अत्यल्प संख्यामे देखि पड़ैछ यथा–

चतुरक्षर रूढ़ शब्द–अचकन, अमिरती, ककुरिया, गमगम, चतरिया, चपकन, जइसन, जिटियल, तिलकब, थकरनी, धुकधुकी, नहरनी, नकलेस, पसाहनि, पहिराउ, बड़हरी, बचकानी, बालाबर, महमह, मछरिया, मुरलिया, मोलायम, हलुमानी इत्यादि ।

पंचाक्षर रूढ़ शब्द– फैसनदार, झिमझिमा, पहलदार ।

षडक्षर रूढ़ शब्द– दुरगमनिञा ।

यौगिक– यौगिक शब्द ओ थिक जकर अवयवक अर्थबोधक संगहि समुदायक सेहो अर्थ बोध हो ।[2]

भावात्मक अभिरचनाक दृष्टिजे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे यौगिक शब्द त्र्यक्षर शब्दसँ आरम्भ होइछ तथा एकर आयाम षडक्षर शब्द धरि अछि । एहि शब्दावलीमे यौगिक शब्दक निर्माण प्रक्रिया संज्ञा ओ विशेषणक संग संज्ञा ओ क्रियाक योगसँ भेल देखि पड़ैछ यथा–

संज्ञा + संज्ञा–

टेरीन + कॉटन	-	टेरीकॉटन	काज + पट्टी	-	काजपट्टी
मटर + दान	-	मटरदाना	मोहर + माला	-	मोहरमाला
गुम + हार	-	गिरिमहार	कान + टोपी	-	कनटोपी
कान + झप्पा	-	कनझप्पा	सुख + तल्ला	-	सुखतल्ला
नाक + बेसर	-	नकबेसर	नाक + चन्दा	-	नकचन्दा
चम्पा + कली	-	चम्पाकली	कदम + सिकड़ी	-	कदमसिकड़ी
बाघ + नह	-	बघनहा	गाल + मोछा	-	गलमोछा
नाक + सिनूर	-	नकसिनुरी	पान + खौक	-	पनखौक
खिल्ली + बट्टा	-	खिलबट्टा	पेट + बढ्ढी	-	पेटबढ्ढी
वीर + झुम्मक	-	वीरझुम्मक	मुख + शुद्धि	-	मुखशुद्धि
गाल + मोछ	-	गलमोछा	लगन + पुतली	-	लगनपुतली
चोर + जेबी	-	चोरजेबी	भाठ + रंग	-	भटरंग
ब्रह्म + गाँती	-	ब्रह्मगाँती	हाथ + पोछना	-	हथपोछना
कान + बाली	-	कनबाली	नाक + फूल	-	नकफूल
सूगा + पंख	-	सुगापंखी			

संज्ञा + क्रिया–

तूर + भर - तूरभरा   घुट्ठी + सोहर - घुट्ठीसोहार
अंग + पोछ - अंगपोछा   डाँड़ + कस - डँड़कस
नाक + मून - नकमुनी   जूड़ा + बान्ह - जुड़बन्ह
हीरा + काट - हीराकाट   केश + उड़ - केशउड़ा
खोपा + बान्ह - खोपबन्ह   नह + रङ्ग - नहरङ्गा
कल + जोड़ - कलजोड़िया   अङग + राख - अङ्‌रखा
रंग + साज - रंगसाज   कान + डोल - कनडोला

विशेषण + संज्ञा–

एक + रंग - एकरंगा   नीम + आस्तीन - नीमस्तीन
पाँच + घरबा - पचघरबा   दू + ढेका - दुढेकिया
आठ + हाथ - अठहत्थी   चारि + पल्ला - चरिपलिया
आधा + बाँह - अधबाँही   तीन + पाढ़ि - तिनपढ़िया
सात + बंडी - सतबंडी   नौ + नग - नौनगा
तीन + छल्ला - तिनछलिया   सात + लर - सतलरी
पाँच + खण्ड - पचखंडी   पाँच + जुट्टी - पँचजुटिया
गोल + गला - गोलगला   चारि + खाना - चरिखाना

विशेषण + क्रिया–

आधा + काट - अधकट्टी

यौगिक शब्दक निर्माणमे किछु विशिष्टता देखि पड़ैछ । कखनो तँ अवयव यौगिक बनलाक बादो यथावते रहि जाइछ यथा–

पेट + बद्धी - पेटबद्धी   हीरा + काट - हीराकाट
चम्पा + कली - चम्पाकली   सुख + तल्ला - सुखतल्ला
मटर + दाना - मटरदाना   मोहर + माला - मोहरमाला
मुख + शुद्धि - मुखशुद्धि   काज + पट्टी - काजपट्टी

मुदा एहि प्रकारक स्थिति अधिकांश यौगिकक निर्माणमे नहि देखि पड़ैछ ।

अधिकांश यौगिकमे अवयवक स्वरूपमे एकटा नियमित प्रकारक परिवर्तन देखि पड़ैछ । एहि परिवर्तनक स्वरूप अछि । यथा–

(क) पहिल अवयवक पहिल दीर्घ स्वर ह्रस्व भऽ जाइछ यथा–

कान + टोपी - कनटोपी   कान + झप्पा - कनझप्पा
नाक + बेसर - नकबेसर   नाक + चन्दा - नकचन्दा
बाघ + नह - बघनहा   नाक + सिनूर - नकसिनुरी
डाँड़ + कस - डँड़कस   नाक + मून - नकमुन्नी
जूड़ा + बान्ह - जुड़बन्ह   खोपा + बान्ह - खोपबन्ह
पान + खोंक - पनखोंक   सात + बंडी - सतबंडी
आठ + हाथ - अठहत्थी इत्यादि

(ख) पहिल अवयवक दोसर दीर्घस्वर ह्रस्व भऽ जाइछ यथा–

खोपा + बान्ह - खोपबन्ह   आधा + बाँही - अधबाँही
आधा + काट - अधकट्टी

(ग) दोसर अवयव आकारान्त भऽ जाइछ यथा–

बाघ + नह - बघनहा   गाल + मोछ - गलमोछा
नह + रङ्ग - नहरंगा   अंग + पोछ - अंगपोछा ।

(घ) दोसर अवयव ईकारान्त भऽ जाइछ यथा–

नाक + मून - नकमुनी   नाक + सिनूर - नकसिनुरी
आठ + हाथ - अठहत्थी   आधा + बाँह - अधबाँही
सात + लर - सतलरी   पाँच + खण्ड - पचखण्डी
गड + मुख -
गडमुख

यौगिक शब्दमे जखन दोसर अवयव ईकारान्त भऽ जाइछ तँ ओहि अवयवक पूर्वपद ह्रस्व भऽ जाइछ ।

(ङ) दोसर अवयव इया प्रत्यान्त भऽ जाइछ यथा–

पाँच + जुट्टी - पँचजुटिया   कल + जोड़ - कलजोड़िया
तीन + छल्ला - तिनछलिया   चारि + पल्ला - चरिपलिया
दू + ढेका - दुढेकिया ।

(च) पहिल अवयवक अन्तिम व्यञ्जन आ दोसर अवयवक पहिल व्यञ्जन समान रहला पर दुनूमे एकटाक लोप वा दुनू संयुक्त भऽ जाइछ यथा–

इयर + रिंग – इयरिंग   बुस + सट – बुस्सर्ट

योगरूढ़– योगरूढ़ ओहन शब्द थिक जकर अर्थबोध हो सङ्गहि समुदायक अर्थ विलक्षण हो ।[2] वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अल्प संख्यक इहो शब्द भेटैछ यथा–

1. सफाचट– ई शब्द सफा ओ चट शब्दक योगसँ बनल अछि जकर सामान्य अर्थ तुरत साफ कयनिहार होइछ । मुदा ई शब्द अनपेक्षित केशकेँ उड़यबाक रसायनक विशिष्ट अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।
2. चमचिकनी– ई शब्द चाम ओ चिक्कन शब्दक योगसँ बनल अछि आ एकर सामान्य अर्थ छैक चिक्कन चामवाली । मुदा ई शब्द निरन्तर सिंङारपटारमे रत रहयवाली स्त्रीक अर्थमे रूढ़ अछि ।
3. लटछिलकी– ई शब्द लट आ छिलकबसँ व्युत्पन्न अछि । लटकेँ पृथक कऽ राखयवाली स्त्रीक सामान्य अर्थसँ पृथक ई शब्द अघलाहे प्रकृतिक स्त्रीक हेतु रूढ़ अछि ।
4. गूआमाला– ई शब्द गूआ आ मालासँ बनल अछि । गूआक अर्थ छैक सुपारी तेँ एकर सामान्य अर्थ सुपारीक माला होइछ । मुदा ई लाहसँ निर्मित एकगोट विशिष्ट आभूषणक हेतु रूढ़ अछि जे विवाहक अवसरपर कन्यालोकनि धारण करैत छथि ।
5. फुलहरथा– ई शब्द फूल आ हाथक योगसँ बनल अछि । एकर सामान्य अर्थ होइछ जकर हाथमे फूल होइक । मुदा ई दण्डक एकटा प्रकार विशेषक हेतु रूढ़ अछि ।
6. कुकुरभुक्की– ई शब्द कुकुर आ भूकबक योगसँ बनल अछि । कुकुरक भूकबाक सामान्य अर्थसँ पृथक एकर विशिष्ट अर्थ अछि ओहन कपड़ा जे झलझल होअय ।
7. गिदरनोंच– ई शब्द गीदर आ नोंचबसँ व्युत्पन्न अछि । एकर सामान्य अर्थ छैक गीदर द्वारा नोंचल, मुदा इहो झलझल कपड़ाक विशिष्ट अर्थमे प्रयुक्त अछि ।
8. दैंतखिसोर– ई शब्द दाँत आ खिसोरबसँ व्युत्पन्न अछि । एकर सामान्य अर्थ छैक दाँत बओने रहब मुदा इहो झलझल वस्त्रक विशिष्ट अर्थमे प्रयुक्त अछि ।
9. कुण्डाबोर– ई शब्द कुण्ड आ बोरबसँ व्युत्पन्न अछि । एकर सामान्य अर्थ अछि कुण्डमे बोरल । मुदा एहि सामान्य अर्थसँ सर्वथा भिन्न ई लाल रंगक अतिरेककेँ अभिव्यक्त करैछ ।

उद्‌गमक दृष्टिसँ शब्द विचार– उद्‌गमक दृष्टिसँ वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे दुइ कोटिक शब्द देखि पड़ैछ– (क) परम्परागत शब्द (ख) गृहीत शब्द

परम्परागत शब्दसँ तात्पर्य प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक निर्माण करयवला शब्दसमूहसँ अछि जे क्रमशः नव्य भारतीय आर्यभाषाकेँ अवशेषक रूपमे प्राप्त भेल अछि । परम्परागत शब्दक कोटि विभाजन प्रक्रिया प्राकृते कालमे आरम्भ भऽ गेल छल । भरतक नाट्यशास्त्रमे शब्द समूहक तीनगोट कोटि कहल गेल अछि– 1. समान शब्द 2. विभ्रष्ट शब्द 3. देशीमत शब्द ।

एहिमे समान शब्दसँ तात्पर्य संस्कृतसम शब्द, विभ्रष्ट शब्दसँ तात्पर्य तद्‌भव शब्द ओ देशीमत शब्दसँ तात्पर्य देशोद्‌भव शब्द रहल अछि । परवर्ती आचार्य लोकनि सेहो एहि प्रकारक विभाजन कयलनि अछि । आधुनिक कालमे नव्य भारतीय आर्यभाषाक शब्दावलीकेँ पूर्वाचार्य लोकनिक कोटि विभाजनकेँ ध्यानमे रखैत तथा एहिमे किछु परिवर्तन करैत डा. सुनीतिकुमारचटर्जी द्वारा शब्द-कोटि विभाजन निम्न प्रकारक अछि– 1. परम्परागत शब्द ओ 2. गृहीत शब्द ।

परम्परागत शब्दमे (क) तद्‌भव (ख) प्राचीन तत्सम ओ अर्द्धतत्सम (ग) प्राचीनतम गृहीत तथा आर्य मूलसँ अव्याख्यात शब्द देशी तथा (घ) फारसी ओ ग्रीक भाषाक किछु विदेशी शब्द जे संस्कृत वा प्राक् संस्कृत कालमे गृहीत भऽ चुकल छल ।

गृहीत शब्दमे ई (क) प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक शब्द (ख) नव्य भारतीय भगिनी आर्य भाषाक शब्द ओ (ग) भारतक आर्येतर लोकनिक भाषा (द्रविड़, कोल, तिब्बत, वर्मन भाषा) भाषीक भाषाक शब्द ओ (घ) भारतेतर देशक भाषाक शब्द समूहकेँ परिगणित कयलनि अछि ।[4]

मुदा हिनक अवधारणाक अर्द्धतत्सम ओ संस्कृत तथा प्राक्संस्कृत कालमे गृहीत विदेशज शब्दकेँ तद्‌भवेक आलोकमे देखब सुविधाजनक अछि ।

तत्सम– संस्कृतसँ उपगत भऽ ओही रूपमे प्रचलित शब्दकेँ तत्सम, संस्कृतसम अथवा संस्कृतानुरूप कहल जाइछ । मैथिलीक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन शब्दक प्रयोग सामान्य रूपमे होइछ यथा–

आभरण, अंजन, एकावली, कम्बल, कौपीन, खण्ड, नील, नीवी, नूपुर, पवित्री, भूषण, मंगलसूत्र, सिन्दूर, वेणी, वेश, हार इत्यादि ।

एहि प्रकारक शब्द वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अल्पसंख्यक अछि ।

तद्‌भव– ओहन शब्द समूह जे प्राचीन भारतीय आर्यभाषासँ व्युत्पन्न भऽ ध्वनि परिवर्तनक विभिन्न प्रक्रियाकेँ आत्मसात् करैत आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक अनुकूल उच्चरित

होइछ, तद्‌भव वा संस्कृतभव कहल जाइछ यथा–

गात्रिका-गत्तिआ-गाँती । पल्लव-पल्लअ-पल्ला । बालिका-बालिआ-बाली । कंचुक-अंचुक- अचकन । आदर्शिका-आरस्सिआ- आरसी, अरसी । ग्रहणक-गहनअ-गहना । लिक्षा-लिक्खा-लीख । कङ्कतिका-कङ्गहिआ-कङ्गही । परिधान-परिहान-परिहन-पहिरन । लक्तक-लत्तअ- लत्ता । पटच्चर-फटच्चर-फटीचर । कर्पट-कर्पड-कप्पड़-कपड़ा । सूची-सुइ । मल-मैल । दुश-दुस्स-धूस । पादान्तधौत- पदनधोत । अंग प्रोञ्छ-अंगपोच्छ-अंगपोछा-गमछा । पीताम्बरी-पितम्बरी-पितमरी । छत्र-छत्त-छाता । पर्ण-पण्ण-पान । मौक्तिक-मोतिअ-मोती । सिन्दूर-सिन्नूर-सिनूर, सेनुर । धोत्रिका-धोतिआ-धोती । ताठङ्क-ताडङ्क-ताड़क्क-तड़का, तड़की । गृमहार-गिरिमहार । जूटक-जूडअ-जूड़ा । कङ्कन-कक्कन-कग्गन-कगना । अंगुष्ठी-अउँठी । मुद्रिका-मुनरिआ-मुनरी । नूपुर-नेउर । कूर्च्चिका-कुच्चिआ-कुच्ची । कज्जल-कज्जर-काजर । आलक्तक-आरतअ-आरत । अंगरक्षक-अंगरक्खअ-अंगरखा । उत्तरीय-उतरी । अञ्चल-अच्चल-आँचल । शाटिका-शाडिआ-साड़ी । गेण्डुक-गेण्डुअ-गेडुआ । सञ्चिका-सञ्चिआ-साँची । कन्था-कथथा, केथथा ।शृंखलिका-सिखरिआ-सिकड़ी ।

मैथिलीक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे तद्‌भव शब्दक संख्या तत्समक अपेक्षा अधिक अछि । एहन शब्द जे प्राकृत ओ अपभ्रंससँ होइत आधुनिक भाषामे आयल अछि, गंभीर ध्वनि-परिवर्तन प्रक्रियासँ सम्पृत अछि मुदा किछु शब्द संस्कृतसँ सोझे आधुनिक भारतीय आर्यभाषाकेँ भेल अछि । एहन शब्दमे ध्वनि परिवर्तन अल्प भेल अछि ।

देशज शब्द– तत्सम, तद्‌भव ओ गृहीत शब्दसँ भिन्न शब्द समूहक हेतु देश्य, देशी, देशज, देशीमत आदि अभिधानक प्रयोग होइत रहल अछि । वस्तुतः देशज शब्दसँ तात्पर्य अज्ञात व्युत्पतिक शब्द थिक, जकर स्रोत अथवा मूल निश्चित रूपसँ ज्ञात नहि अछि ।

मैथिलीक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु देशज शब्द सेहो देखि पड़ैछ । एहि सबमे कतोक शब्द प्राकृत ओ अपभ्रंस परम्परासँ गृहीत भेल अछि । हेमचन्द्रक देशी नाममालाक कतोक शब्द वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे सेहो देखि पड़ैछ यथा–

देशी नाममालाक शब्द ओ अर्थ	**मैथिली रूप ओ अर्थ**
1. दुल्ल[5]-कपड़ा	दुलाइ-ओढ़बाक कपड़ा विशेष
2. ओड्ढण[6]- ओढ़बाकवस्त्र	ओढ़ना-ओढ़बाक वस्त्र
3. घग्घर[7] – पहिराबा	घाघर-विशिष्ट पहिरावा

देशीशब्दक किछु अन्य उदाहरण अछि– चौपेतब, झलझल, चुन्नीचुन्नी, रित्तीरित्ती,

फनुकी, चीरक, फाँड़, खुटिया, खरुकी, भगवा, गीझनीट, आँठ, टेंट, फाँफड़, खोईंछा, हल्लर, मरओत इत्यादि । एहि शब्दावलीमे किछु शब्द अनुरणात्मक प्रकृतिक देखि पड़ैछ यथा– झलझल, चुन्नीचुन्नी, रित्तीरित्ती इत्यादि ।

गृहीत शब्द– गृहीत शब्दक हेतु भाषा वैज्ञानिकलोकनि विदेशी वा विदेशज अभिधानक प्रयोग कयने छथि । परम्परागत शब्दसँ भिन्न भारतसँ बाहरक भाषा यथा अरबी, तुर्की, फारसी एवं अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषासँ जे शब्द आबि मिथिला भाषामे गृहीत भऽ गेल अछि, से विदेशी शब्द थिक ।

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे गृहीत शब्द सर्वाधिक संख्यामे अछि । खासकऽ गृहीत शब्दावलीमे अधिकांश अरबी फारसी ओ तुर्कीसँ गृहीत अछि । यथा–

अरबी– गिरार-गरारा । जेब-जेबी । बज्जाज-बजाज । बुर्क:-बुर्का । मखमल-मखमल । रजा-रजाइ । लिबास-लेबास । वर्दी-वरदी, उर्दी । शम्ल:-समला । सन्दूक-सन्नुक । सफाचट-सफाचट । साफी-साफी । साबुन-साबुन । इब्रेसम-रेशम । लिहाफ-लेहाफ । इत्र-अतर । ऐनक-ऐना । कतर:-कतरा, कतरब । कफ्फन-कफन । कमीस-कमीज । कीस:-कीसा / खीसा । खासह-खासा । ताज-ताज । ताबीज-तबीज । तौक-तक । निकाब-नकाब ।

तुर्की– चुगा-चोंगा । कालीन-कालीन । हकीक-अकीक । कुर्ता-कुर्ता । कैंची-कैंची ।

फारसी– फीरोजी-फिरोजी । बालावर-बालावर्ज । बालिश-बलिस्ता । विस्तर-बिस्तर । मियान-मियानी । मीरजा- मिर्जइ । मिसी-मिस्सी । मीना-मीना । रंगरेज-रंगरेज । रंगसाज-रंगसाज । रूमाल-रुमाल । लबाद:-लबादा । लअल-लाल । शतरंजी-शतरंजी । संजाफ-सञ्जाफ । साद:-सादा । जुल्फ-जुल्फी । जौसन-जइसन । शीश:-सीसी । अशर्फी-असर्फी । कलदार-कलदार । कनार:-किनारी । सोजनी-सुजनी । इजरबन्द-हाजारबन्न । आइन:-आइना । इजार-इजार । उरेब-उरेब । कमरबन्द-कमरबन्द । कसीद:-कसीदा । खर्च-खरचा । खाक-खाकी । खिराम-खराम । गज-गज । गजी-गजी । गफ-गफ, गफ्स । गुलूबन्द-गुलेबन्द । जंजीर-जंजीरा । जरी-जरी, जड़ब । जर्द:-जर्दा । जाजम-जाजिम । हैकल-हैकल । सुरम:-सुरमा । जाम:-जामा । जेवर-जेबर । जेबरात-जेबरात । तह-तह । तोशक-तोशक । दोशाल:-दोशाला । नगीन:-नगीना । पश्मीना-पशमीना । पाजाम:-पैजामा-पैजामा । पाजेब-पाजेब । पाताब:-पैताबा । पैवन्द-पेओन । पोशाक-फोसाक । चादर-चद्दरि । अस्तीन-अस्तीन । पेशवाज-पिसवाज ।

यूरोपीय भाषासँ गृहीत शब्दमे अधिकांश शब्द अंग्रेजी भाषाक अछि मुदा पुर्तगाली आदि भाषाक शब्द सेहो भेटैछ यथा– फीत: (पुर्तगाली)-फीता । अंग्रेजी शब्द- हेम, कोट, पैंट, शर्ट, हैट, टाइ, आयरन, परेस-(अं०) प्रेस, फैसन, सील, फराक (अं.)

फ्रॉक, लिपिस्टिक, ब्लाउज, तौलिया (अं.)टावेल, ऐरिंग- अं. इयरिंग, कालर (अं.) कालर, एस्नो-स्नो (अं.) ननगिलाट- (अं.) नन्ग्लेन्ड-अलबर- (अं.) (अल्बर्ट) ।

अर्थक दृष्टिजे शब्द विचार– अर्थक दृष्टिवे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञा, विशेषण, क्रिया ओ अव्यय एहि चारि कोटिक शब्द भेटैत अछि ।

संज्ञा– ग्रियर्सन स्वरुपक आधारपर मैथिली संज्ञाक तीन गोट कोटि कहने छथि– लघु दीर्घ आ दीर्घतम ।[8]

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञा शब्दक तीनू कोटि देखि पड़ैछ यथा–

लघु	गुरु	गुरुतम	लघु	गुरु	गुरुतम
आँचर	अँचरा	अँचरबा ।	हार	हारा	हरवा ।
गूदर	गुदरा	गुदरबा ।	बाँहि	बाँही	बहिआँ ।
ताग	तागा	तगवा ।	पेटार	पेटारा	पेटरबा ।
लगोट	लँगोटा	लँगोटबा ।	घेर	घेरा	घेरबा ।
छत्ता	छाता	छतवा ।	सोनार	सोनरा	सोनरबा ।
सोन	सोना	सोनमा ।	कंगन	कंगना	कगनमा ।
ओढ़न	ओढ़ना	ओढ़नमा ।	घाघर	घघरा	घघरवा ।

मुदा अनेक संज्ञा शब्दक दुइए कोटिक रूप देखि पड़ैछ । ल घु-गुरु, लघु-गुरुतम वा गुरु-गुरुतम ।

लघुगुरु– विन्दी-विन्दिया । मिस्सी-मिसिया । खोंपा-खोंपिया । बुलकी-बुलाकी । पाग-पगिया । फाँड़-फाँड़ा । कच्छा-कछिया । साड़ी-सड़िया । आड़ी-अड़िगया । बधा-बाधा । टाँक-टाँका । बिजोठ-बिजौठा । झूल-झुल्ला । पटोर-पटोरबा ।

लघु-गुरुतम– फुदना-फुदनमा । टार-टरिया । किनार-किनरवा । जोड़ा-जोड़वा । जुत्ता-जुतवा । जूड़ा-जुड़बा । खोंपा-खोपवा । कम्मर-कमरिया । लगोटी-लंगोटिया ।

गुरु-गरुतम– गुदरी-गुदरिया । पेटारी-पेटरिया । टिकुली-टिकुलिया । बाजू-बजुआ । ककही-ककहिया । साड़ी-सड़िया ।

किछु शब्द केवल लघु, गुरु वा गुरुतम स्वरूपमे देखि पड़ैछ ।

केवल लघु– जाल, मिरजइ, कफन, आबा, पोप, मरोत, लर, बोर, इत्यादि ।

केवल गुरु– पल्ला, भूँड़ी, फतुही, मोहरी, भूड़ी, चाँपकली, इत्यादि ।

केवल गुरुतम– ककवा, ककबी, झिमझिमिआ, सौतिनआ, इत्यादि ।

विशेषण– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे विशेषण शब्दक बहुल प्रयोग भेल अछि । किछु विशेषण सामान्य कोटिक अछि– किन्तु किछु वेशभूषा प्रसाधनक सांगोपांग वैशिष्ट्यक सूचक अछि जे ओकर प्रकृतिकेँ स्पष्ट करैछ तथा विशिष्ट गुणकेँ उदघाटित करैछ । यथा– कलपीआ, तहीआ, गफ, झलझल, मोटिआ, डोरिआ, चरखाना, धोआ, बनौआ, कोरा, उरेबी, सुनटा, जालदार, छपुआ, कहौतिया, दुरगमनिआ, वियहुती, छटियारी, लहेरिया, पहलदार, पढ़िया, ढकढोल, फल्लर, हल्लर, कुण्डाबोर, बम्बइया, जड़ाउ, ककुरिया, मुरलिया, जटही, इत्यादि ।

सामान्य विशेषण शब्दक संग किछु विशिष्ट शब्दक योगसँ वैशिष्ट्यक अल्पता ओ अतिशयताक सूचना भेटैछ यथा– अल्पतासूचक विशेषण-ललौन, पियरौंछ, करिछाह अतिशयतासूचक विशेषण- लालरक्त, रक्तबुन्द, लालटुहटुह, लालबुन्द, लालटेस, रकतलाल, लालरक्त, हरियरकचोर, हरियरकंचन कारी खटखट, कारी खटोर, कारीलेहर, कारीभुजुङ्ग, पीयरकहकह, पीयरकपीस, उज्जरदपदप, उज्जर बगबग, कुण्डाबोर, पीयरकल्हा इत्यादि ।

अतिशयतासूचक विशेषणमे उत्तरपद सामान्यत: निरर्थक होइछ मुदा कखनो उत्तरपद सार्थक सेहो देखल जाइछ । कतोक उत्तरपदसँ भाववाचक संज्ञाक सेहो निर्माण होइछ यथा टुहटुही (अत्यन्त लाली) । दपदपी (स्वच्छता) इत्यादि । किछु विशेषण शब्द द्विगुसामासिक होइछ जकर पूर्वपद संख्यावली देखि पड़ैछ यथा– दुजुटिया, एकपलिया, तिनपढ़िया इत्यादि ।

अतिशयताबोधक अनुगामी शब्द– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अतिशयता सूचक विशेषणमे मूल विशेषणक संग जे अनुगामी शब्द जुटि कऽ ओकर अतिशयतासूचक बना दैछ ओकर प्रकृतिक विश्लेषणसँ ई तथा दृष्टिगोचर होइछ जे अधिकांश शब्दमे अनुगामी शब्द सर्वदा निरर्थक होइछ यथा– लालटुहटुहमे टुहटुह, हरियर कचोरमे कचोर, कारीखटखटमे खटखट, कारीलेहरमे लेहर, उज्जरदपदपमे दपदप, उज्जर बगबगमे बगबग, उज्जर झकझकमे झकझक, पीयरकहकहमे कहकह, कारीखटोरमे खटोर, पीयर कल्हामे कल्हा, पीयरदहदहमे दहदह इत्यादि । अनुगामी उत्तर पदमे अधिकांश अनुरणात्मक शब्द देखि पड़ैछ, यथा– टुहटुह, खटखट, दपदप, बगबग, झकझक, कहकह, दहदह इत्यादि । एहन अनुगामी शब्द केवल लाल, उज्जर, पीयरओ हरियर रंगक संग देखल जाइछ । लाल ओ उज्जर रंगक अनुगामी शब्द क्रमश: टुहटुह ओ दपदप मात्रसँ भाववाचक संज्ञा बनैत दृष्टिगोचर होइछ ।

अतिशयताबोधक विशेषणमे किछु शब्दक दुनू पद सार्थक देखि पड़ैछ यथा– कारी भुजुङग, उज्जरसपेत, मैल चिकाइट, मैलचिक्कट, कारीस्याह, लालरक्त, रक्तलाल, कुण्डाबोर, लालटेस इत्यादि । एहि शब्द सभमे उज्जर सपेतक सपेत पद सफेदसँ, लालटेसक टेस शब्द टेसूक फूलसँ निसृत बुझना जाइछ जकर सार्थकता आब सन्दिग्ध भऽ गेल छैक । आन पदक अर्थ निम्नस्वरूपक देखि पड़ैछ–

कारीभुजुङ्– भुजुङ्ग (साप) कटलापर विष चढ़ि गेला उत्तर शरीरक श्यामलता सदृश कारी वा कारी सापक रंग सन कारी ।

रक्तलाल– रक्त सन लाल लालटेस-टेसूक फूल सन लाल

मैल चिकाइट– चिकाइट (तैलीय अंश ओ गंदगीसँ युत वस्त्र) सदृश मैल

मैल चिक्कट– चिक्कट (तैलीय अंश ओ गंदगी संयुत वस्त्र) सदृश मैल

किछु शब्दमे एके अर्थक दूटा विशेषणक पुनरागमन जन्य अतिशयता बोध होइछ यथा– लाल रक्त– लाल-लाल-खूब लाल, उज्जर सपेत– उज्जर-उज्जर-खूब उज्जर

कुण्डाबोर शब्द योगरूढ़ प्रकृतिक अछि आ अत्यन्त लालक हेतु रूढ़ अछि ।

क्रिया– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे क्रियापदक बहुल प्रयोग भेल अछि । वेशभूषाप्रसाधन व्यापारमे विभिन्न स्थितिक सूक्ष्मतया निदर्शनक हेतु पारिभाषिक कोटिक क्रियापदक व्यवहार होइछ यथा– पहिरब, ओढ़ब, औंसब, हथोसब, पोचकारब, कतरब, काटब, सीब, भेयारब, बहब, ब्यौंतब, छौंटब, बखिआयब, बाढ़ब, जड़ब, लगायब, चीरब, फाटब, पीटब, खीचब, पखारब, फलहोरब, धोखारब, लहकब, गाड़ब, फेरब, उतारब, छापब, ओछायब, झारब, सोहरायब, खोलब, गूहब, साटब, लोढ़ब, बीछब, गमगमायब, महमहायब, गोदब, खोंधब इत्यादि ।

एहि क्रियापदमे क्रियाक अकर्मक ओ सकर्मक दुहू स्वरूप भेटैत अछि जाहिमे अधिकांश सकर्मक अछि । अकर्मक क्रियाक किछुए उदाहरण भेटैछ यथा– गमगमायब, महमहायब, फसरब, खिसरब, बहब, मसकब, चुनिआयब, इत्यादि ।

सरल एवं संयुक्त क्रिया– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे ओना तँ अधिकांश क्रियापद सरले प्रकृतिक अछि मुदा अनेक संयुक्त क्रियाक प्रयोग सेहो देखल जाइछ जे सामान्यत: संज्ञा ओ क्रियाक योगसँ बनैछ यथा– जिट देब, जिटझाड़ब, मांग काढ़ब, केश सोटब, सीथ फारब, कपड़ा बहब, मोछफेरब, पट्टी छौंटब, लट छिलकायब, आरत करब, फैसन करब, मरोतकाढ़ब, छन्नालागब, मड़कछ मारब, फोंड़ बान्हब, ढट्ठा मारब, खोंइछा बान्हब, रफू करब, जोगाड़ करब, चित्ती मारब इत्यादि ।

नामधातु– वेशभूषा प्रसाधनसम्बन्धी शब्दावलीमे अनेक विशिष्ट अर्थक द्योतक नामधातुक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ यथा– माँड़-मड़िआयब, तह-तहिआयब, बखिआ-बखिआयब, आंजन-आंजब, काजर-कजरायब, औंठी-औंठियायब, कोंचा-कोंचिआयब इत्यादि ।

अव्यय– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे भाषाक सामान्ये अव्ययक प्रयोग होइछ ।

स्वार्थक शब्द– स्वार्थक शब्दावलीसँ तात्पर्य्य एहन शब्द समूहसँ अछि जकर विशिष्ट

अर्थ यथावत् बनल रहैछ मुदा ओहि विशिष्ट अर्थसँ सम्बद्ध सूक्ष्म वा अल्प परिवर्तित अर्थक द्योतन स्वार्थिक प्रत्ययक योगसँ होइछ ।

1. एहन शब्दमे किछु तँ संज्ञाक लघु, दीर्घ आ दीर्घतम रूप थिक यथा– आँचर-अँचरा-अँचरबा, कंगन-कंगना-कगनमा, चीरक-चिरक्का, उतारन-उतरना, मुनरी-मुनरका इत्यादि ।

2. किछु स्वार्थिक शब्द समूहमे पैघत्व ओ लघुत्वक भिन्नता देखल जाइछ, यथा–

बूटा-बुट्टी, कंगन-कंगनी, ककहा-ककही, कड़हा-कड़ही, लंगोटा-लंगोटी, पेटार-पेटारी, गुदरा-गुदरी, चेथरा-चेथरी, हारा-हारी, फुटका-फुटकी, कतरना-कतरनी, मोहरा-मोहरी, बुनका-बुनकी, पाग-पगड़ी, गमछा-गमछी, लंगोटा-लंगोटी, कच्छा-कच्छी, घघरा-घघरी, बेसर-बेसरि, बुलाक-बुलाकी, बड़हरा-बड़हरी, ककबा-ककबी, खोपा-खोपी, पतौरा-पतौरी, खिलबट्टा-खिलबट्टी, इत्यादि ।

3. किछु स्वार्थिक शब्दमे आधिक्य अथवा अल्पत्वक बोध होइछ यथा पीयर-पिरौंछ, कारी-करिछाह, लाल-ललौन, इत्यादि ।

पर्यायवाची शब्द– एकहि अर्थक द्योतक भिन्न शब्दकेँ परस्पर पर्यायवाची कहल जाइछ– यद्यपि सारत: समानार्थी होइतहुँ स्वतंत्र सत्तासँ युक्त प्रत्येक शब्द किञ्चित भिन्न स्वरूपक अर्थक द्योतक होइते अछि । तेँ सामान्यत: एके शब्द भेदवला दू अथवा दू सँ अधिक शब्द जकर सामान्य अर्थ कमसँ कम एकटा मुख्य विवक्षासँ युक्त हो, पर्याय कहल जाइछ ।[9]

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे पर्यायवाची शब्द समूहक अनेक उदाहरण भेटैछ यथा– अतर-फुलेल, पाट-अर्ज, गफ-गस्सल, कैंची-कतरनी, चेफड़ी-पेओन-चिप्पी, सञ्जाफ-मगजी, चौपेतब-तहिआएब, लगनौती-बियहुती, रुमाल-हथपोछना, बण्डी-सदरी, तौक-बजबा, बोर-झुनकी इत्यादि ।

वेशभूषा प्रसाधन शब्दावलीमे ई प्रवृत्ति देखल जाइछ जे जे पर्याय क्रमश: अप्रचलित भऽ जाइछ से लोप भऽ जाइछ । एहि क्रममे पाट, फुलेल, गस्सल, कतरनी, मगजी, हथपोछना, सदरी, बजबा, झुनकी आदि लोपक प्रक्रियामे अछि । चौपेतब, क्रियापद तह लगयबाक क्रियापदक द्वारा विस्थापित देखि पड़ैछ ।

युग्म-शब्द– मैथिलीमे युग्म नामपर **दीनबन्धुझा** विचार कयने छथि ।[10] वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु विशिष्ट युग्म शब्द दृष्टिगोचर होइछ यथा– नूआ-फट्टा, लत्ता-पत्ता, लत्ता-लुत्ती, गहना-गुड़िया, फीटफाट, सीटसाट, जिट-जाट, तेल-फुलेल, सिङ्गार-पटार, कपड़ालत्ता, नूआवस्तर, ओढ़ना-पहिरना, पहिराबा-ओढ़ाबा, तेल-कूर, सेली-टोपी, गुदरी-पुरान, फाटल-पुरान, फेरन-फारन, फेरन-उतारन, आबा-काबा, सूति

-पाति, मोटरी-गेठरी, मोटरी-चोटरी, चटक-मटक, तड़क-भड़क, फुदना-फुदनी, काट-छाँट, गुदरी-चेथरी, चित्तिर-बित्तिर, सियाइ-फड़ाइ, साँख-सुहेली, भोजन-छाजन, भोजन-साजन, सिखिया-बुनिया, चाटी-पाटी इत्यादि ।

एहि उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे दूटामेसँ एकटा सार्थक, दोसर निरर्थक शब्दक समूह सहचर रूपमे प्रयुक्त भऽ समाहार बोधक अर्थक प्रतिपादन करैछ । एही शब्द समूहकेँ युग्म शब्द कहल गेल अछि ।

एहि युग्म शब्दक प्रकृति विश्लेषणसँ स्पष्ट होइछ जे–

(क) किछु युग्म शब्दमे समानार्थक बा निकट अर्थक दूटा शब्द दृष्टिगोचर होइछ यथा– ओछाओन-बिछाओन, फुदना-फुदनी, नूआ-वस्त्र, मोटरी-गेठरी, तेल-फुलेल, कपड़ा-लत्ता, फेरन-उतारन इत्यादि ।

(ख) किछु युग्म शब्दमे उत्तर खण्ड निरर्थक वा अर्थहीन प्रकृतिक होइछ आ पूर्वपदक अर्थक समाहारबोधक अर्थ निष्पन्न करैछ यथा ऐहब-सूहब, नूआ-फट्टा, फीट-फाट, सीट-साट, जिट-जाट, लत्ता-लुत्ती, तेल-कूर इत्यादि ।

(ग) किछु युग्म शब्दमे पूर्वखण्ड निरर्थक होइछ यथा– सेली-टोपी इत्यादि ।

(घ) दूनू सार्थक अवयववला युग्म शब्दमे एक अवयवक निकट अर्थवला दोसर अवयवक संयोगसँ द्वन्द्व सामासिक पदक रूप बनैछ । यथा–

सिङ्गार आ पटार - सिङ्गार-पटार कपड़ा आ लत्ता - कपड़ा-लत्ता
गुदरी आ पुरान - गुदरी-पुरान गुदरी आ चेथरी - गुदरी-चेथरी
ओढ़ना आ पहिरना - ओढ़ना-पहिरना चटक आ मटक - चटक-मटक
फाटल आ पुरान - फाटल-पुरान काट आ छाँट - काट-छाँट
आबा आ काबा - आबा-काबा पहिराबा आ ओढ़ाबा - पहिराबा-ओढ़ाबा
सूति आ पाति - सूति-पाति मोटरी आ गेठरी - मोटरी-गेठरी
फुदना आ फुदनी - फुदना-फुदनी

(घ) द्वन्द्व सामासिक पदमे जे खण्ड सम्प्रति निरर्थक दृष्टिगोचर होइछ से वस्तुतः कोनो सार्थक शब्दक विभ्रष्ट स्वरूप अछि जकर अर्थ सम्प्रति लुप्त भऽ गेल अछि यथा–

तेल-कूर युग्म शब्दमे कूर शब्द धानक अर्थद्योतक छल ।[11] सम्प्रति तेल-कूर शब्द तेल आ चाउरक चिक्कससँ निर्मित उद्वर्त्तनादिक अर्थबोधक अछि । चित्तिर-बित्तिर शब्द चित्र-विचित्रसँ निष्पन्न अनेक रंगक समाहारक बोधक अछि ।

(ङ) द्वन्द्व सामासिक पदक निर्माणमे अनर्थक द्वितीय खण्डक निर्माण सामान्यतः पूर्वपद व्यञ्जन रहलापर त वर्णक संस्थापनसँ होइत दृष्टिगोचर होइछ यथा– कपड़ा-तपड़ा, ओढ़ना-तोढ़ना, फुदना-तुदना ।

(च) किछु पदमे प्रथम व्यञ्जन इकारान्त रहलापर द्वितीय पदक प्रथम व्यञ्जन पूर्वपदेक रहैछ मुदा आकारान्त भऽ जाइछ यथा– सीट-साट, जिट-जाट फीट-फाट इत्यादि । मुदा एहि प्रकारक द्वितीय पद समस्त प्रथम पदक हेतु नहि दृष्टिगोचर होइछ ।[12]

शब्द विस्थापन ओ संस्थापन– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्दक विस्थापन ओ संस्थापनक गति अत्यन्त तीव्र रहल अछि । एहिमे अनेक परम्परागत ओ प्राचीन शब्द क्रमशः नवागत शब्दसँ संक्रमित होइत विलोपनक स्थितिमे अबैत गेल अछि । नवागत शब्द किछु दिन धरि तँ पर्यायक रूपमे प्रचलित रहैछ मुदा पश्चात् क्रमशः अप्रचलित होइत होइत बहिष्कृत भऽ जाइछ आ नवागत शब्द ओहि शब्दक स्थान-ग्रहण कऽ लैछ । शब्दक विस्थापन ओ संस्थापनक ई प्रक्रिया आदिकालेसँ चलैत आबि रहल अछि आ एहि क्रममे अनेक शब्द विस्मृत भऽ गेल अछि आ ओकर द्योतक जे शब्द भेटैत अछि तकर परम्परागत शब्द साम्प्रतिक भाषामे जीवित नहि देखि पड़ैछ । एकर कतिपय उदाहरण वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे देखि पड़ैछ यथा– **फुलेल** शब्द फूलक सारसँ निर्मित प्रसाधन विशेषक हेतु पारम्परिक शब्द छल । क्रमशः ई शब्द इत्र (फा०) **अतर** द्वारा विस्थापित भऽ गेल । आधुनिक युगमे अतरो शब्द सेंट (अं.) द्वारा निस्थापित भेल जा रहल अछि । एहि तरहेँ सेंट शब्दक संस्थापन ओ अतर फुलेलक विस्मृति दृष्टिगोचर होइछ । एहि प्रकारक प्रक्रिया आनो कतोक शब्दक संग देखल जाइछ । अंगवस्त्रक हेतु **अङरखा** शब्दक प्रचलन छल । क्रमशः अङरखाक विशिष्ट प्रभेदक प्रचलन बन्द भऽ गेने ओ ओकरा हेतु **कमीज, कुर्ता** आदि अङ्गवस्त्रक आबि गेने ई शब्दो क्रमशः विस्थापित ओ विस्मृत भऽ गेल अछि । एहिना **गमछा** शब्द **तौलिया** द्वारा, **चद्दरि** शब्द **तौनी** द्वारा, **पनही** शब्द **जुत्ता** द्वारा, **पुतली** ओ **घघरी स्कर्ट** द्वारा, **आङी** शब्द **ब्लाउज** द्वारा, **माकरी, करी** आदि **ऐरिंग** द्वारा, **ढोप** शब्द **टॉप्स** द्वारा **गेरुआ** शब्द **तकिया** द्वारा, **गोलगला** शब्द **गंजी-हाफ** द्वारा, **डोर, डोरा-नारा** आदि शब्द **फीता** द्वारा तथा **फीता** शब्द **रीबन** द्वारा, **चातर** शब्द **मोलामा** ओ **कलइ** द्वारा, **चोआ-चानन** शब्द **स्नो-पौडर** द्वारा, **ठोररङ्गा** शब्द **लिपिस्टिक** द्वारा विस्थापित देखि पड़ैछ । नव फैशनक आगमनक कारण परेस, लोहा, टिनोपाल, लिपस्टिक, हैट, टाइ, कोट, कफ, बाब्ड हेयर, ब्वायकट, आइब्रोपेन्सिल, पार्लर, नेलकटर आदि शब्द संस्थापित होयबाक प्रक्रियामे अछि । दोसर दिस ढट्ठा, ढेका, नवाब, मिस्सी, गोदना, खोधा आदि शब्दक सर्वथा विस्थापन भऽ गेल अछि ।

वैकल्पिक रूप ओ मानकीकरण–

एके शब्दक बहुरूप उच्चारण कोनो भाषाक शाश्वत प्रवृत्ति थिक । एहीपर विचार

करैत महाभाष्यकार पतञ्जलि कहने छलाह जे **भूयांसोऽपशब्दा: अल्पीयांस: शब्दा: एकैकस्याहि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंसा: तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी, गोणी, गोता गोपोतलिकेत्येवमानवयोऽ पभ्रंसा:** ।[13] एहिमे **शब्दसँ** महाभाष्यकारक तात्पर्य **पाणिनीय सिद्ध शब्द** छल आ **अपशब्दसँ** तात्पर्य्य अपाणिनीय लोकोच्चरित असाधु छल ।

पतञ्जलि भाषामे उच्चरित एहन वैकल्पिक शब्द स्वरूपकेँ देखने छलाह । एहन शब्द स्वरूपक संख्या बहुत होइत छैक आ पतञ्जलि एहि समस्याक जाहि स्वरूपक चित्रण कयलनि ताही रूपमे ई समस्या एखनहुँ वर्त्तमान अछि आ भविष्योमे जीवन्त भाषाक शब्दमे रहबे करत ।

साधारणत: एकहि अर्थक द्योतक एकटा सामान्य शब्दक ध्वन्यन्तरसँ युक्त विभिन्न प्रकारक उच्चारण देखल जाइछ । एहन उच्चारण वैभिन्यसँ प्रभावित शब्द समूहकेँ **वैकल्पिक शब्द** कहब उचित । एके शब्द वर्त्तनी भेदसँ सेहो लिखित भाषामे वैकल्पिक स्वरूपक दृष्टिगोचर होइछ ।

वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्दक वैकल्पिक रूपक बाहुल्य अछि । ई वैकल्पिक रूप सभ वक्ता, श्रोता ओ लेखकक आधारपर दुइ कोटिमे विभक्त कयल जा सकैछ– (क) उच्चारण भेदसँ प्रभावित (ख) वर्तनीभेदसँ प्रभावित ।

उच्चारण भेदसँ प्रभावित–

1. अल्पप्राण-महाप्राणक विकल्प जेना– पेँच-फेँच, जम्पर-जम्फर, गोप-गोफ, जुल्फी-झुल्फी ।
2. सानुनासिक निरनुनासिकक विकल्प जेना- कगना-कङ्ना ।
3. ढ़ तथा स्वरभक्तियुक्त ड़ह ध्वनिक विकल्प जेना– कोढ़ा-कोड़हा,
4. ङह, म्ह, ल्ह, न्ह व्यञ्जनक यथावत् तथा प्रकृतस्वरूपक विकल्प जेना–
   कङ्घी-कङही, घम्हौरीदाना-घमहौरीदाना, सिङ्हारी-सिङहारी
5. र तथा ल ध्वनिक विकल्प जेना- राकेट-लाकेट ।
6. र तथा ड़ ध्वनिक विकल्प जेना– फाँर-फाँड़, घोकरी-घोकड़ी, झोरा-झोड़ा, कालड़-कालर, सिकरी-सिकड़ी, टार-टाड़, चूरी-चूड़ी, चुड़िला-चुरिला, कारा-काड़ा, छारा-छाड़ा, गुदरी-गुदड़ी, चेथरी-चेथड़ी ।
7. र तथा ड़ उभयवर्णयुत शब्दक विकल्प जेना– केशठरड़ा-केशठरा-केशठड़ड़ा-केशठड़रा-केशठड़ा । हरिड़ा-हरिरा-हड़िरा-हड़िड़ा, तुरौड़ा-तुड़ौरा-तुड़ौरा तुरौरा ।
8. व्यंजनद्वित्वजन्य विकल्प जेना गजी-गज्जी, भुजबन्न-भुजबन, कोचबन्न-कोचबन ।
9. बलाघात जन्य विकल्प-आसीन-आसतीन, कसीदा-कसिद्दा, बूटा-बुट्टा, चूनन-चुन्नन, आस्कोट-आसकोट, अस्तर-असतर, जूता-जुत्ता ।

वर्त्तनी भेदसँ प्रभावित–

1. **अइ-ऐ** तथा **अउ-औ** क विकल्प जेना-अऊँठीअएब-औंठी, तुरपइ-तुरपै, पैबन्द-पएबन्द, तहिआयब-तहिऐब, पथरौटी-पटरउटी, कजरौटी-कजरउटी, पयजामा-पैजामा-पएजामा, पएताबा-पैताबा-पयताबा ।
2. अए-ऐ, आए-आय, अओ-औ, आओ-आव केर विकल्प जेना– मरौत-मरओत, तौक-तओक, बाओटी-बावटी, रुपौठी-रुपओठी, तिसिऔटा-तिसिअओटा ।
3. **ई** ध्वनिक अनुवर्त्ती आ ध्वनिक विकल्प जेना– झिमझिमिआ-झिम झिमिआँ-झिमझिमियाँ, जमुनिआ-जमुनिआँ-जमुनियाँ, लहसुनिआ-लहसुनिआँ-लहसुनियाँ तेमनिआ-तेमनिआँ-तेमनियाँ । सौतिनिआ-सौतिनिआँ- सौतिनियाँ ।
4. पञ्चमवर्ण संयोग तथा अनुस्वारक विकल्प, जेना रंग-रङ्ग, लौंग-लौङ्ग ।

अर्थ-परिवर्त्तन– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे बहुतो शब्दक मूल अर्थमे परिवर्त्तन भऽ गेल अछि । किछु शब्दक मूल अर्थमे सम्प्रति विस्तार भऽ गेल अछि, किछु शब्दक अर्थ मूल अर्थसँ किञ्चित संकुचित अर्थमे प्रयुक्त होमय लागल अछि तथा किछु शब्दक अर्थ मूल अर्थसँ सर्वथा भिन्न भऽ गेल अछि । एहि तरहेँ वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थपरिवर्तनक विभिन्न दिशा अर्थविस्तार, अर्थसंकोच ओ अर्थादेशक स्थिति दृष्टिगोचर होइछ ।

अर्थ विस्तार– वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थ विस्तारक अत्यल्प स्थिति देखि पड़ैछ । एकर एकटा विशिष्ट उदाहरण तेल शब्दमे भेटैछ । पूर्वमे तिलक रसकेँ तेल कहल जाइत छल मुदा सम्प्रति कोनो तेलहनक रसकेँ तेल कहल जाइत अछि । जेना **कडूतेल, नारियर तेल, अमला तेल, गमकौआ तेल** इत्यादि । एहि तरहेँ तेल शब्दमे अर्थ-विस्तार देखि पड़ैछ ।

अर्थ विस्तारक दोसर उदाहरण वेशभूषा प्रसाधन शब्दावलीमे **अलबर** (अं०अल्बर्ट) भेटैछ । ई व्यक्तिविशेषक केश-विन्यासक विशिष्ट प्रक्रिया छल जाहिमे केशक अग्रभागक लटकेँ संकुचित कऽ लेल जाइत छल । सम्प्रति कोनो व्यक्तिक अग्रभागक संकुचित लटकेँ अलबर कहल जाइछ । नारीमात्रमे एहि केशविन्यासक प्रसारसँ एकर व्यक्तिगत स्वरूप सामूहिक स्वरूपमे परिणत भऽ गेने अर्थ-विस्तार भऽ गेल ।

अर्थसंकोच– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थसंकोचक अनेक उदाहरण भेटैछ यथा– पहिने **पर्ण** (सं०) शब्दक अर्थ पात छल । ई शब्द कोनो वृक्ष लताक पातक अर्थमे प्रयुक्त छल मुदा सम्प्रति एहिसँ निष्पन्न **पान** शब्द लता विशेषक ओहि पातक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि जकर व्यवहार मुखप्रसाधनमे होइछ । उत्तरीय (सं०) शब्द उपरिवस्त्रक अर्थमे प्रयुक्त छल, सम्प्रति एहिसँ निष्पन्न **उत्तरी** शब्द श्राद्धकर्ताक ओहि वस्त्रखंडक हेतु प्रयुक्त होइछ जे ओ अग्निदानसँ श्राद्ध धरि यज्ञोपवीतक आकारमे धारण करैछ । **पोशाक** शब्द पहिरबाक कपड़ाक अर्थमे प्रयुक्त छल मुदा सम्प्रति ई विशिष्ट पहिराबाक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । **सोजनी** (फा०) शब्दक अर्थ ओहन कपड़ा छल जाहिपर सूइक मेही काज कयल रहैछ । सम्प्रति ई शब्द फाटल पुरान कपड़ाक अनेक तहकेँ एकत्र कऽ सूची-क्रिया द्वारा बनाओल ओछाओनक कपड़ा अछि । **जुल्फ** (फा०) शब्दक अर्थ छल माथक पैघ केश जे पाछू दिस लटकल रहैछ । मुदा एहिसँ निष्पन्न **जुल्फी** शब्द केवल पुरुषक आगू दिसुक केशक अर्थमे संकुचित ओ परिवर्तित भऽ गेल अछि । **डोर-सिनूर** शब्दमे डोर शब्द केश बन्हबाक डोरा विशेष ओ **सिन्दूर** शब्द लाल रंगक सीथ-प्रसाधनक अर्थद्योतन करैत छल । सम्प्रति ई शब्द कन्याक विवाहमे सासुरसँ पठाओल **डोरसिनूरक** विधिक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि जे अर्थसंकोचक उदाहरण अछि ।

अर्थादेश– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थादेशक अनेक उदाहरण भेटैछ यथा– **जुल्फ** शब्द पाछू दिसुक केशक अर्थमे प्रयुक्त छल मुदा एहिसँ निष्पन्न **जुल्फी** शब्द आब अग्रभागक केशक अर्थनिर्वचन करैछ । **खिराम** (अ०) शब्द शनैःशनैः ओ मस्त चालिमे चलबाक अर्थमे प्रयुक्त छल मुदा सम्प्रति एहिसँ निष्पन्न **खराम** शब्द पैरमे पहिरबाक एकटा काष्ठोपादानक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । **मलमल्लकः** (सं०) शब्द **कौपीनक** अर्थद्योतन करैछ छल मुदा सम्प्रति ई शब्द **मलमल** नामक अत्यन्त पातर वस्त्रविशेषक अर्थ दैत अछि । **सन्खना** शब्द परिधानक अर्थ प्रदान करैत छल मुदा सम्प्रति एकर अर्थ लोप भऽ गेल बुझना जाइछ । ई शब्द केवल भोजन-साजन युग्म शब्दमे भोजनादिक समाहारक अर्थमे जीवन्त दृष्टिगोचर होइछ । **गुटिका** शब्द हारक दाना वा मोतीक अर्थमे प्रयुक्त छल । एहिसँ निष्पन्न **गुड़िया** शब्द आब केवल **गहना-गुड़िया** युग्म शब्दमे गहनाक समाहारक अर्थबोधमे सहायक अछि । **घोणा** शब्द नाकक अर्थमे प्रयुक्त छल । एहिसँ निष्पन्न **घुनस** आब पागक विशिष्ट अवयवक रूपमे प्रयुक्त अछि ।

सन्दर्भ सूची-

1. मिथिला भाषा प्रकाश, श्रीरमानाथझा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, चतुर्थ संस्करण, 1964, पृ. 17
2. मिथिलाभाषा प्रकाश, पृ. 17
3. नाट्यशास्त्र-भरत, 17/3

   त्रिविधं तत्र विज्ञेयं नाट्ययोगे समासतः ।

   समान शब्द विभ्रष्टं देशीमतमथापि वा ॥
4. ओरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट आफ बंगाली लैंग्वेज- डा० सुनीति कुमार चटर्जी, रूपा एण्ड कम्पनी, कलकत्ता- 12, 1975, पृ. 195-197 ।
5. देशीनाममाला- हेमचन्द्र स.आर.पी. रसेल, भाग-1 गोभर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई 1880, 5/41
6. तत्रैव, 1/155
7. तत्रैव, 2/107
8. मैथिली ग्रामर- जी.ए. ग्रियर्सन- रोयाल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण, 1906 ई. पृ. 20-23
9. हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन-डा० बदरीनाथ कपूर, प्रयाग, 1965, पृ. 10
10. मैथिली गद्य संग्रह-तृतीय भाग- सं० रमानाथझा, दरभंगा प्रेस कम्पनी प्रा० लि०, 1959, पृ. 32-36 ।
11. सामा चकेबा अबिहऽ हे, कूर खेतमे बैसिह हे । तथापि

    कलमकूर धानक एकटा प्रकार विशेषक नाम थिक ।
12. ओरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट आफ बंगाली लैंग्वेज- डा० सुनीतिकुमार चटर्जी भाग-1, पृ. 176 तथा भाल्यूम- 111, पृ. 34 ।
13. द व्याकरण महाभाष्य आफ पतञ्जलि, भाल्यूम-1, एफ कीलहार्न, पूना, तृतीय संस्करण 1962, पृ. 2

द्वादश अध्याय

उपसर्ग ओ प्रत्यय विचार

वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्दक साधनमे उपसर्ग ओ प्रत्ययक महत्वपूर्ण स्थान अछि ।

उपसर्ग– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक साधित शब्दावलीमे उपसर्गक स्थिति अत्यन्त अल्पसंख्यक अछि । बहुत कम्मे शब्दमे उपसर्गसँ शब्द निष्पन्न देखल जाइछ । संस्कृतसँ उपगत शब्दमे स्वतः संस्कृतक उपसर्ग चल आयल अछि । फारसी ओ संस्कृतक किछु शब्दमे उपसर्गक स्थिति दृष्टिगोचर होइछ यथा–

(फा०) बे-बेखल (सं०) नि-निमोछिआ

प्रत्यय– वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे प्रत्यय विधान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि । प्रत्यय विधानक स्थिति अत्यन्त विशृंखलित ओ अतिव्याप्त देखि पड़ैछ । बहुसंख्यक कृत् ओ तद्धित प्रत्यय शब्द साधनमे लागल देखि पड़ैछ । किछु प्रत्यय तँ कृदन्त ओ तद्धितान्त दूहू प्रकारक शब्दक निर्माण करैछ । एहन प्रत्ययकेँ उभयनिष्ठ प्रत्यय कहल जा सकैछ ।

उभयनिष्ठ प्रत्यय–

प्रत्यय	कृदन्त	तद्धितान्त
आ	धो + ब = धोआ	सहोदर-सहोदरा (एक प्रकारक गहना)
आइ	सी + ब = सिआइ	नाम-नमाइ, चाकर-चकराइ, मोट-मोटाइ, ऊँच-उँचाइ
	धो + ब = धोआइ	
उआ	छील + ब = छिलुआ	बीछ-बिछुआ (पैरक गहना विशेष)
पीट + ब = पिटुआ		
इआ	कल जोड़ + ब = कलजोड़िया	जुट्टी-जुटिआ, पाढ़ि-पढ़िआ, बिन्दी-बिन्दिआ, खुद्दी-खुदिया
का	चीर + ब = चिरक्का	लाल-ललका

एहि प्रकारक उभयनिष्ठ प्रत्ययक संख्या वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीमे अत्यल्प होइतो ई समस्त प्रत्यय जीवन्त कोटिक अछि ।

कृत् प्रत्यय– वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीमे कृत् प्रत्ययक संख्या तद्धितक अपेक्षा अल्प बुझना जाइछ । शब्दसाधनमे एहि प्रत्यय सभक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । एहि कोटिक किछु प्रत्ययसँ एकेटा साधित शब्द देखि पड़ैछ । किछु प्रत्यय एकाधिक ओ अनेक शब्दक साधनमे सहायक देखि पड़ैछ । एकेटा शब्द निर्माणसँ सम्बद्ध कृत् प्रत्ययकेँ एकल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय ओ अनेक शब्द निर्माणसँ सम्बद्ध कृत् प्रत्ययकेँ बहुल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय कहल जा सकैछ ।

एकल प्रयुक्त कृत प्रत्यय– एहि प्रकृतिक प्रत्यय वेशभूषा प्रसाधनक शब्दावलीमे दुइ गोट देखि पड़ैछ यथा–

क-चीर-ब + क = चीरक बी-काट-ब + बी = कटबी

बहुल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय– अनि– ई प्रत्यय क्रियासँ उत्पन्न अर्थक नामक साधन करैछ यथा– गढ़-ब + अनि – गढ़नि सी-ब + अनि – सीअनि

आ– ई उभयनिष्ठ प्रत्यय थिक तथा कृदन्त ओ तद्धितान्त दूहू प्रकारक शब्द-साधन करैछ । कृत् स्वरूपमे ई धो क्रियापदसँ धोआ विशेषणक निर्माण करैछ ।

आइ– ई उभयनष्ठि प्रत्यय थिक । कृत् स्वरूपमे ई मजदूरी ओ क्रियार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– सी-ब + आइ–सिआइ, धो-ब + आइ–धोआई, फाड़-ब + आइ–फड़ाइ,

आउ– किछु धातुसँ ई हेतु अर्थक शब्दसाधन करैछ यथा–

पहिर-ब + आउ – पहिराउ धर-ब + आउ – धराउ

जड़ब क्रियापदसँ ई युक्तार्थक शब्द बनबैछ यथा– जड़ब + आउ – जड़ाउ

आबा– किछु धातुसँ हेत्वर्थक नामक साधन करैछ यथा–

पहिर-ब + आबा – पहिराबा ओढ़-ब + आबा – ओढ़ाबा

औआ– ई प्रत्यय अनेक धातुसँ विशेषणक निर्माण यथा–

झलक-ब + औआ- झलकौआ धर- ब + औआ- धरौआ

झमक- ब + औआ- झमकौआ पहिर- ब + औआ – पहिरौआ

एकल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय

इअल – ई बिटसँ कयनिहार अर्थक शब्द बनबैछ यथा बिट + इअल- जिटिअल

आत- ई जेवरसँ बहुवचन बनबैछ यथा– जेवर + आत - जेवरात

उती- ई विवाहसँ सम्बन्धार्थक विशेषण बनबैछ यथा– विआह + उती - वियहुती

ऐल- ई प्रत्यय चानीसँ चनैल शब्दक निर्माण करैछ-

चानी (माथक केश विहीन भाग) + ऐल-चनैल

ऐला- ई प्रत्यय झोंटासँ युक्तार्थक नामक निर्माण करैछ यथा– झोंट + ऐला - झोंटैला

ऐली- ई प्रत्यय कानसँ सम्बन्धार्थक नामक साधन करैछ यथा– कान + ऐली - कनैली

औती- ई प्रत्यय लगनसँ सम्बन्धार्थक विशेषणक साधन करैछ यथा– लगन + औती- लगनौती

औसी- ई प्रत्यय कानसँ सम्बन्धार्थक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– कान + औसी - कनौसी

एहि प्रत्ययक मूल उत्तंस शब्द थिक । मुदा सम्प्रति उत्तंस शब्द विकृत भऽ अर्थहीन ओ प्रत्यय स्वरूपक भऽ गेल अछि । यथा– कर्ण- उत्तंस- कनौसी

अंडी- ई प्रत्यय जोलहासँ निर्माणार्थक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– जोलहा + अंडी - जोलहंडी

उली - ई टीकासँ टिकुली शब्दक निर्माणमे सहायक अछि-

गर - ई फारसी प्रत्यय थिक आ सम्बाधार्थक नामक निर्माण करैछ यथा– रफू-रफूगर

चा - ई लहवर्थक नामक निर्माण करैछ यथा– सन्दूक + चा - सुन्दुकचा

छन/छाह - ई प्रत्यय मैलसँ अल्पार्थक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– मैल + छन - मैलछन, मैल + छाह - मैलछाह

ना - ई प्रत्यय आकृतिमूलक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– ढोल-ढोलना

मा - ई प्रत्यय आकृतिमूलक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– पान-पनमा

वर - ई प्रत्यय भाटासँ साम्यसूचक विशेषणक साधन करैछ यथा– भाटा +वर - भटवर

बहुल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय –

आ - (क) ई उभयनिष्ट प्रत्यय तद्धित स्वरूपमे वैकल्पिक शब्दक निर्माण करैछ यथा– बिजौट-बिजौटा,

(ख) सदृशार्थक शब्दक निर्माण करैछ यथा– सहोदर-सहोदरा, गोर-गोरा, चीरक-चिरक्का

(ग) सामासिक शब्द निर्माणमे सेहो एहि प्रत्ययक प्रयोग देखल जाइछ यथा– एक + रंग - एकरंगा

अउ- ई प्रत्यय अनेक शब्दसँ निर्मित अर्थवला शब्दक निर्माण करैछ यथा– जोलहा + अउ - जोलहउ, चमरा-चमरउ

आइ- ई उभयनिष्ठ प्रत्यय थिक । तद्धित स्वरूपमे ई प्रत्यय आयामबोधक शब्दसँ भाववाचक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– नाम-नमाइ, चाकर-चकराइ, ऊँच-ऊँचाई, मोट-मोटाइ

आह- ई प्रत्यय अनेक शब्दसँ किञ्चित अर्थबोधक शब्द बनबैछ यथा– चिक्कन-चिकनाह, मैल-मैलाह

आहि- ई युक्तार्थक प्रत्यय थिक यथा– ढील-ढिलाहि, लीख-लिखाहि ।

ई- ई प्रत्यय किछु शब्दसँ लघ्वर्थक शब्दक निर्माण करैछ यथा– गुदरा-गुदरी, चेथरा-चेथरी, पगड़-पगड़ी, टोप-टोपी, दाग-दागी, बकुच्चा-बकुच्ची, खिलबट्टा-खिलबट्टी, बुलाक-बुलाकी, सुजना-सुजनी, घघरा-घघरी, पतौरा-पतौरी, ढोलना-ढोलनी, चकुठा-चकुठी ।

किछु संज्ञा शब्दसँ ई प्रत्यय रंगसूचक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– कटहर-कटहरी, कुसुम-कुसुमी, फिरोज-फिरोजी, धान-धानी, कथ-कत्थी, गुलाब-गुलाबी, गन्हक-गन्हकी, सरबत-सरबती, सिन्दूर-सिन्दूरी, बदाम-बदामी

किछु शब्दसँ ई सदृशार्थक ओ आकृतिमूलक शब्दक निर्माण करैछ यथा– हलुमान-हलुमानी

किछु शब्दसँ ई प्रत्यय तदनिर्मित अर्थबोधक विशेषण शब्दक साधन करैछ यथा– ऊन-ऊनी, सूत-सूती, रेशम-रेशमी, जोलहा-जोलही ।

किछु शब्दसँ ई भाववाचक संज्ञाक निर्माणमे सहायक दृष्टिगोचर होइछ यथा– दुहदुह-दुहदुही, दपदप-दपदपी

इआ- ई प्रत्यय अनेक संज्ञाशब्दसँ विशेषणक निर्माण करैछ यथा– मुरली-मुरलिया, काँकोड़-ककुरिया, लहरि-लहेरिया, सिलेट-सिलेटिया, सिनूर-सिनुरिया, डोरा-डोरिया, जामुन-जमुनियाँ, कटहर-कटहरिया

किछु शब्दसँ ई व्यवसार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– कपड़ा-कपड़िया ।

किछु शब्दसँ ई आकृतिबोधक संज्ञाक निर्माण करैछ यथा– लहसुन-लहसुनिआ, बिजुली-बिजुलिया, बीछ-बिछिआ, खुद्दी-खुदिया, सौतिन-सौतिनिआ ।

संज्ञाक विभिन्न रूपक निर्माणमे सेहो ई प्रत्यय दृष्टिगोचर होइछ यथा– झब्बा-झबिआ, मिस्सी-मिसिया, बाला-बलिया, माठा-मठिया, चूनर-चुनरिया, नथ-नथिया, गोरा-गोरिया, पीढ़ी-पिढ़िया, कच्छा-कछिया, पाग-पगिया, माठा-मठिया ।

अनेक विशेषणसँ विशेषणक निर्माणमे सेहो ई सहायक होइछ यथा– काँच-कचिया, पक्का-पकिया, मोट-मोटिआ ।

किछु संज्ञा शब्दसँ ई सम्बन्धसूचक शब्दक निर्माण करैछ यथा– आँध-अँधिया, काछ-कछिया, कहाउत-कहौतिया ।

औआ- वेश भूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहि प्रत्ययसँ दूइगोट संज्ञासँ विशेषणक साधन दृष्टिगोचर होइछ यथा– कलप-कलपौआ, तह-तहौआ ।

औटा- काजरसँ ई प्रत्यय रखबाक पात्र अर्थबोधक शब्दक साधन करैछ– काजर-कजरौटा

तीसीसँ ई प्रत्ययसँ निर्मित अर्थबोधक शब्दक निर्माण करैछ– तीसी-तिसिऔटा

किछु शब्दसँ ई पात्रक सूचक शब्दक निर्माण करैछ– तर-तरौटा, उपर-उपरौटा ।

का- ई प्रत्यय गुणवाचक विशेषणसँ निर्देशात्मक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– कारी + का-करिक्का, लाल-ललका, पीयर-पियरका, हरियर-हरियरका, पैंच-पैंचका, छोट-छोटका ।

दार- ई प्रत्यय अनेक शब्दसँ युक्तार्थक विशेषणक निर्माण करैछ, यथा– खलता-खलतेदार, पहल-पहलदार, झालर-झालरदार, चूड़ी-चूड़ीदार, फैसन-फैसनदार । ई फारसी प्रत्यय थिक ।

बा- ई प्रत्यय संज्ञाक गुरुतम रूपक निर्माण करैछ । यथा- आँचर-अँचरबा ।

किछु शब्दसँ ई आकृतिमूलक विशेषणक निर्माण करैछ यथा– खाजा-खजबा ।

हा - ई प्रत्यय झोंटसँ युक्तार्थक विशेषणक निर्माण करैछ । झोंट-झोंटहा ।

वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु शब्द साधनमे एकाधिक प्रत्ययक योग देखि पड़ैछ यथा– ओढ़ + ना + ई = ओढ़नी (कन्याक उत्तरीय) । कारी + इआ + का + ई = करियक्की । हरियर + का + ई = हरियरकी । घोघ + ट + आही = घोघटाही । कच्छा + औटा + ई = कछौटी । चीर क + आ = चिरक्का । जंगल + आत + ई = जंगलाती ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे प्रत्यय विधानक स्थिति जटिल अछि । प्रस्तुत अध्ययनसँ एहि विधानक स्पर्शोटा संभव भऽ सकल अछि ।

एकरा ने पूर्ण कहल जा सकैछ, ने अन्तिमे, ने निर्दुष्टे । वस्तुतः एहिमे अनेक वैचारिक बिन्दु सभ छैक यथा प्रत्ययक मूल, ऐतिहासिक विकासक्रम, शब्द साधन क्षमता इत्यादि । तेँ प्रत्यय विधानक सूक्ष्म भाषातात्विक विश्लेषणसँ एकर वास्तविक स्थितिक उद्घाटन भऽ सकैछ ।

तथापि वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे प्रयुक्त प्रत्ययमे किछु विशिष्ट भाषातात्त्विक चमत्कृतिक दर्शन होइछ । उदाहरण हेतु **ओढ़-ब** क्रियापदसँ ना प्रत्यय लगला उत्तर **ओढ़ना** शब्द बनैछ जे शरीरक आच्छादन करऽवला वस्त्रविशेषक हेतु अर्थनिर्वचन करैछ । एहि शब्दमे ई प्रत्यय लागि गेला उत्तर एकर अर्थमे विशिष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होइछ । ओढ़नी शब्दमे लघ्वर्थक ने स्त्रीप्रत्यययुक्त सदृश अर्थबोध करबैछ अपितु ई कन्याक उत्तरीयक विशिष्ट ओ रूढ़ अर्थक द्योतन करैछ । अधकट्टी, अध बहिआँ, खरबहिआँ, नीमास्तीन आदि शब्दमे **अध, खर, नीम** आदि शब्द प्रत्ययेक सदृश प्रयुक्त देखि पड़ैछ यद्यपि ई शब्द सभ यौगिक प्रकृतिक थिक आ एकरा सभक पूर्वार्द्ध अर्थयुक्त अछि । **पीअर** शब्दसँ **पिअरका** आ **पीरी** दूटा शब्द क्रमशः का तथा ई प्रत्ययक योगसँ निर्देशात्मक ओ भावार्थक विशेषण ओ संज्ञा बनैछ । एहिमे **पीअरसँ पीरीक** निर्माणमे मध्यवर्ती **अ** वर्णक लोप प्रत्यय लगलापर भऽ गेल देखि पड़ैछ । किछु स्वार्थक प्रत्यय विशिष्ट प्रकृतिक देखि पड़ैछ जे शब्दमे किञ्चितताक बोध करयबाक अर्थान्तर उपस्थित करैछ यथा– **औंछ, छओन, छौंह, छौंह** आदि प्रत्यय । ई प्रत्यय सभ सामान्यतः विभिन्न रँगक संग आबि ओकर अर्थमे परिवर्तन करैत दृष्टिगोचर होइछ यथा– **पीयर-पियरौंछ, पिरौंछ लाल-ललछौंह, ललछौंह, ललछौन** ।

वेशभूषा प्रसाधन शब्दावलीमे सामान्यतः मैथिली प्रत्यय मैथिली तद्भव शब्दक संग लागल देखि पड़ैछ । संस्कृत, फारसी ओ अंग्रेजी प्रत्ययक अस्तित्वक सेहो एहि शब्दक संग दोसर भाषाक प्रत्ययोक उदाहरण देखि पड़ैछ यथा– फैसन (अं०)मे इआ प्रत्ययसँ **फैसनिआ** तथा एबुल (अं०) सँ **फैसनेबुल** शब्द बनैत देखि पड़ैछ । एहिना फारसीक दार प्रत्यय कोर (अं०) शब्दक संग **कोरदार** शब्दक निर्माण करैछ । गर प्रत्यय **पीअरसँ** अल्पार्थक **पियरगर** शब्दक निर्माण करैछ । किछु शब्द यौगिक प्रकृतिक दृष्टिगोचर होइछ मुदा ओकर प्रथम अवयवक अर्थलोप भऽ जयबाक कारणेँ प्रथम अवयव उपसर्ग स्वरूपक दृष्टिगोचर होइछ यथा– **भटरंग / भठरंगमे भट** वा **भठ** उपसर्ग बुझना जाइछ यद्यपि ई **भ्रष्ट** शब्दक तद्भव रूप थिक । प्रत्यय विधान द्वारा शब्दक रूप ओ अर्थमे क्रमिक परिवर्तन प्रत्ययक योगसँ होइत चलैछ आ एकेटा मूल शब्दसँ विभिन्न अर्थवला शब्दसमूहक क्रमशः निर्माण होइत चलैछ । एके शब्दमे विभिन्न प्रत्यय लगलासँ अर्थमे कतोक काल विशिष्ट परिवर्तन सेहो देखि पड़ैछ यथा **कंठ** शब्दमे **आ** प्रत्ययक योगसँ **कंठा** (कंठक गहना विशेष) बनैछ । मुदा ई प्रत्ययक योगसँ कंठी (तुलसीक डाँटक माला विशेष) बनैछ ।

बन्द- बन्न-बन प्रत्यय अनेक शब्दक संग शब्द निर्माण करैत देखि पड़ैछ यथा बाजूबन्द, कमरबन्द, चोलीबन्द आदि। ई प्रत्यय बन्ध शब्दसँ उद्भूत बुझना जाइछ। किछु शब्दमे इहो स्थिति देखि पड़ैछ जे बिना प्रत्ययक योगहिसँ ओकर अर्थमे परिवर्तन भऽ जाइछ यथा बाजू (बाँहि, बाँहिक गहना), पहुँची (पहुँची, पहुँचीक गहना विशेष)।

एहि तरहेँ उपसर्ग ओ प्रत्यय विधान विशिष्ट भाषातात्विक सामग्रीसँ परिपूर्ण देखि पड़ैछ।

एहि तरहेँ वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक व्याकरण ओ भाषातात्विक विचार पर दृष्टिपात कयलासँ एहि शब्दावलीक अनेक विशिष्टता दृष्टिगोचर होइछ। खास कऽ एहिमे अरबी फारसीक शब्दावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ। अतिशयताबोधक अनुगामी शब्द, युग्म शब्द, शब्द विस्थापन ओ संस्थापनक निरन्तरगामी प्रक्रियाक संगहि एहि शब्दावलीमे प्रयुक्त विधान अत्यन्त रोचक प्रकृतिक अछि।

●

उपसंहार

मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि।

भारतीय वेशभूषाप्रसाधन परम्पराक उल्लेख विभिन्न प्राचीन वाङ्मयमे भेटैत अछि। एकर अध्ययन अनुशीलनसँ भारतीय वेशभूषाप्रसाधन-विन्यासमे प्रयुक्त शब्दावलीक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक दर्शन होइत अछि। भारतीय वेशभूषाप्रसाधन विन्यासमे निरन्तर विकासशीलताक प्रवृत्ति आदिकालहिसँ रहल अछि। भारतीय जीवन पद्धतिमे सभ्यता ओ सुसंस्कृतिक सोपानक रूपमे वेशभूषाप्रसाधनक उपयोग होइत रहल ओ तकर शब्दावलीक प्रादुर्भाव होइत रहल।

मैथिल वेशभूषाप्रसाधन-विन्यासक उल्लेख विविध स्मृति ओ निबन्ध ग्रन्थादिमे भेटैत अछि। मैथिल वेशभूषाप्रसाधन यद्यपि भारतीय वेशभूषा प्रसाधन परम्पराक अनुसरणपरक रहल अछि तथापि एकर किछु खास विशिष्टता रहलैक अछि आ तदनुरूपे एहिमे शब्द निर्माणक स्थिति सेहो देखि पड़ैछ। मिथिलाक भौगोलिक पर्यावरण एवं ऐतिहासिक, राजनीतिक ओ सामाजिक परिस्थितिक प्रभावसँ अन्तर प्रांतीय ओ अन्तर्देशीय सम्पर्कसँ, औद्योगिक विकास, जनरुचि, नित्य नव वैज्ञानिक आविष्कारक कारणेँ नव फैसनक चलनि ओ पुरान परिपाटीक उठाव आदिक कारणेँ मिथिलाक वेशभूषा प्रसाधन-विन्यासक स्वरूप ओ तकर शब्दावलीमे परिवर्तनक दीर्घ आयाम दृष्टिगोचर होइछ जकर रिक्थ आधुनिक भाषामे प्रचलित तौलिया, फीता, फतुही, लबादा, आबा-काबा, सलवार, सदरी, कोट, पैंट, टाइ, सर्ट, बूसट, पैजामा, पैताबा, समला, सज्जाफ, पेओन, तालावर्ज, रजाइ, जेबी, जुल्फी, साफी, नगीना, पर्दा, आयना, जर्दा, पर्दा, चोङ्गा, सुजनी, रफू, मिस्सी, घघरी, ओढ़ना, दोलाइ, लेबास, साबुन, रेशम, कफन, नकाब, कैंची, कुर्ता, खाकी, गंजी, इत्यादि शब्दमे देखल जा सकैछ। स्पष्टे अछि जे मैथिल रुचिपर युगानुकूल प्रभाव पड़ैत रहल अछि। वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे परिवर्तन होइत रहल अछि। पुरान शब्दक अप्रयोग ओ नवीन शब्दक आगमन-निर्माण होइत रहल अछि।

एहि सन्दर्भमे ई स्पष्ट होइछ जे सैकड़ो वर्षक मुसलमानी शासनकालमे

मुसलमानलोकनिक सभ्यता-संस्कृति, ओढ़ावा-पहिराबा, आभूषण ओ प्रसाधनक व्यापक प्रभाव मैथिल संस्कृतिपर पड़ल आ परिणामस्वरूप वेशभूषाप्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध शब्दावली अरबी ओ फारसी स्रोतसँ आबि-आबि मैथिलीमे खपैत-पचैत रहल । क्रमशः पाश्चात्य सभ्यताक सम्पर्क ओ अंग्रेजी शासनक आगमन ओ आधुनिक वैज्ञानिक उत्पादक प्रचलनसँ अंग्रेजीक शब्दावलीक सेहो व्यापक प्रभाव मैथिलीक वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीपर पड़ल अछि ।

मैथिली साहित्यक आदिकालेसँ साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग होइत रहल अछि । आदिकालीन मैथिली ग्रन्थ **चर्यापद, दोहाकोश** आदिमे प्रसंगात् वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक उल्लेख होइत रहल अछि । मैथिली साहित्यक आदि गद्यग्रन्थकार **कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर** ग्रन्थमे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रचुर निवेश भेटैत अछि । तथापि एहिमे निविष्ट शब्दावलीमे कतोक शब्दलोपक स्थितिमे कतोक ध्वनिपरिवर्तनक स्थितिमे तथा कतोक संक्रमणक विभिन्न स्थितिमे देखि पड़ैछ । यैह कारण अछि जे **वर्णरत्नाकर**क बहुतो वेशभूषा प्रसाधन व्यंजक शब्दक वास्तविक अर्थक संज्ञान असम्भव वा कठिन भऽ गेल ।

मध्यकालीन अवहट्ठ रचना ओ पदावली तथा नाट्यसाहित्यमे वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक पुष्कल निवेश तँ भेल अछि मुदा शब्दावली प्रयोगमे मध्यकालीन रचनाकारलोकनि परिनिष्ठित संस्कृते शब्दावलीक प्रयोगमे तत्पर दृष्टिगोचर होइत छथि । लोकजीवनक देशज ओ तद्भव शब्दावली हिनकालोकनिक रचनामे अपवारिते देखि पड़ैछ । एते धरि जे साड़ी धोती सन सामान्य वस्तुहुक हेतु चीर, अम्बर, वासादिकेक प्रयोग ई लोकनि करैत देखि पड़ैत छथि । एहि कालक शृंगार रस प्रयोग बहुल काव्य ओ नाटकमे वेशभूषाप्रसाधन शब्दावलीक बहुल उल्लेख होइतो शास्त्रीयताक प्रति कवि नाटककार लोकनिक उन्मुखताक कारणेँ एहि कालक शब्दावली कोशग्रन्थहिसँ बीछल चूनल बुझना जाइछ । देसिल वयनाक प्रयोग करितो वेशभूषाप्रसाधन विषयक अभिव्यंजनामे संस्कृत साहित्य, संस्कृत कोषहिपर विशेष अवलम्बन देखि पड़ैछ ।

आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा यथा काव्य-नाटक-उपन्यास-कथा-निबन्ध लोकसाहित्य आदिमे अवश्य वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक लोकरूपकेँ परिगृहीत कयल गेलैक अछि । खासकऽ पात्रक चरित्र, रूप, गुण, व्यक्तित्व, स्थिति आदिक चित्रणक हेतु वेशभूषाप्रसाधन विन्यासक शब्दावलीक बहुल प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ ।

आधुनिक मैथिली भाषामे वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक स्रोत अछि पुरुष ओ नारी वस्त्रक शब्दावली, विभिन्न अवयवमे पहिरबायोग्य आभूषणक शब्दावली तथा विभिन्न अंगमे परिष्कारक हेतु प्रयुक्त अवलेहादिक शब्दावली । एकरा सभक निर्माण

प्रक्रियासँ सम्बद्ध शब्दावलीकेँ ग्रन्थक सीमासँ बाहरे राखल गेल अछि केवल उपभोगक शब्दावलीटाकेँ एहिमे समेटल गेल अछि ।

साहित्यसँ हटि लोकभाषामे एतद्विषयक शब्दावलीक प्राचुर्यक दर्शन होइत अछि । एहि वर्गक एक-एक शब्द अपन मौलिक अर्थक द्योतन करबामे समर्थ अछि । किछु अर्थक द्योतनक हेतु एकसँ अधिक पर्याय प्रचलित अछि तँ कतोक अर्थक द्योतनक हेतु एक-एक गोट मात्र शब्द भेटैत अछि । भाषाक परिवर्तनशीलताक जीवन्त प्रमाणक रूपमे आलोच्य शब्दावलीक अध्ययन महत्त्वपूर्ण तथ्य उपस्थापित करैत अछि । भाषा प्रयोगमे देखल गेल अछि जे बहुतो आभूषण प्रभेद, वस्त्र-प्रकार, प्रसाधन-विन्यास लोकरुचिसँ बहिष्कृत भऽ गेल । अतः तद्द्योतक शब्दक सामान्य प्रयोग नहि रहि गेल अछि । स्वभावतः एहन शब्दक अर्थलोप होइत जा रहल अछि । दोसर दिस बहुतो नव शब्द तत्सम वा तद्भव रूपमे अन्य भाषासँ अबैत जा रहल अछि । इतिहासक एहन परिस्थितिमे कहियो अरबी, तुर्की, फारसी ओ पोर्तुगीज भाषाक शब्दावली मैथिलीमे अपन स्थान बना लेलक तथा बहुतो एहन विदेशी शब्द अछि जकरा मूल रूपमे चीन्हब कठिन भऽ गेल अछि ।

वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक व्याकरण ओ भाषातात्त्विक विचार कयला उत्तर एहि क्षेत्रक विपुल शब्द सामर्थ्यक ओ ओहिमे होइत भाषावैज्ञानिक प्रक्रिया सबहिक निदर्शन होइत अछि । संगहि एहिसँ अनेक सांस्कृतिक ओ समाजशास्त्रीय पक्षपर सेहो प्रकाश पड़ैछ ।

वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनिपर विचार कयला उत्तर एहिमे ह्रस्वतर स्वर ओ महाप्राण व्यञ्जनक स्थिति देखि पड़ैछ । किछु स्वरध्वनि संयुक्त प्रकृतिक अछि । एहि शब्दावलीमे व्यञ्जनगुच्छ सामान्यतः सवर्गीय देखल गेल अछि । एहि शब्दावलीमे ध्वनिपरिवर्तनक विभिन्न प्रक्रिया देखि पड़ैछ ।

व्युत्पत्तिक दृष्टिऍ जे विचार कयला सन्ताँ वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़ शब्दक स्थिति देखि पड़ैछ । रूढ़ शब्द द्व्यक्षरसँ तथा यौगिक त्र्यक्षरसँ आरम्भ होइछ आ षडक्षर धरि जाइछ । एहि शब्दावलीमे संज्ञाक लघु, गुरु ओ गुरुतम तीनू रूप, सामान्य विशेषण, अतिशयताबोधक अनुगामी विशेषण, क्रियाक विभिन्न रूप, नामधातु, युग्मक शब्द, पर्याय, वैकल्पिक शब्द आदिक स्थिति देखि पड़ैछ । शब्दक विस्थापन ओ संस्थापनक प्रक्रिया तथा अर्थपरिवर्तनक विभिन्न प्रक्रिया अर्थ विस्तार, संकोच आ अर्थादेश आदि सेहो एहि शब्दावलीमे देखि पड़ैछ ।

उद्गमक दृष्टिऍ एहि शब्दावलीमे परम्परागत, देशी तथा विदेशज प्रकृतिक शब्द भेटैछ । अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पोर्तुगीज, आदि शब्द एहि शब्दावलीमे देखि पड़ैछ । जाहिमे अरबी-फारसीक शब्दक बाहुल्य अछि । वेशभूषाप्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीमे

प्रत्यय विधानक स्थिति अत्यन्त व्यापक ओ जटिल अछि। कतोक प्रत्यय एकाधिक शब्दक साधन करैत देखि पड़ैछ तँ कतोक एकेटा मात्र। कतोक प्रत्ययकृत् प्राकृतिक अछि तँ कतोक तद्धित। किछु प्रत्यय उपचनिष्ठ प्रकृतिक सेहो भेटैछ। शब्दमे क्रमशः भिन्न-भिन्न प्रत्ययक आगमनसँ ओकर रूप ओ अर्थमे परिवर्तन होइत देखि पड़ैछ।

मैथिलीक परिभाषिक शब्दसम्पदाक संकलन व्याख्या ओ व्याकरण तथा भाषातात्विक अध्ययन-विश्लेषणक क्षेत्रमे प्रस्तुत प्रबन्धकेँ आंशिक परन्तु उपयोगी प्रयास मानल जा सकैत अछि। एहिसँ मैथिलीक सामान्य शब्द सामर्थ्य तथा परिभाषिक शब्दावली विषयक ज्ञानमे निश्चये अभिवृद्धि भेल अछि। बहुशः अनभिज्ञात तथ्यक अभिज्ञान ओ व्याख्या संभव भऽ सकल अछि जकरा मैथिलीभाषा विषयक ज्ञानक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कहल जा सकैछ।

प्रस्तुत ग्रन्थ मैथिलीक बहुतो प्राचीन शब्दक अर्थोद्घाटन करबामे सहायक भऽ सकैत अछि तेँ एकर शब्दसंग्रह मैथिली शब्दकोषक हेतु सेहो योगदान करबामे समर्थ अछि। मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक इतिहासक अध्ययन, मिथिलाक समाजशास्त्रीय अध्ययनमे प्रस्तुत कृति अवश्ये महत्त्वपूर्ण उपादान सिद्ध भऽ सकैत अछि।

तथापि ई नहि कहल जा सकैछ जे एहिसँ मैथिली शब्दावलीक अनुशीलनक क्षेत्रमे कार्यक इति भऽ गेल अछि। प्रथमतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य छल शब्दावलीक संकलन ओ ओकर विविध अर्थक निर्वचन। मिथिला क्षेत्रक व्यापकताक कारणेँ बहुतो शब्द, बहुतो विकल्प, बहुतो पर्यायादिक छूटि जयबाक संभावना सहजहिँ बुझना जाइछ जकर अध्ययन अनुशीलन अवश्यक अछि। मैथिलीक एहि शब्दावलीक संग विभिन्न भाषा खास कऽ-हिन्दी, असमी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, संताली इत्यादि भाषाक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक तुलनात्मक अध्ययन अनुसंधानक उपयोगी क्षेत्र भऽ सकैत अछि। आशा कयल जाय जे अन्यान्य अनुसन्धातागण एहि क्षेत्रमे अग्रसर भऽ अनभिज्ञात तथ्यक उद्घाटनक हेतु अवश्ये उत्साहित होयताह।

●

परिशिष्ट (क) :

शब्द सूची

(ग्रन्थक समाप्तिक पश्चात् प्राप्त अवशिष्ट शब्दक सूची)

अँचरा- बालिकाकेँ पहिरबाक छोट वस्त्र विशेष।

अँचरी- छोट आँचर (भगवतीकेँ खोंइछ देबाक कपड़ा।

अँचरौंत- रक्ताञ्चलक वस्त्र।

अतरदान- अतर रखबाक पात्र

अनन्त- सूतसँ निर्मित बाहुक आभूषण विशेष।

अबरा- दोहरिकेर उपरका कपड़ा।

अबीर- पखास, सुगन्धिद्रव्य।

अबीरी- अबीरक सदृश रंग।

अलमान- ऊनक सादा ओढ़ना।

असगनी- कपड़ा रखबाक डोरि।

असधनी- नूआ टङबाक डोरि।

आबा-काबा- वस्त्रादि

आमछाप- कागतक बोड़ सन पातर साड़ीक प्रभेद।

आल- लाल रंग विशेष।

आसनी- छोट आसन।

इस्त्री (पूर्तगीज)- प्रेस, आयरन।

इसखी- स्वशरीर सौन्दर्य प्रेमी, सीटनिहार

उकटन- आङ् उगारबाक वस्तु

उगारब- उद्वर्तन करब।

उघरब- उद्घाटित होएब

उघारब- अनावृत करब।

उज्जरसपेत- खूब उज्जर।

उज्जर बगबग- अत्यन्त श्वेत।

उनटा पल्ला- साड़ीक आँचर माथपर रखबाक विशेष प्रकार।

एकपट्टा- एक पाटक ओढ़ना विशेष।

एकसूती- एकहारा सूतक तानी ओ भरनीसँ बनल वस्त्र।

ऐंठा- डोरि, केशबन्धक।

ओछ- आवश्यकतासँ कम लम्बाइक परिधान।

ओछाओन- बिछाओन-शय्या वस्त्रादि।

ओढ़ब- वस्त्रकेँ देहमे आच्छादनक हेतु लगायब।

ओहार- आवरण।

औँसब- तेल लगयबाक प्रक्रिया विशेष।

औन्ही- पयरक भूषण विशेष।

अंडी- एक प्रकारक रेशमीवस्त्र ।
कजरोट- पैघ कजरौटा
कठरिया-रंगविशेष, ताहिसँ रङल वस्त्र ।
कर्णफूल-कानक पुष्पाकार अलंकरण ।
कपचब- किंचित छाँटब ।
कमरकस- मेखला
कमलपत्ती- कमलक पातक रंगक समान हल्लुक लाल
कमीज (पुर्तगीज)- उपरिवस्त्र विशेष
करिछौंह-अल्प कारी
काँट- गरदनिक भूषण विशेष ।
कारीखटखट- खूब कारी
कारी भुजुङ्ग- खूब कारी
कारीलेहर- खूब कारी
कारीस्याह- अत्यन्त कारी ।
कौआ- सिन्दूरादि रखबाक युग्मपात्र विशेष ।
कीप- पोठी माछक आकृतिक गर्दनिक गहना विशेष ।
कुण्डाबोर- अत्यधिक लाल
कुरुस (पुर्तगीज)- ऊन ओ सूतसँ अंगवस्त्र बिनबाक औजार विशेष ।
कुसुम- वस्त्ररञ्जक पुष्प विशेष
केथरा- गदेला
कैथिनिआ खोंच- एहन खोंच जाहिमे नाक झाँपल रहैछ मुदा एकटा आँखि फूजल रहैछ ।
कंठी- तुलसीडाँटक माला
कोचबन- कोचाक बन्धनक डोरी ।
खड़ुकी- भगवासँ पैघ नूआ
खद्धी- अत्यन्त अधलाह वस्त्र
खाला- खोल
खिजमती- काजमे आनल वस्त्र
खोंपबन्द- खोंपा बन्हबाक फुदना लागल डोरी ।
खोल- गेड़ुआ आदिक उपरका वस्त्र ।
खोलिया- खोल
खिजाब- उज्जर केशकेँ कारी करबाक रसायन
गद्दी- सिन्दूरक आयताकार पुड़िया ।
गज- कपड़ाक नाप
गीरह- गजक सोलहमभाग ।
गुड़ुआ- गूहिकऽ बनाओल
गेठा-मेठा- नेनाकेँ छठिहारक अवसर पर देल हाथपैरक डोरा ।
गेल्हा- कपड़ापर चुनन उत्पन्न करबाक उपादान रूपमे प्रयुक्त फलविशेष ।
गोअरनट-वस्त्रविशेष ।
गोटा- कपड़ाक किनारपर कयल काज ।
गोटा-पट्टा- कपड़ाक किनारपर कयल काज ।
गोठदार- बान्हल पागक प्रभेद ।
गोदना- नेनाक पैरक काड़ा ।
गोपीचानन- पीतवर्णक चन्दन ।
गोला- गोलाकार सूतक समूह ।
घुरची- तागक संकुचनविशेष ।
घुरची-फिरची- तथैव ।

घुघरू- डाँड़क भूषण विशेष ।
घोघट- मुखाच्छादन ।
चकुठा- बाँहिक चौखूट अलंकरण
चन्द्रौटा- चानन घसबाक शिला
चननकाठी- चानन देबाक पात्र
चननसितुआ- चानन रखबाक शुक्तिकाकार पात्र ।
चपोतब- तहिआयब
चान- चन्द्राकृति बाहुभूषण ।
चिक्कट- तेलक मैली, तेल ओ गंदगीयुक्त।
चिकनाह- किंचित चिक्कन
चित्तिर-बित्तिर- विविध रंगसँ युक्त
चित्ती- कपड़ा निरन्तर भीजल रहलापर ओहिपर पड़ल कारी रंगक दाग
चित्ती मारब- कपड़ापर कारी रंगक दागपड़ब ।
चुहुकी- पुरुष केशक अग्रभाग ।
चुनिआयब- कपड़ाक कोनोभागक तानी भरनीक घसाइत घसाइत नष्ट भऽ जयबाक कारणेँ छिद्र भऽ जायब ।
चूल- पुरुषकेशक अग्रभाग ।
चेक- अनेक अथवा एक रंगक तानी भरनीसँ बनल चौकोर आकृतिक वस्त्र ।
चेथरा- रद्दीपुरान वस्त्रखंड ।
चोंगी- ताटङ्कादिधारकभूषण
चोटबन- साड़ीक कोँचामे बन्हबाक दून्‍ कात फुदना लागल डोरा
चोलीबन्द- कंचुकी
चौकठी- छोट चौखूट बाहुभूषण
चौपैतब- तहिआयब ।
छपाइ- छपबाकक्रिया
छपुआ- छापसँ युक्त
छांटब- छोट करब
छाप/छापा/छप्पा- छपलासँ उत्पन्न आकृति
छाड़ी- पहीरिकेँ त्यक्त वस्त्र ।
छलछल-द्रव्य जन्य छिछलाहपन
छोर- दाढ़ी (प्राचीन प्रयोग)
जय- डाँड़क गहना विशेष ।
जसोन्ह- बाँहिक गहना विशेष
जहसन- गर्दनिक भूषण विशेष
जामेबार- वस्त्रविशेष
जिगा- भूषणविशेष
जितिया- गर्दनिकभूषण विशेष
जुगनू- गर्दनिक भूषण विशेष
जोगिनी- भूषण विशेष
जोगौली- भूषण विशेष
जोलहउ- जोलहा द्वारा निर्मित
झमकौआ- आवाज करयबाला
झलकौआ- झलकयबा योग्य
झुमक- कानक भूषण विशेष
झुल्फी- पुरुषक केशक सीटल अग्रभाग
झुल्ला- स्त्रीक स्यूत वस्त्र विशेष
झालर- वस्त्रप्रान्तमे जोड़ल चुनिआयल वस्त्र
झूनामलमल- मलमलक प्रभेद विशेष ।
झोंपड़ा- नमहर ओझरायल केश

झोंपा- नमहर ओझरायल केश

टुहटुही- अत्यधिकलाली

टूस- ऊनी कपड़ाक प्रभेद

टोंप- शिरोभूषण विशेष

टोपर- अङ्ग गरम रखबाक हेतु मोट तूरयुक्त नूआ ।

ठढ़भगवा-भगवा जकाँ पहिरल पैघ वस्त्र

डँड़िआ- स्त्रीक स्यूत परिधानवस्त्र विशेष

डीठ- नेनाक कपारक एक कोनमे कयल काजरक ठोप ।

डोर-सिनूर- कन्याक विवाहमे प्रयुक्त सिन्दुर आ केश बन्हबाक नाराक प्रभेद

ढेला- कर्णभूषण विशेष ।

डोरा- सूत, ताग

तुमका (तुर्की)- वस्त्र विशेष

ताग-पात- विआहमे आम महु वियाहवाक हेतु व्यवहृत पीयर रंगक सूत ।

तूस- ऊनी कपड़ाक प्रभेद ।

तेल-कूर- तेलादि उद्वर्तनीय सामग्री

तेल-चिट- तैलीय पदार्थजन्य मैलीसँ युक्त

तेलाइन- तेलयुक्त

तेलाह- तेलसँ युक्त

तौनी- पातर चद्दरि

तौलिया (पुर्त्तगीज)- देह पोछबाक वस्त्र विशेष ।

थकरब- केशसँ बिजातीय पदार्थ दूर कऽ समारबाक क्रिया ।

दपदपी- अत्यधिक स्वच्छता

दलपर्दा- वस्त्रावरण

दोबरायब- वस्त्रादिक द्विरावृतकरब

दोरब्बी- दोबर रवावला भूषण विशेष ।

धुकधुकी- भूषण विशेष

धुपछाँह- वस्त्र विशेष

नओरतन- नवरत्नयुक्त

नकमुन्नी- नाककभूषण विशेष

नवरिया-गुजरिया- गर्दनिक भूषण ।

नथ- नाक भूषण विशेष

नथिआ- नाकक भूषण विशेष

नँहगा- साड़ीतर पहिरबाक छोट नूआ ।

नवग्रह- भूषण विशेष

पट्टू- ऊर्णवस्त्रविशेष

पन्ना- स्वर्णक प्रभेद

पाइ- डँड़िक भूषण विशेष

पछेरा- चद्दरिक दाँया कान्हवला वामपर ओ वाम कान्हवला दहिनापर फेकल अग्रभाग ।

पटही- बाँहिक गहना विशेष

पल्ला- साड़ीक ओ भाग जे पीठपर फेकल जाइछ, खण्ड ।

पलिया- उलेंच

पिपरपत्ता- पिपरक पत्ताकार कर्णभूषण

पीयर कपीस- अत्यधिकपीयर

पीयरकल्हा- अत्यन्तपीयर

पीयरकहकह- अत्यधिक पीयर

पुरहरी- भूषण विशेष

पैटन- बिनाइक प्रकार भेद (पैटर्न)

पैरी- स्त्री चरणभूषण विशेष

पोचकारब- अधिक तेल दऽ देहपर लगयबाक क्रिया ।

पोला- अवगुंठित सूतक राशि

पोलिया- दे० पोला

फतुही (पुर्त्तगीज)- अधकट्टी गंजी

फलानेन- वस्त्र विशेष

फसफस- अत्यन्त कमजोर तागक स्वत: मसकब ।

फुसफुस- तथैव

फुसफुसाह- अत्यन्त कमजोर

फनन्त- सूतसँ निर्मित बाहुक आभूषण विशेष

फरदी (जी)- मोटसूतक कम चाकर धोती ओ साड़ी

फाल (अं०)- साड़ीक निचला भागमे लागाओल कपड़ाक चाकर टुकड़ी (अं० फाल्स)

फीता (पुर्त्तगीज)- केश बन्हबाक पातर ओ किञ्चित चाकर कपड़ा ।

फेरन- फेरलवस्त्र

फेरब- पहिरल वस्त्रकें बदलब ।

फेरन-फारन- पुरान वस्त्रादि

फैसनदार- फैसन कयनिहार, फैसनयुक्त ।

फैसनिजा- फैशनयुक्त ।

बङ्का- वीर, भूषण विशेष

बखलाहा- गट्टाक गहना विशेष

बढ़ोरी- गट्टाक गहना विशेष

बन्हनी- छपुआ साड़ीक प्रभेद

बुताम (पुर्त्तगीज)- बट्टम

बरिसाती- बरिसातमे उपकारक वस्त्र ।

बाँही- लहठीक स्थानमे पहिरबाक काँसाक अलंकरण

बान्हू- रंगीन वस्त्रविशेष

बिरनी- गूहल माथक केश खोपा

बोदर- अत्यधिकभींजल

भेंट- फूलक प्रभेद मलकोका

मछरिआ- भूषण विशेष

मट्ठा/माठा/मठिया- बच्चाक भूषण विशेष

मढ़ब- वृत्ताकार लेपटब

मेंढ़ब- तथैव

मेंढ़ुआ- मेंढ़लासँ उत्पन्न

मलकोका- फूलक विशिष्ट प्रभेद

मलीदा- ओढ़बाक ऊनीवस्त्र विशेष

मसलन्द- ओंगठबाक पैघ गेडुआ

मुखपात- वस्त्रप्रान्त शोभाधायक वस्त्र

मुन्नी- डराडोरिक छोरपर चारू कात सूतसँ मढ़ल गोल आकृति

मैलचिक्कट- तैलीय पदार्थ युक्त मैली बला कपड़ा

मैलछन- अल्प मैलीयुक्त

मैलछाह/मैलछाँह- अल्प मैली युक्त

मैलाह- किञ्चित मैल

मोमछाता- मोमसँ निश्छिद्रीकृत वस्त्र विशेष

रक्तबुन्द- रक्तसन लाल

रुद्राक्ष/रूदराछ - वृक्ष विशेषक फड़ जे शैवलोकनि धारण करैत छथि ।

लत्ता-पत्ता- लत्ता आदि

लत्ता-लुत्ती- लत्ता आदि

लबादा (पूर्तगीज)- ओढ़ना विशेष
ललछौंह/ललछौन/ललछौंह/ललौंछ- अल्प लाल
लालबुन्द- अत्यकि लाल
लालरक्कत- रक्त सन लाल
लीलपङ्खी- चारूकात नील ओ मध्यमे लाल (साड़ी)
लेटायब- वस्त्रादिक जमीनपर स्पर्श करब
लोइ- मोट ऊनी शालक प्रभेद
लोरि- कर्णाभूषण विशेष
शान्तिपुर-बंगालमे निर्मित अत्यन्त पातर साड़ीक एकटा प्रभेद ।
वरक- पानक हेतु चानीक पत्र (वर्क)
सकरा- गट्टाक गहना विशेष
सजायब- कपड़ापर कलपदेब
सफाचट-केश उड़यबाक हेतु प्रयुक्त रासायनिक द्रव्य विशेष
सबरब (बी)- भूषण विशेष
समला- पगड़ीक प्रकार विशेष
सलगा- शीतवारक दोहराओल वस्त्र
साँख- शंखक औंठी
साफी- तौलियाक प्रभेद
साँख-सुहेली- सिन्दुरदानमे प्रयुक्त शंखक चूड़ी ओ सोहगौली
सिबिया बुनिया- सीअब आदि क्रिया
सिमसिम- किंचित आर्द्र
सिमिरताइ- सौन्दर्य
सियाइ-फराइ- कपड़ाकेँ स्यूत करबाक क्रिया
सिरमानी- अङ्गाक प्रभेद
सीटब- समारक
सीधापल्ला- साड़ीक पल्ला राखबाक विशेष प्रकार
सीसी- तेलादि द्रव्य रखबाक हेतु सीसाक लघुपात्र
सुरमा- अंजन
सुति पाति- विविध प्रकारक गहना
सेजबन- श्राद्धमे प्रयुक्त शय्याक हेतु डोरी
सेलीटोपी- वस्त्रादि
सेहला- पागपर पहिरबाक माला
सोतियामी घोघ- एहन घोघ जाहिमे नाक झाँपल रहैछ मुदा दुनू आँखिसँ देखबाक अवसर रहैछ ।
सोल्हकनिञा घोघ- एहन घोघ जाहिमे दुनू आँखि झाँपल रहैछ ।
सोहागी- चारूकात अन्य रंगमे रङल साड़ी
सोहागीबका- भूषण विशेष
हरहरा- कटिभूषण विशेष
हरियर कचोर/कंचन- अत्यधिक हरियर
हँसुली- नेनाक छठिहारक अवसरपर देल डोराक माला
हँसोथब- हाथक इशारासँ द्रबकेँ पचयबाक क्रिया विशेष ।

परिशिष्ट : (ख)

सम्बद्ध चित्रावली

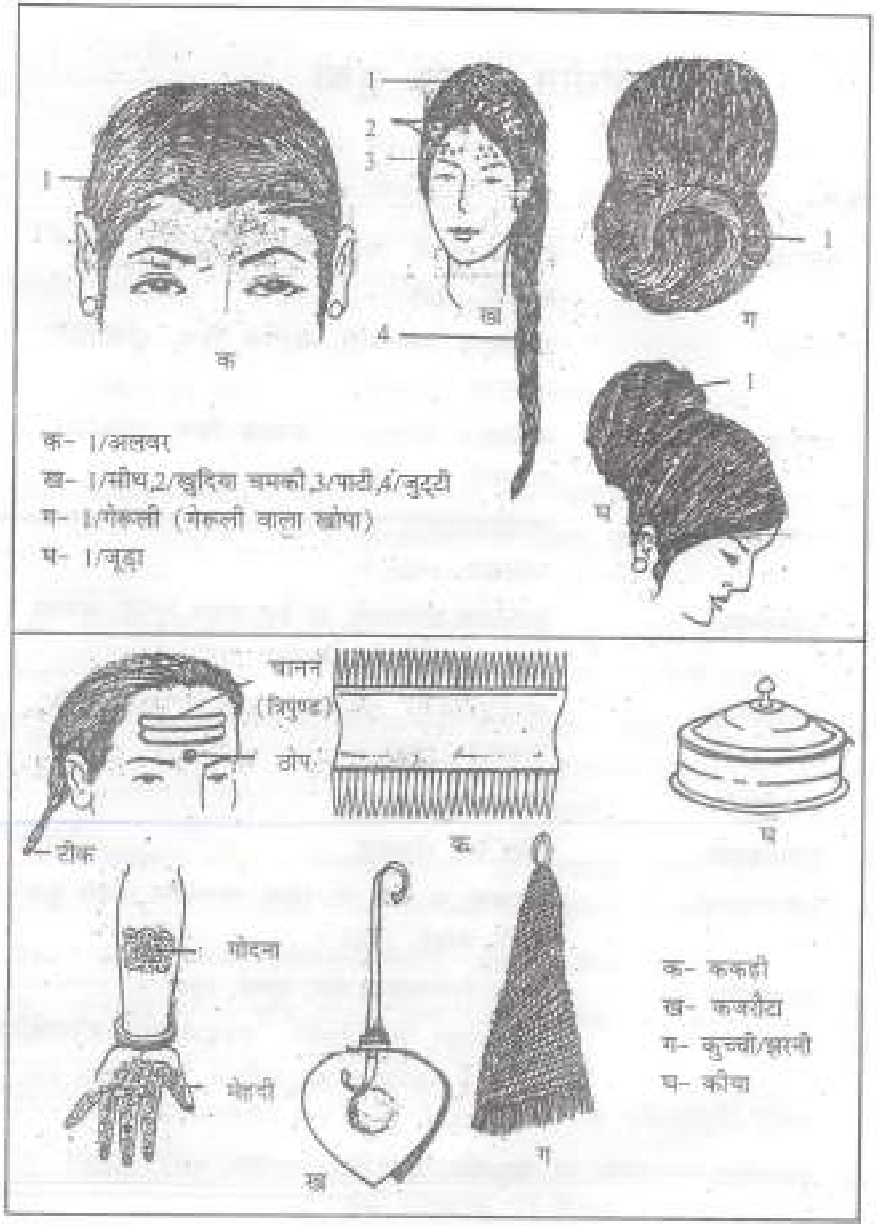
कतिपय वेशक रेखाचित्र–



कतिपय आभूषणक रेखाचित्र–



कतिपय प्रसाधनक रेखाचित्र–



परिशिष्ट : (ग)

अधीत ग्रन्थक सूची

संस्कृत–

1. अमरकोष– स. चन्द्रधारी सिंह, चन्द्रनगर डेउढ़ी, राँटी, मधुबनी, 1957
2. उत्तरमेघ– कालिदास ग्रन्थावली, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी-5, 1976।
3. ऋतुसंहार– कालिदास ग्रन्थावली, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी-5, 1976।
4. कृत्यरत्नाकर– चण्डेश्वरठाकुर, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1925।
5. कुमारसंभव– कालिदास ग्रन्थावली, स. रेवा प्रसाद द्विवेदी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी-5, 1976।
6. गृहस्थरत्नाकर– चण्डेश्वरठाकुर, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1928।
7. तन्त्रकौमुदी–
8. दुर्गासप्तशती– गीता प्रेस, गोरखपुर
9. देशीनाममाला– हेमचन्द्र, स. आर.पी. रसेल, गोवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई, 1880।
10. नाट्यशास्त्रम्– भरत, निर्णयसागर, प्रेस, मुम्बई, 1942।
11. पञ्चशायक– कविशेखर ज्योतिरीश्वर, जयकृष्णदास, हरिदास, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, विद्याविलास प्रेस, बनारससिटी, 1995।
12. पुरुषपरीक्षा– विद्यापति, पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1960।
13. मणिमञ्जरी– विद्यापति, पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1888।
14. महाभारत– गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2023
15. रघुवंश– कालिदास ग्रन्थावली, स. रेवाप्रसाद द्विवेदी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी--5, 1976
16. विद्यापति– संस्कृत ग्रन्थावली, भाग-1,2, का.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1980
17. संस्कृत हिन्दी कोश– व्ही.एस. आप्टे
18. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० 2023
19. श्रुतिस्मृति-पुराण– अथर्ववेद, ऋग्वेद, देवीभागवतपुराण, यजुर्वेद, याज्ञवल्क्य स्मृति

अंग्रेजी–

20. इण्डिया इन कालिदास– भगवतशरण उपाध्याय, एस. चान्द एण्ड को., नई दिल्ली, 1968
21. ऐन इन्ट्रोडक्सन टू द मैथिली लैंग्वेज आफ नौर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी– जी.ए. ग्रियर्सन, रोयाल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1881।
22. ओरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज– डा. सुनीति कुमार चटर्जी, रूपा एण्ड कम्पनी, कलकत्ता-22, द्वि.सं. 1975
23. कास्ट्यूम्स टेक्सटाइल्स कासमेटिक्स एण्ड क्वाइफर इन एनसिएण्ट एण्ड मिडिआइभल इण्डिया– डा. एस.पी. गुप्ता, ओरियण्टल पब्लिसर्स, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली-6
24. द फार्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज– डा. सुभद्रझा, लुजाक एण्ड कम्पनी, 46 ग्रेट रसेल स्ट्रीट लन्दन, 1958
25. द स्टूडेण्ट्स संस्कृत इंग्लिस डिक्सनरी– आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-7
26. फोकलोर, मैजिक एण्ड लीजेन्ड आफ मिथिला– माखन झा, ज्योति पब्लिकेशन्स बी.एम. दास रोड, पटना, 1979
27. ब्राह्मण्स थ्रू द एजेज– डा.राजेन्द्रनाथशर्मा, अजन्ता पब्लिकेशन्स, दिल्ली-7
28. बिहार पीजेन्ट लाइफ– जी.ए. ग्रियर्सन, कास्मो पब्लिकेशन्स, बी० अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 1975

29. मैथिली ग्रामर- जी.ए. ग्रियर्सन, रोयाल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1976

30. रूरल एण्ड एग्रिकल्चरल ग्लौसरी फार द नार्थ इस्टर्न प्रोविन्सेज एण्ड अवध- विलियम क्रूक, सेकेण्ड, एडीसन, सुपरिण्टेण्डेंट आफ गोवर्नमेन्ट प्रिंटिंग इण्डिया, कलकत्ता, 1988 ।

हिन्दी–

31. उर्दू हिन्दी कोश- रामचन्द्रवर्मा, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, 1948 एवं उर्दू हिन्दी शब्दकोश-हिन्दी समिति, हिन्दीभवन, लखनऊ, 1972

32. कृषक जीवन सम्बन्धी व्रजभाषा शब्दावली, भाग-1 एवं 2 हिन्दुस्तानी ऐकडमी, इलाहाबाद, 1960-61

33. ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली- डा. हरिहर प्रसाद गुप्त, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई, 1959

34. चर्यापद- सं. अतीन्द मजुमदार, नयाप्रकाश, 206 कर्णवालिस स्ट्रीट, कालिकाता-6 बंगाब्द 1367

35. दोहाकोश (सिद्ध सरहपाद)- स. महापंडित राहुल सांस्कृत्यान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1957

36. पतंजलिकालीन भारत- डा. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1973

37. बुद्धकालीन समाज और धर्म- डा. मदनमोहन सिंह, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, सम्मेलन भवन, पटना-3, 1972

38. बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त- डा. जयधारी सिंह, मधुबनी, मार्च 1969

39. भरत और भारतीय नाट्यकला- सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.-8, फैजबाजार, दिल्ली-6, 1970

40. महाकवि भास- डा. नेमिचन्द्र शास्त्री, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1972

41. महाकवि शूद्रक- डा. रमाशंकर तिवारी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1967

42. राजशेखर और उनका युग- डा. पाण्डेय रामेश्वर प्रसाद शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1977

43. रामचरितमानस- गीताप्रेस, गोरखपुर

44. विद्यापतिकी पदावली- सं. रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तकभंडार, पटना-4, सं. 2040

45. वेदकालीन समाज- डा. शिवदत्त ज्ञानी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1967

46. वैदिक साहित्य और संस्कृति- आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, 37 बी. रवीन्द्रपुरी, वाराणसी-5 पञ्चम संस्करण, 1980

47. हिन्दी पर्यायो का भाषागत अध्ययन- डा. बदरीनाथ कपूर, प्रयाग, 1965

मैथिली–

48. अर्चना- सुरेन्द्रझा'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1981

49. अन्योक्तिका- सुरेन्द्रझा'सुमन', राजकुमारगंज, दरभंगा, 1969

50. अन्तिम गहना- रोहिणीरमणझा, चेतना समिति, विद्यापतिभवन, विद्यापति मार्ग, पटना-1, 1989

51. अम्बचरित- सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स, संस्कृत बुक डिपो, कचौड़ीगली बनारस-1 सं०- 2013

52. अयाची- काशीनाथमिश्र, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, 1966

53. अश्रुकण- मनमोहन झा, सरिसवपाही, 1978

54. आनन्दविजय- रामदास, सं. सुरेन्द्रझा'सुमन', दरभंगा, 1971

55. आरती- जगदीपनारायण दीपक, जगदम्बा प्रकाशन, स्नेहसदन, मदहर, विरौल, दरभंगा, सं० 2015

56. उत्तरा- सुरेन्द्रझा'सुमन', दरभंगा, 1982

57. एकखीरा तीन फांक- रामदेवझा, सुधा प्रकाशन, दरभंगा, 1965

58. एकांकीसंग्रह- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1977

59. कथासंग्रह- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1984

60. कन्यादान- हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर वाजितपुर, वैशाली, 1982

61. कविताकलाप- स.डा. शंकरकुमारझा, अखिलभारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1960

62. कवितासंग्रह- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1987

63. कविवर जीवनझा रचनावली- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1980

64. कीचकवध- तन्त्रनाथझा, राजकुमारगंज, दरभंगा, सन् 1372 साल
65. कीर्तिलता- विद्यापति-सं. बाबूराम सक्सेना,नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1929
66. कृष्णजन्म- मनबोध- स. सुरेन्द्रझा'सुमन', दरभंगा, 1988
67. कंगना- शेकपिया, मैथिली प्रकाशन समिति-4, राजकुमार रक्षित लेन, कलकत्ता-7
68. खट्टरककाक तरंग- हरिमोहनझा, पुस्तकभंडार, पटना, 1967
69. गीतक फुलवारी- भवानी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना-6
70. गीतनाद- विभूतिआनन्द, ज्योत्स्नाआनन्द, भवानी प्रकाशन, पटना-6, 1986
71. गीतरत्नावली- स.कविशेखर बदरीनाथझा, दरभंगा
72. गुदगुदी- चन्द्रनाथमिश्र'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 1353 साल
73. गोविन्द गीताञ्जलि- स.सुरेन्द्रझा'सुमन', दरभंगा, 1980
74. गौरीपरिणय- शिवदत्त, स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरमुक्ति-1, एलनगंज, रोड, इलाहाबाद-2, 1960
75. गौरी स्वयंवर- कविलाल- स.डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरमुक्ति-1, एलनगंज, रोड, इलाहाबाद-2, 1961
76. चर्चरी- हरिमोहनझा, मैथिली प्रकाशन, 6/1 वामन पाड़ालेन, कलकत्ता-19, 1960
77. चतुरचतुर्भुज एवं गीतसप्तदशी- सं. डा.शैलेन्द्रमोहनझा, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, 1969
78. चन्द्ररचनावली- डा.विश्वेश्वरमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
79. चित्रा- यात्री, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1 बी-सर पी.सी. बनर्जीरोड, प्रयाग, 1390 साल
80. चीनीकलड्डू- ईशनाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1964
81. जहिना छी तहिना- रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विद्यापति पाकेट बुक्स, दरभंगा, 1965

82. टटका गप्प- स. प्रो. प्रबोधनारायण सिंह, मिथिला दर्शन प्रा० लि० 14 बी- ब्रजनाथ मित्तर लेन, कलकत्ता-9, सं० 2021
83. दशावतारनृत्यम् ओ षोडसगीतम्- डा.रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1988
84. द्वादशी- काशीकान्तमिश्र'मधुप' शतदलसंघ, कोर्थु, दरभंगा, 1984
85. द्विरागमन- हरिमोहनझा, पुस्तकभंडार, पटना-4
86. धातुपाठ- दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1950
87. नन्दीपति गीतिमाला- सं. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1965
88. नवएकांकी- माहेश्वरीसिंह'महेश', मैथिली प्रकाशन, भागलपुर-7, 1967
89. नवतुरिया- यात्री, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965
90. नवारम्भ- प्रभासकुमारचौधरी, 217, पाटलिपुत्र कोलनी, पटना-13, 1978
91. नवीन मैथिली साहित्यसुमन- सं. श्रीचन्द्रनाथमिश्रअमर, मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1981
92. नैनाजोगिन- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1973
93. पतन- उपेन्द्रझा'व्यास', श्रीभवन, बोरिंगरोड, पटना-1, 1976
94. पचमेर- 'अलि', कोर्थु, दरभंगा, 1949
95. परिचयशतक- कविचूडामणिकाशीकान्तमिश्र'मधुप', चिनगी प्रकाशन, बेलवागंज, लहेरियासराय, दरभंगा, 1988
96. परिचायिका- भीमनाथझा, भवानी प्रकाशन, पटना-6, 1985
97. पत्रहीननग्नगाछ- 'यात्री', मैथिली एकेडमी, पो०बा०नं० 67, इलाहाबाद, 1967
98. प्रणम्यदेवता- हरिमोहनझा, पुस्तकभंडार, लहेरियासराय, 1949
99. प्रतिनिधि एकांकी- चन्द्रनाथमिश्रअमर, मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा, 1980
100. प्रतिपदा- श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा, 1984
101. पारिजातहरण- उमापति-स.सुरेन्द्रझा'सुमन', दरभंगा, 1971

102. प्राचीनगीत- स. रमानाथ झा

103. प्राचीन बाङला मैथिली नाटक- सं. विनितकुमारदत्त, वर्धमान विश्वविद्यालय, वर्धमान, 1960

104. पृथ्वीपुत्र- ललित, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965

105. प्रेम पत्रावली- दामोदरलालदास, बरहेता, लहेरियासराय, दरभंगा, 1948

106. प्रेरणापुञ्ज- काशीकान्तमिश्र'मधुप, मैथिली अकादमी, पटना, 1980

107. फूटल चूड़ी- विद्यानाथझा'विदित' एस.पी. कॉलेज, दुमका।

108. ब्रह्मग्राम- प्रफुल्लकुमारसिंह'मौन', बुकसेन्टर, टावर चौक, दरभंगा, 1972

109. भलमानुस- योगानन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1987

110. मधुप-अमर कीर्ति कवि तोर- मिथिला सांस्कृतिक परिषद, 1 यदुलाल मल्लिक रोड, कलकत्ता-6

111. मधुश्रावणीपूजाकथा- तेजनाथझा, कन्हैया लाल कृष्णदास, कचहरी, चौक, लहेरियासराय, दरभंगा, सन् 1983 साल

114. मनुकसन्तान- रामदेवझा, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, 1968

115. मरीचिका- लिलीरे- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1981

116. मिथिला चित्रकला- उपेन्द्रमहारथी, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1

117. मिथिला दर्पण- पुण्यानन्दझा, जहानपुर, पलासी, पूर्णिया, 1925

118. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह- डा० शशिनाथझा, का.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1986

119. मिथिला भाषा रामायण- कवीश्वर चन्दाझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1987

120. मिथिला भाषा विद्योतन- दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1353 साल

121. मिथिला संस्कारगीत- सं. कामेश्वरी देवी, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1, 1980

122. मुनिक मतिभ्रम- योगानन्दझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1969

123. मूसमहिमा- मधुरानन्दचौधरी, माधुर, बटुक कार्यालय-1, एलनगंज रोड, प्रयाग-2, 1961

124. मैथिली संस्कृति ओ सभ्यता- डा.उमेशमिश्र, वैदेही समिति, दरभंगा, 1955

125. मैथिली कथा सरिता- स.मदनेश्वरमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1983

126. मैथिली काव्य षट्रस- कविवरसीतारामझा, मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवन, सी.के. 15/52, सुड़िया, वाराणसी, 1969

127. मैथिली गद्यकुसुममाला- सं. डा.उमेशमिश्र, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1939

128. मैथिली गद्य पद्यसंग्रह- बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कमिटी लिमिटेड, पटना-1

129. मैथिली प्रसिद्ध कथा- सं.डा.वासुकीनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1984

130. मैथिली प्राचीन गीतावली- मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1

131. मैथिली भाषा का विकास- गोविन्द झा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना-4, 1974

132. मैथिली लोकगीत- रामइकबालसिंह 'राकेश', हिन्दी सम्मेलन, प्रयाग

133. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह- सं.डा.इन्द्रकान्तझा, कमल प्रकाशन, नयाटोला, पटना-4, 1987

134. मैथिली व्याकरण मीमांसा- डा.सुभद्रझा, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा, 1983

135. मैथिली शैवसाहित्य- डा.रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979

136. मैथिली साहित्यक इतिहास- डा.दुर्गानाथझा'श्रीश', भारती पुस्तककेन्द्र, दरभंगा

137. मैथिली साहित्यक रूपरेखा- चेतनासमिति, विद्यापतिभवन, विद्यापतिमार्ग, पटना, 1974

138. रचनासंग्रह प्रथम भाग- वैदेही समिति, दरभंगा

139. राधाविरह- कविचूडामणि काशीकान्तमिश्र'मधुप', हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर, पुवारी ड्योढ़ी, दरभंगा, 1969

140. रुक्मिणी परिणय- बबुआजीझा'अज्ञात', मैथिली अकादमी, पटना, 1980

141. रंगशाला- हरिमोहनझा, पुस्तकभंडार, पटना

142. लखिमारानी- केदारनाथलाभ, भारतीभवन, पटना-4, 1960

143. ललनालहरी- सुरेन्द्रझासुमन, दरभंगा, 1969

144. लोकगाथा विवेचन- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1974

145. लोकजीवन ओ लोकसाहित्य- डा.योगानन्दझा, कीर्तिलता को-आपरेटिव सोसाइटी, दरभंगा, 1986

146. लोचनकृत रागतरंगिनी- स. शशिनाथझा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1

147. वर्णरत्नाकर- ज्योतिरीश्वरठाकुर, सं० बबुआजीमिश्र एवं सुनीति कुमार चटर्जी, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल कलकत्ता, 1940 एवं
मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1 संस्करण

148. विद्यापति- स.खगेन्द्रनाथमित्र तथा विमानविहारीमजुमदार, पटना, सं. 2010

149. विद्यापतिकालीन मिथिला- डा.इन्द्रकान्तझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1986

150. विद्यापतिक काव्य साधना- विश्वेश्वरमिश्र, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965

151. विद्यापति गीतावली- स. गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981

152. विदागरी- चन्द्रनाथमिश्र' अमर', विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1971

153. वृहत् मैथिली शब्दकोष- डा.जयकान्तमिश्र, इण्डियन इन्स्टिच्यूट आफ एडभान्स स्टडीज, सिमला-5, 1973

154. श्यामा चकेबा- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1972

155. श्रीकृष्ण केलिमाला- नन्दीपति, स.डा.जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरमुक्ति, 1 एलनगंजरोड, इलाहाबाद-2, 1961

156. श्रीकृष्णजन्म रहस्य- श्रीकान्तगणक, सं.डा.जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1 एलनगंजरोड, इलाहाबाद-2, 1960

157. सन्यासी- उपेन्द्रनाथझा' व्यास', श्रीभवन, बोरिंगरोड, पटना-1, 1978

158. सनेस- सुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा, 1969

159. सरस्वती- त्रिलोकनाथमिश्र, राजप्रेस, दरभंगा, 1937

160. सावित्री सत्यवान- महाकविलालदास, मैथिली अकादमी, पटना-1, 1985

161. सिद्धिनरसिंहमल्ल- स. डा.शैलेन्द्रमोहनझा, पुस्तककेन्द्र, लालबाग, दरभंगा 1969

162. सीतारामझा- डा.भीमनाथझा, साहित्य अकादेमी, रवीन्द्रभवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-1, 1983

163. सोहाग- प्रभुनारायणझा' प्रदीप', ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, 1971

164. हमरालग रहब- प्रभासकुमारचौधरी, मैथिली अकादमी, पटना, 1977

165. हरगौरी विवाह- जगज्ज्योतिर्मल्ल, स.डा.रामदेवझा, दरभंगा, 1982

166. त्रिकोण- उर्वशी प्रकाशन, पटना- 6

पत्र-पत्रिका

1. फूलपात, नेपालीय मैथिली मासिक
2. भारती, नेपालीय मैथिली मासिक, दरभंगा
3. मनीषा, संस्कृत मैथिली त्रैमासिक, दरभंगा
4. मिथिला भारती, मैथिली त्रैमासिक, पटना
5. मिथिला मिहिर, मैथिली साप्ताहिक, पटना
6. मिथिला मोद, मैथिली मासिक, काशी
7. वैदेही, मैथिली मासिक, दरभंगा
8. स्वदेश, मैथिली मासिक, दरभंगा
9. सिंहावलोकन, नेपालीय मैथिली पाक्षिक, विशेषांक सं० 2046
10. स्वाती, मैथिली त्रैमासिक, मुजफ्फरपुर

एही पोथीसँ...

- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक समेकित भाषातात्त्विक अनुशीलनसँ एहि विशिष्ट शब्द क्षेत्रक शब्दावलीक अर्थनिरूपण, व्याख्या ओ भाषातात्त्विक विशिष्टताक उद्घाटन सम्भव अछि। अध्ययनक ई परिसीमा ने केवल मैथिली भाषाक शब्दसामर्थ्य ओ भाषा वैज्ञानिक तथ्यकेँ उजागर करत अपितु सांस्कृतिक इतिहास ओ समाजशास्त्रीय महत्त्वक परिमाण सेहो प्रस्तुत करबामे सक्षम सिद्ध होयत। अवश्ये ई ज्ञानक क्षेत्रक सीमावृद्धिमे महत्त्वपूर्ण उपादान अछि।
- महर्षि याज्ञवल्क्यक स्मृतिमे प्रमाधनक मैथिल परम्पराक पर्याप्त उल्लेख भेटैत अछि। एहिमे ब्रह्मचारीक धारण करबाक योग्य वस्त्रादिमे **पलाशदण्ड, अजिन, उपवीत** तथा **मेखलाक** परिगणना कराओल गेल अछि। विवाह प्रकरणमे स्मृतिकार ब्रह्म विवाहक प्रकरणमे अलंकृत कन्या प्रदान करबाक उल्लेख कयलनि अछि। रक्षणीया ओ प्रसादयोग्याक रूपमे स्त्रीक उल्लेख करैत हिनका भूषण आच्छादनसँ समर्पित करबाक वर्णन भेटत अछि।
- मैथिली साहित्यक आदिकालेसँ साहित्यमे वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग होइत रहल अछि। आदिकालीन मैथिली ग्रन्थ **चर्यापद, दोहाकोश** आदिमे प्रसंगतः वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक उल्लेख होइत रहल अछि। मैथिली साहित्यक आदि गद्य ग्रन्थकार कविशेखराचार्य **ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर** ग्रन्थमे वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक पुष्कल निवेश भेटैत अछि।
- सैकड़ो वर्षक मुसलमानी शासनकालमे मुसलमान लोकनिक सभ्यता-संस्कृति, ओढ़ना-पहिरना, आभूषण ओ प्रसाधनक व्यापक प्रभाव मैथिल संस्कृतिपर पड़ल आ परिणामस्वरूप वेश-भूषा-प्रसाधन विन्याससँ सम्बद्ध शब्दावली अरबी ओ फारसी स्रोतसँ आबि-आबि मैथिलीमे खपैत-पचैत रहल। क्रमशः पाश्चात्य सभ्यताक सम्पर्क ओ अंग्रेजी शासनक आगमन ओ आधुनिक वैज्ञानिक उत्पादक प्रचलनसँ अंग्रेजीक शब्दावलीक सेहो व्यापक प्रभाव मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन

डा. कमला चौधरी

जन्म : 1 जुन 1953 इ.

पिता : श्रीकृष्णकान्तझा, अधिवक्ता, लहेरियासराय, दड़िभंगा
ग्राम- बिरसायर, पंडौल, मधुबनी

माता : श्रीमती श्यामलाझा

पति : स्व. (इंजीनियर) कन्हैयाचौधरी
ग्राम– बसहा-मिर्जापुर, दड़िभंगा-846001

शिक्षा :
- बी.ए. (मैथिली प्रतिष्ठा) 1974, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दड़िभंगा (प्रथम श्रेणी)
- एम.ए. (मैथिली) 1976, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दड़िभंगा (प्रथम श्रेणी)
- पी-एच.डी. 1991मे **मैथिली-भाषा ओ साहित्यमे प्रयुक्त वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्विक अध्ययन** विषयपर ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट प्राप्त।

वृत्ति : अध्यापन, मैथिली विभाग, एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

साहित्यिक अभिरुचि :
- मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका (त्रैमासिक) **स्वातीक** (1984-85) सम्पादन।
- विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता ओ निबन्ध प्रकाशित।
- महाविद्यालय पत्रिका **दर्शना**मे मैथिली प्रभागक सम्पादन।
- आकाशवाणी, दड़िभंगा ओ पटनासँ कथा, कविता ओ निबन्ध प्रसारित।

प्रकाशनाधीन : 1. **बाटे बिलायल पानि** (कथा संग्रह)
2. **पिया मधुमास** (कविता संग्रह)
3. आशापूर्णादेवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली अनुवाद

रंगकर्म : 1976मे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय युवा महोत्सवमे मैथिली एकांकीमे सफल अभिनयक हेतु पुरस्कृत। 1976मे चेतना समिति, पटनाक मंचपर ल.ना.मि. विश्वविद्यालय दिससँ मंचित **पसिझैत पाथर** नाटकमे सफल अभिनय।

सचिव : मैथिली शिक्षक संगोष्ठी, मुजफ्फरपुर।